मिलनेका पत्ता.

मुंबई.

यतिज्ञानचंद्रजी. ठि. पायधोणी श्रीशांतिनाथजी जैन-
मंदिर जैनपत्र ओफीस. ठि. कष्टमहाउस रोड. मुंबई.

सेठ. कस्तुरचंद नानचंद ठि. आंवाकांटा.

अहमदनगर.

सेठ. वाडीलालहाथीभाई. नवी कापडमारकेट.

बालापुर.

श्रीजिनमंडली ओफीस. नवादेरासर.

अर्पण पत्रिका.

रायबहादूर बाबु साहब श्रीयुत बुधसिंघजी दुधेरिया.

जो कि अत्री मुर्शिदाबादांतर्गत अजिमगंजमें रहते हैं. इनोके आश्रयसें यह पुस्तक प्रकाशित हुवा. इस लिए उक्त महोदयका संक्षेप्त जीवन वृत्तांत प्रकाशित करनेकी आवश्यकता देखते हैं.
बाबुसाहबके पूर्व पुरुषें हरजीमलजी दुधेरिया पहिले मारवाड़से मुर्शिदाबादमें व्यापारके लिए आय बसे थे. हरजीमलके पुत्र सवाइसिंघजी और तिनके कुलदीपक सुपुत्र हरखचंदजी जो के अपने आश्रय दाता महोदयके पिता थे उन महोदयने व्यापार और जागिरदारीके व्योपार में कितनाक न्यायोपार्जित द्रव्य उपार्जन किया.
बाबु साहेब हरखचंदजी सने १८६२ में स्वर्गस्थ हुवे. जब उनको सर्वलोग परिपूर्ण श्रीमंत कहते थे और वो अच्छी नामंदारी धारण करतेथे. वे महोदय अपने पीछाडी रायबहादुर श्रीयुत बुधसिंघजी और श्रीयुत विसनसिंघजी दुधेरिया दो सुपुत्रें रख गए थे.
यह दोनो सुपुत्रें अपने पिताके मरण समय लघु (बाल्यावस्थामे) थे. उन समय अपने पिताकी लक्ष्मी और बडाभारी व्यापार उन दोनोके हाथमे आया. यह दोनों महोदयें ज्यौं ज्यौं बढते गए त्यौं त्यौं ऐक्य और सलाह संपसें रहते थके द्वितीयाके चंद्रवत् अपना अभ्युदयमें और बलबुद्धी पराक्रममें चढते गए. राय बहादुर बुधसिंघजी विनयवान् धैर्यवान् विवेकी और मिलनसार व उद्योगी हुवे.

रायबहादुर बाबु बिसनसिंघजी बचपन सेंहि व्यापारी लाइनकी अद्भूत शक्ती धारक जिनोंमें बुद्धी कला कुशलता, दृढता परिपूर्ण थी. सर्वजनोंसे हाजिर जबाबी और विशेषकर बहुत परिणाम दर्शी थे.

उनोने धीरधारका धंधा बढाया और कलकत्ता, सिराजगंज, माइमेनसींग, जंगीपोर, अजीमगंजमें बेङ्क खोली.

यह बेङ्कोंमें बेङ्करोंके अथाग परिश्रमसे अथाग विश्वास आनेसें फतेहमंद रीतीसे कार्यवाही चलने लगी. रहते रहते जमीनदारों व जागीरदारोंकों धनधीरनेका कार्य सिरु किया जिसके परिणामसे दोनों महोदयें बडे जागीरदार होगए.

मुर्शीदाबाद, माइमेनसींग, बीरभुम, नदीया, फरीकोट, पुर्णीया, दिनाजपुर, राजसाई, मालदा, भागलपुर, कुमका विगेरह ग्रामोंकी जमीनके मालेक हुवे.

दोनों बंधु मात्र द्रव्य संपादान करनेमेंहि प्रवर्त्ते थे एसा नांही परं उनके साथ उनोंका पुण्यकर्ममेंभी प्रयत्न चालु था.

दीन दुःखी और हजारों गरब व लाचारोंके लिए अन्नक्षेत्र स्थापन कीये. जिस्की कार्कीदी अबीभी फलाफल फलकती हे.

(जैनमंदिरे, उपाश्रयें, धर्मस्थानेमें बहुत धन व्यय कीया जिनकी विगत)

प्रथमतः अपनी जन्मभूमी मुर्शीदाबादमें ... नेमिश्वरजी, श्रीशामलाजी, अष्टापदजी, दादाजीके मंदीरोंका जीर्णोध्धार कराया.

नेमीश्वरजीके मंदिरमें दो रत्नकी प्रतिमा हैं और ... भजीका गट्टा हैं सो भी उक्त महोदयने स्थापित किये है.

अजीमगंजसे ७ मील अंतरसे कासम बजारमें श्रीनेमि... जीका मंदिरकाभी जीर्णोध्धार कराया जिसे रत्नकी प्रतिमाजी विशेष दर्शनके लायक है.

रायवहादुरजीकी सखावत इकिले बंगालेमेंहीं नही है पर यत्र यत्र उनोकों आवश्यकीय लगा उहां धर्म धन खर्चनेमेंभी पीछी पानी भरी नही.

सुरत पासके कतार गामके जीर्णोद्धारके वास्तेभी बहुत प्रशंसा पात्र मदद किई.

क्षत्रीयकुंड और सुविधिनाथ भगवंतके च्यवन, जन्म, ज्ञान, कल्याणकवाले काकंदीनगरीके तीर्थमे शीखरबंधी मंदीर वनाये.

महावीर स्वामीकी निर्वाणभूमी पावापुरीमें और जहां बीस तीर्थंकर मोक्ष पधारेथे एसे श्रीसमेत शिखरजी तीर्थमें जानेके स्टेसन गरेडीमेभी मंदिरजी वनाया.

जंगीपुरमेंभी नया मंदीर वनाया जाता है. और मारवाड, राजपुताना, अजीमगंज, शीखरजी, पावापुरी, काकंदी, राणी-गाम, आवुराज, उपरांत मुंबइमेभी जैन यात्रालुयोंको आश्रय-दायी धर्मशालायें उक्त महोदयकी झलाझल अचल कीर्ति स्थंभ रूप सुशोभित है.

तीर्थाधिराज श्रीशत्रुंजय तीर्थकी तलहटीमें सदाव्रत दीया जाता है और सिद्धाचलजी, तलाजा, वला, प्रमुख कीतनेहि स्थानोंपर उक्त महोदयके नामकी जैनपाठशालायें स्थापित होके ज्ञानवृद्धीका उद्योगभी सिरु किया गया है.

तदुपरांत उक्त महोदयने श्रीसिद्धाचलजी, पावापुरी, समेत शिखरजी, अयोध्याजी विगेरह स्थानोपर तीर्थयात्रा लेजानेका श्रीसंघभी निकालके संघवी तिलकभी करायेथे.

उक्त महोदय एसे पुण्य प्रतापी है की जिनकी संपूर्ण प्रशंसा लिखनेमें कलमकी ताकत नही है.

उक्त महोदयने १९०४ में बडोदे वाली तीसरी जैन श्वेतांबर कौनफरन्सके प्रमुख होके समस्त जैनोमे एक अग्रेसरपद लियाथा.

उक्त महोदयके धार्मिक और सार्वजनीक हितकार्यकी उदार

वृत्तिकी प्रतिष्टा बिजलीकी माफक प्रकाशक होती रही जिनका प्रत्यक्ष दृष्टांत यहहे की सने १८८८ ता. २ जानेवारीके रोज बंगालाके सरकारने अत्यंत प्रसन्न चित्त होके रायबहाडुरका मानवंता खिताब समर्पित कीया और मुर्शीदाबाद लालबागकी कचेरीमें ओनररी मेजीष्ट्रेटका मानवंता होद्दा इनायत किया और अपनी बकताबर मर्हुम श्रीमती महाराणीकी कायमरू जुबीलीकि यादगारीके प्रसंगमे ता. २० मी जुन स. १८८७ के रोज बादशाही मानका " खरीता " दीया गया था. तैसेंहिं ता. १ ली जानेवारी स. १९०३ के रोज अपने नामदार शेहेनशाह सातवे एडवरने हिंदुस्थानकी बादशाही स्वीकारी जिस्की यादगारीमें देहली दरबारके जव्य समारंजके समय रायबहाडुरकी उदारता और अपने लोकोपयोगी सार्वजनीक हितकार्यकी पीछानमे डुसरी बार " खरीत्ता " दिया गया था. यह राजमान होद्देकोजी अछी तोरसें दीपातेहें.

इस दरम्यान सने १८७७ में दोनो जाइयोने सलाह संपसे अपना अपना व्यापार जिन्नजिन्न चलाना सिरु किया हे परं जमीन जागीरोंका हिस्सा ज्योंका त्यों रक्खा हे.

यद्यपि व्यापारादि कार्य जिन्नथे तथापि पारस्परीय सलाह संपसें अजिन्नता समानहि प्रवर्तनथा.

सने १८८४ मे रायबहाडुर बाबु बिसनचंदजी अपनी पीछे १४ वर्षकी उमरके राजा विजयसिंघजी नामक कुमारको छोडके यह फानी डुनियाको छोड गएथे.

श्रीयुत बाबु बिसनचंदजीके गएबाद अपने छोटे जतीजे और उनकी बडी दोलत समालनेका और जोखमदारीका कार्य उक्त महोदयके सिरपर आय पडाया.

कायदेकी रीतसेंजी मुर्शीदाबाद जिल्ले ...

महोदयही राजा विजयसिंघजी और उनकी दोलतके रक्षक निमाये गएथे.

उक्त महोदयने अपनी बहादुरी और चालाकीसे उस काममें अपनी फर्ज बहुतहि अच्छी तरहसे बजायके उनकी ऋद्धीमें अधिकता करी और राजा विजयसिंघजीकों इंग्लिश, बंगाली, जैनधर्म प्रमुखकी अच्छी केलवणी देके आगे वढाये.

बाबु विजयसिंघजीकों सने १९०० मे ता. २२ डीसंबरके रोज लायक उमरवान होनेसे उनकी मिल्लकतका कबजा सूपरत कर दीया.

अच्छी जैसी आशाथी वेसेहि बाबु विजयसिंघजी एक युवक बुद्धीमान् पराक्रमी पुरुष हुए.

बाबु विजयसिंघजीका स्वभाव उनके पिताके माफक सद्गुणी व परोपकारी और धर्मकार्यमेंभी बहुत सतत प्रयत्नशील हुवा.

उपरोक्त दोनो महोदयोंने पुण्यानुबंधी प्राग्भार पुण्यके उदयसे जो जो आवश्यकीय कार्य किये है जिनका पूरेपुरा वर्णन करनेमें हमारी कलमको पूरे तोरके शब्दकोश देखनेका अवसर देखना पडता है.

हमारे लोंके गच्छके श्रीमंत श्रावक गणमे देशणोंकवाले रायबहादुर चांदमलजी ढढा, रींयावाले राय सेठजी चांदमलजी, अजमेरवाले रायबाहादुर सेठजी शोभागमलजी ढढा, जयपुरवाले राजमान्य सेठजी लक्ष्मीचंदजी व गुलाबचंदजीढढा,एम.ए. रायबहादुर गणपतसिंघजी डुगड, रायबहादुर महाराज बहादुर सिंघजी डुगड,रायबहादुर नरपतसिंघजी डुगड, राय लक्ष्मीपति सिंघजी छत्रसिंघजी डुगड, रायबहादुर शताबचंदजी नाहार विगरह विगरह पुण्यवंतोने यद्यपि अनेकानेक धार्मिक व्यवहारीक कार्यो करके जैन धर्मकों अनेकवार दीपाया हे विशेषकर बाबु लक्ष्मीपति सिंघजीनेभी अनेकानेक स्थानोंपर जिन मंदिर बन-

वाये और रायबहादुर श्रीधनपतसिंघजीने तो श्रीसिद्धाचलजीकी तलहट्टीपर तीर्थनायककी स्थापना समय अंजनशलाका करवायके लोंकगछपर आय पड़ता अपूजेरोंका आक्षेप दूर कराय दियाथा जिनसें इन महोदयोंका इस अवसरपर उपकार मानना दुरस्त धारते है. उपर लिखें महाशयोने यद्यपि लोंके गछकों शोभाया परं रायबहादुर श्रीमंत महोदय श्रीबुधसिंघजी दुधेरियाने तो अनेक तीर्थस्थानोपर अपने पुण्यकर्मोपार्जित न्याय लक्ष्मीकों सफल करनेमें अत्यंतहि अगवानी करी है. इतनाहिं नहिं परं लोंके गछवाले ढूंढक हें एसा जो आरोप था उनकों परास्त कर जैन धर्मको अत्यंत दीप्यमान करश्रीसंघमें (तीसरी कोन्फरन्समें) अग्रणीय पद धारण कीया इत्यादि इत्यादि कोटिक गुणगण संपन्न प्राग्भार पुण्यवंत सेठजी रायबहादुर श्रीबुधसिंघजी दुधेरियाकेहि हस्तकमलमे यह अनेकानेक जनमनानंद प्रद यह ग्रंथ समर्पण कर महोदयके अचल कीर्ति स्थंभक साथ इनकोभी अचल कीर्तिवंत करते हें जिनके वांचन मनन श्रवण कर अनेकानेक भव्य सत्वोंकों अनंतानंद अक्षय ज्ञानपदकी प्राप्ति हो यह हमारी अभीष्टार्थ सिद्धी है. तथास्तु.

प्रथमपरिच्छेदस्य विषयानुक्रमणिका.

॥ जैनधर्मसिंधु ॥

॥ श्रीश्रावकस्य पंचप्रतिक्रमणादि सूत्राणि ।

॥ १ ॥ प्रथमनवकार पंचमंगलरूप ॥

॥ नमो अरिहंताणं॥१॥नमो सिद्धाणं॥२॥ नमो आयरियाणं ॥३॥ नमो उवज्झायाणं॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ २ ॥ अथ पंचिंदिअ ॥

॥पंचिंदिअ संवरणो ॥ तह नवविह बंभचेर गुत्ति धरो ॥ चउविह कसाय मुक्को ॥ इअ अठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥१॥ पंच महव्वय जुत्तो॥ पंचविहायार पालणसमछो ॥ पंच समिउ ति गुत्तो॥ छत्तीस गुणो गुरु मज्झ ॥२॥ इति ॥२॥

॥ ३ ॥ अथ खमासमण ॥

॥ इछामि खमासमणो वंदिउं॥जावणिज्जाए निसीहिआए ॥ मछएण वंदामि ॥ इति ॥३॥

॥४॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृछा ॥

॥ इछकारि सुहराइ सुहदेवसी ॥ सुख तप शरीर निराबाध ॥ सुख संजम यात्रा निर्वहो छेजी ॥ स्वामी शाता छेजी ॥ भात पाणीनो लाभ देजो जी ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ ५ ॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इछाकारेण संदिसह भगवन् ॥ इरियावहियंपडिक्कमामि ॥ इछं इछामि पडिक्कमिउं ॥१॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥ गमणागमणे ॥३॥ पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ॥ उंसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया ॥ ५॥ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया ॥ किलामिया उद्दविया ठाणाउंठाणं संकामिया जीवियाउ ववरोविया ॥ तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ ७ ॥ इति ॥५॥

॥ ६ ॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥पायछित्तकरणेणं॥ विसोहीकरणेणं ॥ विसल्लीकरणेणं ॥ पावाणं

कम्माणं ॥ निग्घायणठाए ॥ ठामि. काउस्सग्गं ॥ ७ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ ७ ॥ अथ अन्नड उससिएणं ॥

॥ अन्नड उससिएणं नीससिएणं खासिएणं डीएणं जंन्नाइएणं उडुएणं वायनिसग्गेणं नमलिए पित्तमुछाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं॥सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं ॥२ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं ॥ अनग्गो अविराहिउ ॥ हुज मे काउस्सग्गो॥३॥ जाव अरिहंताणं नगवंताणं नमुक्कारेण न पारेमि ॥ ४ ॥ तावकायं ठाणेणं मोणेणं जाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ ७ ॥ अथ लोगस्स ॥

॥ लोगस्स उजोअगरे ॥ धम्म तिछयरेजिणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसन्न मजिअं च वंदे ॥ संनव मनिणंदणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सीअल सिजंस वासुपुजं च ॥ विमल मणंतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं

च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च ॥ वंदामि रिठनेमिं ॥ पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ ॥ विहूय रयमला पहीण जर मरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तिव्थयरामे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया ॥ जेए लोगस्सउत्तमासिद्धा ॥ आरुग्ग वोहिलानं ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा ॥ आइचेसु अहियं पयासयरा ॥ सागर वर गंनीरा ॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ सवलोए० ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ ए ॥ अथ सामायिकनुं पच्चरकाण ॥

॥ करेमि नंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चरकामि ॥ जाव नियमं पज्जुवासामि ॥ डुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ॥ न करेमि, न कारवेमि तस्स नंते पमिक्कमामि निंदामि गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ए ॥

॥ १० ॥ अथ सामायिक पारवानुं ॥

॥ सामाइयवयजुत्तो ॥ जाव मणे होइ नियम संजुत्तो ॥ छिन्नइ असुहं कम्मं ॥ सामाइअ जत्तिआ वारा ॥ १ ॥ सामाइअंमि उ कए ॥ स

मणो इव सावर्ज हवइ जम्हा ॥ एएण कारणे णं ॥ बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ २ ॥ सामायिक विधिं लीधुं विधिं पारिजं ॥ विधि करतां जे कोइ अविधि हुउं होय ते सवि हुं मन वचन कायाये करी ॥ मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥१८॥

॥१९॥अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥

॥ इछाकारेण संदिसह भगवन् ॥ चैत्यवंदन करुं ॥ इछं ॥ जगचिंतामणि जगनाह ॥ जग गुरु जगरस्कण ॥ जगबंधव जगसत्थवाह॥ जग भाव विअस्कण ॥ अठावय संठविअ ॥ रुव कम्मठ विणासण ॥ चउवीसंपि जिणवर ॥ जयं तु अप्पडिहयसासण ॥ १ ॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं ॥ पढम संघयणि ॥ उक्कोसय सत्तरिसय ॥ जिणवराण विहरंत लप्नइ ॥ नव कोडिहिं केवलिण ॥ कोडि सहस्स नव साहु गम्मइ ॥ संपइ जिणवरवीसमुणि ॥ विहुं कोडिहिं वरनाण ॥समणह कोडि सहस ङुअ ॥ थुणि जि अनिच्च विहाणि॥२॥जयउ सामी जयउ सामी॥ रिसह सत्तुंजि ॥ उज्जित पहु नेमिजिण ॥ जयउ वीर सच्चउरि मंमण ॥ भरुअठहिं मुणिसुव्वय ॥

॥१६॥ अथ परमेष्ठिनमस्कार ॥

॥नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः॥ इति ॥ १६ ॥

॥१७॥ अथ उपसर्गहरस्तवन ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्म घणमुक्कं ॥ विसहरविसनिन्नासं ॥ मंगलक ल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं ॥ कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥ तस्स गहरोगमारी डुठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिठउ दूरे मंतो ॥ तुज्झ पणामोवि वहुफलो होइ ॥ नर तिरिएसुवि जीवा ॥ पावंती न डुक्ख दोहग्गं ॥ ३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे ॥ चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए ॥ पावंति अविग्घेणं ॥ जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुउ महायस ॥ भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण ॥ ता देव दिज्ज वोहिं भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥१८॥ अथ जयवीअराय

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ मम तुह पभावउ भयवं ॥ भवनिव्वेउ मग्गा ॥ णु सारि आ इट्ठफलसिद्धि ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाउ ॥

गुरुजणपूआ परत्थकरणं च ॥ सुहगुरुजोगो तव्वयण ॥ सेवणा आभव मखंडा ॥ २ ॥ वारि जइ जइवि निआण ॥ बंधणं वीअराय तुह समए ॥ तहवि मम हुज्ज सेवा ॥ भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥ डुक्खक्खउ कम्मक्खउ ॥ स माहि मरणं च बोहिलाभो अ ॥ संपज्जउ मह एअं ॥ तुह नाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥ सर्व मंगलमांगल्यं ॥ सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां ॥ जैनं जयति शासनम् ॥५॥१८॥

॥ १ए ॥ अथ अरिहंत चेइआणं ॥

॥ अरिहंत चेइआणं ॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥ वंदण वत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए ॥ बोहि लाभ वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए ॥२॥ सध्धाए मेहाए धीईए ॥धारणाए अणुप्पेहाए॥ वढ्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं॥३॥ अन्नत्थ०इति

॥ २० ॥ अथ कल्लाणकंदं स्तुति ॥

॥ कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं ॥ संतिं तओ नेमिजिणं मुणिंदं ॥ पासं पयासं सुगणिक्कठाणं ॥ भत्तीइ वंदे सिरि वध्धमाणं ॥ १ ॥ अपार सं

मुहरिपास इह हरिअखंमण ॥ अवर विदेहिं तिहयरा ॥ चिहुं दिसि विदिसि जिं केवि ॥ ती अणागय संपइअ ॥ वंडं जिण सवेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा ॥ लक्का छप्पन्न अठकोडि ॥ वत्तीस बासिआइं ॥ तिअलोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पनरस कोमि सयाइं ॥ कोमी वायाल लक्क अम्फवन्ना ॥ छत्तीस सहस असिआइं ॥ सासयबिंबाइं पणमामि ॥ ५ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ १२ ॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ जं किंचि नाम तिहं ॥ सग्गे पायालि माणुसे लोए ॥ जाइं जिण बिंबाइं ॥ ताइं सबाइं वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ १३ ॥ अथ नमुहुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुणं अरिहंताणं, नगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तिहयराणं, सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसोत्तमाणं, पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंमरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगोत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जो अगराणं ॥ ४ ॥ अजयदयाणं, चक्कुदयाणं ॥ मग्गदयाणं, सरणदयाणं,

वोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसिया णं ॥ धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर चाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवर नाणदंसणधराणं, विअट्ट छउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मक्ख य मव्वावाह मपुणरावित्ति ॥ सिद्धि गइ नाम धेयं ॥ ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअ भ याणं ॥ए॥ जेअ अईआ जेअ सिद्धा ॥ जेअ भवि स्संति णागए काले ॥ संपइअ वट्टमाणा॥ सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥ इति ॥ १३ ॥

॥१४॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उड्ढेअ अहेअ तिरि अलोएअ ॥ सव्वाइं ताइं वंदे ॥ इहसंतो तत्थ संताइं॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥१५॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ जावंत केवि साहू ॥ भरहेरवय महाविदे हे अ ॥ सव्वेसिं तेसिं पणओ ॥ तिविहेण तिदं ड विरयाणं ॥ १ ॥ इति ॥

सारसमुद्दपारं ॥ पत्ता सिवं दिंतु सुइक्कसारं ॥ सव्वे जिणंदा सुरविंदवंदा ॥ कल्लाणवल्लीणवि सालकंदा ॥ २ ॥ निव्वाणमग्गे वर जाणंकप्पं॥ पणासिया सेस कुवाइदप्पं ॥ मयं जिणाणं स रणं बुहाणं ॥ नमामि निच्चं तिजग प्पहाणं॥३॥ कुंदिंदुगोक्खीरतुसारवन्ना ॥ सरोजहत्था कमले निसन्ना ॥ वाएसिरी पुत्थयवग्गहत्था ॥ सुहाय साअह्म सया पसत्था ॥ ४ ॥

॥ २१ ॥ अथ स्नातस्यानी स्तुति ॥

॥ स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे, शच्याविभोः शैशवे ॥ रूपालोकनविस्मयाहृतरस,भ्रांत्या भ्रमच्चक्षुषा ॥ उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं, क्षीरोदकाशंकया ॥ वक्रं यस्य पुनः पुनः सजयति, श्रीवर्द्धमानो जिनः ॥ १ ॥ हंसांसाहत पद्मरेणुकपिशक्षीरार्णवांभोभृतैः ॥ कुंभैरप्सरसां पयोधरभरप्रस्पर्द्धिभिः कांचनैः ॥ येषांमंदररत्नशैलशिखरे जन्माभिषेकः कृतः ॥ सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणैस्तेषां नतोऽहं क्रमान् ॥ २ ॥ अर्हद्वक्त्रप्रसूतं गणधररचितं द्वादशांगं विशालं, चित्रं वह्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषभैर्धारितं बुद्धि

मद्भिः ॥ मोक्षाग्रद्वारनूतं व्रतचरणफलं ज्ञे
यन्नावप्रदीपं, नत्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुतमहम
खिलं सर्वलोकैकसारम् ॥ ३ ॥ निष्पंकव्योम
नीलद्युतिमलसदृशं बालचंद्राभदंष्ट्रं, मत्तं घं
टारवेण प्रसृतमदजलं पूरयंतं समंतात् ॥ आ
रूढो दिव्यनागं विचरति गगने कामदः काम
रूपी, यक्षः सर्वानुनूतिर्दिशतु मम सदा सर्व
कार्येषु सिद्धिम् ॥ ४ ॥ इति श्रीमहावीरजि
नचतुर्दशीस्तुतिः ॥ ११ ॥

॥ अथ संसारदावानी स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं ॥ संमोहधूली
हरणे समीरम् ॥ मायारसादारणसारसीरं ॥
नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ नावावनाम
सुरदानवमानवेन ॥ चूलाविलोलकमलावलि
मालितानि ॥ संपूरितान्निनतलोकसमीहि
तानि ॥ कामं नमामि जिनराजपदानि तानि
॥ २ ॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूरान्निरामं ॥
जीवाहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चू
लावेलं गुरुगममणीसंकुलं दूरपारं ॥ सारं वी
रागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥ आम

लालोलधूलीवहुलपरिमलालीढलोलालिमाला॥ ॐकारारावसारामलदलकमलागारभूमिनिवासे॥ गयासंभारसारे वरकमलकरे तारहाराभिरा मे॥ वाणीसंदोहदेहे भवविरहवरं देहि मे देवि सारम्॥ ४॥ इति॥ १२॥

॥१३॥ अथ पुक्खरवरदी॥

॥ पुक्खरवरदीवढे॥ धायइसंडे अ जंबुदी वे अ॥ भरहे रवय विदेहे॥ धम्माइगरे नमं सामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धंसण, स्स ॥ सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधर स्स वंदे ॥ पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ २ ॥ जाई जरामरणसोगपणासणस्स ॥ कल्लाण पुक्कलविसालसुहावहस्स॥ को देवदाणवन रिंदगणच्चिअस्स ॥ धम्मस्स सार सुवलभ्भ करे पमायं॥ ३॥ सिद्धेभोपयउ णमो जिणम ए, नंदी सया संजमे॥ देवं नाग सुवन्न कि न्नर गण, स्सब्भुअ भावच्चिए॥ लोगो जत्थ पइ ठिउ जगमिणं, तेलुक्कमच्चासुरं॥ धम्मो वढ्ढउ सासवउ, विजयउ, धम्मुत्तरं वढ्ढउ॥४॥ सुअस्स भगवउ केरमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए० ॥

॥२४॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं, बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगया णं ॥ लोअग्ग मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥ संसारसागराउ तारेइ नरंव नारिंवा ॥३॥ उज्जिंत सेल सिहरे, दिक्का नाणं निसीहिआ जस्स ॥ तं धम्मचक्क वट्टिं,अरिठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दसदो य, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं ॥ परमठ निठिअठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति२४

॥२५॥ अथ वेयावच्चं गराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्मद्दिठि समाहि गराणं ॥ इति ॥ २५ ॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नच० ॥

॥२६॥ अथ नगवानादि वंदन ॥

॥ नगवान् हं ॥ आचार्य हं ॥ उपाध्याय हं ॥ सर्वसाधु हं ॥ इति ॥ २६ ॥

॥२७॥ अथ देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ॥ देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं ॥ इच्छं सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ ॥ दुब्भासिअ दुच्चिठिअ ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥ २७ ॥

॥२८॥ अथ इच्छामि ठामि ॥

॥ इच्छामि ठामि काउस्सग्गं ॥ जो मे देवसिउ अइआरो कउ ॥ काइउ वाइउ माणसिउ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो ॥ अकरणिज्जो दुज्झाउ ॥ दुविचिंतिउ अणायारो ॥ अणिच्छिअव्वो ॥ असावगपाउग्गो ॥ नाणेतह दंसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए समाइए ॥ तिन्हं गुत्तीणं॥चउन्हं कसायणं ॥ पंचन्हमणुव्वयाणं ॥ तिन्हं गुणव्वयाणं ॥ चउन्हं सिक्खावयाणं ॥ बारसविहस्स सावगधम्मस्स ॥ जं खंडिअं जं विराहिअं ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥ २८ ॥

॥२९॥ अथ अतिचारनी आठ गाथा॥

॥ नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमितह्य विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिउ ॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे

उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अह तदुन्न ए, अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ निस्संकि अ निक्कंखिअ, निवितिगिन्ना अमूढ दिठीअ॥ उववूह थिरीकरणें, वन्नल पन्नावणे अह ॥ ३ ॥ पणिहाणजोगजुत्तो पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं ॥ एस चारित्तायारो, अठविहो होइ ना यवो ॥ ४ ॥ बारसविहंमि वि तवे, सब्निंतरबा हिरे कुसलदिठे ॥ अगिलाइ अणाजीवी, ना यवो सो तवायारो ॥ ५ ॥ अणसणमूणोअरि या, वित्ती संखेवणं रसच्चाउं ॥ कायकिलेसो संली, ण याय बझो तवो होई ॥ ६ ॥ पाय ल्छित्तं विणउं, वेयावच्चं तहेव सद्यार्ज ॥ झाणं उ स्सग्गो विय, अप्निंतरउं तवो होई ॥७॥ अण गूहिअ बल विरिउं, पडिक्कमइ जो जुहुत्त मा उत्तो ॥ जुंजइअ जहाथामं, नायबो वीरिआया रो ॥ ८ ॥ इति ॥ २९ ॥

॥३०॥ अथ सुगुरुवांदणां ॥

॥ इछामि खमासमणो वंदिउं, जावणि जाए निसीहिआए ॥ अणुजाणह मे मि उग्ग हं निसीहि ॥ अहो कायं काय संफासं, खम

णिज्जो भे किलामो ॥ अप्पकिलंताणं बहु सुभे
ण भे, दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे ॥ जवणिज्जं
च भे, खामेमि खमासमणो ॥ देवसिआए वइक्क
मं आवसिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं ॥
देवसिआए, आसायणाए ॥ तित्तीसन्नयराए
जं किंचि मिछाए, मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए ॥
कायदुक्कडाए कोहाए, माणाए, मायाए, लोभा
ए, सबकालिआए ॥ सव मिछोवयाराए, सबध
म्माइक्कमणाए ॥ आसायणाए जो मे अइआ
रो कर्ज, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि ॥ निं
दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ बी
जीवारने वांदणे आवसिआए ए पद न कहेवुं
अने रात्रियें राइउंवइक्कंतो, तथा चउमासीयें
चउमासी वइक्कंतो, पक्खीयें पक्खो वइक्कंतो सं
वछरीयें संवछरो वइक्कंतो ॥ एवी रीतें पाठ क
हेवो ॥ इति ॥ ३० ॥

॥ ३१ ॥ अथ देवसिअं अलोउं ॥

॥ इछाकारेणसंदिसह भगवन्देवसिअं आ
लोउं इछं ॥ आलोएमि जोमे०॥ इति ॥ ३१ ॥

॥३२॥ अथ सातलाख ॥

॥ सात लाख पृथ्वीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥ चउद लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ बे लाख बेइंद्रिय॥बे लाख तेंद्रिय ॥ बे लाख चौरिंद्रिय॥ चार लाख देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय । चौद लाख मनुष्य ॥ एवं कारे चोराशीलाख जीवायोनिमांहि, माहारे जीवें जे कोइजीव हण्यो होय,हणाव्यो होय,ह णता प्रत्यें अनुमोद्यो होय, ते सवेहुं मनेवचने कायायें करीतस्स मिछामि डुक्कडं ॥इति॥ ३२ ॥

॥३३॥ अथ अढार पापस्थानक ॥

॥ पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद त्री जें अदत्तादान, चौथे मैथुन, पांचमे परिग्रह छठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ, दशमे राग, इग्यारमे द्वेष, बारमे कल ह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमें पैशुन्य, पन्नरमे रति अरति, शोलमे परपरिवाद, सत्तरमे माया मृषावाद, अढारमे मिथ्यात्वशल्य, ए अढार पा

परस्थानमांहे, म्हारे जीवें जे कोइ पाप सेव्युं होय, सेंवराव्युं होय, सेवता प्रत्यें अनुमोद्युं होय, ते सवे हुं मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ३३ ॥

॥३४॥ अथ सवस्सवि ॥

॥ सवस्सवि देवसिअ डुचिंतिअ, डुब्भासी अ डुचिठिअ ॥ इछाकारेण संदिसह जगवन् इछं० ॥ तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥३५॥ अथ श्रावकवंदितासूत्र ॥

॥ वंदितु सव सिद्धे, धम्मायरिएअ सव साहूअ ॥ इछामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइ आरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्तेअ ॥ सुहुमो अ वायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥२॥ डुविहेपरिग्गहंम्मि, सावज्जे वहुविहेअ आरंजे ॥ कारावणेअ करणे,पडिक्कमे देसिअं सवं ॥ ३ ॥ जं वद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसहेहिं॥रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाजोगे ॥ अनिउंगेअ निउंगे, पडिक्कमे० ॥ ५ ॥ संका कंख वि

गिछा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ सम्मत्त स्स इआरे, पमिक्कमे० ॥ ६ ॥ बक्कायसमारंने, पयणे अ पयावणेय जे दोसा ॥ अत्तठाय पर ठा, उनयठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचएहमणुव याणं, गुणवयाणं च तिएह मइयारे ॥ सिरका णं च चउएह, पडिक्कमे० ॥८॥ पढमे अणुवयं मि, थूलग पाणाइवाय विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इब पमायप्पसंगेणं ॥ ए ॥ वहबंध बविछेए, अइ नारे नत्त पाण वुछेए ॥ पढम व यस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १० ॥ बीए अणुव यंमि, परिथूलगअलिवयणविरईउ ॥ आ यरिअमप्पसत्थे, इब पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ॥ बीय वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १२ ॥ तइए अणुवयंमि, थूलग परदवहरणविरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इब पमायप्पसंगेणं ॥ ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पउगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध ग मणे अ ॥ कूडतूल कूडमाणे, पडिक्कमे० ॥१४॥ चउबे अणुवयंमि, निच्चं परदारगमण विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इब पमायप्पसंगेणं

॥ १५॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग वीवाह तिव्व अणुरागे ॥ चउत्थ वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पंचमंमि आयरिअ मप्पसत्थंमि ॥ परिमाण परिछेए, इथ पमाय प्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्थू, रुप्प सुवन्ने अ कुविअ परिमाणे ॥ डुपए चउप्पयंमि,पडिक्कमे० ॥ १८ ॥ गमणस्सउ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहेअ तिरिअं च ॥ वुड्ढिसइअंतरध्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमिअ मंसंमिअ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्लेअ ॥ उवनोगे परिनोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पम्बिध्धे, अप्पोल डुप्पोलिअं च आहारे ॥ तुछोसहि नरकणया, पम्किमे० ॥ २१ ॥ इंगाली वणसाडी, नाडी फोमी सुवजाए कम्मं ॥ वाणिज्जं चेवय दंत, लरक रस केस विसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं ॥ सरदह तलाय सोसं, असईपोसं च वजिज्जा ॥ २३ ॥ सछगिग मुसल जंतग, तणकठे मंत मूल नेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविए वा, पम्किमे० ॥ २४ ॥ न्हाणूवट्टण वन्नग, वि

लेवणे सद्दरूव रस गंधे ॥ वन्नासणञ्आभ्भर णे, पमिक्कमे० ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कइए, मोहरि अहिगरण जोग अइरित्ते ॥ दंमंमि अणठाए, तइअंमि गुणवए निंदे ॥२६॥ तिविहे छुप्पणि हाणे, अणवठाणे तहा सइविहूणे ॥ सामाइअ वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे ॥ देसावगासिअंमि, वीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव जोयणा जोए ॥ पोसह विहि विवरीए, तइए सिक्खाव ए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव ॥ कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिए सुअ डुहिए सुअ, जामे असंजएसु अणुकंपा ॥ रागेणव दोसेणव, तं निंदे तंच गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहू सु संविभागो, न कउ तव चरणकरणजुत्तेसु ॥ संते फासु अ दाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इह लोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंसपउगे ॥ पंचविहो अइआरो, मा मक हुज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पमि

कमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसिअ स्स, सवस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिरकागा, रवेसु सन्ना कसाय दंडेसु ॥ गुत्ती सुअ समिईसुअ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मदिठी जीवो, जइ विहु पावं समा यरे किंचि ॥ अप्पोसि होइ वंधो, जेण न निंध धसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पिहुसपमिक्कमणं, सप्प रिआवं सउत्तरगुणं च॥ खिप्पं उवसामेइ वाहि व सुसिक्खिउ विज्जों ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुठ गयं, मंत मूल विसरया ॥ विज्जा हणंति मंते हिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३० ॥ एवं अठविहं कम्मं, राग दोस समज्जिअं ॥ आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावउ ॥ ३ए ॥ कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरुस गासे ॥ होइ अइरेग लहुउ, उहरिअ नरुव्व नारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावउ जइवि वहुरउ होइ ॥ छुकाण मंत किरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा वहुविहा, नयसंभरिआ पमिक्कमणकाले ॥ मूल गुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि॥४२॥

तस्स धम्मस केवलि पन्नत्तस्स ॥ अब्भुठिउंमि आरा, हणाए विरउंमि विराहणाए॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं० ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू० ॥ ४५ ॥ चिरसंचिय पाव पणासणीइ, नवसय सहस्स महणीए ॥ चउवीस जिण विणिग्गय कहाइं, वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता सिद्धा साहू सुअं च धम्मो आ॥सम्म दिठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥प डिसिद्धाणं करणे, किच्चाण मकरणे पडिक्कम णं ॥ असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे॥ मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ॥ ४९ ॥ एव महं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ ३६ ॥ अथ अब्भुठिउं ॥

॥ इच्छाकरेण संदिसह भगवन्, अब्भुठिउंमि, अब्भिंतर देवसिअंखामेउं ॥ इच्छं खामेमि देवसिअं, जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं ॥ भ

त्ते पाणे विणए वेआवच्चे, आलावे संलावे उ
च्चासणे ॥ समासणे अंतरभासाए, उवरिभासा
ए जं किंचि ॥ मज्ज विणय परीहिणं, सुहुमं
वा वायरं वा ॥ तुम्नेजाणह, अहं न याणामि॥
तस्स मिछामि ङक्कडं ॥ इति ॥ ३६ ॥

॥ अथ आयरिअ उवद्याए ॥

॥ आयरिअ उवद्याए, सीसे साहम्मिए
कुलगणेअ ॥ जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण
खामेमि ॥ १ ॥ सवस्स समण संघस्स, नगव
र्ज अंजलिं करिअ सीसे ॥ सव्वं खमावइत्ता,
खमामि सवस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सवस्स जीव
रासिस्स, नावर्ज धम्मो निहिअ निअचित्तो ॥
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सवस्सअहयंपि ॥३॥

॥३७॥ अथ नमोस्तु वर्ध्दमानाय ॥

॥ इछामो अणुसठिं, नमो खमासमणाणं ॥
नमोर्हत्० ॥ नमोस्तु वर्ध्दमानाय, स्पर्ध्दमानाय
कर्म्मणा ॥ तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुती
र्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या, ज्यायः
क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं
प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते जिनेंद्राः

॥ २ ॥ कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं, करोति यो जैनमुखांबुदोजतः ॥ सशुक्रमासोद्भववृष्टि सन्निजो, ददातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥३॥

॥३ए॥ अथ विशाललोचन ॥

॥ विशाललोचनदलं, प्रोद्यद्दंतांशुकेशरम् ॥ प्रातर्वीरजिनेंद्रस्य, मुखपद्मं पुनातु वः ॥ १ ॥ येषामजिषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षजरात् सुखं सुरेंद्राः ॥ तृणमपि गणयंति नैव नाकं, प्रातः संतु शिवाय ते जिनेंद्राः ॥ २ ॥ कलंकनिर्मुक्त ममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयम् ॥ अ पूर्वचंद्रं जिनचंद्रजाषितं, दिनागमे नौमि बुधै र्नमस्कृतम् ॥ ३ ॥ इति ॥ ३ए ॥

॥४०॥ अथ सूत्रदेवक्षेत्रदेव स्तुतिः ॥

॥ सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं० ॥ सुअ देवया जगवई, नाणा वरणीअ कम्म संघायं॥ तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुअसायरे जत्ती॥१॥

॥४१॥ अथ खित्तदेवयाए करेमि० ॥

॥ जीसे खित्ते साहू, दंसण नाणेहिं चरण सहिएहिं ॥ साहंति मुरकमग्गं, सा देवी हरउ डुरिआई ॥ १ ॥ ॥ इति ॥ ४१ ॥

॥४२॥ अथ कमलदलस्तुति ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्भसमगौरी ॥ कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेवता सिद्धिम् ॥ ॥१॥ इति ॥ ४२॥

॥४३॥ अथ भुवणदेवयादिस्तुति ॥

॥ भुवण देवयाए करेमि काउस्सग्गं० ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ १ ॥ इति ॥ ४३ ॥

॥४४॥ अथ ज्ञानादिगुणयुतानां ॥

॥ ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्याय संयमरतानां ॥ विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ १ ॥ इति ॥ ४४ ॥

॥४५॥ अथ अड्ढाइज्जेसु मुनिवंदन ॥

॥ अड्ढाइज्जेसु दीव समुद्देसु, पन्नरसु कम्मभूमीसु ॥ जावंत केविसाहू, रयहरण गुच्छ पडिग्गह धारा ॥ पंचमहव्वयधारा, अठारस सहस्स सीलंगधारा ॥ अरकयायारचरित्ता, ते सवे सिरसा मणसा मच्छएण वंदामि ॥ १ ॥इति॥४५॥

॥ ४६ ॥ अथ वरकनक ॥

॥ वरकनकशंखविद्रुम, मरकतघनसन्निजंवि
गतमोहम् ॥ सप्ततिशतं जिनानां, सर्वामरपू
जितं वंदे ॥ १ ॥ इति ॥ ४६ ॥

॥४७॥ अथ लघुशांतिस्तवः ॥

॥ शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांता शिवं
नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदै
शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ उंमिति निश्चितवचसे,
नमो नमो जगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांतिजिनाय
जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥
सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्या
य ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च नमो नमः शांतिदे
वाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिक सं
पूजिताय निजिताय ॥ जुवनजनपालनोद्यत,
तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वडरितौ
घनाशनकराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ डुष्ट
ग्रहजूतपिशा, च शाकिनीनां प्रमथनाय ॥
॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्योपयो
गकृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च
नुता नमत तं शांतिम् ॥ ६ ॥ जवतु नमस्ते ज

गवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥ अपरा
जिते जगत्यां, जयतीति जयावहे भवति ॥ ७ ॥
सर्वस्यापि च संघस्य, भद्रकल्याणमंगलप्रददे
॥ साधूनां च सदा शिव, सुतुष्टिपुष्टिप्रदे
जीयाः ॥ ८ ॥ भव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृत्ति
निर्वाणजननि सत्त्वानाम् ॥ अभयप्रदाननिर
ते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥ ९ ॥ भक्तानां
जंतूनां शुभावहे नित्यमुद्यते देवि ॥ सम्यग्
दृष्टीनां धृति, रतिमतिबुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥
जिनशासननिरतानां, शांतिनतानां च जग
ति जनतानाम् ॥ श्रीसंपत्कीर्त्तियशो, वर्द्धनि
जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानलविष
विषधर, दुष्टग्रहराजरोगरणभयतः ॥ राक्ष
सरिपुगणमारी, चौरेतिश्वापदादिभ्यः॥ १२ ॥
अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शांतिं च कुरु
कुरु सदेति ॥ तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्व
स्तिं च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥ भगवति गुणवति
शिवशां, ति तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरु कुरु जना
नाम् ॥ ॐ मिति नमो नमो ह्रौं, ह्रीं ह्रूँ ह्रः ॥
यः क्षः ह्रीं फुट् फुट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्ना

माद्धर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवि ॥ कुरुते शांतिं नमतां, नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरिदर्शित, मंत्रपदविदर्भितः स्तवः शांतेः ॥ सलिलादिभ्नयविनाशी, शांत्यादिक रश्च नक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा शृणोति नावयति वा यथायोग्यम् ॥ स हि शां तिपदं यायात्, सूरिश्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उ पसर्ग्गाः क्षयं यांति, बिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ स र्वमंगलमांगल्याम्, सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधा नं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १ए ॥ ॥ इति श्री लघुशांतिस्तवः ॥ ४७ ॥

॥ ४८ ॥ अथ श्री चउक्कसाय ॥

॥ चउक्कसाय पडिमल्लूल्लुरणु, डुज्जय मयण वाणु मुसुमूरणु ॥ सरस पिअंगु वन्नुगयगामि उ, जयउ पासु नुवणत्तयसामिउ ॥ १ ॥ जसु तणु कांति कडप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणि मणि किरणालिद्धउ ॥ नं नव जलहर तडिल्लय लंछि उ, सो जिणु, पासु पयछउ वंछिउ ॥ २ ॥ इति चउक्कसाय ॥ ४८ ॥

॥ ४ए ॥ अथ श्री ज्ररहेसरनी सद्माय ॥

॥ ज्ररहेसर बाहुबली, अज्ञयकुमारो अ ढं ढण कुमारो ॥ सिरिज अणियाजत्तो, अश्मुत्तो नागदत्तो अ ॥ १ ॥ मेअज्ज थूलिज्ञद्दो, वयर रिसी नंदिसेण सीहगिरि ॥ कयवन्नो अ सुको सल, पुंमरिर्ज केसि करकंमू ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल सुदंसण, साल महासाल सालिज्ञद्दो अ ॥ ज्ञ द्दो दसन्नज्ञद्दो, पसन्नचंदो अ जसज्ञद्दो ॥ ३ ॥ जंबुपहु वंकचूलो, गयसुकुमालो अवंतिसुकु मालो ॥ धन्नोइलाइपुत्तो, चिलाइपुत्तो आ बाहु मुणी ॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्जरक्खिअ, अज्जसु हत्थी उदायगो मणगो ॥ कालयसूरि संबो, प ज्जुन्नो मूलदेवो अ ॥ ५ ॥ पज्ञवो विन्हुकुमारो अद्दकुमारो दढप्पहारीअ ॥ सिज्जंस कुरगमू अ सिज्जंज्ञव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥ एमाइ महा स त्ता, दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता ॥ जेसिं नाम ग्गहणे पावपबंधा विलयंजंति ॥ ७ ॥ सुलसा चंदनबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती ॥ न मयासुंदरी सीया, नंदा ज्ञद्दा सुज्ञ्ना य ॥ ८ ॥ राइमई रिसिदत्ता, पजमावइ अंजणा सिरी दे

वी ॥ जिठ सुजिठ मिगावइ, पभावई चिल्लणा देवी ॥ ए ॥ बंभी सुंदरी रुप्पिणि, रेवई कुंती सिवा जयंती य ॥ देवइ दोवइ धारिणी, कलाव ई पुप्फचूला य ॥ १० ॥ पउमावई य गोरी, गं धारी लक्कमणा सुसीमा य ॥ जंबूवइ सच्चभा मा, रुप्पिणि कन्दठ महिसीर्ज ॥ ११ ॥ जक्का य जक्कदिन्ना, भूआ तह चेवभूअदिन्ना य ॥ सेणा वेणा रेणा, भयणीर्ज थूलिभद्दस्स ॥१२॥ इच्चाइ महासइर्ज, जयंति अकलंकसीलकलि आर्ज ॥ अज्जवि वज्जइ जासिं, जस पडहो तिहु अणे सयले ॥ १३ ॥ ॥ इति सता सतीयोनी सद्याय ॥ ४ए ॥

॥ ५० ॥ अथ श्री मन्हजिणाणं सद्याय ॥

॥ मन्हजिणाणं आणं, मिछं परिहरह धर सम्मत्तं ॥ छव्विह आवस्सयंमि, उज्जुत्तो होइ पइ दिवसं ॥ १ ॥ पवेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो अ भावो अ ॥ सज्झाय नमुक्कारो, परोवया रो अ जयणा अ ॥ २ ॥ जिणपूआ जिनथूणि णं, गुरुथुअ साहम्मिआण वच्छल्लं ॥ ववहार स्स य सुद्धि, रहजुत्ता तिछजुत्ता य ॥ ३ ॥ उव

सम विवेक संवर, भासासमिई छजीव करुणा य ॥ धम्मिअ जण संसग्गो, करणदमो चरिण परिणामो ॥ ४ ॥ संघोवरि बहु मानो, पुत्थय लिहणं पभावणा तित्थे ॥ सड्ढाण किच्च मेअं निच्चं सुगुरूवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥ ५० ॥

॥ ५१ ॥ अथ श्री तीर्थवंदना ॥

॥ सकल तीर्थ वंडु करजोड्य, जिनवरनामे मंगल कोड्य ॥ पहेले स्वर्गे लाख बत्रीश, जिनवर चैत्य नमुं निशदीस ॥ १ ॥ बीजे लाख अठाविश कह्यां, त्रीजे बार लाख सर्दह्यां ॥ चोथे स्वर्गे अम लख धार, पांचमे वंडु लाख ज चार, ॥ २ ॥ छठे स्वर्गे सहस पचास, सातमे चालिश सहस प्रासाद ॥ आठमे स्वर्गे छ हजार, नव दसमे वंडु शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार बारमे त्रणशे सार, नवग्रैवेयके त्रणशे अढार ॥ पांच अणुत्तर सर्वे मली, लाख चोराशी अधिकां वली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणुं त्रेविश सार, जिनवर भुवन तणो अधिकार ॥ लांबां शो जोजन विस्तार, पचास उंचां बोहोंतेर धार ॥ ॥ ५ ॥ एकशो एंशी बिंब परिमाण, सभासहि

त एक चैत्ये जाण ॥ शो कोम बावन कोम स त्ताल, लाख चोराणुं सहस चौंत्र्याल ॥ ६ ॥ सातशें उपर साठ विशाल, सवि बिंब प्रणमु त्रण काल ॥ सात कोमि ने बोहोतेर लाख ॥ जुवनपतिमां देवल जांख ॥ ७ ॥ एकशो एंशी बिंब प्रमाण, एक एक चैत्ये संख्या जाण ॥ तेरशे कोम नेव्याशी कोम, साठ लाख वंदूं कर जोमि ॥ ८ ॥ बत्रीशे ने उंगणसाठ, तिर्छलोकमां चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशे वीश ते बिंब जुहार ॥ ए ॥ व्यंतर जोतिषिमां वली जेह शाश्वता जिनवर वंडुं तेह ॥ रुषज्न चंडानन वारिखेण, वर्द्धमान नामे गुणश्रेण ॥ १० ॥ समेतशिखर वंदूं जिन वीश, अष्टापद वंडुं चोवीश ॥ विमलाचल ने गढ गिरनार, आबु ऊपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥ शंखेश्वर केशरियो सार, तारंगे श्री अजित जुहार ॥ अंतरीक वरकाणो पास, जीरावलो ने थंज्ञण पास ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पाटण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह ॥ विहरमान वंडुं जिन वीश, सिद्ध अनंत नमुं निशि

दीस ॥ १ ३॥ अढीद्वीपमां जे अणगार, अ ढार सहस सिलांगना धार ॥ पंच महाव्रत सु मिती सार, पाले पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥ वाह्य अभिंतर तप उजमाल, ते मुनि वंडुं गु णमणि माल॥नित नित ऊठी कीर्त्ति करूं,जीव कहे नवसायर तरूं ॥ १५ ॥ इति ॥ ५१ ॥

॥५२॥ अथ श्री सकलार्हत् ॥

॥ सकलार्हत्प्रतिष्टान, मधिष्ठानं शिवश्रियः ॥ भूर्भुवः स्वस्त्रयीशान, मार्हत्यं प्रणिदध्म हे ॥ १ ॥ नामाकृतिद्रव्यनावैः, पुनतस्त्रिजगज्ज नं ॥ क्षेत्रे काले च सर्वस्मि, न्नर्हतः समुपास्महे ॥ २ ॥ आदिमं पृथिवीनाथ, मादिमं निःपरि ग्रहम् ॥ आदिमं तीर्थनाथं च, रुषनस्वामिनं स्तुमः ॥ ३ ॥ अर्हंतमजितं विश्व, कमलाकर नास्करम् ॥ अम्लानकेवलादर्श, संक्रांतजगतं स्तुवे ॥ ४ ॥ विश्वनव्यजनाराम, कुल्यातुल्या जयंतु ताः ॥ देशनासमये वाचः, श्रीसंनवज गत्पतेः ॥ ५ ॥ अनेकांतमतांनोधि, समुल्लास नचंद्रमाः ॥ दद्यादमंदमानंदं, नगवानभिनंद नः ॥ ६ ॥ द्युसत्किरीटशाणाग्रो, त्तेजितांघ्रिन

खावलिः ॥ ज्ञगवान् सुमतिस्वामी, तनोत्वजिम तानि वः ॥ ७ ॥ पद्मप्रज्ञप्रज्ञोर्देह, ज्ञासः पु ष्णंतु वः श्रियम् ॥ अंतरंगारिमथने, कोपाटो पादिवारुणाः ॥ ८ ॥ श्रीसुपार्श्वजिनेंडाय, महें डमहितांह्रये ॥ नमश्चतुर्वर्णसंघगगनाज्ञो गज्ञास्वते ॥ ए ॥ चंडप्रज्ञप्रज्ञोश्चंड, मरीचि निचयोज्ज्वला ॥ मूर्त्तिर्मूर्त्तसितध्यान, निर्मितेव श्रियेऽस्तु वः ॥ १० ॥ करामलकवद्दिश्वं, कल यन् केवलश्रिया ॥ अचिंत्यमाहात्म्यनिधिःसुवि धिर्बोधयेऽस्तु वः ॥ ११ ॥ सत्त्वानां परमानंद, कंदोद्भेदनवांबुदः ॥ स्याद्वादामृतनिस्यंदी, शीत लः पातु वो जिनः ॥ १२ ॥ ज्ञवरोगार्त्तजंतुना, मगदंकारदर्शनः ॥ निःश्रेयसश्रीरमणः, श्रे यांसः श्रेयसेऽस्तु वः ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकी ज्ञूत, तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः॥ सुरासुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यः पुनातु वः ॥ १४ ॥ विमलस्वामिनो वाचः, कतकक्षोदसोदराः ॥ जयंति त्रिजगच्चे तो, जलनैर्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥ स्वयंज्ञूरमण स्पर्द्धि, करुणारसवारिणा ॥ अनंतजिदनंतां वः, प्रयञ्चतु सुखश्रियां ॥१६॥ कल्पद्रुमसधर्म्माण,

मिष्टप्राप्तौ शरीरिणाम् ॥ चतुर्धा धर्मदेष्टारं, ध
र्म्मनाथमुपास्महे ॥ १७ ॥ सुधासोदरवाग्ज्यो
त्स्ना, निर्म्मलीकृतदिङ्मुखः ॥ मृगलक्ष्मा तमः
शान्त्यै, शांतिनाथजिनोऽस्तु वः ॥ १८ ॥ श्री
कुंथुनाथो भगवान्, सनाथोतिशयर्द्धिभिः ॥ सु
रासुरनृनाथाना, मेकनाथोऽस्तु वः श्रिये ॥१९॥
अरनाथस्तु भगवां, श्चतुर्थारनभोरविः ॥ चतु
र्थपुरुषार्थश्री, विलासं वितनोतु वः ॥ २० ॥
सुरासुरनराधीश, मयूरनववारिदम् ॥ कर्म्मद्रून्मू
लनेहस्ति, मल्लं मल्लिमभिष्टुमः ॥ २१ ॥ जग
न्महामोहनिद्रा, प्रत्यूषसमयोपमम् ॥ मुनिसुव्र
तनाथस्य, देशनावचनं स्तुमः ॥२२॥ लुठंतो
नमतां मूर्ध्नि, निर्मलीकारकारिणम् ॥ वारिप्ल
वाइव नमेः, पांतु पादनखांशवः ॥२३॥ यदुवंश
समुद्रेंदुः कर्म्मकक्षहुताशनः ॥ अरिष्टनेमिर्भ
गवान्, भूयाद्वोऽरिष्टनाशनः ॥२४॥ कमठे धर
णेंद्रे च, स्वोचितं कर्म कुर्वति ॥ प्रभुस्तुल्यम
नोवृत्तिः पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तु वः ॥ २५ ॥ श्री
मते वीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया ॥ महानं
दसरोराज, मरालायार्हते नमः ॥ २६ ॥ कृता

पराधेपि जने, कृपामंथरतारयोः ॥ ईषद्बाष्पार्द्र योर्भद्रं, श्रीवीरजिननेत्रयोः ॥२७॥ जयति वि जितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितः श्रीमान् ॥ विमलस्त्रासविरहित, स्त्रिभुवनचुमामणिर्भगवा न् ॥ २८ ॥ वीरः सर्वसुरासुरेंद्रमहितो वीरं बुधाः संश्रिताः, वीरेणाभिहतः स्वकर्मनि चयो वीराय नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्र वृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपो, वीरे श्रीधृति कीर्त्तिकांतिनिचयः श्रीवीरभद्रं दिश ॥ २९ ॥ अवनितलगतानां कृत्रिमाकृत्रिमानां, वरभुवन गतानांदिव्यवैमानिकानाम् ॥ इह मनुजकृतानां देवराजार्चितानां, जिनवरभुवनानां भावतोहं नमामि ॥ ३० ॥ सर्वेषां वेधसामाद्य, मादिमं परमेष्ठितम् ॥ देवाधिदेवं सर्वज्ञं, श्रीवीरं प्रणिद ध्महे ॥ ३१ ॥ देवोऽनेकभवार्जितोर्जितमहा पापप्रदीपानलो, देवःसिद्धिवधूविशाल हृदया ऽलंकारहारोपमः ॥ देवोष्टादशदोषसिंधुरघटानि र्भेदपंचाननो, भव्यानां विदधातु वांछितफलं श्रीवीतरागो जिनः ॥ ३२ ॥ ख्यातोऽष्टापदप र्वतो गजपदः सम्मेतशैलाभिधः, श्रीमान् रैव

तकः प्रसिद्धमहिमा शत्रुंजयो मंडपः ॥ वैभारः कनकाचलोऽर्बुदगिरिः श्रीचित्रकूटादय, स्तत्र श्रीऋषभादयोजिनवराः कुर्वंतु वोमंगलम्॥२३॥

॥ ५३ ॥ अथ श्री अजितशांतिस्तवन ॥

॥ अजिअं .जिअसब्बभयं, संतिं च पसंत सव्वगयपावं ॥ जयगुरु संति गुणकरे, दोविजि णवरे पणिवयामि ॥१॥ गाहा ॥ ववगय मंगुल भावे, तेहिं विउल तवनिम्मल सहावे॥ निरुवम महप्पभावे, थोसामि सुदिठ सब्भावे ॥ २ ॥ गाहा ॥ सब्बडुक्खप्पसंतीणं, सब्ब पावप्पसं तिणं॥ सया अजियसंतीणं, नमो अजिअसं तिणं ॥३॥ सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पव त्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं ॥ तहय धिइ मइ प्पवत्तणं, तवय जणुत्तम संतिकित्तणं ॥४॥ मागहिआ ॥ किरिआविहि संचिअ कम्म किलेसविमुक्कयरं, अजिअं निचिअं च गु णेहिं महामुणि सिद्धिगयं ॥ अजिअस्स य सं ति महामुणिणोवि अ संतिअरं, संयय मम नि व्वुइ कारणयंचनमंसणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणयं॥ पुरिसा जइ डुक्कवारणं, जइअ विमग्गह सु

रककारणं ॥ अजिअं संतिं च नावर्ज, अन्न
यकरे सरणं पवजहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अ
रइ रइतिमिर विरहिअ मुवरय जरमरणं, सुर
असुर गरुड भुअगवइ पयय पणिवइअं ॥
अजिअ महमविअ सुनय नय निउण मनय
करं, सरण मुवसरिअ भुवि दिविजमहिअं
सयय मुवणमे ॥७॥ संगययं ॥ तंच जिणुत्तम
मुत्तम नित्तम सत्तधरं, अजाव मद्दव खंतिविमु
त्ति समाहि निहिं ॥ संतिअरं पणमामि दमुत्तम
तिछयरं, संति मुणी मम संति समाहिवरं दिसऊ
॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावछिपुव्वपछिवं च वरहछि
मछय पसछ विछिन्न संथिअं, थिर सरिछ वछं
मयगल लीलायमान वर गंध हछि पछाण प
छियं संथवारिहं॥हछिहछ वाहुं धंतकणग रुअ
ग निरुवहय पिंजरं, पवर लरकणो वचिअ सो
मचारु रूवं, सुइ सुहमणाभिराम परम रमणि
ज्ञ वरदेव डुंडुहि निनाय महुरयरय सुहगिरं
॥९॥ वेड्डर्ज ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअ स
व्वनयं नवो हरिर्ज ॥ पणमामि अहं पयर्ज, पावं
पसमेउ मे नयवं ॥ १० ॥ रासाछुध्दर्ज ॥ कुरु

जणवयदहिणाउर, नरीसरो पढमं तउ महाच क्कवट्टिजोए महप्पन्नावो, जोबावत्तरि पुरवर सह स्स वर णगर निगम जणवय वेइ,वत्तीसा राय वर सहस्साणुजाय मग्गो ॥ चउदस वर रयण नव महानिहि चउसठि सहस्स पवर जुवइण सुंदरवइ, चुलसी हय गय रह सय सहस्स सामी, बन्नवइ गाम कोडि सामी आसिजो ना रहंमि नयवं ॥ ११ ॥ वेड्डउ ॥ तं संतिं संतिअरं संतिएं सब नया ॥ संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउमे ॥ १२ ॥ रासानंदिअयं ॥ इरकाग वि देहनरीसर, नरवसहा मुणिवसहा ॥ नव सारय ससि सकलाणण, विगय तमा विहुअरया ॥ अ जियउत्तम तेअ गुणेहिं महामुणि,अमिअवला विउलकुला ॥ पणमामि ते नवनय मूरण, जग सरणा मम सरणं॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दा णविंद चंद सूरवंद हठ तुठ जिठ परम, लठ रूव धंत रुप्प पट्ट सेअ सुद्ध निद्ध धवल ॥ दं तपंति संति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर, दित्त तेअ विंदधेअ सवलोअ नाविअप्पनाव णे अ पईअसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायउ ॥

विमल ससिकलाइरेअ सोमं, वितिमिर सूर क लाइरेअ तेअं ॥ तिअसवइ गणाइरेअ रूवं, धरणीधर प्पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुम लया ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अबले अजिअं ॥ तव संजमे अ अजिअं, एस थु णामि जिणमजिअं ॥ १६ ॥ भुअंगपरिरिंगि अं ॥ सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरय ससी, ते अ गुणेहिं पावई न तं नवसरयरवी ॥ रूवगुणे हिंपावइ नतं तिदसगणवइ, सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवई, ॥१७॥ खिज्जिअयं ॥ तिज्ञवर पवत्तयं तमरयरहिअं धीरजण थु अ च्चिअं चुअ कलिकलुसं ॥ संतिसुहप्पवत्तयं तिगरण पयर्ञ, संतिमहं महामुणिं सरण मुवण मे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणर्ञणाय सिररिय अंजलि, रिसिगण संथुअं थिमिअं ॥ विबुदा हिव धणवइनरवइ, थुअमहिअच्चिअं बहु सो ॥ अइ रुग्गय सरय दिवायर, समहिअ, सप्पन्नंतवसा ॥ गयणंगण वियरण समुइअ चारण वंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमा ला ॥ असुर गरुल परिवंदिअं, किन्नरोरगन

मंसियं ॥ देवकोम्सियसंथुअं, समणसंघपरि वंदियं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अन्नयं अणहं अरयं अरुयं अजिअं अजिअं पयर्ज पणमे ॥ २१ ॥ विज्जुविलसिअं ॥ आगयावर विमाण, दिव्व कणग रह तुरय पहकर सएहिं हुलिअं ॥ ससंभमो रयण खुभिअ, लुलिअ चल कुंरु लं गय तिरीड सोहंत मउलिमाला ॥ २२ ॥ वेड्ढर्ज ॥ जं सुरसंघा सासुर संघा वेर विउत्ता भ त्ति सुजुत्ता, आयर भूसिअ संभमपिंम्अि सुठु सुविह्मिअ सव्वलोघा ॥ उत्तम कंचण रयण प रूविअ, भासुर भूसण भासुरिअंगा ॥ गाय स मोणय भत्तिवसा गय, पंजलिपेसियसीस पणा मा ॥२३॥ रयणमाला ॥ वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेवय पुणो पयाहिणं ॥ पणमिऊ णय जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइंतो ग या ॥२४॥ खित्तयं ॥ तं महामुणि महंपि पंजलि, राग दोस भय मोह वज्जिअं ॥ देवदाणव नरिं द वंदिअं, संतिमुत्तम महातवं नमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंवरंतरविआरणियाहिं, ललिअ हंस वहुगामिणियाहिं ॥ पीण सोणत्थण सा

लिणियाहिं, सकल कमलदल लोअणिआ
हिं ॥२६॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर थणजरविण
मिय गायलयाहिं, मणि कंचण पसिढिलमेह
ल सोहिअ सोणितमाहिं ॥ वरखिंखिणि नेउर
सतिलय वलय विनूसणियाहिं, रइकर चउर
मणोहर सुंदर दंसणिआहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्ख
रा ॥ देवसुंदरीहिं पाय वंदियाहिं, वंदिआय ज
स्स ते सुविक्कमाक्कमा अप्पणो निलाडएहिं मंड
णोड्डणप्पगारएहिं केहिं केहिं वि अवंगतिल
य पत्तलेह नामएहिं चिल्लएहिं संगयं गयाहिं
जत्ति सन्निविठ्ठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदिया
पुणो पुणो ॥२८॥ नारायउ ॥ तमहं जिणचंदं,
अजिअं जिअमोहं॥धुअसवकिलेसं पयउ पण
मामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥ थुअवंदिअस्सा
रिसीगण देवगणेहिं, तो देव वहूहिं पयउ पण
मिअस्सा ॥ जस्स जगुत्तमसासणयस्सा, जत्ति
वसागयपिंडिअयाहिं ॥ देव वरछरसाबहुआ
हिं, सुरवर रइगुण पंडिअआहिं ॥३०॥ जासुर
यं॥ वंस सद्द तंति तालमेलए तिउरकराजिराम
सद्द मीसए कए अ, सुइसमाणणेअ सुद्ध स

ज्ञ गीच्च पाय जालघंटिच्याहिं ॥ वलय मेहला कलावनेउराभिराम सद्द मीसए कए च्च देवन ट्टिच्याहिं ॥ हावभाव विभ्रमप्पगारएहिं न च्चिजण च्यंग हारएहिं वंदिच्याय जस्स ते सुवि क्कमाकमा ॥ तयंतिलोच्च सव्व सत्त संतिकारयं पसंत सव्व पाव दोस मेस हं नमामि संतिमुत्त मं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायउ ॥ उत्त चामर पभाग जूच्च जव मंडिच्या, ऊयवर मगर तुरय सि रिवह सुलंछणा ॥ दीवसमुद्द मंदिरदिसाग यसोहिया, सच्छिच्चवसहसीहणासिरिवछसुलंछ णा ॥३२॥ ललिच्चयं ॥ सहावलठा समप्पइठा, च्चदोस डुठा गुणेहिं जिठा ॥ पसायसिठा तवे ण पुठा, सिरीइ इठा रिसीहिं जुठा ॥३३॥ वा णवासिच्चा ॥ ते तवेण धुच्चसव्वपावया, सव्व लोच्चहिच्च मूल पावया ॥ संथुच्चा च्चजिच्चसंति पायया, हुंतु मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ च्चपरांतिका ॥ एवं तव वल विउलं, थुच्चं मए च्चजिच्च संति जिणजुच्चलं ॥ ववगय कम्म रयमलं, गयं गयं सासयं विमलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं वहुगुणप्पसायं, मुरक सुहेण परमे

ण अविसायं ॥ नासेउ मेविसायं, कुणउ अ प रिसाविअ पसायं ॥३६॥ गाहा ॥ तं मोएउअ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं ॥ परिसा विय सुहनंदिं,मम य दिसउ संजमे नंदिं॥३७॥ गाहा ॥ पख्खिअ चाउमासे, संवछरिए अव स्स भणिअवो ॥ सोअवो सवेहिं, उवसग्ग नि वारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जोअ निसुण इ,उभउ कालंपि अजिअसंतिथुयं॥न हु हुंति तस्स रोगा, पुवुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९॥ जइइ छह परम पयं, अहवा कित्ती सुविछडा भुवणे॥ ता तेलुकुध्धरणे,जिणवयणे आयरं कुणह॥४०॥

॥ इति श्रीअजितशांतिस्तवनं ॥ ५३ ॥

॥ ५४ ॥ अथ श्री मोहोटी शांति ॥

॥ भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्व मेतत्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हतां भक्तिभा जः ॥ तेषां शांतिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा दारोग्यश्रीधृतिमतिकरीक्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ भोभो भव्यलोका इहहि भरतैरावतविदेहसं भवानां, समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकं पानं तरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषा

घंटाचालनानंतरं सकलसुरासुरेंद्रैः सहसमागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृंगे विहितजन्माभिषेकः शांतिमुद्घोषयति ततोहं कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो येन गतः सपंथाः इति भव्यजनैः सह समागत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधायशांतिमुद्घोषयामितत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सवानंतरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयंतां प्रीयंतां भगवतोर्हतः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकपूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतकराः॥ॐ १ श्री ऋषभ,२ अजित,३ संभव,४ अभिनंदन,५ सुमति, ६ पद्मप्रभ,७ सुपार्श्व,८ चंद्रप्रभ,९ सुविधि,१० शीतल,११ श्रेयांस,१२ वासुपूज्य, १३ विमल, १४ अनंत,१५ धर्म्म,१६ शांति,१७ कुंथु,१८ अर,१९ मल्लि,२० मुनिसुव्रत,२१ नमि,२२ नेमि पार्श्व,२३ वर्द्धमानांताः२४ जिनाः शांताःशांतिकरा भवंतु स्वाहा ॥ ॐ मुनयोमुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्भिक्षकांतारेषु दुर्गमार्गेषुरक्षंतु वो नित्यं स्वाहा॥ ॐ ह्रीं श्रीं धृति, मति, कीर्त्ति, कांति,

बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या साधन, प्रवेश निवश नेषु ॥ सुगृहीतनामानो जयंतु ते जिनेंद्राः ॥ ॐ रोहिणी, प्रज्ञप्ति, वज्रांशृंखला, वज्रांकुशी, अप्रतिचक्रा पुरुषदत्ता, काली, महाकाली, गोरी, गांधारी, सर्वास्त्रा, महाज्वाला, मानवी, वैरुट्या, अछूप्ता, मानसी, महामानसी, एता षोडश विद्यादेव्यो रक्षंतु वो नित्यं स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य ॥ श्रीश्रमणसंघस्य ॥ शांतिर्भवतु ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॥ ॐ ग्रहाश्चंद्रसूर्यांगारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सोमयमवरुण कुबेर वासवादित्यस्कंद विनायकोपेताः येचान्येपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्तेसर्वे प्रीयंतांप्रीयंताम् ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारानर पतयश्च भवंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्र, मित्र, भ्रातृ, कलत्र, सुहृद्, स्वजन, संबंधि, बंधुवर्ग, सहिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिणो भवंतु अस्मिंश्च भूमंडलायतननिवासीनां साधु साध्वी श्रावक श्राविकाणां रोगोपसर्ग व्याधि दुःख दुर्भिक्षदौर्मनस्योपशमनाय शांतिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टि पु

घंटाचालनानंतरं सकलसुरासुरेंद्रैः सहसमागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृं गे विहितजन्माभिषेकः शांतिमुद्घोषयति ततोहं कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो येन गतः सपंथाः इति भव्यजनैः सह समागत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधायशांतिमुद्घोषयामितत्पूजायात्रास्ना त्रादि महोत्सवानंतरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा निश म्यतां निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयंतां प्रीयंतां भगवतोर्हतः सर्वज्ञाः सर्वदर्शि नस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकपूज्यास्त्रि लोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतकराः॥ ॐ १ श्री ऋषभ,२ अजित,३ संभव,४ अभिनंदन,५ सुमति, ६ पद्मप्रभ,७ सुपार्श्व,८ चंद्रप्रभ,९ सुविधि,१० शीतल,११ श्रेयांस,१२ वासुपूज्य, १३ विमल, १४ अनंत,१५ धर्म्म,१६ शांति,१७ कुंथु,१८ अर,१९ मल्लि,२० मुनिसुव्रत,२१ नमि,२२ नेमि पार्श्व,२३ वर्द्धमानांताः२४ जिनाः शांताःशां तिकरा भवंतु स्वाहा॥ ॐ मुनयोमुनिप्रवरा रिपु विजयदुर्भिक्षकांतारेषु दुर्गमार्गेषुरक्षंतु वो नित्यं स्वाहा॥ ॐ ह्रीं श्रीं धृति, मति, कीर्त्ति, कांतिं,

वुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या साधन, प्रवेश निवश नेषु ॥ सुगृहीतनामानो जयंतु ते जिनेंद्राः ॥ ॐ रोहिणी, प्रज्ञप्ति, वज्रांशृंखला, वज्रांकुशी, अप्रतिचक्रा पुरुषदत्ता, काली, महाकाली, गोरी, गांधारी, सर्वास्त्रा, महाज्वाला, मानवी, वैरुट्या, अछूप्ता, मानसी, महामानसी, एता षोम्श विद्यादेव्यो रक्षंतु वो नित्यं स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य ॥ श्रीश्रमणसंघस्य ॥ शांतिर्भवतु ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॥ ॐ ग्रहाश्चंद्रसूर्यांगारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सोमयमवरुण कुवेर वासवादित्यस्कंद विनायकोपेताः येचान्येपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्तेसर्वे प्रीयंतांप्रीयंताम् ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारानर पतयश्च भवंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्र, मित्र, भ्रातृ, कलत्र, सुहृद्, स्वजन, संबंधि, वंधुवर्ग, सहिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिणो भवंतु अस्मिँश्च भूमंडलायतननिवासीनां साधु साध्वी श्रावक श्राविकाणां रोगोपसर्ग व्याधि ज्ञःख ज्ञर्निक्षदौर्मनस्योपशमनाय शांतिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टि पु

ष्टि ऋद्धि, वृद्धि, मांगल्योत्सवाः ॥ सदा प्राङ्कृतानि पापानि शम्यंतु दुरितानि ॥ शत्रवः पराङ्मुखा भवंतु स्वाहा ॥ श्रीमते शांतिनाथाय,नमः शांतिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाभ्यर्चितांह्रये ॥ १ ॥ शांतिः शांतिकरः श्रीमान्, शांतिं दिशतु मे गुरुः ॥ शांतिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ उन्मृष्टरिष्ट दुष्ट, ग्रहगति दुःस्वप्न दुर्निमित्तादि ॥ संपादितहित संप, न्नामग्रहणं जयति शांतेः ॥ ३ ॥ श्रीसंघजगज्जानपद, राजाधिपराजसन्निवेशानाम्॥ गोष्ठिकपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिम् ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु ॥ श्रीपौरजनस्य शांतिर्भवतु श्रीजनपदानां शांतिर्भवतु ॥ श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु ॥ श्रीराजसन्निवेशानां शांतिर्भवतु ॥ श्रीगोष्ठिकानां शांतिर्भवतु ॥ श्रीपौरमुख्यानां शांतिर्भवतु ॥ श्रीब्रह्मलोकस्य शांतिर्भवतु ॥ ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा॥ एषा शांतिप्रतिष्ठा यात्रास्नात्राद्यवसानेषु ॥ शांतिकलशं गृहीत्वा,कुंकुम चंदन कर्पूरागरु धूप वास

कुसुमांजलिसमेतः ॥ स्नात्रचतुष्किकाया श्री संघसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्रचंदनाभ्र रणालंकृतः, पुष्पमालां कंठे कृत्वा शांतिमु द्घोषयित्वा ॥ शांतिपानीयं मस्तके दातव्य मिति॥ नृत्यंति नित्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायं ति च मंगलानि स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवंतु भू तगणाः ॥ दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखीभव तु लोकाः ॥ २ ॥ अहं तिञ्चयरमाया शिवादेवी तुम्हनयर निवासिनी ॥ अम्हशिवं तुम्ह शिवं अशिवोपशमंशिवं भवतु स्वाहा ॥ ३ ॥ उपस र्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ सर्व मंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥ इति श्री बृहछाति स्तवः संपूर्णः ॥ ५४ ॥

॥५५॥ अथ श्री संतिकरस्तवनं ॥

॥ संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरी इ दायारं ॥ समरामि भत्त पालग, निवाणी ग

रुडक्कय सेवं ॥ १ ॥ ॐ सनमो विप्पोसहि पत्ता
णं संति सामिपायाणं, ज्रौँ स्वाहा मंतेणं, सवा
सिवडुरिअहरणांणं ॥ २ ॥ ॐ संति नमुक्कारो,
खेलोसहि माइ लद्धि पत्ताणं ॥ सौ ह्रौँ नमोस
व्वो सहि, पत्ताणं च देइसिरीं॥३॥वाणी तिहुअ
ण सामिणि, सिरि देवी जक्करायगणिपिडगा ॥
गह दिसिपाल सुरिंदा, सयावि रक्कंतु जिणभ
त्ते ॥ ४ ॥ रक्कंतु मम रोहिणी, पन्नतीवज्जसिंख
ला सया ॥ वज्जंकुसि चक्केसरि, नरदत्ता कालि
महाकाली ॥ ५ ॥ गोरी तह गंधारी महजाला
माणवीअ वइरुट्टा ॥ अछुत्ता माणसिया, महा
माणसियाउ देवीउ ॥ ६ ॥ जक्का गोमुह मह
जक्का, तिमुह जक्केस तुंबरू कुसुमो ॥ मायंगो वि
जयाजिय, बंभो मणुउ सुरकुमारो ॥ ७ ॥
छम्मुह पयाल किन्नर, गरुलो गंधव्व तहय ज
क्किंदो ॥ कुबेर वरुणो भिउडी, गोमेहो पासमा
यंगो ॥ ८ ॥ देवीउ चक्केसरि, अजिआ डुरिआ
री कालि महाकाली ॥ अच्चुअ संता जाला, सु
तारयासोय सिरिवच्छा ॥ ए ॥ चंडा विजयंकुसि
प, न्नइति निवाणि अच्चुआ धरणी॥ वइरुट्ट बुत्त

गंधा, रिक्षंव पज्ञमावईसिक्षा ॥१०॥ इञ्च तिन्न रस्कण रया, अन्नेवि सुरासुरी चज्ञहावि ॥ वंतर जोइणी पमुहा, कुणंतु रस्कंसया अम्हं॥११॥ए वं सुदिठि सुरण, सहिर्ज संघस्स संति जिण चंदो ॥ मज्ञवि करेज रस्कं, मुणिसुंदर सूरिथुञ्च महिमा ॥ १२ ॥ इञ्च संतिनाह सम्म, दिठि र स्कं सरइ ति कालं जो ॥ सवोवद्दवरहिर्ज, स ल हइ सुहसंपयं परमं ॥ १३ ॥ तवगञ्चगयणदि णयर, जुगवर सिरिसोमसुंदरगुरुणं ॥ सुपसा य लञ्चगणहर, विद्यासिञ्जिणइसीसो ॥१४॥ इति श्रीसंतिकरस्तवनम् ॥ ५५ ॥

॥ ५६ ॥ अथ पाक्षिकादि अतिचार ॥

॥ नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि त हय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इय एसो पंचहा नणिर्ज ॥ १ ॥ ज्ञानाचार दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार ॥ ए पंचविध आचारमांहे अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, वादर, जाणतां अजाणतां हुर्ज होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायाये क रीतस्स मिन्नामिञ्जकर्म ॥ १ ॥

थ्यात्वी तणी पूजा प्रभावना देखी मूढदृष्टिपणुं कीधुं. तथा संघमांहे गुणवंत तणी अनुपबृंहणा कीधी, अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अभक्ति निपजावी, अबहुमान कीधुं तथा देवद्रव्य, गुरुद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारणद्रव्य, भक्षित उपेक्षित प्रज्ञापराधें विणाश्यो, विणसतो उवेख्यो. छती शक्तिये सार संभाल न कीधी तथा साधर्मिक साथें कलह कर्मबंध कीधो. अधोती, अष्टपड मुखकोश, पांखें देव पूजा कीधी बिंबप्रत्यें वासकूपी, धूपधाणुं कलशतणो ठबको लाग्यो. बिंब हाथथकी पाड्युं. उसास निःसास लाग्यो, देहरे, उपासरे, मलश्लेष्मादिक लोह्युं. देहरामांहे हास्य, खेल, केलि, कुतूहल, आहार निहार कीधां, पान, सोपारी, निवेदीयां खाधां. ठवणहारी हाथथकी पाडी, पडिलेहवुं विसार्युं, जिनभुवने चोराशी आशातना, गुरु गुरुणी प्रत्यें तेत्रीश आशातना कीधी होय, गुरुवचन तहत्ति करी पडिवज्युंनहीं ॥ दर्शनाचारव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ २ ॥

चारित्राचारें आठ अतिचार ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तिहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायव्वो ॥ १॥ ईर्या समिति ते अणजोए हिंड्या, न्नाषासमिति ते सावद्य वचन बोल्या, एषणा समिति ते तृण, डगल, अन्न, पाणी, असूझतुं लीधुं, आदानन्नंडमत्तनिखेवणा समिति ते अशन शयन, उपकरण मातरुं प्रमुख अणपूंजी जीवाकुलन्नूमिकाये मूक्युं लीधुं, परिष्ठापनिकासमिति ते मल, मूत्र, श्लेष्मादिक अणपूंजि जीवाकुल न्नूमिकायें परठव्युं मनोगुप्ति, मन मां आर्त्त रौडध्यान ध्यायां, वचनगुप्ति, सावद्य वचन बोल्युं, कायगुप्ति ते शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं, अणपूंजे बेठा, ए अष्टप्रवचन माता ते, सदैव साधुतणे धर्मे अने श्रावकतणे धर्मे, सामायिक पोसह लीधे, रूडीपरे पाल्या नहीं, खंडणा विराधना हुइ ॥ चारित्राचार व्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस मांही सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुउ होय, ते सवि हुं मने,वचने,कायाये करी तस्समिच्छामि

तत्र ज्ञानाचारें आठ अतिचार ॥ कालेवि णए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंज ण अत्त तडुभए अठविहोनाण मायारो ॥ १ ॥ ज्ञान काल वेलाये नण्यो गुण्यो नहिं अकाले नण्यो, विनयहीन, बहुमानहीन, योगउपधान हीन, अनेरा कन्हें नणी अनेरो गुरु कह्यो, देव गुरु वांदणे, पडिक्कमणे, सधाय करतां नणतां, गुणतां, कूमो अक्षर कानेमात्रायें अधिको उंगे नण्यो, सूत्र कूडुं कह्युं, अर्थ कूडो कह्यो, तडुन य कूडां कह्यां, नणीने विसार्यां, साधु तणे धर्म काजें काजो अणुड करयां दांडो अणपमिलेहे, वसति अणशोधे, अणपवेसे, असझाइ, अणो झाइमाहे श्री दशवैकालिकप्रमुख सिद्धांत नण्यो गुण्यो, श्रावकतणे धर्मे थिविरावलि, प डिक्कमणां, उपदेशमाला प्रमुख सिद्धांत नण्यो गुण्यो, काल वेला काजो अणउद्धरे पढियो ज्ञानोपगरण, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नोकरवाली, सापमा सापमी, दस्तरी, वही, उंलिया प्रमुख प्रत्ये पग लाग्यो, थूंक लाग्युं, थूंके करी अक्षर मांज्यो, उंशीसें

धर्यो, कने बतां आहार निहार कीधो, ज्ञानड व्य जदतां उपेक्षा कीधी, प्रज्ञापराधें विणसतो विणाश्यो, विणसतो उवेख्यो, बती शक्तियें सार संजाल न कीधी, ज्ञानवंतप्रत्यें द्वेष, मत्स र, चिंतव्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोइ प्रत्यें जणता गणतां अंतराय कीधो, आपणा जाणपणातणो गर्व चिंतव्यो, मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधिज्ञान, मनः पर्यवज्ञान, केवल ज्ञान ए पंच ज्ञान तणी असद्दहणा कीधी- कोइ तोतलो बोबडो हस्यो, वितर्क्यो, अन्यथा प्ररूपणा कीधी॥ ज्ञानाचार व्रत विषइउ अ नेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ १ ॥

दर्शनाचारे आठ अतिचार ॥ निस्संकिय निकंखिय, निव्वितिगिछा अमूढदिठीअ ॥ उववू ह थिरीकरणे, वछल प्पजावणे अठ ॥१॥ देव गुरू धर्म तणे विषे निःशंकपणुं न कीधुं तथा ए कांत निश्चय न कीधो. धर्म संबंधीया फल तणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरी नही. साधु साधवीना मल मलिन गात्र देखी छुगंछा निपजावी. कुचा रित्रीया देखी चारित्रीयाऊपर अजाव हुउ. मि

विशेषतः श्रावकतणे धर्मे श्रीसम्यकत्व मूल बारव्रत, सम्यक्त्व तणा पांच अतिचार॥ शंका कंखविगिच्छा० ॥ शंका श्रीअरिहंत तणा बल, अतिशय, ज्ञानलक्ष्मी, गांभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रीयानां चारित्र, श्रीजिनवचन तणो संदेह कीधो॥ आकांक्षा! ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगो, आसपाल, पादरदेवता, गोत्रदेवता, ग्रहपूजा, विनायक, हनुमंत, सुग्रीव, वाली, नाह, इत्येवमादिक देश, नगर, गाम, गोत्र, नंगरी जूजूआ देव, देहरांना प्रभाव देखी रोग आतंककष्टआवे इहलोकपरलोकार्थे पूज्या मान्या, सिद्ध विनायक जीराउलानें मान्युं, इच्छ्युं, बौद्ध, सांख्यादिक संन्यासी, भरडा, भगत, लिंगिया, जोगीया, जोगी, दरवेश, अनेरा दर्शनीयातणो कष्ट, मंत्र, चमत्कार देखी परमार्थ जाण्याविना भूलाव्या, मोहिया. कुशास्त्र शीख्यां, सांभल्यां. श्राद्ध, संवछरी, होली, बलेव, माहिपूनम, अजापडवा, प्रेतबीज, गौरीत्रीज, विनायकचोथ, नागपांचमी, झलणाछठ, शीलसातमी, ध्रुवआठमी,

नौली नोमी, अहवा दशमी, व्रतअग्यारशी, वज्ञबारशी, धनतेरशी, अनंतचउदशी, अमा वास्या, आदित्यवार, उत्तरायण नैवेद्य कीधां. नवोदक, याग, जोग, उतारणां कीधां, कराव्यां अनुमोद्यां. पिपले पाणी घाल्यां, घलाव्यां; घ रबाहिर क्षेत्र; खले, कूवे, तलावे, नदीये, उहे वाविये, समुद्रे, कुंडे, पुण्यहेतुस्नान कीधां, करा व्यां अनुमोद्यां. दान दीधां, ग्रहण, शनिश्चर माहमासें नवरात्रि, नाहायां. अजाणना थाप्यां अनेराइ व्रत व्रतोलां कीधां; कराव्यां ॥ विति गिछा धर्म संबंधीयां फलतणे विषे संदेह की धो जिन अरिहंत धर्मना आगर, विश्वोपकार सागर, मोक्षमार्गना दातार, इस्या गुणजणी न मान्या, न पूज्या, महासती, माहात्मानी इह लोक परलोक संबंधी याजोग वांछित, पूजा की धी, रोग, आतंक कष्ट आवे खीण वचन जोग मान्या, माहात्मानां जात, पाणी, मल शोजा तणी निंदा कीधी, कुचारित्रिया देखी, चारित्रि या उपर कुजाव हुउ, मिथ्यात्वी तणी पूजा प्र जावना देखी प्रशंसा कीधी, प्रीति मांडी, दा

क्षिणय लगें तेहनो धर्म मान्यो, कीधो ॥ श्रीसम्यक्त्वव्रत विषयिउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ १ ॥

पहेले स्थूलप्राणातिपात विरमणव्रते पांच अतिचार ॥ वहवंधछविछेए० ॥ द्विपद चतुष्पद प्रत्ये रीषवशे गाढो घाव घाल्यो, गाढे वंधने वांध्यां, अधिक भार घाल्यो, निर्लांछन कर्म कीधां, चारापाणीतणी वेलाये सार संभाल न कीधी, लेहणे देणे किणहिं प्रत्ये लंघाव्यो,तेणे भुखे आपण जम्या, कन्हे रही मराव्यो, वंधीखाने घलाव्यो, शल्यां धान्य तावडे नाख्यां, दलाव्यां, भरडाव्यां. शोधी न वावर्यां इंधण छाणां, अणशोध्यां वाळ्यो तेमांहि साप, विंछी, खजूरा, सरवलां, मांकड, जूआ, गिंगोडा, साहतां मुआ, उदव्या, रूडे स्थानके न मूक्या. कीडी मंकोडीनां इंडां विछोह्यां. लीख फोडी. उदेही, कीडी, मंकोडी, घीमेल, कातरां, चूडेल, पतंगियां, देडकां, अलसीयां, इअल, कुंता, मांस, मसा, वगतरा, माखी, तीड प्रमुख जीव विणठा. माला हलावतां चलावतां पंखी,

चरकलां, काग, तणां इंडां फोड्या, अनेरा एकें
ड्रियादिक जीव विणास्या, चांप्या, डुहव्या, कांइ
हलावतां, चलावतां, पाणी गंटतां, अनेरा कां
इस्काम काज करतां, निर्द्धंधसपणुं कीधुं. जीवर
क्षारूमी न कीधी, संखारो-सूकाव्यो, रूडुं गलणु
न कीधुं, आणगल पाणी वावस्युं. रूडी जयणा
न कीधी. अणगल पाणीयें झील्या, लुगमां धो
यां, खाटला तावमे नाख्या, जाटक्या, जीवाकु
लन्नूमि लींपी, वाशीगार राखी, दलणें, खांडणें,
लींपणें, रूमी जयणा न कीधी. आठम चउद
शना नियम नांग्या. धूणी करावी॥ पहेले स्थू
लप्राणातिपात विरमण व्रत विषइर्च अनेरोंजे
कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ १ ॥

बीजे स्थूलमृषावाद विरमणव्रते पांच अ
तिचार ॥ सहसारहस्सदारे० ॥ सहसात्कारे
कुणहींप्रत्ये अजुगतुं आल अन्याख्यान दीधुं.
स्वादारामंत्र नेद कीधो. अनेरा कुणहनो मंत्र,
आलोच मर्म प्रकाश्यो. किणहीनें अनर्थ पाड
वा कूमी बुद्धि दीधी. कूडो लेख लख्यो. कूमी
साख नरी. थापणमोसो कीधो. कन्या, गौ, ढो

र, ञूमिसंवंधी लेहणे देणे व्यवसायें वाद वढ वाम करतां मोटकुं जूठुं वोल्या. हाथ पग तणी गाल दीधी. करडका मोड्या. मर्म वचन वोल्यां ॥ वीजे स्थूलमृषावाद विरमणव्रत विषइ उ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्व० ॥ २ ॥

त्रीजे स्थूलअदत्तादान विरमण व्रतें पांच अतिचार ॥ तेनाहडप्पयोगे० ॥ घर वाहिर खेत्र, खले, पराइ वस्तु अणमोकली लीधी. वावरी, चोराइ वस्तु मोललीधी, चोर धाडप्रत्यें संकेत कीधो. तेहनें संवल दीधुं. तेहनी वस्तु लीधी. विरुद्धराज्यातिक्रम कीधो नवां, पुराणा, सरस विरस, सजीव, निर्जीव वस्तुना ञेल संञेल कीधा. कूमे काटले, तोले, माने, मापे, वहोर्यां. दाणचोरी कीधी, किणहीने लेखे वरांस्यो. साटे लांच लीधी. कूडो करहो काढ्यो. विश्वासघात कीधो. परवंचना कीधी. पाशंग कूमां कीधां. मांमी चढावी. लहके त्रहके कूमा काटला मान, मापां कीधां. माता, पिता, पुत्र, मित्र, कलत्र, वंची किणहीने दीधुं. जूदी गांठ कीधी, आपण उंलवी. किणहीनें लेखे पलेखें

भूलव्युं. पमी वस्तु ऊलवीलीधी ॥ त्रीजे स्थूल अदत्तादान विरमणव्रत विषयिउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ ७ ॥

चोथे स्वदारासंतोष. परस्त्री गमन विरमण व्रतें पांच अतिचार ॥ अपरिग्गहीया इतर०॥ अपरिगृहीतागमन इत्वर ॥ अपरिगृहीता गमन कीधुं. विधवा, वेश्या परस्त्री, कुलांगना, स्वदाराशोकतणे विषे दृष्टिविपर्यास कधो. सराग वचन बोल्यां. आठम, चउदश, अनेराइ पर्व तिथें नियम लइ भांग्या. घरघरेणां कीधां करान्यां. वर वहू वखाण्यां. कुविकल्प चिंतव्यो. अनंग क्रीमा कीधी, स्त्रीनां अंगोपांग निरख्यां. पराया विवाह जोड्या. ढिंगला ढिंगली परणाव्यां. कामभोगतणे विषे तीव्र अभिलाष कीधो. अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, सुहणे स्वप्नांतरें हुआ. कुस्वप्न लाधां. नट, विट, पुरुषांशु हांसुं कीधुं॥चोथा स्वदारासंतोषव्रतविषयिउं अनेरा जे कोइ अतिचार पक्ष०॥४॥

पांचमे स्थूल परिग्रह परिमाणव्रते पांच अतिचार॥ धण धन्न खित्तवत्थू०॥धन, धान्य, खेत्र

वस्तु, रूप्प, सुवर्ण, कुप्य, द्विपद, चतुष्पद नवविध परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्छालगें संक्षेप न कीधो. माता, पिता, पुत्र, स्त्रीतणे लेखे कीधो. परिग्रह परिमाण लीधुं नहीं, लेइने पढिउं नहीं. पढिउं विसार्युं. अ लीधुं मेल्युं. नियम विसार्या ॥ पांचमे परिग्रह परिमाणव्रत विषयिउं अनेरो जे कोइ अति चार पक्ष दिवसमांहि० ॥ ५ ॥

छठें दिग्परिमाणव्रते पांच अतिचार ॥ गम णस्सय परिमाणे० ॥ ऊर्ध्वदिशि, अधोदिशि, तिर्यग्दिशियें जावा आववातणा निमम लेइ भांग्या. अनाभोगे विस्मृत लगे अधिक भुमि गया. पाठवणी आघी पाछी मोकली. वहाण व्यवसाय कीधो. वर्षाकालें गामतरू कीधुं, भु मिका एकगमा संखेपी,बीजीगमा वधारी ॥ छठे दिगपरिमाणव्रतविषयिउं अनेरो जे कोइ अ त्तिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ ६ ॥

सातमें भोगोपभोग विरमण व्रतें भोजन आश्री पांच अतिचार अने कर्महुंती पंदर अ तिचार एवं वीश अतिचार॥सच्चित्तेपडिबद्धे० ॥

सचित्त नियम लीधे, अधिक सचित्त लीधुं॥ अपक्काहार, डुपक्काहार, तुछोषधि तणुं नक्षण कीधुं. ऊंला, ऊंवी, पोंक, पापमी कीधां॥ सच्चित्त दव्वविगइ, पाणह तंबोल वच्छ कुसुमेसु॥ वाहण सयण विलेवण, वंनदिसि न्हाण नत्तेसु॥ १॥ ए चउद नियम दिनगतरात्रिगत लीधा नहीं. लेइने नांग्या. बावीश अनदय, बत्रीश अनंतकायमांहि आडुं, मूला, गाजर, पिंम, पिंमालू, कचुरो, मूरण, कुलि आंबली, गलो, वाघरमां खाधां. वाशी, कठोल, पोली, रोट, ली त्रण दिवसनुं ऊंदन लीधु. मधु, महुडा, माखण, माटी, वेंगण, पीलु, पीचु, पंपोटा, विष, हिम, करहा, घोलवमां, अजाण्यां फल, टिंबरु, गुंदां, महोर अथाणुं, आमणबोर, काचुं मीठुं, तिल, खसखस, काचा कोठिंबडां खाधां. रात्रि नोजन कीधो. लगनग वेलायें व्यालुं कीधुं. दिवस विणउगे शीराव्या. तथा कर्मतः पंदरक र्मादान॥ इंगालकम्मे, वणकम्मे, साफिकम्मे, नाफिकम्मे, फोमिकम्मे, ए पांचकर्म॥ दंतवाणिज्जे, लरकवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, केसवाणिज्जे,

विसवाणिज्जे, ए पांच वाणिज्य ॥ जंतपिल्लण कम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गि दावणया, सर दह तलाय सोसणया, असइ पोसणया, ए पांच सामान्य, ॥ ए पांच कर्म्म, पांचवाणिज्य पांच सामान्य, एवं पंदर कर्मादान बहुसावद्य, महारंभ, रांगण, लीहाला, कराव्या. ईट, निभामा पचाव्या. धाणी, चणा पक्वान्न करी वेच्या वाशी मांखण तपाव्या. तिलवहोख्या फागण मास उपरांत राख्या. दलीदो कीधो. अंगीठा कराव्या. श्वान, बिल्लाडा, शूडा, सालहि, पोश्या. अनेरा जे कांइ बहु सावद्य खरकर्मादिक समाचख्या. वाशीगार राखी. लीपणें, घूंपणें, माहारंभ कीधो. अणशोध्या चूला संधूक्या. घीतेल, गोल, गश तणांभाजन उघाडां मूक्यां. तेमांहि माखी, कुंति, उंदर, गिरोली पडी. कीडी, चढी तेनी, जयणा न कीधी ॥ सातमे भोगोपभोग विरमणव्रतविषयिउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ ७ ॥

आठमे अनर्थदंड विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुए० ॥ कंदर्प्पलगें विटचेष्टा,

हास्य, खेल, कूतूहल कीधां, पुरुष स्त्रीना हाव भाव, रूप, शृंगार, विषयरस वखाण्या. राज कथा, भक्तकथा, देशकथा, स्त्रीकथा कीधी. पराइ वात कीधी. तथा पैशुन्यपणुं कीधुं,आर्त्त रौद्रध्यान ध्यायां. खांडां, कटार, कोश, कुहाडा, रथ उखल, मुशल, अग्नि, घरटी, निसाह, दा- तरडां, प्रमुख अधिकरण मेली दाक्षिण लगें माग्यां आप्यां. पापोपदेश दीधो. अष्टमी चतु र्दशीये खांडवा दलवा तणानियम भांग्या. मूरखपणा लगें असंबद्ध वाक्य बोल्या. प्रमा दाचरण सेव्या. अंघोले नाहणे, दातणे, पग धोअणे, खेलपाणि, तेल अकिध गांव्यां. झील- णे झील्या. जूवटें रम्या, हिंचोले हिंच्या, नाटक प्रेक्षणक जोयां, कण कुवस्तु, ढोर लेवराव्यां. कर्कश वचन बोल्यां, आक्रोश कीधा, अबोला लीधा. करकडा मोड्या. मछर धर्यो. संभेडा लगाड्या. सराप दीधा. भेंसा, शांढ, हुरु, कू कडा, श्वानादिक झुझाव्या, झूझतां जोयां. खादिलगें अदेखाइ चिंतवी, माटी, मीठुं, कण, कपाशीया, काजविण चांप्या. तेउपर बेठा.

आली वनस्पति खुंदी, सुइ शस्त्रादिक निपजा व्या. घणी निद्रा कीधी. राग द्वेष लगे एकने ऋद्धि परिवार वांछी. एकने मृत्यु हानी वांछी ॥ आठमे अनर्थ दंडविरमणव्रत विषयिउं अने रो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि ॥ ८ ॥

नवमे सामायिकव्रते पांच अतिचार ॥ तिवि हे डुप्पणिहाणे० ॥ सामायिक लीधे मन आहट्ट, दोहट्ट, चिंतव्युं. सावद्य वचन बोल्या. शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं. छती वेलाये सामा यिक न लीधुं. सामायिक लेइ उघाडे मुखे बोल्यां. उंघ आवी, वात विकथा घरतणी चिंता कीधी. वीज दीवा तणी उजेहि हुइ, कण कपा शीया, माटी, मीठु, खडी, धावडी, अरणेटो पा षाण प्रमुख चांप्या, पाणी, नील, फुल, सेवाल हरीयकाय, वीयकाय, इत्यादिक आभड्यां, स्त्री तिर्यंच् तणा निरंतर परस्पर संघट्ट हुआ, मुहुपत्तियो संघट्टि, सामायिक अणपूग्युं पाख्युं, पारवुं विसाख्युं ॥ नवमे सामायिकव्रत विषयिउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ ए ॥

दशमे देशावगाशिकव्रतें पांच अतिचार ॥

आणवणे पेसवणे०॥ आणवणप्पर्ठगे, पेसवण प्पर्ठगे, सद्दाणुवाई रूवाणुवाई, वहिया, पुग्गल पक्खेवे ॥ नियमित जूमिकामांहे बाहेरथी कांई अणाव्युं. आपण कन्हेथकी बाहेर कांइ मोक ल्युं. अथवा रूप देखामी, कांकरो नाखी, साद करीआपपणुं ब्रतुं जणाव्युं ॥ दशमे देशावगा शिक व्रत विषयिर्ठ अनेरो जे कोई अतिचार पद्म दिवसमांहि० ॥ १० ॥

इग्यारमे पोषधोपवासव्रतें पांच अतिचार ॥ संथारुच्चारुविहि० ॥ अप्पडिलेहिय डुप्पमि लेहिय सज्जासंथारए ॥ अप्पडिलेहिय डुप्पडि लेहिय उच्चार पासवण जूमि ॥ पोसह लीधे सं थारा तणी जूमि न पूंजी. बाहिरला लहुडां वमां स्थंडिल दिवसें शोध्यां नही. पडीलेह्यां नही. मातरू अणपूंज्युं हलाव्युं. अणपूंजी जू मिकाये परठव्युं. परठवतां "अणुजाणहजस्स ग्गो" न कह्यो. परठव्या पूठें वारत्रण "वोसिरे वोसिरे" न कह्यो. पोसह सालामांही पेसतां "निसिही" निसरतां "आवस्सहि" वार त्रण जणी नही. पुढवी, अप्प, तेउ, वाउ, वनस्पति,

त्रसकाय तणा संघट्टपरिताप, उपद्रव, हुआ. संथारा पोरिसी तणो विधि जणवो विसार्यो. पोरिसीमांहे उंघ्या. अविधें संथारोपाथर्यो. पारणादिक तणी चिंता कीधी. कालवेलायें देव न वांद्या. पडिक्कमणुं न कीधुं. पोसह असूरों लीधो. सवेरो पार्यो. पर्वतिथें पोसह लीधो नही॥ इग्यारमे पोषधोपवासव्रतविषयिउ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष० ॥ ११ ॥

वारमेअतिथिसंविभाग व्रते पांच अति चार ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे० ॥ सचित्त वस्तु हेठे उपरछतां महात्मा महासती प्रत्यें असूझतुं दान दीधुं. देवानी बुद्धे असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं, देवानी बुद्धे परायुं फेडी आपणुं कीधुं, अणदेवानी बुद्धें सूझतुं फेरी असूझतुं कीधुं, अणदेवानी बुद्धे आपणुं फेडी परायुं कीधुं, वहोरवा वेला टली रह्यां, असूरें करी महात्मा तेड्या मछर धरी दान दीधुं, गुणवंत आवे भक्ति न साचवी, छती शक्तें साहम्मी वात्सल्य न कीधुं अनेराई धर्मक्षेत्र सीदाता छती शक्तियें उद्धर्यां नही, दीन क्षीण प्रत्यें अनुकंपादान न दीधुं॥

वारमे अतिथिसंविभागव्रत विषयिउं अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ १२ ॥

संलेषणातणा पांच अतिचार ॥ इहलोए परलोए० ॥ इहलोगासंसप्पउंगे, परलोगासंपप्पउंगे, जीवियासंसप्पउंगे, मरणासंसप्पउंगे कामभोगासंसप्पउंगे ॥ इहलोके धर्मना प्रभावलगें राजरुद्धि, सुख,सौभाग्य,परिवार, वांछयां परलोकें देव, देवेंद्र, विद्याधर, चक्रवर्ति तणी पदवी वांछी, सुख आवे जीवितव्य वाछ्युं, दुःख आवे मरण वांछ्युं, काम भोग तणी वांछा कीधी ॥ संलेषणाव्रत विषयिउं अनेरो जे कोई अति चार पक्ष दिवसमांहि० ॥ १३ ॥

तपाचार बार भेद छ वाह्य, छ अभ्यंतर ॥ अणसण मूणोयरिआ० ॥ अणसण भणीउप वास विशेष पर्वतिथें छती शक्तियें कीधो नहीं, ऊणोदरीव्रत ते कोलिया पांच सात ऊणा रह्या नहीं, वृत्तिसंक्षेप ते द्रव्य भणी सर्व वस्तुनो संक्षेप कीधो नहीं, रसत्याग तथा विगयत्याग न कीधो, कायक्लेश लोचादिक कष्ट कर्या न ही, संलीनता अंगोपांग संकोची राख्या नहीं-

पच्चरकाण भांग्यां,पाटलो रुगरुगतो फेड्यो नहीं, गंठसी, पोरसी, साड्ढपोरिसि, पुरिमड्ढ, एकास णुं, बेआसणुं नीवि, आंबिल प्रमुख पच्चरका ण पारवुं विसार्खुं, बेसतां नवकार न भण्यो, उठता पच्चरकाण करवुं विसार्खुं, गंठसीउं भा ग्युं, नीवी, आंबिल, उपवासादिक, तप करी काचुं पाणी पीधुं, वमन हुउं, बाह्य तप विषयि उं अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष० ॥ १४ ॥

अभ्यंतरतप ॥ पायछित्तं विणउं० ॥ मन शुद्धें गुरु कन्हे आलोअणालीधी नहीं, गुरु दत्त प्रायश्चित्त तप लेखा शुद्धें पहुंचाड्यो नहीं, देव, गुरु, संघ, साहम्मी प्रत्यें विनय साचव्यो नहीं, बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी प्रमुखनुं वै यावच्च न कीधुं, वांचना; पृछना, परावर्त्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथालक्षण पंचविध स्वाध्याय न कीधो, धर्मध्यान, शुक्लध्यान न ध्याया, आ र्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्यायां, कर्म क्षय निमित्तें लोगस्स दशवीशनो काउस्सग्ग न कीधो॥ अभ्यंतर तप विषयीउं अनेरो जे कोइ अति चार पक्ष दिवसमांहि० ॥ १५ ॥

वीर्याचारना त्रण अतिचार ॥ अणगूहिअ बलविरिउं० ॥ पढवे, गुणवे, विनय वैयावच्च, देवपूजा, सामायिक, पोसह, दान, शील, तप, भावनादिक धर्मकृत्यने विषे मन, वचन, काया तणुं छतुं बल वीर्य गोपव्युं, रूडा पंचांग खमा समण न दीधां, वांदणा तणा आवर्त्तविधिसाच व्या नहिं. अन्यचित्त निरादरपणें बेठा, उताव लुं देववंदन, पडिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचार वि षयियो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष०॥१६॥

नाणाइअठ पइवय,समसंलेहणु पण पनरक म्मेसु बारस तव विरिअतिगं, चउव्वीसंसय अइ यारा ॥१॥ पडिसिद्धाणं करणे० ॥ जिन प्रतिषेध अभक्ष्य, अनंतकाय, बहुबीजभक्षण, महारंभ परिग्रहादिक कीधां, जीवाजीवादिक सूक्ष्म वि चार सद्दह्या नहीं, आपणी कुमति लगे उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी, तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान पैशु, न्य, रति अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्वशल्य, ए अढार पापस्थानक कीधां,

कराव्यां, अनुमोद्यां होय, दिनकृत्यप्रतिक्रमण, विनय, वैयावच्च न कीधा, अनेरु जे कांइ वीतरागनी आज्ञा विरुद्ध कीधुं, कराव्युं, अनुमोद्युं होय ॥ ए चिहुं प्रकारमांहे अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां हुउ होय ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥१८॥

एवंकारे श्रावकतणे धर्मे, श्री समकित मूल बारव्रत, एकसो चोवीस अतिचारमांहे अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस मांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां अजाणतां हुउ होय ते सवि हुं मने वचने कायायें करी तस्स मिच्छामि डुक्कडं॥ इति श्रीश्रावकपख्खी, चोमासी, संवछरी अतिचार समाप्त ॥ ५६ ॥

॥ अथ प्रभातना पच्चख्खाण ॥

॥५७॥ प्रथम नमुक्कार सहि मुठसहिनुं ॥

॥ उग्गय सुरे, नमुक्कार सहिअं, मुठिसहिअं पच्चख्खाइ॥ चउव्विहंपि आहारं, असणं पाणं खाइमं, साइमं॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे॥ ६७॥

॥५८॥ बीजुं पोरिसि, साड्ढपोरिसीनुं ॥

उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, सा ड्ढपोरिसिं, मुठिसहिअं, पच्चक्खाइ॥ उग्गए सूरे, चउविहंपि, आहारं असणं, पाणं, खाइमं, सा इमं ॥ अन्नत्थणा भोगेणं, सहस्सागारेणं, पच्छ न्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरा गारेणं, सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥५८॥

॥५९॥ त्रीजुं बीयासणा एकासणानुं ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कार सहिअं, पोरिसिं, मु ठिसहिअं पच्चक्खाइ ॥ उग्गए सूरे, चउविहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव समाहिवत्तियागारेणं ॥ विगइउ पच्चक्खाइ ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खि एणं पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव समाहिवत्तियागारेणं बियासणं, पच्चक्खाइ ति विहंपि आहारं असणं, खाइमं, साइमं, अन्न त्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं,

आउट्टणं पसारेणं, गुरु अब्भुठाणेणं, पारिठा
वणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सब समाहिव
त्तियागारेणं ॥ पाणस्स लेवेण वा अलेवेणवा
अछेण वा, बहुलेवेण वा, ससिछेणवा, अ
सिछेणवा, वोसिरे ॥ जो एकासणानुं पच्चरकाण
करवुं होय तो, बियासणंने ठेकाणे एकासणं
नो पाठ केहवो ॥ इति बियासणा एकासणानुं
पच्चरकाण समाप्त ॥ ५९ ॥

॥६०॥ चोथुं आयंबिलनुं पच्चरकाण ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कार सहिअं पोरिसिं, सा
ढपोरिसिं, मुठिसहिअं पच्चरकाइ ॥ उग्गए सूरे
चउविहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, सा
इमं, अन्नछणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नका
लेणं दिसामोहेणं, साहुवयणेणं महत्तरागारेणं,
सबसमाहिवत्तियागारेणं ॥ आयंबिलं पच्चरकाइ
॥ अन्नछणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं
गिहछसंसठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पारिठावणिया
गारेणं, महत्तरागारेणं सब समाहिवत्तिगारे
णं ॥ एगासणं पच्चरकाइ ॥ तिविहंपि आहारं
असणं, खाइमं साइमं ॥ अन्नछणाभोगेणं

सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउट्टण प सारेणं, गुरुअब्भुठाणेणं, पारिठवणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अछे णवा, बहु लेवेणवा, ससिछेण वा, असिछे णवा॥ वोसिरे ॥ इति आयंबिलनुं पच्चरकाण ॥ ६० ॥

॥६१॥ पांचमुं तिविहार उपवासनुं ॥

॥उग्गए सूरे,अभ्नत्तठं पच्चरकाइ ॥ तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नछणा भोगेणं, सहसागारेणं पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पा णहार पोरिसिं, साढ पोरिसिं, मुठिसहिअं, पच्चरकाइ ॥ अन्नछणाभोगेणं, सहसागारेणं पछन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं मह त्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पाणस्स लेवेण वा, अलेवेणवा, अछेण वा, बहुलेवेण वा, ससिछेण वा असिछेण वा वोसिरे ॥ इति तिविहार उपवासनुं पच्चरकाण ॥ ६१ ॥

॥६२॥ छहुं चउविहार उपवासनुं ॥

॥ सूरे उग्गए अभ्नत्तठं पच्चरकाइ ॥ चउवि

हंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्न त्थणा ञोगेणं, सहसागारेणं, पारिठावणियागा रेणं, महत्तरागारेणं, सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति चउविहारउपवासनुं ॥ ६२ ॥

॥ अथ सांऊनां पच्चरकाण ॥

तहां प्रथम वीयासणं, एकासणं, आयं विल, तिविहार उपवास, अने ठठ जे करे तो तेणे पाणहारनुं पच्चरकाण करवुं ते आवी रीतेः–

॥६३॥पाणहार दिवसचरिमं पच्चरकाइ ॥ अन्नत्थ णाञोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव समाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ ६३ ॥

॥६४॥ वीजुं चउविहारनुं पच्चरकाण ॥

॥ दिवस चरिमं पच्चरकाइ ॥ चउविहंपि आ हारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नत्थणा ञोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सवस माहिवत्तियागारेणं, वोसिरे ॥ इति ॥ ६४ ॥

॥६५॥ त्रीजुं तिविहारनुं पच्चरकाण ॥

॥ दिवस चरिमं पच्चरकाइ॥तिविहंपि आहा रं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा ञोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सवसमाहिवत्ति

यागारेणं, वोसिरे ॥ इति तिविहारनुं ॥ ६५ ॥

॥६६॥ चोथुं डुविहारनुं पच्चरकाण ॥

॥दिवस चरिमं पच्चरकाइ ॥ डुविहंपि आहा रं, असणं, खाइमं, अन्नछणाभोगेणं, सहसा गारेणं, महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तियागा गारेणं वोसिरे इति ॥ ६६ ॥

॥ पांचमुं जे नियम धारे तेने देशावगासिय नुं पच्चरकाण करवुं तेनो पाठ कहे छे ॥

॥६७॥ देसावगासिअं उवभोगं परिभोगं पच्च रकाइ ॥ अन्नछणाभोगेणं, सहसागारेणं, मह त्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ६७

॥६८॥ छठुं पोसहनुं पच्चरकाण ॥

॥ करेमि भंते पोसहं, आहारपोसहं देसउ सव्वउ, सरीर सक्कार, पोसहं सव्वउ, बंभचेर पोसहं सव्वउ, अव्वावारपोसहं सव्वउ, चउव्विहे पोसहं ठामि ॥ जाव दिवसं अहोरतं पजुवा सामि ॥ डुविहं तिविहेणं ॥ मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते पडि क्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसि रामि ॥ इति पच्चखाणानि संपूर्णानि ॥ ६८ ॥

॥ ६ए ॥ अथ पोसह पारतां गाथा ॥

॥ सागरचंदो कामो, चंदवडिंसो सुदंसणो धन्नो ॥ जेसिं पोसह पडिमा, अखंडिआ जीविअं तेवि ॥ १ ॥ धन्ना सलाहणिज्जा, सुलसा आणंद कामदेवाय ॥ जेसिं पसंसइ नयवं, दढव्वयं तं महावीरो ॥ २ ॥ पोसहविधे लीधडं विधे पारीडं विधि करतां जे कोइ अविधि हुई होइ, ते सवि हुं मने वचने कायायें करी मिच्छामि डुक्कडं ॥ ॥ इति ॥ ६ए ॥

॥ ७० ॥ अथ संथारापोरिसी ॥

॥ निसिही निसिही निसिही ॥ नमो खमासमणाणं, गोयमाइणं ॥ महामुणीणं ॥ ए पाठ तथा नवकार तथा करेमि नंते समाइअं ॥ एटला सर्व पाठ त्रण वार कहीने ॥ अणुजाणहजिछिज्जा ॥ अणुजाणह परमगुरू, गरुगुणरयणेहिं मंडियसरीरा ॥ बहुपडिपुन्नापोरिसि, राइय संथारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं बाहुवहाणेण वामपासेणं ॥ कुक्कुडिपायपसारण अंतरंत पमज्जए नूमिं ॥ २ ॥ संकोइअ संमासा, उवट्टंते अ काय पडिलेहा ॥ दव्वइ उ

वउंगं, उसास निरुंनणा लोए ॥ ३ ॥ जइ मे हुज पमाउं, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ॥ आहार मुवहि देहं, सवं तिविहेणं वोसिरिअं ॥४॥ चत्तारि मंगलं ॥ अरिहंता मंगलं ॥ सिधा मंगलं ॥ साहु मंगलं ॥ केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं ॥ ५ ॥ चत्तारि लोगुत्तमा ॥ अरिहंता लोगुत्तमा ॥ सिधा लोगुत्तमा ॥ साहु लोगुत्तमा ॥ केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ ६ ॥ चत्तारि सरणं पवजामि ॥ अरिहंते सरणं पवजामि॥ सिधे सरणं पवजामि ॥ साहु सरणं पवजामि ॥ केवलिपन्नत्तं धम्मं सरणं पवजामि ॥ ७ ॥ पाणाइवाय मलिअं, चोरिक्कं मेहुणं दविण मुच्छं ॥ कोहं माणं मायं, लोनं पिज्जं तहा दोसं ॥ ७ ॥ कलहं अप्नक्खाणं पेसुन्न रई अरई समाउत्तं ॥ परपरिवायं माया, मोसं मिछत्तसल्लं च ॥ ए ॥ वोसिरिसु इमाइं मुक्ख मग्ग संसग्ग विग्घज्रुआई ॥ डुग्गइ निबंधणाई अठारस पावठाणाई ॥ १० ॥ एगोहं नत्थि मे कोइ, नाह मन्नस्स कस्सई ॥ एवं अदीण मणसों, अप्पाण मणुसासई ॥ ११ ॥ ए

गोमे सासर्ज अप्पा, नाण दंसण संजुर्ज॥सेसा मे वाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्कण ॥ १२ ॥ संजोगमूला जीवेण, पत्ता कुक्कपरंपरा ॥ तम्हा संजोग संवंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं॥१३॥ अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सु साहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहिअं ॥ १४ ॥ खमिअ खमाविअ मइ खमिअ सवह जीव निकाय ॥ सिद्धह साख आलोयण ह, मुचह वइर न जाव ॥ १५ ॥ सवे जीवा कम्म वस्स चजदह राज जमंत ॥ ते मे सव्व खमाविआ, मुचवि तेह खमंत ॥ १६ ॥ जं जं मणेण वद्धं, जं जं वाएण मासिअं पावं ॥ जं जं काएण कयं, मिछामि कुक्कडं तस्स ॥ १७ ॥

॥ इति संथारा पोरिसी ॥ ७० ॥

॥ अथ चैत्यवंदन

॥ तत्र प्रथमं सीमंधरजिनचैत्यवंदनं ॥

॥ सीमंधर परमातमा, शिव सुखना दाता ॥ पुक्कल वइ विजये जयो, सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्व विदेह पुंमरीगिणी, नयरीये शोहे॥ श्री श्रेयांस राजा तिहां, जविअणनां मन मो

हे ॥२॥ चउद सुपन निर्मल लही, सत्यकी रा
णी मात ॥ कुंथुं अर जिन अंतरे, श्री सीमंधर
जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमे प्रभु जनमीया, वली
यौवन पावे ॥ मात पिता हरखे करी, रुकमिणी
परणावे ॥ ४ ॥ भोगवी सुख संसारनां, संजम
मन लावे ॥ मुनिसुव्रत नमी अंतरे, दीक्षा प्र
भु पावे ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो क्षय करी, पाम्या
केवल नाण ॥ रिखभ लंछने शोभता, सर्व भा
वना जाण ॥६॥ चौरासी जस गणधरा, मुनि
वर एक शो कोम ॥ त्रण भुवनमां जोयतां, न
हीं कोइ एहनी जोम ॥ ७ ॥ दस लाख कह्या
केवली, प्रभुजीनो परिवार ॥ एक समय त्रण
कालना, जाणे सर्व विचार ॥ ८ ॥ उदय पेढाल
जिनांतरे ए, थाशे जिनवर सिद्ध ॥ जश विज
य गुरु प्रणमतां, शुभ वांछित फल लीध ॥९॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुंचैत्यवंदन ॥

॥ विमल केवल ज्ञानकमला, कलित त्रिभु
वन हितकरम् ॥ सुरराजसंस्तुतचरणपंकज,
नमो आदिजिनेश्वरम् ॥ १ ॥ विमलगिरिवर
शृंगमंडण, प्रवरगुणगणभूधरम् ॥ सुर असुर

किन्नर कोडि सवित ॥ नमो० ॥ २ ॥ करती ना टक किन्नरी गण, गाय जिन गुण मनहरम् ॥ निर्जरावली नमे अहोनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥पुंड रिक गणपति सिद्धि साधी, कोडि पण मुनि म नहरम्॥ श्रीविमल गिरिवर शृंग सिद्धा॥नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुरिंद मुनिवर, कोडि नंत ए गिरिवरम् ॥ मुक्ति रमणी वख्या रंगे ॥ न मो० ॥ ५ ॥ पाताल नर सुरलोक मांही, विमल गिरिवरतोपरम् ॥ नहि अधिक तीरथ तीर्थपति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ इम विमल गिरिवर शि खर मंडण, दुःख विहंडण ध्याईयें ॥ निज शुद्ध सत्ता साधनार्थं, परम ज्योति निपाइयें ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विछोह निद्रा, परमपद स्थित जयकरम् ॥ गिरिराज सेवाकरण तत्पर, पद्मवि जय सुहित करम् ॥ ८ ॥ इति ॥ ७२ ॥

॥ अथ सिद्धाचलनुं चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीशत्रुंजय सिद्ध खेत्र, दीठे दुर्गति वारे॥ भाव धरीने जे चढे, तेने भवपार उतारे ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह गम, सकल तीरथनोराय॥ पूर्व नवाणुं ऋखजदेव, ज्यां ठविआ प्रभुपाय

॥ २ ॥ सूरज कुंम सोहामणो, कविड जद्म अभिराम ॥ नाभिराया कुलमंडणो, जिनवर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति चैत्य० ॥ ७४ ॥

॥ अथ श्रीपरमात्मानुं चैत्यवंदन ॥

॥ परमेसर परमातमा, पावन परमिठ ॥ जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणें में दिठ ॥ १ ॥ अचल अकल अविकार सार, करुणा रससिंधु ॥ जगती जन आधार एक, निःकारण बंधु ॥२॥ गुण अनंत प्रभु ताहारा ए, किमही कह्या न जाय ॥ राम प्रभु जिन ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥ ७५ ॥

अथ सीमंधर जिनस्तवनं ॥

॥ सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासे जावजो ॥ मुज विनतमी, प्रेमधरीने एणि परे तुमें संभलावजो ॥ ए आंकणी ॥ जे त्रण्य भुवननो नायक ठे ॥ जस चोसठ इंद्र पायक ठे॥ नाण दरिसण जेहनें खायक ठे ॥ सुणो०॥१॥ जेनी कंचन वरणी काया ठे ॥ जस धोरीलंठन पाया ठे ॥ पुंडरीगिणि नगरीनो राया ठे ॥ सुणो० ॥ २ ॥ बार पर्षदामिहिं बिराजे ठे॥ जस

चोत्रीश अतिशय गाजे हे ॥ गुण पांत्रीश वा
णीए गाजे हे ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ नविजनने ते प
डिबोहे हे ॥ तुम अधिक शितल गुण शोहे हे॥
रूप देखी नविजन मोहे हे ॥ सुणो० ॥ ४ ॥
तुम सेवा करवा रसीयो हुं ॥ पण नरतमां छरे
वसीयो हुं ॥ महामोह राय कर फसीयो हुं ॥
सुणो० ॥ ५ ॥ पण साहिबचित्तमां धरीयो हे॥
तुम आणा खड्ग कर ग्रहीयो हे ॥ पण कांइक
मुजथी मरीयो हे ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम
पुंठें हुवे पूरो ॥ कहे पद्मविजय थाउं शूरो ॥ तो
वाधे मुज मन अति नूरो ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलस्तवनं ॥

॥ जशोदा मावडी ॥ ए देशी ॥

॥ जात्रा नवाणुं करीये विमलगिरी ॥ जात्रा
नवाणुं करिये ॥ ए आंकणी ॥ पूरव नवाणुं वा
र शेत्रुंजगिरि, रुखन्न जिणंद समोसरीये ॥
वि० ॥ १ ॥ कोमि सहस नव पातक त्रूटे॥शेत्रुं
ज साहामो मग नरीये ॥ वि० ॥ २ ॥ सात छठ
दोय अठम तपस्या, करी चढीये गिरिवरीये ॥
वि० ॥ ३ ॥ पुंडरीक पद जपीये हरखे, अध्य

वसाय शुद्ध धरीये ॥ वि० ॥ ४ ॥ पापी अन्न
व्यी न नजरे देखे, हिंसक पण उध्धरीये ॥वि०॥
॥५॥ भुइं संथारो ने नारी तणो संग, दूरथकी
परिहरीयें ॥वि०॥६॥ सचित्त परिहारीनें एकल
आहारी, गुरु साथे पद चरीयें ॥वि०॥७॥ पडि
क्कमणा दोय विधिशुं करीयें,पाप पडल विखहरी
यें ॥ वि०॥८॥ कलिकालें एतीरथमोटुं, प्रवह
ण जिम भव दरीए ॥वि०॥ए॥ उत्तम ए गिरि
वर सेवंतां, पद्मकहे भव तरीयें॥विमल०॥१०॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

॥ आंखडीये रे में आज, शत्रुंजो दीठो रे॥
सवा लाख टकानो दहाडो रे, लागे मुने मी
ठो रे ॥ ए आंकणी॥ सफल थयो मारा मननो
उमाहो ॥ वाला मारा ॥ भवनो संशय भांग्यो
रे ॥ नरक तिर्यंच गति दूर निवारी, चरणे प्रभु
जीने लाग्यो रे ॥ शत्रुं० ॥ १ ॥ मानवभवनो
लाहो लीधो ॥ वा० ॥ देहडी पावन कीधी रे ॥
सोना रूपाने फूलडे वधावी, प्रेमे प्रदक्षीणा
दीधी रे ॥ शत्रुं० ॥ २ ॥दुधडे पखालीने केशर
घोली ॥ वा० ॥ श्री आदीश्वरपूज्यारे ॥ श्रीसि,

ञाचल नयणें जोतां, पापमेवासि ध्रुज्यारे॥शत्रुं०॥३॥ स्वयमुखसुधर्मा सुरपति आगे॥वा०॥ वीरजिणंद इम बोले रे॥ त्रण भुवनमां तीरथ मोटुं, नहिं कोइ शत्रुंजा तोले रे ॥शत्रुं०॥४॥ इंद्र सरीखा ए तीरथनी॥ वा०॥ चाकरी चित्त मां चाहे रे॥ कायानी तो कासल टाले, सूरज कुंडमां नाहे रे॥ शत्रुं०॥ ५॥ कांकरे कांकरे श्रीसिद्ध खेत्र ॥वा०॥ साधु अनंता सीधा रे॥ ते माटे ए तीरथ मोटुं, उद्धार अनंता कीधारे ॥शत्रुं०॥६॥नाभिराया सुत नयणे जोतां॥वा०॥ मेह अमीरस वूठ्यारे॥ उदयरतन कहे आज मारे पोते, श्रीआदीश्वर तूठ्यारे॥ शत्रुं०॥७॥ इति स्तवनं॥ ७०॥

॥ अथ श्रीशंखेश्वरपार्श्वजिन स्तुतिः॥

॥ शंखेश्वर पासजी पूजियें, नरभवनो ला हो लीजियें॥ मन वंछित पूरण सुततरु, जय वा मासुत अलवेसरु॥१॥ दोय राता जिनवर अति भला, दोय धोला जिनवर गुणनिला॥ दोय लीला दोय सामल कह्या, शोले जिन कंचन व र्ण लह्या॥२॥ आगम ते जिनवरें भाखीयो, ग

णधर ते हीयमे राखीयो॥ तेहनो रस जेणे चाखी
यो, ते हुउ शिव सुख साखीयो ॥ ३ ॥ धरणी
धर राय पद्मावती, प्रभु पार्श्व तणा गुण गाव
ती ॥ सहु संघना संकट चूरती, नयविमलना
वंछित पूरती ॥ ४ ॥ ॥ इति ॥ ७५ ॥

॥ अथ शिखामण सज्झाय ॥

॥ जीव वारुं हुं मोरा वालमां, परनारीथी
प्रीति म जोड ॥ परनारीनी संगत नहीं भली,
तारा कुलमां लागशे खोड ॥ जीव० ॥ १ ॥ जी
व आ संसार छे कारमो, दीसे छे आल पंपाल॥
जीव एहवुं जाणी चेतजो, आगल मार्गमे ना
खी छे जाल ॥ जी० ॥ २ ॥ जीव मात पिता
भाइ बेनमी, सहु कुटुंब तणो परिवार ॥ जीव
वेती वारे सहु सगुं, पछें लांबा कीधा जुहार ॥
जीव० ॥ ३ ॥ देहली लगें सगो आंगणो, शे
रीअ लगें सगीमाय ॥ जीव सीम लगें साजन
भलो, पछें हंस एकीलो जाय ॥ जीव० ॥ ४ ॥
जीव जातां थकां नवि जाणीयुं, नवि जाण्यो
वार कुवार ॥ जीव गाडुं भरीयुं ईंधणे, वली खो
खरी हांडलीसार ॥ जीव० ॥ ५ ॥ जीव आठ

म पाखि न उलखी, जीव वहुला कीधा पाप जीव सुमतिविजय मुनि एम भणे, जीव आ वागमण निवार ॥ जीव० ॥ ६ ॥ इति ॥ ८७॥

॥ अथ श्री अनाथी मुनिनी सद्याय ॥

॥ श्रेणिक रयवाम्ही चढ्यो, पेखीयो मुनि ए कंत॥वररूप कांतें मोहीउ, राय पूछे ए कहोनें विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिक राय हुंरे अनाथी नि ग्रंथ ॥ तिणे में लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥श्रेणि क० ॥ ए आंकणी ॥ इणें कोसंवी नयरी वसे, मुफ पिता परिगलधन्न ॥ परिवार पूरें परिवस्यो, हुं छुं तेहनो रे पुत्ररतन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ एक दिवस मुफ वेदना, ऊपनी में न खमाय ॥ मात पिता सहु झूरी रह्या, पण समाधि किणे नवि थाय, ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरडी गुण मणिउरम्ही, चोरम्ही अवला नार ॥ कोरडी पीडा में सही, कोणे न कीधी मोरम्ही सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ वहु राज्य वैद्य वोलाविया, कीधला कोडि उपाय ॥वावना चंदन चरचिया, तोहिपण रे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ जगमांहि को केहनो न हीं, ते भणी हुं रे अनाथ ॥ वीतरागना धरमसा

रिखो, नहीं कोइबीजो रे मुक्तिनो साथ ॥ श्रे०॥
॥ ६ ॥ वेदना जो मुऊ उपशमे,तो लेउं संजम भा
र ॥ इम चिंतवतां वेदन गई, व्रत लीधुं में हर्ष
अपार ॥ श्रे० ॥ ७ ॥ कर जोमी राय गुण स्त
वे, धन धन ए अणगार ॥ श्रेणिक समकित
पामीयो, वांदी पोहोतो रे नगर मऊार ॥ श्रे०॥
॥ ८ ॥ मुनि अनाथी गावतां तूटे कर्मनीकोड
गणि समय सुंदर तेहना, पाय वंदे रे वे कर
जोड ॥श्रे०॥ए॥इति अनाथीनी सद्याय ॥८८॥

॥ अथ सामायिक लेवानो विधि

॥ प्रथम उंचें आसनें पुस्तक प्रमुख मूकी
श्रावक श्राविका कटासणुं, मुहपत्ती, चरवलो
लेइ, शुद्ध वस्त्र, जग्या पूंजी, कटासणा उपरवे
सी, मुहपत्ती डावा हाथमां मुख पासें राखी,
जमणो हाथ थापनाजी सन्मुख राखी, एक न
वकार गणी, पचिंदिअ कहीयें; अने जो आ
गलथी ते स्थानकें आचार्यप्रमुखनी स्थापना क
रेली होय, तो तिहां पंचिंदिय न कहेवुं,पछी इ
छामि खमासमण देइ, इरियावहिया०तथा त
स्स उत्तरी० अने अन्नत्थ उससीएणं कही,एक

लोगस्सनो अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी, प्रगट लोगस्स कही, खमासमण देइ, "इछाकारेण संदिसह जगवन् सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ॥इछं"॥ एम कही मुहपत्ति तथा अंगनी पमिलेहणना पच्चास बोल कही, मुहपत्ती पडिलेहीयें, पठी खमासमण देइ, "इछाकारेण संदिसह जगवन् सामायिक, संदिसाहुं ॥ इछं॥ कही खमा० इछा० ॥ सामायिक ठाउं, इछं" एम कही, वे हाथ जोडी, एक नवकार गणी, इछाकार जगवन् पसाय करी,सामायिक दंडक उच्चरावो जी. तेवारें व डिल, करेमि जंते कहे, पठी खमासमण देइ इछा० ॥ वेसणे संदिसाहुं ॥ इछं ॥ खमा०॥ इछ० ॥ वेसणें ठाउं ॥ इछं ॥ खमा० ॥ इछा०॥ सज्झाय संदिसाहुं ॥ इछं ॥ खमा० ॥ इछा० ॥ सज्झाय

(खमा० होय, त्यां खमासमण देवुं. इच्छा० होय, त्यां इच्छाकारेण संदिसह जगवन् कहेवुं, तथा ए सर्व विधि जे लख्यो छे, ते स्थापनाजी संनमुख क्रिया करवा आश्रयी समजवो, परंतु साक्षात् गुरु विराजमान होय तो इच्छाकारेण संदिसह जगवन् सज्झाय संदिसाहुं, एम शिष्य कहे तेवारें गुरु कहे "संदिसह" तथा इरियावहि पडिकमवाना आदेशमां गुरु "पमिक्कमेह" कहे, एम सर्व स्थानकें समजी लेवुं.)

करुं ॥ इच्छं ॥ एम कही त्रण नवकार गणवा॥ पछी बे घमी सजाय धर्मध्यान करवुं॥इति॥९६॥

॥ अथ सामायिक पारवानो विधि ॥

॥ खमासमण देइ ॥ इरियावहिपमिक्कमवाथी यावत्लोगस्स सुधी कही ॥ खमा० ॥ इछा० ॥ मुहपत्ती पडीलेहुं एम कहीमुहपत्ती पमिलेही, खमासमण देइ ॥ इछा० ॥ सामायिक पारुं ॥ यथाशक्ति ॥ वली खमा० इछा० ॥ सामायिक पार्युं ॥तहत्ति॥ कही पछी जमणो हाथ चरवला उपर अथवा कटासणाउपर थापी एक नवकार गणी "सामाइयवयजुत्तो" कहियें ॥ पछी जमणो हाथ थापना सामो सवलो राखीने एक नवकार गणी उठवुं ॥ इति सामायिक पारवानो विधि समाप्त ॥ ९७ ॥

॥ अथ पाच्चरकाण परवानो विधि ॥

॥ प्रथम "इरियावहियाए" पडिक्कमी यावत् "जगचिंतामणि" नुं चैत्यवंदन "जयवीयराय" सुधी करवुं ॥ पछी "मन्हजिणाणं" नीसजाय कही मुहपत्ति पडिलेहवी ॥ पछी खमासमण देइ इछाकारेण संदिसह जगवन् पच्च

लोगस्सनो अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी, प्रगट लोगस्स कही, खमासमण देइ, "इछाकारेण संदिसह जगवन् सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ॥इछं"॥ एम कही मुहपत्ति तथा अंगनी पम्लिेहणना पच्चास बोल कही, मुहपत्ती पडिलेहीयें, पछी खमासमण देइ, "इछाकारेण संदिसह जगवन् सामायिक, संदिसाहुं ॥ इछं॥ कही खमा० इछा० ॥ सामायिक गउं, इछं" एम कही, बे हाथ जोडी, एक नवकार गणी, इछाकार जगवन् पसाय करी,सामायिक दंडक उच्चरावो जी. तेवारें वडिल, करेमि जंते कहे, पछी खमासमण देइ इछा० ॥ बेसणे संदिसाहुं ॥ इछं ॥ खमा०॥ इछा० ॥ बेसणें गउं ॥ इछं ॥ खमा० ॥ इछा०॥ सजाय संदिसाहुं ॥ इछं ॥ खमा० ॥ इछा० ॥ सजाय

(खमा० होय, त्यां खमासमण देवुं. इच्छा० होय, त्यां इच्छाकारेण संदिसह जगवन् कहेवुं, तथा ए सर्व विधि जे लख्यो छे, ते स्थापनाजी संनमुख क्रिया करवा आश्रयी समजवो, परंतु साक्षात् गुरु बिराजमान होय तो इच्छाकारेण संदिसह जगवन् सज्काय संदिसाहुं, एम शिष्य कहे तेवारें गुरु कहे "संदिसह" तथा इरियावहि पडिकमवाना आदेशमां गुरु "पम्लिक्कमेह" कहे, एम सर्व स्थानकें समजी लेवुं.)

करुं ॥ इच्छं ॥ एम कही त्रण नवकार गणवा॥ पछी बे घमी सज्झाय धर्मध्यान करवुं॥इति॥ए६॥

॥ अथ सामायिक पारवानो विधि ॥

॥ खमासमण देइ ॥ इरियावहिपमिक्कमवाथी यावत्लोगस्स सुधी कही ॥ खमा० ॥ इच्छा० ॥ मुहपत्ती पडीलेहुं एम कहीमुहपत्ती पमिलेही, खमासमण देइ ॥ इच्छा० ॥ सामायिक पारुं ॥ यथाशक्ति ॥ वली खमा० इच्छा० ॥ सामायिक पार्युं ॥तहत्ति॥ कही पछी जमणो हाथ चरवला उपर अथवा कटासणाउपर थापी एक नवकार गणी "सामाइयवयजुत्तो" कहियें ॥ पछी जमणो हाथ थापना सामो सवलो राखीने एक नवकार गणी उठवुं ॥ इति सामायिक पारवानो विधि समाप्त ॥ ए७ ॥

॥ अथ पाच्चरकाण परवानो विधि ॥

॥ प्रथम "इरियावहियाए" पडिक्कमी यावत् "जगचिंतामणि" नुं चैत्यवंदन "जयवीयराय" सुधी करवुं ॥ पछी "मन्हजिणाणं" नीसज्झाय कही मुहपत्ति पडिलेहवी ॥ पछी खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पच्च

क्खाण पारुं यथाशक्ति "इञ्चामि० इञ्चा०
पच्चक्खाण पारवुं "तहत्ति" एम कही जमणो
हाथ कटासणां अथवा चरवला उपर थापी,
एक "नवकार" गणी, पच्चक्खाण कर्युं होय
तेनुं नाम कहीने पारवुं. ते लखीये छेयेः—
उग्गए सूरे नमुक्कार सहिअं, पोरिसिं, साढपोरिसिं,
गंठिसहिअं, मुठिसहिअं, पच्चक्खाण कर्युं; चउवि
हार, आंबिल, निवी, एकासणुं, बे आसणुं कर्युं,
तिविहार पच्चक्खाण, फासिअं, पालिअं, सोहि
अं, तीरिअं, कट्टिअं, आराहिअं, जं च न आ
राहिअं, तस्स मिछामि दुक्कडं, एम कही एक
नवकार गणावो ॥ इति ॥ एठ ॥

॥ अथ पडिलेहण करवानो विधि ॥

॥ नवकार पंचिंदिअं कही, इरियावहियाए
कहेवुं, थापना होय तो नवकार पंचिंदिअ न
कहेवो. पछी तस्स उत्तरी कही एक लोगस्स अ
थवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, प्रगट
लोगस्स कही, उन्ने पगें बेसी मुहपत्ती, चरवलो
कटासणुं, उत्तरासणुं, धोतीयुं, कंदोरो आदि
नुं पडिलेहण करवुं, पछी काजो काढामी, जीव

कलेवर सचित्त आदि जोवुं, पछी काजो काढा ढनार थापनाजी सामो ऊनो रही, इरियावहि पमिक्कमी, काजो परठववा जग्या शोधी, त्रण वार अणुजाणह जस्सग्गो कही, काजो परठवी ने पछी त्रणवार "वोसिरे" कहे ॥ इति ॥एए॥

॥ अथ देवसि प्रतिक्रमणविधि ॥

॥ प्रथम सामायिकलीजें, पछी पाणी वाव र्‍युं होय तो, मुहपत्ति पमिलेहवी, अने आहार वावर्‍यो होय तो, वांदणां बे देवां, त्यां बीजा वांदणामां "आवसियाए" ए पाठ न कहेवो ॥ पछी यथाशक्ति पच्चरकाण करवुं ॥ पछी खमा समण देई इच्छाकारेण संदिसह जगवन् चै त्यवंदन करु "इछं" एम कही, वमेरायें अथवा पोतें चैत्यवंदन कहेवुं ॥ पछी जंकिंचि कही नमुत्थुणं कहेवुं ॥ पछी ऊना थईने अरिहंत चेइयाणं० अन्नत्थं० कही एक नवकारनो काऊ स्सग्ग करी, पारीने, जेने वमेरा हुकम आपे ते धणीयें "नमोऽर्हत्" कहीने प्रथम थोय क हेवी ॥ पछी प्रगट लोगस्स कही, सवलोए अ रिहंतचेइयाणं कही,एक नवकारनो काउस्सग्ग

पारी वीजी थोय कहेवी ॥ पछी पुरकरवरदी कही, "सुअस्स नगवऊ करेमि काउस्सग्गं वंद णवत्तिआए" कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग करी, त्रीजी थोय कहेवी ॥ पछी सिफाणं बुफा णं० वेयावच्चगराणं० करेमिकाउस्सग्गं अन्न ज्ञ० नो पाठ कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी "नमोऽर्हत्" कही, चोथी थोय कहेवी ॥ पछी वेशी हाथ जोडीने "नमुठुणं" कही खमासमण देइ, "नगवानहं" कहेवुं. वली वीजुं खमासमण देइ, "आचार्यहं" कहेवुं, वलीत्रीजुं खमासमण देइ, "उपाध्यायहं" कहेवुं वली चोथुं खमासमण देइ, सर्व साधुन्योऽहं" कहेवुं, ए रीतें चार खमासमण देवापूर्वक नगवानादि चारने थोन वंदन करीयें ॥ पछी खमासमण आपी इछाकारेण संदिसह नगवन् "देवसिप्रतिक्रमणें ठाउं" एम कही जमणो हाथ चरवला अथवा कटासणा ऊपर थापीने, इछं सवस्सवि देवसिअं० नो पाठ कही ऊना थई, करेमि नंते०इछामि ठामि काउस्सगं जो मे देवसिउं० तस्स उत्तरि० कही अतिचारनीआठ

गाथानो काउस्सग्ग करवो, जो आठ गाथा न आवम्ती होय तो आठ नवकारनो काउस्सग्ग करवो, ते पारीने प्रगट लोगस्स कहेवो॥ पछी बेशीने त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ति पडिलेहीने वांदणां बे देवां ॥ पछी ऊन्ना थईने इछाकारेण संदिसह नगवन् देवसिअं आलोउं इछं आलोएमि कही जो मे देवसिउं कहेवुं, पछी सात लाख० कही, अढार पापस्थानक आलोइने, "सव्वस्सवि देवसियं" कहेवुं ॥ पछी नीचें बेसी जमणो ढींचण ऊन्नो राखी, एक नवकार गणी, करेमिन्नंते० इछामि पडिक्कमिउं०कही वंदितासूत्र संपूर्ण कहीने वांदणां बे देवां ॥ पछी खमासमण देई इछाकारेण संदिसह नगवन् अप्नुठिउंहं अप्निंतर देवसियं खामेउं एम कही, अप्नुठिउं खामीने वांदणां बेवार देवां ॥ पछी ऊन्ना थई "आयरिय उवज्जाय" कही करेमि न्नंते इछामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिउं० कह "तस्स उत्तरी" कही बे लोगस्सनो अथवा आठ नवकारनो काउस्सग्ग करी पारीने प्रगट लोगस्स कहेवो ॥ पछी सव्व

लोए अरिहंतचेइआणं कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग पारी पछी पुक्खरवरदी,सुअस्स ज्ञगवर्ज,करेमि काउस्सग्गं वंदण० अन्नत्थ० कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग पारीने पछी सिद्धाणं बुद्धाणं कही, सुअ देवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी, "नमोऽर्हत्०" कही, पुरुषें "सुअदेवया" नी पहेली थोय अने स्त्रीयें "कमलदल" नी पहेली थोय कहेवी ॥ पछी खित्तदेवयाए करेमि काउ स्सग्गं० कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी "नमोऽर्हत्" कही खित्तदेवयानी बीजी थोय स्त्रीयें तथा पुरुषें कहेवी ॥ पछी प्रगट एक नव कार गणी, बेशीनें छठा आवश्यकनी मुहपत्ति पडिलेही वांदणां बे देईने, इछाकारेण संदिसह ज्ञगवन् सामायिक, चउविसछो, वंदनक, पडि क्कमणुं, काउस्सग्ग, पच्चक्काण, कर्युं छे जी, ए रीते छ आवश्यक, संज्ञारवां ॥ पछी "इछामो अणुसहिं" "नमोखमासमणाणं०" "नमोऽर्ह त्०" कही, पुरुष, नमोस्तु वर्द्धमानाय कहे अ

ने स्त्री संसारदावानी त्रण थोयो कहे ॥ पछी न
मुत्थुणं कही, खमासमण आपी इच्छाकारेण सं
दिसह भगवन् स्तवन भणुं. एम कही नमोऽर्ह
त्०कही स्तवन कहेवुं ॥ पछी वरकनक०कही
पूर्वली रीतें चार खमासमणपूर्वक भगवान्
आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, ए चारने वांदी
जमणो हाथ उपधि ऊपर थापी अड्ढाइज्जेसु०
मुनिवंदन कहेवुं ॥ पछी खमासमण आपी इच्छा
कारेण संदिसह भगवन् देवसिय पायच्छित्तवि
सोहणत्थं काउस्सग्ग करुं, इच्छं देवसिय पाय
च्छित्त विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थऊस
सिएणं०कही चार लोगस्स अथवा शोल नव
कारनो काउस्सग्ग करवो, ते पारी प्रगट लोग्ग
स्स कहीने नीचे बेशी खमासमण देइ इच्छा
कारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहुं, इ
च्छं कही वली बीजुं खमासमण देई इच्छाकारेण
संदिसह भगवन् सज्झाय भणुं एम सज्झायनो
आदेश मागी एक नवकार गणी सज्झाय कहेवी
॥ पछी एक नवकार गणी, खमासमण देई इ
च्छाकारेण संदिसह भगवन् दुक्खक्खओ कम्मक्ख

उ निमित्तं काउस्सग्ग करुं, इछं डुक्खकउ क म्मखउ निमित्तं करेमि काउस्सग्गं "अन्नछ०" कही "संपूर्ण चार लोगस्स अथवा शोल न वकार" नो काउस्सग्ग करवो, ते जेने लघु शां ति कहेवी होय एवो एक वडेरो, अथवा पोते शांति कहेवावालो होय तो पोतेज पारीने "नमोऽर्हत्० " कही लघुशांति कहीने प्रगट लोगस्स कहे ॥ पठी इरियावही अने तस्स उ त्तरी कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकार नो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कहेवो ॥ पठी चउक्कसाय कही, नमुथ्थुणं कही, जावंति चेइआइं कही खमासमण देइ जावंति केवि साहु कही उवसग्गहरं कही हाथ जोडी मस्तकें राखी जयवीयराय कही खमासमण देइ मुहप त्ति पडिलेहवी ॥ पठी खमासमण देई इछाका रेण संदिसह नगवन् सामायिक पारुं. आ स्थानकें जो साक्षात्गुरु विराजमान होय तो ते कहे के "पुणोवि कायव्वं" तेवारें शिष्य "यथाश क्ति" कही फरी खमासमण देई इछाकारेण संदि सह नगवन् सामायिक पार्युं. तेवारें गुरु कहे

" आयरं न मुत्तवं " ते सांजली शिष्य तहत्ति कहे ॥ पछी जमणो हाथ चवला अथवा कटा सणा ऊपर थापी एक नवकार गणी " सामाइ यवयजुत्तो०' कहीने थापेली थापना होय तो तेनी सामो जमणो हाथ राखी एक नवकार ग णी ऊठे ॥ ए देवसि प्रतिक्रमणनो विधि सा मान्य पणे कह्यो, बाकी अंतर्विधि वमेराथी स मजवो ॥ इति ॥ १०१ ॥

॥ अथ राइप्रतिक्रमणविधि ॥

॥ प्रथम पूर्वली रीतें सामायिक लेवुं तेज्यां सुधी त्रण नवकार गणीयें तिहां सुधी सर्व वि धि जाणवो ॥ पछी खमासमण देई इछाकारेण संदिसह जगवन् कुसुमिण डुसुमिण राइजवह णि पायछित्तविसोहणछं काउस्सग्ग करुं. इछं करेमि काउस्सग्ग "अन्नछ ऊससिएणं० ,, कही चार लोगस्स अथवा शोलनवकारनो काउस्सग्ग करी पारीने प्रगट लोगस्स क हेवो ॥ पछी खमासमण देई इछाकारेण सं दिसह जगवन् चैत्यवंदन जयवीयराय सुधी, कहवुं ॥ पछी पूर्वोक्त देवसीनी रीतें जगवान्

सहिं नमो गमासमणाणं कही नमोऽर्हत्०कही यें॥पठी विशाललोचन,०नमुहुणं,०अरिहंत चेइयाणं,०कही एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्०कही कल्लाणकंदनी प्रथम थोय कहेवी पठी लोगस्स० पुक्करवरदी,०सिद्धाणं बुद्धाणं,०कही अनुक्रमें चार थोयो कहीयें ढैयें, तिहां सुधी सर्व कहेवुं ॥ पठी नमुहुणं०कही नगवान् आदि चारने चार खमासमणे वांदवा॥ पठी जमणो हाथ उपधि ऊपर थापी "अहाइज्जेसु" कहेवुं ॥ पठी ईशान खुणानी सन्मुख श्रीसीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय, काउस्सग्ग थोय पर्यंत कहीयें, तिहां सुधी सर्व करवुं ॥ पठी खमासमण देई श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय, काउस्सग्ग थोय पर्यंत कहीयें ढैयें, तिहां सुधी सर्व करवुं ॥ पठी सामायिक पारवाना विधिनी रीतें सामायिक पारवा सुधीनो सर्व विधि करवो॥ इति राइप्रतिक्रमणविधिः समाप्तः ॥ २ ० २॥

॥ अथ पक्खि प्रतिक्रमणविधि ॥

॥ प्रथम दैवसिकप्रतिक्रमणमां वंदित्तु कही

रहियें तिहां सुधी सर्व कहेवुं, पण चैत्यवंदनस
कलाऽर्हत्नुं कहेवुं, अने थोयो स्नातस्यानीक
हेवी. पछी खमासमण देईनें इछाकारेण संदि
सह नगवन् देवसिअं आलोइअ पडिक्कता इ
छाकारेण० पक्खी मुहपत्ति पडिलेहुं. एम क
ही मुहपत्ति पडिलेहियें पछी वांदणां वे दीजें,
पछी इछाकार० संबुद्धा खामणेणं अप्नुठिउहुं
अप्निंतर पक्खिअं खामेउं इछं खामेमि पक्खिअं
पनरस दिवसाणं, पनरस राइआणं, जंकिंचि
अपत्तियं० ॥ कही इछाकारेणसं० ॥ पक्खिअं
आलोएमि इछं आलोएमि जो मे पक्खिउ अ
इआरो कउ०कही इछाकारेण सं० ॥ पखीअ
तिचार आलोउं एम कही अतिचार कहियें. प
छी एवंकारे श्रावकतणे धर्मे श्रीसमकित मूल बा
रव्रत, एकशो चोवीश अतिचारमांहे जे कोइ
अतिचार पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणतां
अजाणता हुउ होय, ते सवे हुं मनें, वचनें,
कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥सबसवि पक्खिअ
डुचिंत्तिअं, डुप्नासिय, डुच्चिठिअ, इछाकारेण
संदिस्सह नगवन् तस्स मिछामि डुक्कडं॥इछाका

रि जगवन् पसाउ करि पक्कि तपप्रसाद करो जी. एम उच्चार करीने आवी रीतें कहियेः–च उत्थेणं एक उपवास, बे आंबिल, त्रण नीवि, चार एकासणां, आठ बे आसणां, बे हजार स ज्झाय,यथाशक्ति तप करी(प्रवेश)कर्यो होय तो पइठी कहियें, अने करवो होय तो तहत्ति कही यें, तथा न करवो होय तो अणबोल्या रहीयें. पठी वांदणां बे दीजें. पठी इछाका० ॥ पत्तेअ खामणेणं अप्नुठिउंहं अप्निंतर पक्किअं खामे उं इछं खामेमि पक्किअं पनरस दिवसाणं पन रस राइआणं जंकिंचि अपत्तियं० पठी वांदणां बे दीजें. पठी देवसिअं आलोइअ पम्किंता इ छाका० ॥ जगवन्० पक्किअं पम्किसुं समपडि क्कमामि इछं एम कही करेमि जंत्ते सामाइयं०॥ कही इछामि पडिक्कमिउं जो मे पक्किउं० कहे वुं. पठी खमासमण देइ इछाकारेणसंदि०॥ प क्किसूत्र पढुं. एम कही त्रण नवकारगणी सा धु होय तो पक्किसूत्र कहे अने साधु न होय तो त्रण नवकार गणीने श्रावक वंदित्तुं कहे पठी सुअदेवयानी थोय केहेवी. पठी हेठा वेसी

जमणो ढिंचण ऊंचो राखी एक नवकार गणी करेमि जंते० ॥ इच्छामि पडि० ॥ कही वंदित्तुं कहेवुं. पछी करेमि जंते० इच्छामि ठामि काउ स्सग्गं जोमे पक्खिर्ज० ॥ तस्सउत्तरी० ॥ अ न्नछ० ॥ कहीने बार लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. ते लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा सुधी क हेवा. अथवा अडतालीश नवकारनो काउस्स ग्ग करी पारवो. पारीने प्रगट लोगस्स कही मु हपत्ति पडिलेहिनें वांदणां बे दीजें, पछी इच्छा का०॥समाप्त खामणेणं अब्भुठिर्जहं अब्भिंतर० ॥ पक्खिअं० ॥ खामेउं इछं खामेमि पक्खिअं एक पक्खाणं पनरस दिवसाणं पनरस राइया णं जंकिंचि अपत्तिअं कही पछी खमासमण दे इनें इच्छाका० ॥ पक्खि खापणां खामुं. एम कही एक खमासण देई तीन तीन नवकार गुणी एम खामणां चार खामवां. पछी देवसि प्रतिक्र मणामां वंदित्तुं कह्या. पछी बे वांदणां देइने ति हांथी ते सामायिक पारीयें तिहां सुधी सर्व देव सीनी पेठे जाणवुं, पण सुअदेवयानी थोयोने ठेकाणे "ज्ञानादि"नी थोयो कहेवी.स्तवन अजि

य शांतिनुं कहेवुं. सद्मायने ठेकाणे उवसग्गहरं तथा संसारदावानी थोयो चार कहेवी. अने लघुशांतिने ठेकाणे महोटी शांति कहेवी॥ इति पक्खिप्रतिक्रमणविधिः ॥

॥ अथ चउम्मासीप्रतिक्रमणविधिः ॥

॥ ए उपर कह्या मुजव पक्खीना विधि प्रमाणे करवुं, पण एटलुं विशेष जे बार लोगस्सना काउस्सग्गने ठेकाणे वीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, अने पक्खीना आगारने ठेकाणे चउमासीना केहवा तथा तपने ठेकाणे छठेणं बे उपवास, चार आंबिल, छ नीवि, आठ एकासणां शोल बे आसणां, चार हजार सज्झाय, ए रीते कहीये ॥ इति ॥

॥ अथ संवत्सरीप्रतिक्रमणविधिः ॥

॥ ए पण उपर लख्या मुजव पक्खीना विधि प्रमाणे करवुं, पण बार लोगस्सना काउस्सग्ग ने ठेकाणे चालीस लोगस्सनो काउसग्ग तपने ठेकाणें अठम भत्तं एटले त्रण उपवास, छ आंबिल नव नीवि, बार एकासणां, चोवीस बे आसणां, अने छ हजार सद्माय ए रीतें कहेवुं" ने

पक्कीना आगारने ठेकाणे संवत्सरीना आगार कहेवा ॥ इति संवत्सरीप्रतिक्र० सं० ॥

पोसह लेवानी विधि.

प्रथम खमासमण दइ, प्रगट लोगस्स कहेवा पर्यंत इरियावहि पडिक्कमी, इछाकारेण संदिसह ञगवान् पोसह मुहपत्ती पडिलेहु! एम बोली, गुरु आदेश आपे एटले 'इछं' कहीने मुहपति पडी लेहवी. पछी खमा०[1] इछा०[2] पोसह संदिसाहु? इछं खमा० इछा० पोसह ठाउं? पछी इछं कही बे हाथ जोमी नवकार गणी, इछकारी ञगवन् पसाय करी पोसह दंडक उच्चरावोजी. कहेवुं एटले गुरु पोसहनी करेमिञंते[3] उच्चरावे.

पछी खमासमण दइ इछा० सामायिक मुहपति पडि लेहुं? इछं कही, मुहपत्ति पडीलेहीने,

---

१ खमा० खमासमण देवुं.

२ इछा० इछाकारेण संदिसह ञगवन् कहेवुं.

३ करेमि ञंतेमां चार पहोरनो दिवसनो करनारने माटे "जाव दिवस " कहेवुं, आठ पहोरनो करनारने माटे ' जाव अहोरत्त' कहेवुं रात्रीना चार पहोरवालाने 'जाव शेष दिवसं रत' कहेवुं अने दिवसनो चार पहोरनो करनारज रात्रिनो चार पहोरनो पण करे तो कोटीसहित ठे माटे 'जाव अहोरत' कहेवुं.

खमा० इछा० सामायिक संदिसाहुं? इछं. खमा०इछा० सामायिक ठाउं? इछं कही वे हाथ जोडी नवकार गणी इछाकारी भगवन् पसाय करी सामायिक दंडक उच्चारावोजी, गुरु 'करेमि भंते सामाइयं' नो पाठ कहे. तेमां एटलुं विशेष जे जावनियमं ने ठेकाणे जावपोसहं कहेवुं. पछी खमा० इछा० बेसणे संदिसाहुं? इछं खमा० इछा० बेसणे ठाउं? इछा. खमा० इछा० सझाय संदिसाहु? इछं. खमा० इछा० सज्झाय करुं? इछं कही,त्रण नवकार गणवा. पछी खमा० इछा० बहुवेल संदिसाहुं? इछा० बहुवेल इछं. खमा० इछा० बहुवेल करशुं. इछं खमा० इछा० पडिलेहण करुं? इछं कहीने मुहपत्ति विगेरे पांचवाना पडिलेहवा. [1]मुहपत्ति ५० बोलथी, चरवलो १० बोलथी, कटासणुं २५ बोलथी. [2]सुत्रनो कंदोरो १० बोलथी अने धोतीयुं २५ बोल

---

१ मुहपत्तिना ५० बोल पाछल लख्या छे. जेटला बोल होय त्यां ते ५० मांहेना प्रथमना ग्रहण करवा.

२ पोसहमां आभूषण पहेरवा न जोइये कंदोरो सुत्रनो जोइये. ते छोडी, पडिलेही, पाछो बांधीने ते संबंधना इरियावहीतेज वखत पडिकमवा (बंन्ने टंकनी पडिलेहणामां समजवुं.

थी पमिलेहवुं. पठी खमासमण दइ, इच्छाकारी जगवन् पसाय करी पमिलेहणा पमिलेहावोजी. एम कही वडीलनुं अण पडिलेह्युं एक वस्त्र. उत्तरासन पमिलेहवुं. पठी खमा० इच्छा० उपधि मुहपत्ति पमिलेहुं? इच्छं कही मुहपत्ति पमिलेहवी पठी खमा० इच्छा० उपधि संदिसाहुं? इच्छं खमा० इच्छा० उपधि पमिलेहुं ? इच्छं कहीने पूर्वे पमिलेहतां बाकी रहेल उत्तरासण,मात्रुं करवा जवानुं वस्त्र अने रात्री पोसह करवो होय तो कामली विगेरे २५ पचीस बोलथी पमिलेहवा. पठी एक जणे डंडासण जाची लेवुं तेने पडिलेही, इरियावही पडिक्कमीने काजो लेवो. काजो[१] शुद्ध एटले तपासीत्यांज स्थापनाचार्यनी सन्मुख उत्कडक वेसीने इरियावही पडिकमवा. पठी काजो यथा योग्य स्थानके अणुजाणह जस्सग्गो कहीने परठववो. परठव्या पठी त्रणवार वोसिरे कहेवुं. पठी मूल स्थानके आवीने सौ साथे देव वांदे अने सज्झाय करे.

---

१ काजामां सचित्त एकेंद्री नीकले तो गुरु पासे आलोयण लेवी. त्रस जीव नीकले तो यतना करवी.

॥ पोसह पारवानी विधि ॥

खमा० दइ इरियावही पडिक्कमी, चउक्कसा यथी जयवियराय पर्यंत कहीने, खमा० इच्छा० मुहपत्ति पडीलेहुं ? इच्छं कही मुहपत्ति पडीले हवी. पछी खमा० इच्छा० पोसह पारुं ? यथाश क्ति खमा० इच्छा० पोसह पार्यो. तहत्ति कही नवकार गणी चरवला उपर जमणो हाथ स्था पीने सागरचंदो० कहे ॥

पछी खमा ०इच्छा० मुहपति पडिहुं ? इच्छं कही मुहपत्ति पडिलेहीने खमा०इच्छा सामायिकपारु? यथाशक्ति. खमा० इच्छा० सामायिक पार्युं. तहत्ति कही,चरवळा उपर हात स्थापी नवकार गणीने सामाइय वयजुत्तो कहे. पछी विधि करतां जे काइ अविधि थइ होय तस्समिच्छामी दुक्कडं कहे. इति

हवे जेणे सवारे आठ पहोरनोज पोसहली धो होय ते सांजना देव वांद्या पछी[1] कुंडल ली धा न होय तो लइने तथा डंमासण अने रात्री

---

१ कुंडल-रुना पुंजडा. ते बे कानमां राखे. जो गुमावेतो आलोयण आवे.

ने माटे अचित्त पाणी चुनो नाखेलुं जाची रा खीने पछी खमा० दइ इरियावही पडिक्कमीने खमा० इछा० स्थंडिल पडिलेहुं? इछं कही चोवीश मांडला करे ते आ प्रमाणे—

आ मांडला वडी नीति लघु नीति विगेरे परठववा योग्य जग्या प्रतिलेखण निमित्ते करवाना छे तेमां प्रथम संथारापासेनी जग्याए छ मांडला करवा—

१ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे
२ आघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे,
३ आघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे.
४ आघाडे मज्झे पासवणे अणहियासे.
५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे,
६ आघाडे दूरे पासवणे अणहियासे,
१ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे,
२ आघाडे आसन्ने पासवणे अहियासे,
३ आघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे,
४ आघाडे मज्झे पासवणे अहियासे,
५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे
६ आघाडे दूरे पासवणे अहियासे,

१ अघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणाघाडे,
२ आघाडे आसन्ने पासवणे अणाघाडे,
३ आघाडे मज्जे उच्चारे पासवणे अणाघाडे,
४ आघाडे मज्जे पासवणे अणाघाडे,
५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणाघाडे,
६ आगाडे दूरे पासवणे अणाघाडे,

बीजा ६ उपाश्रयना बारणानी मांहेनी तर फना मांडला उपर प्रमाणेज कहेवा.

त्रीजा ६ मांडला उपाश्रयना बारणा बहार नजीक रहीने करवाना तथा चोथा ६ मांडला उपाश्रयथी सो हाथने आशरे दूर रहीने करवाना तेमां पण त्रीजा ६ मांडला प्रमाणे अणाघाडे शब्द कहेवो बाकीना शब्दो उपरना त्रण मांडला प्रमाणे

ए प्रमाणे २४ मांडला कर्या पछी इरियावही पडिक्कमीने चैत्यवंदन पूर्वक प्रतिक्रमण पूर्ववत करे. इति श्रीतपगछ प्रतिक्रमणविधि॥

॥ अथखरतरगछप्रति०

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्क जय जिण धन्नंतरि, जय तिहुअण कल्लाणकोस डुरिअक्करिकेसरि॥ तिहुअण जण अविलंघियाण जुवणत्तय सामिअ, कुणसुसुहाइं जिणेसपास थंनणयपुरठिअ ॥ १ ॥ तइं समरंत लहंति झत्ति वर पुत्त कलत्तहि, धण्ण सुवन्न हिरण्ण पुण्ण जणजुंजहि रज्जहि ॥ पिरकहि मुक्क असंखसुक्क तुह पासपसाइण, इयतिहुअण वरकप्परुरक सुरकहि कुण महजिण ॥ २ ॥ जरजज्जर परिजुण्ण कण्णणहुठ सुकुठिण, चरकुरकीणखएणखुड्डुनरसल्लिअसूलिण ॥ तुह जिण सरणरसायणेण लहु हुंतिपुणणव, जय धण्णंतरिपास महवि तुहुं रोगहरोनव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस मंत तंत सिध्दिउ अपयत्तिण, जुवणब्भुअ अठविह सिध्दि सिझइ तुह नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तउवि जण होइ पवित्तउ, तं तिहुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद्द पवत्तइ मंत तंत जंताइं विसुत्तइ, चरथिरगरल गहुग्गखग्ग रिउवग्गवि

गंजइ, इत्तियसत्र अणत्र घत्र निवारइ दय करि, इरिअई हरउ सुपासदेव इरिअकरिके सरि ॥५॥ तुह आणाथंभेइ नीमदप्पुध्धुर सुरव र, रक्कस जक्क फणिंद विंद चोरानलजलहर॥ जलथलचारिरउद्दखुद पसुजोइणि जोइअ, इय तिहुअणअविलंघिआण जय पास सुसामिअ ॥ ६ ॥ पत्थिअ अत्र अणत्रह्त्थिनत्तिन्नरनिन्नर, रोमं चंचिअचारुकाय किन्नरनरसुरवर ॥ जसु सेवहि कमकमलजुअल पक्खालिअकलिमलु, सो नुवणत्तयसामि पास महमद्दउ रिउबलु॥७॥ जय जोइअ मणकमलनसल नय पंजरकुंजर, तिहुअणजणआणंदचंदनुवणत्तयदिणयर॥ज य मइमेइणि वारिवाह जयजंतु पिआमह, थंन णयठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥८॥ बहु विहवसुअवसु सुसु वसिउ अप्पसहि,सुरकधम्मु कामउकाम नर नियनिय सत्र हि ॥ जं जायइ बहु दरिसणत्र बहु नाम पसिध्धउ, सो जोइ अ मण कमलनसलसुह पास पवध्धउ ॥ ए ॥ नय विह्वल रणझणिरदसण थरहरिअ सरीरय, तर लिअ नयणविसष्णुसुष्णुगग्गिरगिरकरुणाय॥ तइं

सहसत्तिसरंति हुंतिनरनासिअ गुरुदर, महवि
जविसजसइपास जय पंजरकुंजर॥ १० ॥ पई
पासविविअसंतनित्तपत्तंतपवित्तिय, वाहपवाह
पवूढरूढ डुहदाहसुपुलइय ॥ मसहिमणुसजस
पुसअप्पाणं सुरनर,इयतिहुअण आणंद चंदज
य पास जिणेसर॥ ११ ॥ तुह कल्लाणमहेसुघंट
टंकारव पिल्लिअ, वल्लरमल्ल महल्लभत्ति सुरवर
गंजुल्लिअ ॥ हल्लुप्फलिअ पवत्तयंति नवणेहि
महूसव, इय तिहुअण आणंद चंद जयपाससुहु
भव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनियरविहु
रिअ तमपहयर, दंसिअ सयलपयछसछविछरि
अ पहाभर ॥ कलिकलुसिअ जण घूअलोयलो
यणहअगोयर, तिमिरइ निरुहर पासनाह भुव
णत्तय दिणयर॥१३॥ तुह समरणजलवरिससि
त्त माणव मइ मेइणि, अवरावरसुहुमछबोह कं
दलदल रेइणि॥जायइ फलभरभरिय हरिय डु
हदाह अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाह दिसि
पास मइं मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाणव
ल्लिउल्लूरियडुहवणुं, दाविअसग्गपवग्गमग्ग डु
ग्गइगम वारणुं॥जय जंतुहजणएणतुल्लजंजणि

यहियावहु, रम्म धम्म सो जयउ पास जय जं तुपिआमहु ॥ १५ ॥ जुवणारसुनिवासदरिअ परदरिसणदेवय, जोइणिपूअणखित्तवाल खुद्दा सुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठ अविसंठुल चिठ्ठहिं, इय तिहुअण वणसींह पास पावाइ प णासहिं ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरयण कररं जिअनहयल, फलिणी कंदलदलतमाल निलु प्पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग संसग्ग अगंजिअ, जय पच्चक्कजिणेस पास थंभणयपुर ठिअ ॥ १७ ॥ मह मणु तरलपमाणनेय वायावि विसंठलु, नियतणुरवि अविणयसहाव आल सविहिलंघलु ॥ तुहमाहप्पपमाणदेव कारुण पवत्तउ, इयमहमाअवहीरपासपालहिविलवं तउ ॥ १८ ॥ किंकिकप्पिउणेयकलुणुकिंकिंवनजं पिउ, किं वनचिठ्ठिउकिठदेवदीणय मविलंबिउ ॥ कासुनकियनिप्पल्ललल्लुअह्मेहिंदुहत्तइं, तह विनपत्तउताण किंपि पइं पहु परिचत्तइं॥ १९॥ तु हुं सामिहु तुहुं माय वप्प तुहुं मित्तपियंकरु, तुहुंग इ तुहुं मइ तुंहिज ताण तुहुं गुरु खेमंकरु॥ हउं उ हभरभारिअवराउ राउलनिभग्गउ, लीणउ तुह

कमकमल सरणजिणपालहि चंगउ ॥ २० ॥ प
इंकिविकयनीरोयलोयकिविपावियसुहसय, कि
विमइं मंतमहंतकेवि किविसाहियसिवपय ॥ कि
वि गंजिअरिउवग्गकेविजसधवलिअ भूअल,
मइं अवहीरहि केणपाससरणागयवच्छल ॥२१॥
पच्चुवयारनिरीहनाहनिप्पन्नपयोअण,तुहुं जिण
पासपरोवयार करुणिक्कपरायण ॥ सत्तुमित्त सम
चित्तवित्तिनयनिंदिअसममण,माअवहीरिअजु
ग्गउविमइं पासनिरंजण ॥२२ ॥ हउं बहुविहदु
हतत्तगत्ततुहुं दुहनासणपरु,हउं सुयणहकरुणि
क्कठाण तुहुं निरुकरुणाकरु ॥ हउं जिणपासअ
सामिसाहुतुहुं तिहुअणसामिअ,जं अवहीरहि
मइं झखंतइय पासनसोहिअ॥२३॥जुग्गाजुग्ग
विभागनाहनहुजोअणतुहसम भुवणुवयारसहा
वभाव करुणारससत्तम ॥ समविसमइ किंघण
नएइ भुविदाहुसमंतउ, इय दुहबंधवपासनाह
मइं पालथुणंतउ ॥ २४ ॥ नयदीणहदीणयमुए
विअन्नविकिविजुग्गय, जं जोइयउवयारुकरइउ
वयारसमुज्जय॥ दीणहदीणनिहीणजेणतुहनाह
णचत्तउ, तोजुग्गउअहमेव पासपालहिमइं चं

गउ ॥१५॥ अहअसविजुग्गयविसेसकिविमस
हि दीणह, जं पास विजवयारुकरइ तुहनाहसम
ग्गह ॥ सुच्चिअकिल कल्लाणुजेण जिण तुम्ह प
सीयह, किं असुंण तंचेव देव मामइअवहीरह
॥ १६ ॥ तुह पच्चण नहु होइ विहल जिणजाण
उ किं पुण,हउं डुक्खिउ निरुसत्तचत्तडुक्कउ उस्सु
यमण ॥ तं मण्उ निमिसेण एण एउविजाइ ल
भइ, सच्चं जं उुक्खियवसेण किं उंवरु पच्चइ ॥
॥ १७॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइं अप्पप
यासिउ, किजउ जं नियरूवसरिसुनमणुंबहुजंपि
उ ॥ असु ण जिणजगतुहसमोविदक्खिसदयास
उ, जइ अवगिससि तुंहिजअहहकिंहोइसहया
सउ ॥१८॥ जइ तुहरूविण किणविपेअ पाइणवे
लविउ, तउजाणुंजिणपासतुह्महउंअंगीकरिअ
उ ॥ इयमहइच्छिअ जं न होइ सातुहउंहावण,
रक्खंतह नियकित्तिणेयजुजाइअवहीरण ॥१९॥
एवमहारिहजत्तदेवइयन्हवणमहूसउ, जं अण
लिय गुणगहण तुह्म मुणिजणअणिसिद्धउ ॥
इय मइं पसियसुपासनाहथंभणयपुरठिअ, इय
मुणिवर सिरि अभयदेव विणवइ अणिंदिअ॥

॥ ३० ॥ इति श्रीस्तंभनक तीर्थराज श्रीपार्श्व नाथस्तवनम् ॥

॥ पीछें जय महायस कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंभः ॥

॥ जय महायस जय महायस जय महाभा ग जय चिंतिय सुह फलय ॥ जय समब परम ब जाणय, जय जय गुरु गरिम गुरु ॥ जय छु हत्त सत्ताण ताणय, थंभणयठिय पासजिण ॥ भवियह भीम भवुछु, भव अवणंता णंत गुण तुऊ त्तिसंऊ नमोछु ॥ १ ॥ इति ॥

अथ सदाकालका अवश्य कर्तव्य सामायक पडिक्कमणा शास्त्रानुसारे विधि लि० ॥

॥ प्रणम्य श्री जिनाधीशं सद्गुरुं च विशेषत श्राद्धाहोरात्रकृत्यानि लिख्यन्ते लोक भाषया ॥ १ ॥

॥ श्रावक दोय घडी रात्र रह्या पोशह शा लाये (अथवा) गुरुकने अथवा घरने एक प्र देशे (आवी) प्रथम दिवस संध्याये पमिले ह्या वस्त्र पहिरी (जो) गुरुनो जोग न हुवे (तो) आप प्रमार्जित थानके खमासमणपूर्वक तीन

नवकार गुणी थापनाजी थापे (पछै)खमासमण देई कहे इच्छाकारेण संदिस्सह जगवनसामाय कमुहपत्ती पडिलेहुं (गुरु कहै पमिलेह) पछे इछं कही, दूजीखमासमण देई मुहपत्ती पडिले हे उन्नो होय खमा० कहै ॥ इच्छा० सं ॥ ज० सामायक संदिस्साउं (गुरुकहे संदिस्सावेह) पछै इछं कही, वलेख० देने कहें इछाका० सं ज० ॥ सामायिक ठाउं (गुरु कहै ठाएह)इछं कही खमासमण देई अर्धावनतकाय उन्नो रही तीन नवकार गुणी कहै इछकार जगवन पसा व करी सामायक दंड उच्चरावोजी (गुरु कहै उचरावे मो)पछे करेमि जंतेसामाइयं(इत्यादि) सामायक सूत्र गुरु वचन अनुजाषण करतो थको तीन वार उच्चरी खमासमण देई॥ इछा० सं० ज० इरियावहियं पडिक्कमामि (गुरु कहै पमिक्कम हे) पछे इछं कही ॥ इछामि पडिक्क मिउं इरियावहियाए (इत्यादि पाठ कहे) इ रियावही पडिक्कमि ॥ एक लोगस्सनो काउसग्ग करी णमो अरिहंताणं कही काउसग्ग पारीमुखे प्रगट लोगस्स कही खमा० देई ॥ इछा० सं०

ज० वेसणो संदिस्साउं(गुरु कहे संदिस्सावेह) पछे इछं कही खमा० देई इछा० सं० ज० वै सणोठाउं (गुरु कहे ठाए हैं) पछे इछं कही खमासमण देई ॥ इछा० सं० ज० सिझाय सं दिस्साउं (गुरु कहे संदिस्सावेह) पछे इछं कही ॥ पांगरणोपमिग्घाउं (गुरु कहे पडिग्घा एह) पछे ॥ इछं ॥ कही ॥ वस्त्र ग्रहण करै. इति प्रजातसामायक ग्रहणविधि ॥

॥ अथ देवसी प्रतिक्रमण ॥

॥ प्रथम चैत्यवंदन ॥ जयतिहुणनी पांच गाथा पहलाथी और दोय गाथा छेडानी कही जय महाशय २ कहीने सक्रस्तव आदि चारे थोज देववंदन करीनीचा वैसीने नमोछणं० कहे पछे वांदणापूर्वक श्री आचर्यमिश्र १ श्रीउपा ध्यायजी मिश्र २ श्री वर्तमानजट्टारक श्री पूज्य जीनो नाम लेइ वांदीये ३ सर्व साधु साध्वी वांडु ॥ पछे सवसवि राईय देवशिय० करेमि जंते० इछामि ठामि० तस्सुतरी० अन्नत्र० आठ नवकारनो काउसग्गकरे मुंहडे लोगस्स कहे पछे तीजे आवश्य करी मुहपत्ती पमिले

हवी ॥ दोय वांदणा देवे देवसियं आलोएमी० पछे गाणेकमणे० पछे चोपुरा दिवसना लघु अतिचार ॥ अढार पापस्थानक आलोई सव्व सविदेवसिय० पछे तीन नवकार तीन करेमि० पछे वंदेतूसूत्र कहे पछे वांदणा दोय देवे ॥ पछे अब्भुठ्ठिओमि कही फेर २ वांदणां देई ॥ आय रिउ उवझाए० करेमि० तस्सुतरी० अन्नत्थ० दोय लोगस्सनो काउसग्ग करे मुंहडे लोगस्स कहे ॥ वंदण० अन्नत्थ० पछे एक लोगस्सनो काउ सग्ग ॥ मुंहडे पुष्करवरदी वड्ढे० वंदण० अन्न० एक लोगस्सनो काउसग्ग मुंहडे सिद्धाणं बुद्ध णं० पछे सुहदेवीयाए करेमि काउसग्गं॥अन्न० १ नवकारनो काउसग्ग करे ॥ सुवर्णसालिनीदे यात् एक गाथा कहे पछे क्षेत्रदेवीयाए करेमि काउस्सग अन्न० १ नवकारनो काउसग करे पछे यासांक्षेत्रगतासंति गाथा १ कहे १ नव कारगुणी छठ्ठ आवश्य करी मुहपत्ती पडिलेहे दोय वार वांदणा देवे ॥ इछामो अणुसठ्ठियं नमोखमासमणाणं ॥ नमोस्तुवर्द्धमानाय० तीन गाथा कहे ॥ नमोत्थुणं कही वर्तोतवन कहे,

पछे श्री आचार्यजी मिश्र १ श्रीउपाध्यायमिश्र २ सेवसाधु साध्वी वांडुं अढ्ढा इज्जे सु० कहे ना फेर खमासमण देइ॥ पछे देवसीप्रायश्चित्त विसोधवानिमित्तं करेमि काउसगं अन्न०४ लो गस्सनो काउस्सग करे पछेमुंहमे लोगस्स कहे पछे दुजोपद्रव उड्डादनिमित्तं करेमि काउसग्गं अन्न० ४ लोगस्सनो काउस्सग करे मुंहडे लो गस्स कहे॥ पछे सिझायं संदिस्साएमि सिझाय करेमि॥ पछे श्रीसेट्ठी कहे॥ पछे नमोत्थुणं०कही छोटो तवन कहे पछे जयवीराय कहे पछे सिरथं त्नणठियपाससामिणो० कहै पछे श्रीथंभना पा र्श्वनाथजी आराधना निमित्तं करेमि काउस्स ग्ग वंदण० अन्न० ४ लोगस्सनो काउसग्ग करे पछे श्रीखरतरगछशृंगारहारजंयमयुगप्र धानभट्टारक दादाजी श्रीजिन दत्तसूरिजी महा राज चारित्र चूडामणी आराधवानिमित्तं करेमि काउसग्गं अन्न० १ लोगस्सनो काउसग्ग करे॥ इणीहीतरे दादाजी श्रीजिनकुशलसूरिनो १ लो गस्सनो काउसग्ग पारी एक नवकार गुणी चै त्यवंदन करे चउक्कसाय० कहै॥ नमोत्थुणं जय

वीरायसूधी पछै लघु शांति कहे पछे सामायक पारे

॥ हवे राईप्रतिक्रमण विधि ॥

॥ एक खमासमण देई ॥इछा० सं०भ०॥ चैत्यवंदन करुं (गुरुं कहे करेह) इछं ॥ कही जय उसामी १ रिसहसेत्तुंज उजिंत पहुनेमि जिण जयउ वीरसच्चउरमंमण भरुअच्छहिमुणिसुव्वयम हुरिपास डुहडुरियखंडण अवरविदेहिंतिछयर चिहुं दिशिविदिशि जंकेवि तीआणागयसंपयं वंडुंजिणसव्वेवि कम्मजुमिहिं १ पढमसंघयण उक्कोसउ सत्तरिस उजिणवराणविहरंत लप्नई नवकोमिकेवलिण कोडिसहसनव साहू संपय सं पइ जिणवरवीसमुणिडुयकोमिवरनाण समणा कोमिसहसडुयथुणिजयणिच्च विहाण सत्ताण वइ सहस्सा लक्का छपन्न अछकोडिर्उ चउसय छयासिया तिख्रुके चेइये वंदे वंदेनवकोडिसयं पणवीसं कोडि लक्क तेपन्ना अछावीस सहस्सा चउसय अठासिया पमिमा॥जं किंचि इत्यादि जयवीरायसूधी चैत्यवंदन करै ॥ पछै खमा० देई ॥ इछाकारेण संदिस्सहे भ० कुसुमिण डु स्समिणराई प्रायछित्त विसोहणछं करेमि काउ

सग्गं (गुरु कहें करेह) अन्न० ॥च्यार०॥४॥
लोगस्सनो काउस्सग करी पारी प्रगट लो
गस्स कहे ॥ पडिक्कमणो ठाववानो अवसर
हूवां १ खमासमण देई ॥ (श्री आचार्यजीमिश्र)
कही वांदियेफेर खमासमण देई॥(श्रीउपाध्याय
जी मिश्र)पछे वांदणा दई(जंगमयुग प्रधानभ
ट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम कही वांदिये ॥ वले
खमासमण देई साधूजी वांदीये ॥ इम च्यार
खमासमणें पडिक्कमण ठवी॥इछकार समस्त श्रा
वको वादूं(कही)गोडा लिये वेसी मस्तक नमावी
दोय हाथे मुहपती मुखे देई सव्वसविराईय (इ
त्यादि कहे) पिण इछाकारेण संदिस्सह (इसो
न कहे) पछे सक्रस्तव कही ॥ ऊभो थई करे
मि० इछामि ठाउं काउस्सगं० (इत्यादि पाठ
कही) तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० चारित्र शुद्ध नि
मित्तं १ लोगस्सनो काउसग्ग करी (पारी)
दर्शन शुद्धि निमिते लोगस्स कही सव्वलोए अ
रिहंत चेइआणं ॥ करमि काउसग्गं इत्यादि
कही १ लोगस्सनो काउसग्ग करी (पारी)
ज्ञानातिचारनिमित्ते पुक्खरवरदी वड्ढे (कही)

सुयस्स जगवउं करेमि का० वंदणवतीयाए (इ त्यादि कही) काउस्सग्ग करे काउस्सग्गमांहे चौपुहरी रात्रि मांहे सातलाख इत्यादि आलोय णचिंतवे(अथवा) आठ नवकार चिंतवे (पढी) काउसग्ग पारी ॥ सिध्धाणं बुध्धाणं कही संडा साप्रमार्जनपूर्वक वैसी मुहपती पडिलेह पढेदो वांदणा देई अभ्भुठिउंमि खामि वांदणा वेदीजे तेविधि देवसीनी परे जा णवुं पढे सवसवि० ॥ इछा० ज० ए पद क हवे करी आलोया अतीचारनो प्रायछित मांगे पढे इछं तस्समिछामि डुकडं ॥ पढे जीमणो गोडो ऊंचो करी तीन नवकार तीन करेमि० इछामि पडिक्कमिउं जोमेराईयो इत्यादि कही वंदितूसूत्र तंनिंदे तंच गरिहामि सूधी कहै ॥ पढै वांदणां देवै । पेढे अभ्भुठि० कही फर वां दणां वेदेवा पढै०आयरिउंज वजाए० करेमिनं ते० इछा मिठामि काउसग्गं । तस्सुतरी०अन्न ह्० ६ लोगस्सनो काउसग्ग अथवा चौवी न वकारनो काउसग्ग करे ।पढे मुंहमे लोगस्स क हे पढे मुहपत्ती पडिलेहे वांदणां देवे सग

ला तीर्थानें याद करै पछै पच्चखाण करै पछै इछामो अणुसठिं (इसोपद कहै,) पछै नमोख मा समणाणं नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः पछै संसारदावा० (अथवा) परसमय तिमिरतरणं तीनगाथा कहै नमोत्थुणं० अरि हंतचे ईयाणं करेमिकाउसग्गं वंदण० अन्न त्थू० १ नवकारनो काउसग्गकरे पछै थूईरी १ गाथा कहै पछै लोगस्स कही वंदण० अन्नत्थु १ नवकारनो काउसग्ग पछै थूईरीदुजी गाथा कहै पछै पुष्करवरदी वढे०वंदण०अन्नथ०१ न वकारनो काउसग्ग थुईरी तीजी गाथा कहै पछै सिद्धाणं बुद्धाणं कहै पछै १ नवकारनोकाउस ग्ग करी पछै थूईरी चौथी गाथा कहै पछै श्री आचार्यजी मिश्र१ श्रीउपाध्यायजी मिश्र० स र्वसाधूवांदुं ॥ इतिराई प्रतिक्रमण॥पछै श्रीसीमं धर चैत्यवंदन करवो पछै सिद्धगिरीनोचैत्यवंद न करी सामायकपारवा ॥

॥ हवे पाखी पडिक्कमणो लि०॥ तिहां प्रथम वं दित्तु सूत्र पर्यंत देवसी पडिक्कमी पछेइछाकारेण संदिस्सह भगवन् देवसियं आलोईयं पडिकंतं

पक्की मुहपत्ती पडिलेह पछे दो वांदणा देवै ॥ पाखी पडिक्कमणो हुवे तो पाखीरो नाम लेवे अथवा चोमाशी वा संवत्सरी, होय तो सोही नाम लेवे पक्खोवइ कंत्तो कहणो ॥ पछे वांदणा दिया पछे पुन्यवंतो छींक जयणा करज्यो मधुर स्वरे पडिक्कमज्यो ॥ खासे सुविवरा करी खासज्यो मांफल मांहे सावचेतसावधान रहिज्यो देवसीरे (थानके) पाखी चोमासी छमछरी जणज्यो ॥ पछे इछाकारेण संदिस्सह जगवन संबुद्धाखाम णेणं ॥ अब्भुठिठमि अभिंतर पखीयं खामेमि इछं खामेमि ॥ पखियं पन्नरसदिवसाणं पनरस राईणं (चोमासी) मांहे चउन्हं मासाणं अठन्हं पखाणं एकसोवीसरायं दियाणं (संवत्सरी) पडि क्कमणो हुवे तो छवालसन्नमासाणं चोवीसन्ने पषाणं तीनसे साठ रायं दियाणं जंकिंचिपतियं सर्वकहणो पछे इछाकारेण संदिस्सह जगवन पखियं (३) आलोउं जोमे पखिउ अयारोकउ० सर्वकहणो पछे नाणंमिदंसणंमिअ० वृह अ तिचार आलोयणा कहणा सब्व सवि पखिय ३ सर्व कहणो पछे वांदणा वे देवे पछे इछाकारेण

संदिस्सह भगवन् देवसिय आलोइयं पडिक्कंतं पत्तेय खामणेणं अब्भुठिउमि अभिंतरपखियं लारेकह्यो जिण रीतें सगलोकहणो पछे वांदणा देवे पछे (पाखी) सूत्र कहे श्रावक श्राविका वंदेतू कहे पडिक्कमे देवसियं के ठिकाणे पखीयं ३ इसो कहणो तीन नवकार तीन करेमि भंते कहीने वंदेतु कहे मूलगुण उत्तरगुण अतीचार विशुद्धनिमित्तं करेमि काउसगं इछामि ठा मि काउसगं जोम० पछे तस्सुतरी० अ न्नछ० पछे पाखी पडिक्कमणे १२ चोमासे २० संवत्सरी ४० लोगस्सनो काउसग करे पछे प्रगट लोगस्स कहे पछे मुहपत्ती पडिलेह दोय वांदणा देवे पछे इछाकारेण छंदिस्सह भगवन् समाप्त खामणेणं अब्भुठिउमि अभिंतर पखीयं ३ लारे कह्यो जिणतरे कहे पछे इछा०भ०खाम णाखामुं पुन्यवंतो एकखमासमण देई तीन तीन नवकार गुणी चार वार पाखीसमाप्त खामणाषा मो पछे खामणा खामी पछे पुन्यवंतोपाखीने लेखे एक उपवास अथवा दोय आंबिल तीन नीवी (अथवा) चार एकासणा (अथवा) दोय हजा

र सिज्झाय करी पाखीनी पेठ पूरज्यो पाषीने स्थानके देवसी जाणज्यो इम डुणाडुण चोमासि (अने) त्रिगुण संवत्सरीये सर्व कह्वो पछे देवसी प्रतिक्रमण ठेड्यो ज्यांथी वांदणा अभ्भुठिउंमि फेर वांदणा इत्यादि सर्व करणो देवसीकीरीते समजणो ॥ इति खरतरगछसामायिक (तथा) पंच प्रतीक्रमण वीधी समाप्त

॥ अथ आंचलगछ प्रतिक्रमण विधि ॥

॥ प्रथम नवकार कही एक ख० देई इछकार सुहराई सुह देवसी कही गुरुनेसुखसाता पूछी इरिया वही० तस्सोत्तरी० अन्नछ० कही एक लोगस्सनो उसग्ग करी(प्रगट)लोगस्सक है (पछी) इछाका०सं०जग० गमणागमण आलोउं तेकहे छै

॥ गमणा गमण ॥

मारगनेविषे जातां आव तां पृथ्वी काय अप काय तेउकाय वाउकाय वनस्पतिकाय,त्रसकाय, नील,फूलमाटी,पाणी,कण,कपाशिया, स्त्रीआदी तणो संघट्ट हुवो होय ते सविहुमन वचन कायायें करी तस्स मिछामिडुक्कडं ॥

॥ इछाकारेण संदिस्सह भगवन् सामायिकठा वा त्रण नवकार गणुंजी एम कही नीचा वैसी तीन नवकार कहै पछी उभा थई इछा० भ० जीवराशी खमाउं पछे सात लाख कही अढार पाप स्थानक आलोवै पछी इछा० भ० गुरु स्थापनाक रुंजी एम कही पचेंदिय कहै इति (प्रथम) खमासमण ॥ खमासमण पूर्वक नीचे वैसीने इछा० भ० द्रव्य, क्षेत्र काल भाव धारुंजी १

॥ अथ द्रव्य क्षेत्र काल भाव ॥

॥ द्रव्य थकी लूगडां,लत्ता, घरेणां,गांठां पाथरणुं नोकरवाली,धार्या प्रमाणें मोकलां छे. क्षेत्र थकी उपाशराना बारणानी मांहिली कोरें काल थकी समायिक,निपजे,तिहांसुधी,भावथकी यथा शक्तिने राग द्वेषें रहित व्रतीसंघातें बोलवुं गुर्वा दिक संघातें बोलवानो आगार छे. अव्रती संघातें बोलवानुं पच्चरकाण छे.ए रीतें बे कोटियें करी सामायिक करुं. सामायिक व्रत उच्चार करवा (एक)नवकारनो काउसग्ग करुं जी.एम कही उभा थइनेएक नवकार गणीयें. ॥ पछी इछाकारेण संदिसह भगवन्! सामा यिक व्रत उच्चार करावो

जी. पछी गुरु (तथा) वडेरो करेमि भंते कहे ॥ पछी. इछामि. खमासमण पूर्वक इछाकारेण संदिसह भगवन्! वीजा आवश्यक भणी इरियावहियं पडिक्कमुं जी. एम कही इरियावहि पडिक्कमी, पछी तसउत्तरी०कहेवी. पछी एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी, लोगस्स प्रगट कहे लोगस्स कहेतां दर्शनाचार निर्मल थाय ए बीजुं आवश्यक अने त्रीजुं खमसमण थयुं,पछी इछामि खमासमण पूर्वक हेठा वेसीने इछाकारेण संदिस्सह भगवन् ठेफानुं पडिलेहण करुं जी एम कही उत्तरासंगना ठेफानुं पडिलेहण करवुं. पछीइछामि खमासमण पूर्वक इछाकारेण संदिसह भगवन् त्रीजा आवश्यक भणी आवश्यक वांदणां करुं जी. पछे वांदणां देवे एम गुरु समीपें वांदणां बे वार दीजें, त्यां बीजी वारने वांदणे आवस्सिआए, ए पद न कहेवुं; अने राइपडिक्कमणे; राइउं वइक्कंतो कहेवुं (परकीयें) परिकउं वइक्कंतो कहेवुं(चउमासियें) चउमासिउं वइक्कंतोकहेवुं. (संवत्सरियें) संवछरोवइक्कंतो कहेवुं ए वांदणां देतां ज्ञानादि त्रण निर्मल थाय. ए

त्रीजुं आवश्यक अनेचोथुं खमासणयुं. इहां पोंताने मुखें, संध्या होय तो चउविहार अने सवार होय तो नवकारसी प्रमुखनुं पच्चरकाण मनने जावें धारे, तेथी तपाचार निर्मल थाय ॥ पछी एक जण उन्नोयइने इछामि खमास मण पूर्वक इछाका० सं० जगवन् ! चोथा आवश्यक जणी लघु अतिचार आलोउं जी. ॥

॥ अथ लघु अतिचार ॥

॥ प्रथम नवकार कहीने, इउं अरिहंतदेव, सुसाधु गुरु, जिनप्रणीतधर्म, जावतो समकित प्रतिपाखुं; उव्यतो लौकिक लोकोत्तर देवगत, गुरुगत, पर्वगत मिथ्यात्वविषे जयणा करुं. ए श्रीसमकित तणा पांच अतिचार शोधुं. शंका, कंखा, वितिगिछा, परपाखंमीपरसंसा, परपाखं डी संथुउ. ए पांच अतिचार मांहे जे कोई अतिचार हुउ होय, ते सवि हुं, मने, वचनें कायायें करी मिछामि डुक्कमं. ॥

१ ए बार व्रतमांहे पहेलुं प्राणातिपात विर मण व्रतस्थूल बेंडियादिक त्रस जीव निरपराध उपेतकरण संकल्पी करी हणवा नियम, आरं

में जयणा, ए पहेला प्राणातिपातविरमणव्रत तणा पांच अतिचार शोधुं.॥ वंधे, वहे, छविछेए, अइभारे, भत्तपाणवुछे ए ॥ ए पांच अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सविहुं मन, वचने,कायायें करी मिछामि डुक्कडं. ॥१॥

२ वीजुं स्थूलमृषावादविरमणव्रत पंचविध, कन्नालीए, गोवालीए, नूमालीए, नासावहारे, कूडसरिकजे. ए पांच मोटकां कूडां आपणाने काजें, स्वजनने काजें धर्मने काजें मूकी, परकाजें कूडुं वोलवा नियम, सूक्ष्म अलिक तणी जयणा करुं ॥ ए वीजा स्थूलमृषावादविरमणव्रततणा पांच अतिचार शोधुं. सहस्साप्नरकाणे, रहस्साप्नरकाणे, सदारामंतन्नेए, मोसोवएसे, कूडलेहकरणे ॥ ए पांच अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार हुउ होय, ते सविहु मने, वचने, कायायें करी मिछामि डुक्कडं. ॥ २ ॥

३ त्रीजुं स्थूल अदत्तादानविरमणव्रत. सचित्त, अचित्त, राजनिग्रह कारीउं. पियारुं अणादीधुं लेवा नियम. सूक्ष्म तण, इंधण, पथिपतित ववहार नियोगे, दाणचोरी जयणा ॥ ए

त्रीजा स्थूलअदत्तादान व्रत तणा पांच अति
चार शोधुं. तेनाहमे, तक्करप्पउंगे, विरुध्दरजाइ
क्कमे,कूम तुल्लकूडमाणे, तप्पमिरूअगववहारे॥
ए पांच अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार हुउं
होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मि
छामि डुक्कमं ॥ ३ ॥

४ चोथुं शीलव्रत. यथाशक्तें स्वदारासंतोष,
परदाराविवर्जनारूप. ए चोथा शीलव्रत तणा
पांच अतिचार शोधुं ॥ इत्तरपरिग्गहियागम
णे, अपरपरिग्गहियागमणे, अनंगक्रीमा, पर
विवाहकरणे, कामन्नोगतिव्वाभिलासे ॥ ए पांच
अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार हुउं होय, ते
सवि हुं,मने वचने,कायायें करी मिछामि डुक्कडं.

५ पांचमुं परिग्रहपरिमाणव्रत नवविध. खि
त्त, घर, हट्ट, वाडिय, कुविय, धण, धन्न, हिर
ण्ण, सुवण्ण, अइपरिमाण डुप्पय, चउप्पयमिय.
नवविह परिग्गह वयंतो ॥ ए पांचमा परिग्रह
परिमाणव्रततणा पांच अतिचार शोधुं. खित्त
वत्थुप्पमाणाइक्कमे, हिरण्णसुवण्णपमाणाइक्कमे,
धणधन्नप्पमाणाइक्कमे, डुप्पय चउप्पयप्पमा

णाइक्कमे,कुवियप्पमाणाइक्कमे ॥ ए पांच अति
चारमांहेजे कोइ अतिचार हुर्ज होय, ते सवि
हुं मने, वचने कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥

६ छहुं दिशिव्रत त्रिविधें जाणवुं. उड्ढदिसि
वए, अहोदिसिवए, तिरियदिसिवए ॥ ए छठा
दिशिव्रततणा पांच अतिचार शोधुं ॥ उड्ढदि
सिप्पमाणाइक्कमे, अहोदिसिप्पमाणाइक्कमे, ति
रियदिसिप्पमाणाइक्कमे, खित्तवुढ्ढि,सयंतरध्दा ॥
ए पांचअति चार मांहे जे कोइ अतिचार हु
वो होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी
मिछामिं डुक्कडं ॥ ६ ॥

७ सातमुं भोगोपभोगव्रत द्विविध. भोजन
तः कर्मतश्च. तत्र भोजनतः "सच्चित्तदव्व विग
इ, उवाण तंबोल वीर कुसुमेसु ॥ वाहण सय
ण विलेवण, बंभ दिसिन्हाण भत्तेसु ॥ १ ॥ ए
सातमा भोगोपभोग व्रत तणा पांच अतिचार
शोधुं ॥ सचित्त आहारे, सचित्त पडिबध्धआ
हारे, अप्पोसहि भरकणया डुप्पोसहि भरकण
या तुछो सहिभरकणया ॥ ए पांच अतिचार मा

हें जे कोइ अतिचार हुउं होय, ते सवि हुं म
ने, वचने, कायायें करी मिछामि डुक्कडं. ॥ ७ ॥
॥ कर्मतो पन्नरे कर्मादान. इंगालकम्मे, वण
कम्मे, साडी कम्मे, भाडी कम्मे, फोडीकम्मे, दंत
वाणिज्जे, लख्ख वाणिज्जे, रस वाणिज्जे, विस वा
णिज्जे, केस वाणिज्जे, जंतपीलण, कम्मे निल्लंछ
ण कम्मे, दवग्गिदावणया, सर दह तलाय सो
सणया, असई पोसणया. ए पन्नर कर्मादांन
स्थूल नियम, सूक्ष्म तणी जयणा ॥ ए पन्नर क
र्मादांनमांहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, तेस
वि हुं मने, वचने, कायायें करी मिछामि डुक्कडं.
८ आठमुं अनर्थदंडविरमणव्रत, चतुर्विध.
अवझाणायरिए, प्पमायायरिए, हिंसप्पणयाणे,
पावकम्मोवएसे॥ए आठमा अनर्थ दंडविरमण
व्रततणा पांच अतिचार शोधुं ॥ कंदप्पे कुक्कुइ
ए, मुहरिए, संजुत्ताअहिगरणे, उवभोगपरिभो
ग, अइरेगे ॥ ए पांच अतिचारमांहे जे कोइ
अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने, वचने,
कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ ८ ॥
ए नवमुं सामायिकव्रत. सामइय नाम साव

वज्जोगपरिवज्जणं, निरवज्जजोग आसेवणं च॥ए नवमा सामायिकव्रततणा पांच अतिचार शोधुं मण डुप्पणिहाणे, वयडुप्पणिहाणे कायडुप्पणिहाणे, सामाइयस्स अकरणया, सामाइयस्स अणवुठिअस्स करणया ॥ ए पांच अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मिछामि डुक्कडं. ॥ए॥

१० दशमुं देशावगाशिकव्रत ॥ दिसिवयग-हियस्स, दिसापरिमाणस्स पइदिणं परिमाणक-रणं ॥ ए दशमा देशावकाशिकव्रत तणा पांच अतिचार शोधुं ॥ आणवणप्पउगे पेसवणप्प-उगे सद्दाणुवाइ, रूवाणुवाइ वहियापुग्गलपर-क्खेवे ॥ ए पांच अतिचार मांहे जे कोइ अ-तिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने, वचने, का-यायें करी मिछामि डुक्कडं. ॥ १० ॥

११ इग्यारमुं पौषधव्रत, चिहुं नेदे जाणवुं आहारपोसहे, सरीर सक्करपोसहे, बंनचेरपोसहे, अवार पोसहे ॥ ए इग्यारमापौषध व्रत तणा पांच अतिचार शोधुं ॥ अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय सिज्जासंथारे, अप्पमजिय डुप्पम

जिय सिजासंथारे, अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहि यउच्चारपासवणभुमि, अप्पमजिअ डुप्पमजि अउच्चारपावसण भूमि, पोसहोववासस्स सम्मं अणणुपालणया ॥ ए पांच अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ ११ ॥

१२ बारमुं अतिथिसंविभागव्रत, अतिथि संविभागोनाम. नाया गयाणं, कप्पणिजाणं, अन्न पाणाइणं, दव्वाणं, देस, काल, सद्धास क्कार कम्मजोए पराइ भत्तीए आयाणुग्गह बु ध्दिए संजयाणं दाणं ॥ए बारमा अतिथि संवि भाग व्रत तणा पांच अतिचार शोधुं ॥ स चित्त निरकेवणया, सचित्त पिहणया, काला इक्कमदाणे परोवएसे, मछरया ॥ ए पांचअ तिजारमांहे जे कोइ अतिजार हुवो होयतेसवि हुं मने वचने कायायें करी मिछामि डुक्कडं १२

॥ संलेषणा तणा पांच अतिचार शोधुं. इ ह लोगासंसप्पउंगे, परलोगासंसप्पउंगे, जि विअासंसप्पउंगे, मरणासंसप्पउंगे कामभोगा

विहुं कोडीहिं वरनाण, समणह कोमी सहस्स दुअ, थुणिसुं निच्च विहाण ॥ जयउ सामीय रिसह सिरि सित्तुंजी उज्जंतपहु नेमिजिण; जयउ वीर सच्चउरिमंडण ॥ जरुअच्छेहिं मुणिसुव्वय मुहरि पास दुह दुरिय खंमण, अवरविदेहिं तित्थयरा, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि, तीअणागय संपइय,वंदूं जिण सव्वेवि॥ सत्तावण्णइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अठकोडीउं ॥ पंचसयं चउत्तीसा, तियलोए चेइए वंदे ॥ इति चैत्यवंदन ॥

इहां चार स्तवन अथवा अष्टोत्तरी कहेवी पछीउन्ना थइने उवसग्गहरं कहेवुं. पछी, वेसीनें जंकिंचि नाम तिछंसग्गे पायालि माणुसे लोए॥ जाइं जिणविंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ पछी नमुछ्णं (नमो जिणाणं) सुधी कहेवुं,

(ए छहुं खमासमण.)पछी इच्छामि खमासमण पूर्वक इच्छाकारेण संदिसह जगवन् ! गुरुवंदना करुं जी. एम कही गुरुवंदना कहीयें. ॥ ॥

॥ अथ गुरुवंदना ॥

॥ अट्ठाजोइसु दीव समुद्देसु, पनरससु कम्म नूमीसु ॥ जावंत केवि साहू, रयहरण गुछ पडि

गछ धारा ॥ १ ॥ पंचमहव्वय धारा, अढार स
हस्स सीलंग धारा, अखयायारचरित्ता, ते सव्वे
सिरसा मणसा मच्छएण वंदामि ॥ २ ॥ पुज्ज सि
रिअजारक्खिय, गुरुणो तप्पट्टिय पुज्जजयसिंहा
॥ सूरिसिरि धम्मघोसा, महिंद सिंहा तउ गुरु
णो ॥ ३ ॥ तप्पयसिरिसिंहपहा, तेसिं पइअ
जियसिंह वरगुरुणो ॥देविंद सिंहगुरुणो तप्पय
सिरिधम्मपह सूरि ॥ ४ ॥ सिरिसिंहतिलसूरी,
तप्पइ सिरिमहिंदपह गुरुणो ॥ सिरिमेरुतुंग
गुरुणो, तप्पय जयकित्तिगुरुराउ ॥ ५ ॥ सिरि
जयकेसरिसूरी, तप्पइ सिध्धंत सायरो सुगुरु ॥
सिरिभावसायर गुरु, तप्पय सूरि गुण निहाणो
॥ ६ ॥ सिरिधम्ममुत्तिसूरी, तप्पइ कल्लाण सा
यर मुणिंदो ॥ सिरि अमर सार गुरु, कल्लाण
कुणउ संघस्स ॥ ७ ॥ तप्पट्टि पुव्व पुव्वय नाणु
विज्जाय सायरं सूरि ॥ सिरिउदय सायर सूरि,
तप्पय गुणमणि रुहाणं ॥ ८ ॥श्रीकीर्तिसागर
सूरि, श्री पुण्यसागरसूरि, श्रीराजेंद्रसागरसूरि
श्री मुक्तिसागर सूरियं वंदे, विहरमान श्री वि
वेकसागर सूरियं वंदे. अचल गछनायकं वंदे.

विधिपक्षगच्छनायकं वंदे. पहेले पाटें सुधर्मास्वा मी, बीजे पाटें जंबूस्वामी, त्रीजे पाटें प्रजवस्वा मी, चोथे पाटें सिज्जंनवसूरि, पांचमे पाटें यशो नद्रसुरि, उठे पाटें संभूतिविजय सुरि, सातमे पाटे नद्रबाहु स्वामी, आठमे पाटें थूलिनद्र स्वामी, एवा पाटानु पाट ठेला श्री इप्पसद्दना मा आचार्य थाशे, तेने महारी एकशो ने आठ वार त्रिकाल वंदना होजो ॥ इति विधिपक्षगुरु वंदन ॥ ए सातमुं (खमासमण.)

पठी इछामि खमासमण पूर्वक इछाकारेण संदिसह नगवन् सज्झाय कहुं, सज्झाय सांजलुं जी. अहीं नवकार कहीने सज्झाय कहेवी, ॥

॥ अथ सज्झाय ॥

॥ अरिहंता मंगल मुज, अरिहंता मुज दे वाव ॥ अरिहंता कित्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मुज सिद्धायमुज देवया ॥ सिद्धाय कित्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ २ ॥ आयरिया मंगलं मुज आय रियामुज देवया ॥ आयरिया कित्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ३ ॥ उवजाया मंगलं

मुज्क, उवज्जाया मुज्क देवया ॥ उवज्जाया कित्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ४ ॥ साहु मंगलं मुज्क, साहु मुज्क देवया ॥ साहु कित्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ५ ॥ ए पंचे मंगलं मुज्क, ए पंचे मुज्क देवया ॥ ए पंचें कित्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ६ ॥ एसो पंच एमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं ॥ ७ ॥ इति सज्काय ॥ ए आठमुं खमासमण ॥ ॥

पछीइछामि खमा० इछाकारेण संदिसह ज्ञगवन् पांचमा आवश्यक ज्ञणी दैवसिक प्रायश्चित्त विशोधनार्थ करेमि काउस्सग्गं. अन्नछ० इत्यादिककहीने चंदेसुनिम्मलयरा सुधी चार लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. पछी नमो अरिहंताणं, कहीने काउसग्ग पारी पछी प्रगट लोगस्स कहीयें. ए (नवमुं) खमासमण. फरी इछामि खमासमण पूर्वक इछाकारेण संदिसह ज्ञगवन् अज्ञिनव काउस्सग्ग ठाउं. (इछं) अज्ञिनव अशेष डुक्खक्खय कम्मक्खय निमित्तं करेमि काउस्सग्गं अन्न०

इत्यादिक कहिने " सिद्धा सिद्धिं ममदिसतुं "
पर्यंत (पांच) लोगस्सनो काउस्सग्ग
करवो. पठी नमो अरिहंताणं ए पद कहीने
काउस्सग्ग पारवो, पठी प्रगट लोगस्स कहेवो.
ए (दशमुं) खमासमण (अने) पांचमुं आव
श्यक पूरुं थयुं, एणें करी पडिक्कमणामांजे अ
शुद्ध आचार रह्या ते आचार ए पांचे लोगस्स
ना कउस्सग्गथी शुद्ध थाय ठे. ॥

पठी खमासमणपूर्वक इछाकारेण संदिसह
भगवन् ! बहु आवश्यकभणीपच्चरकाण वां
दणां करूं जी. एम कही बे वार वांदणां दीजे
पठीगुरु मुखें पच्चरकाण करवुं. ए अगीयारसुं
खमासमण अने ठहुं आवश्यक पूरुं थयु

पठी खमासमणपूर्वक हेठा बेशी ने इछा
कारेण संदिसह भगवन् ! सामायिकीपारवा
त्रण नवकार मनमां गणवा. पठी नमो अरिहं
ताणं ए एक पद प्रगट कहीने इछाकारेण सं
दिसह भगवन्(सामायिक पारवा गाथा भणुंजी

॥ अथ सामायिक पारवानी ॥

॥ जं जं मणेण बद्धं, जं जं वायाय भासियं

पावं ॥ काएण वि डुकयं, मिछामि डुकडं त
स्स ॥ १ सव्वे जीवा कम्मवस, चउदह रज्ज भ
मंत ॥ ते में सव्व खमाविया, मुझवि तेह खमं
त ॥ २ ॥ खमी खमावी मेंखमी, छव्विह जीव
निकाय ॥ शुद्ध मनें आलोवतां, मुज मन वेरन
थाय ॥३॥ दिवसें दिवसें लरकं, देइ सुव्वन्नस्स
खंम्रियंएगो एगोपुसामाइयकरेइन पुहुप्पयएत
स्स ॥४॥ कुणे पमाए बोलीउं, हुई विरुद्धबुद्धि॥
जिण सासण में बोलउं, मिछा डुक्कड सुद्धि ॥५॥
॥ सामायिक व्रत फासिअं, पालिअं, पूरिअं,
तीरिअं,कित्तिअं,आराहिअं,विधें,लीधु,विधेंकी,
धुं, विधें पाल्युं, विधें करतां कोसी अविधि,अशा
तना हुइ होय, ते सवि हूं मनें, वचनें कायायें
करी मिछामि डुक्कडं ॥ १ ॥पाटी, पोथी, कवली,
ठवणी, नोकरवली कागलें पग लगाड्यो, होय
गुरुने आसने,वेसने,उपगरनेपग लगाड्यो,होय
ज्ञान डव्यतणी आशातना थइ होय. ते सवि
हुं मनें, वचनें कायायें करी मिछामि डुक्कडं. अ
ढी द्दीपने विषे साधु, साध्वी, श्रावक श्राविका,

इत्यादिक कहिने " सिद्धा सिद्धिं ममदिसतुं " पर्यंत (पांच) लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. पछी नमो अरिहंताणं ए पद कहीने काउस्सग्ग पारवो, पछी प्रगट लोगस्स कहेवो. ए (दशमुं) खमासमण (अने) पांचमुं आव श्यक पूरुं थयुं, एणें करी पडिक्कमणामांजे अ शुद्ध आचार रह्या ते आचार ए पांचे लोगस्स ना कउस्सग्गथी शुद्ध थाय छे. ॥

पछी खमासमणपूर्वक इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बद्धा आवश्यकभणीपच्चरकाण वां दणां करूं जी. एम कही बे वार वांदणं दीजे पछीगुरु मुखें पच्चरकाण करवुं. ए अगीयारसुं खमासमण अने छठ्ठुं आवश्यक पूरुं थयु

पछी खमासमणपूर्वक छेठा बेशी ने इच्छा कारेण संदिसह भगवन् ! सामायिकीपारवा त्रण नवकार मनमां गणवा. पछी नमो अरिहं ताणं ए एक पद प्रगट कहीने इच्छाकारेण सं दिसह भगवन्(सामायिक पारवा गाथा भणुंजी

॥ अथ सामायिक पारवानी ॥

॥ जं जं मणेण बद्धं, जं जं वायाय भासियं

पावं ॥ काएण वि ङुठकयं, मिछामि ङुकमं त स्स ॥ १ सव्वे जीवा कम्मवस, चउदह रज्ज भ मंत ॥ ते में सव्व खमाविया, मुझवि तेह खमं त ॥ २ ॥ खमी खमावी मेंखमी, छव्विह जीव निकाय ॥ शुद्ध मनें आलोवतां, मुऊ मन वेरन थाय ॥३॥ दिवसें दिवसें लरकं, देइ सुव्वन्नस्स खंमियंएगो एगोपुणसामाइयकरेइन पुहुप्पएत स्स ॥४॥ कुणे पमाए बोलीउं, हुई विरुद्धबुद्धि॥ जिण सासण में बोलउं, मिछा ढुक्कड सुद्धि ॥५॥ ॥ सामायिक व्रत फासिअं, पालिअं, पूरिअं, तीरिअं, किट्टिअं, आराहिअं, विधें, लीधु, विधेंकी, धुं, विधें पाल्युं, विधें करतां कीसी अविधि, अशा तना हुइ होय, ते सवि हूं मनें, चनवें कायायें करी मिछामि ङुक्कडं ॥ १ ॥पाटी, पोथी, कवली, ठवणी, नोकरवली कागलें पग लगाड्यो, होय गुरुने आसने, वेसने, उपगरनेपग लगाड्यो, होय ज्ञान द्रव्यतणी आशातना थइ होय· ते सवि हुं मनें, वचनें कायायें करी मिछामि ङुक्कडं. अ ढी द्वीपने विषे साधु, साध्वी, श्रावक श्राविका,

जे कोइ प्रभु श्री वीतराग देवनी आज्ञा पाले. पलावे, जणे जणावे, अनुमोदे, तेहने म्हारी त्रीकाल वंदना होजो. सीमंधर प्रमुख वीश विहरमांन जिनने म्हारी त्रिकाल वंदना होजो, अतीत चोवीशी, अनागत चोवीशी, वर्त्तमान चोवीशीने म्हारी त्रिकाल वंदना होजो. रुषभानन, चंद्रानन, वर्द्धमान, वारीषेण, ए चार शाश्वता जिनने म्हारी त्रिकाल वंदना होजो, दश मनना, दश वचनना बार कायाना ए बत्रीश दोषमांहेलो सामायिकव्रतमांहे जे कोइ दोष लाग्यो होय, ते सवि हुं, मनें, वचनें कायायें करी मिछामि डुक्कडं, साचानी सद्दहणा, जूठाना मिछामि डुक्कडं. पछी त्रण नवकार मनमां गणी त्रण खमासमण देइजयणावर्पूक उठवुं ए (बारमुं) खमासमण ॥ इति देवसीप्रतिक्रमण

॥ अथ राइपडिक्कमणः ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण आपी इछाकार० कहीने इरियावही० पडिक्कमी पछी तस्स उत्तरी० कही एक लोगस्सनो काउस्सग करी

प्रगट लोगस्स कही गमणागमण आलोववुं
एटले मार्गनेविषे जातां आवतां०॥ ए कही
पछी सामायिक ठावा त्रण नवकार गुणीयें.
पछी जीवराशि खमावी अढार पाप स्थानक आ
लोइ पछी गुरुस्थापना निमित्त पंचिंदिय कही
द्रव्य, क्षेत्र,काल, भाव धारवा.पछी एक नवकार
गुणी सामायिक व्रत उच्चार करीयें. पछी फरी
बीजा आवश्यक भणी इरियावही० ॥ तस्स
उत्तरी० ॥ कही पछी एक लोगस्सनो काउस्स
ग्ग करी लोगस्स प्रगट कही पछी त्रीजा आव
श्यक भणी इछं अभिभव अशेष डुरकरकय
कम्मरकय निमित्त(पांच)लोगस्स नो काउस्सग्ग
करवो. पछी लोगस्स एक प्रगट कही, पछी
कुसुमिण डुसुमिण उहामि निमित्तं करेमि का
उस्सग्गं. एम कही(४) लोगस्स नो काउस्सग्ग
करवो.पछी एक लोगस्स प्रगट कही पछी उत्तरा
संगनोछेहमो पडिलेहीपछीचोथा आवश्यकभणी
बेवार वांदणां देइने पछी एकजण उभोरही पां
चमाआवश्यक भणी लघु अतिचार कहे. पछी
चैत्यवंदन कही (चार) स्तवन कहेवां. पछी

उवस ग्गहरं० नमुत्थुणं०कही गुरु वंदन करी सज्जाय कहीयें, पछी छठा आवश्यक त्रणी वांदणां वे वार देइने पच्चरकाण करीये. पछी सामायिक पारवा त्रण नवकार गणीयें. पछी 'जंजं मणेण बद्धं' इत्यादिक गाथा कही प्रतिक्रमण समाप्त करीयें ॥ इति विधिपक्ष प्रतिक्रमणः स०

॥ अथ लोंकागच्छ प्रतिक्रमण विधिः ॥

सामायक लेवानी विधिः

प्रथम पोंढाणानां सर्व वस्त्र पडिलेहवां तथा यत्नायें आसनियुं पाथरवुं, ते पछी गुरुने इच्छामि खमासमणो० ॥ इत्यादिक त्रण वांदणां देवां, पछी श्रीमंधरजीनें त्रणवांदणांदेई पछी नीचे वेसीने नवकार गणवो, पछी पचेंदिअनो पाठ कहेवो. पछी इरियावहि० तस्स उत्तरी० कही (एक) लोग्गस्स (अथवा) चार नवकारनो काउस्सग्ग करवो, पछी नमो अरिहं ताणं कही काउस्सग्ग पारवो प्रगट लोग्गस्स कही गुरुनी पासे सामायिकनी आज्ञा मागवी. (कदापि) गुरु न होय तो सीमंधर स्वामी पासेथी आज्ञा मागीने करेमी भंते

नो पाठ कहेवो. पछी डावो ढींचण ऊंचो राखी ने नमोत्थुणंकहेवुं. ॥ इति सामायिक विधि.

॥ अथ सामायिक पारवान विधिः ॥

प्रथम नककार गणी, इरियावहि० तस्स उत्तरी०कही, एक लोगस्स (अथवा) चार नवकारनो काउस्सग्ग करी नमो अरिहंताणं पूर्वक काउस्सग्ग पारी प्रगट लोग्गस्स कहीने मावो ढींचण ऊंचो करी नमोत्थुणंनो पाठ कहेवो. पछी सामाइय वयजुत्तो कही, दश मनना, दश वचनना, वार कायाना, इत्यादि पाठ कहेवा ॥ इति सामायिक पारवाविधि॥

॥ अथ दैवसिक प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम गुरु पासे आज्ञा मागीये छैये, तेवी रीते आज्ञा मागीने पछी नवकार गणी, लोगस्स कही, डावो ढींचण ऊंचो करी, नमोत्थुणंनो पाठ कही बे खामणां देवां, तिहां वीजे खामणे आवसिआए ए पाठ न कहेवो पछी पडिक्कमणं ठावबुं तेमां आवस्सइच्छाकारेण ए पाठ जणवो.पछी उन्ना थइ(नवकार गणवो.) पछी करेमीभंते कहीने इच्छामिठामि०पछी तस्स

उत्तरी० कही आठ नवकारनो काउस्सग्ग करवो. पछी नमोअरि हंताणं कही काउस्सग्ग पारी प्रगट लोगस्सकही वली वे खामणां देवां, देइने पछी अतिचारनां वे स्थुल तेमां एक तो श्री ज्ञानने विषे अने बीजो दर्शन (एटले)सम्यकत्व रत्नने विषे ऐ वे पाठ गुरु पासे कहेवरावबा,(अने गुरु न होय)तो पोते कहेवा, ते पछी श्रावकना अतिचार कहेवा.

अथ अतीचार लिख्यते

श्री ज्ञानने विषे जे अतिचार लगा होय ते आलोउं. जं वाइद्धं वच्चा मेलिअं, हिणक्खरं अच्चक्खरं पयहीणं जोगहीणं घोसहीणं, सुट्टु दिन्नं डुट्टु पडिच्छियं अकाले, कउ सज्झाउ काले न कउ सज्झाउं, असज्झाएं सज्झायं सज्झाएन सज्झायं, जे कोइ ज्ञानना चउद अतिचारने विषे, दिवस संबंधि दोष लागो होय. तस्स मिच्छामि डुक्कडं. ॥ १ ॥

दर्शन श्री समकेत रत्नने विषे जे, अतिचार लागो होय, ते आलोऊं, श्री जिन वचन समां सर्दह्यां न होय, प्रतीत्या न होय, रोचवां न

होय, परदर्शनीनी आकांक्षा कीधी होय, फल प्रत्यें संदेह आण्यो होय, पर पाखंमीनी प्रशंसा कीधी होय, परपाखंडीनो संस्तव, परिचय कीधो होय परपाखंमी संघाते आलाप संलाप कीधा होय, जे कांइ समकितरत्नने विषे आठ प्रकारें, जाणतां अजाणतां दिवस संबंधि, दोष लाग्यो होय तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ २ ॥

पहेलुं स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रतने विषे जे अतिचार लागा होय, ते आलोउं. रीशवशें गाढो घाव घाल्यो होय, गाढे बंधनें बांध्यो होय, अवयवनो छेद कीधो होय अतिचार भर्यो होय, भात पाणीनो विछेद कीधो होय, जे कांइ दिवस संबंधि दोष लागो होय, तस्स मिच्छामि डुक्कडं. ॥ ३ ॥

बीजुं स्थूल मृषावाद विरमण व्रतनेविषे, जे अतिचार दोष लागो होय, ते आलोउं छुं. सहसात्कारें कोइ प्रत्यें कूमां आल दीधां होय, रहस्य गनी वात प्रगट कीधी होय,स्त्रीपुरुषना मर्म प्रकाश्यां होय,कोइने अपाय पाडवा भणी मृषा उपदेश दीधो होय कूडा लेख लख्या

होय कूमी सांख पूरी होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागो होय तस्समिछामि छक्कमं ॥

त्रीजुं स्थूल अदत्तादान विरमणव्रतने विषे जे अतिचार ला० चोराइ वस्तु लीधी होय, चोरने सहाय दीधुं होय, राज्य विरुद्ध कीधुं होय कूडां तोला, कूमां मापकीधां होय, वस्तुमां नेल संनेल कीधा होय,सखरी देखाडी नखरी आपी होय जे कोइ दिवस संबंधि दोष लाग्यो होय, तस्स मिछामिछक्कडं ॥

चोथुं स्थूल स्वदारा संतोष परदारा गमन विरमण व्रतने विषे जे अतिचार ला० इत्तर थोडा कालनी राखीशुं गमन कीधां होय अपर ग्रहीतनां गमन कीधा होय, अनंग क्रीमा कीधी होय, परायां विवाह नातरां जोमया होय, काम नोग तीव्र अनिलाषें सेव्या होय, सेवराव्या होय, सेवतां प्रत्यें अनुमोद्या होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागो होय, तसस्स मि०

पांचमां ईछापरिग्रह परिमाण व्रतने विषे जे अतिचार लागा होय, ते आलोउं. धन धान्यनुं, खित्तवथ्थुनुं, रूपा सोनानुं, छप्पद चउ

प्पदकु विधातनुं परिमाण अति क्रम्युं होय, जे कोइ दिवस संबंधी दोष लागो होय तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ ७ ॥

छठा दिशि परिमाण व्रतने विषे जे अतिचार लागा होय, ते आलोउं, उंची, नीची, त्रीछी, दशे दिशिनुं परिमाण, अतिक्रम्यु होय, व्य तिक्रम्यु होय एक दिशि वधारी होय, एक दिशि घटाडी होय पंथने संदेहे मर्यादा लोपी आघो चाल्यो होय,जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागो होय, तस्समि० ॥ ८ ॥

सातमुं उपन्नोग परिन्नोग परिमाण व्रतने विषे जे अतिचार लागा होय, ते आलोउं. पच्च क्काण उपरांत सचित्तनो आहार कीधो होय, सचित्त पडिबद्धनो आहार कीधो होय, अपक्क डुपक्कनो आहार कीधो होय, तुछोषधिना न्न क्षण कीधां होय जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागा होय, त० ॥ ए ॥

पन्नरे कर्मादान श्रावकने जाणवां. पण स माचरवा नहीं,इंगालकम्मे वणकम्मे सकट कम्मे साडिकम्मे न्नामीकम्मे फोडीकम्मे, दंतवाणिज्जे

लखवाणिज्जे रसवाणिज्जे विसवाणिज्जे केसवा
णिज्जे एवंखुजंत पिल्लणकम्मं निल्लंछण कम्मं, द
वनुं देवुं सरदह तलाय सोसंच, असयंती जन
नां भरण, पोषण कीधां होय, जे कोइ दिवस
संबंधि दोष लाग्यो होय, त० ॥ १० ॥

आठमां अनर्थ दंड विरमण व्रतने विषे जे अ
तिचार लागा होय, ते आलोउं छुं. कंदर्पनी कथा
कीधी होय, भांडकुचेष्टा कीधी होय, मुखरी वचन
बोल्यां होय, पापनां अधिकरण जोडी मूक्यां होय
उवभोग परिभोग अधिकां वधाख्यां होय जे कोइ
दिवस संबंधि दोष लाग्यो होय त० ॥ ११ ॥

नवमां श्री सामायिक व्रतनें विषे जे अति
चार दोष लागा होय, ते आलोउं छुं. मन,
वचन, कायाना जोग पाडुवे ध्याने प्रवर्ताव्या हो
य, सामायक मांहे समतान कीधी होय अणपू
ग्युं पाख्युं होय, पारतां वीसाख्युं होय जे कोइ दि
वस संबंधि दोप लागो होय, तस्स मिछा० १२

दसमां देसावगासिक व्रतने विषे जे अ०
नीमि भुमिका बाहेरथी वस्तु अणावी होय त
था मोकलावी होय, शब्द करी रूप देखाडी पु

द्गल नाखी आपणपुं छतुं जणाव्युं होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागो होय त०॥१३॥

अगीआरमुं पोषध व्रतने विषे जे अ० ला० सज्झा संथारो अप्रति लेख्यो होय, दुःप्रति ले ख्यो होय, अप्रमार्ज्यो दुःप्रमार्ज्यो होय, उच्चा र पासवण नुमिका अप्रति लेखी होय, दुःप्र ति लेखी होय, अप्रमार्जि होय, दुःप्रमार्जि हो य, पोसह मांहें वात विकथा निद्रा प्रमादें करी काल निर्गम्यो होय, जे कोइ दिवस संबंधि दो ष लाग्यो होय त० ॥ १४ ॥

बारमां अतिथिसंविन्नाग व्रतने विषे जे अ० सूजती वस्तु सचित्त उपर मूकी होय, सचित्तें करी ढांकी होय, काल अतिक्रम्यो होय, आपणी वस्तु परायी कीधी होय, मत्सर सहित दान दीधुं होय, न्नाणे वेळां साधु, सा धवीनी चिंतवणा न कीधी होय, नवकार नमो थ्थुणं नणया गणया विना व्रत पच्चरकाण पार्युं होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागो होय, तस्समिच्छामि डुक्कडं ॥

संलेषणा व्रतना पांच अतिचार लागा० इह

लोगा संसप्पओगे परलोगा संसप्पओगे जीवि
आ ससंप्पओगे मरणीया संसप्पओगे काम
जोगनी वांछा कीधी होय, जे कोई दिवस संबं
धि दोष लागो होय, तस्स० ॥ १६ ॥

अढारे पापस्थानक लागां होय, ते आलोउं
पहेलुं प्राणातिपात ॥ १ ॥ बीजुं मृषावाद ॥२॥
त्रीजुं अदत्ता दान ॥ ३ ॥ चोथुं मैथुन ॥ ४ ॥
पांचमुं परिग्रह ॥५॥ छठुं क्रोध ॥६॥ मान ॥७॥
माया ॥ ८ ॥ लोभ ॥९॥ राग ॥१०॥ द्वेष ॥११॥
कलह ॥ १२ ॥ अभ्याख्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य
॥ १४ ॥ परपरिवाद ॥ १५ ॥ रतिअरति ॥ १६ ॥
माया मोसो॥१७॥मिथ्या दरसण शैल्य॥१८॥ ए
अढारे पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय
सेवतां प्रत्ये अनुमोद्यां होय जे कोइ दिवस सं
बंधि दोष लागो होय तस्स मिच्छामि डु० ॥१७॥

अतिक्रम. व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार
मूलगुण उत्तर गुणने विषे जे कोइ दिवस संबं
धि दोष लागो होय, तस्स मिच्छा० ॥ १८ ॥

इछं आलोएमि जोमे देवसिओ अइआरो
कओकाइओ वाइओ माणसिओ उस्सुतो उ

म्मग्गो इत्यादि यावत् जंखंम्नियं जं विराहिअं तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ १ए ॥

सव्वस्सवि दिवसिअ डुचिंतिअ डुप्नासिय डुच्चिठ्ठिअ तस्समि० सूत्रन्नणेमि सूत्र सांन्नलेमि सूत्रनो आदेस. ॥ इति अतिचार ॥

पठी नवकारकही करेमि नंते कहेवुं. पठी इछा मिठामि कहेवुं. पठी वंदित्तु सूत्र कहेवुं ते कही रह्या पठी पूर्वोक्त रीते बे खामणां देवां. पठी अप्रुठ्ठिउमि० कहीने खमाववुं. पठी सात लाख कहेवा. पठी आयरिय उवज्झाए कहेवुं पठी आवस्सइछाकारेण संदिसह नगवन् देवसियं प्रायछित्त विशोधनार्थं करेमि काउस्सग्गं ए पाठ कही(१)नवकार गणी करेमिनंते कहेवुंपठी इछा मिठामि० तस्सउत्तरी० कही (चार लोगस्स (अथवा) शोल नवकारनो काउसग्ग करी नमो अरिहंताणं कही काउस्सग्ग पारी प्रगट लोगस्स कहीने वली पूर्वोक्त रीते बेखामणां देवा. पठी चउविहारनुं पच्चक्काण लेवुं. पठी सामायिक, चउविसत्थो, वांदणां पडिक्कमणुं काउस्सग्ग, अने पच्चक्काण, ए ठ आवश्य

कने विषे जे कोई दोषलागो होय ते सविमन वचनकायायें करी तस्समिछामि डुक्कडं ए पाठ कही, मावो ढींचण उंचो करी नमुथुणं कहेवुं, पछी नवकार गणी स्तवन कहेवुं. तेवार पछी क र्मक्षय निमित्त करेमि काउस्सग्गं अनछ एम क हीने चारलोगस्सनो काउसग्ग करवो पारी प्रगट लोगस्स कही पछी नवकार गणीने सज्झाय कहे वी. पछी नंदि कहेवी॥ इति देवसीप्र०

॥ अथ राइ प्रतिक्रमणविधि ॥

प्रथम गुरु पासे आज्ञा मागी सामायिक क रवो पछी नवकार गणी राइ कर्मक्षय निमित्ते करेमि काउस्सग्गं कही बे लोगस्सनो काउस्स ग्ग पारी,प्रगट लोगस्स कही नीचे बेसी नवका र कही, चउव्वीसत्थो कहिये, पछी वांदणां तथा खामणां लीजे, पछी उन्ना थइने राइ पायछित्त विशोधनार्थं करेमि काउस्सग्गं कही,एक नवका र गणी, करेमिभंते, इछामि ठामि. काउस्सग्गं जोमे राइउं अइआरो कउ इत्यादिक कही, तस्सउत्तरीनो पाठ कहेवो. पछी चार लोगस्स नो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कही पछी

तरत उभा थइने आवस्स इछाकारेण संदिस ह भगवन् राइ पडिक्कमणें ठाएमिं राईज्ञान दर्श न चारित्र तप, वीर्य अतिचार चिंतवनार्थं करेमि काउस्सग्गं, एम कहि एक नवकार गणी, करेमि भंते० इच्छामि ठामि० तस्स उत्तरी० कही पछी नाणंमिनो काउस्सग्ग करीये. पछी देवसिनी पेठे सर्व पाठ कहिये. परंतु ज्यां चार लोगस्सनो काउस्सग्ग आवे, ते स्थानके वरसी तपनो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही, पछी वे वादणां आपीने यथाशक्ति पच्चरकाण लीजे. तेवार पछी स्तवन, सझायो, प्रभातनां केहेवाता होयते कहेवा. त्यार पछी नंदि कहेवी. ॥ इति ॥

अथ पाक्षिक प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम तो देवसिनी पेठे वंदिता सुधी सर्व कहेवुं, आलोअंतो निदंतो, देवसियं आलो एमि, पक्खि भणेमि, ए रीते कहेवुं, पछी त्यांथी पावुं वली वे खामणाथी मांडीने चार लोग्गस्स ना काउस्सग्ग पर्यंत कहेवुं, पण चार लोग्गस्सने ठेकाणे अढीं बार लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, अने छठो पच्चरकाण आवश्यक आवे

तेवारे चउविहारने स्थानके धारणा प्रमाणे पच्चक्खाण लेवुं, त्यांथी पाछो आलोअंतो निंदंतो पडिक्कमे आलोएमि देवसिअं जणेमि कहिने तेवार पछीतो वंदिता सूत्र कही रह्या पछी जे बे खामणां आपीये छैये, त्यांथी सर्वदेवसि पडिक्कमणानी पेठे चलाववुं. ॥ इति ॥

अथ चोमासी प्रतिक्रमण विधि.

पख्खीनी पेठे चोमासी प्रतिक्रमणनो सर्व विधि जाणवो, परंतु जे ठेकाणे बार लोगस्सनो काउस्सग्ग आवे छे, ते ठेकाणे वीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, तथा जे जे स्थानके पक्खीयं पाठ आवे ते ते स्थानके चउम्मासियं पाठ कहेवो. ॥ इति ॥

अथ संवछरी प्रतिक्रमण विधि.

पाखीनी पेठे संवत्सरी पडिक्कमणानो पण सर्व विधि जाणवो. परंतु एटलुं विशेष के जे ठेकाणे बार लोगस्सनो काउस्सग्ग आवे छे, ते ठेकाणे अहीं चालीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, तथा जे जे स्थानके पक्खियं पाठ आवे, ते स्थानके संवछरियं पाठ कहेवो ॥ इति॥

अथ वरसी तपना काउस्सग्गनो पाठ ॥

अणसण मूणोअरिया, वत्ति संखेवणं रस-
च्चाउं ॥ कायकिलेसो संली, ण आय बझो तवो
होइ ॥ १ ॥ पायछित्तं विणउं, वेआवच्चं तहेव
सझाउं ॥ झाणं उस्सग्गोविय, अभ्भिंतरउं
तवो होइ ॥ २ ॥ धन्य श्री ऋषभदेव स्वामीने
जेणे वरसी तप कर्युं, धन्य श्री महावीरस्वा-
मीने जेणे छम्मासी तप कर्युं, एमज जे पंच-
मासी तप करे, तेने धन्य, जे चार मासी तप
करे, तेने धन्य, जे त्रीमासि तप करे, तेने धन्य,
जे बे मासी तप करे, तेने धन्य, जे पच्चावन उ-
पवास करे, तेने धन्य, जे पच्चास उपवास करे,
तेने धन्य, जे पिस्तालीश आगमना पीस्तालीश
उपवास करे, तेने धन्य, जे चालीश उपवास
करे, तेने धन्य, जे पांत्रीश वाणी रूप सत्य व-
चनना पांत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे चो-
त्रीश अतिशयना चोत्रीश उपवास करे, तेने
धन्य, जे तेत्रीश आशातना टालवा निमित्त ते-
त्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे बत्रीश योग
संग्रहना बत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे ए-

कत्रीश सिध्दना गुण पामवाने एकत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे त्रीश प्रकारें महा मोहनीय कर्म टालवाना त्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे उंगणत्रीश पापशास्त्र टालवाना उंगणत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे साधुनी अठावीस लब्धिना अठावीश उपवास करे, तेने धन्य, जे साधुना सत्तावीश गुणना सत्तावीश उपवास करे, तेने धन्य, जे छवीश दशा कल्पना छवीश उपवास करे, तेने धन्य, जे पच्चीश क्रिया टालवाना पच्चीश उपवास करे तेने धन्य, जे चोवीश तीर्थंकरना नामना चोवीश उपवास करे, तेने धन्य, जे श्री सूय गडांगना त्रेवीश अध्ययनना त्रेवीश उपवास करे, तेने धन्य, जे बावीश परिसह जीतवाना बावीश उपवास करे, तेने धन्य, जे एकवीश सबल दोष टालवाने एकवीश उपवास करे तेने धन्य, जे वीश असमाधिना स्थानक टालवाने वीश उपवास करे तेने धन्य, जे श्री ज्ञाता सूत्रना प्रथम श्रुतस्कंधना उंगणीश अध्ययनना उंगणीश उपवास करे, तेने धन्य, जे अढार पा-

पस्थानक टालवाना अढार उपवास करे, तेने धन्य, जे सत्तर प्रकारे संयम पालवाना सत्तर उपवास करे, तेने धन्य, जे श्री सूय गडांगना प्रथम श्रुतस्कंधना शोल अध्यनना शोल उपवास करे, तेने धन्य, जे पंदर परमाधामिना कर्म निवारवाना पंदर उपवास करे, तेने धन्य, जे चौद प्रकारना जीवनी दया पालवाना चौद उपवास करे, तेने धन्य, जे तेर काठीआ निवारवाना तेर उपवास करे, तेने धन्य, जे नीखुनी बार पडिमाना वार उपवास करे, तेने धन्य, जे श्रावकनी अगीआर पडिमाना अगीआर उपवास करे, तेने धन्य, जे दशविध यति धर्म पामवाना दश उपवास करे, तेने धन्य, जे नव प्रकारे ब्रह्मचर्य पालवाना नव उपवास करे, तेने धन्य, जे आठ कर्म टालवाना आठ उपवास करे, तेने धन्य, जे सात व्यसन निवारवाना सात उपवास करे तेने धन्य, जे छकायनी रक्षाना छ उपवास करे, तेने धन्य, जे पांच प्रमाद टालवाना पांच उपवास करे, तेने धन्य, जे चार कषाय टालवाना चार उप-

वास करे, तेने धन्य, जे त्रण दंम टालवाना त्रण उपवास करे, तेने धन्य, जे राग द्वेष टालवाना वे उपवास करे, तेने धन्य, जे एक उपवास करे, तेने धन्य, आयंबिल करे, तेने धन्य, एकासणुं करे, तेने धन्य, जे एक ठाणुं करे, तेने धन्य, जे पूरिमार्ड्ड करे, तेने धन्य, जे पोरसि करे, तेने धन्य, जे नवकारसि करे, तेने धन्य, जे गंठसीउं मुठ सीउं करे, जे कोइ श्री जिनाज्ञा प्रमाणे चाले ते जीवने धन्य छे, धन्य धन्य धन्य धन्य धन्य नमो अरिहंताणं ॥ इति वरसी तपना काउस्सग्गनो पाठ संपूर्ण ॥

अथ नंदीनो पाठ.

जयइ जगजीव जोणी, विआणउ जग गुरु जगाणंदो, जगनाहो जगवंधू, जयइ जगप्पिया महो नयवं ॥ १ ॥ जयइ सुआणं प्पनवो तिछयराणं अपछिमो जयइ, जयइ गुरुलोगाणं जयइ महप्पा महा वीरो॥२॥नहं सव्व जगुज्जो, यगस्स नहं जिणस्स वीरस्स, नहं सुरा सुर नमं, सियस्स नहं धूयरयस्स ॥ ३ ॥ गुण नवण गहण सुयरयण, नरिय दंसण विसुद्ध

रुलागा, संघ नयर जदंते, अखंड चरित्त पागारा ॥ ४ ॥ संजम तवं तु वारस्स, नमो सम्मत्त पारियल्लस्स ॥ अप्पडिच्चक्क सजर्ज. होउ सया संघचक्कस्स ॥ ५ ॥ जदं सील पडा गुसियस्स, तव नियम तुरय जुत्तस्स ॥ संघरहस्स जगवर्ज, सज्झाय सुनंदि घोसस्स ॥ ६ ॥ नंदि आनंदि सदा संघने जय जय कारणी. आनंद कारणी, कल्याण कारणी, श्री जिनेंद्र देव श्री-गुरुदेवने त्रिकाल वंदना. ॥

सागर गछ प्रतिक्रमण विधि.

सागरगछ प्रतिक्रमण विधि तपे गछ समान जाणना परं विशेष मात्र इतनाहे की प्रतिक्रमणपारनेकी समय इर्यावही न प्रतिक्रमतेहें.

आनंद सूरीयगछ प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगछ प्रतिक्रमण समान जाणना विशेष मात्र सागरगछ प्रमाण जाणना.

वडगछ प्रतिक्रमण विधि.

समग्र विधि तपेगछके प्रतिक्रमण विधि समान जाणना विलकुल फरकनही.

राजसूरीय गछ प्रतिक्रमण विधि.

समग्र विधि तपेगछ समान जाणना.

लहुडी पोसाल गछ प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगछ प्रतिक्रमण समानजाणना.

कमल कलसा गछ प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगछके प्रतिक्रमणके विधि समान जाणना.

कवलागछ प्रतिक्रमणविधि.

समग्रविधि तपेगछके प्रतिक्रमण विधि समान जाणना.

विजयगछ प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगछके प्रतिक्रमण समान जाणना विशेषमात्र इतना हे की कर्मक्षय निमित्त काउसग्गके पश्चात् शांतिलोगस्स कहके कहते.

पायचंदगछ प्रतिक्रमण.

तमामविधि तपगछ समान जाणना परं विशेष मात्र यहहे की प्रथम देव वंदनके समय पुक्खरवरदीवड्ढे प्रमुख न कहते चारों थुइ मात्र एक साथ कहदेतेंहे. और कितनीक संकलना-मात्र भिन्न हे.

॥ अथ सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदनप्रारंजः ॥

॥ विमल केवलज्ञानकमला, कलितत्रिभुवन, हितकरं ॥ सुरराजसंस्तुत चरणपंकज नमो आदि जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ विमलगिरिवर, शृंगमंडण, प्रवरगुण गणजूधरं ॥ सुर असुर किन्नर, कोमिसेवित ॥ नमो० ॥ २ ॥ करति नाटिक किन्नरीगण, गाय जिनगुण मनहरं ॥ निर्जरा वली नमे अहोनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधि, कोमि पण मुनि मनहरं ॥ श्रीविमलगिरिवर शृंग सिद्धा ॥ नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्यसाधन सुर मुनिवर, कोडीनंत ए गिरिवरम् ॥ मुक्तिरमणी वर्या रंगें ॥ नमो० ॥५॥ पाताल नर सुर लोकमांहि, विमलगिरिवर तोपरं ॥ नहिं अधिक तीर्थ तीर्थपति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ एम विमल गिरिवर शिखरमंमण, डुखविहंडण ध्याइयें ॥ निज शुद्ध सत्ता साधनार्थ, परम ज्योति निपाइयें ॥ जितमोह कोह विछोह निद्रा, परम पदस्थित जयकरम् ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजय सुहितकरं ॥ ७ ॥ इति चैत्यवंदनं समाप्तं ॥

॥ अथ चोवीसजीननुं चैत्यवंदन ॥

॥ सुर किन्नरनागनरिंदनतं, प्रणमामि युगादिम जिनमजितं ॥ संजवमजिनंदनमथ सुमतिं, पद्मप्रज-

मुज्ज्वलधीरमतिं ॥ १ ॥ वंदे च सुपार्श्व जिनेंद्र महं, चंद्रप्रभमष्टकुकर्मदहं ॥ सुविधिप्रभुशीतल जिनयुगलं, श्रेयांसमसंशयमतुलबलम् ॥२॥ प्रभुमर्चय नृपवसुपूज्यसुतं, जिनविमलमनंतमभिज्ञनतम् ॥ नम धर्ममधर्मनिवारिगुणं, श्रीशांतिमनुत्तरकांतिगुणम् ॥ ३ ॥ कुंथू श्रीअर मल्लीशजिनान्,मुनिसुव्रतनमिनेमिस्तमसिदिनान् ॥ श्रीपार्श्वजिनेंद्रमिभेंद्रसमं, वंदे जिनवीरमभीरुतमं ॥ ४ ॥

॥ कलश ॥

॥ इति नागकिन्नर, नरपुंदर, वंदितक्रम, पंकजा ॥ निर्जितमहारिपु, मोहमत्सर, मानमदमकरध्वजाः ॥ विलसंति सततं, सकलमंगल, केलिकानन, सन्निभाः, सर्वे जिनामे, हृदयकमले, राजहंस, समप्रभाः ॥ ५ ॥ इति चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥

॥ अथपंचतीर्थी चैत्यवंदन ॥

आजदेवअरीहंतनमुं, समरुं तारुं नाम ॥ ज्यां ज्यां प्रतिमा जिनतणी, त्यां त्यां करूं प्रणाम ॥ १ ॥ शत्रुंजय श्रीआदिदेव, नेम नमुं गिरनार ॥ तारंगे श्री अजित नाथ, आबू रिखभ जुहार ॥ २ ॥ अष्टापदगिरि ऊपरें, जिन चोवीशी जोय ॥ मणिमय मूरति मानशुं, भरतें भरावी सोय ॥ ३ ॥ समेतशिखर तीरथ वडुं, ज्यां वीशे जिनपाय ॥ वैभारगिरि ऊपरें, श्री वीरजिनेश्वर राय ॥ ४ ॥ मांडवगढनो

राजीयो नामें देव सुपास ॥ रिखन्न कहे जिन सम रतां, पहोंचे मननी आश ॥ ५ ॥ इति ॥ ० ॥

॥ अथ बीजनुं चैत्यवंदन ॥

॥ डुविध धर्म जिणें उपदिश्यो, चोथा अभिनंदन ॥ बीजे जन्म्या ते प्रत्नु, नवडुःखनिकंदन ॥१॥ डुविध ध्यान तुम्हें परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥ एम प्रकाश्युं सुमति जिनें, तेचविया बीज दिन॥२॥ दोय बंधन राग द्वेष,तेहनें नवि तजीयें ॥ मुजपरें शीतल जिन कहे, बीजदिन शिव नजीयें ॥ ३ ॥ जीवाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥ बीज दिनें वासु पूज्य परें, लहो केवल नाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार दोय, एकांत न ग्रहीयें ॥ अर जिन बीज दिनें चवी, एम जिन आगल कहीयें ॥ ५ ॥ वर्त्तमान चोवीशीयें, एम जिन कल्याण ॥ बीज दिनें केइ पामीया, प्रत्नु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चोवीशीयें ए, हुआं बहु कल्याण ॥ जिन उत्तम पद पद्मनें; नमतां होय सुखखाण ॥ ७ ॥

॥ अथ पंचमीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ त्रिगडे वेठा वीरजिन, नाखे नविजन आगें॥ त्रिकरणशुं त्रिहुं लोक जन, निसुणो मन रागें ॥ १॥ आराहो नलि नातसें, पांचम अजुवाली ॥ ज्ञान आराधन कारणें, एहज तिथि निहाली॥२॥ ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो एणें संसार ॥ ज्ञान

आराधनथी लह्युं, शिवपद सुखश्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही, काशकुसुम उपमान ॥ लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासोच्छ्वासमें, करे कर्मनो खेह ॥ पूर्व कोमी वरसां लगे, अज्ञानें करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान ॥ ज्ञान तणो महिमा घणो, अंग पांचमे जगवान ॥ ६ ॥ पंच मास लघु पंचमी, जावज्जीव उत्कृष्टी ॥ पंच वरस पंच मास नी, पंचमी करो शुजदृष्टि ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए, काउस्सग्ग लोगस्स केरो ॥ उजमणुं करो जाव शुं, टाले जवफेरो ॥७॥ एणी पेरें पंचमी आराहीयें ए, आणी जाव अपार ॥ वरदत्त गुणमंजरी परें, रंगविजय लहो सार ॥ए॥ इति पंचमीचैत्यवंदन ॥

॥ अथ अष्टमीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ माहा शुदि आठमने दिनें, विजया सुत जायो ॥ तेम फागुण शुदि आठमे, संजव चवि आयो॥१॥ चइतर वदनी आठमें, जन्म्या रुषज जिणंद ॥ दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २॥ माधवशुदि आठमदिनें, आठ कर्म कर्यां दुर ॥ अजिनंदन चोथा प्रजु, पाम्या सुख जरपूर ॥ ३ ॥ एहिज आठम उजली, जन्म्या सुमति जिणंद ॥ आठ जाति कलशें करी, न्हवरावे सुर इंद ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठ वदि आठमे, मुनिसुव्रत स्वामी ॥ नेम

आषाढ शुदि आठमे, अष्टमी गति पामी ॥ ५ ॥
श्रावण वदनी आठमे, नमि जन्म्या जगन्नाण ॥
तिम श्रावण शुदि आठमे, पासजीनुं निर्वाण ॥६॥
जाद्रवा वदि आठमदिने, चविया स्वामी सुपास ॥
जिन उत्तम पदपद्मनें, सेव्याथी शिववास ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ शासन नायक वीरजी, प्रनु केवल पायो ॥
संघ चतुर्विध थापवा, महसेनवन आयो ॥ १ ॥ मा
धव सीत एकादशी, सोमल द्वीज यज्ञ ॥ इंद्रनू
तिआदें मव्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥ एकादशसें
चउगुणा, तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अवलो करे,
मन अनिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संशय
हरी ए, एकादश गणधार ॥ वीरें थाप्या वंदीयें,
जिन शासन जयकार ॥ ४ ॥ मदि जन्म अर मल्लि
पास, वरचरण विलासी ॥ रुषन्न अजित सुमति न
मि, मल्लि घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रन्न शिव
वास पास, नवनवना तोडी ॥ एकादशी दिन आ
पणी, रुद्धि सघली जोडी ॥ ६ ॥ दश खेत्रें त्रिहुं
कालनां, त्रणशें कल्याण ॥ वरस अग्यार एकादशी,
आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अगीयार अंग लखावीयें,
एकादश पाठां ॥ पूंजणी ठवणी विंटणी, मशी का
गल काठां ॥ ८ ॥ अगीयार अव्रत ठांमवां ए, वहो

पडिमा अगियार ॥ खिमाविजय जिन शासनें, सफ ल करो अवतार ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीविशस्थानकनुं चैत्यवंदन ॥

॥ पहेले पद अरिहंत नमुं, बीजे सर्व सिद्ध ॥ त्रीजे प्रवचन मन धरो, आचारज सिद्ध ॥ १ ॥ न मोथेराणं पांचमे, पाठक गुण छठे ॥ नमो लोए स व्वसाहुणं, जे छे गुण गरिठे ॥ २ ॥ नमो नाणस्स आठमे, दर्शन मन जावो ॥ विनय करो गुणवंतनो, चारित्रपद ध्यावो ॥ ३ ॥ नमो बंज वयधारीणं, तेर मे किरियाणं ॥ नमो तवस्स चौदमे, गोयम नमो जिणाणं ॥ ४ ॥ चारित्र ज्ञान सुअस्सने ए, नमो तिछस्स जाणी ॥ जिन उत्तमपद पद्मने, नमता हो ये सुखखाणी ॥ ५ ॥

॥ अथ विशस्थानकना काउस्सगनुं चैत्यवंदन ॥

॥ चोवीश पंदर पिसतालीशनो, छत्रीशनो करी यें ॥ दश पंचवीश सत्तावीशनो; काउस्सग्ग मन ध र्यें ॥१॥ पंच सडसठने दश वली, सीत्तेर नव पणवी श ॥ बार अडवीश लोगस्स तणो; काउस्सग्ग धरो गुणीश ॥२॥ विश सत्तर इगवन, द्वादश ने पंच ॥ एणी परें काउस्सग्ग जो करे, तो जाये जव संच ॥ ३ ॥ अनुक्रमें काउस्सग्ग मन धरो, गुणी लेजो वीश ॥ विश थानक एम जाणीयें, संक्षेपथी लेश ॥ ४ ॥ जाव धरी मनमां घणो ए, जो एक पद

आराधे ॥ जिन उत्तमपद पद्मने, नमी निज का
रज साधे ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री रोहिणीतपचैत्यवंदन ॥

॥ रोहिणी तप आराधीये, श्रीश्री वासुपूज्य ॥
दुख दोहग दूरें टले, पूजक होये पूज्य ॥ १ ॥ पहे
ला कीजें वासक्षेप, प्रह उठीने प्रेम ॥ मध्यान्हें क
री धोतीयां, मन वच काया खेम ॥ २ ॥ अष्ट प्रका
रनी रचीयें, पूजा नृत्य वाजित्र ॥ नावें नावना ना
वीयें, कीजें जन्म पवित्र ॥ ३ ॥ त्रिहुं कालें लेइ धूप
दीप, प्रनु आगल कीजें ॥ जिनवर केरी नक्तिशुं,
अविचल सुख लीजें ॥ ४ ॥ जिनवर पूजा जिन स्त
वन, जिननो कीजे जाप ॥ जिनवर पदने ध्याइये,
जिम नावे संताप ॥५॥ कोड कोड गुण फल दीयें,
उत्तर उत्तर नेद ॥ मान कहे ए विधि करो, ज्युं
होये नवनो छेद ॥ ६ ॥

॥ अथ तीर्थवंदननुं चैत्यवंदन ॥

॥ सीमंधर प्रमुख नमुं, विहरमान जिन वीश ॥
रिखनादिक वली वंदीयें, संपइ जिन चोवीश ॥१॥
सिद्धाचल गिरनार आबु, अष्टापद वलि सार ॥ स
मेतशिखर ए पंचतीर्थ, पंचमी गति दातार ॥ २ ॥
ऊर्ध्व लोके जिनहर नमुं, ते चोराशी लाख ॥ सह
स सत्ताणुं ऊपरें, त्रेविश जिनवर नांख ॥ ३ ॥ एक
शो बावन कोमि वली, लाख चोराणुं सार ॥ सहस

चुम्माली सातशें, शाठ जिन पडिमा उदार ॥ ४ ॥ अधोलोकें जिनन्नवन नमुं, सात कोमि बोहोंतेर लाख ॥ तेरशें कोमि नेव्याशी कोमी शाठ लाख चित्त राख ॥ ५ ॥ व्यंतर ज्योतिषीमां वली ए, जिन न्नवन अपार ॥ ते न्नवि नित्य वंदन करो, जेम पामो न्नवपार ॥ ६ ॥ तिर्छा लोके शाश्वतां, श्रीजिनन्नवनविशाल ॥ बत्रीशशें ने उंगणशाठ, वंडुं थइ उजमाल ॥ ७ ॥ लाख त्रण एकाणुं सहस, त्रणशें विश मनोहार ॥ जिनपमिमा ए शाश्वती, नित्य नित्य करुं जुहार ॥८॥ त्रण न्नुवनमांहे वली ए, नामादिक जिन सार ॥ सिद्ध अनंता वंदीयें, महोदय पद दातार ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ चोवीश तिर्थंकरनी राशिनुं चैत्यवंदन ॥

॥ शांति नमी मल्ली मेष ठे, कुंथु अजित वृषन्नाति ॥ संन्नव अन्निनंदन मिथुन, धर्म करक सिंह सुमति ॥ १ ॥ कन्या पद्मप्रन्न नेम वीर, पास सुपास तुला ए ॥ शशि वृश्चिक धन ऋषन्नदेव, सुविधि शीतल जिनराय ॥ २ ॥ मकर सुव्रत श्रेयांसने ए, बारमा घट मीन लील ॥ विमल अनंत अर नामथी, सुखीया श्री शुन्नवीर ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचंदकेवलीना रासमांथी चैत्यवंदन ॥

॥ अरिहंत नमो, न्नगवंत नमो, परमेसर जिन

राज नमो ॥ प्रथम जिनेसर प्रेमे पेखत, सिद्धां सघलां काज नमो ॥ अ० ॥ १ ॥ प्रनु पारंगत परम महोदय, अविनाशी अकलंक नमो ॥ अजर अमर अद्भुत अतिशयनिधि, प्रवचन जलधिमयंक नमो ॥ अ० ॥ २ ॥ तिहुअण नविगण जण मण वंछिय, पूरण देव रसाल नमो ॥ ललि ललि पायनमुं हुं नावें, कर जोमीनें त्रिकाल नमो ॥ अ० ॥ ३ ॥ सिद्ध बुद्ध तूं जग जन सज्जन, नय नानंदन देव नमो ॥ सकल सुरासुर नर वर नायक, सारे अहो निश सेव नमो ॥ अ० ॥ ४ ॥ तूं तीर्थ कर सुखकर साहिब, तूं निःकारण बंधु नमो ॥ शर णागत नविने हितवत्सल, तूंही कृपारससिंधु नमो अ० ॥ ५ ॥ केवलज्ञानादर्शें दर्शित, लोकालोकस्व नाव नमो ॥ नाशित सकल कलंक कलुषगण दु रित उपद्रवनाव नमो ॥ अ० ॥ ६ ॥ जगचिंताम णि जगगुरु जगहित, कारक जगजननाथ नमो ॥ घोर अपार नवो दधितारण, तूं शिवपुरनो साथ नमो ॥ अ० ॥ ७ ॥ अशरण, शरण नीराग निरंजन, निरुपाधिक जगदीश नमो ॥ बोधि दीउ अनुपम दाने सर, ज्ञानविमल सूरीश नमो ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ अथ श्रीचोवीश जिननावर्णनु चैत्यवंदन ॥

॥ पद्मप्रन्न ने वासुपूज्य दोय राता कहीयें ॥ चंद्रप्रन्न ने सुविधिनाथ, दो उज्ज्वल लहीयें ॥१॥

मल्लिनाथ, ने पार्श्वनाथ,दो नीला निरख्या ॥ मुनि सुव्रत ने नेमनाथ, दो अंजन सरिखा ॥२॥ शोले जिन कंचनसमा ए, एवा जिन चोवीश ॥ धीरविमल पंडित तणो, ज्ञान विमल कहे शिष्य ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चोविश जिन समकितनव गण ॥ तीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर तणा हुवा, नव तेर कही जे ॥ शांतितणा नव वार सार, नव नव नेम लहीजे ॥ १ ॥ दश नव पासजिणंदने, सत्तावीश श्रीवीर ॥ शेष तीर्थंकर त्रिहुं नवें, पाम्या नवजल तीर ॥२॥ ज्यांथी समकित फरसीयुं, त्यांथी गणीएं तेह ॥ धीरविमल पंडित तणो,ज्ञानविमल गुण गेह॥३॥इति॥

॥ अथ चउदशें बावन गणधरनुं चैत्यवंदन ॥

॥ गणधर चोराशी कह्या, वली पंचाणुं ठेक ॥ दोय अधिक इग सय गणा, शोल अधिक शत एक ॥ १ ॥ शत सुमतिने गणधरा, एक सय अधिका सात ॥ पंचाणु त्राणु तथा, अडसी इगसी भ्रात॥२॥ ठोहोतेर ठासठ सगवन, पंचास तेंतालीस ॥ छत्तिस पणतिस कुंथने, अर गणधर तेत्रीश ॥ ३ ॥ अडवीस अष्टादश कह्या, नमि सत्तर गणधार ॥ एकादश दश शिव गया, वीर तणा अगीयार ॥ ४ ॥ रिखभादिक चोविशना, एक सहस्स सय चार ॥ अधिकेरा बावन कह्या, सवे मली गणधार ॥ ५॥ अक्षय

पद वरिया सवे, सादि अनंत निवास ॥ करीयें शु
न चित्त वंदना, जब लग घटमां शास ॥६॥ इति ॥

॥ अथ श्रीपंच परमेष्टि चैत्यवंदन ॥

॥ बार गुण अरिहंत देव, प्रणमीजें जावें ॥
सिद्ध आठ गुण समरतां, दुःख दोहग जावे ॥ १॥
आचारज गुण छत्रीस, पंचवीश उवझाय ॥ सत्ता
वीश गुण साधुना, जपतां सुख थाय ॥ २ ॥ अठो
त्तर सय गुण मली ए, एम समरो नवकार ॥ धीर
विमल पंडित तणो, नय प्रणमे नित सार ॥३॥इति॥

॥ अथ श्री सीमंधर जिन थोय ॥

॥ श्री सीमंधर जिनवर, सुखकर साहेब देव ॥
अरिहंत सकलनी, जाव धरी करुं सेव ॥ सकल
आगम पारग, गणधर जाखित वाणी ॥ जयवंती
आणा, ज्ञानविमल गुणखाणी ॥ १ ॥ (ए थोय चार
वखत पण कहेवाय छे)

॥ अथ श्री सीमंधर जिन थोय ॥

॥ श्री सीमंधर देव सुहंकर, मुनि मन पंकज हं
साजी ॥ कुंथु अर जिन अंतर जनम्या तिहुअण
जश परशंसा जी ॥ सुव्रत नमि अंतर वरदीक्षा,
शिक्षा जगत निरासेंजी ॥ उदय पेढाल जिनांतर
मां प्रजु, जाशे शिव वहु पासेंजी ॥ १ ॥ बत्रीश च
उसठी चउसठी मलिया, इग सय सठि उक्किठा
जी ॥ चउ अरु अरु मली मध्यम कालें, विश जि

नेश्वर जिहाजी ॥ दो चउ चार जघन्य दश जंबु, धायइ पुष्कर मोझारेंजी ॥ पूजो प्रणमो आचारां, गें, प्रवचन सार उझारेंजी ॥ २ ॥ सीमंधर वर केवल पामी, जिनपद खवण निमित्ते जी ॥ अर्थ निदेशन वस्तु निवेशन, देतां सुणत विनीतेंजी ॥ द्वादश अंग पूरवयुत रचियां, गणधर लब्धि विकसियां जी ॥ अप्पज्जवसिय जिनागम वंदो, अक्षरपदना रसियां जी ॥ ३ ॥ आणारंगी समकितसंगी, विविध जंग व्रतधारीजी ॥ चउविह संघ तीरथ रखवाली, सहु उपद्रव हरनारीजी ॥ पंचांगुली सूरि शासन देवी, देती तस जस ऋद्धिजी ॥ श्रीशुभवीर कहे शिव साधन, कार्य सकलमां सिद्धिजी ॥ ४ ॥

॥ अथ बीजतिथिनी स्तुति ॥

॥ दिन सकल मनोहर, बीज दिवस सुविशेष ॥ राय राणा प्रणमे, चंद्र तणी ज्यां रेख ॥ तिहां चंद्र विमाने, शाश्वता जिनवर जेह, हुं बीज तणे दिन, प्रणमुं, आणी नेह ॥ १ ॥ अभिनंदन चंदन, शीतलशीतल नाथ ॥ अरनाथ सुमतिजिन, वासुपूज्य शिव साथ ॥ इत्यादिक जिनवर, जन्म ज्ञान निर्वाण ॥ हुं बीज तणे दिन, प्रणमुं ते सुविहाण ॥ २ ॥ परकाश्यो बीजें, डुविध धर्म जगवंत ॥ जेम विमल कमल होय, विउल नयन विकसंत ॥ आगम अति अनुपम, जिहांनिश्चय व्यवहार ॥ बीजें सवि

कीजें, पातकनो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी, कमल सुकोमल चीर ॥ चक्केसरी केसरी, सरस सुगंध शरीर ॥ कर जोमी वीजें हुं प्रणमुं तस पाय ॥ एम लब्धिविजय कहे, पूरो मनोरथ माय ४

॥ अथ पंचमीनी स्तुति ॥

॥ श्रावण शुदि दिन पंचमी ए, जन्म्या नेम जिणंद तो ॥ श्यामवरण तन शोजतुं ए, मुख शारदको चंद तो ॥ सहस वरस प्रजु आयुखुं ए, ब्रह्मचारी जगवंत तो ॥ अष्ट करम हेलें हणी ए, पहोता मुक्ति महंत तो ॥ १ ॥ अष्टापदपर आदि जिन ए,पहोता मुक्ति मोजार तो ॥ वासुपूज्य चंपापुरी ए नेम मुक्ति गिरनार तो ॥ पावापुरी मांहे वलि ए श्रीवीरतणुं निर्वाण तो ॥ समेत शिखर विश सिद्ध हुआ ए, शिर वहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥ नेमनाथज्ञानी हुवा ए, जांखे सार वचन्न तो॥जीवदया गुण वेलमी ए, कीजे तास जतन्न तो ॥ मृपा न बोलो मानवी ए, चोरी चित्त निवार तो ॥ अनंत तीर्थंकर एम कहे ए, परहरियें परनार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामे यक्ष जलो ए, देवी श्री अंबिका नाम तो ॥ शासन सान्निध्य जे करे ए, करे वलि धर्मनां काम तो ॥ तपगछ नायक गुण निलो ए, श्रीविजयसैन्य सूरिराय तो ॥ रिखजदास पाय सेवतां ए, सफल करो अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमीनी स्तुति ॥

॥ मंगल आठ करी जस आगल, जाव धरी सुरराज जी ॥ आठ जातिना कलश करीने, न्हवरावे जिनराज जी ॥ वीरजिनेश्वर जन्म महोत्सव, करतां शिव सुख साधेजी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, मंगल कमला वाधे जी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी गजगंजन, अष्टापद परें वलीया जी ॥ आठमे आठ स्वरूप विचारी, मद आठे तस गलीया जी ॥ अष्टमी गति पहोता जे जिनवर, फरस आठ नहिं अंग जी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, नित्य नित्य वाधे रंग जी ॥ २ ॥ प्रातिहारज आठ विराजे समवसरण जिन राजे जी ॥ आठमे आठशो आगम जांखी, जवि मन संशय जांजे जी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पाले निरतिचारो जी ॥ आठमने दिन अष्टप्रकारें, जीवदया चित्त धारो जी ॥ ३ ॥ अष्टप्रकारी पूजा करीने, मानव जवफल लीजें जी ॥ सिद्धाइ देवी जिनवर सेवी, अष्टमहासिद्धि दीजें जी ॥ आठमनुं तप करता लीजें, निर्मल केवल ज्ञानजी ॥ धीर विमल कवि सेवक नय कहे, तपथी कोडि कल्याण जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

॥ एकादशी अति रूअमी, गोविंद पूछे नेम ॥ कोण कारण ए पर्व महोटुं, कहो मुजशुं तेम ॥ जि

नवर कल्याणक अति घणां, एकशोने पंचास ॥ ते णें कारण ए पर्व महोटुं, करो मौन उपवास ॥ १ ॥ अगियार श्रावक तणी प्रतिमा, कहे ते जिनवर देव ॥ एकादशी एम अधिक सेवो, वन गजा जिम रेव ॥ चोवीश जिनवर सयल सुखकर, जैसा सुरतरु चंग ॥ जेम गंग निर्मल नीर जेहवुं, करो जिनशुं रंग ॥ २ ॥ अगीआर अंग लखावियें, अगीयार पाठां सार ॥ अगिआर कवली वींटणां, ठवणी पूंजणी सार ॥ चावखी चंगी विविध रंगी, शास्त्र तणे अनुसार ॥ एकादशी एम उजवो, जेम पामियें नवपार ॥ ३ ॥ वर कमलनयणी कमलवयणी, कमल सुकोमलकाय ॥ भुजदंड चंड अखंड जेहने, समरतां सुख थाय ॥ एकादशी एम मन वशी, गणि हर्ष पंडित शिस ॥ शासन देवी विघन निवारो, संघ तणां निशदीस

॥ अथ शांतिजिन स्तुति ॥

॥ शांति जिणेसर समरियें, जेहनी अचिरा माय ॥ विश्वसेन कुल उपना मृग लंछन पाय ॥ गजपुर नयरीनो धणी, सोवन वरणी काय ॥ धनुष चालिस जस देहनी, वरस लाखनुं आय ॥ १ ॥ शांति जिनेसर सोलमा, चक्री पंचम जाणुं ॥ कुंथुनाथ चक्री छठा, अर नाथ वखाणुं ॥ एत्रिणे चक्री सही, देखी आणंदूं ॥ संयम लइ मुगतें गया, नित्य उठीने वंदूं ॥ २ ॥ शांति जिनेसर केवली, बेठा धर्म प्रकाशे ॥

दान शील तप नावना, नर सोहें अभ्यासें ॥ एह वचन जिनजी तणा, जेणे हियडे धरियां ॥ सुणतां शिवगती निर्मली, दिसे केवल वरियां ॥ ३ ॥ समेत शिखर गिरि उपरे, जइने अण सण कीधुं ॥ काउ-सग्ग मुद्रायें रह्या, तिणे मुक्तीज लीधुं ॥ गरुमयक सेवुं सदा, देवी निरवाणी ॥ नविक जीव तुमें सांजलो, रूपचंदासनी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुति ॥

॥ आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया ॥ मरु-देवी जस माया, धोरी लंछन पाया ॥ जगत स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया ॥ केवल सिरि राया, मोक्ष नगरे सधाया ॥ १ ॥ सविजन सुखकारी, मोह-मिथ्या निवारी ॥ डुरगति डुःख नारी, शोकसंताप वारी ॥ श्रेणि क्षपक सुधारी, केवलानंतधारी ॥ नमिये नरनारी जेह विश्वोपकारी ॥ २ ॥ समव सरण बेठा, लागे जे जिनजी मीठा ॥ करे गणप पइठा, इंद्र चंद्रादि दीठा ॥ द्वादशांगी वरीठा गुंथता टाले रीठा ॥ नविजन होय हिठा, देखी पुण्ये गरीठा ॥ ३ ॥ सुर समकितवंता, जेहरुद्धे महंता ॥ जेह सुजन संता, टालिये मुजचिंता ॥ जिनवर सेवंतां, विघ्नवारे डुरंता ॥ जिनउत्तम शुणंतां, पद्मने सुख दिंता ॥ ४ ॥ इति

अथ सिद्धचक्रजीनी स्तुति ॥

जिनशासन वंछित पुरणदेव रसाल ॥ नावे न-वि नजिये, सिद्धचक्र गुणमाल ॥ त्रिहुंकाले एहनी पुजा करे उजमाल ॥ ते अमर अमरपद सुख पामे सुविशाल ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्धवंदो, आचा-रज उवझाय ॥ मुनिदरसण नाण चरण तप ए स मुदाय ॥ ए नवपद समुदित, सिद्धचक्र सुख दाय॥ ए ध्याने नविनां, नव कोटी दुःखजाय ॥ २ ॥ आ शो चैत्रीमां शुद सातमथी सार॥ पुनम लगी कीजे, नव आंबिल निरधार ॥ दोय सहस गणेवुं, पद सम साढाचार ॥ एकाशी आंबिल तप आगम अ-नुसार ॥ ३ ॥ श्रीसिद्धचक्र सेवक, श्रीविमलेश्वर-देव ॥ श्रीपालतणीपरे सुख पूरे स्वयमेव ॥ दुःख दोहग नावे, जे करे एहनी सेव ॥ श्रीसुमती सु-गुरुनो राम कहे नितमेव ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथपर्यूषण स्तुति ॥

सत्तर नेदी जिन पूजा रचीने. स्नात्र महोत्सव कीजेजी ॥ ढोल ददामां नेरी नफेरी, झल्लरी नाद सुणीजेजी ॥ वीरजिन आगे नावना नावी, मानव नव फल लीजेंजी ॥ पर्व पजूसण पुरव पुण्यें, आ-व्यां एम जाणीजे जी ॥ १ ॥ मास पास वली द-सम दुवालस, चत्तारी अठ कीजेंजी ॥ उपर वली

दश दोय करीने, जिन चोवीस पूजीजेंजी ॥ वऌा कलपनो ठठ करीने, वीर चरित्र सुणीजेजी ॥ पडवेने दिन जन्म महोत्सव, धवल मंगल वरतीजेजी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगे अमारी पलावी, अठमनुं तप करियें ॥ नागकेतु नी परें केवल लहियें, जो शुन्न नावें रहियेजी ॥ तेलाधर दिन त्रण कल्याणक गणधरवाद वदीजेजी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजें, रुपन्न चरित्र सुणीजेजी ॥ ३ ॥ वारसें सूत्रने सामाचारी, संवछरी पडिक्कमियेजी ॥ चैत्य प्रवाम्मी विधिसुं कीजे, सयल जंतु खामीयेंजी ॥ पारणाने दिन स्वामी वछल, कीजे अधिक वऌाइजी ॥ मान विजय कहे सकल मनोरथ, पूरो देवी सिद्धाइजी ॥४॥

॥ अथ पर्यूषण स्तुति ॥

पुण्यनुं पोषण, पापनुं शोसण, पर्व पजूसण पामीजी ॥ कल्प घेर पधरावो स्वामी, नारी कहे शिर नामीजी ॥ कुंवर गयवर स्कंध चऌावी, ढोल निसाण वजडावोजी ॥ सदगुरु संगे चढते रंगे, वीर चरित्र सुणावोजी ॥ १ ॥ प्रथम वखाण धरम सारथी पद, बीजे स्वपना चार जी ॥ त्रीजे स्वपन पाठक वली चोथे, वीर जन्म अधिकारजी ॥ पांचमे दीक्षा ठठे शिवपद, सातमें जिन त्रेवीशजी ॥ आठमे स्थिविरावली संजलावी, पिउडा पूरो जगीशजी ॥ २ ॥ ठठ अठम अठाई कीजें, जिनवर चैत्य

नमीजेंजी ॥ वरसी पडिक्कमणुं मुनिवंदन, संघसयल खामीजेजी ॥ आठ दिवस लगे अमर प्रजावना, दान सुपात्रे दीजेजी ॥ जद्रबाहु गुरु वयण सूणीने, ज्ञान सुधारस पीजेजी ॥ ३ ॥ तीरथमां विमलाचल गिरिमां; मेरु मही़धर नेमजी ॥ मुनिवरमांहिं जिनवर मोहोटा, पर्व पजूसण तेमजी ॥ अवसर पामी स्वामी वछल, बहु पकवान वफाईजी ॥ खिमा विजय जिन देवी सिद्धाई, दिन दिन अधिक वधाईजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धाचलजीनी स्तुति ॥

श्रीसिद्धाचल तीरथ सार, गिरिवरमां जेम मेरु उदार, ठाकुर राम अपार ॥ मंत्रमांहें नवकारज जाणुं, तारामां जेम चंद्र वखाणुं, जलधरमांहें जल जाणुं ॥ पंखीमांहें जेम उत्तम हंस, कुलमांहे जिम रुषजनो वंश, नाजि तणो जे अंस ॥ क्षमावंतमांहे जिम अरिहंता, तप सूरा मुनिवर महंता, शत्रुंजय गिरि गुणवंता ॥१॥ रुषज अजितसंजव अजिनंदा, सुमतीनाथ मुख पुनमचंदा, पद्मप्रज सुखकंदा ॥ श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रज सुविधि, शितल श्रेयांस सेवो बहु बुद्धि, वासु पूज्य मती शुद्धि ॥ विमल अनंत जिन धर्म ए शांति, कुंथु अर मल्लि नमुं एकांति, मुनिसुव्रत शुद्ध पंथी ॥ नमी पासने वीर चोवीस, नेम विना ए जिन त्रेवीस, सिद्धगिरि आव्याईश ॥ २ ॥ ज-

रतराय जिन साथे बोले, स्वामी शत्रुंजय कुण तोले, जिननुं वचन अमोले ॥ रुषन कहे सुणो नरतराय, ठहरी पालंता जे नर जाय, पातक नूको थाय॥ पशुपंखी जे इण गिरि आवे; नव त्रीजे ते सिद्धज थाय, अजरामरपद पावे ॥ जिनमतमें शेत्रुंजो वखाण्यो, तेमें आगम दिलमाहें आण्यो, सुणतां सुख उर आण्यो ॥ ३ ॥ संघपति नरत नरेसर आवे, सोवन तणा प्रासाद करावे, मणिमय मूरती ठावे॥ नाजिराया मरुदेवी माता, ब्राह्मी सुंदरी बेन विख्याता, मूर्त्ति नवाणु भ्राता ॥ गोमुखने चक्केसरी देवी, शत्रुंजय सार करे नित्यमेवी, तपगछ उपर देवी ॥ श्रीविजयसेन सूरीश्वर राया, श्रीविजयदेव सूरी प्रणमी पाया, रुषनदास गुणगाया ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्रीशंखेश्वर जिन स्तुति ॥

॥ शंखेश्वर पासजी पूजियें ॥ नर नवनो लाहो लीजियें ॥ मन वंछित पूरण सुरतरू ॥ जय वामासुत अलवेसरु ॥ १ ॥ दोय राता जिनवर अतिनला ॥ दोय धोला जिनवर गुणनिला ॥ दोय लीला दोय सामल कह्या ॥ शोले जिन कंचन वर्ण लह्या ॥ २ ॥ आगम ते जिनवर नांखियो ॥ गणधरें ते हियडे राखियो॥तेहनो रस जेणेंचाखियो॥ते हुर्ड शिव सुख साखियो ॥ ३ ॥ धरणीधर राय पद्मावती ॥

प्रभु पार्श्व तणा गुण गावती ॥ सहु संघना संकट चूरती ॥ नयविमलना वंछित पूरती ॥ ४ ॥ इति०॥

॥ सिद्धाचलजीनी स्तुति ॥

पुंडर गिरि महिमां आगममां प्रसिद्ध ॥
विमलाचल भेटी लहिये अविचल ऋद्धि ॥
पंचमी गती पोहोता मुनिवर कोडा कोड ॥
इण तीर्थे आवी कर्म विपातिक छोड ॥ १ ॥

(आ स्तुति चार वार पण कहेवाय छे)

॥ अथ नवपद थुईलि० ॥

॥ नित प्रति हुं प्रणमुं सिद्धचक्र सुभ भाव। हिवकारज सिद्धिनो लाधो एह उपाय ॥ तुझ नाम पसायें अरति व्याधि पुलाय । इग तुझ अनुग्रहथी सुख संपति मुझ थाय ॥ १ ॥ श्री अरिहंत नमिये सिद्ध सूरी उवझाय । मुनिवर त्रिण करणें दंसण नांण सुहाय । डुगविधि चारित्तें बुधविध तप मन भाय । ये नवपद ध्यातां निरुपम शिव सुख थाय ॥ २ ॥ विद्या प्रवादै जाणो ए अधिकार ॥ श्रीगुरु उपदेशें सिद्धचक्र उद्धार । प्रवचन अनुसारें भांख्यो एह विचार; भविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणभंडार ॥ ३ ॥ जिनधरम अनुरागी चक्के सरि सुखकार । सेवकनें आपै सुख संपति परिवार । हिव निद्धि उदयकरि चारित्र नंदी मन भाय । जिनचंद सूरी सर खरतर पति सुपसाय ॥ इति ॥ नवपदस्तुतिः ॥

॥ अथ पार्श्व जिनस्तुतिः ॥

डॅडॅकि धपमप धुधुमि धोंधों ध्रसकि धरधप धो रवं। दोंदोंकि दोंदों दागिडदि दागिमदिकि डमकिडणरण डेणचं। फफिफ्रेंकि फ्रेंफ्रें फ्रणणरणरण निजकिं निज जन रंजनं। सुरशैलशिखरे नवति सुखदं पार्श्व जिनपति मज्जनं ॥ १ ॥ कटरेंगि थोंगिनि किटति गिगमदां धुधुकि धुटनटपाटवं। गुणगणण गुणगण रणकि णेंणें गुणणगुण गण गौरवं। फफिफ्रेंकि फ्रेंफ्रें फ्रणण रणरण निजकि निज जन सज्जना। कलयंति कमला कलितकलमल मुकलमीस महेजिनाः ॥ २ ॥ ठूंकि ठूंकि ठूंठूंठ ठिठठिक ठठिपट्टा ताड्यते। तललोंकि लोंलों त्रेंपित्रेंपिनि त्रेंपित्रेंपिनि वाद्यति। ऊँऊँ किऊँऊँ थुंगि थुं गिनि थोंगि धों गिनि कलरवे। जिन मतमनंतं महिमतनुतानमतिसुरनर मुछवे ॥३॥ पुंदांकि पुपुदां पुपुमदि पुंदां पुपुडदि दोंदों अंबरे, चाचपट चच पटरणकि णें णें मणण मेंमें मंचरे। तिहांसरगमपधुनि निधपमगरस सस ससस सुरसेवता। जिननाटयरंगें कुशल मनिशं दिसतु शासन देवता ॥ ४ ॥ इति ॥

वलि वलिहुं ध्यावुं गाउं जिणवरवीर। जिण पर वपजूसण दाख्याधरमनी सीर। आसाढचोमासे हुं तीदिनपंचास। पडिक्कमणोसंवछरी करियेंत्रिणउप वास ॥ १ ॥ चोवीसे जिनवर पूजा सतरप्रकार।

करियें नलनावें नरिये पुण्यनंडार । वलिचैत्यप्रवाकें फिरतां लानअनंत । इह परवपजूसण सहुमें महिमावंत ॥ २ ॥ पुस्तकपूजावी नव वाचनायें वचाय । श्रीकल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय । प्रतिदिन परनावन धूपअगर उखेवो । इम नवियण प्राणी परवपजूसणसेवो ॥३॥ वलिसामी वच्छल करिये वारंवार । केइ नावनानावे केइ तपसी सीलधार । अडदीहपजूसण इमसेवत आणंद । सुयदेवी सानिध कहे जिनलान सुरिंद ॥ ४ ॥ ॥ इति श्रीपजूंपणा पर्व्व स्तुतिः ॥

अथ तीर्थ माला चैत्यवंदन.

सद्भक्त्यादेवलोके रविशशिनुवने व्यंतराणां निकाये, नक्त्राणांनिवासे ग्रहगणपटले तार काणांविमाने, पाताले पन्नगेंद्रे स्फुटमणिकिरणेध्वस्तसांद्राधकारे, श्रीम त्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढये मेरुशृंगे रुचकगिरेवरे कुंरुले हस्तिदंते, वक्षारे स्फूटनंदी श्वर कनक गिरे नैपधे नीलवंते, चित्रे शैले विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ, श्रीम त्तीर्थंकराणा० ॥ २ ॥ श्रीशैले व्यंध्यशृंगे विमलगिरिवरे अर्बुदे पावके वा, संमेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले, सह्याद्रौ चोंजयंते विपुलगिरिवरे गूर्जरे रोहणाद्रौ, श्रीम त्तीर्थंकराणां० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितटमु

कुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च घाटें विटपि घन तटे देवकूटे विराटे, कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकोटे च नोटे, श्रीम त्तीर्थंकराणां० ॥४॥ श्रीमाले मालवे वा मलयनि निखिले मेखले पिछले वा, नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले मेहले वा, माहाले कौशले वा विगलित सलिले जंगले वा तमाले, श्रीम त्तीर्थंकराणां० ॥ ५ ॥ अंगे वंगे कलिंगे मगधजन-पदे सप्रयागेतिलंगे, गौडे चौडे मुरंडे वरतरद्रविडे उड्डियाने च पुंड्रे, आड्रे मुद्रे पुलिंद्रे द्रविलकुवलये कन्यकुब्जे सुराष्ट्रे श्रीम त्तीर्थंकराणां० ॥ ६ ॥ चंपायां चंद्रमुख्यां गजपुरमथुरापत्तने चोज्जयिन्यां, कौशाव्यां कोशलायां कनकपुरवरे देवगिर्यांचकाश्यां, नाशक्यें राजगेहे दशपुरनगरे नद्दले तामलिप्त्यां, श्रीम त्तीर्थं-कराणां० ॥ ७ ॥ स्वर्गमर्त्यंतरिक्षे गिरिशिखरहृदि स्वर्नदीनीरतीरे शैलाग्रे नागलोके जलनिधि पुलिने नूरुहाणां निकुंजे, ग्रामेरण्ये वने वा स्थल जल विषमे डुर्गमध्ये त्रिसंध्यं, श्रीम त्तीर्थंकराणां० ॥ ८ ॥ इत्थं श्रीजैनचैत्य स्तव मिद मऽनिशं नक्तिनाजा स्त्रिसंध्यं, प्रोय त्कल्याणहेतुः कलिमलहरणं ये पठंती ह नित्यं, तेषां श्रीतीर्थयात्राफल मऽतिविपुलं जायते मानवानां, कार्यं सिद्धं तथो चैः प्रनवति सततं चित्त मानंदका-रि ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपदउंली करण विधिलिख्यते ॥

(प्रथम) आसोज शुदि ७ (अथवा) चैत्रसुदि ७ सें उंली सरू करैं। (कदास) तिथि घटी हुवे तो (६) से वढी होय तो आठिम सें सरू करै। (पिण) आंबिल (९) पूनिमताई करै। (तिहां) प्रथम भूमि शुद्ध करके। मांमणादिक सें चित्रित करै। पीछे बाजोट ऊपरि सिद्धचक्र थापे. त्रिकाल पुजा करें। (सोलिखते हें) प्रभात समय राई पडिकमणो करिके। पीछे वस्त्र पडिलेहे। (जहां) सिद्ध चक्र स्थापना हे (तहां) आयके पांच शक्र स्तवे देव वांदे। पीछे नव चैत्ये। (अथवा) नव प्रतिमा आगे। नव चैत्यवंदण करै। वास क्षेप पूजा करै। पीछे केसर चंदनसें पूजा करै। पीछे मध्याह्न समय पांच शक्र स्तवे देव वांदे। पीछे गुरु पास आयके। राई आलोवे। अब्भुट्ठिउंमि खमायके आंबिलनो पच्चरकांण करै। प्रथम अरिहंत पदके वरण सपेद है। (इससें) आंबिल में चावल (और) गरम पाणी यह दोइ द्रव्य लेसुं। असो आंबिल पचखके। पीछे अरिहंत पदके वारे गुण हे सो चिंतवि के वारे नमस्कार करै। सो लिखते हें (प्रथम सब ठिकाणें) इछामि खमासमणो। वं० इत्यादि कहि के नमस्कार करै॥

१ अशोकवृक्षप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरिहंतायनमः
२ पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ।
३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ।
४ चामरयुग प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ।
५ स्वर्णसिंहासण प्रातिहार्यसंयुताय श्री० अरि० ।
६ भामंमल प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ।
७ डुंडुभिप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ।
८ छत्रत्रय प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ।
९ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअरि० ।
१० पूजातिशयसंयुताय श्रीअरि ० ।
११ वचनातिशय संयुताय श्रीअरि ० ।
१२ अपायापगमातिशयसंयुताय श्रीअरि० ।

॥ इति द्वादश अरिहंतगुणाः ॥

॥ इत्यादि नमस्कार करिके । अन्नत्थू ससियेणं । (कहिके) (१२) वारे लोगस्सनो काउसग्ग करे। एकलोगस्स प्रगट कहे। पीछेस्वस्थानक जाके। चैत्यवंदन करे पच्चरकाण पारिकेआंबिल करे। पहले जल पीवे (जव) चैत्यवंदन करिके पीवे।पीछेफेर चैत्यवंदन करिके तिविहार पच्चरकाण करे गुणणो(२०००)ॐ ह्रीं० णमो अरिहंताणं । इस पदको करे । श्रीपालका चरित्र नवपद महिमा सुणे । पूण पहिर दिन रहणेसें (तीसरीवेर) पांच शक्रस्तवे देव वांदे।सामायिकलेके दिन छते पडिक मणो करे। आरतीके समय दीप धूप कुसम पूजा करे।

(अथवा) पहिले आरती प्रमुख करिके। पीछे पडिक्क मणो करै। (सोणेंके समय) इरिया वही पडिकमके चैत्यवंदन करिके।राई संथारा गाथागुणके सोवै।निद्रा न आवे जहांतक नवपदका गुण स्मरण करै ॥ इति प्रथम दिवसविधिः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय दिवस विधिलि० ॥

॥ अब इसीतरे दूसरे दिन प्रभाति करणी सब करिके सिद्धपदको लालवर्ण है।(इसीसें) गहुंकी रोटीको अंविल करै ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं (इसपदको) गुणणो दो हजार करै। सिद्धपदके आठगुण। सो (८) गुणां को गुरु नमस्कार करावे (सो लिखते हैं)।

१ अनन्तज्ञानसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः०।
२ अनन्तदर्शन संयुताय श्रीसि०।
३ अव्याबाध गुणसंयुताय श्रीसि०।
४ अनन्तसम्यक्त चारित्रगुण संयुताय श्रीसि०।
५ अक्षयस्थितिगुण संयुताय श्रीसि०।
६ अरूपी निरंजनगुण संयुताय श्रीसि०।
७ अगुरुलघु गुणसंयुताय श्रीसि०।
८ अनन्तवीर्यगुण संयुत्ताय श्रीसि०।

॥ इतिसिद्धोंके अष्टौ गुणाः ॥

॥ यह आठे नमस्कार करिके। अन्नत्थूससि० आठलोगस्सनो काउसग्ग करै। एकलोगस्स कहिके

पारे पीछे पूर्वोक्त करणी अनुक्रमसें करै ॥ इति द्वितीय दिवसविधिः ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय दिवसविधि लि० ॥

॥ पूर्वोक्त विधिसें प्रजातकर्त्तव्य करै आचार्यपद पीले वर्ण है (इसीसें) चिणाकी दालका आंबिल करै । (ॐह्रीं ह्रीं णमो आयरियाणं) इस पदको गु. णणो दोहजार करै । आचार्य पदके (३६) गुण याद करके छत्तीस नमस्कार करै ।

॥ अथ आचार्य पदके (३६) गुण लि० ॥

१ ॥ प्रतिरूप गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
२ सूर्यवत्तेजस्वी गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
३ युगप्रधानागम संयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
४ मधुरवाक्य गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
५ गांजीर्य गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
६ धैर्यगुण संयुताय श्रीआ० ।
७ उपदेश गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
८ अपरिश्रावी गुणसंयुताय श्रीआचा० ।
९ सौम्यप्रकृति गुणसंयुताय श्रीआ० ।
१० शीलगुणसंयुताय श्री० ।
११ अविग्रह गुणसंयुताय श्री० ।
१२ अविकथक गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
१३ अचपल गुणसंयुताय श्रीआ० ।
[illegible] संयुताय श्रीआ० ।

१५ क्षमागुण संयुताय श्रीआ० ।
१६ ऋजुगुण संयुताय श्रीआ० ।
१७ मृडुगुण संयुताय श्रीआ० ।
१८ सर्व संगमुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ।
१ए द्वादश विधतपगुण संयुताय श्रीआ० ।
२० सप्तदशविध संयमगुण संयुताय श्रीआ० ।
२१ सत्यव्रतगुण संयुताय श्रीआ० ।
२२ सौचगुण संयुताय श्रीआ० ।
२३ आकिंचन गुण संयुताय श्रीआ० ;
२४ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ० ।
२५ अनित्य जावना जावकाय श्रीआ० ।
२६ असरण जावना जावकाय श्रीआ० ।
२७ संसार स्वरूप जावना जावकाय श्रीआ० ।
२८ एकत्व स्वरूप जावना जावकाय श्रीआ० ।
२ए अन्यत्व जावना जावकाय श्रीआ० ।
३० अशुचि जावना जावकाय श्रीआ० ।
३१ आश्रव जावना जावकाय श्रीआ० ।
३२ संवर जावना जावकाय श्रीआ० ।
३३ निर्जरा जावना जावकाय श्रीआ० ।
३४ लाकस्वरूप जावना जावकाय श्रीआ० ।
३५ वोधिडुर्लज जावना जावकाय श्रीआ० ।
३६ धर्म्म डुर्लज जावना जावकाय श्रीआ० । इति.

॥ इति षट्त्रिंशदाचार्य गुणाः ॥

यह ठत्तीस नमस्कार करिके । अन्नठजससिएणं (इत्यादि कहिके) ठत्तीस (३६) लोगस्सनो का उसग्ग करै । पारिके एक लोगस्स ऊंचे स्वरसें कहि यथोक्त करणी । अनुक्रमसें करै । इति तृतीय दिवस विधि ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि लि० ॥

॥ (ॐ ह्रींणमो उवझायाणं) इस पदको (२) हजार गुणणो करै । हरया मूंगकी दाल प्रमुखनो आंबिल करै । उपाध्याय पदके (२५) गुण याद करि के । नमस्कार करै ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ उपाध्याय पदके २५ गुणलि० ॥

१आचारांगसूत्रपठनगुणयुक्तायश्रीउपाध्यायेभ्योनम

२ सुयगमांगसूत्र पठन गुणयुक्ताय श्रीउपाध्या०

३ श्रीठाणांगसूत्र पठनगुणयुक्ताय श्रीउ० ।

४ श्रीसमवायांगसूत्र पठगुण युक्ताय० ।

५ श्रीजगवतीसूत्र पठनगुण युक्ताय० ।

६ श्रीज्ञातासूत्रपठनगुणयुक्ताय० ।

७ श्रीउपासकदशासूत्र पठनगुण युक्ताय० ।

८ श्रीअन्तगडदशासूत्र पठनगुण युक्ताय० ।

ए श्रीअणुत्तरोववाईसूत्र पठनगुण युक्ताय० ।

१० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्र पठन गु० ।

११ श्रीविपाकसत्र पठनगुण य० ।

१२ उत्पादपूर्व पठनगुण यु० ।
१३ आग्रायणी पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
१४ वीर्यप्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
१५ अस्तिप्रवाद पूर्व पठनगुणयुक्ताय० ।
१६ ज्ञानप्रवाद पूर्व पठनगुणयुक्ता० ।
१७ सत्यप्रवाद पूर्व पठनगुण यु० ।
१८ आत्मप्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
१९ कर्म्म प्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
२० प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
२१ विद्याप्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
२२ अविंध्यप्रवाद पूर्व पठनगुण यु० ।
२३ प्राणायामप्रवाद पूर्व पठनगुण यु० ।
२४ क्रियाविसाल पूर्व पठनगुण यु० ।
२५ लोकविंदुसार पूर्व पठनगुण यु० ।

॥ इति पंचविंशति उपाध्याय गुणाः ॥

इस रीतसें पचवीस नमस्कार करें (खमाहोके) अन्नत्थूस० इत्यादि कहिके पचवीस लोगस्सका का उस्सग्ग करै। पारके एक लोगस्स कहके। (पीछे) पूर्वोक्त करणी करैं ॥ इति चतुर्थ दिवस विधिः ॥

अथ पंचमदिवस विधि.

॥ (ॐ ह्रीँ णमो लो ए सव्वसाहूणं) इस पदका (२) हजार गुणनो करै। साधुपद काले वर्णहै इस सें उडदका आंविल करै। सर्व्व साधुपदके सत्ताईस गुण चिंतवके नमस्कार करै ॥ ॥ ॥

॥ अथ साधुपदके (२७) गुणलि० ॥

१प्राणातिपात विरमणव्रत गुण युक्ताय श्रीसाधवेनमः
२ मृषावाद विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।
३ अदत्तादान विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।
४ मैथुन विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।
५ परिग्रह विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।
६ रात्रिभोजन विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।
७ पृथ्वीकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
८ अप्पकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
९ तेउकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
१० वाउकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
११ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
१२ त्रसकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
१३ एकेंद्री जीवरक्षकाय श्रीसा० ।
१४ बेइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।
१५ तेइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।
१६ चौरिंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।
१७ पंचेंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।
१८ लोभनिग्रहकारकाय श्रीसा० ।
१९ क्षमागुण युक्ताय श्रीसा० ।
२० शुभभावना भावकाय श्रीसा० ।
२१ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसा० ।
२२ संयम योगयुक्ताय श्रीसा० ।

२३ मनोगुप्ति युक्ताय श्रीसा०।
२४ वचनगुप्ति युक्ताय श्रीसा० ।
२५ कायगुप्ति युक्ताय श्रीसा० ।
२६ सीतादि द्वाविंशति परीसहसहण तत्पराय० ।
२७ मरणांत उपसर्ग सहण तत्पराय श्रीसा० ।

॥ इति सप्तविंशति साधु गुणाः ॥ ५ ॥

इस रीतसें सतावीस नमस्कार करै । (खडा हो के अन्नत्थ स० (इत्यादि कहिके) सातवीस लोगस्सकाकाउस्सग्ग करै । पारके एक लोगस्स कहके (पीछे) पूर्वोक्तकरणी करै । (यह पंच परमेष्टि पदके सब गुण मिलाणें सें (१०८) होय (इसीसें) मालाके दाणे (१०८) होते हैं । इति पंचम दिवस विधिः ॥

॥ अथ षष्ट दिवस विधिलि० ॥

॥ (ॐ ह्रीँ नमो दंसणस्स) इस पदको (२) हजार गुणनो करै । दर्शनपद सपेदवर्णहै (इससें) तंदुलका आंबिल करै । सम्यक्तके सडसठिगुण चिंतवके नमस्कार करै ॥

॥ अथ सम्यक्तके सडसठि भेदलि० ॥

१ परमार्थ संस्तवरूप श्री सद्दर्शनाय नमः ।
२ परमार्थ ज्ञातृसेवनरूप सद्दर्शनाय नमः ।
३ व्यापन्नदर्शन वर्जनरूप सद्दर्शनाय नमः ।
४ कुदर्शन वर्जनरूप सद्दर्शनाय नमः ।

५ शुश्रुषारूप सद्दर्शनाय नमः ।
६ धर्मरागरूप सद्दर्शनाय नमः ।
७ वैयावृत्तरूप सद्दर्शनाय नमः ।
८ अर्हद्विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
९ सिद्धविनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१० चैत्यविनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
११ श्रुतविनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१२ धर्मविनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१३ साधुवर्ग विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१४ आचार्य विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१५ उपाध्याय विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१६ प्रवचन विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१७ दर्शन विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१८ संसारे जिनमतसार मिति चिंतनरूप सद्द० ।
१९ संसारे जिनमतिसार मिति चिंतन० ।
२० संसारे जिनमतिस्थित साध्वादिसार मिति० ।
२१ शंका दूषण रहिताय सद्दर्शनाय नमः ।
२२ कांक्षा दूषण रहिताय सद्दर्शनाय नमः ।
२३ विचिकित्सारूप दूषण रहिताय० ।
२४ कुदृष्टि प्रसंसा दूषणरहिताय० ।
२५ तत्परिचय दूषण रहिताय० ।
२६ प्रवचन प्रभावकरूप सद्द ।
२७ धर्मकथा प्रभावकरूप स० ।

२८ वादी प्रजावक० स० ।
२९ नैमित्तक प्रजावक० स० ।
३० तपस्वी प्रजावक० सद्द० ।
३१ प्रज्ञप्त्यादि विद्या जृत्प्रजावक० स० ।
३२ चूर्णां जनादि सिद्धप्रजावक० स० ।
३३ कविप्रजावकरूप सद्दर्शनाय नमः ।
३४ जिनशासने कौसल्यता जूषण० स० ।
३५ प्रजावना जूषणरूप स० ।
३६ तीर्थसेवा जूषण० स० ।
३७ स्थैर्यता जूषणरूप सद्दर्शनाय नमः ।
३८ जिनशासने जक्ति जूषण० ।
३९ उपशम गुणरूप सद्दर्शनाय नमः ।
४० संवेग गुणरूप श्रीस०
४१ निर्वेद गुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
४२ अनुकंपा गुणरूप श्रीस० ।
४३ आस्तिक्यता गुणरूप श्रीस० ।
४४ परतीर्थकादि वंदन वर्जन रूप श्रीस० ।
४५ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जन० श्रीस०
४६ परतीर्थकादि आलाप वर्जन० ।
४७ परतीर्थकादि संलाप वर्जन० ।
४८ परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन० श्रीस० ।
४९ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषण वर्जन० श्रीस०।
५० राजाजियोगाकार युक्ताय श्रीस० ।

५१ गणाभियोगाकार युक्ताय श्रीस० ।
५२ बलाभियोगाकार युक्ताय श्रीस० ।
५३ सुराभियोगाकार युक्ताय श्रीस० ।
५४ कांतारवृत्याकार युक्ताय श्री० ।
५५ गुरु निग्रहाकार युक्ताय श्रीस० ।
५६ सम्यक्त चारित्रधर्मस्य मूलमिति चिंतन० श्री० ।
५७ चारित्र धर्मपुरस्य द्वारमितिचिंतन० श्रीस० ।
५८ चारित्र धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतन० श्रीस० ।
५९ चारित्र धर्मस्याधारमिति चिंतन श्रीस० ।
६० चारित्र धर्मस्य भाजनमिति चिंतन० श्री० ।
६१ चारित्र धर्मस्य निधिसन्निजमिति चिं० श्रीस०
६२ अस्ति जीवेति श्रद्धानस्थान यु० श्रीस० ।
६३ सचजीव नित्येति श्रद्धान स्थान यु० श्रीस० ।
६४ सचजीव कर्म्माणि करोतीति श्रद्धानस्थान यु० ।
६५ सचजीव कृतकर्म्माणि वेदयतीति श्रद्धान स्था० ।
६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धान स्थान यु० ।
६७ अस्ति पुनर्मोक्षो पायेति श्रद्धानस्थान यु० श्री० ।

॥ इति सप्तषष्टि दर्शनस्य गुणाः ॥

॥ इस रीतिसें सरूसठि नमस्कार करे । (खमा-
सणा देके) अन्नत्थू ससि एणं० (इत्यादि कहिके) (६७)
लोगस्स (अथवा) ७ लोगस्स नो काउस्सग्ग करे ।
एक लोगस्स कहके । (पीछे) पूर्वोक्त करणी
करे ॥ इति षष्ट दिवस विधिः ॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि लि० ॥

॥ (ॐ ह्रीं नमो नाणस्स) इस पदको (२) ह गुणनो करै । ज्ञानपद उज्वल वर्ण । तंडुलका आंबिल करै । इक्कावन भेद ग्यानपदके चिंतवके नमस्कार करै ॥

॥ अथ ज्ञानपदके (५१) भेदलि० ॥

१ स्पर्शनेंद्रीय व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
२ रसनेंद्रीय व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
३ घ्राणेंद्रीय व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
४ श्रोत्रेंद्रीय व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
५ स्पर्शनेंद्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
६ रसनेंद्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
७ घ्राणेंद्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
८ चक्षुरिंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
९ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
१० मनऽर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
११ स्पर्शनेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
१२ रसनेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
१३ घ्राणेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
१४ चक्षुरिंद्री ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
१५ श्रोत्रेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
१६ मनें करी ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
१७ स्पर्शनेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नमः ।

१७ रसनेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
१९ घ्राणेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
२० चक्षुरिंद्री अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
२१ श्रोत्रेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
२२ मनेकरी अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
२३ स्पर्शनेंद्री धारणा मतिज्ञानाय नमः ।
२४ रसनेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
२५ घ्राणेंद्री धारणा मतिज्ञानाय नमः ।
२६ चक्षुरिंद्री धारणा मति० ।
२७ श्रोत्रेंद्रीधारणा मति० ।
२८ मनो धारणामति ज्ञानाय नमः ।
२९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ।
३० अनक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ।
३१ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ।
३२ असंज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ।
३३ सम्यक् श्रुतज्ञानाय नमः ।
३४ मिथ्या श्रुतज्ञानाय नमः ।
३५ सादि श्रुतज्ञानाय नमः ।
३६ अनादि श्रुतज्ञानाय नमः ।
३७ सपर्यवसित श्रुतज्ञानाय नमः ।
३८ अपर्यवसित श्रुतज्ञानाय नमः ।
३९ गमिक श्रुतज्ञानाय नमः ।
४० अगमिक श्रुतज्ञानाय नमः ।

४१ अंगप्रविष्ट श्रुत० ।
४२ अनंग प्रविष्ट श्रुत० ।
४३ अणुगामि अवधिज्ञानाय नमः ।
४४ अननुगामि अवधिज्ञानाय नमः ।
४५ वर्द्धमान अवधि० ।
४६ हियमान अवधि० ।
४७ प्रतिपाती अवधि० ।
४८ अप्रतिपाती अवधि० ।
४९ रुजुमति मनः पर्यवज्ञाय नमः ।
५० विपुलमति मनः पर्यवज्ञानाय नमः ।
५१ लोकालोक प्रकाशक श्री केवलज्ञानाय नमः ।

॥ इति एकपंचासत ज्ञानभेदाः ॥

इस रीतसें (५१) नमस्कार करै । (खमा होके) अन्नत्थ उससिएण० (इत्यादि कहै) (५१) लोगस्सके काउ सग्ग करिके । प्रगट लोगस्स कहै । पीछे सब पूर्वोक्त करणी करै । इतिसप्तम दिवस विधिः ॥७॥

॥ अथ अष्टम दिवस विधि लि० ॥

॥ (ॐ ह्रीँ णमो चारित्तस्स) इस पदको (२) हजार गुंणनो करै । चारित्रपदका उज्वल वर्णहै । (इसीसें) तंडुलका आंबिल करै । सित्तर भेद चारित्रपदके । चिंतवके नमस्कार करै ॥

॥ अथ चारित्रपदके (७०) भेदलि० ॥

१ प्राणातिपात विरमणरूप चारित्राय नमः ।

२ मृषावाद विरमणरूप चारित्राय नमः ।
३ अदत्तादान विरमणरूप चारित्राय नमः ।
४ मैथुनविरमणरूप चारित्राय० ।
५ परिग्रह विरमणरूप चारित्रा० ।
६ क्षमा धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ।
७ आर्यव धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ।
८ मृदुता धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ।
९ मुक्ति धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ।
१० तपो धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ।
११ संयमधर्म्मरूप चारित्रेभ्यो नमः ।
१२ सत्यधर्म रूप चारि० ।
१३ सौच धर्म्मरूप चारि० ।
१४ अकिंचनधर्म्मरूप चारि० ।
१५ ब्रह्मचर्यधर्म्मरूप चारि० ।
१६ प्रथवी रक्षासंयम चारित्रेभ्यो नमः
१७ उदग रक्षासंयम चारि० ।
१८ तेऊ रक्षा संयम चारि० ।
१९ वाऊ रक्षासंयम चारि० ।
२० वनस्पति रक्षासंयम चारि० ।
२१ वेइं द्री रक्षासंयम चारि० ।
२२ तेइं द्री रक्षासंयम चारि० ।
२३ चौरिं द्रीरक्षा संयम चारि० ।
२४ पंचेन्द्री रक्षासंयम चारि० ।

२५ अजीव रक्षासंयम चारि० ।
२६ प्रेक्षासंयम चारि० ।
२७ उत्पेक्षासंयम चारि० ।
२८ अतिरिक्तवस्त्रजक्तादिपरठणत्यागरूपसंय चारि०
२ए प्रमार्जन रूप संम चारि० ।
३० मनसंयम चारि० ।
३१ वाक्संयम चारि० ।
३२ कायासंयम चारि० ।
३३ आचार्य वैयावृत्यरूप संयम चारि० ।
३४ उपाध्याय वैयावृत्यरूप संयम चारि० ।
३५ तपस्वी वैयावृत्य रूप चारि० ।
३६ लघुशिष्यादि वैयावृत्य रूपचारि० ।
३७ गिलाणसाधु वैयावृत्यरूप चा० ।
३८ साधु वैयावृत्यरूप चारि० ।
३ए श्रमणोपासक वैयावृत्यरूप चा० ।
४० संघ वैयावृत्यरूप चारि० ।
४१ कुल वैयावृत्परूप चारित्रे० ।
४२ गण वैयावृत्य रूप चारि० ।
४३ पशुपंमगादि रहित वशति वसण ब्रह्मगुप्तचारि०।
४४ स्त्रीहास्यादि विकथावर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ।
४५ स्त्रीआसन वर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ।
४६ स्त्रीअंगोपांग निरीक्षणवर्जन ब्रह्म० ।
४७ कुड्यंतर सहित स्त्रीहाव जावश्रवण वर्जन ब्रह्म० ।

४८ पूर्वस्त्रीसंजोग चिंतनवर्जन ब्रह्म० ।
४९ अति सरसआहार वर्जन ब्रह्म० ।
५० अति आहार करण वर्जन ब्रह्म० ।
५१ अंग विभूषावर्जन ब्रह्म० ।
५२ अणसण तपोरूप चा० ।
५३ ऊणोदरी तपो रूप चा० ।
५४ वृत्तिसंक्षेप तपोरूप चा० ।
५५ रसत्याग तपो रूप चा० ।
५६ कायकिलेस तपोरूप चा० ।
५७ संलेखणा तपोरूप चा० ।
५८ प्रायश्चित्ततपो रूपचा० ।
५९ विनय तपोरूप चा० ।
६० वेयावच्चतपो रूप चा० ।
६१ स्वाध्यायतपो रूप चा० ।
६२ ध्यानतपो रूप चा० ।
६३ उपसर्ग तपो रूप चा० ।
६४ अनंत ज्ञान संयुक्त चा० ।
६५ अनंत दर्शन संयुक्त चा० ।
६६ अनंत चारित्र संयुक्त चा० ।
६७ क्रोधनिग्रह करण चा० ।
६८ माननिग्रह करण चा० ।
६९ मायानिग्रह करण चा० ।
७० लोभनिग्रह करण चारित्रेभ्यो नमः ।

॥ इति सित्तर चारित्र भेदाः ॥

॥ इस रीतसें (७०) नमस्कार करै। (खडा हो के) अन्नथू ससि एणं० (इत्यादि कहै) (७०) लोगस्सका काउसग्ग करिके । एक लोगस्स कहै । (पीछे) पूर्वोक्त करणी सब करै। इति अष्टम दिवस विधिः ॥

॥ अथ नवम दिवस विधिलि० ॥

॥ (ॐ ह्रीं णमो तवस्स) इस पदको (२) हजार गुणनो करै। तपपदके उज्वल वर्ण (इसीसें) तंडुलका आंबिल करै। पच्चास भेद तपपदके चिंतवके नमस्कार करै ॥

॥ अथ तपपदके (५०) भेदलि० ॥

१ यावत कथिक तपसे नमः ।
२ इत्वर तपभेद तपसे नमः ।
३ वाह्यऊणोदरी तपभेद तपसे नमः ।
४ अभ्यंतर ऊणोदरी तपभेद तपसे नमः ।
५ द्रव्यतप वृत्तिसंक्षेप तपभेद तपसे नमः ।
६ क्षेत्रतप वृत्तिसंक्षेप तपभेद तपसे नमः ।
७ कालतप वृत्तिसंक्षेप तपभेद तपभेद नमः ।
८ भावतप वृत्तिसंक्षेप तपभेद तपसे नमः ।
९ कायक्लेस तपभेद तपसे नमः ।
१० रसत्याग तपभेद तपसे नमः ।
११ इंद्री कषाय जोग विषयक संलीणता तपसे नमः॥

१२ स्त्रीपशुपंडकादि वर्जितस्थान अवस्थित संली० ।
१३ आलोयण प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
१४ प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
१५ मिश्र प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
१६ विवेक प्राश्चित तपसे नमः ।
१७ उपसर्ग प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
१८ तप प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
१९ छेद प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
२० मूल प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
२१ अणवस्थित प्रायश्चित्त उपसे नमः ।
२२ पारंचिय प्रायश्चित्त तपसे नमः ।
२३ ज्ञान विनयरूप तपसे नमः ।
२४ दर्शन विनयरूप तपसे नमः ।
२५ चारित्र विनयरूप तपसे नमः ।
२६ गुर्वादिक मनविनयरूप तपसे नमः ।
२७ वचनविनयरूप तपसे नमः ।
२८ काय विनयरूप तपसे नमः ।
२९ उपचारिक विनयरूप तपसे नमः ।
३० आचार्यवेयावच्च तपसे नमः ।
३१ उपाध्याय वेयावच्च तपसे नमः ।
३२ साधु वेयावच्च तपसे नमः ।
३३ तपस्वी वियावच्च तपसे नमः ।
३४ लघुसिष्यादि वेयावच्च तपसे नमः ।

३५ ग्लान साधु वेयावच्च तपसे नमः ।
३६ श्रमणोपासक वेमावच्च तपसे नमः ।
३७ संघ वेयावच्च तपसे नमः ।
३८ कुल वेयावच्च तपसे नमः ।
३९ गण वेयावच्च तपसे नमः ।
४० वायणा तपसे नमः ।
४१ प्रछना तपसे नमः ।
४२ परावर्त्तना तपसे नमः ।
४३ अनुप्रेक्षा तपसे नमः ।
४४ धर्म्म कथा तपसे नमः ।
४५ आर्त्तध्यान निवृत्त तपसे नमः ।
४६ रोद्रध्यान निवृत्त तपसे नमः ।
४७ धर्म्मध्यान चिंतन तपसे नमः ।
४८ शुक्लध्यान चिंतन तपसे नमः ।
४९ वाह्य उपसर्ग तपसे नमः ।
५० अभ्यंतर उपसर्ग तपसे नमः ।

॥ इति पंचासत् तपन्नेदाः ॥

॥ इस रीतसें (५०) नमस्कार करे । (खमा होके) अन्नड उससि एणं० (इत्यादि कहै) (५०) लोगस्सके काउस्सग्ग करिके । एक लोगस्स कहै । (पीछे) पूर्वोक्त करणी करे। इति नवम दिवस विधि ॥

॥ अथ तपस्या ग्रहण करणें कों गुरुके पास जाणेंकी विधि लि० ॥

॥ प्रथम शुन्न दिन शुन्न घडी देखके । अञ्जा वस्त्र आन्नूषण पहरे । लिलाममे तिलक करे । दोव । सरखुं । मस्तकमें धारण करे। हाथके मोली वांधके। अक्षत । सुपारी । श्रीफल । नैवेद्य । यथाशक्ति रोक नाणो लेके । नवकार गुणतो थको। गुरूके पास जावे । द्वादशावर्त्त वांदणा करके। ज्ञान पूजा करे पीठे वहुत प्रमोदवंत होके। गुरुके मुखसे तप ग्रहण करे.

॥ अथ संक्षेप ऊजमणाविधि लि० ॥

॥ पंच वर्णके धान्यसें सिद्धचक्रका मंडल करे। सिद्धचक्रजी के चौतरफ तीन गढ चूनीके आकार वनावें पहिलै गढमांहें । अष्टदल कमलके आकार नव पद स्थापन करै। पद पद के वर्ण गुण प्रमाणे। रक्तादिक चढावे । (ओर) पंचवर्णके धान्य। नवनालेर प्रमुखके गोटा रंगके। जिसपदके जैसे वर्णके होइ (तैसे ही) रंगका गोला चढावै । पंच वर्णी (ए) धजा चढावे । दूसरे वलयमें । सोले श्री फल (अथवा) पूंगी फल चढावे । तीसरें वलयमें (४७)छुहारा खारक चढावे । नव निधानके ठिकाणें(ए) नव वडा फल चढावे दश दिग्पाल । नवग्रहकों । पक्वान्न प्रमुख चढावे। इत्यादिक विधिसंयुक्त । सिद्ध चक्र स्थापना । घर देहरासर आगे करे। और जि

नमंदिर मांहे । वाह्य मंरूपै ५ ॥ ७ हाथ प्रमणें मं
डल रचना करै । विस्तारसें सव विधि गुरूके वचन
सें करके । नव पदजी की पूजा पढायके कलस
ढालै । धवल मंगल गीतगान गावे । वाजिंत्र वजा
वे । (इसी तरे) महामोहछव । उदारचित्तसें करे ।
मंगल दीप आरती प्रमुख करे । डुसरे दिन विस
र्जन करे । इति संखेप सिद्धचक्र मंरूल विधिः ।

उद्यापनमें ज्ञान नक्तिके कारण । ए पूठा ।
ए । वींटांगणा । ए पुस्तक ए लेखण । ए ठवणी ।
नव तोरण । ए रुमाल । ए दोरा । ए कटासणा ।
ए थापना ए चंद्रूआ । ए पूठिआ । ए आर
ती ए । कलश ए जापमाला । ए मंदर । ए प्रतिमा ।
ए तिलक । ए मुगट । (इत्यादिक) अनेक नव नव
चीज वणावे । शक्ति न होय तो यथाशक्ति रोकनाणो
चढावै । देव पदको देवद्रव्यमैं देवे । गुरु पदको गुरु
कों देवे । ग्यानपद को ग्यानखाते लगावे । इत्या
दिकयथाजोग्य शुन्न क्षेत्रें खरच करे । इति सिद्धच
क्र संक्षेप उद्यापनविधिः ॥

॥ अथ वीस स्थानक तपकरण विधि लि० ॥

॥ तिहां प्रथम सुन्न महुर्त्तके दिन । नंदी स्था-
पना पूर्वक । सुविहित गुरुके समीप । वीश स्थानक
तप । विधि पूर्वक उच्चरे । उली दो माससें लेके (या
वत्) ठम्मामें पूरी करे । (कदाचित्) ठम्मास मध्ये

पूरी न कर सके (तो) वा ओली गिणती में । न हीं । और नवी करणी पडे । एक ओलीके वीस पद हे (तिहां) कोई वीस दिनसें । वीसों पद जूदा २ गिणें । कोई वीसों दिन में एकज पद गिणें । दूसरे वीसों दिनमें दूसरो पद । (ऐसें) वीसों पदकी वीस ओली करे । तिहां पदाराधनके दिन प्रबल शक्तिवंत । अठम तप करिकें आराधै । वीस अठमें एक ओली होय । ऐसें वीसओली (४००) अठमें आराधै । और तिसमें हीनशक्ति छठ तप करके आराधैं । तिससें हीनशक्ति चौविहार उपवास करके आराधे । तिससें हीन शक्ति त्रिविहार उपवास करके आराधे । हीन शक्ति आंबिल (तथा) त्रिविहार एकासण करके आराधे । तिहां शक्तिवान प्राणी । सब तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करे । (हीन शक्ति) दिन पोसह करे । वीसों पद पोसह सेती आराधे (जो) पोसह शक्ति सर्व पदमें न हो (तो) आचार्य पदे १ उपाध्याय पदे २ थिवर पदे ३ साधू पदे ४ चारित्र पदे ५ गौतम पदे ६ तीर्थ पदे ७ यह सात थानक तो पोसहज करके आराधे । तथापि शक्ति नही (तो) तिस दिन देसावगासिक करे । सावद्य व्यापार त्यजे । सो पिण न होइ (तो) यथाशक्ति तप करी आराधे । अपणी हीनताजावे (तथा) मृतक जातक का सूतकमें उ

पत्रासादि तप गिणे न जावे । स्त्रीयां पिण ऋतु समय का तप न गिणें (तथा) तपके दिन पोसह सहित करे (तो) बहोत श्रेयकारी है। सो नहीं होसके (तो) तपके दिन उनय टंक पमिक्कमणा करे। तीन टंक देव वंदन करे। दो सहस्र (२०००) एक पदका जप करे। ब्रह्मचर्य पाले। नूमि शयन करे। तपके दिन अतिसावद्य आरंन व्यापार न करे। असत्य न वोले। सब दिन तप पदके गुण कीर्त्तनमें रहे। (तथा) तपके दिन पोसह करे। (तो) पारणें के दिन जिन नक्ति करके पारणो करे। करावे। जावना जावे। (तथा) तपके दिन पदके गुण नेद प्रमाण संख्याई काउसग्ग करे। (तावन्मात्र) तिणकेगुण स्मरण पूर्वक खमासमण देई वंदनाकरे। उस पदका महिमा गुण याद करके उदात्त स्वरे स्तवना करे। हर्षित रहे ॥

॥ अब बीस स्थानक गुणनो और काउसग्गका प्रमाण लिखते है ॥

॥ (णमो अरिहंताणं) (२०००) गुणनो। लोगस्स १२ काउसग्ग ॥ १ ॥ (णमो सिद्धाणं) (२०००) गुणनो। लोगस्स १५ काउसग्ग ॥ २ ॥ (णमो पवयणस्स) (२०००) दो हजार गुणनो। लोगस्स ७ काउसग्ग ॥ ३ ॥ (णमो आयरियाणं) (२०००) दो हजार गुणनो। लोगस्स ३६ काउसग्ग ॥ ४ ॥

(णमो थेराणं) (२०००) दो हजार गुणनो । लोगस्स १५५ काउसग्ग ॥ ५॥ (णमोउवज्झायाणं) दो हजार गुणनो । लोगस्स २५ काउसग्ग ॥ ६ ॥ (णमो लोए सव्वसाहूणं) (२०००) गुणनो । लोगस्स २७ काउसग्ग ॥ ७ ॥ (णमो नाणस्स) २००० गुणनो । लोगस्स ५ काउसग्ग ॥ ८ ॥ (णमो दंसणस्स) (२०००) गुणनो । लोगस्स ६७ काउसग्ग ॥ ए ॥ (नमो विनयसंपन्नाणं) (२०००) गुणनो । लोगस्स १० काउसग्ग ॥ (णमो चारित्रस्स) (२०००) गुणनो । लोगस्स ६ काउसग्ग ॥ ११ ॥ (णमो बंभवयधारीणं) (२०००) गुणनो । लोगस्स ए काउसग्ग ॥ १२ ॥ (णमो किरियाणं) (२०००) गुणनो । लोगस्स २५ काउसग्ग ॥ १३ ॥ (णमो तवस्सीणं) २००० गुणनो । लोगस्स १२ काउसग्ग ॥ १४ ॥ (णमो गोयमस्स) २००० गुणनो । लोगस्स २८ काउसग्ग ॥ १५ ॥ (णमो जिणाणं) २००० गुणनो । लोगस्स १० काउसग्ग॥१६॥ (णमो चरणस्स) दो हजार गुणनो । लोगस्स १२ काउसग्ग ॥ १७ ॥ (णमो नांणस्स २००० गणनो । लोगस्स ५ काउसग्ग ॥ १८ ॥ (णमो सुअनाणस्स) २००० गुणनो लोगस्स १० काउसग्ग ॥१ए॥ (णमो तित्थस्स) २००० गुणनो । लोगस्स ५ काउसग्ग करे ॥२०॥ इतिवीस स्थानिक गुणनो संपूर्ण॥

इत्यादि विधिसंयुक्त वीसों उंलीमें सव पदके उच्छव महोच्छव प्रभावना ऊजमणा पूर्वक करे। जिन साशनके उन्नति के कारण करे। इतनी शक्ति न हो (तो) एक उंली (तो) विशेष उच्छवादि सहित करणी चाहिये ॥ इहां विधि प्रपाक ग्रंथसें वीस स्थानक सेवनविधि संक्षेप मात्र लिखीहै (जो) गुरुको संयोग हय । तवतो विस्तारसें वीसों पदकी जूदी विधि । गुरुके मुखसें समझके करे जो गुरुका जोग न हो- (तो) विवेक संयुक्त इस विधिकों देखके वीस स्थानक तप सेवन करे। वीस स्थानक तवन पढे (वा) सुणें। वीस स्थानकजी की पूजा करावे। अपनी शक्ति माफक वीस वीस ज्ञानोपगरण करावे। देव पदको देव खाते लगावे। ज्ञान पदको ज्ञान खाते लगावे । गुरु पदको गुरु महाराजकोदेवे। सव तीर्थों की यात्रा करे। साहमी वच्छल करे. ॥ इति वीसस्थानक तप विधि समाप्त ॥

॥ मोक्ष करंडक तप ॥ उपवास, आयंविल, नीवी, एकाशना, पुरिमड्ढ ए एक उंली हुइ एसें पांच वारउंली करनेसें पच्चीस दिनसे यह तप पुरा करना. इस्मे नमो सिद्धाणं पदकी वीस नवकारवाली गुणनी. उद्यापनमे एक रूप्वेमें नैवेद्य भरके जिनमंदिरमें ढोकना पूजा पढानी. ॥

स्वर्ग करंडक तप ॥ प्रथम वारे एकाशना, नव नी· वी, पांच आयंबिल, एक उपवास, एसे २७ दिनसे यह तप पुरा होता है. सिद्धाणं पदका गुणणा गुनना ॥

॥ सौजाग्य सुंदर तप ॥ एक उपवास और एक आयंबिलकी एक उली. एसें सोले उली करनी अ-र्थात् बत्तीस दिनसे यह तप पूरा करना ॥ सिद्ध पद गुणना ॥ उद्यापन उपर प्रमाणे करना.

॥ चोसठिया तप ॥ एकासना आयंबिलकी एक उली एसी बत्तीस उली करनेसे तप पूरा होय ॥ इस्मे सिद्धाणं पद गुणणा ॥

॥ अष्टाह्निका तप ॥ एकेक जिनवरके पांच पां-च कल्याणक के एकासने करनेसे चोवीस जिनके ए६० एकासने करने ॥ जिस तीर्थंकरका कल्याणक होवे उसी जिनके नामकी नवकारवाली वीस गु-णनी । यह कल्याणक तप जेसा तप है. परं अनु-क्रम जिन्न है ॥ उद्यापनमे चोवीश प्रकारके पक्वान्न चोवीश तिलक, प्रजुजिके सन्मुख रखना ॥ संघ पूजा करनी ॥

॥ ठन्नुजिन तप ॥ अतीत अनागत वर्त्तमान मी लके तीन चोवीशी तथा सीमंधरादिक वीश विहर मान जिन और चार शाश्वते जिन मील ठन्नु जिन आश्रयि एकेक उपवास करना और तिस तिस जि नके नामकी नवकार वाली गुणनी. ठन्नु दिनसे यह

तप पूरा होता हे. उद्यापनमे ठन्नवे मोदक मंदिरमें ढोकना गुरु नक्ति करना.

॥ अष्टमी तप ॥ अष्टमी अष्टमीके दिन उपवास अथवा आयंबिल करके आराधना करनी. उद्यापनमे दूधसे नरा हुवा कलसके उपर श्वेत वस्त्र ढांकके तिसके उपर सकर के आठ मोदक रखके और ज्ञानोपकरण सहित कर्म क्षय निमित्त प्रतिमा वा पुस्तककी पास रखनेसे उद्यापन होताहे. इस्मे तपके दिन चंद्रप्रन्न जिनाय नमः ए गुणना गुणना॥

॥ अष्टापद पाहुडी तप ॥ आशोज अष्टमीसे पूर्णिमा तक आठ दिन एकाशना करना ॥ अष्टापद तीर्थायनमः ए पद गुणना उद्यायनमें जिन पूजा पढावी और नैवेद्यादिक ढोकन करना ॥

॥ अशोक वृक्ष तप ॥ आशोजके मासमें एक उपवास एक एकासणा एसे तीस दिनका यह तप हे. सिद्धपदको गुणना. उद्यापनमे अशोक वृक्ष चांदिका वनाके मंदीरमे स्थापनकर पूजा पढानी.

॥ चांड्रायण तप ॥ सुदि प्रतिपदासें एक उपवास एक आयंबिल एसे पनरादिनका यहतपहे. सिद्धपद गुणना. उद्यापनमे पनरे लाडु और चांदीकी चंद्र मूर्त्ति मंदरमे रखे और पूजा पढावे ॥

॥ सूरायन तप ॥ कृस्न पक्षके प्रतिपदासे उपवास आयंबिल पनरेदिन तक करे. सिद्धाणं पद गूणे.

स्वर्ग करंडक तप ॥ प्रथम वारे एकाशना, नव नीवी, पांच आयंविल, एक उपवास, एसे २७ दिनसे यह तप पुरा होता है. सिद्धाणं पदका गुणणा गुनना ॥

॥ सौजाग्य सुंदर तप ॥ एक उपवास और एक आयंविलकी एक उंली. एसें सोले उंली करनी अर्थात् वत्तीस दिनसे यह तप पूरा करना ॥ सिद्ध पद गुणना ॥ उद्यापन उपर प्रमाणे करना.

॥ चोसठिया तप ॥ एकासना आंयंविलकी एक उली एसी वत्तीस उंली करनेसे तप पूरा होय ॥ इस्मे सिद्धाणं पद गुणणा ॥

॥ अष्टाह्निका तप ॥ एकेक जिनवरके पांच पांच कल्याणक के एकासने करनेसे चोवीस जिनके ए६० एकासने करने ॥ जिस तीर्थंकरका कल्याणक होवे उसी जिनके नामकी नवकारवाली वीस गुणनी । यह कल्याणक तप जेसा तप है. परं अनुक्रम जिन्न है ॥ उद्यापनमे चोवीश प्रकारके पकान्न चोवीश तिलक, प्रजुजिके सन्मुख रखना ॥ संघ पूजा करनी ॥

॥ ठन्नुजिन तप ॥ अतीत अनागत वर्त्तमान मीलके तीन चोवीशी तथा सीमंधरादिक वीश विहरमान जिन और चार शास्वते जिन मील ठन्नु जिन आश्रयि एकेक उपवास करना और तिस तिस जिनके नामकी नवकार वाली गुणनी. ठन्न दिनसे यह

तप पूरा होता है. उद्यापनमे ठन्नवे मोदक मंदि
ढोकना गुरु भक्ति करना.

॥ अष्टमी तप ॥ अष्टमी अष्टमीके दिन उप
स अथवा आयंबिल करके आराधना करनी. उ
पनमे दूधसे भरा हुवा कलसके उपर श्वेत वस्त्र
कके तिसके उपर सकर के आठ मोदक रखके श
ज्ञानोपकरण सहित कर्म क्षय निमित्त प्रति
वा पुस्तककी पास रखनेसे उद्यापन होताहे. इ
तपके दिन चंद्रप्रभ जिनाय नमः ए गुणना गुण

॥ अष्टापद पाहुडी तप ॥ आशोज अष्टमीसे
र्णिमा तक आठ दिन एकाशना करना ॥ अष्ट
तीर्थायनमः ए पद गुणना उद्यापनमें जिन पूजा
ढावी और नैवेद्यादिक ढोकन करना ॥

॥ अशोक वृक्ष तप ॥ आशोजके मासमें
उपवास एक एकासणा एसे तीस दिनका यह
हे. सिद्धपदको गुणना. उद्यापनमे अशोक वृक्ष
दिका बनाके मंदीरमे स्थापनकर पूजा पढानी.

॥ चांद्रायण तप ॥ सुदि प्रतिपदासें एक उपव
एक आयंबिल एसे पनरादिनका यहतपहे. सिद्ध
गुणना. उद्यापनमे पनरे लाडु और चांदीकी
मूर्त्ति मंदरमे रखे और पूजा पढावे ॥

॥ सूरायन तप ॥ कृष्ण पक्षके प्रतिपदासे उप
स आयंबिल पनरेदिन तक करे. सिद्धाणं पद गु

उद्यापनमें पनर लाडु और सोना अथवा चांदीकी सूर्य मूर्त्ति रखके पूजा पढावे ॥

॥ तीर्थंकर वर्द्धमान तप ॥ यह तप आयंबिल अथवा नीवीसे किया जाताहे. प्रथम तीर्थंकरका एक आयंबिल, डुसरे के दो, तीसरेके तीन चोथेके चार चोवीसमे के चोवीस करने. फिर चोवीसमेका एक, तेवीसमे के दो, बाईसमें के तीन यों पहिले जगवानके चोवीस आयंबिल करे. जो जो जगवानकी उंली होय उसके नामकी नवकारवाली गुणे और पूजा करे. उद्यापनमे नैवेद्य चढावे । संघ पूजा करे देवगुरु जक्ति करे.

॥ जैन जनक तप ॥ निरंतर बत्तीस आयंबिल करनेसें यह तप पूरा होता हे । उद्यायनमे बडे ठाठमाठसे जिन पूजा करनी ॥

॥ निगोदायुक्षय तप ॥ एक उपवास एकासणा दो उपवास एकासना. तीनउपवास एकासना. दो उपवास एकासना० एक उववास एकासना. सिद्ध पद गुणना । उद्यानमें चौंदा मोदक बाटने ओंर चौदा मोदक मंदरजीमे चढाने और पूजा करानी॥

॥ कमल उंलीतप ॥ एकांतर आठ उपवासकी एक उंली करनी एसी नव उंली एकहि वर्षमे करनी चहीये. सिद्धपद गुणणा ओर उद्यापनमे सोना चांदीके नव नव कमल ढोकना गुरुजक्ति करनी.

॥ मेरु कल्याणक तप ॥ एक तेला एक बिआसणा एक तेला एक बिआसणा एसे तीन तेले करने. पीछे एकांतर छे उपवास करना. पारणेके दिन बिआसना करना० जो पहिले तीन तेला न कर शके तो पहिले दों तेले करके बीचमे छ उपवास करके छेल्ला एक तेला कर देवें. परं यहसब एकहि वर्षमें करना. इसमे यह नियमहेकी मेरु त्रयोदशीके दिन छेल्ला तप होना चाहिये. इसमे श्रीरुषदेव पारंगताय नमः ए पद गुणना चहिये. यथाशक्ती उद्यापन अवश्य करना चाहिये.

॥ छठ तप ॥ इसमे २२९ वेला करना ओर पारणामे बिआसणा करणा. सब मील इस्के ४५८ उपवास गिने जाते हे. सिद्धपद गुणणा ॥ उद्यापनमे ४५८ मोदक ढोकना.

॥ पद कम्ही तप ॥ पहिले एक उपवास पारणा. दो उपवास पारणा. एक उपवास पारणा. ॥ प्रथम उंली ॥ एक उपवास पारणा दो उपवास पारणा. एक उपवास पारणा. ॥ दुसरी उंली ॥ एक उपवास पारणा. दो उपवास पारणा. तीन उपवास पारणा. दो उपवास पारणा. एक उपवास पारणा. ॥ तीसरी उंली ॥ एक उपवास पारणा. दो उपवास पारणा तीन उपवास पारणा. चार उपवास पारणा. तीन उपवास पारणा. दो उपवास पारणा. एक उपवास

पारणा. सिद्धपद गुणणा ॥ उद्यापनमे मोति ओर प्रवाल चढावना । पुजा पढाना गुरुजक्ति करना ॥

सिद्धि वधू कंठाजरण तप ॥ प्रथम दो. उपवास (बेला) पारणा. एक उपवास पारणा. तीन उपवास पारणा. दो उपवास पारणा. एक उपवास पारणा एसे नव उपवासं करनेसे तप पूरा होता हे. सि, द्धपद गुणना गुरु ज्ञान जक्ति करना ॥

॥ रत्नारोहण तप ॥ एकाशन एक, नीवी एक. आयंबिल एक उपवास एक ॥ प्रथमावली ॥ नीवी, आयंबिल, उपवास, एकासन. ॥ द्वितीयावली ॥ आ यंबिल, उपवास, एकाशन, नीवि. तृतीयावली ॥ उ, पवास, एकासणं, नीवी, आयंबिल ॥ चतुर्थावली ॥ एक उपवास विगई, निविता रहित नीवी, आयंबि- ल ॥ पंचमावली ॥ इसतरे पांच आवलीसे रत्नारोह ण तप होता हे. सिद्धपद गुणना. उद्यापनमें रत्नम- य नवकारवाली पांच, रत्नमय स्थापनाचार्य पांच, रत्नमय जिन बिंब पांच, मोदक वीस, इतनी वस्तु पुस्तकके पास ढोकना. तप के दिन ब्रह्मचर्य पाल ना. ज्ञान दर्शन चारित्रका आराधन करना. पार- णाके दिन गुरु जक्ति करनी. अष्ट प्रकारी पूजा क- रनी. इस तपसे संतान प्राप्ती होती हे. गर्जश्राव होना बंध होता हे. आशोज सुदिपंचमीसे ए तप सरु करना.

॥ आगमोक्त केवली तप ॥ आयंबिल निरंतर दश, उपर एक उपवास, सिद्धपद गुणणा. उद्यापन में इग्यारे मोदक, इग्यारे श्रीफल, पुस्तकके पास ढोकना. अष्टप्रकारी पूजा पढानी गुरु नक्ति करनी॥

॥ अंगविशुद्धी तप ॥ आयंबिल तीन, नीवी तीन, एकासणा तीन, एक उपवास अंतमे करना. सिद्धपद गुणणा. उद्यापनमे तेरे तेरे वस्तु पुस्तक के आगे ढोकना पूजा पढानी गुरु नक्ति करनी.

॥ पद्मोत्तरतप॥नव पांखडीके कमलकों पद्मकहतेहे. इस्मे नव उंली करनी चहिये. एकेक उंली के निरंतर अथवा एकांतर आठ आठ उपवास करना. एसी नव उंली करनी. सिद्धपदगुणणा. उद्यापनमें अष्ट दल कमल सुवर्णका अथवा चांदीका नया बनाकर बिचमे गौतमस्वामीकी प्रतिमाका आकार करके स्थापन करना और अष्ट प्रकारी पूजा करना. श्रीसंघ औरगुरुनक्तिकरे. ॥

॥ गणधरतप॥वर्धमान स्वामीके इग्यारे गणधरके इग्यारह उपवास अथवा आयंबिल करना. उनके नामकी नवकार वाली गुणना. उद्यापनमे गुरुको इग्यारह वेश (चारित्रोपकरण) वेहेराना. संघनक्ति गुरुनक्ति और पूजा पढानी.

॥ माणिक्य प्रस्तारिका तप ॥ आशोज सुदी इग्यारसको उपवास. बारसकों एकासणा. तेरसकी

नीवी· चौदशका आयंबिल· पुनमका उपवास· करना· पाठांतरमे दुसरी रीती यहहै की आशोसुदी बारसका आयंबिल· तेरसकी नीवी· चौदशका एकासणा· पुनमका उपवास· पुनमके उपवासके दिन उद्यापन करना सो यहरीतसे की पुनमके दिन सूर्योदय पहिले पवित्रहोके अपनी पसलीमे आभूषण श्रीफल, अक्षत लेके वाजित्रादि महोत्सव पूर्वक जिनप्रसादमे जाना· प्रथम प्रदक्षिना करके उपरोक्त वस्तु ढोकना· दुसरी प्रदक्षिणामें बिजोरा ढोकनां· तीसरी प्रदक्षणामे तांबूलपत्र सहित सुपारी ढोकनी· चतुर्थ प्रदक्षिणामे ठकरो (द्रव्य) ढोकना· सात जातिके धान ढोकनां· लवण· कापरू· कसुंब· कपास· पुरी १०० तांबे पीतलका बेहेडा ढोकनां· एकसो सोले दीपक करने· एक दीपकमे चांदीकी दीवट सुवर्णका कोडिया ढोकना· गुरुभक्तिसंघभक्ति करना·

॥ श्रुत देवता तप ॥ सुदपक्षकी एकादशीका उपवासकरना और मौनरहना· एसी इग्यारह एकादशी करनी· श्रुतदेवताकी पूजा करनी· उद्यानमे अपने घर सरस्वतीकी प्रतिमाकी प्रतिष्टाकराय के पधरावनी· और ठाठमाठसे पूजा पढानी ज्ञान ज्ञानीकी और संघकीभक्ति करनी·

॥ अंबिकातप ॥ कृष्ण पंचमीके दिन श्रीनेम

नाथजीकी पूजा पूर्वक अंबिका देवीकी स्थापना करके एकाशन तप करके पूजा करनी. नैवेद्यफल ढोकना. एसे पांचवार करना. उद्यापनमें साधुजीको वस्त्र, अन्न, पान, वेहेराना. अंबिकाकी मुर्त्ति दोपुत्रसहित आम्र वृक्षकेनीचे होय एसे देखावकी करानी.

॥ मुकुट सप्तमी तप ॥ आषाढवदि सप्तमीके दिन उपवास करके श्रीविमल नाथजीकी पूजा करनी. कार्त्तिकवदि सप्तमी के दिन उपवास करके श्रीआदिनाथजी की पुजा करनी. मिगसर वदि सप्तमीके दिने उपवास करके श्रीमहावीर स्वामीकी पूजा करना. पोषवदि सप्तमीका उपवास करके श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी पूजा करनी. उद्यापनमे लोक नालकी स्थापना करके मुकुट स्थानमे रहि जिनावलिको रत्न जडित मुकुट चढाना. गठसें पुजा पढाना एकेक जिनको सात सात वस्तु चढाना. ज्ञान गुरु संघकी भक्ति करना.

॥ स्वर्गस्वस्तिक तप ॥ चार एकासणा निरंतर करके उपर एक उपवास करना. उद्यापनमे पांच जातिके एकएकमण धानके स्वस्तिक जिन मंदिरमे करा के पूजा पढावी. ज्ञान गुरु संघभक्ति करना.

॥शत्रुंजयमोदक तप ॥ पुरीमढ, एकासणा, नीवी. आयंबिल, उपवास निरंतर पांच दिन तक करना,

शत्रुंजय नाम गुणना. उद्यापनमें पांचशेरगोधुमका एक लाकु एसे पांच लाकु चढावना. ज्ञानगुरु संघ नक्तिकरना.

॥ सात सौख्य तप ॥ निरंतर सात एकासणा करके उपर एक उपवासकरना. उद्यापनमें सात मोदक ढोकना. आठमा मोदक चतुर्गुण वमाकरना। सोलजातिके पकवान चढाना. ज्ञानगुरु नक्तिकरना.

॥ क्षीर समुद्र तप ॥ श्रावणमासमे करना । निरंतर आठ एकासणा करके उपर एक उपवास करना. उद्यापनमे चीर खांड और घृतसे नरा हुवा थाल प्रजुकों ढोकना. ज्ञानगुरु संघ नक्तिकरनी.

॥ छमासी तप ॥ एकाशनांतरित यथाशक्ति१८० उपवास करना. उद्यापनमें एकसो अस्सी मोदक मंदरमे चढाना. ज्ञान गुरु नक्ति करना महावीर स्वामीके नामकी नवकार वाली तपके दिन गुणनी.

॥ संवत्सरी तप ॥ एकाशनांतरीत ३६० उपवास करना ॥ ऋषन देवजीके नामकी नवकारवाली गुणनी. उद्यापनमें चांदीका घट सेलडीके रसमें नरके मंदीरमे चढाना. अक्षयतृतीयाके दिनपारणा आवे तेसें तप आदरना । ज्ञानगुरु संघकी नक्ति करनी ॥

॥ अष्ट मासिक तप ॥ मध्यम बावीस तिर्थंकर आश्रयिक एकांतरीत २४० उपवास करना. । जिस जिस जिन कातप आवे उन उनके नामकी नव-

कार वाली गुणना. उद्यापनमे २४० मोदक चढाना ज्ञान गुरु जक्ति करे.

॥ चतुर्विध श्री संघ तप ॥ प्रथम दो उपवास (बेला) करके एकांतरीत साठ उपवास करने। उद्यापनमे चतुर्विध श्री संघकी और ज्ञान गुरु ज-क्ति करनी.

॥ अष्ट कर्मोत्तर प्रकृति तप ॥ ज्ञानावरणीनी उत्तर प्रकृति ५, दर्शना वर्णीनी नव, वेदनीकी दो, मोहिनी कर्मकी अठाइस, आयुकर्मकी चार, नाम कर्मकी एकशोतीन, गोत्र कर्मकी दो, अंतरायक-र्मकी पांच, सब मील १५८ प्रकृतिके १५८ उपवास एकाशनांत्तरित करना. एसे करनेसें एक उली हुइ. एसी आठउली करनेसे यह तप पुरा होताहे सिद्ध पद गुणणा. उद्यापनमे १५८ मोदक जिनमंदिरमे चढावणा. ज्ञानपूजा गुरुपूजा संघपूजा करनी. पूजा पढावणी ॥

॥ हार तप ॥ प्रथम दो उपवास करके एकाश-नांतरित सात उपवास करना. पीछे उपवास तीन (तेला) करके एकाशनांतरित सात उपवास कर ना. अंतमे बेला करना. एवं तपो दिन एक वीस और पारणा सत्तर होय. सिद्ध पद गुणना. उद्याप-नमें सुवर्ण, माणक, मोति, विद्रुम, रजत, पदक काहलीका सहित हार बनाके वर्द्धमान स्वामीको

चढाना. अथवा सुवर्ण हार बनाके कंठारोपित कर-
ना । ज्ञानभक्ति गुरुभक्ति संघभक्ति करना.

॥ अहव दशमी तप ॥ प्रत्येक वर्षकी भाद्रवा
सुद दशमीके दिन यथा शक्ति उपवासादि तप क-
रके अंबिकादेवी के पास संगीतादिक करके रात्रि
जागरण करना. मोदक फल पुष्पादिक ढोकना. धूप
दीपादिक करना. अगले दिन स्वामी वत्सलकरके
मुनिको दान देके पारणा करना. रेशमी चुनरी च-
ढानी. एसे दशवर्ष करना. दूसरे वर्ष फलादिक दु-
गुने चढाने. तीसरे वर्ष तीगुने चोथेवर्ष चोगुने च
ढाने. ज्ञान गुरु संघभक्ति करना

॥ लघु संसार तारण तप ॥ निरंतर तीन आयं
बिल करके एक उपवास करणा. सिद्धपद गुणना.
एसे तीन ओली करते बारे दिनसे तप पुराहोय.

॥ वृद्धसंसार तारण तप ॥ निरंतर तीन उपवा
स (तेला) करके एक आयंबिल करना. सिद्धपद
गुणना. एसी तीन ओली करनी. इस्मे नव उपवास
तीन आयंबिलसे तप पूरा होय. उद्यापनमे चांदी
का जाहाज बनाके एक थालीमे दुधभरके दुधमे
जहाज तिरानां. जहाजमे मोतिमुंगा रखना. स्वा
मीवछल ज्ञानगुरु भक्ति करना. पूजा पढाना ॥

लाखी पडवा तप ॥ कार्त्तिक सुदि प्रतिपदाकेदिन
गौतमस्वामीके नामका उपवास करना. गौतम स्वामी-

के नामकी नवकार वाली गुणनी ॥ एक वर्षकी वारे सुद पडवाको इसीतरें तपकरना । द्वितीयाको दुध चावलसे पारणा करना. समाप्तीके उद्यानमें पांच पांचसेर सवजातिके धान मंदिरजीमें ढोकना पूजा पढानी. ज्ञान गुरु संघभक्ति यथा शक्ति महोत्सव करना यह तप करनेसे सौभाग्यकी प्राप्ति होय अठावीस लब्धीकी प्राप्ती होती है ॥

॥ परतपाली तप ॥ पंचवर्ष यावत् श्रीवीर निर्वाणसे प्रारंभ कर तीन उपवास करना पीछे बत्रीस नीवी करनी समाप्तिमें तीन उपवास करना. प्रतिवर्ष पांचसेरकी लापसी सुगंधीदार बनाके स्थालमे भरके महोत्सव पूर्वक ढोकना. ज्ञान गुरु संघभक्ति प्रभावना करना. वीरनामगुणना ॥

॥ त्रिपर्यंत घन तप ॥ १. २. ३. ए प्रथमउली. २. १. ३. ए द्वितीयाउली. ३. २. १. ए त्रतीया उली. १. ३. २. ए चतुर्था उली. २. ३. १ ए पंचमी उली. ३. १. २. ए छठी उली. १. २. ३. ए सातमी उली. ३. २. १. अष्टमी उली. २. ३. १. नवमी उली. सबमील तपोदिन ५४ पारणे दिन २७ सर्व दिन ८१ उद्यापनमें ज्ञानगुरु साधर्मिक भक्ति०

॥ वर्ग तप ॥ १. २. २. १. २. १. १. २. ए उपवाससे प्रथमउली. २. १. १. २. १. २. २. १. दूसरी उली. २. १. १. २. १. २. २. १. तीसरी उली. १. २.

२. १. २. १. १. २. चौथी ठेली. २. १. १. २. १. २. २. १. पंचम ठेली- १. २. २. १. २. १. १. २. छठी ठेली. १. २. २. १. २. १. १. २. सातमी ठेली. २. १. १. २. १. २. २. १. अष्टमी ठेली. सिद्धपद गुणना. तपोदिन ९६ पारणा ६४ पांचमास दश दिनको यह तप पुरा होता है. उद्यापनमे जिन पूजा. गुरु भक्ति साधर्मिक वात्सल्य करना.

॥ श्रेणितप ॥ १. २. प्रथम पंक्ति. १. २. ३. दुसरी पंक्ति. १. २. ३. ४. तिसरी पंक्ति. १. २. ३. ४. ५. चतुर्थ पंक्ति. १. २. ३. ४. ५. ६. पंचम पंक्ति. १. २. ३. ४. ५. ६. ७. छठी पंक्ति. छश्रेणिमे उपवास ८३ आवे. पारणा २७ सवमील ११० दिवसे तप पुरोहोय. उद्यापनमें सात कोणेका धवल गृह करना, सुवर्णमय निसरणी करणी. जिनमंदिरमे ढोकना. उद्यापनमेंज्ञानगुरु साधर्मिक भक्ति करना.

॥ घन तप ॥ १. २., १. २., २. १., १. २. एसे वारे उपवास और आठ पारणासे वीस दिनमे यह तप पुरा होय. सिद्धपद गुणे. उद्यापनमे २० मोदक चढावे. ज्ञानगुरु साधर्मिक भक्ति करे.

॥ *निर्वाणदीपक तप* ॥ *तीनवर्षतक* । दीपमालिकाकी चौदश अमासका उपवासकरे. अहोरात्री अखंडदीपक रखे. रात्रिजागरणकरे। वीर प्रभुके नामकी नवकारवाली गुणे. उद्यापनमे ज्ञान गुरु भगति करे.

॥ बत्रीस कल्यानक तप ॥ प्रथम एक अठम करके पीछे बत्तीस एकांतर उपवास करना और अंतमे एक अठम करना. इस तपमे आरुतीस उपवास और चोत्तीस पारणे होते हे. दोमास बारे दिनसे तप पूरा होताहे. सिद्ध पदगुणना. उद्यापनमे जिनगृहमे बत्तीस बत्तीस वस्तु ढोकनी. ज्ञान गुरु संघ न्नक्ति करनी.-यह तप वसुदेवहिंडीमें लिखाहे.

॥ कर्म चक्रवाल तव ॥ प्रथम एक अठम करके एकांतर एक शठ उपवास करने और अंतमे एक अठमकरना. ६१ उपवास और ६३ पारणेसें चारमास दशदिनकों तप पूरा होताहे. सिद्धपदगुणणा. उद्यापनमे आठ आठ वस्तुजिन मंदिरमें ढोकना. ज्ञान गुरु संघ न्नक्ति करना.

॥ शिव कुमार बेला तप ॥ इसमे बारे बेला (छठ) निरंतर अथवा सांतर करना. सिद्धपदगुणना. पारणेमे यथा शक्ति आयंबिल करना. उद्यापनमें बारबारे वस्तुजिन मंदिरमे ढोकना. ज्ञान गुरु संघकीन्नक्ति करना.

॥ कर्म चूरन तप ॥ प्रथम एक अठम करके सात एकांतर उपवास करना और अंतमें एक अठम करना. ६६ उपवास और ६२ पारणा चारमास आठ दिनको यह तप पुरा होताहे. उद्यापनमें आठशाखा सहित चांदीके वृक्षको सुवर्ण कुलाडी-

सें छेदन करना. सिद्धपदगुणना. ज्ञान गुरु संघ भक्ति करना.

॥ अखंड दशमी तप ॥ सुक्र पक्षकी दशमीके दिन एकाशनादि तपकरनां सिद्धपदगुणना. एसी दश एकादशी करनी तपके दिन अखंड अन्नका भोजन करना. उद्यापनमें दश जातिके धान्य फल पकवान जिनमंदिरमें ढोकन करना. शुध्ध वस्त्र चढाना. ज्ञान गुरु भक्ति करना. यह तपके करनेसें विधवा न होय एसा महिमा है.

॥ अमृताष्टमी तप ॥ सुक्र पक्षकी अष्टमीके दिन आयंबिल करनां एसी आठ अष्टमी करना. सिद्धपदगुणना. देवपूजा करनी. उद्यापनमे दूधसे भरा कलस एक, कंचुकी नवीन एक, मोदक एक, जल घट एक, जिन मंदिरमे चढाना. ज्ञान गुरु संघ भक्ति करना.

॥ सत्तरी सय जिन तप ॥ सित्तेरसय जिन आश्रयि एकसो सित्तर एकांतर उपवास वा एकासना करना। गुणणा गुरु मुखसे धारके जपना. उद्यापनमें एकसो सितर श्राविकाको जिमाना ज्ञान गुरु भक्ति करना.

॥ अदुःख दुःखित तप ॥ सुद पक्षकी प्रतिपदाको पहिला उपवास, सुद दुजका दुसरा, सुद तीजका तीसरा उपवास, यह प्रथम ओली. एसी

पांच ओली करनी. सिद्धपद गुणना. तपके दिन ऋषभदेवकी मूर्तिको अखंड पुष्प माला चढानी. नवीन नवीन नैवेद्य ढोकना. उद्यापनमे एक चांदीका वृक्ष बनाके उस्की शाखामे सोनेका पारणा लटकावै. रेसमकी पाटसे रेसमी तलाइ रखके उसमे सुवर्ण मय पुतली रखके जिन मंदीरमे ढोकना. ऋषदेवकी पूजा करना. ज्ञान गुरु संघभक्ति करना.

॥ पंचमेरु तप ॥ एक मेरुके एकांतर पांच उपवास करना. सुदर्शन मेरुका नाम गुणणा.दुसरे वखत पांच उपवासमे विजय मेरु गीणना. तीसरे पांच उपवासमे अचल मेरु गिणना । चोथी वारके पांच उपवासमे मंदिर मेरु नाम गिणना. पांचमी वार पांच उपवासमें विद्युन्माली मेरु नाम गिणना. इसमे निरंतर करेतो २५ उपवास और २५ पारणा मिलके पचास दिनमे तप पूरा होय. उद्यापनमे सुवर्ण मय मेरु बनाके मंदीरमे रखना. २५. २५. वस्तु ढोकना. ज्ञान गुरु संघ भक्ति करना.

॥ वडा समवसरण तप ॥ प्रथम चार उपवास करके पारणे एकासणा न बनेतो बियासणा करणा. एसी चार ओली करते पजुषणकी पंचमीके दिन पारणा आवे तेसें तप करणा. एसे चार वर्ष करनेसे ए तप पुरा होताहै. उद्यापनमे यथा शक्ति ज्ञान गुरु संघभक्ति करे.

॥ मोक्ष दंडक तप ॥ गुरुके हाथमे रखनेका दंक अपने हाथमें लेके अपनी मुठीसे जरना जितनी मुठी होय उत्तना एकांतर उपवास करना. अथवा दूसरी विधि यह है की एकासणा वार, नीर्वी नव, आयंबिल पांच, उपवास एक, एवं सत्तावीस दीन तप करना. सिद्ध पद गुणना. उद्यापनमें ठेल्ले उपवासके दिन एक थालमे चावल जर श्रीफल रोकरु ड्व्य रखके वाजिंत्र सहित गीतगाते गुरुके पास जाके दंडकी पूजा करके थाल जेट करना. वस्त्रादिक वेराना. ज्ञानकी संघकी जक्ति करनी.

॥ दवयंती तप ॥ एकेक जिन आश्रयी वीस आयंबिल करना. एसी चोवीस उंली करना. यह बमा तप होनेसें एक पच्चीसमी उंली शासन देवीके नामकी करनी और गुणणा अनुक्रमसे जिस जिस जिनकी उंली होय तिस्का नाम गुणणा और शासना देवीकी उंलीमे शासना देवीका नाम गुणणा. इस्में पांचसें आयंबिल और चोंवीस पारणा होतेहे. उद्यापनमें चोवीश जिनकी पूजापढानी. चोवीश तिलकचढाने. पांचसे मोदक चढाने. और यथाशक्ती ज्ञान गुरु साधर्मिकजक्ति अवश्यकरना.

॥ ऊणोदरी तप ॥ पुरुषको वत्तीस और स्त्रीको अठावीस कवलका आहार होताहे तिस्मेसें यथा शक्ती न्यून करना उस्कों लोक प्रवाहमें उनोदरी

तप कहते हे. प्रथमदिन आठ दूसरे दिन वारे तीसरे दिन शोले, चोथे दिन चोवीस, पांचमे दिन एकत्रीस, कवलका आहार करणा और एकासणा का पचखान करना. सिद्ध पद गुणणा. सव मिलके पुरुपको ८१ स्त्रीको ८७ कवल आहार पांच दिनमें लेणा. उद्यापनमे कवलकी संख्या प्रमाण मोदक चढाना. ज्ञान गुरु संघभक्ति करना.

॥ निर्वाण तप ॥ आदि नाथजीके निर्वाणके ६ उपवास करना. वीर प्रभुके निर्वाण पर उपवास दो करने. शेष तीर्थं करके निर्वाणके एकांतर उपवास तीस तीस करने. जिन जिन तीर्थं करके निर्वाणका तप, चलता होय तव उन उन तीर्थं करके नाम की नोकार वाली गुणनी. उद्यापनमे चोवीस तीलक, चोवी पक्वान, चोवीस फल, चोवीस संख्यामे सर्व वस्तुयें ढोकनी. ज्ञान गुरु श्री संघकी भक्ति करनी.

॥ केवल ज्ञान तप ॥ श्रीआदिनाथजी, मल्लीनाथजी, पार्श्वनाथजी, नेमनाथजी ए चार तीर्थंकरोके केवलज्ञान कल्याणक के तीन तीन उपवास करने. वासुपूज्यज्यस्वामीका एक उपवास और सव उन्नीस तीर्थंकरोंके दोदो उपवास करने. सवमील ५१ उपवास करने. उद्यापनमें ५२ मोदक फल, फूल, नैवेद्य, ढोकना गुरुभक्ति करना

॥ जिन दीक्षा तप ॥ वीस तिर्थंकरोने दीक्षा समय ७७ कीये तिस्के वेले करने. वासुपूज्यका एक उपवास. मल्लीनाथ पार्श्वनाथजीके तीन तिन उपवास करना. सुमतिनाथ स्वामीके नामका एकाशना करना. सबमिल ४७ उपवास एक एकाशणा होताहै. उद्यापनमे ४८ मोदकादिक चढावने अष्ट प्रकारी पूजा ज्ञान गुरु नक्तिकरना.

॥ जिन चवन जन्म कल्याणकतप ॥ एके के जिनके चवन कल्याणक के उपवास करणा. जिनजिन तीर्थंरका तप होय तिसदिन तिनके नामकी नवकारवाली गुणे. उद्यापनमें चोवीस चोवीस चीजे चढावे ज्ञानगुरु नक्ति करें.

॥ गौतमपमघातप ॥ पंदरे पूर्णिमां पर्यंत एकाशनादितप करना. गौतमस्वामिकी प्रतिमाके पास क्षीरका पात्र नरके ढोकना अष्टप्रकारी पूजा करनी. गौतमस्वामीकी प्रतिमाके अनावे महावीर स्वामीकी पूजाकरनी. उद्यापनमें चांदीका पमघा (पात्रें) क्षीरनर के गौतमस्वामी अथवा महावीरस्वामिके पास ढोकनां गुरुजीको जोली पात्रे प्रमुख देनां.

॥ लघुपंचमी तप ॥ सुदी और वदीकी पंचमीका उपवास करना नमोनाणस्स गुणणा. एक वर्षके चोवीस और एक उपर उपवास करके २५ उपवाससें यह तप पूराकरना. यथाशक्ति उद्यापन करना।

यह तप पौष अथवा चैत मासमे सरु नहि करना.

पंचमी तप ॥ पांच वर्ष और पांच मास तक सुदि पांचमीका चोवी हार उपवासकरना. नमोनाणस्स पद गुणना. यथाशक्ति उद्यापन करना. यहतप कार्त्तिक मिगसर, माघ, फाल्गुन, वैशाख, जेष्ट, आषाढ, ए सात मासमेंसे हरेक माससें सिरु कीया जाता हे । अखंड करना उद्यापन करना.

॥ पुंडरीक तप ॥ चैत्री पुनमके दिन उपवास करके पुंडरीक गण धरके नामकी नवकार वाली गुणे और पुजा करें एसे सात वर्ष करे. उद्यापनमे अगणित श्रावकोंको जिमावे अथवा प्रभावना करे अगणित द्रव्यसे ज्ञान भक्ति करे अगणित अन्न पान मुनिको वेरावे । जो चिज दीजावे सो गिणनानहि थोंहि पसली भरके वेरावे । और प्रभावनाभि पसली भरके देवेपरंगिनेनही.

॥ गुणरत्न संवत्सर तप ॥ यह तप के सेवन करने वालोंको दिवसमें उकडु आसनमे रहना और रात्रिकों वीरासनसें रहना चहिये (वस्त्र रहित रहना.) यह तपशोलेमासतक करना. तिस्मे प्रथम मासमे एकांतर उपवास करनां दुसरे मासमें दो दो उपवास पारणा करनां. तीसरे मासें तीन तीन उपवास पारणा करना. चोथा मासें चार चार उपवास उपर पारणा करना. एसें एकेक मासें एकेक

दिन तपका वढाते जानां. एसे शोल मास तप करनां. शोले मासमे सव मिल ४०७. दिन उपवास आवेगे. सव मिलके ७३ पारणा होतेहे. सिद्ध पद गुणणां उद्यापन यथाशक्ती ॥

आयंविलवर्द्ध मान तप ॥ प्रथम एक आयंविल करके एक उपवास, दो आयंविल करके एक उपवास, तीन आयंविल करके एक उपवास, चार आयं विल करके एक उपवास एसे एकेक आयंविल वढाते जांनां यावत् एकसो आयंविल पर्यंत वढानां. सों आयंविल उपर एक उपवास करें यह तपमे सव- मिल एकसो उपवास आवें और पांचहजार पचास आयंविल होतेंहे. ए महा तपका सेवन चौदेवर्ष, तीनमास और वीस दिनसें पूरा होताहे. उद्यापन यथा शक्ती करे.

॥ अक्षयनिधि तप ॥ घर देरासरमे अथवा उपाश्रयादि उत्तम स्थानमे विचित्र चित्रित घटस्थापन करें तीस्मे प्रतिदिन मुठीभरके चावल और यथाशक्ति द्रव्य मालतें जाय. यथाशक्ति एकाशनादिक तपकरे. पजुसणके पनरे दिन पहिलें एतप सरुकरे पजुसणमे तप समाप्ति होय तेंसे आदर करें. पजुसणमे घटपूर्ण भर जाय और तपभि पूर्ण होय.पूर्ण होनेसें ऊपर श्रीफल वस्त्र मौली वांधके वाजित्रादि महोत्सव पूर्वक मंदिरमें लाकें रखें और स्नात्रादि

पूजा पढावें. ज्ञान पूजा गुरू पूजा करे. एसें चारवर्ष पर्यंत करे. उद्यापनमे त्रिपद्धिणी करके देव आगे ढोकना. यथाशक्ती महोत्सव करना ॥

चांद्रायण तप ॥ चंद्रमाजेसें सुक्लपक्षमे एकमके दिनसे वढता हें तेसें पक्वाके दिन एक कवल, डुजके दिन दो कवल, तीजके दिन तीन कवल, चोथके दिन चार कवल एसें एकैक कवल पुनमतक वढावे. पुनमके दिन पनरे कवल आहार करे. कृष्णपक्षके चंद्रमाकी रीतिसे एके क कवल घटाते यावत् अमावास्याकों एककवल आहार करे एसें यवमध्य प्रतिमां तपत्री इस्को कहतें हे. यह चांद्रायण, यवमध्य तप एक मासकाहे. उद्यापनमें चांदीका चंद्र और सोनाके वत्तीस यव वनाके मंदिरमे चढावे और ज्ञान पुजा गुरू पूजा संघ पूजाकरे । अष्टप्रकारी पूजा पढावे.

तृतीय परिछेद प्रारंभः ।

अथ श्रावकोंकी दिन चर्या कहते हैं.

॥ चिदानंद स्वरूप, रूपसे रहित, रक्षक और परम ज्योतिरूप, एसे सिद्ध परमात्माकों मेरा नमस्कार हो. मनः शुद्धिकों धरने वाले योगीश्वरों, ध्यान रूपी दृष्टि करके जिस्का स्वरूपकों देखतेहें; एसे परमेश्वरकी में स्तवना करताहुं. प्राणिगण सुख समूहकों चाहतेंहें. और सर्व सुख समूह मोक्षमेंहे. वो मोक्षपदकी प्राप्ति ध्यानसें होतीहे. और ध्यान मनकी शुद्धीसें होताहे मनोशुद्धी कपायोके जयसें होतीहे कपायोंका जय इंद्रियोंके विजयसें होताहे. इंद्रियोंका विजय सदाचारसें होताहे. गुणोंका निबंधन करानेवाला सदाचार सडुपदेशसें प्राप्त होताहे. सडुपदेशोंसें समृद्धिकी प्राप्ति होतीहे समृद्धि प्राप्त होनेसे सर्वत्र गुण प्राप्त होनेका उदय होताहे. सद्गुणोके उदयकी प्राप्तिके लिए आचारोंपदेश नामक ग्रंथकी रचना करी जातिहे. सदाचारके विचारोका निरूपण करनेमें रुचिकारक, विचक्षण पुरुषोको मनन करने योग्य, देवानु प्रियोंकों अत्यानंदकारी, यह ग्रंथ; पुण्यवंत प्राणियोको, विशेष श्रवण करने लायकहे.

अनंत पुद्गल परावर्तो करके पुनः दुष्प्राप्य यह मनुष्य जन्मको प्राप्त होके विवेकी प्राणिकों धर्म

उपर अवश्य आदरवंत होना चहिये. क्योंकी सुननेसे, देखनेसें, करनेसें, दूसरोंसें करानेसें, अनुमोदनेसें यह धर्म सातों कुलकों निश्चय पवित्र करताहे. धर्म, अर्थ, काम, यह तीन वर्गके साधन विना यह मनुष्य जन्म पशुवत् निष्फलहे. तीन वर्गके साधनमेंनी धर्म वर्गको अधिक साधन करना क्योंकी धर्मवर्ग विना अर्थ और काम न प्राप्त होशक्तेंहे. मनुष्यजव, आर्यदेश, उत्तमजाति, सर्व इंद्रियोंकी सुदृढता, परिपूर्ण दीर्घायुष, इतनी चिजें विना पुण्य प्राप्त न होशक्तीहे. कदापि पुण्ययोगसें उपरोक्त मील शक्तेहें. तथापि वीतरागके वचन पर श्रद्धा होनी डुर्लजहे. कदापि श्रद्धा होतीहे तथापि सुगुरुका योग सुपुण्य विना मिल शक्ता नहीहे.

न्यायसें राजा, सुगंधसे पुष्प, उत्तम पदार्थसें, नोजन ज्यों शोजनीक होताहे त्यों उपरोक्त वस्तु नी सदाचारसेंहि शोजनीक होतीहे. सदाचार तत्पर पुरुष शास्त्रोक्त विधिसें परस्पर अविरोध करके तीनों वर्गका खुसीसें साधन कर शक्ताहे.

पंमित पुरुष रात्रिके चतुर्थ प्रहरसें वा पीछली दो घमी रात्रिसें उठे. निंद्राकों त्याग कर पंचपरमेष्ठी मंत्र पढे. दक्षिण अथवा वाम दोनोमेंसें जो नाशिका वहती होय उस तरफका पग शय्यासें उठती वख्त प्रथम धरती पर धरे. शय्याकों और शयनके वस्त्रोंका त्याग करके दूसरे शुद्ध वस्त्र

पहिन सुस्थान पर बेठके पंचपरमेष्टीका ध्यान करे. पूर्व अथवा उत्तर दिशा सन्मुख बेठके शरीर और स्थानकी शुद्धि करके मन समाधिसे जाप करे.

पवित्र हो किंवा अपवित्र हो. सुस्थित हो वा दुःस्थित हो परं पंचपरमेष्टी नवकारमंत्रके जपनेसें प्राणि सर्व पापसें रहित होता हे. अंगुलीके अग्र भागसें, मेरुकों उल्लंघन करके, संख्यारहित, जो जाप करे सो प्रायः अल्प फल कारक होताहे.

उत्कृष्ट, मध्यम, अधम ए तीन प्रकारके जाप कहे जातेंहे. उसमें कमलादिक विधिसे जाप किया जायसो उत्कृष्टहे. जपमालासे जाप किया जाय सो मध्यमहे. विना मौन, विना संख्या, विना चित्त स्थिर रख्खे, विना अचल आसन, विना ध्यान जो जाप किया जाय सो अधम जाप कहा जाताहे. पीछे गुरुके पास जाके अथवा अपने घरमें अपने पापकी शुद्धीके वास्ते आवश्यक (प्रतिक्रमण) करे.

रात्रिके पापकी शुद्धीके वास्ते राई, दिनके पापकी शुद्धीके वास्ते देवसिक, पनरे दिनकी शुद्धीके वास्ते पाक्षीक, चारमासके पाप शुद्धीके वास्ते चोमासी, बारमासके पापकी शुद्धीके वास्ते सांवत्सरीक; एसें पांच प्रतिक्रमण कहेहे. प्रतिक्रमण करके, कुल क्रमकों याद करके, हर्षित चित होके मंगल स्तुतिका पाठकों याद करे.

मंगलाष्टक.

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमः प्र
मंगलं स्थूलिभद्राद्या, जैनो धर्मोस्तु मंगल
नाभेयाद्याः जिनाः सर्वे, भरताद्या श्च च
कुर्वंतु मंगलं सर्वे, विष्णवः प्रति विष्णव
नाभि सिद्धार्थ भूपाद्या, जिनानां पितरः
पालिताखंड साम्राज्या, जनयंतु जयं मम
मरुदेवी त्रिशलाद्या, विख्याता जिन मात
त्रिजगज्जनितानंदा, मङ्गलाय भवंतु मे ।
श्रीपुंडरीकेंद्रभूति, प्रमुखा गण धारिणः
श्रुत केवलिनो पीह, मंगलानि दिशंतु मे
ब्राह्मी चंदन बालाद्या, महासत्यो महत्त
अखंड शील लीलाद्या, यच्छंतु मम मंगल
चक्रेश्वरी सिद्धायिका, मुख्य शासन देव
सम्यग्दृशां विघ्नहरा, रचयंतु जयश्रियं ।
कपर्दी मातंग मुख्या, यक्षा विख्यात
जैन विघ्नहरा नित्यं, दिशंतु मंगलानि मे
यो मंगलाष्टक मिदं पटुधी रधीते,
प्रातर्नरः सुकृत भावित चित्त वृत्तिः ॥
सौभाग्य भाग्य कलिता धुत सर्वविघ्नो,
नित्यं स मंगल मलं लभते जगत्याम् ॥

पीछें मंदिरजीमे जाके निःसही कहके
शातनाका त्याग

पहिन सुस्थान पर बेठके पंचपरमेष्टीका ध्यान करे. पूर्व अथवा उत्तर दिशा सन्मुख बेठके शरीर और स्थानकी शुद्धि करके मन समाधिसे जाप करे.

पवित्र हो किंवा अपवित्र हो. सुस्थित हो वा दुःस्थित हो परं पंचपरमेष्टी नवकारमंत्रके जपनेसें प्राणि सर्व पापसें रहित होता है. अंगुलीके अग्र भागसें, मेरुकों उल्लंघन करके, संख्यारहित, जो जाप करे सो प्रायः अल्प फल कारक होताहै.

उत्कृष्ट, मध्यम, अधम ए तीन प्रकारके जाप कहे जातेहै. उसमें कमलादिक विधिसे जाप किया जायसो उत्कृष्टहै. जपमालासे जाप किया जाय सो मध्यमहै. विना मोन, विना संख्या, विना चित्त स्थिर रख्खे, विना अचल आसन, विना ध्यान जो जाप किया जाय सो अधम जाप कहा जाताहै. पीछे गुरुके पास जाके अथवा अपने घरमें अपने पापकी शुद्धीके वास्ते आवश्यक (प्रतिक्रमण) करे.

रात्रिके पापकी शुद्धीके वास्ते राई, दिनके पापकी शुद्धीके वास्ते देवसिक, पनरे दिनकी शुद्धीके वास्ते पाक्षीक, चारमासके पाप. शुद्धीके वास्ते चोमासी, बारमासके पापकी शुद्धीके वास्ते सांवत्सरीक; एसें पांच प्रतिक्रमण कहेहै. प्रतिक्रमण करके, कुल क्रमकों याद करके, हर्षित चित होके मंगल स्तुतिका पाठकों याद करे.

मंगलाष्टक.

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमः प्रभुः ॥
मंगलं थूलिभद्राद्या, जैनो धर्मोस्तु मंगलं ॥ १ ॥
नाभेयाद्याः जिनाः सर्वे, भरताद्या श्च चक्रिणः ॥
कुर्वंतु मंगलं सर्वे, विष्णवः प्रति विष्णवः ॥ २ ॥
नाभि सिद्धार्थ भूपाद्या, जिनानां पितरः स मे ॥
पालिताखंड साम्रज्या, जनयंतु जयं मम ॥ ३ ॥
मरुदेवी त्रिशलाद्या, विख्याता जिन मातरः ।
त्रिजगज्जनितानंदा, मङ्गलाय भवंतु मे ॥ ४ ॥
श्रीपुंडरीकेंद्रभूति, प्रमुखा गण धारिणः ।
श्रुत केवलिनो पीह, मंगलानि दिशंतु मे ॥ ५ ॥
ब्राह्मी चंदन वालाद्या, महासत्यो महत्तरा ।
अखंड शील लीलाद्या, यछंतु मम मंगलं ॥ ६ ॥
चक्रेश्वरी सिद्धायिका, मुख्य शासन देवताः ।
सम्यग्दृशां विघ्नहरा, रचयंतु जयश्रियं ॥ ७ ॥
कपर्दी मातंग मुख्या, यक्षा विख्यात विक्रमाः ।
जैन विघ्नहरा नित्यं, दिशंतु मंगलानि मे ॥ ८ ॥
यो मंगलाष्टक मिदं पटुधी रधीते,
प्रातर्नरः सुकृत भावित चित्त वृत्तिः ॥
सौभाग्य भाग्य कलिता धुत सर्वविघ्नो,
नित्यं स मंगल मलं लभते जगत्याम् ॥ ९ ॥

पीछें मंदिरजीमे जाके निःसही कहके सर्व आशातनाका त्याग करके तीन प्रदक्षिणा देवे. विलाश,

हास्य, थुंक (बलगम) का गिराना, निद्रा, कलह, विकथा, चार प्रकारका आहार, जिनमंदिरमे नहि करना. "हे जगन्नाथ तुमकों नमस्कार हो" इत्यादि स्तुतिका पाठ बोलके फल, अक्षत, सुपारी, जिन. राजके सन्मुख रख्खे. राजा, देव, गुरु, निमित्त शास्त्र वेत्ता इनके पास खाली हाथसें नहि जाना क्योंकी फलसें फल मीलताहे. भगवंतके दक्षिण भागमे पुरुष, दहिने भागमे स्त्री नव अथवा साठ हाथ दूर रहकर वंदना करे. पीछे उत्तरासण लगाके, योगमुद्रासें बेठके, मधुर ध्वनीसे चैत्य वंदन करे. पेटके उपर दो हाथकी कोणी रखकर, कमल डोडाके आकार दोहाथकी दश अंगुलीयों संयोजित करे उनको योगमुद्रा कहतेहे. पीछे अपने घर जाके प्रातः क्रिया करे (भोजन, वस्त्र, घरके परिवारकी यथायोग्य व्यवस्था करे.) बांधव, नोकरों प्रमुखोंकों अपने अपने कार्योमें नियोजित करके बुद्धिके आठ गुण धारक पौषध शालामें जावें. शुश्रुषा (गुरुकी सेवा) श्रवण (उपदेशका सुनना) ग्रहण (स्वीकार करना) धारणा (याद रखना) उहा (तर्क करना) अपोह (शमाधान करना) अर्थ (अभिप्राय समजना) तत्वज्ञान (तत्वसमजना) यह बुद्धीके आठ गुण हे. धर्मका जाणकार होना, दुर्बुद्धीका त्याग करना, ज्ञानको प्राप्त होना और

ाग आना ए सब सुननेसे प्राप्त होतेंहे. आचार्य
ार साधुओंकों पंचांग नमस्कार करके आशातना
ाग करके गुरुके सन्मुख बेठना. दों ढीचण, और
' हाथ लगाया हुवा मस्तक, धरतीपर टिकायके
मस्कार करनेको पंचांग नमस्कार कहतेंहें.

पलांठी बांधके, लंबे पग पसारके, पग उपर पग
ढाके, दो कांख दिखाते, अगाडी, पीछाडी, बरो-
र दोनुं तर्फ, गुरुके पास बेठना नहीं. अपनेंसे
! आए हुवेकी बातें पूर्ण हुवे विना गुरुको
लाना नही. आशयका समजदार गुरुके मुख
ामने दृष्टि रखकर चित्तकी एकाग्रतासें धर्म शास्त्र
ुने. वाख्यान पूर्ण हुवे पीछें अपनी शंकाका
समाधान करे (पुछे) और देव गुरुके गुण गाने
..ले (भाट भोजक) को यथोचित दान देवे.
ेस्ने प्रातः प्रतिक्रमण न किया होय सो वांदणा
ृके गुरुको वांदे। धर्मप्रिय श्रावक नवकारसहीत
प्रमुख यथाशक्ती पच्चख्काण करे. दान देनेवालेभी
जोव्रत पच्चख्काण न करेतो तिर्यंच योनीमें उ
पन्न होतेहे. हाथी घोडा प्रमुखमे उत्पन्न हो
केभी बंधनमें पमतेंहे. जो दाताहे सो नरकमें
न जाय. जो व्रत पच्चख्काण करता हे सो तिर्यंच न
होय. जो दयावंत होय सो हीन आयुष्य न होय.
सत्यवादी होय सो डुस्वर (डुष्ट अवाजवाला)

न होय. तपश्चर्या हे सो सर्व इंद्रियों रुप मृगको वश्यकरनेमे जाल (फांसा) समान हे और कषाय रुप तापको मिटानेके लिऐ द्राक्षासमान ह फिर कर्म रूप अजीर्णकों मिटानेके लिए जातिवंत उत्तम हरडे समान हे. जो दूरहे, दुराराध्य (दुःखसें मिलने लायक) हे, देवताओंकोंभी जो दुर्लभहे, सो सब तपसें मिल शक्ताहे. क्यो कि तपकों कोई उल्लंघन करने समर्थ नही. पीछे. वजारमें जाके अपने अपने कुलके उचित द्रव्यो पार्जनका उद्यम करे. मित्रोंके उपकारके वास्ते, वांधवोके उदयके वास्ते, न्यायवंत न्याय लक्ष्मीका उपार्जन करे. क्योंकी केवल अपना पेट कोन नही भर शक्ता हे?

नीच जनोचित व्यापार करना नही और दूसरोंसें भी कराना नही. क्योंकि संपदा पुण्यकर्मसे वढतीहे परं पापसे वढती नहि. कदापि पाप व्यापारसे लक्ष्मी वढे परं उसका परिणाम अछा नहीहे. जिस व्यापारमे वहुत आरंभहोय, महापापहोय, लोकमे निंद्याहोवे एसा होय, इह लोक परलोकसे विरुद्ध होय एसे व्यापार (काम) नही करने. लोहार, चमार, मदिराकार, तेली, प्रमुख नीच जनो से अधिक लाभ होय तोभी व्यवहार नही रखना.

एवं चरन् प्रथम याम विधिं समग्रं ।
श्राद्धो विशुद्ध विनयो नय राजमानः ॥

विज्ञान मान जन रंजन सावधानो ।
जन्म द्वयं विरचये त्सकलं स्वकीयम् ॥ १ ॥

इति दिनचर्यायां प्रथम वर्गः समाप्तः ॥

॥ अथद्वितीय वर्गः । प्रारभ्यते ॥

दूसरा प्रहरदिन चढते अपने घर आयके विचक्षण जन जहां जीवाकुल भूमी नहोय एसे स्थान पर पूर्वदिशा सन्मुख बेठके स्नान करे. स्नान करनेके लिए चार पगवाला, जिस्मे नल लगाया होय एसा, एक बाजोट (पट्टा) बनावे. जिस्का पाणी दुसरे वासणमे लेके निर्जीव स्थानमे डाला जाता होय तो जीवकी ठीक यत्ना होशकतीहे. रजस्वला अथवा नीच जातिका स्पर्श हुवा होय, अथवा सूतक आया होय, घरमे कोइका मरण हुवा होय तो मस्तकसे सर्वांग स्नान करना. उपरोक्त कारण सीवाय देव पूजाके वास्ते बुद्धिवंत मस्तक वर्जित उष्ण जलसें स्नान करे. योगी पुरुष कहतेंहें की चंद्र, सूर्यके किरणोके स्पर्शसे समग्र जगत शुद्ध होजाताहे तों मस्तकभी उनके किरणोसें स्पर्शित होनेसें सदा पवित्र गिना जाताहे.

हर रोज शिर भीजोनेसें जीवघात होताहे. इसलिए नही भिजोना. दया एहि हे सार जिस्मे एसे

सदाचार हें सो सब धर्मके हेतुहे. अर्थात् कृपा धर्मका परिपालनके लिए सदाचार पालाजाताहे. निर्मल तेजका धारण करने वाला आत्मा सदा मस्तकमे रहताहे इस लिए और सदा वस्त्रसें वेष्टित रहनेसे मस्तक कभी अपवित्र होता नही. अज्ञ जन स्नानके लिए जास्ति पाणी ढोलतेहे और उससे बहुत जीवकी विराधना करतेंहें; एसा स्नान करके शरीरकों पवित्र और आत्माकों मलीन करतेंहें. स्नान करनेंमें भीजोया वस्त्र दूरकरके दूसरा वस्त्र पहिनके जहां तक पेर भीने रहे तहां तक अर्हत्का स्मरण करता उहांहि खमा रहे. जो खमा न रहेतो पगमें मेल लगेगा और पग अपवित्र होवेंगें. फिर कितनेक जीवोके घातकाभी संभव होवेगा.इससे पापका भागीभी होवेगा. गृहमंदिर (घरदेरासर) में जाके प्रथमसे प्रमार्जना करके पूजा करने लायक वस्त्र पहिनके अष्टपट मुखकोश बांधे. मन, वचन, काया, वस्त्र, भूमि. पूजाके उपकरण, स्थिति (स्थिरता) यह सात प्रकारकी शुद्धी पूजाके समय करनी. स्त्रीका पहिना हुवा वस्त्र पुरुष पूजा समय नहि पहिरे और पुरुपका पहिना हुवा वस्त्र स्त्री नहि पहिरे क्योंकी उससें कामरागकी वृद्धि होतीहै. उत्तम कलसमे भरा जलसें भगतकों जलका अभिषेक करे और पीछे उत्तम वस्त्रसे अंग लुंछन करके चंदना-

दिकसें पूजा करे. केशर चंदन चढाते नीचे लिखित काव्य उच्चार करके चढावे.

सच्चंदनेन घनसार विमिश्रितेन,
कस्तूरिका द्रव युतेन मनोहरेण ।
रागादि दोष रहितं महितं सुरेंद्रै,
श्रीमज्जिनं त्रिजगतः पति मर्चयामि ॥

पुष्प चढाने समय नीचे लिखित काव्य बोले.

जाति जपा बकुल चंपक पाटलाद्यै,
मंदार कुंद शत पत्र वरारविंदैः ।
संसार नाश करणं करुणा प्रधानं,
पुष्पैः परैरपि जिनेंद्र महं यजामि ॥

धूप करने समय नीचे लिखित काव्य बोले.

कृष्णागुरु प्रचुरिता सितया समेतं,
कर्पूर पूरमहितं विहितं सुयत्नात् ।
धूपं जिनेंद्र पुरतो गुरुतोष पोषं,
भक्त्योत्क्षिपामि निज दुष्कृत नाशनाय ॥

अक्षत चढानेके समय नीचे लिखित श्लोक बोले.

ज्ञानंच दर्शन मथो चरणं विचिंत्य,
पुंज त्रयंच पुरतः प्रविधाय भक्त्या ।
चोक्षाक्षतैः कणगणैः रपरै रपीह,
श्रीमंतमादि पुरुषं जिन मर्चयामि ॥

फल चढाने समय नीचे लिखित काव्य बोले.

सन्नालिकेर पनसामल बीजपूर,

जंबीर पूग सहकार मुखैः फलैस्तैः ।
स्वर्गाद्यनल्प फलदं प्रमदा प्रमोदं,
देवाधिदेव मधुना प्रशमं महामि ॥
नीचे लिखित काव्य बोलके नैवेद्य चढावे.
सन्मोदकै वैटक मंगक शालि दालि,
मुख्यै रसंख्यरस शालिनि रन्नजोज्यैः ।
क्षुत्तृट्व्यथाविरहितं स्वहिताय नित्यं,
तीर्थाधिराज महमादरतो यजामि ॥
नीचे लिखा काव्य बोलके दीपक चढावे.
विध्वस्त पाप पटलस्य सदोदितस्य,
विश्वावलोकन कला कलितस्य नक्त्या ।
उद्योतयामि पुरतो जिननायकस्य,
दीपंतमः प्रशमनाय शमांबुराशेः ॥
नीचे लिखित काव्य बोलके जल चढावे.
तीर्थोदकै धुंतमलै रमलस्वनावं,
शश्वन्नदी ह्रदसरोवर सागरोत्थैः ।
कुर्वार मार मद मोह महाहितार्क्ष्यं,
संसार ताप शमनं जिनमर्चयामि ॥
नीचे लिखित काव्य बोलके हाथ जोड नमस्कार करे.
पूजाष्टक स्तुति मिमा मसमा मधीत्य,
योनेन चारु विधिना वितनोति पूजां ।
नुक्त्का नरामरसुखान्यखिलंनितानि,
धन्यः सुवास मचिराल्लनते शिवेपि ॥

नया मंदिर बनाना चाहे तो अपने घरमें प्रवेश करते मायें हाथपर जमीनसें देढ हाथ उंचे शल्य रहित पवित्र स्थानपर मंदिर बनावे. पूजा करने-वाला पूर्व अथवा उत्तर दिशाके सन्मुख बेठे परं विदिशामें न बेठे और दक्षिण दिशातो सर्व कार्यमें वर्जितहे.

पूर्व दिशा सामने बेठके पुजा करनेसें लक्ष्मीका लाभ होय. अग्नि दिशामें बेठेतो संताप उपजावे. दक्षिण दिशामे मृत्यु कारक. नैरुतमें बेठेतो उपद्र-व करे. पश्चिम और वायव्य दिशामें बेठेतो संता-नकी हानी करे. दो पांव, दो ढीचण, दोहाथ, दो स्कंध (खभा) एक मस्तक यह नव स्थान पर अनुक्रमसें भगवंतकी प्रथम पूजा करे. उत्तम चंदन और केशर विना पूजा न करनी. ललाट, मस्तक कंठ, हृदय, पेट, इतने स्थानपर अपने तिलक करना.

प्रभातें शुध्ध वाससें,मध्यान्हें पुष्पादिकसे संध्या समय धूप दीपसें भगवंतकी पूजा करनी.एक पुष्पके दो विभाग नहि करना.कलिको छेदनानहि.पत्र,पांखडि, कलिकों छेदन करनेसें हिंसा जेसा पाप लगताहे. हस्तसें गिरा,पेरकोलगा, जमीन पर पडा, शीर पर धरा एसे पुष्पोंसें कहि पूजा न करनी. गंध रहित, तीव्र सुगंध वाला, नीच जातिजन फर्शित, कीटक दंशित, मलीन वस्त्रसे वेष्टित, एसे पुष्पसें पूजा कर-

नी नही. भगवंतके वामांगमें धूप रखना. जल पात्र सन्मुख रखना. पान अथवा फल हस्तमे रखना. उपरोक्त अष्ट प्रकारी पूजा हररोज करनी और नीचे लिखि एक वीस प्रकारी कोइ पर्व तिथीमे अथवा तीर्थ स्थानोंपर अवश्य करनी

एकीस प्रकारी पूजाके नाम.

स्नात्र, चंदन, दीप, धूप, पुष्प, नैवेद्य, जल, ध्वजा, वासक्षेप, अक्षत, सुपारी, तांबुल, भंडारवृध्धि, फल, वाजित्र, गीत, नाटक, स्तुति, छत्र, चामर, आभूषण.

विशेष लाभार्थी श्रावक शुध्ध वस्त्रसे सुशोभित होके अशुचि मार्गको छोडके अच्छे मार्गसे ग्रामचैत्य (पंचायतीमंदिर) दर्शनके लिए जाय.

पूजाका फल विषे.

मंदिरमे दर्शनके लिए जाउंगा एसा विचार करनेसें एक उपवासका, जानेंकों उठेंतो दो उपवासका, मंदिरके मार्गमे चलेतो तीन उपवासका, मंदिरको देखनेसे चार उपवासका, मंदिरके दरवजेपर आनेसे छउपवासका, मंदिरके अंदर जाके दर्शन करनेसे पंदरे उपवासका, जिन पूजा करनेसें एक मासके उपवासका फल मीले. तीन वार "निःसीही" शब्दकों उच्चारके मंदिरमें प्रवेश करना. मंदिरकी प्रथम सारसंभाल (देखरेख)करके पीछे पूजा करना.

मूलनायककी प्रथम पूजा करके पीछे अंदर बाहार सब जिनबिंबकी पूजा करना. अवग्रहसें बाहिर नीकलके पीछें भक्ति सहित वंदना करे. फिर सामने बेठके चैत्य वंदना करे. एक नमुथ्थुणंका पाठसें जघन्य, दो नमुथ्थुणंसे मध्यम, पांच नमुथ्थुणंसे उत्तम चैत्य वंदना जाणनी. फिरभी दुसरी प्रकारसेंभी तीन प्रकारकी चैत्य वंदना होतीहे. स्तुति पाठ बोलते योग मुद्रा, वंदना करते जिनमुद्रा, प्रणिधानके समय मुक्ताशुक्ति मुद्रा, करनी. (नमुथ्थुणंका पाठ उच्चरते योग मुद्रा, जावंति चेइयाइं यहपाठ वखत जिनमुद्रा, जयवियराय उच्चरते मुक्ताशुक्ति मुद्रा करी जातीहे.) (यह परंपरागत आम्नायहे) पेटके उपर दो हाथकी कुणी स्थापन करके, कमल डोडाके अकार दोहाथकों एकिठे संयोजित करके परस्पर अंगुलियोकों योजित करने कों "योग मुद्रा" कहते हे. (यह चैत्यवंदन करने के वख्त होती हे) चार आंगुली आगे, और तीन आंगुली पीछें, पिछुलि (पोहोली) रखे, फिर दोहाथ अपने घुटणके पास टटार रखके, नीची दृष्टीसें खडा रहनेको "जिनमुद्रा" कहतें हें. (यह कायोत्सर्ग समय होतीहे) दो घोटणके बिचमें रहे हुवे, मोति पकनेकी दो छीपके समान दोनुं हाथ परस्पर जुडे हुवे होय; एसे आकारवाले दो हाथोंकों अप

नी ललाट (कपाल) पर लगाना उस्कों "मुक्ता शुक्ती" मुद्रा कहतें हे (यह मुद्रा जय वीयराय कहती वख्त करी जाती हे)

नगवंतकों नमस्कार करके मंदिजीसे वहार निकल ती वख्त "आवस्सही" एशा उच्चार करके निकले. फिर घर जायके अपने नाइ मित्रोंको साथ लेके नदय अनदयका (विचारवाला) नोजन करे . (२१

पग धोया सिवाय, क्रोधांध होके, दुर्वचन वोल ता दक्षीण दिशाके सन्मुख वेठके नोजन करेसो रा क्तस नोजन कहा जाताहे.

पवित्र वस्त्र ओर शरीरसें अछे स्थानपर वेठके स्थि रतासें देव गुरुको याद करके, नोजन किया जाय सो मानुष्य नोजन गिना जाताहे. स्नानादिकसें श रीर शुद्ध करके, जिनपूजाकरके पूज्य जनो (माता पिता) कों प्रसन्न करके, मुनिजनोंकों ओर सत्पात्रों कों दानादिक देके पीछे नोजन किया जाय. सो उत्तम नोजन गिना जाताहे.

नोजन, मैथुन, वमन(कय उलटी) दातण, लघु नीति, वडीनीति (जाजा पेसाव) करनेके समय बु द्धिमानोंकों मौन रहना चहिये. क्यों की ज्ञान आ शातना होतीहे. अग्नि कोंन, नैरुत कोंन,ओर दक्षि ण दिशि यह तीन दिशा नोजनके वास्ते वर्जित हे सूर्यके उदय ओर अस्त समय, चंद्रसूर्यके ग्रहण

मय अपने बिरादरोंका शव (मुरदा) पडा होय,, तहां तक, नोजन नही करना.

संपदा ठते नोजन में लोन रक्के सो बमा मूर्ख हें. मानों वो पुरुष अन्य जनोंके लिए धन कमाताहे.

अशुद्ध और अज्ञात नाजनमें, जाति बाहिरके घरका वा उनके हाथका, अज्ञात और निषिद्ध अन्न पान फलादिक खाना नही.

वाल, स्त्री, गर्नपात, गो, ए चार हत्याके करने वालेकी, आचार भ्रष्टो.की, कुलमर्यादाका उलंघन करनेवालोकी पंक्ति में वेठ के जाणकार होके नोजन करना नही.

मदिरा, मांस, सेहेत, म्रक्षण (लुंणी मसका) वड पीपल उंवर वृक्षादि पांच जाति के फल, अनंतकाय, अज्ञात फल, फूल, साक, पत्र, रात्रि नोजन, कच्चे गोरससें मीला हुवा विदल, फूग लगाहुवा अन्न, दोदिन उपरांत का दहि, विगमा हुवा अन्न, जिस्में जीव पडे होय एसे फल, पत्र, पुष्प, औरन्नी जिस्मे जीव उत्पन्न होनेका संनव होय एसे अचारादिक सब अनक्ष्यों कों धर्मवंत प्राणी वर्जित करे. नोजन उर वडीनीतिमे विशेष देरलगाना नहि. पाणी पीनेमें और स्नान करनेंमें उतावल करना नहि.

पानी पीना नोजनकी आदिमे विष समान. अंतमें शिल्लासमान और मध्यमे अमृत समान जाणना

अजीर्ण हुवा होय तहां तक जोजन नही कर-
ना. पूर्ण क्षुधाकालमे अपने कों रूचे सो जोजन क
रना. जोजन किये पीछे मुख शुद्धि जल सुपारी तां
बूलादिकसे करनी.

विवेकी जन रस्तेमें चलते तांबूल न खाय. सुपा-
री प्रमुख अखत फल दांतोंसें जांगना नही. क्यों
की उससें जीव घात होता हे.

जोजन कीये पीछे उष्णकाल सिवाय सोना नही
क्यों की सोनेसे शरीरमें व्याधिका संजव होता हे.
इति दिनचर्यायां द्वितीयः वर्गः समाप्तः

॥ अथ तृतीय वर्ग प्रारंजः ॥

जोजन किये पीछे अपने घरकी शोजा देखता,
विचक्षणोंसें वार्त्तालाप करता, पुत्रादिकोंकों शिखा
वन देता थका सुखसें दो घडी वार विवेकी जन अ
पने घरमें ठहरे.

गुणकी प्राप्तिकरनी यह अपने स्वाधीन हे. ध-
नादिकका सुख दैवाधीन हे. एसे तत्ववेत्ताओंको
कजी गुणकी हानी नहि होती हे.

कुल हीन पुरुषजी अपने गुणसें उच्च दशाको
प्राप्त कर शक्ताहे देखिये किचकसें उत्पन्न होने
वाला पंकज (कमल) कों सब अपने शिरपर
धारण करतेंहे और पंक (कादा किचक) पेरसें
घिसा जाता हे.

गुण उत्पन्न होनेके लिए कोइ कुल वा खांण नही हे परं उत्तम प्राणि अपने गुण करके प्रख्यात और उच्चदशा प्राप्त होता हे. जेसें सत्वादि गुण युक्त प्राणी राज्य योग्य हो जातेंहें तेसें एक विंशशति गुण युक्त होनेंसें प्राणिगण धर्म योग्यहो शक्ते हे.

(१) जिस्का हृदय क्षुद्र (तुछ) नहो, (२) सौम्य होय, (३) रूपवंत हो (४) जन वल्लभ्र हो (५) क्रुर न हो, (६) भवभीरु (संसारसें जन्म जरामरणादिकसे डरताहो)(७) मूर्ख न हो (८) दाक्षिणतावाला हो (९) लज्जावंत हो (१०) दया सहित हो (११) मध्यस्थ हो (१२) सौम्यदृष्टि हो (१३) गुणरागी हो (१४) सद्धक्ता हो (१५) सुपरिवारयुक्त हो (१६) दीर्घदृष्टी हो (१७) कुल परंपराकों माननेवाला हो. (१८) विनीत हों. (१९) गुणकों भूलनेवाला न हो- (२०) परहित हितार्थी हो (२१) सब बातोका समजदार हो. यह इक्किस गुण युक्त प्राणी धर्म रत्नके योग्य हो शक्ताहे.

पंडित पुरुषोने बहुत करके राज कथा, देशकथा, स्त्री कथा, भक्त कथा नही करनी क्यों की एसी विकथा करनेसें कुछ लाभ तो होता नही परं अनर्थका तो बरोबर संभव हे.

धर्म कथाभी अपने सुमित्रो और बंधवोंसें कर-

नी. धर्मशास्त्रके रहस्य के जाणकारोंके साथ धर्म (तात्वीक) विचार जरूर करना चाइये.

जिससें पाप (अधर्म) बुद्धिकी वृद्धि होय एसें लोगोंमें मित्रता और सहवासनी नहि रखना. कोइका कोप, वचन सहन करना परं अपने न्यायको न गोडना.

अवर्णवाद तो कोइकानी विचक्षणने बोलना नही. और पिता गुरु, स्वामी, राजादिकका तो अवर्णवाद जरूर बोलनाहि नही.

मूर्ख, दुष्ट, अनाचारी, मलीनजातिवाला, धर्मनिंदक, कुशीलिया, लोनि, चोर, इतनेकी संगती कनी नहि करनी.

"अज्ञात जनकी प्रसंशा करनी,अज्ञातको अपने घरमें स्थान (उतारा) देना, अज्ञात कुलसे सादी करना, अज्ञातकों नोकर रखना, अपनेंसे बडे लोगोंसें कोप वा विरोध करना, गुणिजनसें तकरार करनी, अपनेसे अधिक दरजेवालेंकों नोंकर रखना, करजा करके धर्ममे धन लगाना, अपनी दुःखी अवस्थामेंनी अपना धन पराये हाथमें होयसों नही याचना, अपने बिरादरोमें विरोध करना, स्वजनों कों गेडकर अन्यजनोंसें मैत्री करना, शक्ति उते धर्ममे उद्यम नही करना, नोकरोका दंड करके उस धनसे अपनें मजा उडानी, दुःखी अवस्थामें अप-

ने बांधवोंका साहाय याचना, अपने मुखसें अपने गुणका वर्णन करना, अपने बोलते बोलते हंसना, जिस तिसका खाना," यह सब कार्य लोक विरूद्धहे और मुर्खताके चिन्हहैं सो त्याग करना. न्यायसे धन उपार्जन करना. अपनी रीत रीवाजोंमें देश, कालके विरुद्धका त्याग करना. राज विरोधियोका संग और महाजनसे विरोध न करना.कुल,शील,आचारमे अपने समान जनसे और भिन्न गोत्रवालेसें व्यावसादी करना. अपनी जातिवालोंके पडोसमें अपना निवास रखना. जहां उपद्रव होवे एसें स्थानका त्याग करना. अपनी पेदासीके प्रमाणमे खर्चरखना लोकमे निंदा न होय एसा अपनी संपदानुसार वेष रखना.अपने देशका आचारको और अपने धर्मको न छोडना.

जो अपना आश्रय चाहे उनकें हितमें रहना. अपना बलाबलका विचार रखना. अपने हित अहितका विशेष विचार रखके कार्यमे प्रवर्त्तना. अपनी इंद्रियोंकों वश्य रखना. देव व गुरुमें बडा भक्ति भाव रखना. स्वजन, दीन हीन दुःखी, अतिथी की यथायोग्य आगता स्वागता करनी. यह विचार चातुर्यताकों अपनें चित्तमें रखना. विचक्षणोसें शास्त्रसुनता, वा सीखता थका विचक्षण कितनाक समय को व्यतीत करे. नसीब पर विश्वास रखकर निरू

द्यम वेठा न रहे परं धन उपार्जनका उपाय करे क्यो की उद्यम विना नसीव कत्ती फल देता नही है. कूमा तोल, कूडा माप, कूंमालेख प्रमुख अनर्थ कार्योको त्याग करके शुद्ध व्यवहारसे व्यापारमे सदा प्रवर्त्ते. अंगारकर्म, वनकर्म, शकटकर्म, नाटक कर्म, स्फोटककर्म, दंतवाणिज्य, लाक्तावाणिज्य, रस वाणिज्य, केशवाणिज्य, विपवाणिज्य, यंत्रपीमन, निर्लांछन, (वेलके कर्ण नाक अंड नख रोम छेदना) असतीजन पोप (कुत्ते विल्ले तोते प्रमुख जानवरोसे आजीविका करनी) दवदान (दव लगाना) सर द्रह तलाव शोपण करना. यह पंदरे कर्मादानका व्यापार श्रावक न करे.

लोखंम, महुडाके पुष्प, मदिरा, सेहेत (मधु) कंद, मूल, पान, फल, प्रमुख वस्तुका आजीविका निमित्त श्रावक व्यापार न करे.

उष्ण कालमें वहुत जीव विराधना होनेके नय सें विचक्षण श्रावक फाल्गुण माससें उपरांत तिल, गुड, टोपरा, द्राक्षा प्रमुख मेवा प्रमुखका व्यापार न करे.

चातुर्मासमें श्रावक गामीमे घोडे वेलोंको जोमे नही. वहुत आरंन प्रवर्त्तक कृपि कर्म श्रावक करे करावे नही.

योग्य मोल मिलता होय तो लेण देण करना. वहु-

त लाजके लिए अधिक लोज न करना क्यों की अधिक लाजके लोजसें कोइ समय मूल धनकाजी नाश हो जाता हे. विशेष लाज होता होय तथापि उद्धार कोइको न देना. दगिने रखके सिवाय धनके लोजसें कोइकों व्याजसें धन न देना.

चौरीका माल निश्चय हुवे पीछे थोडे मोलसे मिलता होय तो जी न लेना. सरस निरस वस्तुका जेल सेल न करना चोर, चंडाल, मलीन परिणाम वाला, धर्मभ्रष्ट, इनोंके साथ इह लोक परलोकके सुख वांछकोंने व्यवहार न करना.

विवेकी जन विक्रय समय असत्य न बोले. और लेनेके समय अपने वचनकीकबुलातकों लोपनही करे.

अदृष्ट वस्तुका सट्टा नहि करना. सोना, चांदी हीरा मणि प्रमुख पदार्थोंकी सत्यसत्य परिक्षा कीये विना लेना नही.

राज वल सिवाय अनर्थ और विपत्तीका निवारण होशक्ता नही इस्के लिए राज्यमें मैत्रता, परिचय, रखनी चाहिये परं राज्यमे पराधीन न होना (स्वाधीन रहना योग्य हे.)

तपस्वी, कवि, वैद्य, मर्मका जानकार, रसोइ करनेवाला, मंत्रवादी, अपने पूज्य (माता पिता धर्म गुरु विद्यागुरु) इनपर क्रोध न करना. द्रव्यार्थी पुरु

पकों अतिक्लेश, धर्मका उल्लंघन, नीचकी नोकरी, विश्वास घात, न करना.

लेण देणके कार्यमें अपने वचनका लोप करना नहि क्यों की अपने वचन पालनेवालोकी वडी प्र तिष्टा होती हे.

विचक्षणोंकों अपना धन मालका नुकसान होते छते भी अपने वचन पालनेकी वडि जरूरत हे. स्व ल्प लाभके वास्ते अपने वचनका लोप करनेवाले वसुराजाके न्याय दुःखी होतें हे.

एसे एसे व्यवहारमे तत्पर पुरुषो तीसरा और चोथा प्रहर दिन वितावे. और संध्या समय व्यालु करनेकों अपनें घरजावे. एकाशनादिक तप जिसनें किया होय उनोने संध्या समय प्रतिक्रमणके वास्ते अपने गुरुके पास जाना.

दिवसके अष्टम भागमे (चार घडी दिन छते) व्यालु करना. सूर्यास्त समय और रात्रिकों विवेकी ने भोजन करना नही. आहार, मैथुन, निद्रा, स्वा ध्याय (पठन पाठन) यह चार कृत्य संध्या समय प्राणिगणको विशेषकरके त्यागने चाहिये.

क्यों की सूर्यास्त समय भोजन करनेसें व्याधि होती हे. मैथुन करे तो दुष्ट गर्भ होता हे. निद्रा करे तो भूतादिकोंका उपद्रव होता हे. पठन पाठ नसे निर्बुद्धी होता हे.

व्यालु किये पश्चात् अवश्य दिवस छते चोवीहा रका पच्चक्काण करना. कदापि नही वन शके तो डु विहार तेविहार तो अवश्यमेव करनाहि चाहियें क्यों की रात्रिज्ञोजन त्यागनें से दररोज एकाशन करने जितना लाज मिल शक्ता हे.

जो प्राणी रात्रि ज्ञोजनमें दोष जाणके सवेर और सांजकों दो दो घमी आहारको आगेसें त्याग करतेंहे सो प्राणी पुण्यशाली जाणना. जो प्राणी यावज्जीव रात्रि ज्ञोजनकों त्याग करतेंहे.सो अवश्य अपने समग्र आयुष्यका अर्धज्ञाग के उपवासका फलको सहज मात्रमें प्राप्त कर शक्ता हे. और वो धन्य वादके योग्य होता हे. दिवस, रात्रिकों जो प्राणि मरजीमें आवे तव खाया करे और व्रत पच्चक्काणसे विमुख हे सो प्राणि अवश्य श्रृंग पुछ विनाका पशु समजनां.

रात्रिज्ञोजन करनेवाले पुरुष वूअडे, काक, विल्ल मांजार, गीध, सांवर, सूअर, सर्प, विछु, घीरोली, के अवतार प्राप्त करते हे. रात्रिकों हवन, श्राद्ध देवपूजा, दान, स्नान, और ज्ञोजन तो विशेष कर के नहीज करना एसा अन्य शास्त्रोमेंनि लिखाहे.

इति दिनचर्यायां तृतीय वर्गः समाप्तः ॥

स्वल्प जलसें हाथ पग और मुखकों प्रक्षालित करके धन्य धन्य मानता वडे हर्पसे संध्या समय धूप दीपादिकसें पुनः जिनपूजा करे.

सत्क्रिया सहित ज्ञान मोक्ष साधक होता है एसा जाणके संध्या समय पुनः आवश्यक करे.

क्रियाहे सोहि फल दायक होतीहे परं एकिला ज्ञान फल दायक नही हो शक्ता हे. देखिये स्त्रीकों जोगे विना और जोजनकों खाए विना एकिले उस्के सुखके जाननेंसे सुख न होता हे.

गुरुका योग न होय तो अपने घरमें स्थापनाचार्य अथवा नवकारवाली प्रमुख की स्थापना करके उस्के पास अवश्य प्रतिक्रमण करना.

धर्मसेंहि सर्व कार्य सिद्ध होतेहे एसा हृदयमें जाणके सर्वकाल तद्गत चित्त रहना.और धर्म समयकों न उल्लंघन करनां. कारणकी धर्मका साधनके समय गए पीठे अथवा समय न हुवे पहिले जोजप तपादिक धर्म क्रिया कि इ जाय सो अनवसरपर उखर क्षेत्रमे वोए वीजके न्याय निष्फल हो जाताहे.

पंक्ति पुरुष जो धर्म क्रिया करताहे उस्मे सम्यक् विधि करताहे. क्यों कि न्यूनाधिक.विधि करनेसे मंत्रजापके न्याय न्यूनाधिक करनेसे लाजके वदले अधिक दोष लगताहे. अर्थात् न्युनाधिक क्रिया करनी नहि. औषधीजी लेनेकी विधिमे चूक कीइ जाय तो अनेक अनर्थको उपजा शक्तीहे तेसें धर्म क्रियाजी अविधिसें सेवनकीइ जायतो अनेक अनर्थ उपजाती हे. वास्ते विधिमे बिलकुल चूक करना

हि नहीं. वैयावच्च (गुरुसेवा, पगचंपी) करनेसें अ
क्षय सुख, मंगल, श्रेयकी प्राप्ति होतीहे. इसलिए
प्रतिक्रमण समाप्ति पीछे विवेकी गुरुकी विश्रामणा
करे. गुरुकी विश्रामणा समय मुखपर वस्त्र लपेटनां,
गुरुकों अपने पगका स्पर्श न होने देना. एसें गुरूके
सर्व शारीरीक खेदको मीटावे. उपाश्रयसें निकलके
रस्तेमें जो जो जिनमंदिर आवे उनमें दर्शन करता
थका अपने घर जाय. तिहां पग धोयके पंचपरमेष्टी
मंत्रका जाप करे.

मेरेको अरिहंतका, श्रीसिद्धजी महाराजका, के
वली जांपित धर्मका, साधुजी महाराजका शरण हो.

मंगलके करनेवाले, दुःखगणसें दूर रखनेवाले,
शीलसन्नाह (वकतर) को पेहेनकें काम कंदर्पकों
जितनेवाले थूलीजद्र मुनि कों नमस्कार हो.

गृहस्थ छतेजी जिस्की वडी शील लीलाथी और
सम्यक्त के प्रजावसे जिस्की विशेष शोजाथी एसे
सुदर्शन सेठकों नमस्कार हो.

कामकंदर्पकों जितनेवाले, आजन्मपर्यंत. अति
चार रहित ब्रह्मचर्यकों परिपालन करनेवाले एसे
मुनियोंको धन्य, कृत पुण्यसे नमस्कार हो.

एसे पंच परमेष्टीका स्मर्ण करके कामोदयके लिए
नीचे प्रमाणे विचार करे. जिस्ने अपनी इंद्रियोका
जय कियाहि नहि एसे वहुल कर्मी, निःसत्व, जीव,

एक दिन मात्रजी शील पालनेको समर्थ नहो शक्तें हे. हे संसार समुद्र. मदिराजेसेमदयुक्त नेत्रोंवाली स्त्रीरूप दुस्तर पहाड विचमें न होते तो तेरा पार कों प्राप्त करना कुछ दूर नथा. मुक्ति पदकों अंतराय करनेवाली स्त्रीये प्राणिगणकों अवश्यमेव एक शिक्षारूपहि गिणनी चहिये. असत्य, साहस (उतावल) माया (कपट)मूर्खता,लोजकी अधिकता,अपवित्रता, दया रहितता,इतने दोप स्त्रीयोंमे स्वजावसेंहि होतें हे.

जो स्त्री (मुक्ति) रागी उपरजी वैरागी होती हे एसी स्त्रीकों कोन जोगवेगा ? जो पंमित होगा सोहि जोगवेगा. क्यों कि मुक्ति रूपिणी स्त्री वैरागी उपर वरोवर रागी हे परं रागी उपर रागी नहीहे.

एसा स्त्रीयोंके विपयमे असारता विचारता थका समाधिमे कितनाक काल निद्रा करे. परंतु पर्वतिथी प्रमुख उत्तम दिनोमे उत्तम श्रावक स्त्रीयोंसे विपय जोग करे नही.

विवेकीगण वहुत काल निद्रामें व्यतीत न करे. क्यों की विशेष निद्रा करनेसें धर्म अर्थ और सुख ए तीनोंका नाश होता हे.

जो प्राणी स्वल्प (थोमी) निद्रा करे, स्वल्प आहार लेवे, स्वल्प आरंज करे, स्वल्प परिग्रही, स्वल्प क्रोध करनेवाला होय एसे लक्षणवालोंको अवश्यमेव स्वल्प संसार होता हे.

निद्रा, आहार, नय, स्नेह, लज्जा, काम, कलि (लडाइ) क्रोध. यह चिजें ज्यों ज्यों अधिक कीये जांय त्यों त्यों अधिक वढती जाती हे.

विघ्न रूप वल्लिका समुदायकों छेदनेंमें साक्षात् कुहाडा समान श्री नेमिनाथ नगवंतकों याद कर के सयन करें तिनकों अवश्यमेव दुष्ट स्वप्नोंका परा नव न हो शक्ता हे.

अश्वसेन राजा ओर वामादेवी राणीकें पुत्र, श्रीपार्श्वनाथजीका नाम स्मरण करके सोवे तो अवश्य मेव अनर्थ कारक दुष्ट स्पप्न न देखें. महसेन राजा ओर लक्ष्मणा नाम राणीके पुत्र श्री चंद्रप्रन स्वामीका स्मरण करनेंसें सुखसें निद्रा आती हे. सर्व विघ्नरूपी सर्पके दूर करनेंमें साक्षात् गरुरु समान, परम सर्व सिद्धिके प्रदायक, श्री शांतिनाथ स्वामीका जो ध्यान करताहे उनकों विलकुल नय न हो शक्ता हे.

॥ इति दिनचर्यायां चतुर्थ वर्गः ॥

सर्व नवोंमें उत्तममें उत्तम यह मनुष्य जन्मकों प्राप्त होके प्राणि गणने उसे सुकृत करके सकल सफल करना. निरंतर धर्मके सेवनसें सुखनी तदनुसार अचल मिल शक्ता हे. वास्ते दान, विद्याध्ययन, शुनध्यान. जप तपादिक सुकृत्योंमें अपने दिन अवंध्य (अखंरु) करना.

आयुपके तीसरे नागमे अथवा अंत्य समयमे

जीव आगंतुक नवका शुनाशुन आयुष्य बांधताहे-आयुष्य बंधका तीसरा नाग बहुत करके पंच पर्वी की तिथीयोके दिन आताहे इसलिए पंच पर्वणीमे आरंन त्यागादिक सुकृत्यों कीये जांय तो अवश्य शुन आयुष्य बंध होय. वास्ते पंच पर्वणीमे अवश्य विशेष धर्म कृत्य करना उचित हे.

प्राणी द्वितीया तिथीके आराधनसें रागद्वेषकों जय करके आगंतुक नवमें साधु श्रावक यह दो प्रकारके धर्मकी प्राप्ति कर शक्ताहे.

पंचमीके आराधनसे पंच ज्ञानकों प्राप्त करके फिर पंच विध प्रमादका त्याग होनेसें शुद्ध चारित्र धर्मकों प्राप्त हो शक्ता हे.

दुष्ट अष्ट कर्मोंके नाश करनेके लिए और अष्ट मदका जय करनेके लिए पुनः अष्ट प्रवचन माताका परिपालनके लिए अष्टमी तिथीकी आराधना करना ठीक हे.

एकादशीके आराधनसें ग्यारह अंगके ज्ञानकी प्राप्ति होतीहे और ग्यारह श्रावककी प्रतिमाकों वहनेकी योग्यता प्राप्त होती हे.

चतुर्दशीके आराधनसें प्राणी चउद पूर्वके ज्ञान योग्य होके चउदे राजके उपर सिद्धत्वावस्थाकों प्राप्त होता हे.

यह पंच पर्वणीका महिमा याद करके पंच पर्व

णीमे जो धर्माराधन करेतो अवश्य शुभ फलकों प्राप्त कर शक्ता हे.

अतएव पंच पर्वणीमे विशेष धर्माराधन तप जपादिक करना और उत्तर गुणकी वृद्धिके लिए स्नान, मैथुनादिकका अवश्य त्याग करना. पर्वणीमे अवश्य पौषध करना. न वन शके तोभी प्रतिक्रमण सामायक जप तपादि अवश्य करना.

पर्वणीमे कल्याणकादि तप करना. उपवास एकाशणा, आयंबिल, बियाशणा, नीवी प्रमुख तपसे विंशति स्थानक तप आराधना.

जो विधि पूर्वक यह तप आराधन किया जाय तो परम सुखके प्रदायक, सर्वोत्कष्ट तीर्थंकर गोत्र उपार्जन हो शक्ता हे.

पंचम्यादि तपका उद्यापन करनेसे प्रणिधानकी पूर्णाहुती होतीहे और विशिष्ट फलकी प्राप्ति हो शक्ती है वास्ते उद्यापन अवश्य सब तपके करना. उपवास करके जो प्राणी पाक्षिक प्रतिक्रमण करताहे सो अवश्य पंदरे दिनके पापकी शुद्धी करता हे और उनके उभय पक्ष शुद्ध होशक्ते हें. तीन चोमासीमें (आषाढ, फाल्गुण, कार्तिक की चउदसीमें) अवश्य षष्ट (वेला) करना चहियें.

आठम चउदश पंचमीकेदिन उपवास, प्रतिक्रमण, आरंभवर्जन, अवश्य करना. भादोंकी श्रीपर्यू

पणपर्वणीमें अवश्य कल्पसूत्र सुनना. और यथा शक्ती विशेष धर्म कर्म करना. श्रावक धर्म कर्ममे संतोष न करे परं आरंजादिकमे संतोष करके अवश्यत्याग करे. उत्तम श्रावक एकवीस वार जो कल्प सूत्रकों सुनेतो अवश्य आठजवमें सिद्धि पदको प्राप्त हो शक्ता हे. निरंतर सम्यक्तके और ब्रह्मचर्यके पालनेसें जो लाज होताहे उससें अधिक कल्प सूत्र सुननेंसें होशक्ता हे. दान देनेसें विचित्र तप करनेसें, सत्तीर्थके सेवन करनेसें, जो प्राणिगणके पाप क्षय होते हे सो सब शास्त्र श्रवण का महिमा हे. मुक्तिसें कोई अधिक तप, शत्रुंजय से अधिक कोई तीर्थ, सम्यक्तसे कोई तत्व, कल्प सूत्रसें अधिक महिमावंत कोइ सूत्र नहीं हे. दीवालीकी अमावास्याकी रात्रिको जगवंत महावीर स्वामी मोक्ष गए और उसी प्रतिपदाके प्रातः काल श्री गौतम स्वामीजी केवल ज्ञान पाये हे इसलिए यह दोदीन अतीव पवित्र हे वास्ते उपरोक्त महा पुरुषोंका उसदिन ध्यान स्मर्ण करना. दीवालीमे दोउपवास, करके धूप, दीप, करके अखंड चावलसे गौतम स्वामीके नामका वा मंत्रका जाप करे तो इह लोक परलोकमे महोदय सुख पामें. अपने घरमे वा ग्राम चैत्यमें विधि पूर्वक पूजा करके आरती मंगल दीपक करके अपने घर जायके अपने जाइ मित्र

पुत्रादिक कों साथ लेके भोजन करनां. जगवंतके पंचकल्याणकों के दिनमे यथाशक्ती सत्पात्रोंकों और याचकों को दानदेना.

॥ इति दिन चर्यायां पंचम वर्गः ॥

उत्तम श्रावक धर्म कर्ममे प्रवृत्ति रखता थका पूर्ण निवृत्तिको प्राप्त कर शक्ताहे इसलिए अतृप्त मनसे निरंतर धर्म कर्म अवश्यमेव करना.

जिस धर्मसें यह संपदाको प्राप्त हुवा हे तो अवश्य उस अपने उपकारीकों सेवन किये विना कोन रहेगा. एसा कोन मूर्ख होय की जिससें आगामी कालमें लाभ होने वालाहे एसे स्वामी (धर्म) को सेवन करनेमें प्रमाद रखके आप स्वामी द्रोहीका पातकी वने?

दान, शील, तप, भाव यह चतुर्विध धर्मकों धीर पुरुष आराधके (पुण्यानुबंधिपुण्य) और मोक्ष सुखक्यों प्राप्त करलेता हे.थोडामेंसेंभी थोडा दानदेना परं बहुत मिलनेकी अपेक्षा न रखनी,क्योंकी इच्छानुंसारी लक्ष्मी क्या मालम कव मिलेगी?

ज्ञानदानसे ज्ञानवान् होता हे. अभयदानसें निर्भय होता हे. अन्नदानसें सुखी होता हे. औषध दानसें प्राणि अवश्य निरोगी होता हे.

पुण्यकर्मसे कीर्त्ति होतीहे. दान हे सो मात्र कीर्त्तिके लिए नही हे परं मोक्ष सुखके वास्ते दिया

जाताहे. मात्र कीर्त्तिके लिए जो प्राणी दान देतें हें सो दान धर्म नही हे परंतु वो व्यसन हे. (विनोद मात्र हे एसा जाणना.) व्याजमें धन डुगुणा होता हे. व्यापारसें चोगुणा लाज होता हे. क्षेत्रसे सो गुणा लाज होता हे. परं पात्रदानमें अनंतगुण लाज हो शक्ता हे.

साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, प्रतिमाजी, मंदिरजी, ज्ञान यह सात क्षेत्रमे धनका बोना बीजके न्याय विशेष लाज दायक होता हे. जो प्राणि जक्ति जावसे जिन मंदिर नया बनाताहे उस्मे बहुत लाजहे. क्यो की नये बनाये मंदिरके जितने परमाणु (रजकण) की संख्या होती हे तितने पल्योपम प्रमाण देव सुख जोगता हें.

औरजी यह हे कि जितने दिन नया मंदिर रहता हे तितने हजार वर्ष मंदिर बनानेवाला देवायु जोक्ता होसक्ता हे.

सोना, चांदी, पाषाण, रत्न, मृत्तिका प्रमुखकी यथाशक्ति जो प्राणी नयी प्रतिमां जरावे तो जरानेवाला प्राणी तीर्थंकर पद पामताहे.कममे कम एक अंगुष्टमात्रकीजी जो प्राणी नयी प्रतिमा जरावे सो प्राणी अवश्य देवादि सुख जोगके परमानंद पद प्राप्त होता हे. मोक्षफलका देनेवाला धर्मरूप वृक्षका मूल समान यह जैनागमको जो प्राणी लिखा

ताहे वांचताहे और जावसे सुनताहे तो उनको अ
यंत जावकी (सम्यक्तकी) विशुद्धी होती हे.

जो प्राणि जैनागम लिखाके गुणिजनोंको वांचने के लिए समर्पण कताहे उनकों उस शास्त्रके वर्ण मात्र अक्षरकी संख्या जितने वर्ष देवलोक गति प्राप्त होती हें।

जो ज्ञानकी जक्ति करी जातीहे वो ज्ञान विज्ञानसे शोजनीक होताहे. ज्ञान विज्ञानकी प्राप्तिकरने वाला अन्नदानहे इसलिए उत्तमजन हर वर्ष यथा शक्ती एकैक स्वामीवत्सल करें. बांधव कुटुंबको जिमाना यह संसार हेतुहे परं उस्मेंजी साधर्मीक वत्सल किया जायतो अवश्यमेव विशेष लाज प्रद होता हे. अर्थात् जवसंसारसे तारकता गुणनिष्पादक हो सक्ता हे.

हर वर्ष सर्व प्राणीने अपने अपने तरफसे अवश्यमेव एक वार तो स्वामी वत्सल करना हि चहिये. विवेक वान् श्रावक हर वर्ष एक वार तो अवश्यमेव श्रीसंघपूजा (प्रजावना) यथाशक्ति करे. योग्य आहार वस्त्र प्रमुख श्रीगुरुकों जलीजक्ति जावसें देवे. यद्यपि अपनी विशेष शक्ति न होय तथापि यथाशक्ती सत्पात्रोंकों असन, पान, खादिम स्वादिम, वस्त्र, पात्र, औषध प्रमुख अवश्य मेव देवे.

कूवा, आराम, वगीचा, वृक्ष, तलाव, गो प्रमुख जो दान करते हे तथापि उनका जल प्रमुखको हानी नही आती हे प्रत्युत उनकी वृद्धि होतीहे तेसें सत्पात्रमें दान देनेसें धन जाता नही हें परं प्रत्युत उनकी वृद्धि करता हे एसा समजना चहिये.

प्रत्यक्ष देखियें की दान देने मे और भुक्तभो गी होनेमे कितना वडा अंतर(फरक) देखाजाताहे. भुक्त भोग (खायापीया) डुसरे दिनहि विष्टारूप होजाता हे. और दान दिया अक्षत होता हे (वृद्धि पामताहे) वास्तव में विचार किजीयें की देनेमें अ धिक लाभ हुवा कीखाय खरचाय वेठनेमें अधिक लाभ होता हे?सो विचारवंत आपहि समज सक्के हे.

शतसः प्रयाश करके प्राप्त किया और प्राणसेंभी अधिक वल्लभ, यह धन हे. उनकी गती (कार्य)मात्र एकदानहि हे.अन्य गतिजो देखिजाती हे सो मात्र विपत्ती समजीजाती हे. न्यायमार्गसे उपार्जित कि ये धनको जो विवेकी जन सप्त क्षेत्रमे नियोजित करते हे सो श्रावक अपने धन और जीवितकों स फल कर सक्के हे.

॥ इति दिनचर्यायां षष्टः वर्गः समाप्तः॥

इति चारित्रसुंदर गणि विरचितः आचार ग्रंथः समाप्तः

अथ वार्षिकचर्या माह

जैनोंको वर्षदिनमे अवश्य ग्यारह कृत्य करने चहिये सो वताते हे· प्रथम संघपूजा करनी सो यथाशक्ती नवकारवालीसें लेके सोंनामोहोर प्रमुख सव श्रावकोंमे अथवा अपने अपने गछमे वाटनी· अभी वर्त्तमानकालमे जिस्कों (पहिरावनी) कहते हें सो यथाशक्ती वर्षमे एक दो चार वार अवश्य करना चाहिये (इससें महालाभ होता हे)

दूसरा कृत्य साधर्मीक वात्सल्य दरवर्षमे एकवारतो अवश्यमेव करना· दुःखी जैनोंका यथायोग्य यथाशक्ती समुद्धरण करना. गुप्त दान करना· श्रावकोंकों आमंत्रण करके अंतरंग भक्तिभावसे जिमाना. और तांवुल पुष्पादिक देके प्रणाम करके सवका सत्कार करना· इससें तीर्थंकर गोत्र वंध होता हे·

तीसरा कृत्यमे अष्टाहिक यात्रा सो अष्टान्हिका महोत्सव मंदरजीमें करना· नही वनेतो एक वर्षमे एक वार पूजा तो अवश्य पढानी. ॥ चोथा कृत्यमें रथयात्रा सो एक वर्षमे एक वार अवश्य रथ निकालना· एकिलेसे नवनेतो कितनेक समुदाय मिलकेभी अवश्य करना· ॥ पांचमां कृत्यमे तीर्थयात्रा सो पंचतीर्थी वा हर कोइभी तीर्थकी समुदायसहित यथाशक्ती हरएकवर्ष एक यात्रा तो अवश्यकरनी.

छठे कृत्यमें देवद्रव्य वृद्धि करना. यथाशक्ती यथायोग्य एकवार तो भंडार ढोकना.चढावा बोलना.

सातमे कृत्यमे स्नात्रादि पूजा पढाना. पुण्यवान प्राणी नित्य स्नात्र पढातेहे यदि न बनेतोभी पर्वणी प्रमुखमे पढानी और एकवर्षमे जघन्यसे एकवारता अवश्यमेव स्नात्रपूजा पढानीइससेंभी अधिक लाभहे.

आठमें कृत्यमे हरवर्ष एकवारतो अवश्य विशेष विधिसे श्रुत.ज्ञान पूजा करना. यद्यपि ज्ञान पूजा हरहमेशका कर्तव्य हे तथापि ज्ञान पंचमी प्रमुख सब पंचमीके दिन यथाशक्ती वासक्षेप धूप दीप नैवेद्य.रोकनाणा वस्त्रादिकसे ज्ञानपूजा अवश्य करनी.

॥ नवमें कृत्यमे हरवर्ष एक उद्यापन करना.इसमें यह विचारहे की हरेक प्राणीकों हरवर्ष एकेक तपतो नया जघन्यसें करनाहि चहिये.जो तप करना उस्का उद्यापन अवश्य करना. यद्यपि सब तपके उद्यापन नहि बन शके तो एक तपका तो जरूर करना.

॥ दशमे कृत्यमे तीर्थ प्रभावना करना. इस्मे.रथ नीकालना. गुर्वादीकोका नगर प्रवेश मोठव करना ग्यारमें कृत्यमे हरवर्ष पापकी शुद्धीकेलिए गुरुके पास वार्षिक पापकी आलोयणा लेणी. वर्ष दिवसमे अपने जाणतां अणजाता जो कुछ पाप हुवे होय सो गुरुकों कहना और उन पापकी शुद्धीकेवास्ते जो

प्रायश्चित (तप) करना कहेसो स्विकार करना ॥

इति दिनचर्यायां वार्षिक कृत्यानि ॥

॥ अथ आजन्म कृत्यान्याह ॥

त्रिवर्ग सिद्धिकेलिए सर्व प्राणिमात्रनें अपने जन्मसें जीवित पर्यंत अठारह कृत्य करना सो कहते हैं.

प्रथम कृत्य यहहे की जैनोने धर्म, अर्थ, काम यह तीन वर्ग यथायोग्य साधन हो शके एसे स्थान पर निवास करना क्योंकी जहां जिनमंदिर, अपने स्वजातीयजन, अपने गुरुकी जोगवाई, खान पान शुद्धी न होय एसे स्थानपर रहनेंसें सुख न हो सकेगा.

डुसरा कृत्य यहहे की त्रिवर्गसिद्धिके लिए यथायोग्य विद्याभ्यास करणा क्यों की संपूर्ण विद्या न होय तो सर्व प्रकारसे हानी प्राप्त होवेगी. त्रिवर्ग संसिद्धि न हो शकेगी.

तीसरा कृत्य उत्तम स्त्रीसे लग्न करना क्यों की स्त्री विना त्रिवर्गका सुख साधन न हो सक्ता हे.

चोथा कृत्यमे सन्मित्रोंसें मित्रता रखणी क्यों की सन्मित्रोंके सहवाससे कइकइ वातोंका लाभ मिल शक्ता हे नहिबणे तोभी एक दो धर्ममित्रतो अवश्य रखना चाहिये.

पंचम कृत्य यहहे की उत्तम प्राणीने यथाशक्ती एक जिन मंदिर अवश्य करना क्यों की इससे लक्ष्मी की साफल्यता और जन्म सफल होता हे.

छठे कृत्यमें अपने न्यायोपार्जित वित्तसें वहुत नहितो एक दो चारजी प्रतिमा जरावणी.

सातमे कृत्यमें यथाशक्ती प्रतिष्टा अंजन शलाकाके महोत्सव करने.

आठमे कृत्यमें पुत्रादिकोंकों धर्मयोग्य करने.

नवमें पदस्थोके पद महोत्सव यथाशक्ती करना.

दशमें कृत्यमे नीति, व्यवहारीक, धार्मीक शास्त्रें वांचनेका, संग्रह करनेका सोख रखणा.

ग्यारहमें कृत्यमें पौषधशाला, विद्याशाला, धर्मशाला, औषधशाला, पांगुलाशाला यथाशक्ती करना.

वारहमें कृत्यमे धर्म शुद्धिके लिए प्रतिमा वहना.

तेरहमे कृत्यमें जीवित पर्यंत सम्यक्त पालना-

चवदमे कृत्यमें जीवित पर्यंत यथाशक्ती व्रत पच्चरकाणकों निरतिचार परिपालन करना.

पंदरेमे कृत्यमें शक्ती होय तो दीक्षा लेना.

सोलहमे कृत्यमें वृद्धावस्थामें आरंज परिग्रह और अधिक खटपटोंका त्याग करना.

सत्तरामे कृत्यमे वृद्धावस्थामे शीलपरिपालन करना.

अठारहमें कृत्यमें अपना शमाधि मरण होय एसे साधन न रखने (सत्संगती प्रमुख रखके डुर्गती सें वचनां. और मनुष्य जवकों सफल करना ॥

॥ इति आजन्म कृत्यानि समाप्तानि ॥

॥ अथ चतुर्थ परिच्छेद प्रारंभः ॥

॥ अथश्री सीमंधरजिन स्तवन ॥ रासडाना राग मां ॥ रुपैयो ते आलुं रोकडो. महारा वालाजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ मनडुं ते महारुं मोकले, महारावालाजीरे ॥ ससिहर साथें संदेश ॥ जइने कहेजो महरावाला जी रे ॥ ए आंकणी ॥ जरतना जक्तने तारवा ॥ मा० ॥ एक वार आवोने आदेश ॥ जइ० ॥ १ ॥ प्रजुजी वसो पुष्करावती ॥ मा० महाविदेह खेत्र मफार ॥ जइ० ॥ पुरी राजें पुंडरिगिणी ॥ मा० ॥ जिहां प्रजुनो अवतार ॥ जइ० ॥ २ ॥ श्री सीमंधर साहेवा ॥ मा० ॥ विचरंता वीतराग ॥ जइ० ॥ पडिवोहे बहु प्राणीने ॥ मा० ॥ तेहनो पामे कुण ताग ॥ जइ० ॥ ३ ॥ मन जाणे ऊडी मलुं ॥ मा० ॥ पण पोतें नहीं पांख ॥ जइ० ॥ जगवंत तुम जोवा जणी ॥ मा० ॥ अलजो धरे छे ए आंख ॥ जइ० ॥ ४ ॥ डुर्गम महोटा डुंगरा ॥ मा० ॥ नदी नालानो नहिं पार ॥ जइ० ॥ घाटीनी आंटी घणी ॥ मा० ॥ अटवीपंथ अपार ॥ जइ० ॥ ५ ॥ कोडी सोनैये कासीदी ॥ करनारो नहीं कोय ॥ जइ० ॥ कागलीयो केम मोकलुं ॥ मा० ॥ होंश तो नित्य नवली होय ॥ जइ० ॥ ६ ॥ लखुं जे जे लेखमां ॥ मा० ॥ लाख गमे अजिलाप ॥ जइ० ॥

तमें लेजामां ते लहो ॥ मा० ॥ मुफ मन पूरे छे सांख ॥ जइ० ॥ ७ ॥ लोका लोक सरूपना ॥ मा० ॥ जगमां तुमें छो जाण ॥ जइ० ॥ जाण आगें शुं जणावीयें ॥ मा० ॥ आखर अमें अजाण ॥ जइ० ॥ ॥ ८ ॥ वाचक उदयनी विनति ॥ मा० ॥ ससिहर कह्या संदेश ॥ जइ० ॥ मानी लेजो महारी ॥ मा० ॥ वस्ति दूर विदेश ॥ जइ० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री युगमंधर जिन स्तवन ॥

मधुकरनी देशीमां ॥

॥ काया पामी अति कूडी, पांख नहींरे आवुं ऊडी, लब्धि नहीं कोये रूडीरे ॥ श्रीयुग मंधरने केजो ॥ दधिसुत विनतमी सुणजो रे ॥ १ ॥ श्रीयुग० ॥ ए आंकणी ॥ तुम सेवामांहे सुरकोमी, ते इहां आवे एक दोमी, आश फले पातक मोमीरे ॥ श्रीयु० ॥ २ ॥ डुखम समयमां एणे जरतें, अतिशय नाणी नवि वरते ॥ कहीयें कहो कोण सांजल तेरे ॥ श्रीयुग० ॥ ३ ॥ श्रवणें सुखीया तुम नामें, नयणां दरिसणनवि पामे, एतो ऊगमानो गामेंरे ॥ श्रीयुग० ॥ ४ ॥ चार आंगल अंतर रहेवुं, शोकम लीनी परें डुःख सहेवुं, प्रजु विना कोण आगल कहेवुं रे ॥ श्रीयुग० ॥ ५ ॥ महोटा मेहेल करी आपे, वेहुने तोल करी थापे, सज्जन जस जगमां व्यापे रे ॥ श्रीयुग० ॥ ६ ॥ वेहुनो एक मतो थावे,

केवल नाण जुगल पावे, तो सविवात वनी आवे रे ॥ श्रीयुग० ॥ ७ ॥ गजलंछन गजगतिगामी, विचरे विप्रविजय स्वामी, नयरी विजया गुणधामी रे ॥ श्रीयुग० ॥ ८ ॥ मात सुतारायें जायो, सुदृढ नरपति कुल आयो, पंमित जिनविजयें गायो रे ॥ श्रीयुग० ॥ इति ॥

॥अथ वीजनुं स्तवन ॥ फत्तमल पाणीमाने जाय, ॥ ए देशी ॥

॥ प्रणमी शारद माय, शासन वीर सुहं करूं जी ॥ वीज तिथि गुणगेह, आदरो नवियण सुंदरू जी ॥ १ ॥ एह दिन पंच कल्याण, विवरीने कहुं ते सुणो जी ॥ माहा शुदि वीजें जाण, जन्म अजिनंदन तणो जी ॥ २ ॥ श्रावण शुदिनी हो वीज, सुमति चव्या सुरलोकथी जी ॥ तारण नवोदधि तेह, तस पद सेवे सुरथोकथी जी ॥ ३ ॥ समेतशिखर शुनगाण, दशमा शीतल जिन गणुं जी ॥ चैत्र वदिनी हो वीज, वस्या मुक्ति तस सुख घणुं जी ॥४॥ फाल्गुन पासनी वीज, उत्तम उज्ज्वल मासनी जी ॥ अरनाथ तस च्यवन, कर्मक्षयें तव पासनी जी ॥ ५ ॥ उत्तम माघज मास, शुदि वीजें वासुपूज्यनोजी ॥ एहिज दिन केवल नाण ॥ शरण करो जीनराजनोजी ॥६॥ करणी रूप करो खेत, समकित वीज रोपो तिहां जी ॥ खातर किरियाहो

जाण, खेड शमता करी जिहांजी ॥ ७ ॥ उपशम तजुप नीर, समकित ठोम्क प्रगट होवे जी ॥ संतोष केरी हो वाम्क, पच्चरकाण व्रत चोकी सोहे जी ॥ ८ ॥ नासे कर्म रिपु चोर, समकित वृक्ष फल्यो तिहां- जी ॥ मांजर अनुजव रूप, उतरे चारित्र फल जि- हां जी ॥ ए ॥ शांति सुधारस वारी, पान करी सुख लीजीयें जी ॥ तंबोल सम ल्या स्वाद, जीवने संतो प रस किजीयें जी ॥ १० ॥ वीज करो वावीश उत्कृष्टी वावीश मासनी जी ॥ चोविहार उपवास पालियें शील वसुधासनी जी ॥ ११ ॥ आवश्यक दो य वार, पमिलेहण दोय लीजीयें जी ॥ देववंदन त्रण काल, मन वच कायायें कीजीयें जी ॥ १२ ॥ ऊजमणु शुज चित्त, करी धरीयें संयोगथी जी ॥ जिन वाणी रस एम, पीजीयें श्रुत उपयोगथी जी ॥ १३ ॥ एणि विध करियें हो वीज, रागने द्वेष दूरें करी जी ॥ केवल पद लहि तास, वरे मुक्ति उलट धरी जी ॥ १४ ॥ जिन पूजा गुरु जक्ति, विनय करी सेवो सदा जी ॥ पद्मविजयनो शिष्य,जक्ति पामे सुख संपदा जी ॥१५॥ इति श्री वीज तिथिनुं स्तवन ॥

॥ अथ श्री पंचमीनुं लघुस्तवन लिख्यते ॥

॥ पंचमीतप तमें करो रे प्राणी, जेम पामो नि र्मल ज्ञान रे ॥ पहेलुं ज्ञानने पठी क्रिया, नहिं को इ ज्ञानसमान रे ॥ पंचमी० ॥ १ ॥ नंदीसूत्रमां ज्ञा

न वखाएयुं, ज्ञानना पांच प्रकार रे ॥ मति श्रुत अ
वधि ने मनःपर्यव, केवल एक उदार रे ॥ पंचमी०
॥ २ ॥ मति अठावीश श्रुत चउदह विह, अवधि
असंख्य प्रकार रे ॥ दोय ज्ञेदें मनः पर्यव दाख्युं, के
वल एक उदार रे ॥ पंचमी० ॥ ३ ॥ चंद्र सूर्य ग्रह
नक्षत्र तारा, जेहवो तेज आकाश ॥ केवलज्ञान स
मुं नहिं कोइ, लोकालो प्रकाश रे ॥ पंचमी० ॥ ४ ॥
पारसनाथ प्रसाद करीने, ह्मारी पूरो उमेद रे ॥ स
मयसुंदर कहे हुं पण पामुं, ज्ञाननो पांचमो ज्ञेद रे
॥ पंचमी० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ ज्ञानपंचमी स्तवनं

॥ पुण्य प्रशंसीयें ॥ एदे शी ॥ सुत सिद्धारथ
ज्ञूपनोरे ॥ सिद्धारथ ज्ञगवान ॥ वारह परषदा
आगलें रे ॥ ज्ञापें श्रीवर्द्धमानोरे ॥ १ ॥ ज्ञवियण
चित्त धरो ॥ मन वच काय अमायो रे ॥ ज्ञान
ज्ञक्ति करो ॥ ए आंकणी ॥ गुण अनंत आतम
तणारे, मुख्यपणे तिहां दोय ॥ तेमां पण ज्ञानज
वडुंरे ॥ जिणथी दंसण होयरे ॥ २ ॥ ज्ञ० ॥ ज्ञाने
चारित्र गुण वधेरे, ज्ञान उद्योत सहाय ॥ ज्ञानें
स्थिविरपणुं लहेरे, आचारज उवझायरे ॥ ३ ॥
ज्ञ० ॥ ज्ञानी श्वासो श्वासमांरे, कठिण करम करे
नाश ॥वन्हि जिम इंधण दहे रे, क्षणमां ज्योति प्र-
काशो रे ॥ ४ ॥ ज्ञ० ॥ प्रथम ज्ञान पछें दया

रे, संवर मोह विनाश ॥ गुण ठाणंग पग थालीयें रे, जेम चढे मोक्ष आवासो रे ॥ ५ ॥ ज० ॥ मइ सुअ ओहि मणपज्जवा रे, पंचम केवल ज्ञान ॥ चउ मुंगा श्रुत एक ठे रे, स्वपर प्रकाश निदान रे ॥६॥ ज० ॥ तेहनां साधन जे कह्यां रे, पाटी पुस्तक आदि ॥ लखे लखावे सांचवे रे, धर्मी धरी अप्रमादो रे ॥ ७ ॥ ज० ॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, ज णतां करे अंतराय ॥ अंधा बहेरा बोबडा रे, मुंगा पांगुला थायरे ॥ ८ ॥ ज० ॥ जणतां गुणतां न आ वडे रे, न मले वल्लज चीज ॥ गुण मंजरी वरदत्त परेंरे, ज्ञान विराधन बीज रे ॥ ए॥ ज० ॥ प्रेमें पूछे परखदा रे, प्रणमी जग गुरु पाय ॥ गुणमंजरी वर दत्तनो रे, करो अधिकार पसायो रे ॥ १० ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ कपूर होये अति उजलोरे ए देशी ॥

॥ जंबुद्वीपना जरतमां रे, नयर पदम पुरखास॥ अजितसेन राजा तिहां रे, राणी यशोमती तास रे ॥ १ ॥ प्राणी आराधो वर ज्ञान ॥ एहज मुक्ति निदान रे ॥ प्राणी० ॥ ए आंकणी ॥ वरदत्त कुंवर तेहनो रे, विनयादिक गुणवंत ॥ पितरे जणवा मूकियोरे, आठ वरस जब हुंत रे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ पंमित यत्न करे घणो रे. ठात्र जणावण हेत ॥ अक्षर एक न आवडे रे, ग्रंथतणी शी चेत रे ॥ ३ ॥प्रा०॥

कोढें व्यापी देहडी रे, राजा राणी सचिंत ॥ श्रेष्ठी तेहीज नयरमां रे, सिंहदास धनवंत रे ॥ ४ ॥प्रा०॥ कपूरतिलका गेहिनी रे, शीले शोभित अंग ॥ गुण मंजरी तस बेटडी रे, मुंगी रोगें व्यंग रे ॥ ५ ॥ प्रा० ॥ शोल वरषनी सा थइ रे, पामी योवन वेश॥ डुर्नग पण परणे नहीं रे, मात पिता धरे खेद रे ॥ ६ ॥ प्रा० ॥ तेणें अवसरे उद्यानमां रे, विजयसेन गणधार ॥ ज्ञान रयण रयणायरू रे, चरण करण व्रतधार रें ॥ ७ ॥ प्रा० ॥ वनपालक नूपालने रे, दीध वधाई जाम ॥ चतुरंगी सेना सजी रे, वंदन जावे ताम रे ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ धर्मदेशना सांजले रे, पुरजन सहित नरेश ॥ विकसित नयन वदन मुदा रे, नहिं प्रमाद प्रवेश रे॥ ए॥प्रा०॥ ज्ञान विराधन परजवे रे, मूरख परआधीन ॥ रोगे पीड्या टलवले रे, दीसे डुःखीया दीन रें, ॥ १० ॥ प्रा० ॥ ज्ञान सार संसारमां रे, ज्ञान परमसुखहेत ॥ ज्ञान विना जग जीवमा रे, न लहे तत्व संकेत रे ॥ ११ ॥प्रा०॥ श्रेष्ठी पूछे मुणींदने रे, नांखो करुणावंत ॥ गुण मंजरी मुज अंगजा रे, कवण कर्म विरतंत रे ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ सूरती महिनानी देशीमां ॥

॥ धातकी खंडना जरतमां, खेटक नयर सुठाम॥ व्यवहारी जिन देव ठे, घरणी सुंदरी नाम ॥ १ ॥

अंगज पांच सोहामणा, पुत्री चतुरा चार ॥ पंमित पासें शीखवा, तातें मुक्या कुमार ॥ २ ॥ बालख्ना वें रामत, करतां दहामा जाय ॥ पंमित मारे त्यारें, मा आगल कहे आय ॥ ३ ॥ सुंदरी सुखिणी शीखवे, जणवानुं नहीं काम ॥ पंड्यो आवे तेमवा, तो तस हणजो ताम ॥ ४ ॥ पाटी खमिया लेखण, वाली कीधां राख ॥ शठने विद्या नवि रुचे, जेम करहानें डाख ॥ ५ ॥ पामापरें महोटा थया, कन्या न दीये कोय ॥ शेठ कहे सुण सुंदरी, ए तुज करणी जोय ॥ ६ ॥ त्रटकी जांखे जामिनी ॥ वेटा वापना होय ॥ पुत्री होये मातनी, जाणे ठे सहु कोय ॥ ७ ॥ रे रे पापिणी सापिणी, सामा वोल म वोल॥ रीसाली कहे ताहरो, पापी वाप निटोल ॥ ८ ॥ शेठें मारी सुंदरी, काल करी ततखेव ॥ ए तुज वेटी उपनी, ज्ञानविराधन हेव ॥ ए ॥ मूर्गगत गुणमंजरी, जातिसमरण पामि ॥ ज्ञान दिवाकर साचो, गुरुने कहे शिरनामि ॥ १० ॥ शेठ कहे सुणो स्वामी, केम जाये ए रोग ॥ गुरु कहे ज्ञान आराधो, साधो वंछित योग ॥ ११ ॥ उज्ज्वल पंचमी सेवो, पंच वरस पंच मास ॥ "नमो नाणस्स" गणणुं गुणो, चोविहार उपवास ॥ १२ ॥ पूरव उत्तर सन्मुख, जपियें दोय हजार ॥ पुस्तक आगल ढोइये, धान्य फलादिक्दार ॥ १३ ॥ दीवो पंच दीवट तणो, सा

थियो मंगल गेह ॥ पोसहमां न करी शके, तेणवि
धि पारण एह ॥ २४ ॥ अथवा सौजाग्य पंचमी, उ
ज्वल कार्त्तिकमास ॥ जावज्जीव लगें सेवीयें, उजम
णा विधि खास ॥ २५ ॥ इति ॥

॥ ढाल चोथी ॥ एकवीशानी देशीमां ॥

॥ पांच पोथी रे, ठवणी पाठां विटांगणां ॥
चाबखी दोरा रे, पाटी पाटला वतरणां ॥ म
सी कागल रें, कांबी खमीआ लेखणी ॥ कवली डा
वली रे, चंद्रआ जरमर पुंजणी ॥ १ ॥ त्रूटक ॥ प्रा
साद प्रतिमा तास जुषण, केसर चंदन जावली ॥
वासकूंपि वालाकूंची, अगं लूहणां ठावमी ॥ कलश
थाली मंगलदीवो, आरतीने धूपणां ॥ चरवला मुह
पत्ती साहमीवत्सल, नोकरवाली थापना ॥ २ ॥
ढाल ॥ ज्ञान दरिसण रे, चरणनां साधन जे
कह्यां ॥ तप संयुत रे, गुणमंजरीयें सद्दह्यां ॥ नृप
पूठे रे, वरदत्त कुंवरनें अंग रे ॥ रोग उपनो रे, क
वण करमना जंग रे ॥ ३ ॥ त्रूटक ॥ मुनिराज जा
से जंबु द्वीपें, जरत सिंहपुर गाम ए ॥ व्यवहारी
वसु तास नंदन, वसु सार वसुदेव नाम ए ॥ वन
मांहे रमतां दोय बंधव, पुण्य योगें गुरु मल्या ॥ वे
राग्य पामी जोग वामी, धर्मधामी संचर्या ॥ ४ ॥
ढाल ॥ लघु बांधव रे, गुणवंत गुरु पदवी लहे ॥ प
णसय मुनिने रे, सारण वारण नितु दिए ॥ कर्म

योगे रे, अशुन्न उदय थयो अन्यदा ॥ संथारे रे पोरिसी नणी पोढ्यो यदा ॥ ५ ॥ त्रूटक ॥ सर्वघा निंद व्यापी, साधु मागे वायणां ॥ उंघमां अंतराय थातां, सूरि हुआ दूमणा ॥ ज्ञान ऊपर द्वेष जाग्यो, लाग्यो मिथ्या ज्रूतको ॥ पुण्य अमृत ढोली नाख्युं, नस्यो पाप तणो घडो ॥ ६ ॥ ढाल ॥ मन चिंतवे रे, कां मुज लागुं पाप रे ॥ श्रुत अन्न्यास्यो रे, तो एवडो संताप रे ॥ मुजवांध वरे न्नोयण सयण सुखें करे ॥ मूरखना रे, आठ गुणो मुख उच्चरे ॥ ७ ॥ त्रूटक ॥ वार वासर कोइ मुनिने, वायणा दीधी नहीं ॥ अशुन्न ध्यानें आयु पूरी, न्नूप तुज नंदन सही ॥ ज्ञानविराधन मूढ जन्नपणुं, कोढनी वेदन लही ॥ वृक्षवांधव मान सरवर, हंसगति पाम्यो सही ॥ ० ॥ ढाल ॥ वरद-त्तने रे, जातिस्मरण उपनुं ॥ नव दीठो रे, गुरु प्रणमी कहे शुन्नमनो ॥ धन्य गुरुजी रे, ज्ञानजगत्रय दीवको ॥ गुण अवगुण रे, नासन जे जग परवडो ॥ ए ॥ त्रू० ॥ ज्ञानपावन सिद्धि साधन, ज्ञान कहो केम आवडे ॥ गुरु कहे तपथी पाप नासे, टाढ जेम घन तावडे ॥ न्नूप न्नणें पुत्रने प्रन्नु, तपनी शक्ति न एवडी ॥ गुरु कहे पंचमी तप आराधो, संपदा ह्यो वेवडी ॥ १० ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥

॥ सज्जरुवयण सुधारसें रे, नेदी साते धात ॥ त
पशुं रंग नागो ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नाठो रो
गमिथ्यात्व ॥ त० ॥ १ ॥ पंचमी तप महिमा घणो
रे, पसस्यो महीयल मांही ॥ त० ॥ कन्यासहस सयं
वरा रे, वरदत्त परण्यो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥ नूपें
कीधो पाटवी रे, आप थयो मुनि नूप ॥ त० ॥ नी
म कांत गुणें करी रे, वरदत्त रवि शशि रूप ॥ त०
॥ ३ ॥ राज रमा रमणी तणा रे, नोगवे नोग अ
खंड ॥ त० ॥ वरसें वरसें उजवे रे, पंचमी तेज
प्रचंम ॥ त० ॥ ४ ॥ नुक्तनोगी थयो संयमी रे, पा
ले व्रत खट काय ॥ त० ॥ गुणमंजरी जिनचंद्रनेरे,
परणावे निज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख विलसी थइ
साधवी रे, वैजयंतें दोय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण
ऊपनो रे, जिहां सीमंधर देव ॥ त० ॥ ६ ॥ अमर
सेन राजा घरें रे, गुणवंत नारी पेट ॥ त० ॥ लक्ष
ण लक्षित रायने रे, पुण्यें कीधो नेट ॥ त० ॥ ७ ॥
शूरसेन राजा थयो रे, शो कन्या नरतार ॥ त० ॥
सीमंधर सामी कने रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥
त० ॥ तिहां पण ते तप आदर्युं रे, लोक सहित,
नूपाल ॥ त० ॥ दश हजार वरसां लगे रे, पाले रा
ज्य उदार ॥ त० ॥ ८ ॥ चार महाव्रत चोंपशुं रे
श्रीजिनवरनी पास ॥ त० ॥ केवल धरि मुक्तें गयो

रे, सादि अनंत निवास ॥ त० ॥ १० ॥ रमणी विजय शुजापुरी रे, जंबु विदेह मकार ॥ त० ॥ अमरसिंह महीपालने रे, अमरावती घरनार ॥ त० ॥ ११ ॥ वैजयंतथकी चवी रे, गुणमंजरीनो जीव ॥ त० ॥ मान सरस जेम हंसलो रे, नाम धर्युं सुग्रीव ॥ त० ॥ १२ ॥ वीशे वरसें राजवि रे, सहस चोराशी पुत्र ॥ त० ॥ लाख पुरव समता धरे रे, केवल ज्ञान पवित्र ॥ त० ॥ १३ ॥ पंचमीतप महिमाविषे रे, नांखे निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणें जेहथी सुख लह्युं रे, तेहने तस उपकार ॥१४॥ त० ॥ इति ॥

॥ढाल छठी ॥ करकंकुने करुं वंदना ॥ ए देशी ॥

॥ चोवीश दंमक वारवा ॥ हुं वारी लाल ॥ चोवीशमो जिनचंदरे ॥ हुं वारी लाल ॥ प्रगट्यो प्राणत स्वर्गथी ॥ हुं० ॥ त्रिशला उर सुखकंदरे ॥ हुं० ॥ १ ॥ महावीरने करुं वंदना ॥ हुं० ॥ ए आंकणी ॥ पंचमी गतिने साधवा ॥ हुं० ॥ पंचम नाण विलास रे ॥ हुं० ॥ माहानिशीथ सिद्धांतमां ॥ हुं० ॥ पंचमी तप प्रकाश रे ॥ हुं० ॥ २ ॥ अपराधी पण उद्धर्यो ॥ हुं० ॥ चंम कोशियो साप रे ॥ हुं० ॥ यज्ञ करता ब्रामणो ॥ हुं० ॥ सरखा कीधा आप रे ॥ हुं० ॥ ६ ॥ देवानंदा ब्राह्मणी ॥ हुं० ॥ रिखजदत्त वली विप्ररे ॥ हुं० ॥ व्याशी दिवस संबंधथी ॥ हुं० ॥ कामित पूर्या क्षिप्र रे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ कर्म रोगने

टालवा ॥ हुं० ॥ सवि औषधनो जाण रे ॥ हुं० ॥ आदर्यो में आशा धरी ॥ हुं० ॥ मुज उपर हित आणिरे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ श्रीविजयसिंह सूरीशनो ॥ हुं० ॥ सत्यविजय पन्यासरे ॥ हुं० ॥ शिष्यकपूरविजय कवि ॥ हुं० ॥ चंदकिरण जस जास रे ॥ हुं० ॥ ६ ॥ पास पंचासरा सान्निध्यें ॥ हुं० ॥ खिमाविजय गुरु नाम रे ॥ हुं० ॥ जिनविजय कहे मुऊ हजो ॥ हुं० ॥ पंचमी तप परिणाम रे ॥ हुं० ॥ ७ ॥ कलश ॥ इय वीर नायक, विश्वनायक, सिद्धि दायक, संस्तव्यो ॥ पंचमी तप संस्तवन टोडर, गुंथी निज कंठें ठव्यो ॥ पुण्य पाटण, क्षेत्रमांहे, सत्तर त्राणुं संवत्सरें ॥ श्रीपार्श्व जन्म, कल्याण दिवसे, सकल नवि, मंगल करे ॥८॥ इति श्रीपंचमीस्तवनम् ॥

॥ अथ श्री अष्टमीनु स्तवन लिख्यते ॥

॥ हांरे मारे ठाम धरमना साडा पचवीश देश जो ॥ दीपे रे त्यां देश मगध सहुमां शिरें रेलो ॥ हांरे मारे नगरी तेहमां राजगृही सुविशेष जो ॥ राजे रे त्यां श्रेणिक गाजे गज परें रे लो ॥१॥ हांरे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो ॥ विचरंतां तिहां आवी वीर समोसर्या रे लो ॥हां०॥ चउद सहस्स मुनिवरना साथें साथ जो ॥ सुधारे तप संयम शियले अलंकर्या रे लो ॥ २ ॥ हां० ॥ फूल्या रस नर फूल्या अंब कदंब जो ॥ जाणुं रे गुणशील

वन हसि रोमंचीयो रे लो ॥ हां० ॥ वाया वाय सुवाय तिहा अविलंब जो ॥ वासें रे परि मल चिहुं पासें संचियो रे लो ॥३॥ हां० ॥ देव चतुर्विध आवे कोमा कोड जो ॥ त्रिगडुंरे मणि हेम रजतनुं ते रचे रे लो ॥ हां० ॥ चोशठ सुरपति सेवे होमाहोम जो ॥ आगें रे रस लागे, इंद्राणी नचे रे लो ॥४॥ हां० ॥ मणिमय हेम सिंहासन वेठा आप जो ॥ ढाले रे सुर चामर मणि रत्ने जड्यां रे लो ॥ हां० ॥ सुणतां डुंडुभि नाद टले सवि ताप जो ॥ वरसे रे सुर फूल सरस जानू अड्यां रे लो ॥ ५ ॥ हां० ॥ ताजे तेजे गाजें घन जेम लुंब जो ॥ राजे रे जिन राज समाजे धर्मने रे लो ॥ हां० ॥ निरखी हरखी आवे जनमन लुंब जो ॥ पोपे रे रस न पडे धोंखे चर्ममां रे लो ॥ ६ ॥ हां० ॥ आगम जाणि जिननों श्रेणिक रायजो ॥ आव्योरे परवरियो हय गय रथ पायगें रें लो ॥ हां० ॥ दइ प्रदक्षिणा वंदी बेठो ठाय जो ॥ सुणवा रे जिनवाणी मोटे चायगें रे लो ॥७॥हां०॥ त्रिभुवन नायक लायक तव जगचंत जो ॥ आणीरे जन करुणा धर्मकथा कहे रे लो ॥ हां० ॥ सहज विरोध विसारी जगना जंत जो ॥ सुणवा रे जिनवाणी मनमां गह गहेरे लो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ वालम वहेलारे
आवजो ॥ ए देशी ॥

॥ वीरजिनवर एम उपदिशे, सांजलो चतुर सुजाण रे ॥ मोहनी निंदमां कां पमो, उलखो धर्मनां ठाण रे ॥ विरति ए सुमति धरी आदरो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ परिहरो विषय कषाय रे, वापमा पंच परमादथी ॥ कां पडो कुगतिमां धाय रे ॥ वि० ॥२॥ करी सको धर्मकरणी सदा, तो करो ए उपदेश रे॥ सर्वकाले करी नवि शको, तो करो पर्व सुविशेषरे ॥ वि० ॥ ३ ॥ जू जूआ पर्व षट्नां कह्यां, फल घणां आगमें जोय रे ॥ वचन अनुसारें आराधतां, सर्वथा सिद्धिफल होय रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जीवनें आयु परज्ञव तणुं, तिथिदिने बंध होय प्रायरे ॥ तेह जणि एह आराधतां, प्राणिउ सज्ञति जाय रे ॥ वि०॥५॥ तेहवे अष्टमी फल तिहां, पूठे गौतम स्वामरे ॥ ज्ञविक जीव जाणवा कारणे, कहे वीर प्रज्ञु तामरे ॥ वि० ॥ ६ ॥ अष्ट महा सिद्धि होय एहथी, संपदा आठनी वृद्धि रे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजे, एहथी आठ गुण सिद्धिरे ॥ वि० ॥ ७ ॥ लाज्ञ होय आठ पडिहारनो, अठ पवयण फल होयरे ॥ नाश अरु कर्मनो मूलथी, अष्टमीनुं फल जोय रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ आदि जिन जन्म दीक्षा तणो, अजितनो जन्म कल्याण रे ॥ च्यवन संज्ञव तणो एह

तिथें, अजिनंदन निर्वाण रे ॥ वि० ॥ए॥ सुमति सु
व्रत नमि जनमीया, नेमनों मुक्तिदिन जाणरे ॥
पास जिन एह तिथे सिद्धला, सातमा जिनच्यवन
माण रे ॥ वि० ॥ १० ॥ एह तिथि साधतो राजिउं,
दंडवीरज लह्यो मुक्तिरे ॥ कर्म हणवा जणी अष्टमी,
कहे सूत्र निर्युक्तिरे ॥ ११ ॥ अतीत अनागत का
लना, जिन तणां केइ कल्याण रे ॥ एह तिथें
वली घणा संयमी, पामशे पद निर्वाणरे ॥ वि०
॥ १ ॥ धर्मवासित पशु पंखिआ, एह तिथे करे
उपवास रे ॥ व्रत धारि जीव पोसों करे, जेहने धर्म
अन्यास रे वि० ॥ १३ ॥ जांखियो वीरे आगम
तणो, जविक हित एह अधिकार रे ॥ जिन मुखें.
उच्चरी प्राणिया, पामशे जव तणो पार रे ॥ वि० ॥
॥ १४ एहथी संपदा सवि लहे, टले कष्टनी कोम
रे ॥ सेवजो शिष्य बुध प्रेमनो, कहे कांति करजोम
रे ॥ वि० ॥ १५ कलश ॥ एम त्रिजग जासन, अ
चल शासन, वर्द्धमान जिनेश्वरू ॥ बुध प्रेमगुरु,
सुपसाय पामी, संथूण्यो अल वेसरू ॥ जिन गुण
प्रसंगें, जण्यो रंगे, स्तवन ए, आगमी तणो ॥ जे ज
विक जावे, सुणे गावे, कांति सुख, पावे घणो ॥१॥
इति अष्टमी स्तवनं समाप्तं ॥

॥ अथ श्री एकादशी स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमि जिणंद, द्वारिका नगरी समोसस्या ॥ जगपति वंदवा कृष्ण नरिंद, जादव कोमशुं परिवस्या ॥ १ ॥ जगपति त्रीगुण फूल अमूल, नक्तिगुणे माला रची ॥ जगपति पूजी पूछे कृःष्ण, क्षायिक समकित शिवरुचि ॥ २ ॥ जगपति चारित्र धर्म अशक्त, रक्त आरंन्न परिग्रहे ॥ जगपति मुज आतम उद्धार, कारण तुम विण कोण कहे ॥ ३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुऊ नाथ, माथे गाजे गुणनिलो ॥ जगपति कोय उपाय बताव, जेमकरे शिववधू कंतलो ॥४॥ नरपति उज्ज्वलमागशिर मास आराधो एकादशी ॥ नरपति एकशोनेपचाश,कल्याणक तिथि उल्लसी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रे त्रण काल, चोवीशी त्रीशे मली ॥ नरपति नेवुं जिननां कल्याण, विवरी कहुं आगल वली ॥ ६ ॥ नरपति अर दीक्षा नमि नाण, मल्लिजन्म व्रत केवली ॥ नरपति वर्त्तमान चोवीशी, मांहे कल्याणक आवली ॥ ७ ॥ नरपति मौन पणे उपवास, दोढशो जप माला गणो ॥ नरपति मन वच काय पवित्र, चरित्र सूणो सुव्रत तणो ॥ ८ ॥ नरपति दाहिण धातकीखंम, पश्चिम दिशि इक्षुकारथी ॥ नरपति विजय पाटण अनिधान, साचो नृप प्रजापालथी ॥ ए ॥ नरपति नारी चंद्रावती तास, चंद्रमुखी गजगामिनी ॥ नर

पति श्रेष्ठी शूर विख्यात, शीयल सलीला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार, सार भूषण ची वर धरी ॥ नरपति जाये नित्य जिनगेह, नमन स्तवन पूजा करे ॥ ११ ॥ नरपति पोषे पात्र सुपात्र, सामायिक पोषध वरे ॥ नरपति देववंदन आवश्य क, काल वेलायें अनुसरे ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ एकदिन प्रणमी पाय, सुव्रत साधु तणा री ॥ विनयें विनवे शेठ, मुनिवर करी करुणा री ॥ १ ॥ दाखो मुऊ दिन एक, थोमो पुण्य कीयो री ॥ वाधे जिम वम बीज, शुभ अनुबंधी थयो री ॥ २ ॥ मुनि भाखे महाभाग्य, पावन पर्व घणां री ॥ एकादशी सुविशेष, तेहमां सुण सुमना री ॥ ३ ॥ सित एकादशी सेव, मास इग्यार लगें री ॥ अथवा वरस इग्यार, ऊजवी तपशुं वगे री ॥ ४ ॥ सांभलि सद्गुरु वेण, आनंद अति उल्लस्यो री ॥ तप सेवी ऊजविय, आरण स्वर्ग वस्यो री ॥ ५ ॥ एकविश सागर आय, पाली पुण्य वसें री ॥ सांभल केशवराय, आगल जेह थशे री ॥ ६ ॥ सोरीपुरमां शेठ, समुद्रदत्त वडो री ॥ प्रीतिमति प्रिया तास, पुण्यें जोग जड्यो री ॥ ७ ॥ तस कूखें अवतार, सूचित शुभ स्वपनें री ॥ जनम्यो पुत्र पवित्र, उत्तम ग्रह शुकने री ॥ ८ ॥ नालनिक्षेप निधान, भूमिथी प्रगट हवो री ॥ गर्भदोहद अनुभाव, सुव्रत नाम

ठव्यो री ॥ ए ॥ बुद्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र अ नेक नण्यो री ॥ यौवनवय अगीयार, रूपवती स्त्री परण्यो री ॥ १० ॥ जिन पूजन मुनिदान, सुव्रत प- चरकाण धरे री ॥ अगीयार कंचन कोम, नायक पुण्य नरे री ॥ ११ ॥ धर्मघोष अणगार, तिथि अ धिकार कहे री ॥ सांनलि सुव्रत शेठ, जाति स्मरण लहे री ॥ १२ ॥ निजप्रत्यय मुनि शाख, नक्तें तप उच्चरे री ॥ एकादशी दिन आठ, पहोरो पोसो धरे री ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ पत्नी संयुतें पोसह लीधो, सु- व्रत शेठें अन्यदा जी ॥ अवसर जाणी तस्कर आ व्या, घरमां धन लुंटे तदा जी ॥ १ ॥ शासन नक्तें देवि शक्तें, थंनाणा ते वापमा जी ॥ कोलाहल सुणि कोटवाल आव्यो, नूप आगल धस्या रांकडा जी ॥ २ ॥ पोसह पारी देव जुहारी, दयावंत लेइ नेटणो जी ॥ रायने प्रणमी चोर मूकावी, शेठें कीधो पार- णों जी ॥ ३ ॥ अन्य दिवस विश्वानल लागो, सो- रीपुरमां आकरो जी ॥ शेठजी पोसह समरस बेठा, लोक कहे हठ कां करो जी ॥ ४ ॥ पुण्यें हाट व. खारो शेठनी, नगरी सहु प्रशंसा करे जी ॥ हरखें शेठजी तपउजमणुं, प्रेमदा साथें आदरे जी ॥ ५ ॥ पुत्रने घरनो नार नलावी, संवेगी शिर सेहरोजी ॥ चउनाणी विजयशेखर सूरि, पासें तपव्रत आदरे जी

॥ ६ ॥ एक खट मासी चार चौमासी, दोसय छठ सो अठम करे जी ॥ बीजां तप पण बहुश्रुत सुव्रत, मौन एकादशी व्रत धरे जी ॥ ७ ॥ एक अधम सुर मिथ्यादृष्टि, देवता सुव्रत साधुने जी ॥ पूर्वोपार्जित कर्म उदेरी, अंगें वधारे व्याधिने जी ॥ ८ ॥ कर्में नडीयो पापें जकीयो, सुर कहे जाउं औषध जणीजी ॥ साधु न जाये रोष जराये, पाटु प्रहारें हण्यो मुनि जी ॥ ए ॥ मुनि मन वचन काय त्रियोगें, ध्यान अनल दहे कर्मने जी ॥ केवल पामी जिन पद रामी, सुव्रतनेम कहे श्यामने जी ॥ १० ॥

॥ ढाल चोथी ॥ कान पयंपे नेमने ए, धन्य धन्य यादव वंश ॥ जिहां प्रभु अवतस्या ए ॥ मुज मन मानस हंस, जयो जिन नेमने ए ॥ १ ॥ धन्य शिवा देवी मावडी ए, समुद्रविजय धन्य तात ॥ सुजात जगतगुरु ए, रत्नत्रयी अवदात ॥ जयो० ॥ २ ॥ चरण विराधीउपनो ए, हुं नवमो वासुदेव ॥ जयो० ॥ तिणे मन नवि उल्लसे ए, चरण धरमनी सेव ॥ जयो० ॥ ३ ॥ हाथी जेम कादव गल्यो ए, जाणुं उपादेय हेय ॥ जयो० ॥ तो पण हुं न करी शकुं ए दुष्ट कर्मना जेय ॥ जयो० ॥ ४ ॥ पण सरणो व लियातणो ए, कीजें सीजे काज ॥ जयो० ॥ एहवा वचनने सांजली ए ॥ बांह ग्रह्यानी लाज ॥ जयो० ॥ ५ ॥ नेम कहे एकादशी ए, समकित गुत आरा

ध ॥ जयो०॥ थाईश जिनवर वारमो ए, जावि चो वीशियें लाध ॥ जयो० ॥ ६ ॥ कलश ॥ इय नेमि जिनवर, नित्य पुरंदर, रेवताचल, मंडणो ॥ वाण नंदमुनि, चंद वरसें राजनगरें, संथुण्यो ॥ संवेग रंग, तरंग जलनिधि, सत्यविजय, गुरु, अनुसरी ॥ कपूरविजय कवि, क्षमा विजय गणि, जिन विजय जय, सिरि वरी ॥ १ ॥

॥ अथ श्री आराधनानुं स्तवन प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥ सकल सिद्धिदायक सदा, चोवीशे जिनराय ॥ सद्गुरु सामिनी सरसती, प्रेमें प्रणमुं पाय ॥ १ ॥ त्रिभुवनपति त्रिशला तणो, नंदन गुण गंभीर ॥ शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान वडवी र ॥ २ ॥ एक दिन वीर जिणंदने, चरणे करि पर- णाम ॥ भविक जीवना हित भणी, पूछे गौतम स्वा मि ॥ ३ ॥ मुक्तिमार्ग आराधियें, कहो किण परें अ रिहंत ॥ सुधां सरस तव वचन रस, भांखे श्री भग वंत ॥ ४ ॥ अतिचार आलोइयें, व्रत धरीयें गुरु शा ख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोराशी लाख ॥ ५ ॥ विधिशुं वली वोसिरावियें, पाप स्थान अढा र ॥ चार शरण नित्य अनुसरो, निंदो दुरित आ- चार ॥ ६ ॥ शुभकरणी अनुमोदियें, भाव भलो मन आण ॥ अणसण अवसर आदरी, नवपद जपो सु- जाण ॥ ७ ॥ शुभगति आराधन तणा, ए छे दश

अधिकार ॥ चित्त आणीने आदरो, जेम पामो भव पार ॥ ८ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ ए छिंडि किहां राखी ॥ ए देशी ॥

ज्ञान दरिसन चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार ॥ एह तणा इह भव परभवना, आलोइयें अतिचार रे ॥ १ ॥ प्राणी ज्ञान भणो गुणखाणी ॥ वीरवदे एम वाणी रे प्रा० ॥ ज्ञा० ॥ ए आंकणी गुरु उलवियें नहिं गुरु विनयें, कालें धरी बहुमान॥ सूत्र अर्थ तदुभय करी सूधां, भणीयें वही उपधान रे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ ज्ञा० ॥ ज्ञानोपकरण पाटी पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥ तेह तणी कीधी आशातना, ज्ञान भक्ति न संभाली रे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ भव परभव वलिय भवोभवे, मिछामुक्कड तेह रे ॥ ॥ ४ ॥ प्राणी समकित ल्यो शुद्ध जाणी ॥ ए आंकणी ॥ जिनवचनें शंका नवि कीजे, नवि पर मत अभिलाख ॥ साधुतणी निंदा परिहरजो, फलसंदेह म राख रे ॥ ५ ॥ प्रा० ॥ स० ॥ मूढपणुं छंडो परसंसा गुणवंतने आदरियें ॥ सामीनें धर्में करी थिरता, भक्ति प्रभावना करीयें रे ॥६॥ प्रा० ॥ ॥ स० ॥ संघचैत्य प्रासाद तणो जे, अवर्णवाद म न लेख्यो ॥ द्रव्य देवको जेविणसाड्यो, विणसंतां

उवेख्यो रे ॥ ७ ॥ प्रा० स० ॥ इत्यादिक विपरीत पणाथी, समकित खंड्युं जेह ॥ आस्रव० ॥ मिछा० ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ चारित्रल्यो चित्त आणी ॥ ए आंक णी ॥ पांच समिति त्रण गुप्ति विराधि, आठे प्रवच न माय ॥ साधुतणे धर्मे परमादें, अशुद्ध वचनमन काय रे ॥ ए ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ श्रावकने धर्मे सामा यिक, पोसहमां मन वाली ॥ जे जयणा पूर्वक जे आवे, प्रवचन माय न पाली रे ॥१०॥ प्रा० ॥ चा०॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र मोल्युं जेह ॥ आस्रव० ॥ मिछा० ॥ ११ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ वारें ज्ञेदें तप नवि कीधुं, छते योगें निज शक्तें ॥ धर्मे मनवचन काया वीरज, नवि फेरवियो जगतें रे ॥ ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ तपवीरज आचारें एणी परें विविध विराध्या जेह ॥ आस्रव० ॥ मिछा० ॥ १३॥ प्रा० ॥ चा० ॥ वलीय विशेषें चारित्र केरा, अतिचार आलोइयें ॥ वीर जिणेसर वयण सुणीने, पाप मयल सवि धोइयें रे ॥ १४ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ ॥ ढाल वीजी ॥ पामी सुगुरुपसाय रे ॥ ए देशी ॥

॥ पृथिवी पाणी तेउ रे, वाउ वनस्पति ॥ एपांचे थावर कह्यां ए ॥ करि करसण आरंज, खेत्र जे खेमीयां ॥ कूवा तलाव खणावीयां ए ॥ १ ॥ घर आरंज अनेक, टांकां जोंयरां ॥ मेडी माल चणावी याए ॥ लिंपण धूंपण काज, एणी परें परपरें ॥ पृथि

वी काय विराधीया ए ॥२॥ धोयण नाहण पाणी, जील ण अपकाय ॥ ठोतीधोती करी दूहव्यां ए ॥ जाठी गर कुंजार, लोह सोवनगरा ॥ जाडजुंजा लिहाला गरा ए ॥ ३ ॥ तापण शेकण काजें, वस्त्र निखारण ॥ रंगण रांधण रसवतीए ॥ एणी परे कर्मादान, परे परिं केलवी ॥ तेउ वाउ विराधीया ए ॥४॥ वाडीवन आराम, वावी वनस्पति ॥ पान फूल फल चुंटीयां ए ॥ पोंहक पापडी शाक, शेक्यां शूकव्यां ॥ छुंद्यां ठेद्यां आथीयां ए ॥ ५ ॥ आलसीनें एरंड, घांणी घालीने ॥ घणा तिलादिक पीलीया ए ॥ घाली कोलुं मांहि, पीली सेलडी ॥ कंद मूल फल वेचीयां ए ॥ ६ ॥ एम एकेंड्रिय जीव, हण्या हणाविया ॥ हणतां जें अनु मोदीया ए ॥ आ जव परजव जेह, वलिय, जवोजवें ॥ ते मुऊ मिठामि डुक्कडं ॥ ७ ॥ क्रमी सरमीयां कीडा, गाडर गंडोला ॥इयल पूरा अ लसीयां ए ॥ वाला जलो चुडेल, विचलित रसत णा ॥ वली अथाणां प्रमुखनां ए ॥ ७ ॥ एम बे इं ड्रिय जीव, जे में दूहव्या ॥ ते मुऊ० ॥ उदेही जूं- लीख, मांकड मंकोडा ॥ चांचड कीडी कुंथुआ ए ॥ए॥ गद्दहीयां घीमेल, कान खजूरडा ॥ गींगोडांधनेडी यां ए ॥ एम तेइंड्रिय जीव, जे में डुहव्या ॥ ते मु ऊ० ॥ १० ॥ माखी मत्सर डांस; मसा पतंगीया ॥ कंसारी कोलियावडाए ॥ ढींकणवींछु तीड, जमरा

जमरीयो ॥ कोंता वग खम्मांकमी ए ॥ ११ ॥ एम चौरिंद्रिय जीव, जे में दूहव्या ॥ ते मुज० ॥ जलमां नाखी जाल, जलचर दूहव्या ॥ वनमा मृग संतापी या ए ॥ १२ ॥ पीड्या पंखी जीव, पामी पासमां ॥ पोपट घाल्या पांजरे ए ॥ एम पंचेंद्रिय जीव, जे में डुहव्या ॥ ते मुज० ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ प्रथम गोवाला तणे जवे जी ॥ ए देशी ॥

॥ क्रोध लोज जय हास्यथी जी, बोल्यां वचन असत्य ॥ कूड करी धन पारकां जी, लीधां जेह अदत्त रे ॥ जिनजी ॥ १ ॥ मिछाडुक्कड आज, तुज साखें महाराज रे ॥ जिनजी ॥ देइ सारूंकाज रे ॥ जिनजी ॥ मि० ॥ ए आंकणी ॥ देव मनुज तिर्यंचना जी, मैथुन सेव्यां जेह ॥ विषयरस लंपटपणे जी, घणुं विटंब्यो देह रे ॥ जि० ॥ २ ॥ मि० ॥ परिग्रहनी ममता करी जी, जव जव मेली आथ ॥ जे जिहांनी ते तिहां रही जी, कोइ न आवी साथ रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ मि० ॥ रयणी जोजन जे कस्यां जी, कीधा जक्ष्य अजक्ष्य ॥ रसना रसनी लालचें जी, पाप कस्यां प्रत्यक्ष रे ॥ जि० ॥४॥ मि०॥ व्रत लेई विसारीयां जी, वली जांग्यां पच्चखाण ॥ कपटहेतु किरिया करी जी, कीधां आप वखाण रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ त्रण ढाल आठे डुहे जी, आलोया

अतिचार ॥ शिवगति आराधनतणो जी, ए पहेलो अधिकार रे ॥ जि० ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ साहेलडीनी देशी ॥

॥ पंच महाव्रत आदरो ॥ साहेलडी रे ॥ अथवा ल्यो व्रत वार तो ॥ यथाशक्ति व्रत आदरी ॥ सा० ॥ पालो निरतिचार तो ॥ १ ॥ व्रत लीधां संभारीयें ॥ सा० ॥ हियडे धरीय विचार तो ॥ शिव गति आराधनतणो ॥ सा० ॥ ए बीजो अधिकार तो ॥२॥ जीव सवे खमावियें ॥ सा० ॥ योनि चोराशी लाख तो ॥ मन शुद्धे करो खामणां ॥ सा० ॥ कोइशुं रोष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चिंतवो ॥ सा० ॥ कोइ न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष एम परिहरो ॥ सा० ॥ कीजें जन्म पवित्रतो ॥ ४ ॥ साहम्मी संघ खमावियें ॥ सा० ॥ जे उपनी अप्रीति तो ॥ सज्जन कुटुंब करी खामणां ॥ सा० ॥ ए जिनशासन रीति तो ॥ ५ ॥ खमियें ने खमावियें ॥ सा० ॥ एहज धर्मनो सार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ॥ सा० ॥ ए त्रीजो अधिकार तो ॥ ६ ॥ मृपावाद हिंसा चोरी ॥ सा० ॥ धन मूर्छा मेहुन्नतो ॥ क्रोध मान माया तृष्णा ॥ सा० ॥ प्रेम द्वेष पेशुन्य तो ॥ ७ ॥ निंदा कलह न किजीयें ॥ सा० ॥ कूडां न दीजें आल तो ॥ रति अरतिमिथ्या तजो ॥सा०॥ माया मोह जंजाल तो ॥ ८ ॥ त्रिविध त्रिविध वो-

सिराविये ॥ सा० ॥ पापस्थान आढार तो ॥ शिव
गति आराधन तणो॥सा०॥ए चोथो अधिकार तो ॥ए॥
ढाल पांचमी ॥ हवे निसुणो इहां आवीया ए एदेशी
॥ जनम जरा मरणें करीए, ए संसार असार तो
॥ कस्यां कर्म सहु अनुनवे ए, कोइ न राखणहार
तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण सिद्ध न
गवंत तो ॥ शरण धर्म श्रीजैननो ए, साधु शरण गु
णवंत तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परहरी ए, चार
शरण चित्त धार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ए
ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आ नव परनव जे
कस्यां ए, पापकर्म केइ लाख तो ॥ आतमसाखें
ते निंदीयें ए, पडिक्कमियें गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मि
थ्यामति वर्त्तावियां ए, जे नांख्यां उत्सूत्र तो ॥ कु
मति कदाग्रहने वशें ए, वली थाप्यां उत्सूत्र तो ॥
५ ॥ घड्यां घडाव्यां जे घणां ए, घरटी हल हथी
यार तो ॥ नव नव मेली मूकीयां ए, करता जीव
संहार तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोषिया ए, जनम ज
नम परिवार तो ॥ जनमांतर पहोता पछी ए, कोइ
न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आ नव परनव जे कस्यां
ए, एम अधिकरण अनेकतो ॥ त्रिविध त्रिविध वो
सिरावीयें ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ दुष्क
त निंदा एम करी ए, पाप कस्यां परिहार ॥ शिवग
ति आराधन तणो ए, ए बठो अधिकार तो ॥ ए ॥

॥ ढाल ७ठी ॥ आदर तुं जोइने आपणी ॥ ए देशी ॥
॥ धन्य धन्य ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म॥ दान शीयल तप आचरी, टाल्यां दुष्कर्म ॥ ध०॥१॥ शत्रुंजयादिक तीर्थनी, जे कीधी यात्र ॥ युगतें जिन वर पूजीया, वली पोंख्यां पात्र ॥ ध० ॥ २ ॥ पुस्तक ज्ञान लखावीयां, जिणहर जिणचैत्य ॥ संघ चतुर्विध सांचव्या, ए साते खेत्र ॥ ध० ॥ ३ ॥ पडिक्कमणां सुपरें कस्यां, अनुकंपा दान ॥ साधु सूरि उवकायनें दीधां बहुमान ॥ ध० ॥ ४ ॥ धर्मकारज अनुमोदियें, एम वारोवार ॥ शिवगति आराधनतणो, ए सातमो अधिकार ॥ ध० ॥ ५ ॥ नाव नलो मन आणीयें, चित्तआणी ठाम ॥ समता नावें नावीयें, ए आतमराम ॥ ध० ॥ ६ ॥ सुख दुःख कारण जीवने, कोइ अवर न होय ॥ कर्म आप जे आचस्यां, नोगवियें सोय ॥ ध० ॥ ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुण्यनां काम ॥ ठारउपर ते लीपणुं, कांखर चित्राम ॥ ध० ॥ ८ ॥ नाव नली परें नावीयें, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो, ए आठमो अधिकार ॥ ध० ॥ ९ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ रेवतगिरि उपरें ॥ ए देशी ॥
॥ हवे अवसर जाणी, करीयें संलेपण सार ॥ अणसण आदरीयें, पच्चक्खी चार आहार ॥ लह्रुता सवि मूकी, ठांडी ममता ग ॥ संए आतम खेले, स-

मता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति चारें कीधा, आहार अनंत निःशंक ॥ पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लाल चीयो रंक ॥ डुलहो ए वली वली, अणसणनो प रिणाम ॥ एथी पामीजे, शिवपद सुरपद ठाम ॥२॥ धनधन्नाशालिजद्द, खंधोमेघकुमार ॥ अणसण आ राधी, पाम्या जवनोपार ॥ शिवमंदिर जाशे, करी एक अवतार ॥ आराधन केरो, ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमे अधिकारे, महामंत्र नवकार ॥ मनथी नवि मूको, शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जा ये, डुर्गति दोष विकार ॥ सुपरे ए समरो, चउद पू रवनो सार ॥ ४ ॥ जन्मांतरे जातां, जो पामे नवका र ॥ तो पातक गाली, पामे सुर अवतार ॥ ए नव पद सरिखो, मंत्र न को संसार॥इह जवने पर जवे, सु ख संपत्ति दातार ॥ ५ ॥ जुउ जीलने जीलमी रा जा राणी थाय ॥ नव पद महिमाथी, राजसिंह म हाराय ॥ राणी रतनवती बेहु, पाम्या ठे सुरजोग ॥ एक जवथी लेशे, सिद्धि वधू संयोग ॥ ६ ॥ श्रीम ती ने ए वली, मंत्र फव्यो ततकाल ॥ फणिधर फी टीने, प्रगट थइ फूलमाल ॥ शिवकुमरे योगी, सोव नपुरिसो कीध ॥ एम एणे मंत्रे, काज घणानां सि द्ध ॥ ७ ॥ ए दश अधिकारे, वीर जिणेसर जांख्यो ॥ आराधन केरो, विधि जेणे चित्तमां राख्यो ॥ तेणे

पाप पखाली, नव नय दूरें नाख्यो ॥ जिन विनय करंतां, सुमति अमृतरस चाख्यो ॥ ८ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ नमो नवि नावशु ए ॥ ए देशी ॥

सिद्धारथ राय कुलतिलो ए, त्रिशलामात मल्हार तो ॥ अवनीतले तुमे अवतस्या ए करवा अम उपगार ॥ १ ॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ ए आंकणी ॥ में अपराध कस्या घणा ए, कहेतां न लहुं पार तो॥ तुम चरणे आव्या नणी ए, जो तारे तो तार ॥२॥ ज० ॥ आश करीने आवीयो ए, तुम चरणे माहाराज तो ॥ आव्याने उवेखशो ए, तो केम रहेशे लाज ॥ ३ ॥ ज ॥ कर्म अलुजण आकरां ए, जन्म मरण जंजाल तो ॥ हुं हुं एहथी उनग्यो ए, ठेडावो देवदयाल ॥ ४ ॥ ज० ॥ आज मनोरथ मुज फल्या एं, नाठां दुःख दंदोल तो ॥ तूठो जिन चोवीशमो ए, प्रगट्या पुण्य कल्लोल ॥ ५ ॥ ज० ॥ नव नव विनय तुमारमो ए, नाव-नक्ति तुम पाय तो॥ देव दया करी दीजिये ए, बोध बीज सुपसाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ इति ॥

॥ कलश ॥ इय तरण तारण, सुगति कारण, दुःखनिवारण, जग जयो ॥ श्रीवीर जिनवर चरण थुणतां, अधिक मन, उलट थयो ॥ १ ॥ श्री विजयदेव, सुरींद पटधर, तीरथ जंगम, इणि जगे ॥ तप गठपति श्रीविजयप्रन सूरि, सूरितेजे, कगमगे ॥२॥

श्रीहीरविजय सूरि, शिष्य वाचक, कीर्त्तिविजय, सुरगुरु समो ॥ तस शिष्य वाचक, विनयविजये, थुएयो, जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥ इस सत्तर संवत्, उगणत्रीशे, रही रांदेर चोमास ए ॥ विजय दशमी, विजय कारण, किउ गुण अभ्यास ए ॥ ४ ॥ नरनव आराधन, सिद्धि साधन, सुकृत लील, विलास ए ॥ निर्जरा हेतें स्तवन रचियुं, नामे पुएय, प्रकाशए ॥ ५ ॥ इति श्रीपुण्यप्रकाशस्तवनं समाप्तं ॥

॥ अथ श्री सिद्धचक्रजीनु स्तवन ॥

॥ आठे लालनी देशी ॥

॥ समरी शारदा माय, प्रणमी निज गुरुपाय ॥ आठे लाल ॥ सिद्धचक्र गुण गायशुं जी ॥ ए सिद्धचक्र आधार, नवि उतरे नवपार ॥ आ० ॥ ते नणी नवपद ध्यायशुं जी ॥ १ ॥ सिद्ध चक्र गुणगेह, जस गुण अनंत अठेह ॥ आ० ॥ समर्यां संकट उपशमेजी ॥ लहियें वंठित नोग, पामी सवि संजोग ॥ ॥ आ० ॥ सुरनर आवी वहु नमेजी ॥ २ ॥ कष्ट निवारे एह, रोग रहित करे देह ॥ आ० ॥ मयणासुंदरी श्रीपालनेजी ॥ ए सिद्ध चक्र पसाय, आपदा दूरें जाय ॥ आ० ॥ आपे मंगल मालने जी ॥ ॥ ३ ॥ ए सम अवर न कोय, सेवे ते सुखीयो होय ॥ आ० ॥ मन वच काया वश करीजी ॥ नव आंबिल तप सार, पमिक्कमणु दोय वार ॥ आ० ॥ देव

वंदन त्रण टंकना जी ॥ ४ ॥ देव पूजो त्रणवार, ग णणुं ते दोय हजार ॥ आ० ॥ स्नान करी निर्मल पणेंजी ॥ आराधे सिद्ध चक्र, सान्निध्य करें तेनी शक्र ॥ आ० ॥ जिनवर जन आगें जणे जी ॥ ५ ॥ ए सेवो निशिदीस, कहीयें वीशवा वीश ॥ आ० ॥ आल जंजाल सवि परिहरो जी ॥ ए चिंतामणी रत्न, एहना कीजें यत्न ॥ आ० ॥ मंत्र नही एह उपरें जी ॥ ६ ॥ श्रीविमलेसर यक्ष, हो जो मुऊ परतक्ष ॥ आ० ॥ हुं किंकर तुं ताहरो जी ॥ पाम्यो तुंहिज देव, निरंतर करुं हवे सेव ॥ आ० ॥ दिवस वल्यो हवे माहरोजी ॥ ७ ॥ विनति करुं तुं एह, धरजो मुजशुं नेह ॥ आ० ॥ तमनें शुं कहियें वली वली जी ॥ श्रीलक्ष्मी विजय गुरुराय, शिष्य केसर गुण गाय ॥आ०॥ अमर नमे तुऊ लली ललीजी ॥८

॥ नवपदजीनुं स्तवन ॥

नवपद ध्यान सदाजयकारी ॥ ए आंकणी ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु देखो गुणरूप उदारी ॥ नवपद० ॥१॥ दरशन ज्ञान चारित्रहे उत्तम, तप दोऊनेदे हृदयविचारी ॥ नवपद० ॥ २ ॥ मंत्रजडी उंर तंत्र घणेरा, उन सवकुं हमदूर विसारी ॥ नवपद०॥३॥ वहुत जीव जवजलसे तारे, गुण गावत हे वहु नरना री ॥ नवपद० ॥४॥ श्रीजीन जक्त मोहन मुनी वंदत, दिनदिन चकते हरख अपारी ॥ नव० ॥ ५ ॥ इति॥

॥ मङ्गल ॥

रागिणी कालेंगरा

मङ्गल मूरत पाशकी या ॥ मङ्ग० ॥ दारुण पङ्क सकल डुखहारी, दायकहै सुखरासकी या ॥ मङ्ग० १॥ सेवन ईन्द्र चन्द्र रवी सुरगुरु, चाहत हैं नित जासकी या ॥ मङ्ग० २ ॥ निरखत नैन सफल भई आस्या, करण चरणके दासकी या ॥ मङ्ग० ३ ॥ इति ॥

रागिणी बाहार

आज महोत्व रंग रलीरी, जायो सुत त्रिसलादे राणी, कामित पूरण काम कलिरी ॥ आ०॥ सझि सिनगार सकल सूर वनिता, आपन आपन मेल चलिरी ॥ आवत सिद्धारथके आङ्गण, पूरत मोतीयन चोक मीलिरी ॥ आ० १ ॥ ईन्द्र हुकुम करी धनद पठायो सब वसुधा धन धान्य भरिरी ॥ कनक रत्नमणि पंच वरणके, कुसुम विखेरत गलीय गलीरी ॥ आ० २ ॥ इन्द्राणी मिल मङ्गलगावे, नाचत नाटक सूर कुमरीरी ॥ वाजत गहर शबद कर डुन्दुभी, वीणा वेणु मृदङ्ग भलीरी ॥ आ० ३ ॥ जय जय कार भयो तिहुं जगमे, व्याधि व्यथा सब दूर टलीरी ॥ हरखचंद जनमें प्रभु मेरे, मनकी आस्या सफल फलिरी आ० ४ ॥ इति ॥

चैतावरकी चाल

मङ्गल राजे गिरनार, नेम पद मङ्गल है ॥ देवा० ॥

राजमती पद पङ्कज, मंगल रहे नेमी राय ॥ ने० १॥ मंगल धन धन्या मुनिनायक, सव तपसि विच सार ने० २ ॥ मंगल गणपति मंगल पाठक मंगल सब अनगार ॥ ने० ३ ॥ जयजय २ खेम कुशल गुरु, आनन्द घन अवतार ॥ ने० ४ ॥ इति ॥

रागिणी काफि

गावो मङ्गलचार, सखीरी वीर प्रभुको जन्म भयो है । अवधी ज्ञान कर ईन्द्र हूकमदीयो, करहुं महोछव सार ॥ स०॥ १ ॥ मेरुशिखर पर देव सकल मिल, करत सुभक्ति अपार ॥ स० २ ॥ वसु विधि पूज रचत प्रभुजीकि, सफल करत अवतार ॥स०३॥ जय जय शब्द करत सूर नर वर, जय जय जगदाधार ॥ स० ४ ॥ अजर अमर पद दायक प्रभुजी, सेवो शिव सुखकार ॥ स० ५ इति ॥

रागिणी ईमन कल्यान

कीजे मङ्गलचार, आज घर नाथ पधारे ॥ की० ॥ पहले मङ्गल जीवजीकी पूजा, घस केशर घनसार॥ आ० १ ॥ दुजे मङ्गल धुप जो खेऊं, और चढाऊं पुष्प हार ॥ आ० २ ॥ तिजे मङ्गल घण्टा बजाऊं, झांझनकी झङ्कार ॥ आ० ३ ॥ चोथे मङ्गल आरती ऊतारूं, नांचुं थेई थेई तार ॥आ०४॥ रूप चन्द कहे कहां लग वरणुं, शिव लहिये भव पार ॥ आ० की० ५ ॥ इति ॥

रागिणी सोहिनी–ताल यत

आज की रेण सोहाई, दरस मोहनकी में पाई॥ आ० ॥ पद पङ्कज तेरो मन मधुकर मेरो, सदा रहत लपटाई ॥ द० १ ॥ नवपद ध्यान सदा में चाहुं, अवर नही दील जाई द० ॥ २ ॥ अजर अमर पद चाहत तुमसे, आनन्द मङ्गल वधाई ॥ द०॥३॥इति

रागिणी काफी

पोढो पोढोजी कृषज्ञ पीयारे, निद्रा वस नयन तिहारे ॥ पोढो० ॥ प्रभु आलस अती ललसानी, पुछे मरुदेव्या माई ॥ पोढो० ॥ १ ॥ प्रभु सुनन्द सुमङ्गला राणी, जिनरुच रुच सेज सवारी ॥ पोढो० ॥ २ प्रभु नवल साजन्य सनेही, तुंतो मन वंछित फल देही ॥ पोढो ॥ ३ ॥ इति ॥

रागिणी भैरवी

राखो नाथ वडाई, हमारी ॥ रा० सेवा चोर सदा मोहे जानो, दरसन देवोनें गुसांई हमारे ॥ रा० १ ॥ अनाथनके नाथ जगत जन वछल, सुन्दर वदन सुहाई हमारे ॥ रा० २ ॥ भानु चन्द प्रभु जल थल अम्बर, जहां देखो तहां सहाई हमारे॥३॥इति

रागिणी कालेंगरा ॥

आवो गावो वधाई मोरी साथनीयां॥ आवो० ॥ नृप सुमित्रके पदमा देवी, सुत जायो सुखदाईरी ॥ आवो० १ ॥ जन्म कल्याणक करीये जाको, मुनि

सुव्रत जिन राईरी ॥ आवो० २ ॥ तीन लोकके हित कर प्रगट्यो, नाना ऋषि हरपाईरी ॥ आवो० ३॥इति॥

रागिणी भैरवी–ताल धिमे तेताला

आजतो वधाई राजा नाभिके दरवाररे ॥ आ० ॥ मरु देवाजीने वेटो जायो, नाम ऋषभ कुमाररे॥ आ० १ अयोध्यामे उच्छव होवे, मुख बोले जयजयकाररे ॥ घनन २ घण्टा बाजै, देव करे थैथै कररे ॥ आ० २ ॥ इन्द्राणी सब मङ्गल गावे, लावै मोती मालरे । चन्दन चरची पाये लागे, प्रभु जीवो चिरकालरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ नाभि राजा दानदेवे, वरसे अखण्डित धाररे ॥ गाम नगर पुर पाटण देवे, देवे मणि भंडाररे आ० ४ ॥ हाथी देवे साथी देवे, रथ देवे तुखारे । हीर चीर पिताम्बर देवे, देवे सब सिनगाररे॥ आ० ५ ॥ तिन लोक को दिनकर प्रगट्यो, घर घर मङ्गलचाररे । केवल कमला रूप निरञ्जन, आवागमन निवाररे ॥ आ० ६ ॥ इति ॥

रागिणी भैरवी–ताल धिमे तेताला

मङ्गलरे गावत सकल सुरनार ॥ टेर ॥ मोतीयन थाल भरी जाय वधावत, गावत गीत रसाल ॥ मं० १ केशर चन्दन भावन भरीयारे, कर लीय कंचन थाल ॥ मं० २ ॥ चंद कुशलकी यही अरज है रे, भवोदधि पार उतार ॥ मं० ३ ॥इति ।

चैतावरकी चाल

आजकी रेण सोहानि, देखो आजकी रतियां ॥ आ० ॥ पारस प्रभुजीको जनम भयो है, हरष भई देवा हरष भई वामा राणी ॥ देखो० १ ॥ अश्वसेन घर वटत वधाई, घर २ भरी देवा घर २ मङ्गल मांनी ॥ दे० आ० २ ॥ द्वार २ सब तोरण थंभ है, चोखे सुख सेज सेठानी ॥ दे० आ० ३ ॥ रतन थाल मुगताफल भरके, चोक पुरे इन्द्रानी ॥ दे० आ० ४ ॥ सुमन अधमको निज पद दीजे, सुध समकित सहनानी ॥ देखो० आ० ॥ ५ ॥ इति

॥ भैरवीका दूहा ॥

प्रभुको नाम अमोल है, जामे लगत न मोल ।
नफा वहोत तोटा नही, भर भरके मन तोल ॥
ए जीव भूला फीरत है, ममताके कल्लोल ।
अश्वसेनके लाडले, श्रीपारस मुख बोल ॥

रागिणी भैरवी–ताल यत्

वलिहारीमरु देवी नन्दकी, व्रज नाभिके नन्दन अवध विहारी ॥ वलि ० १ ॥ तिन लोक तिन पावन कीन्हें, आनन्द लहर सुनन्दकी ॥ वलि० २ ॥ कोशलपूर निकट सरजु तट, पूरण कला सो चन्दकी ॥ वलि० ३ ॥ दास तुमारो करत विनति, जयजय रुपभ जिनन्दकी ॥ वलि० ४ ॥ इति ॥

पुनः—ताल तेताल

जगदीश तुं मेरा प्रभु प्यारावे, तेरी आंखियांदी मानुं अजव वनी है, सुन्दर श्याम दीदारावें ॥ जग० १ ॥ घमि २ पल २ सुमरण तेरो, कवहुं न दीलसें न्यारावे ॥ जग० २ ॥ जो तुज ध्याया तिन सुख पावा, दरशन ज्ञान आधारावे ॥ जग०३॥इति॥

पुनः—ताल तेताला

आज प्रभु तेरे चरण लाग, मिथ्यातनींद मे खोईरे। दर्शन कर परशन मन मेरे, आनन्द चित अब होइरे ॥ आज० १ ॥ तुम विन देव अवर नही डुजो, देखा त्रिभुवन जोइरे ॥ आज० २ ॥ दास तुमारो करत विनती, तुम विन मेरो न कोइरे॥ आज० ३ ॥ इति ॥

पुनःताल कवाली

नेम जिनन्दजीसें आंखरूली; मोरी रैंन दिवस नीत लग रहीरे ॥ने० ॥१॥ पहले आय जन दोस्ती कीन्ही, ले पीठे छिटकाय दईरे ॥ ने० ॥ १ ॥ पसु यन पर प्रभु दया करीनै, शिव रमणीनें वर लईरे ॥ ने० ३ ॥ केई भविक रसना कर दोस्ती, रत्न विम ल पद पाय लई रे ॥ ने० ४ ॥ इति ॥

पनः

ड्गन भररी देखन दे मुखन चन्द, मोरा देवी माता श्रीधन धन, जायोठे रूपज जिनन्द ॥ ड० १॥

याकुं पूजत अती सुख उपजत, सब जीवन सुख कंद ॥ ऊ० २ ॥ यातें हीतकर अरज करत है, ची रंजी रहो तेरानंद ॥ ऊ० ३ ॥ इति

पुनः

मेरी लागी लगन, नेम प्यारेसे ॥ मे० ॥ सुनरी सखीएक वात हमारी, कहीयो कन्त हमारे से ॥ मे० १ ॥ जोगन होकर सङ्ग चलुङ्गी, प्रीत तुं जग सारेसे ॥ मे० २ ॥ नाम लीयासें आनन्द उपजे, कीरत होत उर धारेसे ॥ मे० ३ ॥ इति

पुनः

रात गई अव प्रात होन नयो, क्या सोवे जिया जागरे रा० ॥ दोय घमी तडको अव रहियो, ऊठ धरममें लागरे ॥ रा० १ ॥ जिन वानी उर वीच धारले, और नरम सव त्यागरे ॥ रा० २ ॥ आनन्द सुगुरु वचन हित मानो, ए सुधा शिव मार्गरे ॥ रा० ४ ॥ इति ॥

रागिणी नैरवी

आदि जिनन्द, मेरो आदि जिनन्द । दरसन तेरो है सुखकन्द ॥ मे० १ ॥ तुम दरशन विन कल न परुत है, तिन मै तो दीन हीन पकड्यो सरण ॥ मे० २ ॥ दास तिहारो अरज करत है जिनजी अवतो बुझावो नवफन्द ॥ मे० ३ ॥

पुनः

नवरिया मोरा कोन उतारे वेका पार । इह सं सार समुद्र गंजीरा, किसविध उतरुंगा पार ॥ न० ॥ १ ॥ राग द्वेष दोनुं नदियां वहत हे । जमर पम त गति च्यार ॥ न० ॥ २ ॥ रूपच दासको दरसन चहिये । ए वीनती अवधार ॥ न० ३

रागिणी जैरवी–ताल दादरा

जरलावोरे कटोरा केशरका, में नव अंग पूजुं पर मेश्वरका ॥ ज० ॥ मरुदेवी कुंखें जन्म लियो हे । कुमर नाजि रत्नेसरका ॥ ज० १ ॥ केशर चन्दन पुष्प चढाउं ॥ मुख निरखु रूपजेसरका ॥ ज० २ ॥ रत्न जड़ितकी आरती उतारुं । नृत्य करुं परमेश्वर का ॥ ज० ३॥ मोती चंदकी एहिज वीनती, चरणन ठेकुं परमेश्वरका ॥ ज० ४ ॥ इति

पुनः

म्हारो मुंनें कव मिलस्ये मन मेलू ॥ मन मेलू विन केलि न कलिए । वालै कवल कोई वेलुं ॥ म० १ ॥ आप मिलाथी अंतर राषै ॥ सुमनुप ते नहि ले लू ॥म०॥२॥ आनन्द घन प्रजु मन मिलियाविन ॥ कौ नवि विलगैंचेलू ॥ म० ३ ॥

जैरवी–ताल दादरा

इन्द्राणी प्रजुके वेगी आंज्यो कजरा । मे तो नवन करि कर लेही, तुं करले इयाकी जाप जीरा.

॥ १ ॥ ई ॥ में पहिराती भुज भुजबंध, पहरा देतुं वाली कपरा॥ई०॥२॥ में तो मुगट धरुं सीर उपर तुं पहरा दे फूलुंके गजरा ॥ ई० ॥ ३ ॥ नयनानन्द सुर ईन्द्र नगति लख, नविजन सम्यक दृष्टि खरा॥ ई० ॥ ४ ॥

ताल दादरा ।

नयना पीहर वा गये नयना वदल॥ नयना वदल गये वनकुं निकल गये, वृतलीना सुधर॥नय१॥व्याह नकुं, आये मेरे डुला कहांए ॥ दे दरस गये तोरणसे फिर ॥ नय० ॥१॥ जोझारथ परमारथ कारण, कंकणको तोड लीया संजमको धर ॥ न० ॥२॥ पशु पुकारे प्रभुजी नीहारे । दुखिया विचार छोडे वन्धन कतर ॥नय०॥३॥ देलो प्यारी छीमा हमारि। मुंझें वेगी वता दो गिरनार कीझगर ॥ ने० ॥४॥ करुंगी नयन सुखकारी तपस्या में तो लौंगी प्रभुके पद पंकज पकर ॥ न० ॥

पुनः

सखीरी म्हारो, नेम गयो गिरनार । तारि हे राजुलनार सखिरी० ॥ तोरनसे रथ पीछो फेरयो, पशुवारी सुनिछे पुकार सखिरी० ॥ १ ॥ सहंसा व-लकी कुंज गलिनमें, पंच महाव्रतधार सखिरी० ॥२॥ राजुल उनी अर्ज करत है, आवागमन निवार स खिरी० ॥ ३ ॥ चंद कपुरा कहे कर जोडी, चरण सरण आधार सखिरी० ॥ इति ॥

पुनः

मेंतो दासी 'तुमारी विना दामकि । निजरमें जो ठहरुं किसी कामकि ॥ १ ॥ ओर देवसे काम नही मेरे। दिलमें वसि हे सूरत स्यामकी ॥ २ ॥ मे० ॥ घडि घडि पल पल छिन छिन निस दिन । रटन लगी हे तेरे नामकी ॥ ३ ॥ मे० ॥ राखूगी आखुंमें सुरमें से वढके, जो पांउगी रजमें तेरे धामकी ४ मे ॥४ ॥तप जप संजममें चित लावो, जेसे मिले राज शिववामकी॥५॥जैन धरम मानव नव पाके । करले न लाई आतम रामकी ॥६॥ मे०॥ दास गुलावकी एहि अरज हे। सार करो मुऊ नामकी ॥ मे० ७ ॥इति॥

रागिणी गारा नैरवी

वस्तुगतेवस्तुनोलक्षण, गुरुगम विनानहीपावेरे । गुरुगमविन नहीपावेकोऊ, नटकत नरमावेरे॥नवन आरिशे श्वानककमा निजप्रतिबिंबनिहालेरे ॥ इतर रूपमनमाहि विचारी,महाशुध विस्तारेरे॥व०१॥निर मलफिटक शिलाअंतरगत, करिवर लक्षपर ठाहिरे॥ दशनडुराय अधिक डुंखपावे, डूपधरत दिलमांहिरे व० ॥ २ ॥ सश लेजाय सिंघकुं पकडे । कुवोदिठ दि-खाईरे ॥ निरख हरितेजांणडुसरो । पड्यो ऊंप तिहां खाईरे ॥ व० ॥ ३ ॥ निजछायावेताल नरमधर ॥ ऊर तवाल चित मांहिरे ॥ रजु सर्प करि कोउ मानत॥ ज्योंलौंसमऊत नांहिरे ॥ व० ॥ ४ ॥ नलनी नम

मर्कट मुठीजिम ॥ भ्रमवशअतिदुखपावेरे ॥ चिदा नंद चेतनगुरुगमविना, मृग त्रखाधरीधावेरे॥५॥इति

रागिणी भैरवी—ताल मध्यमान

वसोजी मेरे नेननमें महाराज, सामलि सूरत मोह नि मूरत ॥ तारण तरण जिहाज ॥व०॥ वानी सुधारस दरस ऊपन्यो ॥ करतां अगम अपार ॥व०॥ चेन विजय करजोडी वीनवे, चरण कमल सिरताज ॥व०॥इति॥

रागिणी गारा भैरवी

दीनके नाथ दयाल सबन की । तें काहेकुं कृपा विसारीरे दीन० ॥ में हुं दीन अनाथ जगत मे, तूं साहिब उपकारीरे ।दीन०। पण अपनेकी रीत निब हिये । दो संपद सुखकारीरे दी० ॥ दास चुनी सेव ककी अरजी । सुनियें प्रभु जसधारीरे ॥ दी०॥ इति

पुनः

प्रभु मोसे कवन वहाने बोलो, रैंन दिहा मानुं ध्यान तुमारा, अंतर दी पट खोलो ॥ प्र० ॥ हाल असांभा तुभनुं मालुम, जो खामि टुक जोलो ॥प्र०॥ आस पुरावो दासको स्वामी, झटपट सङ्ग मिला लो ॥ दास चुनी पायो रत्न अमोलक, वेर २ क्युं तोलो ॥

रागिणी भैरवी—ताल तेताल

भविकनरसेवोशांतिजिनन्द ॥ कश्चन वरन मनो हरमुरती, दीपत तेजदिनन्द । १भ० ॥ पञ्चम चक्रध र सोलमजिनवर, विश्वसेननृपकुलचंद ॥ २ म० ॥

नवदुख भंजन जन मनरंजन, लंछन मृग सुखक न्द ॥ ३ भ० ॥ गुनविलासपदपङ्कजभेटत ॥ पायोप रमानंद ॥ ४ भ० ॥ इति

रागिणी भैरवीमे होली—ताल कवाली

मेरे जाई जुई गुलावरी ॥ आज प्रभु पूजनको हरख भयो ॥ एटेक ॥ केतकीचंपक मरुर्ध मोघरा ॥ फूलकी पगर भरावरी ॥ आज प्रभु० ॥ १ ॥ मुकट कुंडल शिरछत्रविराजे ॥ आंगीशोहे जमावरे ॥ आ ज० २ ॥ संत सवे मिली भावना भावो ॥ मादल ताल मिलावरी ॥ आज ३ ॥ अनन्तनाथ जीके गुणगांउ ॥ लालगुलाल उमावरी । आज० ४ ॥ कर जोरी प्रभुआगे अरजी ॥ भवदुखसे छोमावरी ॥ आ० ५ आगेपोहोरहे नांम तुह्मारा ॥ ध्यानधरुं शुभभावरी ॥ आ० ६ आनन्द हरप वधाई उनको ॥ विनय सहित गुणगावरी ॥ आज० ७ ॥ इति

रागिणी सिन्धभैरवी

कुण वन वीर समोसस्या मैतोसुणिहे श्रवनधुनि आजरी कुण ॥ जंगम तीरथ सुरतरु,जगनायक, श्री जिनराजरी ॥ १ कुण० ॥ गोतमगधर सारिपा, साथै एकादश गणधारी ॥ मुनिचउदसहससाथेभला,गुरु तारणतरणजिहाजरी ॥ २ कुण० ॥ शमव सरण रच ना रची, मिलचउसठसुरराजरी ॥ सूर नर विद्याधर मिली ॥ मिलचउविहसंघ समाजरी ॥ ३ कुण० ॥ घ

णारे दीवशनी जावना ह्मारी, सफल फली सब आज री। चलो सखी विलँवनकीजीये, वंदीजेश्रीजिनराज री ॥ ४ कुण० । जावजगति दिलमें घणी, सजि सा थै सामग्रीसाजरी ॥ हरखचंद राणी चेलना ॥ सास्या निज आतमकाजरी ॥ ५ कूण० ॥ इति

रागिणी सिन्धु

आदिनाथ जिन प्यारा हो, तेरो दरशन आनन्दकारा १ ॥ नाजि राय मारुदेविके नंदा । तुम तारण संसारा ॥हो ते०॥ तुमरे गुणको पार न पावे, ज जन करे जगसारा ॥हो ते०३॥ वरस दिवसने पारणे, स्वामी पीयोरस अपारा हो ते० ॥ ४ ईन्द्रचन्द्रनी आस्या पुरो । मेटो कष्ट हमारा, होते० ५ ॥ इति

रागिणी जैरवी

समज परी मोहे समज परी जगमाया सब फुंठी ज० ॥ १ ॥ आजकाल तुं कहा करै मूख, नांहि जरोसा दिन एक घरी ज० ॥ २ ॥ गाफिल छिन जर नांहि रहो तुम, सिर पर घुमें तेरे काल अरी ज० ॥ ३ ॥ चिदानंद ये वात हमारी प्यारे, जाणो हो नित्त दिल मांहि खरी ज० ॥ ४ ईति

पुनः

चितमें धरो प्यारे चितमें धरो ये सीख हमारी अव चितमें धरो, थोमासा जीवनां काज अरे नर, काहेकुं छलपर पंच करो ये० ॥ १ ॥ कूम कपट पर

डोह करण तुम, अरे मन पर नव थाह नरो ॥ए०॥ ॥ २ ॥ चिदानंद जोए नहीं मानौ तो, जनम मरन नव डुखमें परो ॥ ए० ॥ ३ ॥ इति

ताल दादरा

दोनुं दसतो में अंगीया रचावो सखी, नयना हमारी प्रज्ञुसेलगी ॥दोनु०॥ जालीकी अंगीया प्रज्ञुकी रचावो ॥ मस्तक मुगट पहनावो सखी ॥ नय० १॥ चलो सखी वागोंमें जईये ॥ चुन २ कलियां चढावो सखी ॥ नय० २ ॥ चलो सखीजिनवंदन जईयें ॥ नृत्य करो सब मिलके सखी नय० ॥ ३ ॥ सांवरी मूरत खूब रची है, देखतही मन नीहारो सखी ॥ नय० ४ ॥ संवत उनीसे चऊदेकी साले, माघ वदि तीथ नवमी सखी ॥ नय० ॥ सुन्दर विजयजीकी एहिअरज है ॥ नित उठ चरण पखालो सखी ॥ नय० ६ ॥ इति

रागिणी नैरवी

मेरो मन लागी रह्यो महावीर चरणमें जाय ॥ सिद्धारथके नन्दन एसे ॥ मातात्रिसला देवीमाय ॥ मे० १ ॥ जनमतही स्वामी मेरुकंपायो, संसयदीया है मिटाय ॥ मे० ॥ क्षत्रीकुंड स्वामि जनम लिया हैं, मुगत पावा पुरी जाय । मे० जो कोई ध्यावे स्वामी सो फल पावे, चंद किरत गुण गाय मे० ॥ इति

पुनः

प्रभु मेरी विनतफीऊर धारो। तुम तारण तिहुं लोकके स्वामी। मोहे जरोसो तीहारो ॥ १ ॥ मोसे पतीत न श्रा जगमें कोई। मैं देख्यो जग सारो ॥२॥ तुम प्रभु तारण पतीत ऊधारण । जवसागरथी तारो ॥ ३ ॥ जुल सेवककी चित्त न दींजे, श्रपनी श्रोर नीहारो ॥ प्र० ॥ इति

पुनः

नाथ जये वैरागी हमारे ॥ कासे जाय कहुं मेरी सजनी । वीन श्रवगुन मोहे त्यागी ॥ हमा० ॥ परवस तुती जांय पमी है तुंहिं तुंहिं रटणा लागी॥ ह० ना० लाल विनोदी ईह रुपको नीरखत । वीर ह व्यथा तन जागी॥ ह० ना ॥ इति

पुन

सीतलनाथनुं स्तवन.

तारिये मोहे शीतल स्वांमी ॥ शीतल स्वांमी श्रन्तर जांमी ॥ श्रांकडी ॥ काल श्रनादि पुदगलके संग, जटकत जयो हुं निकामी ॥ तारि० ॥ १ ॥ एसो न रहियो कोई थानक, मरण विनाको श्रंतरजामी ॥ २ ॥ श्रोर फीर सुक्ष्म वादर पुदगल ॥ परावरत कीयो सीरनामी ॥ ३ ॥ तारी० अधम उधारण विरुद तिहारो, कृपा करी तारो जव्यजानी । जानुं

चंद कहे प्रज्जुजीकी सेवा, सिवसुख की है यही निशानी ॥ ४ ॥ तारी० इति

पुन

अध्यातम स्तवन.

क्योंकर ज्ञक्ति करुं प्रज्जु तेरी ॥ क्यों० ॥ काम क्रोध मद मान विषय रस, छोडत गेल न मेरी प्र० ॥ करम नचावत तिमहि नाचत, माया वस नट चेरी प्र० ॥ दृष्टि राग दृढबंधन बांध्यो, निकसत न लहे सेरी ॥ प्र० ॥ करत प्रसंशा सब मिल अपणी ॥ परनिंदा अधिकेरी ॥ कहत मान जिन ज्ञाव ज्ञगत विन; शिव गत होत न नेरी ॥ प्र० ॥ इति

पुनः

संसार नाम जिस्का, जो सारा असार हैं, इस जगमें न कोई मेरा ॥ तेरा नांम सार है ॥ ज्ञवजल अगम अथाहरे इसका न पार है ॥ चारो गतिकी ज्ञवरां, पडती अपार है ॥ से० ॥ १ ॥ जिया देख डरा मेरारे, तुमसे नहीं छिपा ॥ तेरे हाथ मेरारे अवतो उधार है ॥ सं० ॥ तुम सिवाय देव मै, ध्याउं न दूसरा, मैंनेतो अपने दिलमें किया करार हैं ॥ स० ॥ ३ ॥ अब छोड सकल बातकुं तेरी शरन गही, ... हाथ जोडके करता पुकार हे ॥ सं० ॥ ४ ॥

पुनः (थियेटर)

मैं अरज करुं, सूनो महाराज । पायो में चरण सरण राखोने प्रभुजी लाज ॥ सु० १ ॥ सुमति जिनन्दा मेरे । सुरत सुहानी तेरे । कुमति न आवे नेडे, महिमां कहांलौं देखो, सफल घरीहे आज ॥ सु० २ ॥ वैशाख मास जो आया । सहु लोग हरष पाया । रोग शोग दुख पुलाया । शुक्ल पक्ष देखो सोहे । पंचमी तिथि है आज ॥ सु० ३ ॥ नविन मंदिर छाजे । जहां प्रभुजी विराजे । मानुं शशि सूरज लाजे । चलो सखी सब मिलि । प्रभुजीकुं पुजुं आज ॥ सु० ४ ॥ इति

पुनः

सुमति जिनन्दा प्रभु आज जुहारो । अष्टद्रव्य लेके आय ॥ पुजुं प्रभुजीके पाय । मनहिमें हरष अति भयोही मेरो ॥ सु० १ ॥ आयो मैं तुमारे पास । पुरो मेरी अभिलाष । दीन बन्धु दिनानाथ जगत उजियारो । नामिलेगो एसो दाव काज सुधारो ॥ सु० ॥ २ ॥ इति

पुनः (ठुमरि)

नेमि जिन तुमरो दरस लागे प्यारोरे । दरस देख मन आनन्द आवे । पातिक हर गयो सारोरे ॥ ने० १ ॥ मैं हुं दीन अनाथ प्रभुजी । नाथ गरिब नेवाज हो तुमहि । कृपा करी मोहे तारोरे ॥ने०२॥

सेवककी प्रभु एहि अरज है। भव सङ्कटसे निवा रोरे ॥ ने० ३ ॥ इति

पुनः

सूरत एसी सांवरी। में जांउ वारि २। प्रभुजी एक अरज सुनो मोरी ॥ टेर० ॥ समुद्र विजेजीके नन्दन प्रभुजी, सेवा देवी माता जिके नयननको भ ये गुलजारी ॥ सु० १ ॥ राजुलको परनीजन आ ये। पशुयनको निरख रथ फेरके चले गये गिरनारी ॥ सु० २ ॥ भव भव प्रीत छिनमें तो री। नेम राजुल मिल हुवे जव मुगतिके अधिका री ॥ सु० ३ ॥ दास आस कर अरज करतु है, मे हर मोहे कीजे दरस मोहे दीजे। चरनणकी में जांउ वलिहारी ॥ सु० ४ ॥ इति

पुनः

सुमति जिन मुजरो हमारो प्रभु लीजेजी ॥ मेघ नृपति जीके नन्दन स्वामी मात सुमङ्गलाके प्यारो जी ॥ सु० १ ॥ ऐसो नर भव पायके प्राणि। नित नित वन्दन किजेजी ॥ सु० २ ॥ ऐसे जिनजीको पूजत प्राणी। भव भव पातिक छिजेजी ॥ सु० ३ ॥ दास तूमारो करत वीनति अजर अमर पद दीजे जी ॥ सु० ४ इति

पुनः

हजूर तुमसें कहुं में दिलकी वेजार पनमें जो

वीती . वतियां । ह० टेर । न धीर तनमें खुसी न दिलमें वेहाल पनमें जराई ठतियां ॥ ह० १ ॥ सिद्धार्थ तिसला के नन्द सुनिये कृपाके सिंधु देवी रस्वामी, संसार वनमें कीयो भ्रमन मैं, चोरासि दलकी यह च्यार गतियां ॥ ह० २ ॥ कषाय कुमति कुकर्म मिलके दे मार च्यारुं तरफसे घेरयो । सदासे इनकी वेजासही है मैं मेरें दमसे उपाधि अतियां॥ ॥ ह० ३ ॥ रही न वाकी विपतकी वातें न जानुं तुम क्या विशाल ज्ञानी, रहुं सरणमें निहाल कीजै अजैकी लागी चरनसे मतियां ॥ ह० ४ ॥

पुनः

साहिव तेरी वंदगी मैं भुलता नही, भुलता नही साहव विसरता नही ॥ सा० टेर ॥ अष्टादश दोष रहित देव है सहि औरदेव अन्यदेव मानता नही ॥ मा० सा० १ ॥ मुनि है निर्ग्रंथ सो तो गुरु है सहि और गुरु भेसधारी मानता नही ॥सा०२॥ जीव दया सुद्ध सो तो शास्त्र है सहि और शास्त्र आस्या रुपी मानता नही ॥ सा० ॥ ३ दान शियल तप जप धर्म है सहि और धर्म विषय मानता नही । सा० ४ ॥ मुक्ति रुपी सिद्ध शिला वांछता सहि संसार दुखजाल रूपी मेटीए सहि ॥ सा० ५ ॥ कहत मुनि खेत माल तारिये मोहि आवागमन मोरी मेटिये सहि ॥ सा० ६ इति

पुनः

दीले नादानकुं समजाया चायगें । हालमें हमकुं जगति जली हुवे । सुज शीयल संजमकुं सजवाय लायेगें ॥ दी० ॥ अष्टकर्मोंकी प्रकृतिका सञ्चय होए जाहिल । बंध वा उदय उदीरण सत्तामें तूं गाफिल । महाराजा मोहकी गति जाति सें उलजा सामिल । सागर कोमा कोमी सतरे काठीया जव सामिल । चउनाणी अनगार जिनोके हीये इस धाईल । औसे कर्म मोह मदनकुं जीतावी चायेगें ॥ दिल० २ ॥ इति

पुनः

आवो नेम रह जावो सदन, हमको न सतावोरे । आ० (टेर ॥ व्याहन आए सजकै सज्जन, पशुवनकी सुन देख रुदन। गिरनारी चले निज ठांड वतन् तकसीर बतावोरे ॥ ये० १ ॥ पूनम जैसें चंद वदन, मोहन मुरति श्याम वरण, मेरी निकी लागी नव जवकी लगन, मत ठेह दिखावोरे ॥ २ ॥ ये रिहम्० ॥ संजम दूती लागि श्रवन्, प्रजुको सिखाए नीके फिरन् । प्रजु तारण नाम तुह्मारो तरण । रथ फेरिन जावोरे येरिर० ३ ॥ कपूर कहे प्रजुजीके चरन् राजुल मन वेराग धरण लेउं दोम नेमि जिनजीकी सरण, शिवपूरतो दिखावोरे ॥ येरिशि० ४ ॥ इति

पुनः (पहाडी)

कभी प्रञ्जु पदमें मन लाया तो होता, अरे नि रगुनका गुण गाया तो होता। पडां है वेखवर मा याके फंदमें, जगतजंजालसुं लजाया तो होता॥ ज क० १ ॥ अव अवसर आमिला, टुक सोच प्यारे, आतम हितकार प्रञ्जु ध्याया तो होता ॥क०२॥ तुं है मनमोहनके त्रिशलानंद प्यारा। जिन सेवामें सुख पाया तो होता, पुरायो आश चुनीकी प्रञ्जुजी, दिल नर दरस दिखलाया तो होता ॥ क० ३॥ इति

पुनः

शांति वदनकज देख नैन मधुकर मन लीनोरे॥ नलाम० टेर ॥ श्रीजिनके मकरंद वैन। विरमी न व डुरगन्ध रैंण शिवपुरके सदासुख कंद दैन। सम कितरस नीनोरे ॥ न० १ कामित पूरण काम धेंन। मद मोहके चूरण ठांम फेंन, लहे मनको अली आराम चैंन, गुंजे अति फीनोरे ॥ न० २ ॥ कपूर कहे जिनपदका अैंन। उरधारो नवि तारलैंन। हो य मुक्ति सेऊ पर सार सैंन। आगम कह दीनोरे ॥ नला ॥ इति

पुनः

दिवाना तेरे दरसका यार मै हुं। जो रखता हुं तुफसे सरोकार मैं हुं ॥ दि० ॥ तेरा ध्यान रहता है हरदम मुफको। टुक एक महर कीजो लाचार

में हुं ॥ दि० ॥ दया जाव धारो प्रज्ञु चरणसे लगा लो खवर लोगे मेरा गुणेगार में हुं । दि० ॥ दरसवे गी दिजीये दया कर-चुन्नीको, जगन्नाथ तुम हों, तावेदार में हुं ॥ दि० ॥ इति ॥

पुनः

ध्यानमें जिनके सदा लयलीन होना चाहिये, ज्ञान गुरु ज्ञानीसे ले परवीन होना चाहिये ॥ राह सञ्जमका पकम कल्यानकी सूरत मिले, काल गफलतमे सजन्, नाहक नखोना चाहिये ॥ ध्या० ॥ धर्मकी खेती किया चाहे जमींकुं साफ रख वीज समकितको हृदयमें सचेसे वोना चाहिये ॥ ध्या० ॥ कामना मनकी सफल आनन्दसे पूरन जई, अवतो समता सेजउपर सुखसे सोना चाहिये । दास चुन्नी अपने घर आंगनमे फूलेगा कलप । जव थिति प कनेसें मुक्ति फल सलोना चाहिये ॥ ध्या० ॥इति॥

पुनः (ठुमरि)

श्रीआदिनाथजीका देख दरश डुविधा मोरी मिट गइरे ॥ आज डुवि ॥ आनंद आज जयो मेरो मन ॥ सिव सुख चाहतहुं प्रज्ञु हायन ॥ जिन की मुरत चंदनसे तनमनसे लपट गइरे ॥ आज डुवि० ॥ १ ॥ अष्टद्रव्य ले पूजन आये वीतराग के दरशन पाए जिनवांनी कांनोंसे सुनी डुरगत मोरी कट गइरे ॥ आ० ॥ २ ॥ काल अनादि में प्रज्ञु फिरी

यो, कारजएक मेरोनासरीयो, अब मैं तेरो दरशन पायो कुमति मोरी हटगईरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ जबल ग मुक्तन आवैं नेडे, तवग जक्तिवसौ उर मेरे, आत्म सुरू समकित धरकेशिव रमणी वर लइरे॥आ०४॥इति

पुनः (खाम्बाज)

जिनंदकी मैं वारी ठवि प्यारी, वारी जाउं वार हजारी ॥ जि० ॥ वदन ठवि मांनुचंद शरदसी, मेटो अशुज अंधियारी ॥ जि० ॥ १ ॥ निरख चकोरी ह रप जरानी, नैनन मङ्गल कारी ॥ जि० ॥ २ ॥ चुन्नी· तृप्त होत दरसनसे, आसा पूरो हमारी ॥

पुनः

एहाल अपना कहूं मैं कासे, सजन विना जर जर आवै ठतिया ॥ ए० ॥ न ताव तनमें न चयन दिलको विरहका मारा वेहाल मतिया ॥ ए० ॥ न कोई ऐसा हकीम देखूं जो मेरे दिलको करार आ- वै, सखी स्वजनका खवर जो पाऊं, तो लिख लिख पठाऊं पतिया ॥ ए० ॥ २॥ जल विन मीन क्योंकर जीवे, अरज इतना विचार देखो, एजीव जीवन पिया दरश विन, कटैगा कैसे अन्धेरी रतियां ॥ ए० ॥ क पटके पट खोल आए सजन सखी गये डुख जन म जनम कें। चुन्नी निरुपम दरसकै आगे कहू मैं अब क्याअनुठी वतियां ॥ ए० ॥ इति ॥

श्री पंच तीर्थ जिन स्तुति.

नृपतनयेवर हे मन माके. ए राह.

श्री जिनराज सदा सुखकारी,दास नमे शिर न मनकरी
तुम शरणागत आव्यां बालक, तारो हे प्रभु मेहर करी,

आदि जिनवरा, अजित प्रभु खरा,
शांतिनाथजी, शांति करो त्वरा,
पार्श्वनाथने, वीर जीनवरा,
बालमित्रनें, साह्य करो त्वरा,
जिनवरजी, करुं अरजी—श्री जीनराज. १
तुमे दया करी, अम पाप परहरी,
शिववधु प्रभू, आपजो खरी,
तुम विना विजो, देवछे वृथा,
जाणी एम अमे, छोडीये मिथ्या.
शिवरमणी, मनहरणी—श्री जिनराज० २
नगरमां रही, अर्ज करे सही,
तारक तुमविना, वीजो कोई नही,
सकल संघना, कष्ट कापजो,
मनसुखलालने, मन्न राखजो,
सुख करजी दुःख हरजी—श्री जिनराज.३

श्री आदिनाथनुं स्तवन.

आदि जिनेश्वर—अर्ज स्विकारो, कर ग्रही सेवकने प्रभु तारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥१॥ प्रथम नरेश्वर,— प्रथम जिनेश्वर, प्रथम युगल तुमे धर्मनिवार्यो ॥

आदिजिनेश्वर० ॥ २ ॥ आजनी आंगी–अजव वनी छे ॥ सुंदर मुख शोभे प्रभु सारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ३ ॥ रोहिणी पतिथी–कोटी गुणो प्रभु वदन आनंदी दिसेछे तुमारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ४ ॥ मृगपतिथी पण अधिक गुणोछे, लंक कटीनो प्रभुजी तुमारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ५ ॥ नाथ निरंजन– भव दुःखभंजन, भवो भव होजो शरण तुमारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ६ ॥ युगम् भाव स्तवनावली करवा, वालमित्रनी बुद्धिवधारां ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ७ ॥

श्रीसंभवनाथजिनुं स्तवन ।

त्रिताल चोपाइ–प्रभु पासनुं मुखडुं ॥

संभवजिनजीनुं मुखडुं शोहे, नयणा देखी जग सहु मोहे· रोहिणीपतिसम वदन विशाल, तस अर्द्धाकारे दीसे भाल, कांति कनकसरीखी सारी, इंद्र चंद्ररूप जायहारी;

सावथ्थीमां हतो दूकाल, प्रभू जनमतां थयो सुगाल, धान्यनां तिहां संभव थाय, द्रव्य संभवथी नयरी साहायः फल फूल संभवथया सार, तेथी वर त्यो त्यां जयजयकार; राय जितारी वीचारी आम, संभवथी पाड्युं संभव नाम; एवा संभव करजो अमने, वालमित्र अरज करे तुमने; अह्मदनगरमां रहेतां उल्हास, मुनि मनसुखनी पूरोआस ।

श्री अभिनन्दन जिन स्तवन ।

गजल, आज आवी राज हजुरमां ए राह ।

अभिनन्दन आज आनन्दमां, तुम दर्शनें थइ सु
ज मती; एक दुष्ट कुलटा छे सही, पूर्व जवनु वेर
काढ्युं अही; अहोनिश मारे पाछलपडी, मतीभ्रष्ट
कीधी मारी अति ॥१॥ एवी दुष्ट छे जे कुमती,जस
सोवते होय दुर्गति । ते दुष्टा दुर निवारिनें, आपो
अमोने सुमती । अ ॥२॥ रही नगरमां मन मगन
थइ, बालमित्र अति आनन्दथी, मांगे मुखें घी एम
कही, आपो अमोने शिवगती । ३

श्रीसुमतिनाथजिनु स्तवन ।

अवर मदन अलबेलो—ए राहमां ।

सुमति जिनेश्वर तारो जवाब्धिथी सुमति जिने
श्वर तारो । नयरी कोशल्या धन तुज धरणी, जन्म्यो
सुमति जिन प्यारो । जवा० १ कुल दीपक मेघरथ
राजाना, त्रण जगत्रने तारो ॥२॥ मङ्गला माता मङ्ग
ल उदरी,प्रसवे सुमति जिन सारो । जवा ॥३॥शशी
सम सोहे वदन प्रभुनुं, कौंच लंछन हितकारो । ज.
॥४॥ सुमती दाता समकित आपो, कुमती दूर निवा
रो ॥ज.५॥ आप हजूरे लेजो अमने, छुटे आ जनमा
रो । ज.६॥ बालमित्रना प्यारा प्रभुजी, मनसुखदास
तुमारो । च. ॥ ७ ॥

श्रीपदम प्रनु स्तवन

होरीनी राह सांवरेसे कहियो–ए राह ॥

प्रनु पद्म प्रन्न जिन प्यारा ॥ ए टेक ॥ सुशिमा माता उदरे आव्या, चउद सूपन गुणसारा; लंठन शोहे रक्त कमलनुं, नयरी कोसंबी वशनारा, प्रनु जीतो मोहन गारा ॥ प्रनु पद्म प्रन्न जिनप्यारा ॥१॥ द्वादशी कार्तिक वदनी सोहे, जनम तिथी मह सारा; कुल इक्वाकुं दिणयर प्रगट्या, श्रीधरकुल शण गारा, प्रनु सब जन हितकारा॥ प्रनु पद्म प्रन्न जिन प्यारा ॥२॥ अहमदनगरे आज आनन्दे, गावे गुण तुम सारा; बालमित्र करजोड़ी विनवे, पावे नवोद धि पारा; नव नव शरण तुमारा ॥ प्रनु पद्म प्रन्न जिनप्यारा ॥ ३ ॥

श्रीसुपार्श्वनाथनुं स्तवन ॥

बनजारानी राह ।

सुपार्श्वजिनन्दप्रनु प्यारा, मुज स्वामी मोहनगारा, ए टेक॥ वणारशीनां तुमे वाशी, माता पृथवीमन उल्हाशीजि; रायप्रतिष्ठित कुल श्रंगारा, मुज स्वामी मोहनगरा ॥ १ ॥ जेष्ठ शुक्लद्वादशी सार, जन्म्या श्रीजगदाधारजी, तुलरासींनां धरनारा, मुज स्वामी मोहनगारा ॥ २ ॥ मध्यम ग्रैवेयकथी आव्या, वान कंचनसम सोहाव्याजी ॥ उंचा द्विशतधनुष ठे सारा, मुज स्वामी मोहनगारा ॥ ३ ॥ चि

शलाख पुरवनु आयु, दिनकरथी तेज सवायुंजी, छो स्वस्तिकलंछन धरनारा, मुज स्वामी मोहनगारा ॥ ४ ॥ प्रभु तुम दरशन मनभावे, मुनिमनसुख तुम गुणगावेजी ॥ छोवालमित्रना प्यारा ॥ मुज स्वामी मोहन गारा ॥ ५ ॥

श्रीचन्द्रप्रभुजीनुं स्तवन ॥

राग माढ—मेवाडो मली—ए राह ॥

चंद प्रभु चित चोरी लीधुं,देखाडी दीदार ॥मन मोहाव्युं मांहरु. मने देखाडी दीदार॥ चन्द्रपूरी न यरी विषे, महासेन राजान ॥ लक्ष्मणा माता उदरे, प्रभु आव्या पुरुष प्रधानरे म० ॥ १ ॥ लंछन शोभे चन्द्रनुं कांई गुण अनन्त प्रधान ॥ दर्शन करतां आपजो, कांई शिवरमणीनुं दानरे म० ॥ २ ॥ नयणा कमल कचोलडा कांई, नाशा शुक समसार ॥ सम्य क्त दृष्टि जीवने प्रभु, ताहरो छे आधाररे॥म०॥३॥ चि तमां लागी चटपटी प्रभु, लटपट मन लोभाय ॥ खट पट शिव वधुने माटे, आवे छे मुजदायरे॥म० ॥ ४ ॥ एकला आप वरीने वेगा, करीये सेवक सार ॥ बाल मित्र शुभ वन्दन करतां, विनवे वारंवाररे म० ॥५॥

श्रीसुविधिनाथ स्तवन ॥

छे अधर सुधारस पान चतुर नर प्रेम थकी करीये॥ ए राह ॥

नवरंगी आंगी आज दीलमां धरीये, रस अमृ

त नक्ती पान चतुर नर प्रेम थकी करिये ॥ जइ जिन मंदिरमां आंगी नव नव रचिये,पल पल वारे जिन नाम हृदयमां धरीये, तो मोक्षालयनु द्वार सत्वरे वरीये ॥ रस अ० ॥ १ ॥ रुम कुम ठुम ठू म पग थकीनृत्यने करीये, त्यां चैत्यालयमां गीत ज्ञान आदरीये, तो नव सागरनो पार शीघ्रथी त रीये ॥ रस अ० ॥ रही अहमदनगरे वालमित्र गुण गाइयें, प्रभु नक्ती करतां अनन्त सुखने पाइये, तो सुविधि जिनेश्वर नजतां सुखीया थईये रस० ॥ ३

शीतल नाथ स्तवन ।

शीतलनाथनी शीतलता नारी, दरशन करतां जाय कषायहारी॥कमल सम नेत्र तेज नारी । शीतलना नी ॥ १ ॥ शशिसम वदन शीतल कारी, कटी केश री लंकारी, रुपे इन्द्र चन्द्र जाये वारी । शीतल नाथनी ॥२॥ कांतिकेवि दिशे कामणगारी ॥ मुरती प्रभुजीनी मनोहारी ॥ जगतवत्सल प्रभु जयकारी॥ शीतलनाथनी ॥ ३ ॥ नवी जीवने शीतलकारी, अ रजी मनसुखनी स्वीकारी ॥ वालमित्रने लेजो तारी॥ शीतलनाथनी ॥ ४ ॥

श्रेयांसजिनस्तवन ।

मातुं लगाडो तो मारा सम छे सलुंनीरे–ए राग।
श्रेयांस प्रभुजी तुमें सहाय करोमारीरे, आपणों किं कर जाणी उतारो नवपारीरे, श्रे० ॥१॥ विष्णु पि

ता कुलें आव्या विष्णु माता तारीरे ॥ जगतवच्छल प्रभु तुं छे आनन्दकारीरे ॥ श्रे० ॥ २ ॥ खड्गीलंछन प्रभु सोहे सुखकारीरे, करुं एक अरजी स्वीकारो प्रभु मारीरे, ॥ श्रे०॥३॥ दुष्ट एक रामा मारी, पाछल पडी नारीरे ॥ लीधुं लुंटी द्रव्य मने वहु मार मारीरे; ॥श्रे० ४॥ लोकोमां लज्जावी मने कर्यो छे खुवारीरे, नामे छे कुमती तेने काढो प्रभु न्यारीरे; श्रे०॥ ५ ॥ अहमद नगरे रही करे अर्ज सारीरे; वालमित्र गाय छे आनन्द हितकारीरे । श्रे० ॥ ६ ॥

श्रीवासुपुज्य स्वामीनुं स्तवन ।

गमका तराना ए राह ।

वासुपुज्य विलाशी, चंपाना वाशी, पुरो अमारि आश ॥ करुं पुजाहुं खाशी ॥ केशरघासी, पुष्प सुवासी, पुरो । ए टेक. ॥

चैत्यवदंन करुं चित्तथी प्रभुजी, गावुं गीतारसाल ॥ एम पूजा करी विनती करुं हुं, आपो मोक्ष दयाल । दियो कर्मने फांसी, काढो कुवाशी, जेम जाय नाशी । पू ॥२॥ संसार घोर महोदधिथी, काढो अमने वहार ॥ स्वारथनां सहु कोइ सगा छे, मात पिता परिवार; वालमित्र उल्लाशी, विनय विलाशी अर्जि खाशी. पुरो० ॥ २ ॥

विमल नाथ स्तवन ।

पूजो देव करो तुम सेव कुकर्मो तन न न न त्रुटे।

जगतमां सार रुप एक जैन धरम, ऐसा जाण मि थ्यात्वकुं ठोडेगें हम, तनका क्या नरोसा निकल जावैगा दम। पूजो० ॥ १ ॥ नजो नजो प्रजुकुं क्या लगता हे दाम॥ सबसैं आगे प्रजुका हम लेवेगें नाम सेवे जो विमल नाथ होवेगा काम। पूजो देव०२॥ बालमित्र पूजे चन्दन केशरचंग, चालो२पूजो प्रजुजी के नव अंग, कहे करजोडी मनसुख मनरङ्ग। पूजो देव० ॥ ३ ॥

वैरागीपद

ठवि ठवि वदन निहार निहार ॥ ठ० ॥ प्रोखि तपति अगमा गम कीनो विसरी विगत विहार ॥ ठ० ॥ १ ॥ गये अनादि कालमें ऐसे दीठी न हिय दिदार, निरुपम निजर निहार निहारत, रंजिय रूप रिक वार ॥ ठ० ॥ २ ॥ अंतर एक महूरत अंतर प्यार करी अणगार, लीने ज्ञान सारपद नीतर, चे तनता नरतार ॥ ठ० ॥ ३ ॥ इति ॥

श्रीअनन्तनाथजिनुं स्तवन।

नेखरे उतारो राजा नरथरी॥ ए राह। अनन्त प्र नु मुज तारजो० ए टेक। अवगुण मुजमां अनन्त ठे, तुम गुण अनंत अनंतजी; मोहराय वश हुं पड्यो तुमें तो कीधो तस अंतजी॥१॥अनंत॥ हुं रागी घणो लालची, तुमें तो थया वीत रागजी। राग द्वेष मु ज टालीये, चार कषायनो त्यागजी। अनंत॥२॥ पाप

अनन्ता में कर्या, कुरु कपटनो हुं गेहजी ॥ आ पापी ने उद्धारशो ॥ छो तारक निसंदेहजी । अनंत ॥३॥ तुम सम तारक कोई नही, मुज सम पापी न अ न्यजी ॥ करुणा नजर हवे कीजीये, तो थाउं धन्य धन्यजी॥अ. ॥ ४ ॥ जवजव जटक्यो तुम विना, म लीया हवे जगवंतजी, वालमित्रने दीजिये, अक्षय ज्ञान अनंतजी । अ. ॥ ५ ॥

श्रीधर्मनाथनुं स्तवन ।

प्रजु धर्म-नाथ (२) तुमें धर्मतणा छो दाता, तुम विना.अनंत जव रखड्यो पण मली नहीं कांई शा ता प्र० ॥ १ ॥ हवे तुम छेडो (२) पकड्योछे करो एक काम, मम घरमां जे तस्वर छे ते काढो तमे तमाम प्र. ॥ २ ॥ महा मेहेनतथी (२) हुं मेलवुं द्रव्य अपार ॥ चार चोर लुटी करी मारे छे मने वहुं मार, प्र. ॥ ३ ॥ तेनि पांच जग्नी (२) छे डुष्ट कृ त्य करनारी, ते तस भ्रातनी साथे मली वहु पाप करावे जारी प्र. ॥ ४ ॥ मम मित्र आवे (२) मुज घर मांहे कोई वार, भ्रात जग्नी जेगा थई काढे छे तेने वाहार प्र. ॥ ५ ॥मुज घर केरो (२) में अश्व महामद मातो ते पण तेणें कवजकर्यो छे कहुं केटली वातो प्र. ॥ ६ ॥ दरशन करतां (२) में ओलखीया जगवांन, वालमित्रनी अरज स्वीकारो देजो अक्षय ज्ञान प्र. ॥ ६ ॥

शांतिनाथ जिन स्तवन ।

प्यारी वेनी शोक तमें समावजो—ए राह ॥ प्रभु शांतिनाथने समरजो, जिनराज प्रभुनुं ध्यान सदा तुमें मनथी, धारजो ॥ शांतिनाथ ध्यावो, सुखी थावो, ल्यो लावो, श्रावक कुलमांआवी रुडा गुणथी गाज जो ॥ प्र: ॥ १ ॥ पाप त्यजजो प्रभु भजजो अरिदम जो॥कर्म रिपुने मारी जलदी शिवमां जावजो प्र.२ गुण गावे, जगति भावें बहु ध्यावे, अहमदनगरना वालमित्रने प्रेमे पालजो प्र. ॥ ३ ॥

श्रीकुंथुनाथजिन स्तवन ।

सुखथीरे मांगु प्रभु तुम पाशे, आपो मोक्ष रत न, शिवरमणी नहीं छोडु प्रभुजी नीश्चे एह वचन; मोक्ष वधु नहि मुकुं प्रभुजी निश्चे एह वचन. शिव वधु वरवा, मोजने करवा, मनमां राखुं मान, भव स्थिति पाके, समकित सांखे, आवीस करतो गम न । शिव० ॥ १ ॥ क्रोध तजवजो, मान हरवजो मायाने मारजो मार; लोभ न छारो भव भव टालो; मुज पर राखी मन । शिव० ॥ २ ॥ सुखने करजो दुखने हरजो लेजो आप हजूर; कुन्थु जिनवरजी वालमित्र अरजी, स्वीकारो थाउं मगन । शिव० ३

श्रीअरनाथजीनुं स्तवन ।

जैन धर्म हृदय धरो छे चिंतामणी, मारो-कर्म करो छार वरो शिवरमणी, ए टेक । दुर देशांतर थी तुमें

आव्या ॥ सोदागर गुणवंत; जावुं छे इजी डुर तुमारे पकणो कोईक सन्त । वरो ॥१॥ जनम जरा मृत्यु तणा, जय ते अपरम्पार; नरक निगोद थी जमतां २ पाम्यो मनुष्यअवतार । वरो. ॥१॥ धर्मरुपी डव्य मे लवी, पहोंचो शिवपूर वास; मनुष्य जव पामी करी, तुमें एवा करीने प्रयास. ॥३॥वरो॥पांचे इंडी वश करो, मारो चार कषाय; त्रण दलालनी सङ्गत थी, व्यापार ते वहु थाय ॥वरो॥४॥ श्रीअरनाथ कृपा करी, देजो मोक्ष आवास ॥ वालमित्रनी वीनती, प्रजु पुरो म ननी आश। वरो ॥ ५ ॥ इति ॥

मल्लीनाथजीनुं स्तवन ।

राग परज ॥ पानीने गमका मचाया॥एराह॥मल्ली जिने श्वरवन्दिये। ए टेक ॥ मिथुला नयरी अति शोजती, कुम्ज नरेश्वर राय २ । राणी प्रजावती उदरे, मल्ली नाथ प्रजु आय । म. ॥ १ ॥ पुर्व जवे माया करी तेथी लाग्या वहु पाप २ ; स्त्रीपणे आवीने ऊपना एवो मायानो छे व्याप । म. २ छमित्रने प्रतिवोध तां, कीधो वहु उपकार २ । तेम मने प्रतिवोधजो, मारी अरज स्वीकार । म. ३ एवुं जाणीने अमे त्या गशुं, माया कपट विकार २ । वालमित्रनी विनती. अवधारो ते श्रीकार । म. ४

श्रीमुनिसुव्रत जिन स्तवन ।

कुवरी कुंवर मारा लाम्कां ए राह मुनिसुव्रत

जिन सांजलो, शी कहुं दुःखनीरे वात, पापना पिंम समान हुं, तुमें ठो जग तात। मुनी. ॥ १ ॥ वादर सुक्ष्म नीगोदमां, जम्यो अनंतो काल, । ठेदन जे-दना वेदना॥ थकी काढो दयाल। मुनी. २ बीती चउ रिंद्री जीवमां, जम्यो काल असंख्य, जलचर थलचर खेचरे, जम्यो संख्यासंख्य। मुनी. ॥ ३ ॥ तेम पंचेंद्रि तीर्यनूचमा। कीधा पाप अपार। तेथी वली २ नरक मां। उपज्यो बहु वार। मुनी. ॥ ४ ॥ साते नरक मां वली २, ऊपनो वार अनंत, परमां धामीनी वेद ना, पापी जीव सहंत। मुनी. ॥ ५ ॥ पकमी २ पठा मता, देतां उपर मार, करवत थी शीर वेरता, मारे वली तरवार। मुनी. ॥६॥ एम अनंती, वेदना, सही मैं वार अनन्त; पण आ पापी जीवना, दुखनो आव्यो न अन्त। मुनी. ॥ ७ ॥ जगवठल जिनराजजी, हवे आव्यो तुम पास, ठोडुं नही हवें ठेमलो, तुजमां ठे मुज आश। मुनी. ॥ ८ ॥ जीव अनन्ता ऊधर्या, देइ अक्षय ज्ञान, वालमित्रनी विनती, चित धरजो जगवान। मुनी. ॥ ए ॥

श्रीनमिनाथजिनुं स्तवन ।

दशा आ शी थइ मारी–ए राह। मोहनगारी, मनोहारी, शोजा नमीनाथनी जारी॥ मस्तक मुकुट मणीं तणी, कांति अतिचलकंत॥जाल स्थल पण फल कतुं, कुंमल श्री उल्लसंत, सकल अंगे शोजाकारी,

छवि देखी जाउं वारी । मो॰ ॥ १ ॥ आङ्गी चमीज ळावनी ॥ हीरामणि झलकंत, मुख छवि कोटि चन्द्र मां॥ नयणा अति विकसंत, जगत शोजानी हरनारी, देखी वंदे छे नरनारी । मो॰ २ समकीत दे दातार तुं, देतुं अक्षय ज्ञान, पद २ ताहरी वंदना, श्रीपति श्रीजगवान; बालमित्र जक्ति तारी, सकल सुखनीछे देनारी । मो॰ ॥ ३ ॥

श्रीनेमनाथजी स्तवन ।

प्यारा नेम मानो, नहीं पाछा आवो, दीन दयाल कृपा करी आवो; लियो २ संसारनो, लाव्हो, नहीं पाछा आवो । टेक ॥ (राजुल)—तुम विन आ संसा रमां॥ अवर न को आधार; आजी आवीजनी रहुं, क्यां जाशो आवार । (नेमनाथ)—सारथी चाल नहीं ऊजुं रहेवायछे, (राजुल)—परएया विना जोऊं केम जवाय छे । प्यारा ॥ १ ॥

कर ग्रहीने चले पछी जाजो, मानो मानो जादव पति जासो।नहीं॰ (नेमनाथ)—अष्ट जवांतर हुं रह्यो, तुज साथे सुण नार; नवमे जव तुमे हवे, आवो अ मारी लार; (राजुल)—मुजथी साथे पण हवे अवाय छे, बाल मित्र मन राजी बहु थाय छे । प्यारा॰ ॥२॥

श्रीपार्श्वनाथजी स्तवन,

प्रजु पुरो मारी आस॰ ॥ एटेक ॥ वसों नयरी वनारं सी वास॥त्रेवीसमा जिनश्री पास॥अहि लंछन धरी

उल्लासरे. प्रजु० ॥१॥ वाह: वदन तुमारुं पास ॥ करे दिनकर सम उजास॥तुम दर्शनथी पापनो नासरे॥प्र जु० २ कस्यां चोरांसी प्रवास ॥ जमी आव्यो हवे तुम पास॥ हुं आप चरणनो दासरे. प्रजु० ॥३॥ क्रो ध मान मोहनो त्रास ॥ वली लोजे कीधो लास॥ कर जोमी करुं अरदासरे. प्रजु० ॥४॥ सह्या नर्क निगो दनां त्रास, करोक्रूर कर्मनो नास, हवे आपो मोक्ष आवासरे. प्रजु० ॥ ५ ॥ बालमित्रनी अरजी खास, कहे मनसुख मन उल्लास.हुं पास प्रजुनो दासरे.प्रजु०६

श्रीमहावीर स्वामीनो स्तवन ।

जपती प्रीतमनी जपमाल ए राह करतां जिन वरना गुणग्राम पूजा करूं वहुसारी । पूजा करतां वहु प्यारी ॥जक्ती जाव थकी मेंधारी॥वरसूं प्रेमथी शिवसुन्दरी नारी । करतां ॥ टेक ॥चार अने चोरा शीना, चक्रे चढयो वहूवार । कूप अरट सम ज्रम णनो॥ कदीयें न पाम्योपार । मलिया महावीर उप गारी,तसआणा शिरधारी॥वरसूं ॥१॥ मनमहारूं ला गी रह्युं॥ सुंदरी तारी पास । तुज रूप नयणें निर खवा ॥ मनमां वहू उल्लास । जवोजव सेवना सारी जेटवाजक्ति ठे जारी । वरसुं ॥२॥ नार कुमती यें जोल व्यों॥ प्रीत थी पारावर । ये नारीना सङ्गमा ॥ कांइये नहीगेसार । कुमती न गारी नारी॥ तेथी गयोहुं हारी । वरसुं ॥३॥ तुज सम प्रियआजगतमां ॥ अव

र न को देखाय । जिन दरशन करतां अहीं मनडु वहु हरषाय । देखतां तुज देदारी॥वनीश हुं गेहलो जारी । वरसुं ॥ ४ ॥ गुण गातां महावीरना॥ टलशे कुमती कुनार । मनसुख अने वालमित्रने॥ मलशे शिवपूरी सार । नंदन वन मोजारी॥ विनती करे क रारी । वरसुं ॥ ५ ॥

॥ मुंछाला महावीर स्तवन ॥

॥ रागणी केरवा ॥

मारो मुंछालो महावीर ॥ मा ॥ वीरसर्वेमां धीर वीर तुं ॥ मुं ॥ देरामा राजायें आवी, मुंछे नाख्यो हाथ ॥ अजिमानी राजाने शिक्षा, दिधि तें जगना थ ॥ १ ॥ मुं० ॥ हाथ नाखतां मुंछो तुटी ॥ पडी देरासर मांय ॥ अजिमानी राजा त्यां नमीयो, ए अचरिज मनमाय ॥ २ ॥ मुं०॥ ते दिनथी जग मां विख्यातो, मूंछालो महावीर ॥ घाणेरावनां डुंग रमाहें, वेठो साहस धीर ॥३॥ मुं ॥ एकलडुं देहेरुं देखिने, मुगले कीधी रीस ॥ देरुं पाडवा सुजट सी पाई आव्या ते दस वीस ॥४॥ मुं ॥ तुज आणा धारी योगणीयो, करवा लागी युध्ध ॥ त्रसुल तणा प्रहारें मार्या, नाठा तेह अवुरू ॥ ५ ॥ मुं ॥ मुंछ त्रूटतां पाणी राख्युं, देख्याड्या जो हाथ ॥ तारण तरण छे विरुद तुम्हारुं, शिवपुरनो छे साथ ॥ ६ ॥ मुं ॥ घाणेराव स्वामीने जेट्या, मुंछालो महावीर ॥

अक्षयज्ञान सेवक इम जंपे, जयजय श्री महावीर ॥ ७ ॥ मुं ॥ इति ॥

रागणी पीलु

तोविना और न जाचुं जिनंद राय ॥ ए टेक ॥ और देवशिव देवे ए मत, सांभली किम करी राचुं॥ एमत जे धारे ते जननुं, समकित किम रहे साचुं ॥ जि ॥१॥ जबहिं तबहिं तुम देवोगे, एह वचन नही काचुं ॥ समकित रत्न देखाव्वो तेथी, मानुं हुं सहु साचुं ॥ जि ॥ २ ॥ आगे अनेक उद्धारे सुनकर, चर नकमलपर माचुं ॥ अक्षय ज्ञान दायक देखिने, हर षित थइ थइ नाचुं ॥ जि ॥ ३ ॥ इति

रागणी झींझोटी

साचुं छे जिनंद नाम अवरने न राचुं ॥ मुकुट कुंडल चलक झलक, भाल तिलक जाचुं ॥ रत्न ज ड्डित कुंडलेथी ॥ तरणी तेज काचुं ॥ १ ॥ मोतिहार झग झगाट, देखतांज माचुं ॥ बाजुबंध ज्ञानचंद्र, गीत गाइ नाचुं ॥ साचुं ॥ २ ॥ इति

रागणी पीलु-

धन युवती पर मन ललचाणुं. एथी अधिक बी जुं कांइ नजाणुं ॥ एटेक ॥ दान शियलमां चित्त नव लागे, जप तप सुणतां मन गभराणुं ॥ धन ॥ ॥ १ ॥ सप्त व्यसन सेवनमां रसियो, करवा कपट कालजुं कोतराणुं ॥ धन ॥ २॥ इर्षा द्वेष मत्सर पर

निंदा, छल प्रपंचथी, हृदय नराणुं ॥ धन ॥ ३ ॥ नव नव एवा पाप करंता, पापनां नारथी पिंक नराणुं ॥ धन ॥ ४ ॥ तुं तारक पण हुं बहु पापी, मारो उध्धार करोतो हुं जाणुं ॥५॥धन॥ श्रीशंखेश्वर ताहरी कृपा थी, अक्षय ज्ञानतुं पेहेरुं घराणुं ॥ धन ॥६॥ इति ॥

मराठी चालनी साखी

अकल स्वरुपी घट घट व्यापी, अनंत गुणी नग वान. लोका लोक प्रकाशक नास्कर, केवल ज्ञान निधान ॥ जग हितवछल करुणासागर, गुण रत्नाकर स्वामी. शिव सुख पामी बहु डुःख वामी, त्रिजुवन जन विश्रामी. ॥ १ ॥ अशरण शरणा नव नय हरणा. तुं प्रज्ञुतारण तरणा ॥ अजर अमरणा, शिवसुख करणा, प्रज्ञु वंडु तुज चरणा. तुंजगत्राता तुं पितु माता, दे सुख शाता दाता; तुंजगत्राता विश्व विख्याता, अक्षय ज्ञान प्रदाता ॥ २ ॥

थियेटर

दीलधर मनकर जिनवर पूजन करवा जइयें आ ज ॥ एटेक ॥ नाव धरीने पूजे जिनने तेहने धन्य धन्य॥ पूजा करतां शिवपूरजावा प्राणी बांधे पुण्य, साची नक्ति रीजी स्वामी देजो दरिसन॥

रागणी गुजराती गरबी

प्रज्ञुतार हवे मारुं अहिं शुं थसेरे ॥ कर्यां पाप ते अनंत मारां क्यम जसेरे ॥ १ ॥ प्र० ॥ ताहरुं

शरण मारे हवे अहीं एक ठेरे, ताहरा ध्यानथी अ नंत पाप क्षय जसेरे ॥ २ ॥ प्र ॥ जैन गायन मंड ली नित्य गाय ठेरे ॥ तेथी अक्षय ज्ञान मने आप सेरे ॥ ३ ॥ प्रभु ॥ इति ॥

राग्णी दक्षणी थीयेटर

श्री चराचर विश्ववरा, शिवसौख्यकरा, नयनी रु हरा, सुरासुरेश्वर वंद्य तरा ॥ शि ॥ एटेक ॥ न व तारक तुं जगनो त्राता, नय वारक विभुविश्व विख्याता, तुं सुखशाता, देपितुमाता, अनंतगुणो तुजमां प्रवरा, जय धैर्य धरा ॥ १ ॥ शि ॥ अखूट खजानो ठे प्रभु ताहरो, हुंदुं सेवक प्रभुजी ताहरो, नवसागरथी पार उतारो, कांइक मुजपर करुण करा नय शोक हरा, ॥२॥ शि ॥ ताहरुं ध्यान धरुं नित्य रंगे, हुं पण थाइस प्रभु तुज संगे, अक्षय ज्ञान दे दान उमंगे, नाभिनंदन नाम धरा, जयविजय करा ॥ ३ ॥

गजल.

उंचा निसा सा नाखती रे दीकरी डुखी ॥ ए राह ॥ निहार यार तार तुं विचार दारहे ॥ गुनेगा रकुं उतार पार तुंहि दिलदार हे ॥१॥ नि ॥ अव्य क्तमे अजाणते यह कर्ममें करे, कृपाकरें प्रभु अहो कृपावतारहें ॥ २ ॥ नि ॥ शरणहे प्रभुजी तुं शर ण दीजीयें मुजे, अक्षय ज्ञान दानदे त्रैलोक्य सार हे ॥ ३ ॥ निहार इति ॥

राजुलगीत.

देखा नहीं कछु सार जगतमे देखा नहीं कछु सार, आसंसार असार ॥ज॥ तुं तारे तो तार ॥ ज ॥ माहारे तुं अधार ॥ ज ॥ दे । एटेक ॥ मैंणा दश दश हवेहुं थाकी ॥ संदेसानो नहीं पार ॥ हाय हाय हायरे हवें ॥ ठेक वनी लाचार ॥ ठे ॥ ज ॥ दे ॥१॥ रम्रिरडिहुं आसुंडे भीनी ॥ गमे नहीं श्रृंगार ॥ हाय हाय हायरे हवे ॥ अंगवले अंगार ॥ अं । ज । दे ॥२॥ झुरी झुरी पिंजर थयुं अंग ॥ वियोगडुः खअपार ॥ हाय हाय हायरे हवे ॥ दीक्षालउं आवार । दी ॥ज॥दे ॥ ३ ॥ जैन गायक मंडली गावे ॥ राजुलगीत उचार ॥ जाय जाय जायरे एतो । मोक्ष मंदिरमां पधार ॥ मो ॥ ज ॥ दे ॥ ४ ॥

रागणी खमाच ठुमरी ॥

दरीसन विन अखियां तरस रही ॥ ए राह ॥ नव पदसें मेरे विघन कटे । ज्यों श्री पालके अघ वि घटे ॥ एटेक ॥ ध्यान स्मरण जो करते तिनके ॥ स्पष्ट अस्पष्ट सव कष्ट कटे ॥ १ ॥ न ॥ नट विट लंपट सवहि सुधारे, मोह सुभटका जोर हटे ॥२॥ न ॥ दान शियल तप भाव प्रमुख गुण ॥ विनय नयादिक गुण प्रगटे ॥ ३ ॥ न । अघट विघट घटना इह जगकी ॥ नव पद ध्यानसें सव सुलटे ॥४॥ न ॥ पुना जैन गायक मंडलीकुं ॥ आक्षय ज्ञान दशा प्रगटे ॥ ५ ॥

धनासिरी.

जवलग विषय घटा न घटी ॥ एटेक ॥ तवलग तप जप संयम क्रिया ॥ कहा करत कपटी ॥ लोक दिखावन करत हे क्रिया ॥ पहिरत पीत पटी ॥ १ ॥ ज ॥ ध्यान धरी योगी होय वेठत ॥ बक वृत्ति कपटी ॥ वेठ तखत ज्ञानी होय वेठत ॥ करे उपदेश अती ॥ २ ॥ ज ॥ उग्रविहार धरत आडंबर ॥ मुख सें कहत यति ॥ वनवासी तनजस्म लगावत ॥ शिर पर धरत जटी ॥ ३ ॥ ज ॥ नग्न रहत पंचाग्नी सेवत, साधत योगहठी॥ शठ हठ कष्ट करे पण मनतो, नाचत नृत्यनटी ॥४॥ जवगल विषय घटा न घटी तवलग तुं क्या फलपावेगो, विषयवल्लीनकटी ॥ जैन गायन मंगल ताकुं वंदत ॥ जाकी अद्वयज्ञान दशा प्रगटी ॥ ५ ॥ जवलग ॥ इति ॥

राग कल्याण

जय जय नव पदा आप संपदा ॥ काप आपदा ते शुभ ध्यानथी सदा ॥ एटेक ॥ श्वेतरंग अरिहंता वंदो, रातासिद्धमहंत ॥ आचारजपीला ने लीला, उवझायाभगवंत ॥१॥ज॥ सुंदरश्याम सलूंणा साधु॥ धवलाछे पद चार ॥ दंशणनाण चरण तपवंदो, सिद्धचक्र एसार ॥ २ ॥ ज ॥ पांच गुणी चउ गुण छे एमां, आधारा आधेय ॥ गुणसेव्याथी गुणीयल थाये, जाणोनिः संदेह ॥ ३ ॥ज॥ शांतिसारे विघन

निवारे, उतारे नवपार ॥ अदय ज्ञान प्रचारक मंडल ॥ वंदेवारंवार ॥ ४ ॥

रागणी वरवा

॥ अरे दहि माहरी तुरकवाने घेर लई ॥ एराह ॥ प्रचुदीजें दरस वमी देर नई ॥ टेक ॥ लखचोरासी फेराफिरतां ॥ डुःखसहन करे मेनें केइ केई ॥ १ ॥ प्र ॥ नवनव नटकत सरणेहुं आयो ॥ अव तो राखो समकित दान दई ॥ २ ॥ प्र ॥ पुना जैन गायक मंमली तो ॥ अदय ज्ञान पद चाहाय रही ॥ ३ ॥ प्र ॥

वुमरी

॥ हजारों मेरे कानके मोती ॥ एराह ॥ प्रचु मेरो ज्ञानकी ज्योती ॥ मानों सुर्यकिरण कोटी ॥ टेक ॥ घटघट व्यापक ज्ञान कला ठे, निजगुणता मोटी ॥ १ ॥ प्र ॥ अनंत गुणीनां गुणनी गणना ॥ करवी ते खोटी ॥ २ ॥प्र॥ ए प्रचुने तो रूप न रेखा, वर्णादिक नोती ॥ ३ ॥ प्र ॥ गुणीयनकों नजते गुणी होवे ॥ केवलता मोटी ॥ ४ ॥प्र॥ अदयज्ञान दशा प्रगटावे ॥ कर्ममलीन धोती ॥ ५ ॥ इति ॥

राग गोमी

गोडी गाइयें मनरंग ॥ एटेक ॥ एक ध्याने एक ताने ॥ कर केदारो संग ॥१॥ गोमी ॥ यात्रा कीजे अमृत पीजे ॥ नीर वहे जिम गंग ॥ रोग शोक नय

क्लेस नासे ॥ आलस नावे अंग ॥ २ ॥ गोमी ॥ पोढंता प्रजुनाम लीजें ॥ आणी मन उब्ररंग ॥ अ जय तेहने नींद मांहे ॥ कदिय न होवे चित्त चंग ॥ ३ ॥ गोमी ॥ इति ॥

ठुमरी

सकल मर्म मल क्षय करके मुगत पुर गए गए रे ॥ मु ॥ एटेक ॥ अविनाशी अविकारहे ॥ परमातम शिव धामरे ॥ समाधान सर्वांग अरुपी ॥ मेरेमन रहेरहे रे ॥ १ ॥ स ॥ शुद्ध बुद्ध अविरुद्धहे ॥ रहे अनादि अनंतरे ॥ वीरप्रजुके आगे गौतम ॥ अमृत पद लहे लहेरे ॥ २ ॥ स ॥ इति ॥

वैरागी पद

कहा कीनो नर जव पाके ॥ रहा मोहमद ठाके ॥ टेक ॥ वृद्ध अवस्था आयलगी तव ॥ बेठो बुद्धि गुमाके ॥ क ॥ जुठ वोल धन जोम लीयो हे ॥ जोले जीवनकों समजाके ॥ कुमतीनार संग राच रह्यो हे ॥ सुमती गुनकों नसाके ॥ २ ॥ क ॥ मात तात सुता सुत नारी ॥ इनसे नेह लगाके ॥ ए सव अपने घरकों आवे ॥ तेरी देह जलाके ॥ ३ ॥ क ॥ सतगुरु कहे पर जव सुख करले॥चरनन चित्त लगाके ॥ अब सुनले फिर कोन सुनावे ॥ श्रवनन सुद्ध कराके ॥ ४ ॥ क ॥ इति ॥

राग माढ ताल पंजावी

अजिहो कहो ज्ञानी, कोठे थांको देश ॥ साची तो कहोने ॥ कोठे ॥ एटेक ॥ जन्म लियो तवहो ज्ञानी, छुरा होता केस ॥ स्याहकी सपेदी आई ॥ अज हुं क्युं नहिचेत ॥ १ ॥ कोठे ॥
कोठेका संगाती तुम ॥ इहे आया एक ॥ कहिने जावोला हो ज्ञानी ॥ जमता एका एक ॥२॥ कोठे॥ सुखमे संगाती घणा ॥ डुखमे न एक ॥ वथाहिपचो ठो ज्ञानी ॥ नीका कर देख ॥ ३ ॥ को ॥ धर्म तो संगातीसाचो ॥ जुठातो अनेक ॥ अमीचंद साहेव ने समरो ॥ राखे थांकीटेक ॥ ४ ॥ को ॥ इति ॥

जजनी पद

जिन रायानां दरिसन पायारे ॥ जलेजले जिनंद गुण गाया ॥ तने वंदेठे सुरनररायारे ॥ज॥ तुने वं. यार्थी गुणीमां गणायारे ॥ ज ॥ एटेक ॥ अश्वसेन नृपनंदन राया ॥ वामाराणीनां ठो जाया ॥ चिंताम णीजी प्रज्ञु चिंता चूरोने ॥ जवजवनी जावठहरा यारे ॥ ज ॥ १ ॥ स्वभाना सुखने अन्ननी ठाया ॥ एवी संसारनी ठे माया ॥ एवो उपदेश ठे साचो तुमारो पण ॥ ठासे जगत जरमाया रे ॥ २ ॥ जले ॥ जिणंद वाणी अमीय समाणी ॥ साची जाणे ठे जवि प्राणी ॥ ठास ठासतो जवि ठांडी देजो ने तुमे ॥ माखण लेजो तांणीरे ॥ ३ ॥ जले ॥ धन्य

सफल दिन आज घमिपल ॥ आजनी सुकृत कमा
णी ॥ वीर्य उल्लास विनानी जे करणी ते ॥ पाणी
मां जेम लींटी ताणीरे ॥ ४ ॥ चले ॥ साचीतो वा
णी तेणेज जाणी ॥ जेणें करी ते प्रमाणी ॥ अक्षय
ज्ञान मुनी स्पर्श ज्ञानविण ॥ वीजुं वधुं धुल धाणी
रे ॥ ५ ॥ चले ॥ इति ॥

॥ श्रीशांति नाथजी स्तवनं ॥

तुभ्यं नमस्ते स्वामी ॥ शांति जिनंदाजी ॥ दग
देखे परमानंदा, ॥ मुख पुनमचंदाजी ॥ शां ॥ एटे
क ॥ जन्मे प्रजु शांति सुधारी ॥ जग मरी निवारी
जी ॥ प्रजु शांति नाम हितकारी ॥ मेंने सेवा धारी
जी ॥ १ ॥ तुभ्यं ॥ तुमविना कोन हे मेरा ॥ तुं
साहब हेराजी ॥ हरो मिथ्या रोग अंधेरा ॥ हठो
जव फेराजी ॥२॥ तुभ्यं ॥ तुम दीन दयालाजी ॥
शासनके लालाजी ॥ मे सदा जपुं जप माला ॥
घर खेम खयालाजी॥३॥तुभ्यं ॥ तुम कल्पवृक्ष हित
कारी ॥ चिंतामन धारीजी ॥ प्रजु आतम शरण तु
मारी॥द्यो हमे सुधारीजी ॥ अव खुसी तुमारीजी ॥
॥ ४ ॥ तुभ्यं ॥ इति ॥

ठुमरी

वीर प्रजुजी तेरी दोस्तिमे ॥ मेरी समता सखी मे
रवान जइरे ॥ एटेक ॥ आप न आए वोध पढाए॥
तेरी सुरतपर कुरवान जइरे ॥ १ ॥ वीर ॥ शासन

नायक एहि अरज हे ॥ दीजे दरस बमी वेर नइ रे ॥ २ ॥ वीर ॥ आशा दासकी पुरन कीजें ॥ चरण शरण लपटाय रहरे ॥ ३ ॥ वीर ॥

॥ समेत शिखरथी स्तवन ॥

तुमतो चले विराजोजी ॥ सांचरिया महाराज शिखरपर चले विराजोजी ॥ तेरे घाटे चोकी लागे॥ यात्री जाए न पावे ॥ हुकुम कियो श्रीपार्श्वजिनेश्वर ॥ बांह पकमलेजावे ॥१॥ तु ॥ उंचा नीचा पर्वतसो हे ॥ तले चीलका वासा ॥ पेरूपेरू पर सिंह धरुके ॥ जिहां लिया तुम वासा ॥ २ ॥ तु ॥ टुंक टुंक पर धजाविराजे ॥ ऊालरका ऊएकारा ॥ ऊालरका ऊए कारासेती ॥ गुंजे परवत सारा ॥ तुम ॥३॥ दूरदेस के जात्री आवे ॥ पुजा आन रचावे ॥ अष्ट द्रव्य पूजामे लावे॥मन वंछित फलपावे ॥तु॥४॥ सुरनरमुनि जनवंदन आवे ॥ महा परम सुखपावे ॥ चंद खुसाल चरणको सेवक हरख हरख गुणगावे ॥ तुम ॥५॥ इति॥

॥ विरजिनस्तवन ॥

नाथ केसें जंबुको मेरुं कंपायो ॥ ना ॥ सिद्धा रथ सुत नाम धराया ॥ त्रिसला राणीनो जायो ॥ छप्पन दिशि कुमरी मील आइ ॥ सुची कर्म करायो ॥ १ ॥ ना ॥ इंद्र महोत्सव जवतिहां प्रग टयो ॥ मेरु शिखरले आयो ॥ इंद्र सिहांसन पर ले बेठो ॥ मनसदेह जरायो ॥ २ ॥ ना ॥ अब

धि ज्ञानसे तवतिहा देख्यो ॥ अंगुठे मेरु चंपायो ॥ संशय हरण चरण प्रभुजीके, कलस हजारु ढरायो ॥ ना ॥ ३ ॥ सिद्धारथ घर आयकेरे ॥ मंगल चार गवायो ॥ सुमन अधमकों निजपद दीजे, मन वंछित फल पायो ॥ ४ ॥ इति ॥

समेत शिखर ॥

सांवरिया जैसें बने तेसें तारो ॥ मेरी करणी कछु न विचारो ॥ सा ॥ नागनागनी व्याकुल दोनुं ॥ जरत अगनीसे उवारो ॥ उनकों राजदियो सुर पुरकों ॥ मुजकों क्योंन उधारो ॥ १ ॥ सां ॥ अश्व सेनके नंदन कहिये ॥ माता वामा देवी प्यारो ॥ बाल आवस्थामें जोग लियो हे ॥ चार महाव्रत धारो ॥ २ ॥ सां ॥ योग निरोधी दसलख श्रावक ॥ अष्ट करमकों पछारो ॥ काया गाल गए सिवपुरकों ॥ लोका लोकनिहारो ॥ ३ ॥ सां ॥ धन्यघरी धन्य जाग हमारो ॥ शिखर समेत जुहारो ॥ मनवचका नमत बुध गंगा ॥ चरण कमल वलि हारो ॥

रागणी माढ.

मेवाडोरे मली ॥ एराह ॥ प्रभु जीव जीवन आधाररे, तुमने खमारे खमा ॥ एटेक ॥ श्रीसिद्धाचल मंडन साहेव, तुं प्रभु आनंद कंद ॥ भव्य कमल प्रति बोधन दिनमणि, मुखडुं पुनम चंदरे ॥ १ ॥ तु ॥ तुज वाणी अमृत झरेरे, सागर जेम

गंजीर ॥ दीन दयाल कृपाकर मुजपर, तारक नव जल तीररे ॥२॥ तुं ॥ नवनव नटकत शरणेहुं आव्यो, नांगो नवनी नीर ॥ मारां तारां सुं करो प्रजु, तारक ठो वडवीररे ॥ ३ ॥ तुं ॥ मरुदेवीने तारियां प्रजु, तार्या सोये पुत्र ॥ तार्या विना केम चालसे प्रजु, हुं पणहुं घर सूत्ररे ॥ ४ ॥ तुं ॥ दीना नाथ दयाल दयाकरी, राखो मुजने पास ॥ पुना जैन गायक मंमलीने ॥ अक्षय ज्ञाननी आशरे ॥ ५ ॥

पद.

जगतनी घटना ठे अतिन्यारी ॥ एराह ॥ आंगी नी रचना ठे बहुसारी ॥ करतां अनुमोदन पुण्यथाय नारी ॥ एटेक ॥ हीरामणि माणक जडेलां, मुखठवी तेज देखी जाय चन्द्रहारी ॥ १ ॥ आं ॥ मस्तक मुकुट कानेठे कुंमल, झलक झलक तेज पुंज बलिहारी ॥ २ ॥ आं ॥ बांहे बाजुबंध हार गलामा, मुक्ताफलना वंदेठे नरनारी ॥ ३ ॥ आं ॥ सर्वांगे प्रजुतेज अनंतु, चंद्रसूर्य कोटी तेज जायहारी ॥४॥ आं ॥ पुना जैनगायन मंडलीने दीजे ॥ अक्षय ज्ञानदशा विस्तारी ॥ ५ ॥ आं इति ॥

होरी

॥ सामरो सुख दाई, जाकी ठवी वरनी नजाई ॥ सा ॥ एटेक ॥ श्रीअश्वसेन वामा नंदनकी, कीर्ति त्रिजुवन ठाई ॥ समेत शिखर गिरि मंमन प्र-

प्रभुको, देख दरस हरखाई ॥ हृदय मेरो अति उल साई ॥ १ ॥ सा ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगटे, आज आनंद वधाई ॥ तिन लोकको नायक निरख्यो, प्रगटी पूर्व पुण्याई, सफल मेरो जन्म कहाई ॥ २ ॥ सा ॥प्रभुके सरस दरस विनुपाए,नव नव नटक्योंमें नाई ॥ अवतो प्रभुके चरण चित्तलाग्यो, वाल कहे गुणगाई; प्रभु संग लगन लगाई ॥३॥ सा ॥ इति ॥

होरी.

राग उपर प्रमाणे ॥ सामपे कहियो वीनती मोरी ॥ एटेक ॥ राजुल चंद्रानकों बोले, आइ वसंत रीतु होरी, वागुंमें फाग केसीमे खेलुं ॥ सव सखियनकी टोरी ॥ प्रिया गए हमको छोरी ॥ १ ॥ सा॥ सज सिनगार संग लइ सिखरे, अवीर गुलालकी झोरी, अपने पिया संग खेलखेलत हे, केशरको रस घोरी, वाजे रूफ ताल टकोरी॥ २ ॥ ॥ सा ॥ एते कारन वालम घर आवो, खेलुमें रंगभर होरी॥ ए वीनती सुन प्रभुने राजुलकी ॥ दीने सव डुखतोरी ॥ रत्नकहे नइ वरजोरी ॥ ३ ॥ सा ॥ इति ॥

॥ पावा पुर जिन गीतं ॥

अखियां मेरी प्रभुजीसें आज लगी ॥ टेर ॥ पावा पुर श्रीवीरजिनेश्वर ॥ देखत डुरगति डुरटली॥ अ ॥ १ ॥ मस्तक मुकुटसोहे मनमोहन ॥ विचविच हीरा मोतिलालजडि ॥ २ ॥ अ ॥ रत्नजडि-

त दोयकुंमलसोहे ॥ ॥ गले बिच मोतियन माल-पनी ॥ ३ ॥ अ ॥ हरखचंद के तुम प्रभुसाहेब ॥ चरण न ठोडुं पल एक घरी अ ॥ इति ॥

॥ पद ॥

जिन राज नाम तेरा ॥ हो राखुंरे हमारा घटमे ॥ टेक ॥ जाके प्रभाव मेरा॥अज्ञानका अंधेरा ॥ भा गा भया उजेरा ॥ १ ॥ रा ॥ सुरत तेरी रागें ॥ दे-ख्या विभाव त्यागे ॥ अध्यात्म रूप जागे ॥२॥ रा ॥ मुद्रा प्रमोद कारी ॥ रूपभेस ज्युं तिहारी ॥ लाग-त मोहे प्यारी ॥३॥ रा ॥ त्रैलोकनाथ तुमही ॥ ह-महें अनाथ गुनही ॥ करियें सनाथ अवहि ॥४॥ रा ॥ प्रभुजी तिहारी सांखे ॥ जिन हर्ष सुरी भा-पे ॥ दिल माहिं येहिं राखेहो ॥ ५ ॥ इति ॥

पीलु बरवा.

अवतो उधार्यो मोहे चहिये ॥ जिनंदराय, राखुं भरोंसो मे प्रभुके चरणको ॥ एटेक ॥सुनो श्रीश्रेयां सनाथ ॥ साचो शिव पुर साथ ॥विरुद तुमारो प्रभु तारन तरनको ॥ १ ॥ अ॥ सिंह पुरी जन्म ठाम ॥ पिता विष्णुसेन नाम ॥ विष्णुराणी कुंखें जायो ॥ कंचन वरनको ॥ २ ॥ अ ॥ वरस चोरासी लाख ॥ आयुष्य परम भांख ॥ लंठन चरन खग सुखके क-रनको ॥ ३ ॥ अ ॥ हुंतोहुं अनाथ तुम नाथनके नाथ प्रभु ॥ तुमविना और मेरे डुसरो सरनको

॥ ४ ॥ रा ॥ प्रजुके चरणारविंद पुजत हरपचंद ॥ काटिये करम दुःखमेटिये मरनको ॥ ५ ॥ अ ॥ इति

पद.

गुण अनंत अपार प्रजुतेरे ॥ गु ॥ टेक ॥ सहस र सना करत सुरगुरु ॥ तोउ न पायोपार ॥ १ ॥ प्र ॥ कोन अंवर गिने तारा ॥ मेरु गिरको नार ॥ चरम सागर लहर माला ॥ करत कोन विचार ॥ २ ॥ प्र ॥ नक्ति गुण लवलेस नारवें ॥ सुविधिजिन सुखकार ॥ समय सुंदर कहत हमको॥स्वामी तुम आधार ॥प्र०॥

राग कल्याण.

माइ मेरो मन तेरो नंद हरें ॥ एटेक ॥ कंचन वरण कमल दल लोचन ॥ निरखत नयन ठरे ॥१॥ पंचवरण मनहरण धरनपर, ठम ठम पांव धरे ॥रत- न जमित कंचन घुघरियां ॥रुण ऊणकार करे ॥ २ ॥ मा ॥ हलत लसत मुगता फल माला ॥ पीत वसन उपरे ॥ मानु चलिहे मान शिखरते ॥ गंगप्रवाह खिरे ॥ ३ ॥ मा ॥ धन त्रिसलादे नाग्य तिहारो ॥ तुंतिहुं नवन शिरे ॥ तीन नवनको नायक तेरे ॥ आंगनमे विचरे ॥ ४ ॥ मा ॥ श्रीवर्द्धमान जिनंकी मूरत ॥ विनु देखे न सरे ॥ हरखचंद प्रजु वदन विलोकत ॥ सवहि काजसरे ॥ ५ ॥ इति ॥

तुमरी.

इंद्रानी सव ठमक ठमक जन्म महोत्सव आवे ॥

घनननननन घनननननन, घंटा सुघोखा वाजे ॥एटेक॥ ॥गान तान नाच रंग॥इंद्रासन थाय ॥ धन्य धन्य आजको दिवस, प्रभुजीको दरिसन पाय॥ इं ॥१॥ वीर काया लघु देखी ॥ इंद्र मन अकलाय ॥ अवधि देखी वीर मेरु अंगुठे दवाय ॥२॥ इं ॥ जन्म महोत्सव जिनको करी, इंद्र देव लोक जाय ॥ दास नर प्रभु तणा, हरसेन गुन गाय ॥३॥ इंद्र॥ इति

॥ राग सोरठ ॥

॥ कहुं कहांलोंवारुं नणदलवीर ॥ क० ॥ मिथ्या गणकि पूंजीपाइ, वनगए जनम फकीर ॥ क० ॥१॥ गईय गई सो जलीय रहीसो, धर धर मनको धीर॥ कहांलों धीर धरुं धीरज धर,विरह जनमवहीर॥क० ॥२॥ जालजाल विंदी नही जावै,आजुपण नही वीर ॥ ग्यानसार वालो आयमिलै घर,तोन रहै कोई पीर॥

॥ राग पुनः ॥

॥ होजी आली जानै मानै थारी चाहि घणीछै, वहिला वेग पधारो ॥ हो० ॥ आयुकरम विन सातुं किस्थिति, कोरूड सागर इककोड गुणीछै ॥ हो० ॥ १ ॥ के ते दिन चिंतवतां अबकै, ज्युं त्युं प्रीतवणी छै ॥ २ ॥ जलो बुरो तोही चलि आयो, अंत तो घरको धणी छै, ग्यानसार कहै ढीलन कीजै, प्रीत अंतरको जणीछै ॥ हो० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ राग भैरुं ॥

॥ ऋषभ जिणंद आणंद कंद कंदा, याहीते चरण सेवे कोट सुर इंदा ॥ ऋ० ॥१॥ मरुदेवा नाभि नंद, अनुभवचकोर चंद ॥ आपरूपकोस्वरूप, कोटज्युं दिणंदा ॥ ऋ० ॥ २ ॥ शिवशक्ती न चाहुं चाहुं न गोविंदा ॥ ग्यानसार भक्तिचाहुं, मे हुं तेरा बंदा ॥

आयो हलकारो गोपी मदको ओ राह

प्रभु नेम कुमरजी आंप वीराजो गीरनारमे एटेक । गीरनारी गीरवररे ऊपर. ऊंची टुंकां शात ॥ शातों टुंके चरण पाडुका. में वंदु दिनरातरे. प्रभु नेमकुम रजी ॥ १ ॥ शंख लंछन दश धनुपरीकाया. आयु वर स हजार॥ श्याम वरण शीवादेवी नंदन, वंदो वार हजाररे॥प्रभु नेमकुरजी ॥ २ ॥ काती वद बारश चवी आयो. सौरी नयरी मजार ॥ श्रावण सुद पंच मि दिन जनम्या. वरत्यो जयजय कार रे॥प्रभु नेमकु ॥ ३ ॥ शहशावन जइ शंयम लीनो. छांडी राजुल नार ॥ श्रावणवद षष्टी दीन दीक्षा. प्रभुजी बाल कुमाररे. प्रभु नेमकुमरजी ॥ ४ ॥ चोपन दीन छदम स्थ रहीने. आशो वद्य अमाश ॥ वेरूश वृक्ष तले प्रभु पायो केवल ज्ञान प्रकाशरे ॥ प्रभु नेमकुमरजी ॥ ५ ॥ सुदी आषाढ अष्टमी रुमी, शंलेखन एकमा स ॥ पदमाशन प्रभु मोक्ष पधारें. अविनाशी आवा सरे ॥ प्रभु नेमकुरजी ॥ ६ ॥ कल्याणक पांचो इम

सुणतां. पामो अक्षय ज्ञान ॥ बालमित्रकी अरजी इणवीध. प्रभुको शरण प्रधानरे ॥ प्रभु नेमकुमरजी ७

पद.

किसविध किये कर्म चकचूर ॥ उतम क्षमापे अचंभो मने आवे ॥ कि ॥ एक तो प्रभु तुम परम दयालु रोसन तिलतुष मात्र हजूर ॥ दुजे जीव दयाके सागर॥ तीजे संतोषी भरपुर ॥ उ ॥ १ ॥ चोथे प्रभुतुमही तउपदेशी ॥ तारन तरन जगतं मसहुर ॥ कोमल वचन सरन सत वक्ता ॥ निर्लोभी संजम तपसूर॥२॥ केसे मोह मल्लतुमजीत्यो ॥ अंतराय केसेकियो निरमूल ॥ केसेज्ञाना वरण निवार्यो ॥ केसे कियेचा रोघातिया दूर ॥३ ॥ त्यागी वैरागी हो तुमसाहेव ॥ अकिंचनव्रत धारकजूर ॥ सुरनर मुनी सेवेचर्नतुमारे तोभीनहि प्रभुजीकेगरुर ॥ ४ ॥ करत आसअरदास नेनसुख ॥ दीजेअव मोहेदान जरुर ॥ जन्मजन्म पद पंकज सेवुं ॥ ओरन कछुचित चाहेहजूर ॥ ५ ॥

॥ इति चतुर्थ परिछेदः समाप्तः ॥

॥ अथ पंचम परिछेद. प्रारज्यते ॥

॥ अथ श्री सीताजीनी सझाय प्रारंज ॥

॥ जनक सुता हुं नाम धरावुं, राम ठे अंतरजा
मी ॥ पालव मारो मेलने पापी, कुलने लागे ठे
खामी ॥ अरूशो मांजो, मांजो मांजो मांजो ॥ अ०
॥ महारो नाहलीउ ऊहवाय ॥ अ० ॥ मने संग के
नो न सुहाय ॥ अ० ॥ माहारुं मन मांहेथी अकु
लाय ॥ अ० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मेरु महीधर ठा
म तजे जो, पछर पंकज ऊगे ॥ जो जलधि मर्यादा
मूके, पांगलो अंबर पूगे ॥ अ० ॥ २ ॥ तो पण तुं
सांजल रेरावण, निश्चय शील न खंरुं ॥ प्राण अ
मारो परलोक जाये, तो पण सत्य न ठंरु ॥ अ० ॥
॥ ३ ॥ कुण मणिधरनी मणि लेवाने, हैडे घाले
हाम ॥ सती संघातें स्नेह करीने, कहो कुण साधे
काम ॥ अ० ॥ ४ ॥ परदारानो संग करीने, आखर
कोण उगरियो ॥ ऊंडुं तो तुं जोवे आलोची, सही
तुऊ दाहाको फरियो ॥ अ० ॥ ५ ॥ जनकसुता हुं
जग सहु जाणे, जामंरुल ठे जाई ॥ दशरथ नंदन
शिर ठे स्वामी, लखमण करशे लमाई ॥ अ० ॥ ६॥
हुं धणीयाती पीउ गुणराती, हाथ ठे महारे ठाती
॥ रहे अलगो तुज वयणें न चलुं, कां कुलें वाये ठे
काती ॥ अ० ॥ ७ ॥ उदयरतन कहे धन्य ए अब

ला, सीता जेहनुं नाम ॥ सतीयो मांहे शिरोमणि कहीये, नित्य नित्य होजो प्रणाम ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ अथ वणजारानी सद्याय ॥

॥ नरजव नयर सोहामणुं ॥ वणजारा रे ॥ पामीने करजे व्यापार ॥ अहो मोरा नायक रे ॥ सत्तावन संवर तणी ॥ व० ॥ पोठी जरजे उदार ॥ १ ॥ ॥ अ० ॥ शुज परिणाम विचित्रता ॥ व० ॥ करियाणां बहु मूल ॥ अ० ॥ मोक्ष नगर जावा जणी ॥ व० ॥ करजे चित्त अनुकूल ॥ अ० ॥२॥ क्रोध दावानल उंलवे ॥ व० ॥ मान विषम गिरिराज ॥ अ० ॥ उंलंघजे हलवें करी ॥ व० ॥ सावधान करे काज ॥ ॥ अ० ॥ ३ ॥ वंश जाल माया तणी ॥ व० ॥ नवि करजे विशराम ॥ अ० ॥ खाम्री मनोरथ जट तणी ॥ व० ॥ पूरणनुं नहीं काम ॥ अ० ॥ ४ ॥ राग द्वेष दोय चोरटा ॥ व० ॥ वाटमां करशे हेरान ॥ अ०॥ विविध वीर्य उल्लासथी ॥ व० ॥ ते हणजे शिरवाय ॥ अ० ॥ ५ ॥ इम सवि विघन विदारीने ॥ व० ॥ पहोंचजे शिवपुर वास ॥ अ० ॥ खय उपशम जे जावना ॥ व० ॥ पोठी जरया गुण राश ॥ अ० ॥६॥ खायिकजावें ते थशे ॥ व० ॥ लाज होशे ते अपार ॥ अ० ॥ उत्तम वणज जे एम करे ॥ व० ॥ पद्म नमे वारंवार ॥अ०॥७॥ इति ॥ वणजारानी सद्याय॥

॥ अथ सोदागरनी सद्याय ॥
॥ लावो लोवोने राज, मोघां मुलनां मोती ॥
॥ ए देशी ॥

॥ सुण सोदागर वे, दिलकी वात हमेरी ॥ तें सोदागर दूर विदेशी, सोदा करनकुं आया ॥ मोसम आये माल सवाया, रतनपुरीमां ठाया ॥ सु० ॥ ॥ १ ॥ तिनुं दलालकु हर समजाया, जिनसें वहोत न फाया ॥ पांचुं दीवानुं पाऊं जमाया, एककुं चोकी विठाया ॥ सु० ॥ २ ॥ नफा देख कर माल विहरणां, चुआ कटे न युं धरनां ॥ दोनुं दगाबाजी दुर करनां, दीपकी ज्योतसें फिरनां ॥ सु० ॥ ३ ॥ औरदिन वली मेहेलमें रहनां, वंदरकुं न हलानां ॥ दश सेरसें दोस्तिहि करनां, उनसें चित्त मिलानां ॥ ॥ सु० ॥ ४ ॥ जनहर तजनां, जिनवर भजनां, सजना जिनकुं दलाइ ॥ नवसरहार गलेमें रखनां, जखनां लखकी कटाइ ॥ सु० ॥ ५ ॥ शिरपर मुकुट चमर ढोलाइ, अम घर रंग वधाई ॥ श्रीशुभवीर विजय घर जाइ, होत सतावी सगाइ ॥सु०॥इति॥

॥ अथ श्री आपस्वभावनी सद्याय ॥

॥ आप स्वभावमां रे, अवधु सदा मगनमें रहेनां ॥ जगत जीव हे करमाधीना, अचरिज कछुअ न लीना ॥ आ० ॥ १ ॥ तुम नहीं केरा कोइ नहीं तेरा, क्या करे मेरा मेरा ॥ तेरा है सो तेरी पासे,

अवर सवे अनेरा ॥ आ० ॥ २ ॥ वपु विनाशी तुं अविनाशी, अब हे इनकुं विलासी ॥ वपु संग जब दूर निकासी, तब तुम शिवका वासी ॥ आ० ॥ ३ ॥ रागने रीसा दोय खवीसा, ए तुम दुःखका दीसा ॥ ॥ जब तुम उनकुं दूर करीसा, तब तुम जगका ईसा ॥ आ० ॥ ४ ॥ परकी आसा सदा निरासा, ए हे जग जन पासा ॥ ते काटनकुं करो अन्यासा, ल हो सदा सुखवासा ॥ आ० ॥ ५ ॥ कबहींक काजी कबहींक पाजी, कबहींक हुआ अपन्राजी ॥ कबहींक जगमें कीर्त्ति गाजी, सब पुजलकी बाजी ॥ अ० ॥ ॥ ६ ॥ शुद्ध उपयोग ने समता धारी, ध्यान ज्ञान मनोहारी ॥ कर्म कलंककुं दूर निवारी, जीव वरे शिव नारी ॥ आ० ॥७॥ इति आपस्वन्नाव सद्याय ॥

॥ अथ श्री सहजानंदीनी सफाय ॥
वीजी अशरण न्नावना ॥ ए देशी ॥

॥ सहजानंदी रे आतमा, सूतो कांइ निश्चिंत रे ॥ मोह तणा रणीया न्नमे, जाग जाग मतिवंत रे, लूटे जगतना जंत रे, नाखी वांक अत्यंत रे, नरका वास ठवंत रे, कोइ विरला उगरंत रे ॥ स० ॥ १ ॥ राग द्वेष परिणति न्नजी, माया कपट कराय रे ॥ काश कुसुम परें जीवमो, फोगट जनम गमाय रे, माथे न्नय जम राय रे, श्योमन गर्व धराय रे, सहु एक मारग जाय रे, कोण जग अमर कहाय रे ॥

॥ स० ॥ २ ॥ रावण सरीखा रे राजवी, नागा चा ल्या विण धाग रे ॥ दश माथां रण रूवड्यां, चांच दीए शिर काग रे, देव गया सवि जागरे, न रह्यो माननो ठागरे, हरि हाथें हरिनाग रे, जोजो जाइर्जे ना राग रे ॥ स० ॥ ३ ॥ केइ चाल्या केइ चालशे, केता चालणहार रे ॥ मारग वहेतो रे नित्य प्रत्यें, जोतां लक्ष हजार रे, देश विदेश साधार रे, ते नर इणें संसार रे, जातां जम दरबार रे, न जुवे वार कुवार रे ॥ स० ॥ ४ ॥ नारायणपुरी द्वारिकां, ब लती मेली निराश रे ॥ रोता रणमां ते एकला, ना ठ देव आकाश रे, किहां तरु ठाया आवास रे, ज ल जल करी गयो सास रे, बल जड्ड सरोवर पास रे, सुणी पांकव शिववास रे ॥ स० ॥ ५ ॥ गाजी गाजीने बोलता, करता हुकम हेरान रे ॥ पोढ्या अग्निमां एकला, काया राख समान रे, ब्रह्मदत्त नरक प्रयाण रे, ए ऋद्धि अथिर निदान रे, जेवुं पीपल पान रे, म धरो जूठ गुमान रे ॥ स० ॥ ६ ॥ वालेसर विना एक घरूी, नवि सहातुं लगार रे ॥ ते विना जनमारो वही गयो, नहीं कागल समाचार रे, नहीं कोइ कोइनो संसार रे, स्वारथीयो परिवार रे, माता मरुदेवी सार रे, पहोतां मोक्ष मोझार रे ॥ स०॥ ७ ॥ माता पिता सुत बांधवा, अधिको राग विचार रे ॥ नारी असारी रे चित्तमां, वंछे विष

य गमार रे, जुवो सूरिकांता जे नार रे, विष देती जरतार रे, नृप जिनधर्म आधार रे, सजन नेह निवार रे ॥ स० ॥ ८ ॥ हसी हसी देती रे ताली यो, शय्या कुसुमनी सार रे ॥ ते नर अंते माटी थया, लोक चर्णे घर वाररें, घमता पात्र कुंजार रे, एहवुं जाणी असार रे, गेडे विषय विकार रे, धन्य तेहतो अवतार रे ॥ स० ॥ ए ॥ थावच्चासुत शिव वस्या, वली एलाची कुमार रे ॥ धिक् धिक् विषया रे जीवने, लइ वैराग्य रसाल रे, मेहेली मोह जंजा लरे, घर रमे केवल बाल रे, धन्य करकंकु जूपाल रे ॥ स० ॥ १० ॥ श्री शुजविजय सुगुरु लही, धर्म रयण धरी ठेक रे ॥ वीर वचन रस शेलडी, चाखे चतुर विवेक रे, न गमे ते नर नेक रे. धारता धर्म नी टेक रे, जवजल तरिया अनेक रे ॥ स० ॥ ११ ॥ इति सहजानंदी सद्याय ॥

॥ अथ सांजल सयणानी सद्याय ॥

॥ सांजल सयणा साची सुणावुं, पूरवपूएयें तुं पाम्यो रे जाइ ॥ नरक निगोदमां जमतां नरजव, तें निःफल केम वाम्यो रे जाइ ॥ सां० ॥ १ ॥ जैनधर्म जयवंतो जगमां, धारी धर्म न साध्यो रे जाइ ॥ मेघघटा सरिखा गज साटे, गर्दज घरमां बांध्यो रे जाइ ॥ सा० ॥ २ ॥ कल्पवृक्ष कूहाडे कापी, धंतुरो घेर धारे रे जाइ ॥ चिंतामणि चिंतित पूरण ते, का

ग उघाडण डारे रें जाइ ॥ सां ॥ ३ ॥ इम जाणी जावा नवि दीजें, नर नारी नरजवनें रे जाइ ॥ ठे लखी शुद्ध धर्मने साधो, जे मान्यो मुनि मनने रे जाइ ॥ सां० ॥ ४ ॥ जे विजाव परजावमा जजीयें, रमण स्वजावमां करीयें रे जाइ ॥ उत्तम पदपद्मने अवलंबी, जवियण जवजल तरीयें रे जाइ ॥ सां० ॥ ॥ ५ ॥ इति श्रीआतम हित सद्याय ॥

॥ अथ रात्रिजोजननी सद्याय प्रारंज ॥

॥ पुण्य संजोगें नरजव लाधो, साधो आतम काज ॥ विषया रस जाणो विष सरिखो, इम जांखे जिनराज रे प्राणी ॥ रात्रिजोजन वारो ॥ १ ॥ आ गम वाणी साची जाणी, समकित गुण सही नाणी रे प्राणी ॥ रात्रि० ॥ ए आंकणी ॥ अजक्ष्य बावी शमां रयणीजोजन, दोष कह्या परधान ॥ तेणें का रण रातें मत जमजो, जो हुवे हइडे शान रे ॥ ॥ प्रा० ॥ २ ॥ दान स्नान आयुधने जोजन, एटला रातें न कीजें ॥ ए करवां सूरजनी साखें, नितिशच न समजीजें रे ॥प्रा०॥३॥ उत्तम पशु पंखी पण रातें, टाले जोजन टाणो ॥ तुमे तो मानवी नाम धरावो, केम संतोष न आणो रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ माखी जू कीमी कोली आवको, जोजनमां जो आवे ॥ कोढ जलोदर वमन विकलता, एवा रोग उपावे रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ ठन्नुं जव जीवहत्या करतां, पातक जेह उपा

युं ॥ एक तलाव फोमंतां तेटलुं, दूपण सुगुरु बतायुं रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ एकलोत्तर जव सर फोड्या सम, एक दव देतां पाप ॥ अठलोत्तर जव दव दीधा जिम, एक कुवणिज संताप रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ ॥ एक शो ने चुम्मालीश जव लगें, कुवणिजना जे दोप ॥ कूडुं एक कलंक दियंतां, तेहवो पापनो पोप रे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ एक शो एकावन जव लगें दीधां, कूमां कलंक अपार ॥ एक वार शील खंड्या जेवो, अनर्थनो विस्तार रे ॥ प्रा० ॥ ए ॥ एकशो नवाणुं जव लगें खंड्यां, शीयल विपय संबंध ॥ एकें रात्रि जोजनें तेहवो, कर्म निकाचित्त बंध रे ॥ प्रा० ॥ ॥ १० ॥ रात्रिजोजनमां दोप घणा ठे, श्यों कहियें विस्तार ॥ केवली कंहतां पार न पावे, पूरव कोडी मकार रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ रातें नित्य चोविहार करीने, शुज परिणाम धरीजें ॥ मासें मासें पासखमणनो, लाज इणे विध लीजें रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ मुनि वसतानी एह शिखामण, जे पाले नर नारी ॥ सुर नर सुख विलसीने होवे, मोक्ष तणा अधिकारी रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ इति रात्रिजोजननी सद्याय ॥

॥ अथ जोवन अस्थिरनी सद्याय ॥

॥ राग प्रजाति ॥

जोवनीयानी मोजां फोजां, जाय नगारां देती रे ॥ घमि घमि घमियालां वाजे, तोय न जागे तेथी

रे ॥ १ ॥ जो ॥ जरा राक्षसी जोर करे छे, फेलावे फजेती रे ॥ आवी अवधें उशंके नहीं, लखपतिने लेती रे ॥ जो० ॥ २ ॥ मालें बेठा मोज करे छे, खांतें जोवे खेती रे ॥ जमरो जमरो ताणी लेशे, गोफण गोला सेंती रे ॥ ॥ जो० ॥ ३ ॥ जिनराजाने शरणें जाउ, जोरालो को न जेथी रे ॥ डुनीयामा दूजो दीसे नहीं, आखर तरशो तेथी रे ॥ जो० ॥ ॥ ४ ॥ दंत पड्याने मोसो थयो, काज सखुं नहीं केथी रे ॥ उदयरत्न कहे आपें समजो, कहींयें वातो केती रे ॥ जो० ॥ ५ ॥

॥ अथ निंदावारक सद्याय ॥

॥ निंदा म करजो कोइ पारकी रे, निंदानां वोल्यां महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे माय बाप रे ॥ निंदा ॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमां बलती जुवो सहु कोय रे ॥ परना मेलमां धोयां लूगडां रे, कहो केम ऊजलां होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संजालो सहुको आपणो रे, निंदानी मूको पडी टेव रे ॥ थोडे घणे अवगुणें सहु जखा रे, केहनां नलियां चुए केहेनां नेव रे ॥ निं०॥३॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो आपणी रे, जेम छुटकवारो थाय रे ॥ निं० ॥ ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणो रे, जेहमां देखो

एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो रे, समयसुं दर सुखकार रे निं० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ शीयलविषे पुरुषने शिखामणनी सद्याय ॥

॥ चाल ॥ सुण सुण कंता रे, शीख सोहा मणी ॥ प्रीत न कीजें रे, परनारी तणी ॥ उथलो ॥ परनारी साथे प्रीत पिउमा, कहो किण परें कीजी यें ॥ उंघ वेची आपणी, उजागरो केम लीजीयें ॥ काठडीतुटो कहे लंपट, लोकमांहे लाजीये ॥ कुल विषय खंपण रखे लागे, सगामां केम गाजीयें ॥ १ ॥ चाल ॥ प्रीति करंतां रे, पहेलां वीहीजीयें ॥ रखे कोइ जाणे रे मनशुं ध्रुजीयें ॥ उ० ॥ ध्रुजीयें मनशुं झुरीयें पण, जोग मलवो ठे नहीं ॥ रात दिन विल पंत जाये, अवटाइ मरवुं सही, ॥ निज नारीथी संतोष न वल्यो, परनारीथी कहो शुं हशे ॥ जो ज यें जाणे तृप्ति न वली तो, एठ चाटे शुं हशे॥ २ ॥ मृग तृष्णाथी रे, तृष्णा नवि टले ॥ वेलु पील्यां रे, तेल न नीसरे ॥ उ० ॥ न नीसरे पाणी वलोवतां, लव लेश मांखणनो वली ॥ बुमतां वाचक जयां पाणी ते, तस्या वात नसांजली ॥ तेम नार रमतां पर तणी संतोष न वल्यो एक घमी ॥ चित्त चट पटी उचाट लागे, नयणें नावे निद्रडी ॥ ३ ॥ चाल ॥ जेवो खोटो रे रंग पतंगनो ॥ तेवो चटको रे, परस्त्रीसंग नो ॥ उ० ॥ परनारी साथें प्रेम पिउ

ना, रखे तुं जाणे खरो ॥ दिन चार रंग सुरंग रू डो, पछी नहीं रहे निर्धरो ॥ जे घणा साथें नेह मांडे छांरु तेहशुं प्रीतडी ॥ एम जाणी म म कर नाहला, परनारि साथें प्रीतडी ॥ ४ ॥ चाल ॥ जे पति वाहालो रे, वंचे पापिणी ॥ परशुं प्रेमेंरे राचे सापिणी ॥ उ० ॥ सापिणी सरखी वयण निरखी, रखे शीयलथकी चले ॥ आंखने मटके अंग लटके, देव दानवने छले ॥ ए मांहे काली अति रसाली, वाणी मीठी शेलडी ॥ सांजली रे जोला रखे जूले जाणजे विष वेलडी ॥ ५ ॥ चाल ॥ संग निवारो रे, पररामा तणो ॥ शोक न कीजें रे, मन मिलवा तणो ॥ उ० ॥ शोक शाने करो फोगट, देखवुं पण दोहि लुं ॥ कण मेडियें कण सेरीयें, जमतां न लागे सो हिलुं ॥ उश्वासने निःश्वास आवे, अंग जांजे मन जमे ॥ वली कामिनी देखी देह दाझे, अन्न दीठुं नवि गमे ॥ ६ ॥ चाल ॥ जाये कलाले रे, मनशुं कल मले ॥ उन्मत्त थइने रे, अलल पलल लवे ॥ ॥ उ० ॥ लवे अलल पलल जाणे, मोहगहिला मन रडे ॥ महा मदन कठिन कारी, मरण वारु ओवडे ॥ ए दश आवस्था काम केरी, कंत कायानेदहे ॥ एम चित्त जाणी तजेराणी, पारकी ते सुख लहे ॥ ७ ॥ चाल ॥ परनारीनां रे, परीजव सांजलो ॥ कंता की जें रे, जाव ते निर्मलो ॥ उ० ॥ निर्मलें जावें नाह

समजो, परवधू रस परिहरो ॥ चांपीऊं कीचक जी मसेनें, शिला हेठल सांजलो ॥ रण पड्यां रावण दशे मस्तक. रुरु वड्यां ग्रंथे कह्यां ॥ तेम मूंजपति दुःखपुंज पाम्यो, अपजश जग मांहे लह्यां ॥ ८ ॥ ॥ चाल ॥ शीयल सलूणा रे, माणस सोहीयें ॥ विण आजरणें रे, जग मन मोहीये ॥ ज० ॥ मोहीयें सुर नर करे सेवा, विष अमिय थई संचरे ॥ केसरी सिंह शीयाल थाये, अनल तिम शीतल करे ॥ साप थाए फूलमाला, लछी घरे पाणी जरे ॥ परनारी परिहरी, शीयल मन धरी, मुक्ति वधू हेला वरे ॥ ए ॥ चाल ॥ ते माटे हुं रे, वालम विनवुं ॥ पाए लागीनें रे, मधुर वयणे स्तवुं ॥ ज० ॥वयण म्हारुं मानीयें, परनारीथी रहो वेग ला ॥ अपवाद माथे चढे मोटा, नरकें थइयें दोहि ला ॥ धन्य धन्य ते नर नारि जे दृढ, शीयल पाले कुल तिलो, ते पामशे यश जगतमांहि, कुमुद चंद सम ऊजलो ॥ १ ॥

॥ अथ नारी शिखामणनी सद्याय ॥

॥ चाल ॥ एक अनोपम, शिखामण खरी ॥ स मजी लेजो रे, सघली सुंदरी ॥ ज० ॥ सुंदरी सदे जें हृदह देजें, पर सेजें नवि वेसीयें ॥ चित्तथकी चूकी लाज मूकी, परमंदिर नवि पेसीयें ॥ बहु घेर हींमी, नार निर्लज, शास्त्रे पण, तजवी कही ॥ जेम

प्रेत दृष्टें, पड्युं जोजन, जमवुं ते, जुग तुं नहीं ॥ १ ॥ चाल ॥ परशुं प्रेमें रे, हसीय न बोलीयें ॥ दांत देखाडी रे, गुह्य न खोलीयें ॥ ऊ० ॥ गुह्य घरनुं, परनी आगें, कहोने केम प्रकाशीयें ॥ वली वात जे, विपरीत जांखे तेहथी दूरें नाशीयें ॥ असुर सवारा, अने अगोचर, एकलां नवि, जाइयें ॥ सहसात्कारें, काम करतां, सहेजें शील गमावीयें ॥ २ ॥ चाल ॥ नट विट नरशुं रे नयण न जोडीयें ॥ मारग जातां रे, आघुं ढंढीयें ॥ ऊ० ॥ आघुं ते ढंढी, वात करतां, घणुंज रूडां, शोजीयें ॥ सासू अने, माना जएया विण, पलक पास न, थोजीयें ॥ सुख दुःख सरज्युं, पामीयें पण, कुलाचार, न मूकीयें ॥ परवश वसंतां, प्राण तजतां, शीयलथी, नवि चूकीयें ॥ ३ ॥ चाल ॥ व्यसनी साथें रे, वात न कीजीयें ॥ परनर हाथेरे, ताली न लीजीयें ॥ ऊ ॥ ताली न लीजें, नजर न दीजें चंचल चाल न चालिये ॥ एक विषयवुरूं, वस्तु केहनी हाथे पण नवि झालियें ॥ कोटी कंदर्प, रूप सुंदर, पुरुष पेखीन मोहिये ॥ तणखला तोले गणिय तेहने, फरिय सामुं न जोइयें ॥ ४ ॥ चाल ॥ पुरुष पीयारो रे, वलि न वखाणीयें ॥ वृद्ध ते पिता रे, सरखो जाणीयें ॥ ऊ० ॥ जाणीयें पीयु विण, पुरुष सघला, सहोदर, समो वडे ॥ पतिव्रतानो, धर्म जोतां, नावे कोइ तडोवडें ॥ कुरूप कुष्टी कूबडोने दुष्ट दुर्बल निर्गुणो ॥ जरतार पामी,

कामिनी ते इंद्रथी अधिको गणो ॥ चाल ॥ अमर कुमारें रे,तजी सुर सुंदरी ॥ पवनंजयें रे, अंजनापरि हरी ॥ज०॥ परिहरी रामेवनमां सीता,नले दमयंति वली ॥ महा सती माथे, कष्ट पड्यां पण शीयलथी ते,नवि चली ॥ कसोटीनी परें,कसीअ जोतां कंतशुं विहडे नहीं ॥ तन मन्न वचनें, शीयल राखे, सती ते जाणो सही ॥ ६॥ चाल ॥ रूप देखाडी रे, पुरुष न पाडीयें ॥ व्याकुल थइने रे मन न वगाडीयें ॥ ॥ ज० ॥ मन न वगाडीयें, पर पुरुषनुं, जोग जोतां, नवि मले ॥ कलंक माथे, चढे कूडां सगा सहु, दूरें टले ॥ अणसरज्यो, उचाट, थाये, प्राण तिहां, ला गी रहे ॥ इह लोक पामे आपदा, परलोक पीडा बहु सहे ॥ ७ ॥ चाल ॥ रामने रूपें रे, शूर्पनखा मोही ॥ काज न सीधुं रे, अने इजत खोइ ॥ ज० ॥ इजत खोइ देख अजया, शेठ सुदर्शन, नवि च ल्यो ॥ भरतार आगल, पडी जोठी, अपवाद सघ ले, उछल्यो ॥ कामिनी देखी, कामनी बुद्धें, वंकचूल, वाह्यो घणुं ॥ पणशीयलथी, चुकी नहीं, दृष्टांत एम, केतां भणुं ॥ ८ ॥ चाल ॥ शीयल प्रभावें रे, जुवो शोभे सती ॥ त्रिभुवनमांहे रे, जेह थई हती ॥ ज०॥ सती थईने, शीयल राख्युं, कल्पना, कीधी नहीं ॥ नाम तेहना, जगत् जाणे विश्वमां जगी रही ॥ वि विध रत्न, जडित भूषण, रूपसंदरि, किन्नरी ॥ एक

शियल विण शोभे नही ते सत्य गणजो सुंदरी ॥ए॥ चाल ॥ शीयल प्रभावे रे, सुर सेवा करे ॥ नव वा मेंरें जेह निर्मल धरे ॥ धरें निर्मल, शीयल उज्वल, तास कीर्त्ति झलहले ॥ मनकामना, सवि सिद्धि पामे, अष्ट नय, डुरे टले ॥ धन्य धन्य ते, जाणो धरा, जे शीयल चोखुं, आदरे, ॥ आनंदना ते, उंघ पामे उदय महा जस, विस्तरे ॥ १० ॥ इति नारीने

॥ अथ धोबीमानी सद्यय ॥

॥ धोबीमा तुं धोजे मननुं धोतीयुं रे, रखे राख तो मेल लगार रे ॥ एणेंमेले जग मेलो कस्यो रे, विण धोयुं न राखे लगार रे ॥ धो० ॥१॥ जिनशासन सरो वर सोहामणुं रे, सम कित तणी रूमी पाल रे ॥ दानादिक चार बारणां रे, मांहि नव तत्त्व कमल विशाल रे ॥ धो० ॥२॥ तिहां झीले मुनीवर हंसला रे, पी ये छे तप जप नीर रे॥शम दम आदि जे शील रे, तिहां खाले आपणुं चीर रे॥धो०॥३॥तपवजे तप तरुके करी रे,जालवजे नव तत्त्व बारु रे॥ छांटा उमाडे रखे पाप अढारना रे,एम उजलुं होशे ततकाल रे॥ धो० ॥४॥ आलोयण साबूडो सूधो करे रे,रखे आवे माया शेवाल रे ॥ निश्चे प वित्रपणुं राखजे रे, पछे आपण नीमी संजाल रे ॥ धो०॥५॥ रखे मूकतो मन मोकलुं रे॥चल मेलीनें संकेल रे॥ समयसुंदरनी शीखमी रे, सुखमी अमृत वेल रे ॥ धो० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री जरतचक्रीनी सद्याय ॥

॥ मनहीमे वैरागी जरतजी, मनहीमें वैरागी ॥ सहस्स बत्रीश मुकुट वंध राजा, सेवा करे वडवागी ॥ चोशठ सहस्स अंतेउरी जाके, तोहि न हुवा अनुरागी ॥ ज० ॥ १ लाख चोराशी तुरंगम जाके, उन्नुं कोम हे पागी ॥ लाख चोराशी गज रथ सो हिये, सुरता धर्मशुं लागी ॥ ज० ॥ २ ॥ चार करो ड मण अन्नज उपडे, लूण दश लाख मण लागे ॥ तीन कोम गोकुल डुजे,एक कोम हल सागी ॥ज०॥ ॥ ३ ॥ सहस्स बत्रीश देश वमजागी, जये सरवके त्यागी ॥ उन्नुं कोम गामके अधिपति ॥ तोहे न हुआ सरागी ॥ ज० ॥ ४ ॥ नव निधि रतन चोगडा वा जे, मन चिंता सब जांगी ॥ कनक कीरत मुनिवर वंदत हे, देजो मुक्ति में मागी ॥ ज० ॥

चेत चतुरनर निज मनमाहिं॥क्षण क्षण आयुष जायजी कांइ निचिंत थइने सुतो,नरजव ए दे जाय जी॥१॥चे॥काम क्रोध तृष्णारसें रातो,तेणें न जाएयुं, कांय जी॥लागे घरे किम कूप खणासेसांजे न बांधि पालजी॥२॥चे॥आयु अ स्थिर जिम जल पंपोटो मर ण ते आवे निदानजी ॥ राय रंक केहने नवि बोडे, पंडित जाण अजाणजी ॥३॥चे॥पुण्य पाप दोय साथें आवे, अवर न आवे कोयजी ॥ कहे नारायण धर्म करो जिम,आवागमण न होयजी ॥४॥ चे ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वाहुवलजीनी सझाय ॥

॥ बहेनी वोले हो वाहुवल सांजलो जी ॥ रूडा रूडा रंगनिधान ॥ गयवर चढिया हो, केवल केम हुवे जी ॥ जाएयुं जाएयुं पुरुप प्रधान ॥ व० ॥ १ ॥ तुज सम उपशम जगमां कुण गणेजी, अकल निरंजन देव ॥ जाइ जरतेसर वाहालां विनवे जी, तुऊ करे सुर नर सेव ॥ व० ॥ २ ॥ जर वरसालो हो वनमां वेठीउं जी, जिहां घणां पाणीनां पूर ॥ ऊरमर वरसे हो, मेहुलो घणुं जी, प्रगट्या पुण्य अंकूर ॥ व० ॥ ३ ॥ चिहुं दिशि वींट्यो हो वेलमीये घणुं जी, जेम वादल ठायो सूर ॥ श्री आदिनाथे हो, अमने मोकल्यां जी ॥ तुम प्रतिवोधन नूर ॥ व०॥ ॥ ४ ॥ वर संवेगरसे हो, मुनि जस्या जी ॥ पाम्युं पाम्युं केवल नाण ॥ माणकमुनि जस नामे हो, हरख्यो घणुं जी ॥ दिन दिन चढते रे, वान ॥ व० ॥ ५ ॥ इति सझाय ॥

॥ अथ श्री ढंढण ऋषिजीनी सझाय ॥

॥ ढंढण ऋषिजीने वंदणा ॥ हुं वारी लाल ॥ उत्कृष्टो अणगार रे ॥ हुं वारी लाल ॥ अजिग्रह लीधो आकरो ॥ हुं वारी० ॥ लब्धे लेशुं आहार रे ॥ हुं वारी लाल ढं० ॥ १ ॥ दिन प्रति जावे गोचरी ॥ हुं० ॥ न मले शुरू आहार रे हुं० ॥ न लीये मूल असूऊतो ॥ हुं० ॥ पींजर हुवो गात रे ॥ हुं ॥

ढं० ॥ २ ॥ हरि पूछे श्री नेमने ॥ हुं० ॥ मुनिवर सहस्स अढार रे ॥ हुं० ॥ उत्कृष्टो कोण एहमें ॥ ॥ हुं० ॥ मुजने कहो कृपाल रे ॥ हुं० ॥ ढं०॥ ३ ॥ ढंढण अधिको दाखीयो ॥ हुं० ॥ श्रीमुख नेम जिणंद रे ॥ हुं० ॥ कृष्ण उमाह्यो वांदवा ॥ हुं० ॥ धन्य जादवकुल चंद रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ४ ॥ गलीआरे मुनिवर मल्या हुं० ॥ वांदे कृष्ण नरेश रे ॥ हुं०॥ किणही मीथ्यात्वी देखिने ॥ हुं० ॥ आव्यो भाव विशेष रे ॥ हुं ॥ ढं० ॥ ५ ॥ आवो अम घर साधुजी ॥ हुं० ल्यो मोदक छे शुद्ध रे ॥ हुं० ॥ रिषीजी लइ आवीया ॥ हुं० ॥ प्रभुजी पास विशुद्ध रे ॥ ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ६ ॥ मुज लब्धे मोदक मिल्या ॥ ॥ हुं० ॥ मुजने कहो कृपाल रे ॥ हुं० ॥ लब्धि नहिं वत्स ताहरी ॥ हुं० ॥ श्रीपति लब्धि निहाल रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ७ ॥ तो मुजने लेवो नहीं ॥ हुं० ॥ चाल्यो परठण काज रे ॥ हुं० ॥ इंट निंभाडे जाइने ॥ हुं० ॥ चूरे कर्म समाज रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ८॥ आवी सूधी भावना ॥ हुं० ॥ पाम्यो केवल नाण रे ॥ हुं० ॥ ढंढण ऋषि मुगते गया हुं० ॥ कहे जिन हर्ष सुजाण रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ९ ॥ इति ढंढण ऋषिनी सद्याय ॥

॥ अथ श्री अइमंताजीनी सद्याय ॥

॥ श्री अइमंता मुनिवरजूके, करणीकी बलि हा

री वे ॥ खट वर्षनके संजम लीनो, वीरवचन चित्त धारी वे ॥ श्री० ॥ १ ॥ विजय नृपति श्रीदेवी नंदन, कोलासपुर अवतारी वे ॥ अंग अग्यार पढे गुण आदर, त्रिविध त्रिविध अविकारी वे ॥ श्री० ॥ ॥ २ ॥ तपगुण रयण संवत्सर आदिक, करकें काय उद्धारीवे ॥ प्रज्ञु आदेशें विपुलाचल परि, करी अणसण अति जारी वे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ केवल पाय मुक्ति गये मुनिवर, कर्म कलंक निवारी वे ॥ अढार अरूताले तिहिं गिरि ऊपर, कीनी थापना सारी वे ॥श्री०॥४॥ वाचक अमृत धर्म सुगुरुके, सुपसाये, सुवि चारी वे ॥ शिष्य क्षमाकल्याण हरख धर,गावे आति जयकारी वे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति सद्याय ॥

॥ अथ श्री करकंडू प्रत्येक बुधजीनी सद्या ॥

॥ चंपा नगरी अति जली ॥ हुं वारी लाल ॥ दधिवाहन जूपाल रे ॥ हुं वारी लाल ॥ पद्मावती कूखें उपनो ॥ हुं० ॥ कर्मे कीधो चंमाल रे ॥ हुं०॥ ॥१॥ करकंडुने करुं वंदणा ॥ हुं० ॥ पहिलो प्रत्येक बुध रे ॥ हुं० ॥ गिरुवाना गुण गावतां ॥ हुं० ॥ समकित थाये शुद्ध रे ॥ हुं० ॥ २ ॥ लाधी वांशनी लाकमी ॥ हुं० ॥ थयो कंचनपुर राय रे ॥ हुं० ॥ वापसुं संग्राम मांमीउं ॥ हुं० ॥ साधवी लीउं समजाय रे ॥ हुं० ॥ ३ ॥ वृषज्ञ रूप देखी करी ॥ हुं० ॥ प्रतिबोध पाम्यो नरेश रे ॥ हुं० ॥ उत्तम संजम

ए आंकणी ॥ मुख मीठो जूठो मनें जी, कूम कपट नो रे कोट ॥ जीन्नें तो जी जी करे जी, चित्तमांहे ताके चोट रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ आप गरजें आघो पडे जी, पण न धरे विश्वास ॥ मनशुं राखे आंतरो जी, ए मायानो पास रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ जेहशुं बांधे प्री तमी जी, तेहशुं रहे प्रतिकूल ॥ मेल न ठंडे मन तणोजी, ए माया नु मूल रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ तप कीधुं माया करी जी, मित्रशुं राखे रे जेद ॥ मल्लि जिनेश्वर जाणजो जी, तो पाम्या स्त्री वेद रे ॥ ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ उदयरत्न कहे सांजलो जी, मेलो मायानी बुद्धि ॥ मुक्ति पुरी जावा तणो जी, ए मारग ठे शुद्ध रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ आचारांग सूत्रनी स्थाय ॥

॥ कोइलो पर्वत धूंधलो रेलो ॥ ए देशी ॥

आचारांग पहेलुं कह्युं रेलो अंग इग्यार मजार रे ॥ चतुरनर ॥ अढार हजार पदें जिहां रेलो, दाख्यो मुनि आचार रे ॥ च० ॥ १ ॥ जावधरीने सांजलोरेलो. जिम जाजे जव जीति रे ॥ च० ॥ पूजा जक्ति प्रजावना रेलो, साचविये सवि रीति रे ॥ च० ॥ जाव० ॥ ए आंकणी ॥ दो सुअबंध सुहामणां रेलो, अज्जयणां पणवीस रे ॥ च० ॥ शाश्वता अर्थे इहां कहे रेलो, युक्ति श्रीजगदीश रे ॥ च०॥ जा० ॥ २ ॥ मीठडेवयणें गुरु कह्युं रेलो, मीठडुं अं

गज एह रे ॥ च० ॥ मीठडीरीते सांभले रेलो, सु
ख लहे मीठडां तेह रे ॥ च० ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ सुर
तरु सुरमणि सुरगवी रेलो, सुरघट पूरे काम रे
॥ च० ॥ सांभलवुं सिद्धांतनुं रेलो, तेहथी अति अ
भिराम रे ॥ च० ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीनयविजयविबु
धतणो रेलो, वाचक जस कहे शीश रे ॥ च० तुम
ने पहिला अंगनो रेलो, शरण होयो निशदीश रे
॥ च० ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥

॥ अथ कलियुगनी सद्याय ॥

॥ सरसती सामिनी पाय नमीने, उलट मनमां
हे आयो ॥ तीरथ नहीं कोइ इण संसारे, तेणे ए
कलियुग आयो ॥ देखो वे यारो कूडो कलियुग
आयो ॥ एआंकणी ॥ बावो कहे मारी नानकी
बेटी, दिन दिन मूल्य सवायो ॥ यारो कूडो कलियु
ग आयो ॥ १ ॥ राजा ते परजाने पीडे, कुनर काम
भलायो ॥ बोल बंध नहि मंत्रीने, गोचर खेत्र खे
डायो ॥ वे यारो ॥२॥ गुरुने गाल दिये नित चेलो,
वेद पुराण पढायो ॥ सासु चूले ने वहु खाटलडे,
फुके शरीर जलायो ॥ वे यारो ॥ ३ ॥ एशी वरस
नो हींडे डोशे, मूठे हाथ घलाये ॥ पंच तणी साखे
परणीने, अवला अर्थ गमायो ॥ वे यारो ॥४॥जोगी
जंगम ने संन्यासी भांग भखे मदवाहो ॥ चोर चाड
परधनने खाये, साधु जन सीदायो ॥ वे यारो ॥५॥

निर्धनने बहु बेटा बेटी धनवंत एक न पायो ॥ नीच तणे घर अति वणी लखमी उत्तम जन सीदायो ॥ वे यारो ॥ ६ ॥ न मले बाप संगाते बेटो, घणेरे मनोर्थे जायो ॥ हाथजपाडे मायने मारे, परणी शुं उमाह्यो ॥ वे यारो ॥ ७ ॥ घरमाने घेलो कहे बेटो, आद तणो मद वाह्यो ॥ बहु सूतीने वर हींमोले, सासरे सूवाने धायो ॥ वे यारो ॥ ८ ॥ हलखेडे ब्राह्मण गौ जोत्ति, निर्दय नाक फमायो ॥ मा बापे बेटी वेचीने, बेटाने परणायो ॥ वे यारो ॥ ए ॥ राग तणे वश गुरुने गुरुणी, काम करे परायो ॥ कांगानी पेरे कलहो मांमी, कुल गुरु नाम धरायो ॥ वे यारो ॥ १० ॥ वैयर वार वरसनीने वेटो, दीगे गोद खेलायो ॥ माग्यां मेह न वरसे महीयल, लाजें धर्यों सवायो ॥ वे यारो ॥ ११ ॥ कूमा कलियुगनी ए माया, देखी गीत गवायो ॥ पत्रणे प्रीति विमल परमारथ, जीन वचनें सुख पायो ॥ वे यारो कूमो ॥ १२ ॥

॥ अथ शियल स्वाध्याय ॥

धन्य धन्य ते दीन माहारो ॥ ए देशी ॥ शियल समुंव्रत को नहि, श्री जीनवर भाखे रे ॥ सुख आपे जे शाश्वतां, डुर्गति पमता राखेरें ॥शि०॥१॥ व्रत पचरकाण विना जुओ, नव नारद जेहरे ॥ एक ज शियल तणें बले, गया मुकतें तेहरे ॥ शि० ॥

॥ २ ॥ साधु अने श्रावक तणां, व्रत छे सुखदायीरे शियल विना व्रत जाणजो, कुशका सम जाइरे ॥ ॥ शि० ॥ ३ ॥ तरुवर मूल विना जिस्यो, गुण विण लाल कमानरे ॥ शियल विना व्रत एहवुं, कहे वीर नगवानरे ॥ शि० ॥ ४ ॥ नव वाडें करी निर्मलुं, प हेलुं शीलज धरजोरे ॥ उदय रत्न कहे ते पछी, व्रतनो खप करजोरे ॥ शि० ॥ ५ ॥

॥ निद्रानी सद्याय ॥

निद्रा वेरण हुइ रही, कीम कीजें हो सा पुरु श निदानके; चोर फरे चिहुं पासथी, किम सूता हो कांइ दिनने रात के ॥ नि० ॥ १ ॥ वीर कहे सूणो गोयमा, मत करजो हो एक समय प्रमादके ॥ जरा आवे यौवन गले, किम सूता हो कांइ कव ण सवादके ॥ नि० ॥ २ ॥ चउद पूरवधर मुनिवरा निद्रा करता हो गया नरक निगोद के ॥ अनंतो अनंत काल तिहांरहे, इम बगडे हो, कांइ धरमनो मोदके ॥ नि० ॥ ३ ॥ जोरावर घणा जालमी, यम राजा हो कांइ सवल करुरके ॥ नीज सेन्या लइ चिहुं दिशे, किम जागता हो नर कहिये शूर के ॥ नि० ॥ ४ ॥ जागतडां गंजे नहि, छेतराये हो नर सूतो नेटके ॥ सूतारीणी पाग्रा जण्या, किम कीजें हो शा पुरुषनी नेटके ॥ नि० ॥ ५ ॥ श्री वीरें इम नाखीयुं, पंखी नारंड हो न करे परमाद के; तेह

तणी परें विचारजो, परिहरजो, हो गोयम परमाद के ॥ नि० ॥ ६ ॥ वीर वचन इम सांजली, परिहरी यो हो गोयमें परमाद के; लीला सुख लाधां घणां, थीर रहियो हो जगमां जसवादके; ॥ नि० ॥ ७ ॥ निंद निद्रमी मत आणजो, सूइ रहेजो हो साव धान के; ध्यान धरम हियें धारजो, इम जाखे हो मुनि कनक निदान के ॥ नि० ॥ ८ ॥

॥ अथ आत्मबोध सद्याय ॥

जीव क्रोध म करजो, लोज म धरजे, मान मला इश जाइ ॥ कूडां कर्म म बांधीश, धर्म म चूकीश, विनय म मूकीश ॥ जाइरे जीवडा ॥ दोहिलो मान वजव लाधो, तुमे कांइ करी तत्वने साधो रे जोला ॥ दोहिला० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ घर पठवाडे दे रासर जत्तां, वीश विमासण थाय ॥ जूख्यो तरस्यो राउल राते, माथे सहेतो घाय रे ॥ जीवधा दोहि० ॥ २ ॥ धर्म तणी पोशाले चाल्या, सूणवा सद्गुरु वाणी ॥ एक वात करे वीजो उठी जाये, नयणे निंद जराणीरे ॥ जीव० ॥३॥ नामे वेठो लोजे पेठो, चार पोहोर निशि जाग्यो ॥ वे घमीनुं पमि क्रमणुं करतां,चोखो चित्त न राख्योरे ॥ जीव० ॥ ४ ॥ आठम चउदश पुनम पाखी, पर्व पर्युसण सारो ॥ वे घमीनुं पचरकाण करंतां, एक वीजाने वारो रे ॥ रे ॥ जीव० ॥ ५ ॥ कीर्ति कारण पगरण मांडी, अ

रथ गरथ सवि लूंटे ॥ पुण्यने काजे पारकुं पोतानु, गांठडीए नवि छूटे रे ॥ जीव० ॥ ६ ॥ घर घरणीने घाट घडाव्या, पहेरण आठा वाघा ॥ दश आंगली दश वेढज पहेर्या, निर्वाणे जावुं ठे नागारे ॥ जीव डा० ॥ ७ ॥ वांको अक्षर माथे मीडुं, नीलवट आ धो चंदो ॥ मुनि लावण्य समय इम बोधे, ए त्रण कालें वंदो ॥ जीवडा० ॥ ८ ॥

॥अथ श्री जीनहर्षजीकृत पांचमा आरानो सद्याय॥

॥ वीर कहे गौतम सुणो, पांचमा आरना नाव रे ॥ डुखीया प्राणी अतिघणा, सांजल गौतम सु नावरे ॥ वीर० ॥ १ ॥ शहेर होशे ते गामडां, गामडां, होशे समशान रे ॥ विण गोवालें रे धण चरे, ज्ञानी नहिं निरवाण रे ॥ वी० ॥ २ ॥ मु ज केडे कुमती घणा, होशे ते निरधार रे ॥ जिनम तिनी रुचि नवि गमे, थापशे निजमति सार रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ कुमति जाजा कदाग्रही, थायशे आप णा बोलरे ॥ शास्त्र मारग सवि मूकशे, करशे जि न मत मोल रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ पाखंमी घणा जाग शे, नांगशे धरमना पंथ रे ॥ आगम मत मरडी करी, करशे नवा वली ग्रंथ रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ चाल णीनी परें चालशे, धर्म न जाणे लेशरे आगम शा खाने टाखशे, पालशे निज उपदेश रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ चोर चरड बहु लागशे, बोली न पाले बोल रे ॥ सा

धुजन सीदा यशे, डुर्जन वहुला मोल रे ॥वी०॥७॥ राजा प्रजाने पीमशे, हिंडशे निरधन लोक रे ॥ माग्या न वरसशे मेहुला, मिथ्यात्व होशे घहु थोक रे ॥ वी० ॥ ८ ॥ संवत् ओगणीश चौदोत्तरें, होशे कलंकी राय रे ॥ माता ब्राह्मणी जाणीयें, वाप चंमाल कहेवाय रे ॥ वी० ॥ ए ॥ व्यासी वरषनु आउखु, पामलीपुरमां होशे रे, तसु सुत दत्त नामें नलो, श्रावककुल शुन्न होपे रे ॥ वी १० ॥ कौतुकी दाम चलावशे, चर्म तणा ते जोय रे ॥ चोथ लेशे निक्षा तणी, महा आकरा कर होय रे ॥ वी० ॥ ॥ ११ ॥इंद्र अवधियें जोयतां, देखशे एह स्वरुप रे ॥ द्विजरुपें आवी करी, हणशे कलंकी नूप रे ॥ ॥ १२ ॥ दत्तने राज्य थापी करी, इंद्र सुर लोकें जय रे ॥ दत्त धरम पाले सदा, नेटशे शेत्रुंज गिरिराय रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ पृथ्वी जीन मंडित करी पामशे सुख अपार रे ॥ देव लोकें सुख नोगवे, नामे जयजयकार रे ॥ वी० ॥ १४ ॥ पांचमा आराने ठेकुले, चतुर्विध श्रीसंघ होशे रे ॥ ठठो आरो वेसतां, जीनधर्म पहिलो जाशे रे ॥ वीर० ॥ १५ ॥ वीजे अगनी जायशे, त्रीजे राय न कोय रे ॥ चोथे पोहरे लोपना, ठठे आरे ते होय रे ॥ १६ ॥ दोहा ॥ ठठे आरे मानवी, विलवासी सवि होय ॥ वीश वरसनुं आउखं, पटवर्षेगर्नज होय ॥ १७ ॥ सहस चोराशी

वर्पेपणे, जोगवशे जवि कर्म ॥ तीर्थंकर होशे जलो, श्रेणिक जीव सुधर्म ॥ १८ तसु गणधर अति सुंदरु, कुमार पाल जूपाल ॥ आगम वाणी जोइने, रचीय रयण रसाल ॥ १९ ॥ पांचमा आराना जाव ए, आगमें जाख्या वीर ॥ ग्रंथ बोल विचार कह्या, सांजलजो जवि धीर ॥ २० ॥ जणतां समकित सं पजे, सुणतां मंगल माल ॥ जीनहर्षे कही जोड ए, जाख्यां वयण रसाल ॥ २१ ॥ इति ॥

॥अथ अमल वर्जन स्वाध्याय कंथ तमाकू परिहरो॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजीनवाणी मन धरी, सद्गुरु दीये उपदेश मेरे लाल ॥ बावीश अजक्ष्यमांहे कह्युं, अमल अ जक्ष्य विशेष ॥ मे० ॥ अमल म खाउ साजनां॥१॥ अमल विगोवे तन ॥ मे०जंघ वगासां घेरणी, आवे आखो दिन्न ॥ मे० ॥ अ० ॥ २ ॥ अमली अमलने सारिखो, आवे आनंद थाय ॥ मे० ॥ उतरतां आ रति घणी, धीरज जीव न धराय ॥ मे० ॥ अ० ॥३॥ आलस ने उजागरो, बेठो ढबकां खाय ॥ मे० ॥ अकल नकांइ उपजे, धर्म कथा न सुणाय ॥ मे० ॥ ॥ अ० ॥ ४ ॥ काला अहिथी उपनुं, नामें जे अहि फीण ॥ मे० ॥ संग करे कोण एहनो, पंमित लोक प्रवीण ॥ मे० ॥ अ० ॥ ५ ॥ पहेलुं मुख कमवुं हु वे, वली घांटो घेराय ॥ मे० ॥ उदर व्यथा नित्य

आकरो, इणथी अवगुण थाये ॥ मे० ॥ अ० ॥६॥ नाक वंधायें वोलतां, आधुं वचन वोलाय ॥ मे० ॥ अमी सुकाये जीभनुं, एहने खाय वलाय ॥ मे० ॥ ७ ॥ दाढीने मूछांदिशि, उगे नही अंकूर ॥ मे० ॥ काया काली मिश हुए, गायकी गाले नूर ॥ मे० ॥ अ० ॥ ॥ ८ ॥ पलक अवेरुं जो लीए, तो आतम अकुलाय ॥ मे० ॥ नाक चूए नयणां झरे, काम करी न शकाय ॥ मे० ॥ अ० ॥ ए ॥ अधविच मारगमां पडे, जीवन मृत्यु समान ॥ मे० ॥ हाथ पगोनी नस गले, अमली आवी शान ॥ मे० ॥ अ० ॥ १० ॥ आगराइ आठो कह्यो, मालवी मांहे भेल ॥ मे० ॥ आपदशुं सखरुं नही, मिशरीशुं मन मेल ॥ मे० ॥ अ० ॥ ११ ॥ नवटांक जे नर जीरवे, तसु अहि विष न जणाय ॥ मे० ॥ अमल घणुं खाधायकी, कंदर्प वल मिट जाय ॥ मे० ॥ अ० ॥ १२ ॥ अमलीने उन्हुं रुचे, टाढु नावे दाय ॥ मे० ॥ खोभी रोटी खांक घी, उपर दूध सुहाय ॥ मे० ॥ अ० ॥ १३ ॥ कुलवंती जे कामनी, जाणे जुगति सुजाण ॥ मे० ॥ कांति विखी इण करी, अमलीने दीए आण ॥ ॥ मे० ॥ १४ ॥ प्रीतम आशा पूरती, न करे रीश लगार ॥ मे० ॥ कथन न लोपे कंथनुं, ते विरली संसार ॥ मे० ॥ अ० ॥ १५ ॥ दुर्जागणी नारी जीका, वोले कर्कश वाण ॥ मे० ॥ रे रे अधम अफी

णिया, आलसवंत अजाण ॥ मे० ॥ अ० ॥ १६ ॥ परणी जाइ पारकी, शुं कीधुं तें धीठ ॥ मे० ॥ पोतानुं पण पेट ए, निठुर नराय न नीठ ॥ मे० ॥ ॥ अ० ॥ १७ ॥ कान कोट नूषण सहु, वेची खाधुं तेह ॥ मे० ॥ निर्लज तुज घरवासमां, कहे सुख पाम्युं जेह ॥ मे० ॥ अ० ॥ १८ ॥ अमल समो अ सुगो नही, मानो एमुफ शीख ॥ मे० ॥ वाले सुंदर देहनी, अंते मगावे नीख ॥ मे० ॥ अ० ॥ १९ ॥ दालिडीने दोहिलुं, सुर उग्यानुं शाल ॥ मे० ॥ श्रीमंतने पण नहीं नलुं, जोतां ए जंजाल ॥ मे० ॥ ॥ अ० ॥ २० ॥ सासु वहु वढतां ठतां, रीसे अमल नखंत ॥ मे० वालक खाये अजाणतां, जो घर अमल हवंत ॥ मे० ॥ अ० ॥ २१ ॥ प्राणी वध जिणशुं हुवे, ते तो तजीयें दूर ॥ मे० ॥ कर्मादान दशमुं कह्युं, विष व्यापार पकुर ॥ मे० ॥ अ० ॥ २२ ॥ चतुर विचार ए चित्त धरी, कीजें अमल परिहार ॥ ॥ मे० ॥ खिमाविजय पंडित तणो, कहे माणिक मनोहार ॥ मे० ॥ अ० ॥

॥ अथ काया उपर सद्याय ॥

॥ काया रे वाफी कारमी, सीचंतांरे शूके ॥ उठ कोरू रोमा- वली, फल फूल न मूके ॥ का० ॥ काया माया कारमी, जोवंतां जाशे ॥ मारग लेजो मोक्तनो, जीवको सुख पाशे ॥ का० ॥ २ ॥ अरिहंत

आंवो मोरीयो, सामायिक थाणे मंत्र नवकार संभा
रजो समकित सुधगांणे ॥ का० ॥ ३ ॥ वाम्नी करो
विरतां तणी, सवि लोक निवारो ॥ शील संयम
दोनु एकठां, जली पेरे पारो ॥ का० ॥ ४ ॥ पांच
पुरुष देशावरी, वेठा एणी डाली ॥ फल चुंटीने
चोरीआं, न करी रखवाली ॥ का० ॥ ५ ॥ इण
वाम्नी एक सूम्लो, सुख पिंजर वेठो ॥ वहुत जतन
करी राखजो, जातो किणही न दीठो ॥ का० ॥६॥
कां नोलपणे नव हारियो, मती मोम्नी संजाली ॥
रत्न चिंता मणि सारीखी, कांइ गांठ न वाली ॥
॥ का० ॥ ७ ॥ रत्न तिलक सेवक नणे, सुणेजो
वनमाली ॥ वाम्न नली परें पालजो, करजो ढंग
वाली ॥ का० ॥ ८ ॥

॥ अथ तेर काठीयानी सद्याय ॥

॥ आलस पहेलो जी काठियो, धर्में ढील कराय
रे, निवारोजी काठिया तेर दूरें करो ॥ वीजो ते मो
ह पुत्र कलत्रशुं, रंगें रहे लपटाय रे ॥ निवारोजी
॥ का० ॥ १ ॥ त्रीजो ते अवरण धर्ममां, वोले अव
रण वादरे ॥ निवारोजी ॥ क० ॥ चोथो ते दंनज
काठियो, न लहे विनयें सवाद रे ॥ निवारोजी ॥
॥ का० ॥ २ ॥ क्रोध ते काठियो पांचमो, रीसें रहे
अमलाय रे ॥ निवारोजी ॥ का० ॥ ठहां प्रमाद ते
कठियो, व्यसनें विगूतो थाय रे ॥ निवारोजी ॥

॥ का० ॥ ३ ॥ कृपण काठियो सातमो, न गमे दाननी वातरे ॥ निवारोजी ॥ का० ॥ आठमो जयथी नवी सुणे, नरकादिक अवदात रे॥ निवारोजी ॥ ४ ॥ नवमो ते शोक नामें कह्यो, शोकें छांडे धर्म रे ॥ निवारोजी ॥ का० ॥ दशमो अज्ञाने ते नवि लहे, धर्म अधर्मनो मर्म रे ॥ निवारोजी ॥ का० ॥ ॥ ५ ॥ विकथा नामे अग्यारमो, लोक वातें धरे प्रीत रे ॥ निवारोजी ॥ क० ॥ कुतुहल काठियो वारमो, कौतुक जोवा धरे चित्त रे ॥ निवारोजी ॥ ॥ का० ॥ ६ ॥ विषय ते काठियो, तेरमो, नारि साथें धरे नेहरे ॥ निवारोजी ॥ का० ॥ ७ ॥ इति श्री तेर काठियानी सवाय ॥

॥ अथ महोटी होंस न करवा आश्रयी सवाय ॥

होंशीमा जाइ (प्राणि) होंश न कीजें महोटी वावी छे वंटी वाजरी, तो शाली केम लहियें मोटी रे ॥हों०॥ प्राणी जेणें दीधुं तेणे लीधुं जे देशे तेलेशेरे॥ जेणे नवि दीधुं तेणे नविलीधुं, दीधा विना केम लेशे रे ॥ हों० ॥ १ ॥ वाव्या विना कर्षण केम लहियें, सेव्या विना केम छरीयें ॥ पुण्य विना मनोरथ मोटा, दीधा विण केम करियें रे ॥ हो० ॥ ॥ २ ॥ सीसानी अकोटी आपी,आपी तरुवानी त्रोटी ॥ ते सोनार कने केम मागीश, सोनानी करी मोटी रे ॥ हों० ॥ ३ ॥ शालिजद्द धन्नो कयवन्नो, मूलदे

व धनसार ॥ पुण्य विशेपें प्रत्यक्ष पाम्या, अलवेस र अवतार रे ॥ हों० ॥ ४ ॥ एवुं जाणी रुडुं पामी, करजो धर्म सखाइ ॥ साधु हर्ष कर जोडी विनवे, दीधुं लेशे लाइरे ॥हों० ॥५॥ इति होंसीका सद्याय॥

॥ अथ मधुविंदुआ दृष्टांत सद्याय प्रारंभः ॥

॥ ढाल ॥ सरसती मुज रे, माता द्यो वरदान रे ॥ पूछे गौतम रे, जांखे श्रीवर्द्धमान रे ॥ छंडो गिरु आ रे, विरुआ विषयनु ध्यान रे ॥ विषयारस रे, छे मधुविंदु समान रे ॥ त्रुटक ॥ मधुविंदु सरिखो विषय निरखो, जाइ परखो, चित्त शुं॥नर जनम हारयो मोह गारयो, पिंड जारयो पापशुं ॥ कंतार पडियो नाग नडियो, कोइ देवाणुप्पियो ॥ वडवृक्ष जडियो वेगें चडीयो करडियो ठप्पियो ॥ १ ॥ ढाल॥ वड हेठल रे, कूप अछे असराल रे ॥ दोय अजगर रे,मगर जिह्वा विकराल रे ॥ चिहुं पासे रे, चार जुयंगम काल रे ॥ वली उपर रे, मोटो छे महुयाल रे ॥ त्रुटक ॥ महुयाल माखी रगत चाखी, चंचु राखीनें रही ॥ घंघोलतो गजराज धायो, पडत वडवाइ ग्रही ॥ वडवाइ कापे उंदर आपे, ताप संतापें ग्रह्यो ॥ मधु थकी गलीयो विंदु ढलीयो, तेणे सुखलीणो रह्यो ॥२॥ ढाल ॥ एह संकट रे, छोडण देव दयाल रे ॥ दुःख हरवा रे, विद्याधर ततकाल रे ॥ उद्धरवा रे, धरियुं तास विमान रे ॥ ओ आवे रे, मधुविंदु करे

सान रे ॥ त्रूटक ॥ मधुबिंदु चाखे, वचन जाखें, करे लालच लखवली ॥ वार वार राखे सान पाखे, रह्यो क्षणएक पर रली ॥ तस खेचर मलीयो वेगे वलि यो, रंक रुलीयो ते नरु ॥ मधुबिंदु चाटे विषय साटे कह्यो उपनय जगगुरु ॥ ३ ॥ ढाल ॥ चोराशी लख रे, गतिवासी कांतार रे ॥ मिथ्यामति रे, जूलो जमे संसार रे जरा मरणारे, अवतरणा ये कूप रे,॥ आठ खाणी रे, पाणी पगइ सरुप रे ॥ त्रुटक ॥ आठ कर्म खाणी दोय जाणी, तिरिय निरय अज गरा ॥ चारे कषाया मोह माया, लंबकाया विषह रा ॥ दोय पक्ष उंदर मरण गयवर, आयुवृक्षवाइ वटा ॥ चटका वियोगा रोगशोगा, जोग योगा सा मटा ॥ ४ ॥ ढाल ॥ विधाधर रे, सद्गुरु करे संजा ल रे ॥ तेणें धरीयुं रे, धर्म विमान विशाल रे ॥ विषया रस रे, मीठो जेम मद्दुयाल रे ॥ पक्खावे रे, बाल यौवन वयकाल रे ॥ त्रुटक ॥ रह्यो बाल यौवन काल तरुणी, चित्तहरणी निरखतो ॥ घरजा र युत्तो पंक खुत्तो, मदवगुत्तो पोपतो ॥ आनंद आ णी जैनवाणी, चित्त जाणी जागीयें ॥ चरण प्रमोद सुशिष्य जंपे, अचल सुख एम मांगीयें ॥५॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्य सद्याय प्रारंजः ॥

॥ श्रीसीमंधर साहेब सांजलो ॥ ए देशी ॥

॥ कां नवि चिंतें हो चित्तमें जीवमा, आयु गले

दिन रात ॥ वात विचारी रे पूरवनव तणी, कुण कुण ताहरी रे जात ॥ कां० ॥ १ ॥ तुं मत जाणे रे ए सहु महारां, कुण माता कुण भ्रात ॥ आप स्वारथ ए सहु को मल्या, म कर पराइ रे वात ॥ ॥ कां० ॥ २ ॥ दोहिलो दीसे रे नव माणस तणो श्रावक कुल अवतार ॥ प्राप्ति पूरी रे गुरु गिरुआ तणी, नहीं तुज वारो रे वार ॥ कां० ॥ ३ ॥ पुण्य विहूणो रे दुःख पामे घणुं, दोष दीये किरतार ॥ आप कमाइ रे पूरव नवतणी, नवि संजारे गमार ॥ ॥कां०॥४॥ कठिन कर्मने रे अहनिश तुं करे, जेहना सबल विपाक ॥ हुंनवि जाणुं रे कुण गति ताहरी, ते जाणे वीतराग ॥ कां० ॥ ५ ॥ तुज देखतां रे जोने तें जीवडा, केइ केइ गयां नर नार ॥ एम जाणीनेरे निश्चें जांयवुं, चेतन चेतो गमार ॥ कां० ॥६ ॥ सुख पाम्यां रे बहु रमणीतणां, अनंत अनंती रे वार ॥ल ब्ध कहेरे जो जिनशुं रमे, तो सुख पामे अपार॥७॥

॥ अथ श्रीवर्ज्जन शिखामण सद्याय ॥

॥ धर्म जणी जातां धरा, वचमांहे पाडे वाट ॥ लधि लीए सर्व लूटीने, व्रतनी जे वहे जवाट ॥ व ला हो, बहु बहु वोली ए वाल, जे अठता जपाये आल, जे वाघणथी विकराल, जे आपे मरण अ काल ॥ व० ॥ १ ॥ संसारे सहु सरिखुं नहीं, जोने वसंतां जोय ॥ एक वांको एक पाधरो, बोरडीये

कांटा जिम होय ॥ व० ॥ २ ॥ वला वला सहुको कहे, वीजी जला वलवंत ॥ ए जेवी एके नहीं, जे ठलें पामी ठलंत ॥ व० ॥ ३ ॥ आखाढो गाढो ठ ल्यो केइ ठल्या नर कोम ॥ गुणवंतनु पण नहीं ग जु, जे क्षणमां लगाडे खोड ॥ व० ॥ ४ ॥ उलाले आकासमां, एक आंखे उलाले अनेक ॥ महींयें पग मंडे नहीं वली, नासे विनय विवेक ॥ व० ॥ ॥ ५ ॥ जशोधर जिस्या खानमी, वली मुंज जिस्या महाराज ॥ पुण्यवंत परदेशी सारिखा, ते कांता हएया निजकाज ॥ व० ॥ ६ ॥ जोरावर जंबू जिस्या, वंक चूल सरिखा वीर ॥ समर्थ थूलिजद्र सारिखा, जेह नां नारियें न उतास्यां नीर ॥ व० ॥ ७ ॥ शोल स ती आदें थइ महासतीओ जग हितकार ॥ अने क नर तेणें उद्धस्या, रहनेमि आदें निरधार ॥व०॥ ॥ ८ ॥ सुदर्शन ठलतां नवि ठल्यो, थयो केवल क मलाकंत ॥ परमोदय पामे सही, जे पास एहने न पमंत ॥ व० ॥ ए ॥ इति स्त्री वर्जन सज्झाय ॥

॥ अथ परस्त्री वर्जन सद्याय ॥

॥ धणरा ढोला ए देशी ॥

॥ शीख सुणो पीउ माहरी रे, तुजने कहुं कर जोम ॥ धणरा ढोला ॥ प्रीत म कर परनारी शुं रे, आवे पग पग खोम ॥ ध० ॥ कह्युं मानोरे सुजाण कह्युं मानो ॥ वरज्यां वर्जो, मारा लाल, वरज्यां

वर्ज्यो, परनारीनो नेहलमो निवार ॥ धणरा ढला ॥ ॥ १ ॥ जीव तपे जिम वीजली रे, मनडुं न रहे ठाम ॥ ध० ॥ काया दाह मिटे नही रे, गांठे न रहे दाम ॥ ध० ॥ २ ॥ नयणें नावे निंडमी रे, आठे पोहोर उदेग ॥ ध० ॥ गलीआरे नमतो रहे रे, लागू लोक अनेक ॥ ध० ॥ ३ ॥ धान न खाये झापतो रे, दीठु न रुचे नीर ॥ ध० ॥ नीसासा ना खे घणा रे, सांजल नणदीना वीर ॥ ध० ॥ ४ ॥ नूतलमें निसि नीसरे रे, कुरी कुरी पिंजर होय ॥ ध० ॥ प्रेमतणे वश जे पडे रे, नेह गमे तव दोय ॥ ध० ॥ ५ ॥ रात दिवस मनमां रहे रे, जिणशुं अविहड नेह ॥ ध० ॥ वीसांस्या नवि वीसरें रे, दाफे दाण दाण देह ॥ ध० ॥ ६ ॥ माथे वदनामी चढे रे, लागे कोम्म कलंक ॥ ध० ॥ जीवितनो संशयमेरे, जूवोरावण पतिलंक ॥ध० ॥७॥ परनारीना संगथीरे, नलो न थाये नेठ ॥ ध० ॥ जूवो कीचक नीमडे रे, दीधो कुंनी हेठ ॥ ध० ॥ ८ ॥ थाये लंपट लालची रे, घटती जाये ज्योत ॥ ध० ॥ जीत न थायेतेहनी रे, जिम रायचंद प्रद्योत ॥ ध० ॥ए॥ परनारी विषवेलमी रे, विषफल नोग संयोग ॥ ॥ ध० ॥ आदर करी जे आदरे रे, तेहने नवनव शोग ॥ ध० ॥ १० ॥ वाहाला महरी विनति रे, साची करीने जाण ॥ ध० ॥ कहे जिन हरप तुमे सां

नलो रे, हियडे आणि मुज वाण ॥ ध० ॥ ११ ॥
इति परस्त्री वर्जन स्वाध्याय ॥

॥ अथ जीवने समता विषे शिखामण ॥

॥ हो प्रीतमजी प्रीतकी रीत अनीत तजी चित्त धारीयें, हो वालमजी वचन तणो अति ऊंमो मरम विचारीयें ॥ ए आंकणी ॥ हांरे तुमें कुमतिके घेर जावो ठो, तुमें कुलमां खोट लगावोठो, धिक्क ऐठ जगतनी खावो ठो ॥हो०॥१॥ अमृत त्यागी विष पीउंठो, कुमतिनो मारग लियोठो, ए तो काज अयुक्त कीयोठो ॥ हो० ॥ २ ॥ ए तो मोह रायकी चेटी ठे, शीव संपत्ति एथी ठेटी ठे, एतो साकर गलती पेटी ठे ॥ हो० ॥ ३ ॥ एक शंका मेरे मन आवी ठे, किण विध ए चित्त नावी ठे, एतो दाहण जगमां चावी ठे ॥ हो० ॥ ४ ॥ सह ऋद्धि तमारी खाए ठे, करी कामण चित्त नरमाए ठे, तुम पुण्ययोगे ए पाए ठे ॥ हो० ॥ ५ ॥ मत आंवल काज बाउल बोवो, अनुपम नव विरथा नवि खोवो, अब खोल नयण प्रगटी जोवो ॥ हो० ॥६॥ इण विध समता बहु समजाए, गुण अवगुण कंइ सहु दरशाए, सुणी चिदानंद निज घर आये ॥ हो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ दान, शील, तप, नाव स्वाध्याय ॥

॥ श्री महावीरे नांखीया, दानना चार प्रकार रे ॥ दान शियल तप नावना, सखी पंचम गति दा

तार रे ॥ श्री महा० ॥ १ ॥ दानें दोलत पामीयें सखी दाने कोड कल्याणरे ॥ दान सुपात्र प्रभाव थी, सखी कयवन्नो शालिभद्र जाणरे ॥ श्री महा० ॥ २ ॥ शियले संकट सवि टले, सखी शिलें वंदित सिद्धरे ॥ शियलें सुर सेवा करे, सखी सोल सति परसिद्धरे ॥ श्री महा० ॥ ३ ॥ तप तपो भवि भाव शुं, तपें निर्मल तन्नरे ॥ वर्षीपवासी ऋषभजी, सखी धन्नादिक धन्य धन्यरे ॥ श्री महा० ॥ ४ ॥ भरता दिक शुभ भावथी, सखी पाम्यो पंचम गाम रे ॥ उदयरत्न मुनि तेहने, सखी नित्य करे प्रणामरे ॥ श्री महावीरे ॥ ५ ॥

॥ सामायिक लाभ सझाय ॥

॥ कर पडिक्कमणुं भावशुं. दोय घडी शुभ ध्यान ॥ लालरे ॥ परभव जातां जीवने, संबल साचूं जा ण ॥ लालरे ॥ कर० ॥ १ ॥ श्री वीर मुख इम उ च्चरे, श्रेणिक राय प्रत्यें जाण ॥ लालरे ॥ लाख खांडी सोना तणी, दिये दिन प्रत्यें दान ॥ लालरे ॥क०॥ ॥ २ ॥ लाख वरस लगें ते वली. एम दीये द्रव्य अपार ॥ ला० ॥ एक सामायिकने तोलें, नावे तेह लगार ॥ ला० ॥ क० ॥ ३ ॥ सामायिक चउविस त्थो, देव वंदन दोयवार ॥ ला० ॥ व्रत संभारो रे आपणां, ते भव कर्म निवार ॥ ला० ॥ कर० ॥ ४ ॥ कर काउस्सग्ग शुभ ध्यानथी, पचक्काण सूधुं वि

चार ॥ ला० ॥ दोय सद्यायें ते वली, टालो टालो अतिचार ॥ ला० ॥ कर ॥ ५ ॥ श्री सामायिक प्रतापथी, लहियें अमर विमान ॥ लालरे ॥ धर्म सिंह मुनि एम जणे, ए ठे मुकित निदान ॥ ला लरे ॥ कर० ॥ ६ ॥

॥ अथ ठींक विचार सद्याय ॥

॥ देशी चोपाइनी ॥ ठींक शुकननो कहुं विचार, सुगुरु समीप सूएयो में सार ॥ आगलमां जो ठींकज होय, अशुज तणी जाणे जे, कोय ॥१॥ पहेला शुकन हुवां शुज घणां ॥ ठींकज हुआ निष्फल तेतणां पठीं कज हुआ पठी जे जाण, शुकन हुआं ते करो प्रमा ण ॥ २ ॥ मावी ठींक होय अर्ध फली कहे, जमणी ठींक बुरी सज कहे ॥ पूठे ठींक सुखदायक सही, घणी ठींक ते निःफल कही ॥ ३ ॥ हांसे जय ऊपा धीयें करी, हठ घणो मनमांहे धरी ॥ एक ठींक ते निःफल जाण, कुतर ठींक तो निःखर आण ॥ ४ ॥ मंजार ठींक ते मरणज करे, इसी ठींक कष्टकारी सरे, ॥ वस्तु वेचतां ठींकज होय, आएयुं करीयाणुं मोघुं होय ॥ ५ ॥ वस्तु लेतां ठींकज होय, वमणो लाज सघलानो जोय ॥ गइ वस्तु जो जोवा जाय, ठींक होय तो लाज न थाय ॥ ६ ॥ नवां वस्त्र वली पेहेरतां, ठींक होये आगल अण ठतां ॥ जोजन होम पूजानुं काम, मंगलीक जेधर्म सुगाम ॥ ७ ॥

काम एटलां कीधानी अंत, वली क्रिया करावे खंत ॥ रति स्नान करीने रहे, छींक होय तो पुत्रज लहे ॥ ८ ॥ ऋतुवतीने दीधे दान, पठी होवे पुत्र निदान ॥ वैरी जीती जाशुं जोये, छींके वैरी सच लो होय ॥ ए ॥ रोगी काज वैद्य तेकवा, जातां छींके जो नव नवा ॥ ते रोगीने मृत्यु जाणीये, काम विन वैद्ये नाणीये ॥ १० ॥ वैद्य रोगीने घरे आवतां, छींक होये औषध आपतां ॥ रोगी तणो रोग ते समे, आहार लेते जमवुं गमे ॥ ११ ॥ व्यापारे लीधे व्यापार, छींक होय तो वृद्धि अपार ॥ लेखुं शुद्ध दीधुं रायने, छींक फोक थाये तेहनें ॥१२॥ पाणीपीतां अथ संवाद, छींक दृष्टि दोष अनिवाद नवे घरे वसवा आवीयें, छींक होये तो उचालीयें ॥ १३ ॥ व्याजे द्रव्य केहने आपतां, वली पृथवीमां धन दाटतां ॥ कर्पण जोवा जातां वली, वृष्टि होय पुहवी मन रुली ॥ १४ ॥ छींक शुकन नर जाणे जेह, पग पग संपद पामे तेह ॥ छींक विचार जाणे जो कोइ, ऋद्धि वृद्धि कल्याणक होइ ॥१५॥ इति छींक विचार॥

॥ अथ वैराग्योपदेशक सद्याय ॥

॥ इक मरनां इक जाना यारो, मत को करो गुमाना॥इ०॥ ए आंकणी ॥ ढंढण माटी, पेरण माटी, माटीका सराना ॥ वसतीमेंसें बहार निकाला, जंगल किया ठिकाना ॥ इ० ॥१॥ हाथी चडते घोडे च

ऋते, ठेर आगें निशाना ॥ नीली पीली वेरख चल
ती, उत्तर किया पयाना ॥ ह० ॥ २ ॥ नरपति हो
के तखतपर वेठे, नरिया नारी खजाना ॥ सांज स
वारे मुजरा लेते, उपर हाथ वेकाना ॥ ह०॥ ३ ॥
पोथी पढ पढ हिंदु नूले, मुसलमान कुराना ॥
रुपचंद कहे अरे नाइ संतो, हरदम प्रनु गुण
गाना ॥ ह० ॥ ४ ॥

॥ अथ नाव स्वाध्याय ॥

॥ धन्य धन्य ते दिन महारो ॥ ए देशी ॥

॥ रे नवि नाव हृदय धरो, जे ठे धर्मनो धोरी
एकल मल्ल अखंरु जे, कापे कर्मनी दोरी ॥ रे
नवि० ॥ १ ॥ दान शियल तप त्रण ए, पातक मल
धोवे ॥ नाव जो चोथो नवि मले, तो ते निष्फल
होवे ॥ रे नवि० ॥ २ ॥ वेद पुराण सिद्धांतमां, षट्
दर्शन नांखे ॥ नाव विना नव संतति, परुतां को
ण राखे ॥ रे नवि० ॥ ३ ॥ तारक रुप ए विश्वमां,
ऊंपे जग नाण ॥ नरतादिक शुन्न नावथी, पाम्या
पद निर्वाण ॥ रे नवि० ॥ ४ ॥ औपध आय उपाय
जे, मंत्र यंत्रने मूली, नावे सिद्ध होवे सदा, नाव
विण सहु धूली ॥ रे ॥ नवि० ॥ ५ ॥ उदय रत्न क
हे नावथी, कोण केण नर तरिया ॥ शोधी जोजो
सूत्रमां सज्ञान गुण दरिया ॥ रे नवि० ॥ ६ ॥

॥ अथ वीश स्थानकना तपनो सद्याय ॥

॥ श्रीसीमंध साहेब आगें ॥ ए देशी ॥ अरिहंत पहेले थानक गणीयें, वीजे पद सिद्धाणं ॥ त्रीजे पवयण आयरिय चोथे, पांचमे पद थे राणं रे ॥ नविया ॥ वीश थानक तप कीजें ॥ ओली वीश करीजें रे ॥ न० ॥ गणणुं एह गणीजें रे ॥ न० ॥ जिम जिनपद पामीजें रे ॥ न० ॥ नर नव लाहो लीजें रे ॥न०॥वी०॥१॥ ए आंकणी ॥ उवद्याए छठे सव्वसाहूणं, सातमे आठमे नाण नवमे दंसण दस मे विणयस्स, चारित्र अगियारमे जाण रे ॥ न० ॥ ॥ वा० ॥ २ ॥ वारमे वंनवय धारीणं, तेरस मे किरियाणं ॥ चउदमे तव पन्नरमे गोयम, सोल्समें नमो जीणाणं रे ॥ न० ॥ वी० ॥ ३ ॥ चारित्तस्स सत्तरमे जपीगें, अढारसमे नाणस्स ॥ उंगणीशमे नमो सुयस्स संनारो, वीशमे नमो तित्थस्स रे ॥ न० ॥ ॥ वी० ॥ ४ ॥ एकासणादिक तप देव वंदन, गणणुं दोय हजार ॥ संध विनय वुध शिष्य सुदर्शन, जंपे एह विचारो रे ॥ न० ॥ वी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ शीयल विषे शीखामणनो सद्याय ॥

॥ ढाल ॥ एतो नारी रे, वारी छे कुगति तणी ॥ छांम संगत रे मूरख तुं परस्त्री तणी ॥ जीव नोला रे, नोला तेहशुं मंम करे ॥ शीख मानी रे, ठानी वात तुं परिहरे ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ जो वात करीश

परनारी साथें, लोक सहु हेरे अठे ॥ राय रांक थ इ ने रव्या रानें, सुखें नहीं वेसे पठे ॥ ए मदनमा ती विषय राती, जेसी काती कामिनी ॥ पहेलुं तो वली सुख देखाडे पठे, पठाडे जामिनी ॥१॥ ढाल कर पगना रे, नयण वयण चाला करी ॥ बोलावी रे, नर लेइ धाइ सुंदरी ॥ जोलावी रे,हाव जाव देखाडशे ॥ पगें लागी रे, मरकलडे पठे पाडशे ॥२॥ त्रुटक ॥ ए पास पाडे धन गमाडे, मान खंडे ले लठी ॥ बोलं ती रुडी चित्त कूडी, कूम कपटनी कोथली ॥ ए नर अमूलक वस्य पडिर्ज, पठे नपोसायें पायको दीवा नमंडे मानखंमे मारसहे पठे रायको॥ ४ ॥ ढाल ॥ ठांमी लेशे रे, वेश्याना लंपट नरा ॥ सहु सधवा रे, विधवा दासी दूरे करा जा नाशी रे, रुप देखी जीव एह तणुं ॥ जजो रही रे, एह साहामुं, मम जो घणुं ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ घणुं म जोइश एह साहा मुं, कुलस्त्री दीठे नवि गमे ॥ जीम शूनी पूठें श्वान हींडे, तिम परनारि पूठें कां जमे ॥ जिम बिलाम्रो दूध देखे, मोलें डांग न देख ए, परनारि वेंधो पुरुष पापी किसो जय नवि, लेख ए ॥ ६ ॥ ढाल ॥ फू ल वेणी रे, शिर सिंदूर संयोजस्यो ॥ ते देखी रे, फट मूरख मन कां कस्यो ॥ देखी टीलां रे, ढीलां इंद्रिय करी गह गह्यो ॥ शिर राखमी रे, श्रांखें दे इ तुं कां रह्यो ॥ ७ ॥ त्रुटक ॥ कां रह्यो मूरख आं

खें देह, शणगार नार एणें धस्या ॥ ए उली जीहा आखें पीहा, कान कूपा मल जस्या ॥ नारी अग्नि पुरुप माखण, वोलतां वीगरे ॥ स्त्री देहमां शुं सार दीठो, मूढ महिआंकां करे ॥ ८ ॥ ढाल ॥ इंद्रिय वाह्यो रे, जीव अज्ञानी पापिठे ॥ माने नरगह रे, सरग करी विष व्यापीठे ॥ कां नूलो रे, शणगार देखी एहना ॥ जाणी प्राणी रे, ए ठे डुःखनी अंग ना ॥ए॥त्रुटक॥ अंगना तुं ठोकी जो करे,तो जश कीर्ति सघले लहे ॥ कुशीलनुं जो नाम लियेको, पर लोक डुरगति डुखसहे, विजय नद्र वोले जे न ओले, शीयल थकीजे नरवरा॥ तस पायें लागुं सेवा मागुं, जे जगमांहे जयकरा॥१०॥इति॥शीलि सद्याय॥

॥ अथ प्रनातें वाहाणलां गावानो सद्याय ॥

॥ मिथ्यामति रे रजनी असरालके ॥ वाहाणलां नलें वायांरे ॥ जीहां उंघे रे प्राणी वहुकाल के ॥ वहाणां॰ ॥ नवि जाणे रे जीहां यमनी फाल के ॥ ॥ वा॰ ॥ तिहां पामे रे पग पग जंजाल के ॥ वा॰ ॥ १ ॥ जीहां जकपे रे क्रोध दवनी काल के ॥वा॰॥ मानरुपी रे अजगर विकराल के ॥ वा॰ ॥ डंसे माया रे सापणी रोपाल के ॥ वा॰ ॥ जीहां चावो रे लोन रुप चंमाल के ॥ वा॰ ॥२॥ रागादिक रे राक्स महावृंद के ॥ वा॰ आठ कर्मना रे जीहां मांड्या फंद के ॥वा॰॥ जीहां देखे रे डुर्गति डुःख दंद के

॥ वा० ॥ नवी दीसे रे जीहां ज्ञान दिणंद के ॥
॥ वा० ॥ ३ ॥ धसमसतां रे जीहां विषयनी जाल
के ॥ वा० ॥ लीये लूटी रे नगणे पलिवाल के ॥
॥ वा० ॥ अटवी अनंती रे जीहां विकट उजाम के
॥ वा० ॥ चाले नही रे जीहां व्रतनी वाड के ॥
॥ वा० ॥ ४ ॥ निरखंतारे श्रीजिनमुख नूर के ॥
॥ वा० ॥ हवे उग्यो रे महासमकेत सूर के ॥वा०॥
डुखदायी रे दोषि गया दूर के ॥वा०॥ वली प्रगट्या
रे पुण्यतणा अंकूर के ॥ वा० ॥ ५ ॥ सुता जागो रे
देसविरतिना कंत के ॥ वा० ॥ वली जागो रे सर्व
विरति गुणवंत के ॥वा०॥ तमे जेटो रे जावें जगवंत
के ॥वा०॥ पमिक्कमणां रे करो पुण्यवंत के ॥वा०॥६॥
तमे लेजो रें देवगुरुनु नाम के ॥वा०॥ वली करजो
रे तमे धर्मनां काम के ॥ वा० ॥ गुरुजन नारे गावो
गुण ग्रामको ॥वा०॥ प्रेम धरीनें रे करो पूज्य प्रणा
म के ॥वा०॥७॥ तमे करजो रे दशविध पच्चखाण के
॥ वा० ॥ तुमे सुणजो रे श्रीसूत्रवखाण के ॥ वा०॥
आराधो रे श्री जिननी आण के ॥ वा० ॥ जिम
पामो रे शिवपुर संठाणके ॥ वा० ॥ ८ ॥ सांजलीने
रे श्रीमुखनी वाण के ॥ वा० ॥ तमे करजो रे सही
सफल विहाण के ॥ वा० ॥ वदे वाचक रे उदयर
त्न सुजाण के ॥ वा० ॥ एह जणतां रे लहीये कोड
कल्याण के ॥ वा० ॥ ए ॥ इति ॥ वाइला ॥

॥ अथ वैराग्य सद्याय ॥

कोउ काज न आवे रे दुनियांके लोको, कोउ काज न आवे ॥ जूठी वातका आनि जरोंसा, पीछे सें पस्तावे रे ॥ दु० ॥ १ ॥ मतलबकी सब म लि लोकाइ, वहोतहिं रंग वानावे रे ॥ दु० ॥ २ ॥ अपना अर्थ न देखे सो तो, पलकमे पीठ देखावे रे ॥ दु० ॥ ३ ॥ वाजीगरकी वाजी जेसा, अजब दिमाक देखावे रे ॥दु०॥ ४ ॥ देखो दुनियां सकल खीली है, युंहीं मन ललचावे रे ॥ दु० ॥ ५ ॥ जि नें जान्या तिने आप पिछान्या, वे खबरी दुःख पा वे रे ॥ दु० ॥ ६ ॥ हंस सयाने एक सांइशुं रह, काहेकुं चित्त न लावे रे ॥ दु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ चैतन्य शिक्षाजास प्रारंज ॥

॥ आप विचारजो आतमा, ज्रांतें शुं जूले; अ थिर पदारथ उपरें, फोगट शुं फूले ॥ आ० ॥ १ ॥ घटमांहे छे घरधणी, मेलो मननो जामो ॥ बोले ते बीजो नथी, जोने धरी तामो ॥ आ० ॥ २ ॥ पा मीश तुं पासेंथकी, बाहेर शुं खोले ॥ वेसे कां तुं चूकवा, मायानी ठलें ॥ आ० ॥ ३ ॥ प्रीछा विण केम पामीये, सुण मूरख प्राणी ॥ पीवाये किम पश लीयें, झांझवानां पाणी ॥ आ० ॥ ४ ॥ आप स्वरुप न उलखे, मायामांहे फूले ॥ गरथ पोतानी गांठनो, व्याजमां जिम डूले ॥ आ० ॥ ५ ॥ जोतां नाम न

जाणिये, नाहिं रुप न रेख ॥ जगमांहे ते केम जडे, अरुपी अलेख ॥ आ० ॥ ६ ॥ अंध तणी पेरे आ फले, सघला, संसारी ॥ अंतरपट आमो रहे, कोण जूवे विचारी ॥ आ० ॥ ७ ॥ पहेले पाछुं करी, पछी जोने निहाली ॥ नजरें देखीश नाथने, तेहशुं ले ताली ॥आ०॥८॥ बंधण हारो को नथी, नथी छोमा वण हारो ॥ प्रवृत्तें बांधियें पोतें, निवृतें निस्तारो ॥ आ०॥९॥ नेदानेद बुद्ध करी, नासे ठे अनेक॥ नेद तजीने जो नजे, तो दीसे एक ॥ आ० ॥१०॥ काले धोलुं नेलीये,तो ते थाये वेरंगू वेरंगें बुडे सहि,मन न रहे चंगु ॥ आ०॥११॥ मन मरे नहिं जिहां लगें, घूमे मद घेर्यो ॥ तव लगें जग नूल्युंनमे, न मटे नव फेरो ॥ आ० १२ ॥ उंघ तणे जोरें करी, शुं मो-ह्यो सुहणे ॥ अलगी मेली उंघने, खोली जोने खूणे ॥ आ० ॥ १३ ॥ त्यारे जगमां तुज विना, वी जो नवी दीसे ॥ निन्न नाव मटशे तदा, सेहेजे सुजगीशें ॥ आ० ॥ १४ ॥ मारुं तारुं नवि करे, स हुथी रहे न्यारो ॥ इणेएहिनाणे उंलीख्यो, प्रनु तेहने प्यारो ॥ आ० ॥ १५ ॥ सिद्धदिशायें सिद्धने, मलीयें एकांति ॥ उदयरत्न कहे आतमा, तो नांगे त्रांति ॥आ०॥१६॥ इति चैतन्यशिक्षानास संपूर्ण ॥

॥ अथ वैराग्य सवाय ॥ राग आशावरी ॥

॥ किसीकुं सब दिन सरखे न होय ॥ प्रहउग

त अस्तंगत दिनकर, दिनमें अवस्था दोय ॥ कि० ॥ १ ॥ हरि बलिजड पांम्डव नल राजा, रहे खट खंट रिद्धि खोय ॥ चंमाल के घर पाणी आण्युं, राजा हरिचंद जोय ॥ कि० ॥ २ ॥ गर्व म कर तुं मूढ गमारा, चम्डत पम्डत सब कोय ॥ समय सुंदर कहे इतर परत सुख, साचो जिनधर्म सोय ॥ कि० ॥ ३ ॥ इति वैराग्य सद्याय ॥

॥ अथ निद्रानी सद्याय ॥

॥ बेटी मोह नरिंदकी, निद्रा नामें विख्यात वे ॥ धर्म रूपणि पापणी, न गमे धर्मनी वात वे ॥ निंद न लहे जे सज्जनां, सज्जनां वे दुःखभंजना वे ॥ टेक ॥ नि० ॥ १ ॥ घेरे सघला जीवने, जिहां जमनो पास वे ॥ जा घम्डि निंद न पाइयें, ता घम्डि प्रजुको वास वे ॥ निं० ॥ २ ॥ आलस उमराव एहनो, जालिम जोरू जुवान वे ॥ दूत बगासूं जाणजो, चाले आगेतान वे ॥ निं० ॥ ३ ॥ जाति पांच ठे जेहनी पसरी विश्व प्रमाण वे ॥ केवली विना एक जेहनी,कोइ न लोपेआणवे ॥ करमे न आवे ढूंकडी धर्मे पाम्डे भंगाणवे वाजां वाजे जिहां उंघनां, तिहां होय सुखनी हाण वे॥निं०॥५॥उदय रत्न कहे उंघने, जीत्यानो एह उपाय वे॥ पहेला आहार जो जीतिये, तो निद्रावश थाय वे ॥ ६ ॥ निं० ॥इति॥

॥ अथ वैराग्य सद्याय ॥

॥ प्राणी काया माया कारमी, कूडो छे कुटुंब परिवाररें ॥ जीवरुला ॥ समरण कीजें सिद्धनुं ॥ माहरुं माहरुं म कर रे मानवी, पंथ वहेवुं परले पार रे जीवरुला ॥ सम० ॥ १ ॥ प्राणी सहुने वलावे सांकल्या. मलिया छे मोहने संबंध रे जीवरुला ॥ प्राणी आयु क्षयें अलगां थयां, धीठो एवो संसारी धंध रे जी० ॥ सम० ॥ २ ॥ प्राणी काष्ठ परें रे काया वले, वली केश वले जेम घास रे ॥ जी० ॥ प्राणी मानवी मर्कट वैरागीया, वली पडे माया विश्वास रे जी० ॥ ३ ॥ प्राणी पतंग उडे जीव उपरें, दोरी पवन वले लेइ जाय रे जी० ॥ प्राणी त्रुटी दोरी संधाय छे, आउखु त्रुटुं न संधाय रे जी० ॥ सम०॥ ॥ ४ ॥ प्राणी काचे कुंभे पाणी केम रहे, हंस उडी जाय काय रे जी० ॥ प्राणी आशा अतिघणी आदरे, थावा वालो तेहिज थायरे जी० ॥ सम० ॥ ५ ॥ प्राणी जेने घरे नोबत गडगडे, गावे वली खट राग रे जी० ॥ प्राणी गोखें तेहने धूमता, शून्यथये० वली उडे काग रे जी० ॥ सम० ॥ ६ ॥ प्राणी एम संसार असार छे, सारमां श्रीजिनधर्म सार रे जी प्राणी शांति समर समता धरी, चार तजी वली आदरो चाररे जी० ॥ सम० ॥ ७ ॥ प्राणी पांचे तजो रे पांचे भजो, त्रण्य जीपो त्रण गुणधार जीरे ॥

प्राणी रयणी जोजन परिहरो, सात व्यसन तजो सुविचार रे जी० ॥ सम० ॥ ८ ॥ प्राणी समता करो ठ कायानी, सांजलो सद्गुरुनी वाण रे ॥ जी० ॥ प्राणी साची शीखामण एह ठे, एम कहे ठे मुनि कल्याण रे जी० ॥ सम० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ सार बोलनी सद्याय लिख्यते ॥

॥ सरसती सामिनी पय प्रणमेव, सद्गुरुनाम सदा समरेव ॥ बोलिश एणि परें आचार, जोइ लेजो जाण विचार ॥ १ ॥ पंमित तें जे नाणे गर्व, ज्ञानी ते जे जाणे सर्व ॥ निंद्री ते जे नाणे क्रोध, कर्म आठ जीते ते जोध ॥२॥ गमे ध[illegible]ते जे बोले न्याय, धर्मी ते जे मन निरमाय ॥ ज्ञानी ते [illegible] पाले वाच, सद्गुरु ते जे जांखे साच ॥ सघला गरुउ ते जे गुण आगलो,[illegible] करे ते[illegible] ॥ मेलोतेजे निंदा करे, पापी [illegible] आचरे ॥ ४ ॥ मूर्ति ते जे जिनवरतणी, कीर्ति[illegible]जे सुणी लब्धि ते गौतम गणधार, बुद्धिअतिको अजय कुमार ॥ ५ ॥ श्रावक ते जे लहे नवतत्त्व, कायर ते जे मूके सत्व ॥ मंत्र खरो ते श्रीनवकार, देव खरो जे मुक्ति दातार ॥ ६ ॥ पदवी ते तीर्थंकर तणी, मति ते जे उपजे आपणी समकित ते जे साचुं गमें, मिथ्यामति ते जूलो जमे ॥ ७ ॥ मोटो जे जाणे परपीड, धनवंतो जे जांगे जीड ॥ मनवश आणे ते बलवंत, आ

लसथी अलगो पुण्यवंत ॥ ७ ॥ कामी नर ते कहीयें अंध, मोहजाल ते मोटो बंध ॥ दारीद्री जे धर्म हीन, दुर्गतिमांहे रुले ते दीन ए ॥ आगम ते ज्यां बोली दया, मुनिवर ते जे पाले क्रिया ॥ संतोषी ते सुखिया थया, दुःखीया ते जे लोभे ग्रह्या ॥ १० ॥ नारी ते जे होये सती, दर्शन ते उंघो मुहुपत्ति ॥ राग द्वेश टाले ते यति, सूधू जाणे ते जिनमती ॥ ११ ॥ काया ते जे शीलें पवित्र, मायारहित होए ते मित्र ॥ बृरूपणुं पाले ते पुत्र, धर्म हाण पाडे ते शत्रु ॥ १२ ॥ वैरागी ते विरमे राग, तारु ते जवतरे अथाग ॥ रौरव नरकतणो ए जाग, जाग हणीने मागे त्याग ॥ १३ ॥ देहमांहे ते सारी जीह, धर्म थाय ते लेखे दीह ॥ रसमांही उपशम रस लीह, थूलीजद्र मुनिवरमां सिंह ॥ १४ ॥ साचु ते जे जिननुं नाम, जिननु देरुं ज्यां ते गाम ॥ न्यायवंत कहियें ते राम, योगी ते जे जीते काम ॥ १५ ॥ एह बोल बोल्या में खरा, सार नथी एथी उपरा ॥ कहे पंमित लक्ष्मी कल्लोल, धर्म रंग मन धरजो चोल ॥ ॥ १६ ॥ इति सद्याय ॥

॥ अथ सामायिकना बत्रीश दोषनी सद्याय ॥

॥ चोपाइ ॥ शुज गुरु चरणें नामी शीश सामायिकना दोष बत्रीश ॥ कहिशुं त्यां मनना दश दोष, डुशमन देखी धारतो रोष ॥ १ ॥ सामायिक

अविवेकें करे, अर्थ विचार न हैडे धरे ॥ मन उद्वेग वंछे यश घणो, न करे विनय वडेरातणो ॥ २ ॥ भय आणे चिंते व्यापार, फल संशयनी आणुं सार ॥ हवे वचनना दोष विचार, कुवचन बोले करे टुंकार ॥ ३ ॥ ले कुंची जा घर उघाड, मुख लवरी करतो वढवाड ॥ आवो जावो बोले गाल, मोह करी हुलरावे बाल ॥ ४ ॥ करे विकथाने हास्य अपार, ए दश दोष वचनना वार ॥ काया केरां दूषण वार, चपलासन जोवे दिश चार ॥ ५ ॥ सावद्य काम करे संघात, आलस मोडे उंचे हाथ ॥ पग लंबे बेसे अवनीत, उठिंगन ल्ये थांभो भींत ॥ ६ ॥ मेल उतारे खरज खणाय, पग उपर चढावे पाय ॥ अति उघाडुं मेले अंग, ढांके तेम वली अंग उपंग ॥ ७ ॥ निद्रायें रस फल निर्गमें, करहा कंटक तरु ए नमे ॥ ए बत्रीशे दोष निवार, सामायिक कर जो नर नार ॥ ८ ॥ समता ध्यान घटा उजली, केशरी चोर हुवो केवली ॥ श्रीशुभवीर वचन पालती, स्वर्गे गइ सुलसा रेवती ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ अइमंताजीनी सद्याय ॥

॥ श्री अइमंता मुनिवरजूकी, करणी की बलिहारी वे ॥ खट वर्षनके संजम लीनो, वीरवचन चित धारी वे ॥ श्री० ॥ १ ॥ विजय नृपत्ति श्री देवी नंदन, पोलासपर अवतारी वे ॥ अंग अग्यार

पढे गुण आदर, त्रिविध त्रिविध अविकारी वे ॥ ॥ श्री० ॥ २ ॥ तप गुण रयण संवत्सर आदिक, करकें काय उद्धारी वे ॥ प्रभु आदेशें विपुलाचल पर, करी अणसण अति च्चारी वे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ केवल पाय मुक्ति गये मुनिवर कर्म कलंक निवारी वे ॥ अढारसें अरुतालें तिहि गि रि, कीनी थापना सारी वे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ वाचक अमृत धर्म सुगुरुके, सुपसायें सुविचारी वे ॥ शिष्य क्षमा कल्याण हरख धर, गुण गावे जयकारी ते ॥ ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति अइमंता मुनिनो सवाय ॥

॥ अथ समकेतनी चोपाइ ॥

॥ धुर प्रणमुं जिनवर चोवीश, सविगणधरने नामुं शीश ॥ तेहनां वयण सुणे जे कान, मन रा खे समकितने ध्यान ॥ १ ॥ साचो देव एक वीतरा ग, धर्म तणो जेणें दाख्यो माग ॥ ते जिनवरनी पालुं आण, जे होये साचा सुगुरु सुजाण ॥ २ ॥ पंच महाव्रत मनमां धरे, राग द्वेष पेहेलुं परिहरे ॥ चारित्र पालेटाले दोष,लीये आहार थोडे संतोष॥३॥ दोषमांहे जे आधाकर्म, टाले ते त्रोडे आठ कर्म ॥ आधाकर्म करे नर नार, ते पण घणुंए रुले संसार ॥ ४ ॥ मूकी देह तणा सुखवास, सहे परीसह वा रे मास ॥ तपे करिने जेणें जस लाध, वंदनिक ते त्रिभुवन साध ॥ ५ ॥ एक संयमने बीजी क्षमा,

शत्रु मित्र जेहने वेहु समा ॥ दृष्टिराग तरी उतरी ते जाशे जव सायर तरी ॥ ६ ॥ एकआपणुं करी मन ठाम, जणेगुणे सिद्धांत तमाम ॥ सद्गुरुनो उपदेश आचार, जोइ समजो हैये विचार ॥ ७ ॥ एक पहेरे मुनिवरनो वेश, पण साचो न दीये उपदेश ॥ जेह उत्थापे जिनवर वयण, तेहने किहां हियानां नयण ॥ ८ ॥ घर मूकीने थया माहातमा, ममता जइ लागा आतमा ॥ मारुं मारुं एम कहे घणुं, तेह मूरख वदनता पणुं ॥ ए ॥ एक त्यागी दीसे ठे इस्या, लोजें शिष्य करे अण कश्या ॥ पंच महाव्रत कहे,उचरे, उपशम रस ते कहो किम गरे ॥ १० ॥ आधाकर्मी वहोरे घणो धरम विगोवे जिन वरतणो यंत्र तंत्र मूली करी करी, चूरण आपे घर घर फरी ॥ ११ ॥ कुगुरु तणा जाणी अहि नाण, सेवा न करे जे होये जाण ॥ जिनवाणी सांजलीयें इसी, सोनुं गुरु वे लीजें कसी ॥ १२ ॥ सोनाथी होय एकज वहाण कुगुरुकरे जव जवनीहाण, सोने घाठा पण ते मले, कुगुरु पसायें जव जव रुले ॥ १३ ॥ सर्प रुसे हुए जवनो अंत, कुरुगु करे संसार अनंत ॥ एम जाणी वली लीजे साप, कुगुरु नमि नवि वोलियें आप ॥ १४ ॥ एक वहे जिनवरनी आण, वेर वहे तिहां एक अजाण ॥ एह आपणा नहीं गुरु एम, वोली लीये वदंतु तेम ॥ १५ ॥ एक जणे

मारा गुरु देव, में करवी एहि जनी सेव ॥ पक्ष तणा स्वामीने मान, अवर पक्षने दे अपमान ॥१६॥ एक सगा जाणी माहातमा, गुणपाखें तारे आतमा॥ पात्र जाणी पूजे तेहने, समकित केम ठे तेहने ॥ ॥ १७ ॥ देखी परखी गुरु गुणवंत, श्रावकने मनसं यमवंत ॥ एह आपणा नहीं इम जणे, दान मान सघले अवगणे ॥ १८ ॥ एका ने गठनो अनुराग, पण न लहे साचो जिनमाग ॥ वीर वचन लेइने पाधरुं, कुगुरु सुगुरु जोइ आदरुं ॥ १९ ॥ जेहने आगमनुं बहु मान, तेहना उघडे एणे कान ॥ ए साधारण गुरुनी वात, जइने जोस्ये मुक्ति मात ॥ ॥ २० ॥ हृयय नयन तम जुर्ज सुजाण, ठंडो कुगुरु ए जिन आण ॥ सदगुरु तणा चरण आचरो, जेम जवसायर लीलायें तरो ॥ २१ ॥ जे जिन आण व हे निशदीश, ते उपर जे नाणे रीश ॥ नवे तत्त्व निरता सद्दहे, सूधुं समकित ठेते कहे॥२२॥ एहवुसम कित सूधुं जाण, धर्मकाजनु म करीश काण ॥ जिनवर पूजासफुगुरु जक्ति, जावें करवी आतम सक्ति ॥ २३ ॥ पडिक्कमणुंने फासुं नीर, कीजें धर्म कह्युं जे वीर ॥ धर्मे ऋद्धि सिद्धि घर हूंत, धर्मे संकट सवि जाजंत ॥२४॥ धर्मे सूर्य निरतो तपे, धर्मे पाप करम सवि खपे ॥ धर्मे होये रुपनो योग, धर्मपसायें संपत्ति जोग ॥२५॥ जणे गुणे ने बहु तप

थायें नरीयो, परीयो समुद्र मकार ॥ मुख माख णीउं अश्ने मरीयो, परीयो नरक डुवार ॥ मा० ॥ ७ ॥ इंद्रे तो सिंहासनथापी, संचूर्ये माया राखी ॥ नेमीसर तो माया मेली, मुगतीमां थया साखी ॥ मा०॥७॥ मन वचन कायायें माया, मदेली वनमा जाय ॥ धन्य धन्य तेह मुनि सर जेहना तीन जवन गुणगाय ॥ मा० ॥ ए ॥ एवुं जाणीने जविप्रा णी, माया मूको अलगी॥ सम यसुंदर कहे सार छे जगमां, धर्म रंगशुं वलगी ॥ मा० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ शीलविषे सद्याय ॥

॥ रखेकोइ रमणी रागमां, प्राणी मुंजाउ ॥ अ थिर ए वाला उपरे, थिरशाने थाउ ॥ १ ॥ एतो अनरथनुं आश्रम छे; कलेशनो छे कंदो ॥ वैरोदधी पूर वधारवा, आवो पूनमचंदो ॥ र० ॥ २ ॥ कुलटा नारीने कारणें, केइ कुलवंता ॥ आचरण हीणा आ चरे, वहालाशुं वेढंता ॥ र० ॥ ३ ॥ डुखनी दरी ए सुंदरी, डुरगतीनी दाता ॥ आगमथी ल्यो उंख खी, गुण एहना ज्ञाता ॥ र० ॥ ४ ॥ खांम मीठी करी लेखवे' मलतां मूढप्राणी ॥ उदेवदे कहीयें पठे, जिनमतीयें जाणी ॥ र० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मुनि दान विजयजी कृत कर्म उपर सज्झाय ॥

॥ कपूर होये अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥

सुख डुःख सरज्या पामीयें रे, आपद संपद होय ॥

लीला देखी परतणी रे, रोष म धरजो कोय रे, ॥ प्राणी मन नाणों विष वाद ॥ एतो कर्मतणा पर साद रे ॥ प्रा० म० ॥ १ ॥ फलने आहारे जीवीआ रे, बार वसर वन राम ॥ सीता रावण लइ गयो रे. कर्म तणां ए काम रे ॥प्रा०॥२॥ नीर पाखें वन एकलो रे मरणपाम्यो मुकुंद॥नीच तणे घर जल वह्यो रे,शीसधरी हरिचंद रे॥प्रा०॥३॥नले दमयंति परिहरी रे, रात्रि सम य वन वाल ॥ नाम ठाम कुल गोपवी रे, नले निर वाह्यो काल रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ रुप अधिक जग जा णीयें रे, चक्री सनत कुमार ॥ वरस सातशें जोग, वी रे, वेदना सात प्रकार रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ रुपें वली सुर सारिखा रे, पांडव पांच विचार ॥ ते वन वासें रुवड्या रे, पाम्या डुःख संसार रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ६ ॥ सुरनर जस सेवा करे रे, त्रीभुवनपति वि ख्यात ॥ ते पण कर्मविटंबीया रे, तो माणस केइ मात रे, ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ दोष न दीजें केहने रे, क र्मविटंबण हार ॥ दान मुनि कहे जीवने रे, धर्म सदा सुखकार रे ॥प्रा०॥८॥ इति कर्मनी स्वाध्याय॥

॥ अथ सुमति विलाप सद्याय प्रारंभ ॥

॥ पडजो कुमतिगढना कांगरा, मरजो मोहमहे राण ॥ वाह्लो महरो निजघरें नावीयो, एणे परघर कीधां प्रयाण ॥ वा० ॥ इम कहे सुमती सुजाण ॥

वा० ॥ १ ॥ दांतपाडुरें डुती तणा, पामोसणना लउं प्राण ॥ जेणें महारो जीवन चोलव्यो ॥ लइ ना ख्यो नरकनी खाण ॥ वा० ॥ २ ॥ मायये मद पाइ रे, वास्यो पोताने वास ॥ माहारोने वासो एणें टा लीयो, इणे मुज कीधी निरास ॥ वा० ॥ ३ ॥ गुण वंतना गुण गोपवी, निगुणाशुं मांडे गोठ ॥ आप स्वरुप न ओलखे, एतो पापनी चलवे पोठ ॥ वा०॥ ॥ ४ ॥ अपूज्य सार्थे धरे आसकी, एतो पूज्यना पूजे पाय ॥ परम महोदय पामशे ज्यारें आवशे आपणे ठाय ॥ वा० ॥ ५ ॥ श्रीदादापास पसाउलें, मेंतों कुमतीनो पाम्यो कोट ॥ घरें आव्यो निज घरधणी, मेंतो शोकनी चूकवी चोट ॥ वा० ॥ ६ ॥ उदयरतन वाचकवदे, पूजशे जे प्रज़ुना पाय ॥ ते परमपदें पधारशे, वली संपद लेशे सवाय ॥वा०॥७॥

॥ अथ श्री शांतिनाथनो दशमो जव मेघरथ राजानी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ दशमें जवेंश्रीशांतिजी, मेघरथ जीवडा राय रूडाराजा ॥ पोसह शालामां एकला, पोसह लीयो मन जाय ॥ रूडा राजा ॥ धन्य धन्य मेघरथ राय जी, जीवदया गुण खाण ॥ धर्मी राजा ॥ धन्य० ॥ ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ इशानाधिप इंडजी, वखाण्यो मेघरथ राय ॥ रुडा राजा ॥ धर्मे चलाव्यो नवि च ले, महासुर देवता आय ॥ रुडा राजा ॥ धन्य०॥२॥

पारेवुंसींचाणा मुखें अवतरी, पम्फीयुं पारेवुं खोला मांय ॥ रुम्फा राजा ॥ राख राख मुज राजवी, मुज ने सींचाणो खाय ॥ रुम्फा राजा ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ सींचाणो कहे सुणो राजीया, ए छे महारो आहार ॥ रुडा राजा ॥ मेघरथ कहे सुण पंखीया, हिंसाथी नरक अवतार ॥ रुम्फा पंखी ॥ धन्य० ॥ ४ ॥ शरणे आव्युं रे पारेवडुं, नहीं आपुं निरधार ॥ रुम्फा पंखी ॥ माटी मगावी तुजने देउं, तेहनुं तुं कर आहार ॥ रुडा पंखी ॥ धन्य० ॥ ५ ॥ माटी खपे मुज एह नी, कां वली ताहरी देह ॥ रुडा राजा ॥ जीवदया मेघरथ वसी, सत्य न मेले धर्मी तेह ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ ६ ॥ काती लेइ पिंम्फ कापीनें, ले मांस तुं सींचाण ॥ रुम्फा पंखी ॥ त्राजुए तोलावी मुजने दीर्ज, ए पारेवा प्रमाण ॥ रुम्फा राजा ॥ धन्य० ॥७॥ त्राजुउं मगावी मेघरथ रायजी, कापी कापी मुके छे मंस रुम्फा राजा ॥ देवमाया धारण समी, नावे एकण अंश ॥ रुडा राजा ॥ धन० ॥ ८ ॥ आइ सुत राणी वलवले, हाथ झाली कहे तेह ॥ घेला राजा ॥ एक पारेवाने कारणे, शुं कापोछो देह ॥ घेला राजा ॥ धन्य० ॥ ए ॥ महाजन लोक वारे सहु, म करो एवडी वात ॥ रुम्फा राजा मेघरथ कहे धर्म फल जलां, जीवदया मुजधात ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ ॥ १० ॥ त्राजुयें वेठा राजवी, जे आवे ते खाय ॥

रुमा पंखी ॥ जीवथी पारेवो अधिको गण्यो, धन्य पिता तुज माय ॥ रुमा राजा धन्य० ॥ ११ ॥ चड ते परिणामे राजवी, सुर प्रगट्यो तिहां आय ॥ रुमा राजा ॥ खमावे बहुविधें करी, लली लली लागे ढे पाय ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ १२ ॥ इंद्रे प्रशंसा ताहारी करी, तेहवो तुं ढो राय ॥ रुडा राजा ॥ मेघरढ काया साजी करी, सुर पोहोतो निज ठाय ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ १३ ॥ संयम लीयो मेघरथ रायजी, लाख पूरवनुं आय ॥ रुमा राजा ॥ वीशस्थानक विधें सेवियां, तीर्थंकर गोत्र वंधाय ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ १४ ॥ इग्यारमे जवें श्रीशांतिजी, पोहोता सर्वार्थसिद्ध ॥ रुमा राजा ॥ तेत्रीस सागर आउखुं, सुख विलसे सुर रिद्ध ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ १५ ॥ एक पारेवा दयाथकी, वे पदवी पाम्या नरिंद ॥ रुडा राजा ॥ पांचमा चक्रवर्त्ति जाणियें, शोलमा शांतिजिणंद ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ १५ ॥ वारमे जवें श्रीशांतिजी, अचिरा कूखेंअवतार ॥ रुडा राजा ॥ दीक्षालेइने केवल व स्या, पहोता मुगति मोकार ॥ रुडा राजा ॥ १७ ॥ त्रीजेजवें शिवसुख लह्यो, पाम्या अनंतु ज्ञान ॥ रु मा राजा ॥ तीर्थंकरपदवी लही, लाखवर्ष आयु जाण ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ १० ॥ दयाथकी नव निधि होवे, दया ये सुखनी खाण ॥ रुडा राजा ॥

नव अनंतनी ए सगी, दया ते माता जाण ॥ रुम्रा राजा ॥ धन्य० ॥ १९ ॥ गजनवें शशलो राखियो, मेघकुमार गुण जाण रुडां राजा ॥ श्रेणिकराय सुत सुख लह्यां, पोहोता अनुत्तर विमान ॥ रुम्रा राजा ॥ धन्य० ॥ २० ॥ एम जाणी दया पालजो, मनमांहे करुणा आण ॥ रुम्रा राजा समयसुंदर एम वीनवे, दयाथी सुख निरवाण ॥ रुम् राजा ॥ धन्य० ॥२१॥

॥ अथ श्री लब्धिविजयजी कृत पंदर तिथिनी पंदर ॥ सद्याय प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥ श्रीमद्गोडी जगधणी, दायक शिवगति जेह ॥ अलिय विघन दूरें हरे, टाले डुरित अठेह ॥ १ ॥ सुधादृष्टि होवे सदा, एहवी जेहनी दृष्टि ॥ उरग तजी सुरपति कस्यो, गिरुउं गुणें गरिष्ट ॥ २ ॥ नावियपद पंकज सदा, हुं नित्य प्रणमुं तास ॥ सकल मनोरथ पूरवे, ते वीशमो जिनपाश ॥ ३ ॥ नावे प्रणमू नारती पूरे पूरण आश ॥ मूरखनें पंमित करे, आपे वचन विलास ॥ ४ ॥ (पांठांतरें) मूरखने पंमित करे, जेवी तुज आख्यत ॥ वचन सुधारस पोषवा, वर दे शारद मातु ॥ ४ ॥ शक्ति नहिं सिद्धांतनी, बुद्धि नही लवलेश ॥ वचन विलास करी कहुं, ते पण नहिं सुविशेष ॥ ५ ॥ पण मुज एक आधार ठे, सगुरु तणो पसाय ॥ तस अनुनावें उपजे, वचन सदा सुखदाय ॥ ६ ॥ आगमना

अनुसारथी, आणी मन पवित्र ॥ पंदर तिथि सात वारनां, पत्तणुं तेह चरित्र ॥ ७ ॥ जिम मृग नाद लीनो थको, निसुणे थइ एक रंग ॥ तिम सुणजो नविपण तुमें, आणी चित्त अनंग ॥ ८ ॥

॥ अथ प्रतिपदानी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ कपूर होवे अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥ पहेली तिथि एणीपरें वदे रे, सांजलो प्राणी सार ॥ एक धर्म जग आदरो रे, जाणी अथिर संसार रे प्राणी ॥ धरजो धर्मशुं राग, जिम पामो जवतागो रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ दश दृष्टातें दोहिलो रे, मानवजव अवतार ॥ पामी धर्मने सद्दहो रे, पामो जिम जयकारो रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ध० ॥ २ ॥ धर्म वमो संसारमां रे, जांखे श्रीकीरतार ॥ सुरमणिसम ए धर्म छे रे, अनवक्रियां आधारो रे ॥ प्र० ॥ ध० ॥ ३ ॥ धर्मथकी संपद मले रे, धर्मथकी नवनिधि धर्मथकी संकट टले रे, धर्मथकी रुद्धि वृद्धि रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥ ४ ॥ जुर्ज धर्म प्रजावथी रे, चक्री जरत नरेंद्र ॥ अजरामर पद शाश्वतां रे, पाम्यो परमाणंदो रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥ ॥ ५ ॥ जे नर जिनधर्म पामीने रे, करशे प्रमाद लगार ॥ तो पडवे कहे जीवमो रे, पमशे नरक मकारो रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥ ६ ॥ एम जाणी जवि जा

वशुं रे, कीजे अनुत्तर धर्म ॥ विजय लब्धि सदा लहो रे, ठंमी मिथ्या जरमो रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥

॥ अथ द्वितीयानीसजऊाय प्रारंजः ॥

॥ कोइलो वर्वत धुंधलो रे लो ॥ ए देशी ॥ वीज कहे जव्य जीवने रे लो, निसुणो आणी रीऊ रे ॥ सुगुणनर ॥ सुकृतकरणी खेतमें रे लो, वावो समकित वीज रे ॥ सु० ॥ धरजो धर्मशुं प्रीतमी रे लो, करि निश्चय व्यवहार रे ॥ सु० ॥ इह जवें परजवें जवोजवें रे लो, होवे जयुं जग जयकार रे ॥ सु० ॥ धर० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ किरिया ते खातर नाखियें रे लो, समता दिजें खेम रे ॥ सु० ॥ उपशम नीरे सीचीयें रे लो, उगें जयुं समकित ठोम रे ॥ सु० ॥ ध० ॥ २ ॥ वाम करो संतोषनी रे लो, तस पांखमी चिहु ठोर रे ॥ सु० ॥ व्रत पच्चरकाण चोकी ठवो रे लो, वारे युं कर्मना चोर रे ॥ सु० ॥ ध० ॥ ३ ॥ अनुजव केरे फूलडे रे लो, महोरे समकित वृक्ष रे ॥ सु० ॥ श्रुतिचरित्र फल उतरे रे लो, ते फल चाखो शिक्षरे ॥ सु० ॥ ध० ॥ ४ ॥ ज्ञानामृत रस पीजीयें रे लो, स्वाद ल्यो साम्य तांबूल रे ॥ सु० ॥ इण रसें संतोष पामशो रे लो, लेहशो जवनिधि फूल रे ॥ सु० ॥ ध० ॥५॥ इण विध वीज तमें सद्दहो रे लो, ठांडी राग ने द्वेष रे ॥ सु० ॥ केवल कमला पामीयें रे लो, वरि

यें मुक्तिविवेक रे ॥ सु० ॥ ध० ॥ ६ ॥ समकित बी
ज ते सद्दहे रे लो, ते टाले नरक निगोद रे ॥सु०॥
विजय लब्धि सदा लहे रे लो, नित नित विविध
विनोद रे ॥ सु० ध० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीयानी सद्याय प्रारंभः ॥

॥ इडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

त्रीज कहे मुजउलखी रे, आदरो देवगुरु धर्म ॥
जनम जरा मृत्यु त्रुटस्यो रे, टालो भवभय कर्म ॥
भविकजन, धरजो धर्मशुं राग ॥ जिम पामो भ
वनिधि ताग ॥ भ० ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥
मोहिनी त्रणे परिहरो रे, राखो मन निःशल्य ॥ गा
रव त्रणे मत करो रे, छंमो त्रएये शल्य ॥ भ० ॥
ध० ॥ २ ॥ मानव भवमां मोटकां रे, कहियां तीने
रत्न ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र अछे रे, तेहनुं करियें य
त्न ॥ भ० ॥ ध० ॥ ३ ॥ ए त्रएये रत्नयोगथी रे, पा
मियें त्रीभुवन राज ॥ श्रीभगवंत शकारशे रे, सर
शे वंछित काज ॥ भ० ॥ ध० ॥ ४ ॥ त्रिवर्गनां सुख
मेलवो रे, आणी त्रएये योग ॥ मन वचन काया
योगथी रे, टालो कर्मना रोग ॥ भ० ॥ ध० ॥ ५ ॥
त्रण गुप्ति सूधी धरे रे, जे नर त्रीज आराधि ॥ वि
जयलब्धि ते पामशे रे, दिन दिन सुख समाधि ॥

॥ अथ चतुर्थीनी सद्याय प्रारंभः ॥

॥ कपूर हवे अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥

चोथ कहे नवि सांजलो रे, माहरा गुण अ जिराम ॥ माहरी शीखें चालशो रे, तो लेशो मु क्तिनु ठाम रे ॥ प्राणी, जिनवाणी धरो चित्त ॥ ए तो आणी मन शुज रीत रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ विकथा चारे परिहरो रे, परिहरो चार कषाय ॥ क्षमा रुपी धन संचियें रे जवोजव पातक जाय रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ २ ॥ त्रिगडे वेसी जिनवरें रे, जांख्यो चउविह धर्म ॥ दान शियल तप जावना रे, ए चारे सुखनां हर्म्य रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ३ ॥ दानें ते दोलत पामीयें रे, शीलें जस सौजाग्य ॥ तप करी कर्म विनाशियें रे, जावें जाव ठ जाग रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ४ ॥ जवनिधि पार उ तारवा रे, ए चारे नाव समान ॥ सकल पदारथ आपवा रे, ॥ ए चारे प्रगट निधान रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ५ ॥ इम जाणी पुण्य कीजीयें रे, सांजली सदगुरु वाणी ॥ चिहुं गतिनां डुःख टालीयें रे, हो वे कोमी कल्याण रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ६ ॥ चोथ तणा गुण जाणिने रे, जे धरे चउ धर्मद्वार ॥ विज य लब्धि सदा लहे रे, साधि पदारथ चार रे ॥

॥ अथ पंचमीनी सद्याय प्रारज्यते ॥

॥ जय जगनायक जगगुरु रे ॥ ए देशी ॥

पुनरपि पांचम एम वदे रे, सांजलो प्राणी सु जाण ॥ श्रीजिन अनुमतें चालीयें रे, जिम ल

हियें सुखनी खाण ॥ १ ॥ नविक जन, धरजो धर्म शुं प्रिति ॥ ए तो आणी मन शुन रीत ॥ न० ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ आश्रव पंच दूरें करी रे, कीजें संवर पंच, सुमिति सखी शुन पालीनें रे, तुमें मेलो शिव वधूसंच ॥ न० ॥ ध० ॥ २ ॥ पंच महाव्रत अनुसरी रे, पालों पंच आचार ॥ त्रिकरण शुद्धियें ध्यावजो, रे पंचपरमेष्टी नवकार ॥ न० ॥ ध० ॥३॥ समकित पंच आजुवालजो रे, धरजों चारित्र पंच ॥ पंच नूपणनें पडिवजी रे, टालो डुपण पंच ॥ न० ॥ ध० ॥ ४ ॥ मत करो पंच प्रमादनें रे, मत करो पंच अंतराय ॥ पंचमी तप शुन आदरो रे, जिम दिन दिन दोलत थाय ॥ न० ॥ ध० ॥ ५ ॥ पंचमी तप महिमा घणो रे, कहेतां नावे पार ॥ वरदत्तनें गुणमंजरी रे, जुठे पाम्या नवनो पार ॥न०॥ ध० ॥ ६ ॥ पांचमी एम आराधीयें रे, लहियें पंचम नाण ॥ चउद रज्जवात्मक लोकना रे, एतो मनपज्जव शुन जाण ॥ न० ॥ ध० ॥ ७ ॥ घनधाति कर्म खपावतां रे, वाजे हो मंगल शब्द ॥ पंचमी गति अविचल लहे रे, तिहां सुख अनंत सुलब्द ॥ न० ॥ ध० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ षष्ठीनी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥ इण विध पांचे तिथि नलि वोली शुन परिणाम ॥ एक एकथी चढते गुणें, मनोहर

ते अभिराम ॥ १ ॥ छठी तणा गुण वर्णवुं, मूकी मन अभिमान ॥ हवे भवियण भावें करी, निसुणो थइ सावधान ॥ २ ॥ ढाल ॥ कुबख्मानी देशी ॥ छठी कहे मुज ओलखी रे, छटको पापथी दूर सनेहा सांभलो छकाय रक्षा कीजीयें रे, होवे ज युं सुखसनूर ॥ स० ॥ १ ॥ चार कषाय राग द्वेषने रे, नाखजो दूर विमारि ॥ स० ॥ छए द्रव्यने ओल खी रे, पालो निरतिचार ॥ स० ॥ २ ॥ समकित शुद्ध जगाविये रे, भांगियें दुःखनी वेलि ॥ स० ॥ मग्न रहो जिनधर्ममें रे, नाखो कुगति उवेलि ॥ ॥ स० ॥ ३ ॥ छठ आराधो भावशुं रे भवियण थइ उजमाल ॥ स० ॥ भकित मुकित सदा लहो रे, होवे युं मंगल माल ॥ स० ॥ ४ ॥ लब्धि कहे सा जन तुमें रे, म करो प्रमाद लगार ॥ स० ॥ दिन दिन संपदा अभिनवी रेहोवे श्री श्रीकार॥स०॥५॥

॥ अथ सप्तमीनी सद्याय प्रारंभः ॥

॥ लुहारणे जायो दीकरो सो नारी हे ॥ ए देशी ॥ सातम कहे सात आतमा ॥ सुखकारी हे ॥ प्राणी राखीयें सोय ॥ सदा सुखकारी हे ॥ सुख आवे गर्व न कीजीयें ॥ सु० ॥ दुःख आवे दीन न होय ॥ स० ॥ १ ॥ सात भय निवारियें ॥ सु० ॥ छंडियें मिथ्या शंस ॥ स० ॥ सात अमीरस कुंडमां ॥ सु० ॥ झलीयें थइनें हंस ॥

॥ स० ॥ २ ॥ सातम दिन साखे तमें ॥ सु० ॥ वावीयें द्रव्य विशेष ॥ स० ॥ सुकृतकर्षण जमीनें ॥ ॥ सु० ॥ उपजे धान्य विवेक ॥ स० ॥ ३ ॥ वाड करो तुमें शीलनी ॥ सु० ॥ तस पांखमी चिहुं ढोर ॥ स० ॥ चोकी ठवो सही धर्मनी ॥ सु० ॥ अध को न करे जोर ॥ स० ॥४॥ मनरुपी माल बनावियें ॥सु०॥ वेसी यें तिहां सावधान ॥स०॥ विरतिरुपी गोफणे करी ॥ सु० ॥ नाखियें गोला ज्ञान ॥ स० ॥ ५॥ डुष्कृत पंखी उमाडीयें ॥ सु० ॥ करी निश्चयव्यवहारे ॥स०॥ पोंक आरोगियें पुण्यना ॥ सु० नवियण थइ हुशियार ॥ स० ॥ ६ ॥ सात नय जाणी तुमें ॥ सु० ॥ तद्रूपी खलां बनाव ॥ स० ॥ करुणारस जल आणीने ॥ सु० ॥ सात नय खलां पिवराव ॥ ॥ स० ॥ ७ ॥ जीवदया सकटे नरी ॥ सु० ॥ सुकृत कर्षण सार ॥ स० ॥ संवर बलदनें जोतरी ॥ सु०॥ आणियें खला मकार ॥ स० ॥ ८ ॥ ध्यानरुपी थंन रोपीने ॥ सु० ॥ लणियें रूपक संयोग ॥ स० ॥ जिनआण सही नावीयें ॥ सु० ॥ हालरुआं अशोक ॥ स० ॥ ए ॥ डुःखरुपी बूरां झाटकी ॥ सु० ॥ नाखियें दूर सुजाण ॥ स० ॥ आतमवस्त संकारमें ॥ ॥ सु० ॥ नरजो सुकृत ध्यान ॥१०॥ स० ॥ इह नव परनव नवो नवें ॥सु०॥ पामियें सुख विचित्र ॥स०॥ संतोष राखी आतमा ॥ सु० ॥कीजें पुण्य पवित्र ॥

॥ स० ॥ ११ ॥ लब्धि कहे नविझ्ण विधें ॥ सु० ॥ आदरे प्राणी जेह ॥ स० ॥ सात रज्जुातम भेदीनें ॥ सु० ॥ सवि सुख लेहेशे तेह ॥ स० ॥१२॥इति ॥

॥ अथ अष्टमीनी सद्याय प्रारंभः ॥

॥ हरिया मन लागो ॥ ए देशी ॥ आठम कहे आठ मदनो, प्राणी मूको ते ठाम रे भवियण हित धरी ॥ आठ प्रकारें आतमा, उलखो तुमें अभिरा म रे ॥ भ० ॥ १ ॥ पडिक्कमणां पोषा करी, तोमो फुःखना वर्ग रे ॥ भ० ॥ सुमिति गुप्ति सूधां धरी, मेलो सुख अपवर्ग रे ॥ भ० ॥ २ ॥ अष्ट महागुण सिद्धना, ध्यावो ते निश दीस रे ॥ भ० ॥ अष्ट म हासिद्ध संपजे, पहोचे मनह जगीश रे ॥ भ० ॥ ॥ ३ ॥ जिनदेवनी करो हाजरी, दिल पाक करी मन कोड रे ॥ भ० ॥ मनरुपी घोडो बनावियें, गुरु ज्ञान लगाम जोम रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ शीलनी पाखर नाखीयें, तपरुपी खमग लेइ हाथ रे ॥ भ० ॥ क्षमा बक्तर पेहेरीनें, ध्यान कवाण सलोथ रे ॥ भ० ॥ ॥ ५ ॥ विरति तीर चलाविनें, अष्ट करम मद मो डि रे ॥ भ० ॥ विषय कषाय जे आकरा, तेहनां ते मस्तक तोमि रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ श्रीजिन आगल आ वीनें, मजरो करो कर जोडि रे ॥ भ० ॥ श्रीजिन केरा पसायथी, मोक्ष शहेरें जाउं दोमी रे ॥ भ० ॥ ॥ ७ ॥ आठम दिन शुभ जाणिनें, धर्मनां करियें

वखाण रे ॥ ज० ॥ कपटनो कोट उन्माकियें, वाजे युं जीत निशान रे ॥ ज० ॥ए॥ इणि परें अष्टमी जा वशुं, आदरे प्राणी जेह रे ॥ ज० ॥ लब्धि कहे ज वि तस घरे, प्रगटी पुएयनी रेह रे ॥ ज० ॥ए॥इति

॥ अथ नवमीनी सद्याय प्रारंज ॥

॥ वन्यो रे विद्याजीनो कलपको ॥ ए देशी ॥
जीरे नवमी कहे नमीयें सदा, एतो श्रीजनकेरां विंव हो विशेष ॥ नव अंगें पूजा वनावीयें, ए तो मूकी मननो दंज हो ॥ विशे० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जवियण शुजजावें करी ॥ ठंको विपयकपाय अतीव हो ॥ वि० ॥ स्नात्र महोत्सव कीजीयें, एतो दीजें दान सदीव हो ॥ वि० ॥ ज० ॥ २ ॥ जीरे पूजा ज क्ति प्रजावना, करि रोपे जे कीर्त्ति थंज हो ॥ वि० ॥ सुख अनंतां ते वरे, तस जस जणेसुर रंग हो ॥ ॥ वि० ॥ ज० ॥ ३ ॥ जिरे जिन आगें स्तवना जा वशुं, एतो जे करे नाटारंज हो ॥ वि० ॥ लाज अ नंतो जिन जणे, जुर्ज महिमा जाव अचंज हो ॥ ॥ वि० ॥ ज० ॥ ४ ॥ जिरे जिन स्तवना गुण गाव तां, एतो समकित होये उद्योत हो ॥ लंकापति रा वण परें, एतो बांधि तीर्थंकर गोत हो ॥ वि० ॥ ॥ ज० ॥ ५ ॥ जिरे अरिहंत जक्ति प्रजावथी, ए तो जाये जवनां पाप हो ॥ वि० ॥ जिरे नव निधा न सुख संपजे, वली होवे युं अधिक प्रताप हो ॥

॥ वि० ॥ च० ॥ ६ ॥ जिरे नवपद ध्यान सदा ध
री, ए तो पालीयें नव विध शील हो ॥ वि० नव
नोकषायने परहरी, एतो लहीयें सुखनी लील हो
॥ वि० ॥ च० ॥ ७ ॥ जिरे नवेतत्त्वने ओलखी, ए
तो पामी मनुष्य अवतार हो ॥ वि० ॥ शत्रुमित्र स
रिखा गणो, एतो सकल जंतु निर्धार हो ॥वि०॥च०॥
॥ ८ ॥ जिरे उपकार ते कीजीयें, ए तो टालीयें प
रनी पीम हो ॥ वि० ॥ नवमीयें नवपुण्य अनुसरी,
ए तो चांगीयें चवनी चीम हो ॥ वि० ॥ च० ॥ए॥
जिरे इणविध नवमी प्रमोदशुं, एतो आदरे प्राणी
जेह हो ॥ वि० ॥ लब्धिविजय रंगें करी, एतो शि
वसुख लेहशे तेह हो ॥ वि० ॥ च० ॥ १० ॥ इति॥

॥ अथ दशमीनी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ राम चणे हरि उठीयें ॥ ए देशी ॥ दशमीयें
डुषमन वारियें काम क्रोध मद जोर रे ॥ दशविध
यति धर्म आचरी, कापीयें डुःख तणी दोर रे,
लाल सुरंगारे अत्तमा वहिये धर्मनी होररे प्रग
टे पुण्यनो तोर रे, लहियें मुकितनुं ठोर रे, वाधे
जस चिहुं ठर रे ॥ ला० ॥ १ ॥ दशविध विनय
अच्यासथी, तोमीयें मोहजंजाल रे॥ दशविध मिथ्या
त्व परहरी, ठंमीयें आल पंपाल रे ॥ ला० ॥ मेली
यें सुकृतमाल रे, प्रगटे चाग्य विशाल रे, होवे मंग
लमाल रे, लहियें सुख ततकाल रे ॥ ला० ॥ २ ॥

त्रस थावर सर्व जीवने, संज्ञा कही तस रंग रे ॥
संज्ञा प्रत्यें उंलखी, कीजें गुरुनो प्रसंग रे ॥ ला० ॥
संज्ञा धर्म न चंग रे, राखीयें चित्त अनंग रे, सुख
तटिनी वहे अंग रे, उल्लटे ज्युं गंगरंग रे ॥ ला० ॥
॥ ३ ॥ दशविध प्राण त्रस जीवनें, नांखे जिनवर
वीर रे ॥ ते दश प्राण तुं पामीनें, धरियें, मन दया
धीर रे ॥ ला० ॥ दशविध सुख शरीर रे. हरियें द
श विध पीर रे, तोडीयें दुःखजंजीर रे, पामीयें न
वोदधि तीर रे ॥ ला० ॥ ४ दश पच्चरकाण सिद्धांत
मे, पाख्यां ठे सहि बोल रे ॥ तेहमां नित्य एक ना
वशुं, करे पच्चरकाण अमोल रे ॥ ला० ॥ जाण ला
न अतोल रे, मुकितशुं करि बंध कोल रे, लब्धि
नणे दिल खोल रे, वाजे जीतना ढोल रे ॥ला०॥५॥

॥ अथ एकादशीनी सद्याय ॥

॥ दोहाः एम दशतिथि अधिकार अथ, किंचित्
कह्यो चरित्र ॥ शास्त्र तणा अनुसारथी, वर्णन करी
विचित्र ॥ १ ॥ हवे एकादशितिथि तणा, कहे सूरि
जन माहाराज ॥ त्रिकरण करीनें आतमा, निसुणो
थइ मृगरज ॥२॥ ढाल ॥ नथरो नगीनो माहरो ॥
ए देशी ॥ हवे एकादशी इम वदे, नवि, जन ठंडी
यें विषयासक्त हो ॥ वसन ठंडो निर्विकारनां ॥
॥ न० ॥ जेहनी ठे सबल प्रतीत हो ॥ १ ॥ गुणना
रागी नवी, अवगुण त्यागी सही होइ एं ॥ न० ॥

पामी अनुभव संतहो ॥ए आंकणी॥ ध्यान तणी अं गीठिका ॥भ०॥ भोजन तिम संतोष हो ॥ आस व समता पीवतां ॥ भ० ॥ करजो काया पोष हो ॥ गुण० ॥ अ० ॥ २ ॥ मायानिशादूरें कीजीयें ॥ भ० ॥ शुद्ध स्वभावें क्षीण हो ॥ तैलाभ्यंग तिम उदासीनता ॥ भ० ॥ श्रुत तंबोल प्रवीण हो ॥ गु० ॥ अ० ॥ ३ ॥ उचा महेल विवेकना ॥ भ०॥ वास करो तेह मांहे हो ॥ अग्यार बोल ते धारियें ॥ भ० ॥ रसपोपण छे जेह हो ॥ गु० ॥ अ० ॥ ४ ॥ अग्यार अंगरस सांभली ॥ भ० ॥ प्रतिमा वहो अ ग्यार हो ॥ कर्म कठिन दूरें करी ॥ भ० ॥ लहियें यु मुक्ति डुवार हो ॥ गु० ॥ अ० ॥ ५ ॥ एकाद शी तप कीजियें ॥ भ० ॥ एम एकादश वर्ष हो ॥ अग्यार अंग वाचक होवे ॥ भ० ॥ पामियें सुजस हर्ष हो ॥ गु० ॥ ६ ॥ इणविध भवियण आदरो ॥ भ०॥ जाणो एकादशी सार हो ॥ लब्धि कहे भवि सांभलो ॥भ०॥ होवे ज्युं भवनिस्तार हो ॥ गु० ॥७॥

॥ अथ द्वादशीनी सद्याय प्रारंभः ॥

॥ रहो रहो वालहा ॥ ए देशी ॥ द्वादशी कहे भविभावशुं, कीजें धर्मनी गोठ लाल रे ॥ विण दा में रस लीजीयें, जिम साकरनी भरी पोठ ॥ लाल रे ॥ १ ॥ भावें भवियण सांभलो ॥ ए आंकणी ॥ वा रसें बार उपांगना. निसुणो जे कह्या बोल लाल रे

॥ स्वाद ल्यो अमृत तेहना, टालीजमतानिटोल लाल रे ॥ ना० ॥ ३ ॥ बारे व्रत नवि उच्चरी, मेली यें सुकृत माल लाल रे ॥ कर्म मलीन दूरें करी, श्रावक कुल अजुवाल लाल रे ॥ ना० ॥ बारे नेदें तप जे अछे, आदरो छंडी क्रोध लाल रे ॥ बारे नावना नावियें ममता वारियें विरोध लाल रे ॥ ना० ॥४॥ कुरस वचन कहेतां थकां, दिवस तणुं तप जाय लाल रे ॥ अधिक खीजंतां मासनुं, तप तप्युं निष्फ ल थाय लाल रे ॥ ना० ॥ ५ शाप दियंतां वर्षनुं, तप जाये सुणो धीर लाल रे ॥ हणतां श्रमणपणुं हणे, एणी परें बोले वीर लाल रे ॥ ना० ॥ ६ ॥ श्रीजिनवरें हो वर्णवी, निरकुप्रतिमा बार लाल रे ॥ ते तुमें नवियण पडिवजी, पालीयें शुद्ध आचार लाल रे ॥ ना० ॥ ७ ॥ इणविध जे नर द्वादशी, आदरे शुन परिणाम लाल रे ॥ ते नर वंछित पाम शे, शाश्वतां सुख अनिराम लाल रे ॥ ना० ॥ ८ ॥ द्वादशी जेह आराधशे, धरशे जिनशुं राग लाल रे ॥ लब्धिविजय कहे ते नरा, पामशे नवनो त्याग लाल रे ॥ ना० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ त्रयोदशीनी सद्याय प्रारंनः ॥

॥ रंगरो रे रसीया रे फुला गुलावरो ॥ ए दे शी ॥ ते रस श्रोता आगले, नाखे मन आल्हाद हे ॥ श्रीजिनवाणी सांनाली, ते रस चाखो स्वाद

हे ॥ १ ॥ रसिया रे सूरिजन जावें हे सांजलो ॥ श्रीजिन बिंब जरावियें, कीजें जिन प्रासाद हे ॥ ज्ञानजक्ति सवि साचवो, ते रस चाखो स्वाद हे ॥ र० ॥ २ ॥ काठीया तेरे परहरी, कीजें नव पद याद हे ॥ समकित वास सदा लही, ते रस चाखो स्वाद हे ॥ र० ॥ ३ ॥ श्रीजिन अनुमति चालियें, तजीयें मिथ्यावाद हे ॥ अनुजवरुपी शेलडी, ते रस चाखो स्वाद हे ॥ र० ॥ ४ ॥ तेरमे गुणठाणे संचरी, शुक्लध्यान प्रसाद हे ॥ केवलकमला पामीने, ते रस चाखो स्वाद हे ॥ र० ॥ ५ ॥ ते रसना गुण जाणीनें, जे नर तजशे प्रमाद हे ॥ ते नरना गुण बोलशे, सुर नर अमृत वाद हे ॥ र० ॥ ६ ॥ शुजजावें सुकृतपणे, तेरशगुण आराधी हे ॥ लब्धि विजय कहे नेहशुं, लहियें सुख समाधि हे ॥ र० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्दशीनी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ प्यारी ते पीयुने विनवे हो राज ॥ ए देशी ॥ हवे चउदशतिथि इम वदे रे हां, एतो सांजलो चतुर सुजाण ॥ जवियां जावशुं ॥ श्रुत सिद्धांतना बोलजे रे हां, एतो ते करो वचन प्रमाण ॥ ज० ॥ १ ॥ वनना कुसुम तणी परें रे हां, एतो दोहिलो मनु अवतार ॥ ज० ॥ आर्यदेश पण दोहिलो रे हां, एतो दोहिलुं श्रावक कुल सार ॥ ज० ॥ २ ॥ श्रद्धा

ते पण दोहिलुं रे हां, एतो दोहिलो ज्ञानसंयोग ॥ ज० ॥ दोहिली जिननी सेवना रे हां, एतो दोहिलो मननो योग ॥ ज० ॥ ३ ॥ ए सविडुर्लन्न पामवां रे हां, जिम रयणतणे दृष्टांत ॥ ज० ॥ ते तुम पुण्यप्रन्नावथी रे हां, एतो पाम्यो मनुजव संत ॥ ज ॥ ४ ॥ पामी चउदश तप तणो रे हां, एतो खप करो मननें प्रमोद ॥ ज० ॥ चौद नियम संन्ना रजो रे हां, एतो संक्षेपजो तिम चौद ॥ ज० ॥५॥ चौद पूरवना जावथी रे हां, एतो चौदमे चढे गुण ठाण ॥ ज० ॥ अंतगम केवली होवे रे हां, एतो अक्षर पंच प्रमाण ॥ ज० ॥ ६ ॥ चौद जुवन ए लोकनां रे हां, एतो देखी जाणे जाव ॥ ज० ॥ चौद रज्ज्वात्मक नेदीने रे हां, एतो शिव सुख ते नित्य पाव ॥ज०॥७॥ चौद लाख मनु योनिना रे हां, ए तो बूटीयें दुःखथी जीव ॥ ज० ॥ इम जाणी चउदश आदरो रे हां, एतो दिल करि जाव अतीव ॥ज०॥ ॥ ८ ॥ चउदशना गुण सांजली रे हां, धरियें सुविहित बुध ॥ ज० ॥ लब्धिविजय रंगे करी रे हां, एतो लहिये ऋद्धि समृद्धि रे ॥ ज० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ पूर्णिमानी सज्झाय प्रारंजः ॥

॥ सुगुला संदेशो रे कहे माहरा पूज्यनें रे ॥ ए देशी ॥ पूनम कहे जव्य जीवनें रे, सांजलो सद्गुरु वाणी रे ॥ अथिर तन धन आउखुं रे, जलबुद

परें जाए रे ॥ नावें हे नवियण सांनलो ॥ ए आं
कणी ॥ १ ॥ असार संसारने पेखीनें रे, धर्मशुं ध
रो प्रतिबंध रे ॥ बांधव सयण ए जाणजो रे, स्वार्थ
नूत संबंध रे ॥ ना० ॥ २ ॥ सकल कुटुंबनें पोषवा
रे, जे नर करेय छे पाप रे ॥ तेह तणां रे फल दो
हिलां रे, सहेशे ते एकलो आप रे ॥ ना० ॥ ३ ॥
जिम मृग तृष्णानें कारणें रे, नमतो रणमां धाय रे
॥ नमे पठे ए जीवमो रें, नव नव डुःखीयो थायरे
॥ ना० ॥ ४ ॥ ए धन घरणी ए धामने रे, कांइ न
ले गयो साथ रे ॥ जिहां जइनें जीव उपनो रें, ति
हां सहि होये तेहनें हाथ रे ॥ ना० ॥ ५ ॥ इम
जाणीनें धर्म कीजीयेंरे, टाली ले विषय विकार रे
॥ दिन दिन दोलत अभिनवी रे, पामियें हर्ष अ
पार रे ना० ॥ ६ ॥ पूरण जीवितव्य पामीनें रे, आ
दरो पूरण धर्म रे ॥ पूरण शांत स्वनावथी रे, पूर
ण छेदो ए कर्म रे ॥ ना० ॥ ७ ॥ पूरण जन्म जरा
थकी रे, पूरण बूटीयें डुःख रे ॥ पूरण लीला पा
मीयें रे, पूरण सुरनर सुख रे ॥ ना० ॥ ८ ॥ पूरण
पन्नर सिद्धना रे जाणियें पूरण नेद रे ॥ पूरण पंद
र योगना रें. ते पण नावनिर्वेद रे ॥ ना० ॥ ए ॥
पंदर जातिना नांखियां रे, परमाधामी जोर रे ॥
॥ ते पण डुःखथकी बूटीयें रे, टाली ते कर्म अघो
र रे ॥ ना० ॥ १० ॥ पंदर कर्म नूमि उजली रे,

ठंको कषाय ते शोल रे ॥ नविषण दिन दिन पा मीयें रे, संपदा पुण्यरंग रोल रे ॥ जा० ॥ ११ ॥ जिम शशी शोलकली सही रे, नांखे जिनवर वाच रे॥ तिम ए धर्म कला सशी रे, पामीयें जगतमां साच रे ॥ जा० ॥ १२ ॥ पूरणमासी ए जाणीने रे, जे स सही करशे ए पुण्य रे ॥ विजयलब्धि ते पामशे रे, दिन दिन निज सुखतन्न रे ॥ जा० ॥ १३ ॥ आठम चउदश पूर्णिमा रे, अंग उपांगें अधिकार रे ॥ जिनवरें कहियो माहानिशीथमां रे, वीजप्रमु खनो विचार रे ॥ जा ॥ १४ ॥ ते सवि जाणो व्यव हारथी रे, धर्म उद्यम उपदेश रे ॥ निश्चयमार्गें अ प्रमादी जे होवे रे, ते पाले पंदर तिथि विशेष रे ॥ ॥ जा० ॥ १५ ॥ एम जाणीने नवि नावियें रे, द्रव्य ने नावथी धर्म रे ॥ सघली तिथि आराधतां रे, लब्धि कहे सदा सुख शर्म रे जा० ॥ १६ ॥

॥ अथ उपदेशी पद ॥

में हुं मुसाफर आया हो प्यारा, नही कोइ मे रा ॥ नही० ॥ जनम हुवा तव अपना कहावे, न हीं रेहेणेका डेरा हो प्यारा ॥ नही० ॥ १ ॥ सजन कुटुंब सवं अपना कहावे, ज्युं तीरथका मेला हो प्यारा ॥ २ ॥ धन कंचन कछु स्थिर नही रेहेणां, ज्युं बादलका घेरा हो प्यारा ॥नही०॥ ३ ॥ रुपचंद कहे प्रेमकी वातां, ज्युं धानीका फेरा हो प्यारा॥४

॥ अथ उपदेशी प्रजाती पद ॥

जाग जाग रयण गइ जोर जयो प्यारे ॥ पंचकुं प्रपंच कर, वश यारे ॥ जाग जाग रयण गइ जोर जयो प्यारे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ तृपनामे मीन मरे, जोगमें मतंगा ॥ श्रवणमें कुरंग मरे, नयनमें पतंगा ॥ जा० ॥ २ ॥ वासनामें भ्रमर मरे नासा रस लेतां ॥ एक एक इंडीसंग, मरे जीव केता ॥ जा० ॥ ३ ॥ पंचके पड्यो तुं फंद, कयुं कर वश आवे ॥ मार तुं मन इछा जूत, ज्युं निरंजन पावे ॥ जाग० ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रजाती रागमां पद ॥

में परदेशी दूरका, प्रजु दरसनकुं आया ॥ लाख चोराशी देश फिरया, तेरा दरिसन पाया ॥ मे० ॥ ॥ १ ॥ सूक्ष्म वादर निगोदमें, वनस्पति वसाया ॥ अप तेज वायुकायमें काल अनंत गमाया ॥ में० ॥ ॥ २ ॥ स्वर्ग नर्क तिर्यचमें, केता जन्म गमाया ॥ मनुष्य अनारजमें जम्या, तिहां नही दरिसन पाया ॥ में० ॥ ३ ॥ तेरो मेरो दरिसन अब जयो, पुरन पुन्य पसाया ॥ रुपचंद कहे जाग्य खुले, निरंजन गुण गाया ॥ मे० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ मनहित शिक्षानुं पद ॥

॥ राग कल्याण ॥ रे मन लोजी तेरो कोण पतियारो ॥ रे मन० ॥ आठ गांठको सांठो मीठो, गांठ गांठ रस न्यारो ॥ रे मन० ॥ १ ॥ ठिनमें उरे पल

कर्मे दूजो, घमी घमी दिलसें न्यारो ॥ रे मन० ॥ ॥ २ ॥ चचंल मन वरज्यो नही माने, प्रभुभवपार उतारो ॥ रे मन लोभी. ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्यपद ॥

॥ राग वेलावल ॥ रे मन कयुं जिन नाम विसा रयो ॥ कयुं० ॥ रे मन० ॥ विषय विकार महामद धारयो, जनम जुआ ज्युं हारयो ॥ रे मन० ॥ १ ॥ जीने तोकुं नरदेही दीनी, गर्भकी आंच उद्धारयो ॥ प्रभुजीकुं तें शठ मूरख, एक घमी न संजार्यो ॥ रे मन० ॥ २ ॥ नही कछु दान शियल तप पूजा, न ही जीन नाम उच्चार्यो ॥ जैन धर्म चिंतामणी सरी खो, काच जाणकर मार्यो ॥ रे मन० ॥ ३ ॥ कर ले सुकृत दया उरूरले, जो जव चाहत सुधार्यो ॥ हर खचंद वर्धमान जीनेसर अवसर मांहेन संजार्यो ॥ रे मन० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राघ जंगलो काफी ॥ जगमें नही तेरा कोइ, नर देखहु निहचें जोइ ॥ जग० ॥ ए आंकणी ॥ सुत मात तात अरु नारी, सहु स्वारथके हीतकारी विन स्वारथ शत्रु सोइ ॥ जग० ॥ १ ॥ तुं फीरत महा मदमाता, विषयन संग मूरख राता ॥ निज संगकी सुध बुद्ध खोइ ॥ जग० ॥ २ ॥ घट ज्ञानक ला नवि जाकुं, पर निज मानत सून ताकुं ॥ आख

र पछतावा होइ ॥ जग० ॥ ३ ॥ नवि अनुपम नर भव हारो, निज शुद्ध स्वरुप निहारो ॥ अंतर मम ता मल धोइ ॥ जग० ॥ ४ ॥ प्रभु चिदानंदकी वा णी, धार तुं निश्चे जग प्राणी ॥ जिम सफल होत भव दोइ ॥ जग० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ जूठी जूठी जगतकी माया, जिन जाणी भेद तिन पाया ॥ जू० ॥ ए आंकणी ॥ तन धन जोवन सुख जेता, सऊ जाणहुं अस्थिर सुख तेता ॥ नर जिम वादलकी छाया ॥ जूठी ॥ १ ॥ जिम अनित्य भाव चित्त आया ॥ लख गलित वृषभकी काया ॥ बूझे कर कंमुराया ॥ जूठी ॥ २ ॥ इम चिदानंद न मनमांही, कछु करीए ममता नाहीं ॥ सदगुरुए भेद लखाया ॥ जूठी ॥ ३ ॥

॥ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग प्रभाती ॥ मान कहा अब मेरा मधुकर ॥ मान० ॥ ए आंकणी ॥ नाभिनंदके चरण सरोज में, कीजे अचल वसेरा रे ॥ परिमल तास लहत मन सेहेजे, त्रिविध पाप उतेरा रे ॥ मान० ॥ १ ॥ उदित निरंतर ज्ञान भान जिहां, तिहां न मिथ्यात अंधेरा रे ॥ संपुट होत नही ताते कहा, सांज क हा सवेरा रे ॥ मान० ॥ २ ॥ नहितर पछतावोगे

आखर वीतगया यो वेरा रे॥ चिदानंद प्रभु पदपंकज सेवत, बहुरि न होय भव फेरारे ॥ मान० ॥३॥

॥ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग धनाश्री ॥ भूल्यो भमत कहा वे अजान ॥ भूल्यो० ॥ ए आंकणी ॥ आल पंपाल सकल तज मूरख, कर अनुभव रस पान ॥ क० १॥ आप कृतांत गहेगो इक दिन, हरि मृग जेम अचान ॥ होयगो तन धनथी तुं न्यारो, जेम पाको तरु पान ॥ कल्यो० ॥ २ ॥ मात तात तरुणी सुत सेंती, गरज न सरत निदान ॥ चिदानंद ए वचन हमारो, धर राखो प्यारे कान ॥ कल्यो ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग भैरव ॥ जागरे बटाउ अब, भइ भोर वेरा ॥ जाग० ए आंकणी ॥ भया रविका प्रकाश, कुमुदहु थये विकास ॥ गया नाश प्यारे मिथ्या, रेनका अंधेरा ॥ जा० ॥ १ ॥ सूता केम आवे घाट, चालवी जरुर वाट ॥ कोइ नांहि मित्त परदेशमें ज्युं तेरा ॥ जा० ॥ २ ॥ अवसर वीत जाय, पिछे पिछतावो थाय ॥ चिदानंद निहचें, ए मान कहा मेरा ॥ जागरे बटाउ अब भइ भोर वेरा ॥३॥ इति

॥ अथ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग आशावरी ॥ उं घट विणसत वार न लागे ॥ उंघट ॥ ए आंकणी ॥ याके संग कहा अ

व मूरख, छिन छिन अधिको पागे ॥ ओ० ॥ १ ॥ काया गरा काचकी शीशी, लागत ठणका जागे ॥ उं घट० ॥ २ ॥ आवि व्याधि व्यथा दुःख इण च व, नरकादिक फुनि आगे ॥ रूगडु न चलत संग विण पोष्या, मारगहुमें त्यागे ॥ उं० ॥ ३ ॥ मदछक छाक गहेल तज वीरला, गुरु किरपा कोउ जागे ॥ तनधन नेह निवारी चिदानंद, चलीये ताके सागे ॥ उं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्यपदेशी पद ॥

॥ राग विजास ॥ जूठी जग माया नर केरी काया, जिम वादरकी छाया माइरी ॥ ए आंकणी ॥ ज्ञानंजन कर खोल नयण मम, सदगुरु इणे विग प्रगट लखाइरी ॥ जूठी० ॥ मूल विगत विषवेल प्रगटीइक, पत्र रहित त्रिभुवनमें छाइरी ॥ तास पत्र चुण खात मिरगवा, मुखवीन अचरिज देख हुंआइरी ॥ जूठी० ॥ २ ॥ पुरुष एक नारी निपजाइ, तेतो नपुंसक घरमें समाइरी ॥ पुत्र जुगल जायेति एवालाते जगमां हे अधिक दुःख दाइरी ॥ जूठी० ॥ ३ ॥ कारण विन कारजकी सिद्धि, केम चइ मुख कही नवि जाइरी ॥ चिदानंद एम अकल कलाकी, गति मति कोइ विरले जन पाइरी ॥ जठी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ ज्ञानोपदेशी पद ॥

॥ राग सारंग ॥ मेरे घट ग्यात चानु चयो

चोर ॥ मेरे० ॥ चेतन चकवा चेतन चकवी, जागो विहरको सोर ॥ मेरे० ॥ १ ॥ फैली चिंहु दीश चतुरा जाव सचि, मिट्यो जरम तम जोर ॥ आपकी चोरी आपही जानत, औरे कहत न चोर ॥ मेरे० ॥ २ ॥ अमल कमल विकस जये जूतल, मंद विपय शशी कोर ॥ आनंद घन एक वल्लज लागत, और न लाख किरोर ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ इति पद ॥

॥ अथ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग कल्याण ॥ या पुद्गलका क्या विसवासा, हे सुपनेका वासारे ॥ या० ॥ ए आंकणी ॥ चमतकार विजुली दे जैसा, पाणी बीच पतासा ॥ या देहीका गर्व न करना, जंगल होयगा वासा ॥ या० ॥ १ ॥ जूठे तन धन जूठे जोंवन, जूठे हे घरवासा ॥ आनंद घन कहे सवही जूठे, साचा शिवपुर वासा ॥ या० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ इति पंचम परिछेद समाप्त ॥

॥ शष्टमपरिछेद प्रारंभः ॥

॥ अथ श्रीगौतमाष्टक छंद ॥

॥ वीर जिणेसर केरो, शिष्य, गौतम नाम जपो निशदीश ॥ जो कीजें गौतमनुं ध्यान, तोघर विल से नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामें गिरि वर चडे मनोवांछित हेला संपजे ॥ गौतम नामें नावे रोग, गौतम नामें सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरूआ वंकडा, तस नामें नावे ढुकडा ॥ भूत प्रेत नविमंडे प्राण, ते गौतमनां करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामें निर्मल काय, गौतम नामें वाधे आय ॥ गौतम जि नशासन शणगार, गौतम नामें जय जयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहा घृत गोल, मनोवांछित कापड तंबोल ॥ घरसुघरिणी निर्मल चित, गौतम नामें पुत्र विनित ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल नाण, गौत म नाम जपो जग जाण ॥ महोटां मंदिर मेरुसमान, गौतम नामें सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोडानी जोड, वारू पहोंचे वांछित कोड ॥ मही यल माने महोटा राय, जो तुठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातक टले, उत्तम नरनी संगत मले ॥ गौतम नामें निर्मल ज्ञान, गौतम नामें वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवतं अवधारो सहु, गुरु गौतमना

गुण ठे वहु ॥ कहे लावण्यसमय कर जोम, गौत तूठे संपत्ति कोम ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री तिजयपहुत्त प्रारंभ ॥

॥ तिजयपहुत्त पयासय, अठ महापाडिहेरजुत्ता णं ॥ समयक्खित्त ठिआणं, सरेमि चक्कं जिणंदाणं ॥ १ ॥ पणवीसाय असीआ, पन्नरस पन्नास जिण वर समूहो ॥ नासेउ सयल डुरिअं, नविआणं नत्ति जुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणया लाविय, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा ॥ गहनूअ रक्क साइणि, घोरु वसग्गं पणासंतु ॥ ३ ॥ सित्तिरि पणतीसाविय, सठी पंचेव जिणगणो एसो ॥ वाहि जल जलण हरि करि, चोरारि महानयं हरउ ॥ ४ ॥ पणपन्नाय दसेव य, पन्नठी तहय चेव चालीसा ॥ रक्कंतु मे सरीरं· देवासुर पणमिआ सिआ ॥ ५ ॥ उ हरहुं हः सरसुंसः, हरहुंहः तहचेव सरसुंसः ॥ आलिहिय नाम गप्नं, चक्कं किर सवउनद्दं ॥ ६ ॥ उ रोहिणी पन्नत्ती, वज्जसिंखला तहय वज्जअंकुसिआ ॥ चक्के सरि नरदत्ता कालि महाकालि तह गोरी ॥ ७ ॥ गंधारी महाजाला, माणवि वइरुट्ट तहय अठुत्ता ॥ माणसि महमाणसिआ, वियादेवीउ रक्कंतु ॥ ८ ॥ पंचदस कम्म नूमिसु, उप्पन्नं सत्तरिं जिणाणसयं ॥ विविह रयणाइवन्नो, वसोहिअं हरउ डुरिआइं ॥ ए ॥ चउतीस अइसय जुआ, अठ महापाडि

हेर कयसोहा ॥ तिन्नयरा-गयमोहा, ऊाएअवा पय सेणं ॥ १० ॥ ॐ वरकणय संख विद्रुम, मरगय घण सन्निहं विगयमोहं ॥ सत्तरिसय जिणाणं, सवामर पूइअं वंदे ॥ स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ नवणवइ वाण वंतर, जोइसवासी विमाणवासी अ ॥ ॥ जे केवि डुघ देवा, ते सवे उवसमंतु मम ॥ स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेणं, फलए लिहिऊण खालिअं पीअं ॥ एगंतराइ गहनूअ, साइणि मुग्गं पणासेइ ॥ १३ ॥ इअ सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं, डुवारि पमिलि हिअं ॥ डुरिआरि विजयवंतं, निप्नंतं निच्चमच्चेह ॥ ॥ १४ ॥ इति ॥ ए१ ॥

॥ अथ श्री नमिऊणनामक स्मरणं लिख्यते ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूमामणि किरण रंजिअं मणिणो ॥ चलणजुअलं महानय, पणासणं संथवं वुहं ॥ १ ॥ सडिय कर चरण नह मुह, निबु ड नासा विवन्न लायन्ना ॥ कुघ महा रोगानल, फुलिंग निदड्ढ सवंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा राहण, सलिलंजलि सेय वुड्ढिय छाया (उन्नहा) वण दव दड्ढा गिरिपा, यव व पत्ता पुणो लहीं ॥ ३ ॥ डुवाय खुप्निय जलनिहि, उप्नरू कल्लोल नीसणारावे ॥ संनं त नय विसंतुल, निद्यामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अवि दलिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ॥ पासजिण चलण जुअलं, निच्चंचिअ जेन मंति

नरा ॥ ५ ॥ खर पवणुद्धुअ वणदव, जालावलि मिलिय सयल डुम गहणे ॥ डझंत मुद्ध मय वहु, भीसणरव भीसणंमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं, निव्वाविअ सयल तिहु अणाभोअं ॥ जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत भोग भीसण, फुरिआरुण नयण तरल जी हालं ॥ उग्गभुअंगं नवजलय सत्थहं भीसणायारं ॥८॥ मन्नंति कीड सरिसं दूर परिच्छुढ विसम विसवेगा ॥ तुह नामक्खर फुडसि, द्धमंत गुरुवा नरा लोए ॥ ए ॥ अडवीसु भिल्ल तक्कर, पुलिंद सद्दुल सद्दभी मासु ॥ भयविहुर वुन्नकायर, उल्लुरिअ पहिअ सत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविहवसारा, तुह नाह पणाम मत्त वावोरा ॥ ववगय विग्घासिग्घं, पत्ता हिय इच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलि आनलनयणं, दूरवियारियमु हं महाकायं ॥ नह कुलिसघायविअलिअ, गइंद कुंभत्थलाभोअं ॥ १२ ॥ पणय ससंभम पत्थिव, नह मणिमाणिक्क पडिअ पडिमस्स ॥ तुह वयणपहरण धरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवल दंतमुसलं, दीहकरुल्लाल वुड्ढि उच्छाहं ॥ महुपिंग नयणजुअलं, ससलिल नवजलहरारावं ॥ १४ ॥ भीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गणंति ॥ जे तुह्म चलण जुअलं, मुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥

समरम्मि तिरक खग्गा, न्निग्घाय पविद्ध उद्धूय कवं धे ॥ कुंतविणिन्निन्न करि कलह, मुक्कसिक्कार पउरं मि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धर रिउ, नरिंद निवहा नडा जसं धवलं ॥ पावंति पाव पसमिण, पासजि ण तुह प्पन्नावेण ॥१७॥ रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गय रण नयाइं ॥ पासजिण नाम संकी, त्तणेण पसमंति सवाइं ॥ १ए ॥ एवं महा नयहरं, पासजिणिंदस्स संथवमुआरं ॥ नविय जणा णंदयरं, कल्लाण परंपर निहाणं ॥ १ए ॥ राय नय जरकरस्कस, कुसुमिण डुस्सउण रिस्कपीमासु ॥ संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणंकइणो य माणतुंग स्स ॥ पासो पावं पसमेउ,सयल जुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥ उवसग्गंते कमठा,सुरम्मि झाणाउ जोन सं चलिउ ॥ सुरनर किन्नर जुवईहिं, संथुउ जयउ पा सजिणो ॥२२॥ एअस्स मप्पयारे, अठारस अरकेरहिं जो मंतो ॥ जो जाणइ सो झायइ, परम पयहं फुडं पासं ॥२३॥ पासह समरण जो कुणइ, संतुठे हियएण ॥ अठुत्तर सय वाहि नय, नासइ तस्स दूरेण॥२४॥

॥ अथ श्री नक्तामर स्मरणं प्रारंनः ॥

॥ नक्तामर प्रणत मौलिमणि प्रजाणां, मुद्योतकं दलित पापत मोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिन पादयुगं युगादा, वालंबनं नवजले पततां जनानाम्

॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ् मयतत्त्वबोधा, दुद्भूतबुद्धि पटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्जग त्रितय चित्त हरैरुदारैः स्तोष्येकिलाहमपि तं प्रथमं जिनेंद्रम् ॥२॥ बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित पादपीठ, स्तोतुं समुद्यतम तिर्विगतत्रपोऽहं ॥ बालं विहाय जलसंस्थितमिंदु बिंब, मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुं ॥ ३ ॥ वक्तं गुणान् गुणसमुद्र शशांककांतान्, कस्ते क्षमः सुरगुरु प्रतिमोपि बुद्ध्या ॥ कल्पांत कालपवनोद्धत नक्रचक्रं, कोवा तरीतुमल मंबुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥ सो ऽ हं तथापि तव भक्ति वशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगत शक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्म वीर्यमविचार्य मृगोमृगेंद्रं, नाभ्येति किंनिजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरु ते बलान्मां ॥ यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारु च्यूतकलिकानिकरै कहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भवसंततिसन्निबद्धं, पापं क्षणात्क्षय मुपैतिशरीर भाजाम् ॥ आक्रांत लोकमलिनी लमशेषमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वर मंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद, मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ॥ चेतो हरिष्यतिसतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफल द्युतिमुपैति ननूदबिंदुः ॥ ८ ॥ आस्तां तव स्तवन मस्तसमस्त दोषं, त्वत्संकथापि जगतां दुरितानिहंति ॥ दूरे सह

स्वकिरणः कुरुते प्रजैव, पद्मा करेषु जलजानि विका शजांजि ॥ ए ॥ नात्यद्भुतं जुवन जूपणजूतनाथ, जूतै र्गुणैर्जुविजवंतमजिष्टुवंतः ॥ तुल्या जवंति जवतो ननु तेन किंवा, जूत्याश्रितं यइह नात्मसमं करोति ॥१० ॥ दृष्ट्वा जवंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तो पमुपया तिजनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकर द्युतिडुग्धसिंधोः, क्षारं जलं जलनिधेर शितुं कइच्छेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतराग रुचिजिः परमणुजिस्त्वं, निर्मा पितस्त्रिजुवनै कललामजूत ॥ तावंतएव खलु तेप्य णवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क्व ते सुरनरोरग नेत्रहारि, निः शेषनिर्जित जगत्रित योपमानम् ॥ विंबं कलंकमलिनं क्व निशा करस्य, यद्वासरे जवति पांडुप लाशकल्पम् ॥ १३ ॥ संपूर्ण मंरूल शशांक कलाकलाप, शुभ्रागुणा स्त्रिजु वनं तव लंघयंति ॥ ये संश्रितास्त्रि जगदीश्वर ना थमेकं, कस्तान्निवारयति संचरतोय थेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशागनाजि, र्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कल्पांत कालमरुता चलि ताचलेन, किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः कृत्स्नं जगत्र यमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्योनजातु मरुता चलता चलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिडुपयासि नराहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि

सहसा युगपज्जगंति ॥ नांनोधरोदरनिरुद्धमहाप्रना वः, सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहम हांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते नव मुखाब्जमनल्पकांति, विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥ किंशर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेंदुदलिते पुतमस्सु नाथ ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलनारनम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विनाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥ तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्वं, नैवं तु काचशकले किरणाकुलेपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरा दयएव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन नवता नुवि येन नान्यः, कश्चिन्म नोहरति नाथ नवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता॥सर्वा दिशो दधति नानिसह स्त्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशु जालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांस, मादित्य वर्णममलं तमसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलन्य जयंति मृत्युं नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनिंद्र पंथाः ॥२३॥ त्वामव्ययं विनुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंत मनंग केतुम् ॥ योगीश्वरं विदित योगमने कमेकं, ज्ञानस्वरूप ममलं प्रवदंति संतः ॥ २४ ॥ बुद्ध स्त्व

मेव विबुधार्चित बुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोसि भुवन त्रयशंकरत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्ग विधेर्विधा नात्, व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्त मो ऽसि ॥२५॥ तुभ्यं नम स्त्रिभुवनार्त्ति हराय नाथ, तुभ्यं नमः क्षितितलामल भूषणाय ॥ तुभ्यंनम स्त्रिजगतः परमे श्वराय, तुभ्यं नमोजिन भवो दधिशोषणाय॥ २६ ॥ कोविस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्वंसं श्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥ दोषैरुपात्त विविधा श्रय जातगर्वैः स्वप्नांःतरेपि न कदाचिद पीक्षितोसि ॥ २७ ॥ उच्चै रशोकतरु संश्रित मुन्मयूख, माभाति रूप ममलं भवतोनितांतम् ॥ स्पष्टोल्लसत्किरण मस्ततमो वितानं, विंबं रवेरिव पयोधर पार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥ सिंहासने मणिमयूख शिखाविचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥ विंबं वियद्विल सदंशुलतावि तानं, तुंगोदयाद्रि शिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदात चलचामर चारुशोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छशांकशुचिनिर्झरवारिधार, मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिवशातकौंभम् ॥ ३० ॥ छत्रत्रयं तव विभाति शशांककांत, मुच्चैःस्थितं स्थगितभानु करःप्रतापम्॥ मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं,प्रख्या पय त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेमनव पंकजपुंजकांति, पर्युल्लसन्नखमयुखशिखाभिरामौ ॥ पादौपदानि तव यत्र जिनेंद्र धत्तः, पद्मानि तत्र

विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभू तिरभूज्जिनेंद्र, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक्प्रभा दिनकृतः प्रहतांधकारा, तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोपि ॥३३॥ श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलकमूल, मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐरावताभमिभमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रिता नाम् ॥ ३४ ॥ भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वलशोणिताक्त, मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकाल पवनोद्धतवह्निकल्पं, दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम् विश्वंजिघत्सुमिव संमुखमापतंतं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतंतम् ॥ आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरंगगजगर्जित भीमनाद, माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनां ॥ उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्रभिन्नगजशोणित वारिवाह, वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ॥ युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो लभंते ॥ ३९ ॥ अंभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र, पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवाग्नौ ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा स्त्रासं विहाय

नवतःस्मरणाद्व्रजंति ॥ ४० ॥ उद्भूतभीषणजलो दरभारभुग्नाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः॥ त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवंति मकर ध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टि तांगा, गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः ॥ त्वन्नाम मंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः, सद्यः स्वयंविगतबंधभ या भवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि, संग्रामवारिधिमहोदरबंधनोत्थम् ॥ तस्याशु नाशमुप याति भयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमान धीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्रगुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पां ॥ धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति ल क्ष्मीः ॥ ४४ ॥ इति श्री भक्तामरस्तोत्रं संपूर्णं ॥

॥ अथ श्रीकल्याणमंदिरस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

॥ वसंततिलकावृत्तम् ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रदम निंदितमंघ्रिपद्मम् ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु, पो ता यमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥१॥ यस्य स्वयं सुर गुरुर्गरिमांबुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधा तुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो, स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ सामान्य तोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप, मस्मादृशाः कथमधीश भवंत्यधीशाः ॥ धृष्टोपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिव

धो, रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥ मोह क्षयादनुजवन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ॥ कल्पांतवांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मा, न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अभ्युद्य तोस्मि तव नाथ जडाशयोऽपि, कर्तुं स्तवं लसदसं ख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वित त्य, विस्तीर्णतांकथयति स्वधियांबुराशेः ॥५॥ ये योगि नामपि न यांति गुणास्तवेश, वक्तं कथं जवति तेषु ममावकाशः ॥ जाता तदेव मसमीक्षित कारितेयं, ज ल्पंति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आ स्तामचिंत्यमहिमाजिनसंस्तवस्ते, नामापि पातिज वतो जवतो जगंति ॥ तीव्रातपोपहत पांथजनान्नि दाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्त्तिनि त्वयि विजो शिथिलीजवंति, जंतोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबंधाः ॥ सद्यो जुजंगम मया इव मध्यजाग, मच्यागते वनशिखंडिनि चंदनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यंत एव मनुजाः सहसा जिनेंद्र, रौद्रैरुपद्रव शतै स्त्वयि वीक्षितेऽपि ॥ गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपलाय मानैः ॥ ए ॥ त्वं तारको जिन कथं जविनां त एव, त्वामुद्वहंति हृदयेन यडुत्तरंतः ॥ यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेपनु न, मंतर्गतस्य मरुतः स किलानुजावः ॥ १० ॥ य स्मिन्हर प्रभृतयोऽपि हतप्रजावाः, सोऽपि त्वयार

तिपतिः क्षपितः क्षणेन ॥ विध्यापिता हुत जुजः पयसाथ येन, पीतं न किं तदपि डुर्द्धरवाडवेन ॥ ११ ॥ स्वामिन्न नल्पगरिमाण मपि प्रपन्ना, स्त्वां जंतवः कथमहो हृदये दधानाः ॥ जन्मोदधिं लघु तरंत्यति लाघवेन, चिंत्यो न हंत महतां यदि वा प्रजावः ॥१२॥ क्रोधस्त्वया यदि विजो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्ता स्तदा बत कथं किल कर्मचौराः॥ प्लोषत्यमुत्र यदिवा शिशिरापि लोके, नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप, मन्वेषयंति हृदयांबुज कोशदेशे ॥ पूतस्य निर्मल रुचेर्यदि वा किमन्य, दक्षस्य संजवि प दं ननु कर्णिकायः ॥ १४ ॥ ध्याना ज्जिनेश जवतो जविनः क्षणेन, देहं विहाय परमात्मदशां व्रजंति ॥ तीव्रानला डुपल जावमपास्य लोके, चामीकरत्वम चिरादिव धातुजेदाः ॥ १५ ॥ अंतः सदैव जिनयस्य विजाव्यसेत्वं, जव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनोहि, यद्विग्रहं प्रशमयंति महानुजावाः ॥१६॥ आत्मा मनीषिजिरयं त्वदजे दबुद्ध्या, ध्यातो जिनेंद्र! जवतीह जवत्प्रजावः॥ पानीयमप्य मृतमित्यनु चिंत्यमानं,किंनाम नो विषवि कारमपाकरोति ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोपि, नुनं विजो हरिहरा दिधियाप्रपन्नाः ॥ किं काचकामलिजि रीश सितोऽपि शंखो, नो गृह्यते विवि

धवर्णविपर्य येण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमयें सविधानु
जावा, दास्तां जनो जवति ते तरुरप्यशोकः ॥ अ
न्युद्गते दिनपतौ स मही‌रुहोपि, किंवा विबोधमु
पयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥ चित्रं विजो कथमवा
ङ्मुखवृंतमेव, विष्वक् पतत्यविरला सुर पुष्पवृष्टिः ॥
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश गछंति नूनम
धएव हि वंधनानि ॥२०॥ स्थाने गजीर हृदयोदधि
संजवायाः, पीयूषतां तवगिरः समुदीरयंति ॥ पीत्वा
यतः परम संमदसंग जाजो, जव्या व्रजंति तरसाप्य
जरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन् सुदूर मवनम्यसमुत्प
तंतो, मन्ये वदंति शुचयः सुरचामरौघाः ॥ येऽस्मै
नतिं विदधते मुनिपुंगवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः
खलु शुद्धजावाः ॥ २२ ॥ श्यामं गजीरगिरमुज्वलहे
मरत्न, सिंहासनस्थमिह जव्य शिखंडिन स्त्वाम् ॥
आलोकयंतिरजसेन नदंत मुच्चै, श्चामी कराद्रि
शिरसीव नवांबुवाहम् ॥ २३ ॥ उद्गछता तव
शितिद्युति मंमलेन, लुप्त छदछवि रशोक तरुर्बजूव ॥
सान्निध्य तोऽपि यदिवातववीतराग, नीरागतां व्र
जतिको न सचेत नोपि ॥ २४ ॥ जोजोः प्रमाद म
वधूय जजध्वमेन, मागत्य निर्वृतिपुरिं प्रतिसार्थवा
हम् ॥ एतन्निवेदयति देवजगत्रयाय, मन्ये नदन्नजि
नजः सुरडुंडुजिस्ते ॥२५॥ उद्द्योतितेषुजवता जुवने
षु नाथ, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ॥ मुक्ताक

लाप कलितोल्लसितातपत्र, व्याजात्रिधा धृततनुर्ध्रुव मभ्युपेतः ॥२६॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिंडितेन, कांतिप्रताप यशसामिव संचयेन ॥ माणिक्यहेमरजत प्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण जगवन्नभितोविभासि ॥ ॥ २७ ॥ दिव्यस्रजोजिन नमत्त्रिदशाधिपाना, मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबंधान् ॥ पादौ श्रयंति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमंतएव ॥ २८ ॥ त्वं नाथ जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोपि, यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव, चित्रं विभो यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ २९ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं, किंवाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥३०॥ प्राग्भारसंभृत नभांसि रजांसि शेषादुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ॥ छायापितैस्तव न नाथ हताहताशो, ग्रस्तस्त्वमी भिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ॥ ३१ ॥ यदगर्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीमं, भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसल घोरधारम् ॥ दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे, तेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृता कृतिमर्त्यमुंड, प्रालंबभृद् भयदवक्त्र विनिर्यदग्निः ॥ प्रेतव्रजः प्रतिभवंतमपीरितोयः, सोऽस्याऽभवत्प्रतिभवंभव दुःखहेतुः ॥३३॥ धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसंध्य, माराधयंति

विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥ नक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मल देहदेशाः, पादद्वयं तव विनो नुवि जन्मनाजः ॥ ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारनववारिनिधौ मुनीश, मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु तव गोत्र पवित्रमंत्रे, किंवा विपद्विपधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥ जन्मांतरेऽपि तव पादयुगं न देव, मन्ये मया महित मीहित दानदक्षम् ॥ तेनेह जन्मनि मुनीश पराजवा नां, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नुनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विनोसकृदपि प्रविलो कितोऽसि ॥ मर्माविधो विधुरयंति हि मामनर्थाः,प्रोद्य त्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नुनं न चेतसि मयाविधृ तोऽसिनक्त्या ॥ जातोऽस्मि तेन जनबांधव फुःख पात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति न नावशून्याः ॥३८॥ त्वं नाथ फुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारुण्य पुण्यव सते वशिनां वरेण्य, ॥ नक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय, फुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्य, मासाद्य सादितरि पुप्रथितावदातम् ॥ त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानवं ध्यो, वध्योऽस्मिचेद्नुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥ देवेंद्रवंद्य विदिताखिलवस्तुसार, संसारतारक विनो नुवनाधिनाथ ॥ त्रायस्व देव करुणाह्रद मां पुनीहि, सीदंतमद्य नयदव्यसनांबुराशेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति

नाथ नवदंघ्रिसरोरुहाणां, नक्तेः फलं किमपि संतति संचितायाः ॥ तन्मेत्वदेकशरणस्य शरण्य नूयाः, स्वामीत्वमेव नुवनेऽत्र नवांतरेऽपि ॥ ४२ ॥ इछं समाहितधियो विधिवज्जिनेंद्र, सांद्रोल्लसत्पुलककंचुकितांग नागाः ॥ त्वद्विंवनिर्मलमुखांबुजवद्धलक्ष्या, ये संस्तवं तवविनो रचयंति नव्याः ॥ ४३ ॥आर्या॥ जननयनकुमुदचंद्र,प्रनास्वराःस्वर्गसंपदो नुक्त्वा ॥ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥ युग्मम् ॥ ४४ ॥ इति श्रीकल्याणमंदिरंसंपूर्णं ॥

॥ अथ वृद्ध गोतम स्वामीनो रासलि० ॥ वीर जिणेसर चरण कमल,कमला कय वासो ॥ पणमवि पनणी सुसामिसाल, गोयम गुरुरासो ॥ मण तण वयणे एकांत करवि, निसुणउ नो नविया ॥ जिम निवसै तुम देह गेह, गुण गण गह गहियां ॥ १ ॥ जंबूद्विव सिर नरह खित्त, खोणी तल मंरुण ॥ मगह देश सेणिय नरेस, रिउ दल वल खंरुण ॥ धण वर गुवर गांम नाम, जिहां गुणगण सज्जा ॥ विप्प वसै वसुनूइ तत्थ, तसु पुहवीनज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरी इंद नुय,नूवलय पसिद्धो ॥ चउदह विज्जा विविह रूव, नारी रस लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार, गुण गणह मनोहर ॥ सात हाथ सुप्रमाण देह, रूवहिं रंना वर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जिण विपंकज जल पाम्रिय, तेजेंहिं तारा,

चंद सूर, आकास नमाकिय ॥ रूवहिमयण अनं ग करवि मेल्ह्यो निरधाकिय धीरमें मेरु गंजीर सिंधु, चंगम चयचाडिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास, जिण जंपे किंचिय ॥ एकाकी किल जीत इब, गुण मेल्या संचिअ अहवा निश्चें पुब जम्म, जिणवर इणअंचिय ॥ रंजा पउमा गौरी गंगा, रति हा विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नहिं बुद्ध नहिं गुरु कवि न कोइ, जसु आगल रहिउं ॥ पंचसया गुणपात्र ठात्र, हींडे पर वरिउं ॥ करे निरंतर यज्ञकर्म, मिथ्यामति मोहिय ॥ इंण ठल होशे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु, ठंद ॥ जंबूदीवह जंबूदीवह, जरह वासंमि, खो णीतलमंरुणो, मगधदेस सेणिय नरे सर ॥ धण वर गुब्बर गाम तिहां, विप्प वसे वसुजूइ सुंदर, तसु पुहवी जज्जा सयल, गुणगणरुव निहाण ॥ ताणपुतवीद्या निलउं, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ जाषा ॥ चरम जिणेसर केवल नाणी, चउ विहसंघपइठाजाणी ॥ पावापुर सामी संपत्तो, चउ विह देव निकायें जुत्तो ॥८॥ देवें समवसरण तिहां कीजें, जिणे दीठें मिथ्यामति खीजे ॥ त्रिजुवन गुरु सिंहासण वइठा, ततखिण मोह दिगतें पइठा ॥ ॥ ए ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिनचोरा ॥ देवडुंडुजि आकाशें वाजी, धर्म

नरेसर आविउं गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि विरचे तिहां देवा, चोशठ इंद्र जसु मागे सेवा ॥ चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूपेंहिं जिणवर जग सहु मोहे ॥११॥ उवसम रसजर जरी वरसंता, जोजन वाणी वखाण करंता ॥ जाणवि वद्धमाण जिण पाया, सुर नर किन्नर आवे राया ॥ १२ ॥ कंतिसमूहें जलजल कंता, गयण विमाणें रणरणकंता ॥ पेखवि इंद्रजूइ मन चिंते, सुर आवे अह्म जगन होवंते ॥ १३ ॥ तीर तरंमक जिम ते वहता, समव सरण पुहता गहगहता ॥ तो अजिमानें गोयम जंपे,इणि अवसरें कोपें तणु कंपे ॥ १४॥ मूढा लोक अजाणिउं बोले, सुर जाणंता इम कांइ मोले ॥ मूं आगल कोइ जाण जणीजें, मेरु अवर किम उपमा दीजें ॥ १५ ॥ वस्तु छंद ॥ वीरजिणवर वीरजिणवर नाण, संपन्न पावा पुरि सुर महिय पत्तनाह संसार तारण ॥ तिहिं देवेहिं निम्मविय समवसरण बहु सुरककारण ॥ ॥ जिणवर जग उज्जोय करे, तेजें करि दिनकार ॥ सिंहासण सामिय ठविउं, हुउं सुजयजयकार ॥ १६ ॥ जाषा ॥ तो चढिउं घणमाण गजें, इंदजूइ जूय देव तो ॥ हुंकारो करी संचरिउं, कवण सुजिणवर देव तो ॥ जोजन जूमि समोसरण, पेखवी प्रथमारंज तो ॥ दह दिसि देखे विबुधवधू, आवंती सुररंज तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंमधजा, कोसीसे नव

घाट तो ॥ वैरविवर्जित जंतुगण, प्रातीहारज आठ तो ॥ सुर नर किन्नरअसुरवर, इंद्र इंद्राणी राय तो ॥ चित्ते चमक्किय चिंतवे ए, सेवंता प्रज्ञुपाय तो ॥ १७ ॥ सहस किरणस्वामी वीर जिण, पेखवी रूप विसाल तो ॥ एह असंभव संभव ए, साचो ए इंद्र जाल तो ॥ तो बोलावे त्रिजग गुरु, इंद्रजूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संशय सामि सवे, फेडे वेदपएण तो ॥ १९ ॥ मान मेल्हि मद ठेलि करे, जगतें नामें सीस तो ॥ पंचसयाशुं व्रत लियो ए, गोयस पहिलो सीस तो ॥ बंधव संजम सुणवि करे,अगनिजूइ आवे इ तो ॥ नाम लेइआनापकरे, ते पण प्रतिबोधेइ तो ॥ २० ॥ इणे अनुक्रमें गणहररयण, थाप्या वीर इग्यार तो ॥ तो उपदेशें जुवन गुरु, संजमशुं व्रत बार तो ॥बिहु उपवासें पारणु ए, आपणपें विहरंत तो ॥ गोयम सजम जग सयल, जयजयकार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तुछंद ॥ इंदजूइ इंदजूइ चढिय बहु मान ॥ हुंकारो करि संचरिउ, समवसरण पुहुतो, तुरंततो ॥ इह संसय सामि सवे चरमनाह फेडे फुरंतो ॥ बोधबीज सद्याय मने, गोयम जवह विरत्त ॥ दिक्खा लेइ सिक्खा सहिय, गणहर गुण संपत्त ॥ २२ ॥ जाषा ॥ आज हुउं सुविहाण, अज पंचेलिमां पुण्य जरो ॥ दीठ गोयमसामि, जो निय नयणें अमिय जरो ॥ सिरिगोयम गणधार, पंचसया

मुनि परिवरिय ॥ जूमिय करय विहार, नवियांजन पमिवोह करे ॥ समवसरण मझार, जे जे संसा उप जे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूठे मुनिपवरो ॥ २३ ॥ जिहां जिहां दीजेदिरक, तिहां तिहां केव ल उपजे ए ॥ आप कन्हे अण हुंत, गोमय दीजें दान इम ॥ गुरु उपर गुरु नत्ति' सामिय गोयम उप निय ॥ इण ठल केवल नाण, रागज राखे रंग नरे ॥२४॥ जो अष्टापद शैल, वंदे चढि चउविस जिण आतम लब्धि वसेण, चरम सरीरी सोइ मुनि ॥ इअ देसणानिसुणेइ, गोयम गणहर संचरिउं ॥ तापस पन्नरस एण,तो मुनि दीठो आवतोए ॥ २५ ॥ तवसोसिय निय अंग, अम्ह सक्ति नवि उपजे ए ॥ किम चढशे दृढकाय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुउं ए अनिमान, तापस जो मन चिंतवे ए ॥ तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर किरण ॥२६॥ कंचण मणि निप्पन्न, दंम कलस धज वम्स हिय ॥ पेखवि परमाणंद, जिनहर नरहेसर महि अ ॥ नियनिय काय प्रमाण, चउदिसि संठिअजिणह विंव ॥ पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यक् जूंनक देव तिहां ॥ प्रतिवोधे पुंडरीक, कुंमरीक अध्ययन नणी ॥ वलता गोयम सामी, सवि तापस प्रतिवोध करे ॥ लेइ आपणे साथ, चाले जिम जूथाधिपति

॥ २८ ॥ खीरखंम घृत आणि, अमिअ वूठ अंगुठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणुंसवे ॥ पंच सया शुभ नाव, उज्जल नरिउ खीरमीसें ॥ साचो गुरुसंजोग, कवल ते केवल रूप हुउ ॥ २९ ॥ पंच सया जिणनाह, समवसरण प्रकारत्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे जिणह पीयूष, गाजंती घणमेघ जिम ॥ जिणवाणी निसुणेइ, नाणी हूआपंचसया ॥ ३० ॥ वस्तुछंद ॥ इणे अनु क्रमे इणे अनुक्रमें नाणसंपन्न ॥पन्नरह सय परवरिय, हरिय डुरिय जिणनाह वंदिय ॥ जाणवी जगगुरु वयण, तिह नाण अप्पाण निंदइ ॥ चरम जिणे सर इम नणइ, गोयम मकरिस खेउ ॥ छेह जइ आपण सही, होसुं तुल्ला बेउ ॥ ३१ ॥ नापा ॥ सामि उं ए वीर जिणंद, पूनिम चंद जिम उल्लसिअ ॥ विहरिउ ए नरहवासम्मि वरिस बहुत्तर संवसिअ ॥ ठवतो ए कणय पउमेव, पायकमल संघें सहिअ ॥ आविउ ए नयणाणंद, नयर पावापूरिसुरमहिय ॥ ॥ ३२ ॥ पेखीउ ए गोयम सामी, देवशर्मा प्रति बोध करे ॥ आपण ए त्रिशला देव, नंदन पहोतो परम पए ॥ वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाणिय जिणसमे ए ॥ तो मुनि ए मन विखवाद, नाद नेद जिम उपनो ए ॥ ३३ ॥ कुण समो ए सामिय देखि आप कन्हे हुं टालिउ ए ॥ जाणंतो ए तिहुअण

नाह, लोक वेवहार न पालिउं ए ॥ अति नलुं ए कीधलुं सामि, जाणिऊ केवल मागशे ए ॥ चिंतवि ऊं ए वालक जेम, अहवा केडें लागशे ए ॥ ३४ ॥ हुं किम ए वीरजिणंद, जगतें जोलो जोलविउं ए ॥ आपणो ए अविहल नेह, नाह न संपे सूचव्यो ए ॥ साचो ए इह वीतराग, नेह न जेणें लालिउं ए ॥ इण समे ए गोयमचित्त, राग वेरागें वालिउं ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उलट, रहेतो रागें साहिउं ए ॥ केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहेजें उमा हिउं ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे ए ॥ गणहरु ए करय वखाण, जवियण जव इम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥ वस्तुछंद ॥ पढम गणहर पढम गहणर वरस पंचास गिहिवासें संवसिय ॥ तीस वरिस संजम विजूसिय॥ सिरिकेवल नाण पुण, बार वरिस तिहुयणनमंसिय ॥ रायगिहि नयरीहिं ठविअ, बाणवइ वरिसाउं ॥ सामी गोयम गुणनिलो, होशे शिवपुर ठाउं ॥ ३७ ॥ जाषा ॥ जिम सहकारें कोयल टहुके, जिम कुसुमवनें परिमल महेके, जिम चंदन सुगंधनिधि ॥ जिम गंगाजल लहेरें लहके, जिम कणयाचल तेजें ऊलके, तिम गोयम सौजाग्य निधि ॥३८॥ जिम मान सरोवर निवसे हंसा, जिम सुर वर सिरि कणयवतंसा, जिम महुयर राजीव वनी ॥ जिम रयणायर रयणें विलसे, जिमअंवर

तारा गण विकसें, तिम गोयम गुण केलिवनी ॥ ३९ ॥ पूनिम निसि जिम ससिहर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जग मोहे, पूरवदिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरिवर राजे, नरवर घर जिम मयंगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥४०॥ जिम सुरतरुवर सोहे शाखा, जिम उत्तममुख मधुरी जाखा, जिम वनकेतकी महमहे ए ॥ जिम जूमिपति जूयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, तिम गोयम लब्धें गहगहे ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढिउ आज, सुरतरु सारे वंठिय काज, कामकुंज सवि वश हुउं ए ॥ कामगवी पूरे मनकामिय, अष्ट महासिद्धि आवे धामिय, सामिय गोयम अणुसरो ए ॥ ४२ ॥ पणवक्खर पहेलो पनणीजें, मायाबीज श्रवण निसुणजें, श्री मती शोजा संजवे ए ॥ देवहधुरि अरिहंत नमीजें, विनयपहु उवद्याय थुणीजें, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥४३॥ पुर पुर वसतां कांइ करीजें, देश देशांतर कांइ जमी जें, कवण काज आयास करो ॥ प्रह उठी गोयम समरीजें काजसमग्रह ततखण सिझे, नवनिधि विलसे तास घरे ॥ ४४ ॥ चउदह सय बारोत्तर वरसें, गोयम गणहर केवल दिवसे, किउं कवित उपगारकरो ॥ आदिहिंमंगल एहपनणीजे, परव महोछव पहिलो लीजे, ऋद्धि वृद्धि कल्लाण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिणे उयरे धरिया,

धनपिता जिण कुल अवतरिया धन सद्गुरु जिणे दिखियाए ॥ विनयवंत विद्या जंमार, जसुगुण कोइ न लहे पार, विद्यावंत गुरु विनवे ए ॥ गौतमसामीनो रास जणीजे, चउविह संघ रलि यायत कीजे, ऋद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन छमो देव रावो ॥ माणक मोतिनां चोक पुरावो ॥ रयण सिंहासण॥ वेसणुंए॥ तिहां वेसी प्रज्ञु देसना देसे ॥ जविक जीवनां काज सरसे ॥ नित्य नित्य मंगल उदयकरो ॥ इति श्री गौतम स्वामीनो रास संपूर्ण

॥ अथ श्रीमहावीरजिन छंद ॥

॥ सेवो वीरने चित्तमां नित्य धारो, अरिक्रोधने मन्नथी दूर वारो ॥ संतोष वृत्ति धरो चित्तमांहिं, राग द्वेषथी दूर थाउ उछांहिं ॥१॥ पड्यामोहना पासमां जेह प्राणी, शुद्ध तत्वनी वात तेणें न जाणी ॥ मनु जन्म पामी वृथा कां गमोछो, जैनमार्ग छंकी जुला कां जमो छो ॥२॥ अलोजी अमानी निरागी तजो छो सलोजी समानी सरागी जजो छो ॥ हरि हरादि अन्यथी शुं रमो छो, नदी गंगा मूकी गलीमां पको छो ॥३॥ केइ देव हाथें असि चक्रधारा, केइ देव घाले रुंढ माला ॥ केइ देवउत्संगें राखे छे वामा, केइ देवसाथें रमे वृंद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे लेइ जपमाला, केइ मांसजक्षी महावीकराला ॥ केइ योगिणी जोगिणि जोग रागें, केइ रुद्राणी छागनो होम मागे ॥ ५ ॥

इसा देव देवी तणी आश राखे, तदा मुक्तिना सुख ने केम चाखे ॥ जदा लोजना थोकलो पार नाव्यो, तदा मथनो बिंडु उंमन्न जाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवलां आपणी आश राखे, तेह पिंमने मन्नशुं लेश्र चाखे॥ दीन हीननी जीडते केम जांजे, फुटो ढोल होये कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ जाता जजो मोक्ष दाता, अलोजी प्रजूने जजो विश्वख्याता ॥ रत्न चिंतामणि सारिखो एह साचो, कलंकी काच ना पिंमशुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंद बुद्धिसु जेह प्राणी कहे ठे, सवि धर्म एकत्व जूलो जमे ठे ॥ कीहां सर्पवाने कीहां मेरु धीरं, कीहां कायरा ने कीहां शूर वीरं ॥ ए ॥ कीहां स्वर्णथालं कीहां कुंजखंडं ॥ किहा कोड्वा ने कीहा खीर मंडं ॥ कीहां खीरसिंधु कीहां क्षारनीरं, कीहां कामधेनु कीहां ठाग क्षीरं ॥१०॥ कीहां सत्यवाचा कीहां कूडवाणी, कीहां रंकनारी कीहां रायराणी ॥ कीहां नारकीने कीहां देवजोगी, कीहा इंद्र देही कीहां कुष्टरोगी ॥ ११ ॥ कीहां कर्म घाती कीहां कर्मधारी, नमो वीर स्वामी जजो अन्यवारी ॥ जिसी सेजमां स्वप्नथी राज्य पामी, राचे मंदबुद्धि धरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अथिर सुख संसारमां मन्न माचे, ते जना मूढमां श्रेष्ठशुं इष्ट ठाजे ॥ तजो मोह माया हरो दंजरोपी, सजो पुण्य पोपीजजो ते अरोपी ॥ १३ ॥ गतिचा

र संसार अपार पामी, आव्या आस धारी प्रनु पाय स्वामी ॥ तुहिं तुहिं तुहिं प्रनु परम रागी, नव फेरनी शृंखला मोह नागी ॥ १४ ॥ मानीयें वीरजी अर्ज छे एक मोरी, दीजे दासकुं सेवना चरण तोरी ॥ पुण्य उदय हुउं गुरु आज मेरो वीवेकें लह्योमे प्रनू दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नवकारनो छंद ॥

॥ दोहा ॥ वंछित पूरे विविध परे, श्री जिन सासनसार ॥ निश्चय श्रीनकार नित्य, जपतां जयज यकार ॥ १ ॥ अमशठ अक्षर अधिक फल, नव पद नवे निधान ॥ वीतराग स्वय मुख वदे, पंच परमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समस्या संपत्ति थाय ॥ संचित्त सागर सातनां, पातिक दूर पलाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र शिर मुकुट मणि, सद्गुरु नापित सार ॥ सो नवियां मन शुद्धशुं, नित्य जपीये नवकार॥छंदहाटकी ॥ नवकार थकी श्रीपाल नरेशर॥ पाम्यो राज्य प्रसिद्ध ॥ समशान विपे शिवनाम कुमरने, सोवन पुरिसो सिद्ध ॥ नव लाख जपंता नरक निवारे, पामे नवनो पार ॥ सो नवियां नत्तें चोखे चित्ते, नित्य जपीये नवकार ॥ ५ ॥ वांधि वमशाखा शिंके वेसि, हेठल कुंड हुताश ॥ तस्कर ने मंत्र समर्प्यो श्रावके, उड्यो ते आकाश ॥ विधि

रीत जम्यो विषधर विष टाले, ढाले अमृतधार ॥ सो० ॥ ६ ॥ बीजोरा कारण राय महाबल, व्यंतर ऽुष्ट विरोध ॥ जेणें नवकारें हत्या टाली, पाम्यो यक्ष प्रतिबोध ॥ नवलाख जपंतां थाये जिनवर, इस्यो ते अधिकार ॥ सो० ॥ ७ ॥ पल्लिपति शिख्यो मुनिवर पासे, महामंत्र मन शुद्ध ॥ परनव ते राजसिंह पृथवीपति, पाम्यो परिगल रिद्ध ॥ ए मंत्रथकी अमरापुर पहोतो, चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥ ८ ॥ संन्यासी काशी तप साधंतो, पंचाग्नि परजाले ॥ दीठो श्रीपास कुमारें पन्नग, अधबलतो ते टाल ॥ संजलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख, इंद्रनुवन अवतार ॥ सो०॥ए॥मनशुद्धें जपतां मयणा सुंदरी, पामी प्रिय संयोग॥ इण ध्याने कुष्ट टल्यो उंबरनो, रक्त पित्तनो रोग ॥ निश्चें शुं जपतां नवनिधि थाये, धर्म तणे आधार॥ सो० ॥ १० ॥ घटमांहि कृष्ण नुजंगम घाल्यो, घरणी करवा घात ॥ परमेष्ठि प्रजावे हार फूलनो, वसुधामांहि विख्यात ॥ कमलावतीयें पिंगल कीधो, पापतणो परिहार ॥ सो० ॥ ११ ॥ गयणांगण जाति राखी गृहिणी, पामीवाणप्रहार ॥ पद पंच सुणंतां पांडुपति घर, ते थई कुंता नार ॥ ए मंत्र अमूलक महिमा मंदिर. नवऽुःख नंजणहार ॥ सो० ॥ १२॥ कंबल संबलें कादव काढ्यां, शकट पांचशें मान ॥ दीधे नवकारें गया देवलोकें, विलसे अमर विमान ॥ ए मंत्रथकी

संपत्ति वसुधातलें विलसे जैन विहार ॥ सो० ॥
॥ १३ ॥ आगें चोवीशी हुई अनंती, होशे वार
अनंत ॥ नवकार तणी कोइ आदि न जाणे, एम
नांखे अरिहंत ॥ पूरवदिशि चारे आदि प्रपंचे,
समस्यो संपत्ति सार ॥ सो० ॥ १४ ॥ परमेष्ठि सुरप
द ते पण पामे, जे कृत कर्म कठोर ॥ पुंमरिगिरि
उपर प्रत्यक्ष पेख्यो, मणिधर ने एक मोर ॥ सद्
गुरु सन्मुख विधि समरंता, सफल जनम संसार
॥ सो० ॥ १५ ॥ शूलिकारोपण तस्कर कीधो, लोह
खरो परसिद्ध ॥ तिहां शेठें नवकार सुणाव्यो, पाम्यो
अमरनी ऋद्ध ॥ शेठने घर आवी विघ्न निवास्यो,
सुरें करी मनोहार ॥ सो० ॥ १६ ॥ पंच परमेष्ठि
ज्ञानज पंचह, पंचह दानचारित्र ॥ पंच सद्याय महा
व्रत पंचह, पंच समिति समकित ॥ पंच प्रमाद
विषय तजो पंचह, पालो पंचाचार ॥ सो० ॥ १७ ॥
कलश ॥ उप्पय ॥ नित्य जपीयें नवकार, सार संपत्ति
सुखदायक ॥ सिद्धमंत्र ए शाश्वतो, एम जंपे
जगनायक ॥ श्री अरिहंत सुसिद्ध, शुद्ध आचार्य
नणीजें ॥ श्रीउवज्झाय सुसाधु, पंचपरमेष्ठि थुणी
जें ॥ नवकार सार संसार ढे, कुशल लान वाचक
कहे ॥ एक चितें आराधतां, विविधऋद्धि वांछित
लहे ॥ १८ ॥ इति ॥ ११५ ॥

॥ अथ श्री शोल सतीनो छंद ॥

॥ आदि नाथ आदिजिनवर वंदी, सफल मनो रथ कीजियें ए ॥ प्रजातें उठी मांगलिक कामें, शोल सतीनां नाम लीजियें ए ॥ १ ॥ बाल कुमारी जग हितकारी, ब्राह्मी जरतनी बहेनमी ए ॥ घट घट व्यापक अक्षर रूपें, शोल सतीमांहि जे वमी ए ॥ ॥ २ ॥ बाहुबल जगिनी सतीय शिरोमणि, सुंदरी नामे रिपज सुता ए ॥ अंग स्वरूपी त्रिजुवनमांहे, जेह अनुपम गुणजुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला बाल पणाथी, शीयलवती शुद्ध श्राविका ए ॥ अडदनां बाकुलां वीर प्रतिलज्या, केवल लही व्रत जाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुआ धारिणी नंदनी, राजिमती नेम वल्लजा ए ॥ जोवन वेशें कामने जीत्यो, संयम लेइ देव डुल्लजाए ॥ ५ ॥ पंच जरतारी पांमव नारी, डुपदतनया वखाणीयें ए ॥ एक शो आठे चीरपूरा णां, शीयल महिमा तस जाणीयें ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम, कौशल्या कुलचंड्रिका ए ॥ शीयल सलूणी राम जनेता, पुण्य तणी परनालिका ए ॥ ७ ॥ कोशंबिक ठामें संतानिक नामें, राज्य करे रंग राजीयो ए ॥ तस घर घरणी मृगावतीसती, सुरजुवनें जश गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शीयलें न काची, राची नहीं विषयारसें ए ॥ मुख डुं जोतां पाप पलाए, नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥

॥ ए ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामिनी, जनकसुता सीता सती ए ॥ जगसहु जाणे धीज करंतां, अनल शीतल थयो शीयलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालणी बांधी, कूवाथकी जल काढीयुं ए ॥ कलंक उतारवा सतीय सुभद्रा, चंपा बार उघाडीयुं ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शीयल अखंडित, शिवा शिव पदगामिनी ए ॥ जेहने नामें निर्मल थइयें, बलि हारी तस नामनी ए १२ ॥ हस्तिनागपुरें पांडुरायनी, कुंता नामें कामिनी ए ॥ पांडव माता दसे दसारनी, बहेन पतिव्रता पद्मनी ए ॥ १३ ॥ शीलवती नामे शीलव्रतधारिणी, त्रिविधेंतेहने वंदीयें ए ॥ नाम जपंतां पातक जाए, दरिसण डुरित निकंदीयें ए ॥ १४ ॥ निषधा नगरी नलहनरिंदनी, दमयंती तस गेहनी ए, ॥ संकट पडतां शीयलज राख्युं, त्रिभुवन कीर्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीता जगजन पूजिता, पुष्पचूला ने प्रभावती ए ॥ विश्वविख्याता कामित दाता, शोलमी सती पदमा वती ए ॥ १६ ॥ वीरेंभांखी शास्त्रें साखी, उद यरतन भांखे मुदा ए ॥ वहाणुं वातां जे नर भणशे, ते लेशे सुख संपदा ए ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नवकार लघु छंद ॥

॥ सुखकारण भवियण, समरो नित्य नवकार ॥ जिनशासनआगम, चौद पूरवनो सार ॥ ए मंत्रनो

महिमा, कहेतां न लहुं पार सुरतरु जिम चिंतित वंछित फल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव, सेव करे करजोड ॥ नुविमंगल विचरे, तारे नवियण कोम ॥ सुर छंदें विलसे, अतिशय जास अनंत ॥ पहे लें पद नमियें, अरिगंजन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पन्नरे नेदें, सिद्ध थया नगवंत ॥ पंचमी गति पोहोता, अष्ट करम करि अंत ॥ कल अकल स्वरुपी, पंचानं तक जेह ॥ जिनवर पय प्रणमुं, बीजे पद वलि एह ॥ ३ ॥ गच्छनार धुरंधर, सुंदर शशिहर सोम ॥ करें सारण वारण, गुण छत्तीसें थोम ॥ सुत्र जाण शिरोमणि, सागर जेम गंनीर ॥ त्रीजे पद नमीयें, आचारज गुणधीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगर, सूत्र नणावे सार ॥ तपविधि संयोगें, नांखे अर्थ विचार ॥ मुनिवर गुण जुता, कहियें ते नवसऊाय ॥ चोथे पद नमियें, अहोनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पंचा श्रवटाले, पाले पंचाचार ॥ तपसी गुण धारी, वारे विषय विकार ॥ त्रस थावर पीहर, लोकमांहें जे साध ॥ त्रिविधें ते प्रणमुं, परमारथ जिणें लाध ॥ ॥ ६ ॥ अरि करि हरि सायणी डायणी नूत वैता ल ॥ सवि पाप पणासे, वाधेमंगल माल ॥ एणें समरण संकट, दूर टले ततकाल ॥ इम जंपे जिन प्रन, सूरि शिष्य रसाल ॥ ७ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ इति श्री पंचपरमेष्ठी छंद ॥

॥ श्री ॥

जिनपञ्जरस्तोत्रं

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं अर्हं गौतम प्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एष पञ्चनमस्कारः सर्व पाप क्षयं करः ॥ मङ्गलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मङ्गलम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जये विजये, अर्हं परमात्मनेनमः ॥ कमलप्रभसूरीन्द्रो, भाषते जिनपञ्जरम् ॥ ३ ॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदम् ॥ मनोऽभिलषितं सर्व, फलं स लभते ध्रुवम् ॥ ४ ॥ भूशय्याब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जितः ॥ देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलम् ॥ ५ ॥ अर्हन्तं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके ॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये उपाध्यायं तु नासिके ॥ ६ ॥साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनःशुद्धिं विधाय च ॥ सूर्यचन्द्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितो जिनः ॥ अङ्गसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः ॥ ८ ॥ पूर्वाशां च जिनो रक्षे-दाग्नेयीं विजितेन्द्रियः ॥ दक्षिणाशां परब्रह्म, नैर्ऋतीं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायव्यां परमेश्वरः ॥ उत्तरां तीर्थकृत्सर्वामीशानेऽपि निरञ्जनः ॥ १० ॥ पातालं भगवा

नर्हन्नाकाशं पुरुषोत्तमः, ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षन्तु सकलं कुलम् ॥ ११ ॥ ऋषभो मस्तकं रक्षे. दजितोऽपि विलोचनम् ॥ संभवः कर्णयुगलेऽभिनन्द नस्तु नासिके ॥ १२ ॥ ओष्ठं श्रीसुमती रक्षेद्दन्तान्प द्मप्रभो विभुः ॥ जिह्वां सुपार्श्वदेवोऽयं, तालु चन्द्र प्रभाभिधः ॥ १३ ॥ कंठं श्रीसुविधि रक्षेद्, हृदयं श्रीसुशीतलः ॥ श्रेयांसो वाहुयुगलं,वासुपूज्यः करद्व यम् ॥१४॥ अंगुलीर्विमलो रक्षेदनन्तोऽसौ नखानपि ॥ श्रीधर्मोऽप्युदरास्थीनि श्रीशान्तिर्नाभि मंफलम् ॥१५ श्रीकुन्थुर्गुह्यकं रक्षे, दरो लोम कटी तटम् ॥ मल्लिरू रुपृष्ठवंशं,जंघे च मुनिसुव्रतः ॥१६॥ पादांगुलीर्नमीरक्षे च्छ्रीनेमिश्चरणद्वयम् ॥ श्रीपार्श्व नाथः सर्वांगं वर्धमा नश्चिदात्मकम् ॥ १७ ॥ पृथिवीजलतेजस्क, वाय्वा काशमयं जगत् ॥ रक्षेदशेष पापेभ्यो, वीतरागो नि रञ्जनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे स्मशाने च, संग्रामे शत्रु संकटे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, भूत प्रेतभयाश्रिते ॥ ॥ १९ ॥ अकाले मरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वे महादुःखे, मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥ २० ॥ डाकिनीशाकिनी ग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते ॥ नद्युत्ता रेऽध्ववैपम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपञ्जरम् ॥ तस्य किञ्चि द्भयं नास्ति, लभते सुखसंपदः ॥२२॥ जिन पिंजरनामेदं,यः स्मरेदनुवासर ॥ कमलप्रभ राजेन्द्र- श्रियं सलभते

नरः ॥२३॥ प्रातः समुच्चाय पठेत्कृतज्ञो, यस्तोत्र मेत ज्जिन पञ्जराख्यं ॥ आसादयेच्छ्री कमल प्रजाख्यं, लक्ष्मी मनोवांछितपूरणाय ॥२४॥ श्रीरुद्रपल्लीय वरेण्यगछे, देवप्रजाचार्य पदाब्जहंसः ॥ वादीन्द्रचूमामणिरेषजैनो, जीयाग्गुरुः श्रीकमल प्रजाख्यः॥२५॥इति श्रीकम लप्रजाचार्य विरचितं श्रीजिन पञ्जर स्तोत्रं समाप्तम्॥

॥ श्री ॥

॥ ग्रहशान्तिस्तोत्रम् ॥

जगग्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सग्गुरुजाषितम् ॥ ग्रह शान्तिं प्रवक्ष्यामि जव्यानां सुखहेतवे ॥ १ ॥ जन्म लग्ने च राशौ च, यदा पीमन्ति खेचराः ॥ तदा संपूजयेद्धीमान्, खेचरैः सहिताञ्जिनान् ॥ २ ॥ पुष्पै र्गन्धैर्धूपदीपैः, फलनैवेद्यसंयुतैः ॥ वर्णसदृशदानैश्च वस्त्रैश्च दक्षिणान्वितैः ॥ ३ ॥ पद्मप्रजस्य मार्तमश्च न्द्रश्चन्द्रप्रजस्य च ॥ वासुपूज्येजूसुतश्च, बुधोऽप्यष्ट जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ विमलानन्तधर्माऽराः, शान्तिः कुन्थुर्नमिस्तथा ॥ वर्धमानो जिनेन्द्राणां, पादपद्मे बुधो न्यसेत् ॥ ५ ॥ ऋपजाजितसुपार्श्वाश्चाजिनन्द नशीतलौ ॥ सुमतिःसंजवस्वामी, श्रेयांसस्य बृहस्प तिः ॥ ६ ॥ सुविधेःकथितः शुक्रः सुव्रतस्य शनैश्च रः ॥ नेमिनाथस्य राहुः स्यात, केतुः श्रीमल्लिपार्श्व योः ॥ ७ ॥ जिनानामग्रतः कृत्वा, ग्रहाणां शान्ति

तवे ॥ नमस्कारशतं नक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥८॥ नद्रबाहुरुवाचैव पञ्चमश्रुतकेवली ॥ विद्याप्रवादतः पूर्वात् ग्रहशान्तिविधिं शुनम् ॥ ए ॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ ग्रहाश्चन्द्रसूर्याङ्गारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताः खेटा जिनपतिपुरतो वतिष्ठन्तुः मम धनधान्यजयविजयसुखसौनाग्यधृतिकीर्तिकान्तिशांतितुष्टिपुष्टिवृद्धिलक्ष्मीधर्मार्थकामदाः स्युः स्वाहा ॥ इति ग्रहशान्ति स्तोत्र समाप्तं

॥ अथ मंत्राधिराज स्तोत्रं ॥

श्रीपार्श्वः पातु वो नित्यं, जिनः परमशंकरः ॥ नाथः परमशक्तिश्च, शरण्यः सर्वकामदः ॥ १ ॥ सर्वविघ्नहरः स्वामी, सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ सर्वसत्त्वहितो योगी श्रीकरः परमार्थदः ॥ २ ॥ देवदेवः स्वयंसिद्धश्चिदानन्दमयः शिवः ॥ परमात्मा परब्रह्म, परमः परमेश्वरः ॥ ३ ॥ जगन्नाथः सुरज्येष्ठो, नूतेशः पुरुषोत्तमः ॥ सुरेन्द्रो नित्यधर्मश्च, श्रीनिवासः शुनार्णवः ॥ ४ ॥ सर्वज्ञः सर्व देवेशः, सर्वदः सर्वगोत्तमः ॥ सर्वात्मा सर्वदर्शी च, सर्वव्यापी जगद्गुरुः ॥ ५ ॥ तत्त्वमूर्तिः परादित्यः, परब्रह्मप्रकाशकः ॥ परमेन्दुः परप्राणः, परमामृतसिद्धिदः ॥ ६ ॥ अजः सनातनः शम्नुरीश्वरश्च सदाशिवः ॥ विश्वेश्वरः प्रमोदात्मा, क्षेत्राधीशः शुनप्रदः ॥ ७ ॥ साकारश्च निराकारः, सकलो निष्कलोऽव्ययः निर्ममो निर्विकारश्च, निर्वि

कल्पो निरामयः ॥ ७ ॥ अमरश्चा जरोऽनन्त, एकोऽनन्तः शिवात्मकः ॥ अलक्ष्यश्चैवामेयश्च, ध्यानलक्ष्यो निरञ्जनः ॥ ए ॥ ॐकाराकृतिरव्यक्तो, व्यक्तरूपस्त्रयीमयः ॥ ब्रह्मद्वयप्रकाशात्मा, निर्जयः परमाक्षरः ॥ १० ॥ दिव्यतेजोमयः शान्तः, परामृतमयोऽच्युतः ॥ आद्योऽनाद्यः परेशानः, परमेष्ठी परः पुमान् ॥ ११ ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशः, स्वयंभूः परमाच्युतः ॥ व्योमाकारस्वरूपश्च, लोकालोकावभासकः ॥ १२ ॥ ज्ञानात्मा परमानन्दः, प्राणारूढो मनःस्थितिः ॥ मनःसाध्यो मनोध्येयो, मनोदृश्यः परापरः ॥ १३ ॥ सर्वतीर्थमयो नित्यः, सर्वदेवमयःप्रभुः ॥ भगवान् सर्वतत्त्वेशः, शिवश्रीसौख्यदायकः ॥ १४ ॥ इति श्री पार्श्वनाथस्य, सर्वज्ञस्य जगद्गुरोः ॥ दिव्यमष्टोत्तरं नामशतमत्र प्रकीर्तितम् ॥ १५ ॥ पवित्रं परमं ध्येयं, परमानन्ददायकम् ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदं नित्यं पठते मङ्गलप्रदम् ॥ १६ ॥ श्रीमत्परमकल्याणसिद्धिदः श्रेयसेऽस्तुवः ॥ पार्श्वनाथजिनः श्रीमान्, भगवान् परमः शिवः ॥ १७ ॥ धरणेन्द्रफणछत्रालंकृतो वः श्रियं प्रभुः ॥ दद्यात्पद्मावतीदेव्या, समधिष्ठितशासनः ॥ ॥ १८ ॥ ध्यायेत्कमलमध्यस्थं, ॥ श्रीपार्श्वजगदीश्वरम् ॥ ॐ ह्रीं ह्लीं श्रीं समायुक्तं, केवलज्ञानभास्करम् १९ ॥ पद्मावत्यान्वितं वामे, धरणेन्द्रेण दक्षिणे ॥ परितोऽष्टदलस्थेन, मन्त्रराजेन संयुतम् ॥ २० ॥ अष्ट

पत्रस्थितैःर्यस्यनमस्कारैस्तथा त्रिभिः ॥ ज्ञानाद्यैर्वेष्टितं नाथं, धर्मार्थकाममोक्षदम् ॥ २१ ॥ शतषोडशदला रूढं, विद्यादेवीभिरान्वितम् ॥ चतुर्विंशतिपत्रस्थं, जिनं मातृसमावृतम् ॥ २२ ॥ मायावेष्टयत्रयाग्रस्थं, क्रौंकारसहितं प्रभुम् ॥ नवग्रहावृतं देवं, दिक्पालै र्दशभिर्वृतम् ॥ २३ ॥ चतुष्कोणेषु मन्त्राद्यचतुर्बीजा न्वितैर्जिनैः ॥ चतुरष्टदशद्वीति, द्विधाकसंज्ञकैर्युतम् ॥ २४ ॥ दिक्षु क्षकारयुक्तेन, विदिक्षु लांकितेन च ॥ चतुरस्रेण वज्रांकक्षितितत्त्वे प्रतिष्टितम् ॥ २५ ॥ श्रीपार्श्वनाथमित्येवं, यः समाराधयेज्जिनम् ॥ तं सर्वपापनिर्मुक्तं, भजते श्रीः शुभप्रदा ॥ २६ ॥ जिने शः पूजितो भक्त्या, संस्तुतः प्रस्तुतोऽथवा ॥ ध्यात स्त्वं यैः क्षणं वापि, सिद्धस्तेषां महोदयः ॥ २७ ॥ श्रीपार्श्वयन्त्रराजान्ते, चिन्तामणिगुणास्पदम् ॥ शान्ति पुष्टिकरं नित्यं, क्षुद्रोपद्रवनाशनम् ॥ २८ ॥ ऋद्धि सिद्धिमहाबुद्धिधृतिश्रीकान्तिकीर्तिदम् ॥ मृत्युंजयं शिवात्मानं, जपनान्नन्दितो जनः ॥ २९ ॥ सर्वकल्या णपूर्णःस्याज्जरामृत्युविवर्जितः ॥ अणिमादिमहासि द्धिं, लक्षजापेन चाप्नुयात् ॥ ३० ॥ प्राणायाममनो मन्त्रयोगादमृतमात्मनि ॥ त्वमात्मानं शिवं ध्यात्वा, स्वामिन् सिध्यन्ति जन्तवः ॥ ३१ ॥ हर्षदःकामदश्चे तिरिपुघ्नः सर्वसौख्यदः ॥ पातु वः परमानन्दलक्षण संस्मृतो जिनः ॥ ३२ ॥ तत्त्वरूपमिदं स्तोत्रं, सर्वमङ्ग

लसिद्धिदम् ॥ त्रिसंध्यं यः पठे न्नित्यं, नित्यं प्राप्नोति स श्रियम् ॥ ३३ ॥

अथ लघु जिनसहस्रनाम लिख्यते ॥

॥ नम स्त्रिलोकनाथाय ॥ सर्वज्ञाय महात्मने ॥ वक्ष्ये तस्यैव नामानि ॥ मोक्षसौख्याभिलापया ॥ १ ॥ निर्मलः शास्वतो शुद्धः ॥ निर्विकल्पो निरामयः ॥ निःशरीरो निरातंकः ॥ सिद्धः शुक्ष्मो निरंजनः ॥ २ ॥ निष्कलंको निरालंबो ॥ निर्मोहो निर्मलोत्तमः ॥ निर्मयो निरहंकारो ॥ 'निर्विकारोथनिष्क्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषोनिरुजः शांतः ॥ निमद्यो निर्मलः शिवः ॥ निस्तरंगो निराकारो ॥ निष्कर्म्मोनिष्कलप्रभुः ॥ ४ ॥ निर्वादो निरुपज्ञानः ॥ निरागो निरयोजिनः निः शब्दःप्रतिमश्लेष्टः ॥ उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥ ५ ॥ निःशंगात् प्राप्तकैवल्यो नैष्टकः शब्दवर्जितः ॥ अनिंद्यो महपूतात्मा ॥ जगत्शिखर शेषरः ॥ ६ ॥ निःशब्दो गुण संपूर्ण ॥ पापतापप्रणाशनः ॥ सोपियोगात् शुचंप्राप्तः कर्मद्योतिवला वहः ॥७॥ अजरो अमरः सिद्धः ॥ अर्चितः अक्षयो विभुः ॥ अमूर्त्तः अच्युतोब्रह्म ॥ विष्णु रीश प्रजापत ॥ ८ ॥ अनिंद्यो विश्वनाथश्च ॥ अजो अनुपमोत्तवः ॥ अप्रमेयोजगन्नाथ ॥ बोधरूपो जिनात्मकः ॥ ९ ॥ अव्ययसकलाराध्यो ॥ निष्पन्नो ज्ञानलोचनः ॥ अन्नेद्यो निर्मलो नित्यः ॥ सर्वसल्यविवर्जितः॥१०॥अजेयः सर्वतोभद्रः ॥

निष्कषायो भवांतकः ॥ विश्वनाथः स्वयंबुद्धः ॥ वीत
रागोजिनेश्वरः ॥ ११ ॥ अंतको सहजा नंद ॥ अवा
ज्ञानसगोचरः ॥ असाध्यशुद्धश्चैतन्यः ॥ कर्मनोकर्म
वर्जितः ॥ १२ ॥ अनंतविमलज्ञानी ॥ निस्पृहो नि
ष्प्रकाशकः ॥ कर्माजितो महात्मानः ॥ लोकत्रयशि
रोमणिः ॥ १३ ॥ अव्याबाधो वरःशंभुः ॥ विश्व वे
दी पितामहः ॥ सर्वभूतहितोदेव ॥ सर्वलोकसरण्य
कः ॥ १४ ॥ आनंदरूपचैतन्यो ॥ भगवांस्त्रिजगद्गु
रुः ॥ अनंतानंतधीशक्तिः ॥ सत्यव्यक्त व्ययात्मकः
॥ १५ ॥ अष्टकर्म विनिर्मुक्तः ॥ सप्तधातुविवर्जित
गौरवादित्रयावारः ॥ सर्वज्ञानादिसंयुतः ॥ १६ ॥ अ
न्वयःप्राप्तकैवल्यः ॥ निर्माणे निरपेक्षकः ॥ निष्कलं
केवलज्ञानी ॥ मुक्तिसौख्यप्रदायकः ॥ १७ ॥ अना
मयो महाराध्यो ॥ वरदो ज्ञानपावकः ॥ सर्वेशःसत्
सुखावासः ॥ जिनेंद्रोमुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥ अन्यून
परमज्ञानी ॥ विश्वतत्वप्रकाशकः ॥ प्रबुद्धो भगवान्ना
थः ॥ प्रस्तुतः पुण्यकारकः ॥ १९ ॥ शंकरः सुगतो
रौद्रः सर्वज्ञो मदनांतकः ॥ ईश्वरो भुवनाधीशः ॥
सचित्तः पुरुषोत्तमः २० ॥ सदोजातमहात्मानं ॥ वि
मुक्तोमुक्तिवल्लभः योगींद्रो नादिसंसिद्धः ॥ निरीहो
ज्ञानगोचरः ॥ २१ ॥ सदा शिवां चतुर्वक्रः ॥ सत्सौ
ख्य त्रिपुरांतकः ॥ त्रिनेत्रः त्रिजगत्पूज्यः ॥ कल्या
णकोष्ट मूर्त्तिकः ॥ २२ ॥ सर्वसाधुजनैर्वंद्यः ॥ सर्वपा

पविवर्जित ॥ सर्वदेवाधिकोदेवः ॥ सर्वभूतहितंकरः ॥२३॥ स्वयंविद्यो महात्मानं ॥ प्रसिद्धः पापनाशनः तनुमात्रचिदानंद ॥ चैतन्यश्चैत्यचैत्तवः ॥ २४ ॥ सकलातिशयोदेव ॥ मुक्तिस्थो महतांमहः ॥ मुक्तिकार्यसंतुष्टो ॥ निरागः परमेश्वरः ॥ २५ ॥ महादेवो महावीरो ॥ महामोहविनाशकः ॥ महाभावो महादर्शः ॥ महामुक्तिप्रदायकः ॥ २६ ॥ महाज्ञानी महायोगी ॥ महातपो महात्मकः ॥ महर्द्धिको महावीर्यो महांतिकपदस्थितः ॥ २७ ॥ महापूज्यो महावंद्यो ॥ महाविघ्नविनाशकः ॥ महासौख्यो महापुंसो ॥ महामहिमः अच्युतः ॥ २८ ॥ मुक्तामुक्तिजसंवोधः ॥ एकानेकविनिश्चलः सर्ववंधविनिर्मुक्तो ॥ सर्वलोकप्रधानकः॥२९॥महासूरो महाधीरो ॥ महादुःख विनाशकः ॥ महामुक्ति प्रदोधीरो ॥ महाढ्यो महागुरुः ॥ ३० ॥ निर्मारोमारविध्वंसी ॥ निष्कामो विषयाच्युतः ॥ अभवंता महाभ्रांतो ॥ शांतिकल्याणकारक ॥ ३१ परमात्मापरं ज्योतिः ॥ परमेष्टी परमेश्वरः ॥ परमात्मापरानंदः परंपरम आत्मकः ॥३२॥ प्रस्तुतोनंत विज्ञानी ॥ संख्यानिर्वाणसंयुतः॥ नाकृतिं नाक्षरोवर्णी ॥ व्योमरूपो जितात्मकः ॥ ३३ ॥ व्यक्ताव्यक्तजसंवोधः ॥ संसारछेदकारणः ॥ निरवद्योमहाराध्यः ॥ कर्मजिद्धर्म्मनायकः ॥ ३४ ॥ बोधःसत्सुजगद्वंद्यो ॥ विश्वात्मानरकांतकः ॥ स्वयंभूपाप

हत्पूज्यः पुनीतोविभवःस्तुतः ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो महातीतः ॥ रूपातीतो निरंजनः ॥ अनंतज्ञानसंपूर्णो ॥ देवदेवेशनायकः ॥ ३६ ॥ वरेण्योभवविध्वंसी ॥ योगिनांज्ञानगोचरः ॥ जन्ममृत्यु जरातीतः ॥ सर्वविघ्नहरोहरः ॥ ३७ ॥ विश्वटक्रभव्यसंवंद्यः ॥पवित्रोगुणसागरः ॥ प्रसन्नः परमाराध्यः लोकालोकप्रकाशकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्भोजगतूस्वामी इंद्रवंद्यः सुरार्चितः ॥ निष्प्रपंचो निरातंको ॥ निःशेषक्लेश नाशकः ॥ ३ए ॥ लोकेशो लोकसंसेव्यो ॥ लोकालोकविलोकनः ॥ लोकोत्तमो त्रिलोकीशो ॥ लोकाग्रशिखरस्थितः॥४०॥ नामाष्टकसहस्राणि ॥ ये पठन्ति पुनः पुनः ते निर्वाणपदं यांति ॥ मुच्यते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥ इति लघुसहस्रनाम संपूर्ण ॥

॥ सकलमङ्गलकेलिनिवेशनं ॥ सहृदयं हृदयं गमदेशनं ॥ अजिनतोत्तमभक्तसुरेश्वरं ॥ नमतशीतलनाथजिनेश्वरं ॥ १ ॥ सहजसुन्दरसद्गुणमन्दिरं ॥ विमलकेवलबोधविकस्वरं ॥अतिसुवर्णसुवर्णसमद्युतं॥ प्रवरबंधुरलक्षणसंयुतं ॥ २ ॥ (युग्मं) यदीयभक्तिर्भविनां भवे भवे भवेदभीष्टार्थनिदानसत्कृतं ॥ स एव नन्दात्मसमुद्भवो जिनः ॥ समर्चनीयः खलुशीतलः प्रभुः ॥ ३ ॥ कर्मार्जितसान् भविनः सुशीतलान् ॥ कुर्वे भ्रदावाक् सुधया दयापरः ॥ सदेव देवो भवतात्सदेव मे ॥ सदिष्टसिद्ध्यै जिनराजशीतलः

॥ ४ ॥ अधिगतशिवशर्मा वीतमोहादिकर्मा ॥ दृढ रथ तनुजन्मा सर्वतः साधधर्मा ॥ त्रिदशमहितमूर्तिः स्फूर्तिमत्पुण्यकीर्ति ॥ जयतु गतजवार्तिः शीतलः सौम्यमूर्तिः ॥ ५ ॥ इति श्रीशीतलजिनः स्तोत्रम् ॥

॥ यस्य ज्ञान दयासिन्धो ॥ दर्शनं श्रेयसे ध्रुवं ॥ सश्रीमान् पार्श्वतीर्थेशो ॥ निषेव्यः सततं सतां ॥ १ ॥ वामासूनोर्यशः पुंजे रगाधस्यानघागुणाः॥ स्मर्यन्तेयेन स स्मार्यो ॥ जवेत्प्राचीन बर्हिषां ॥ २ ॥ विहाय विषयाशक्तान् ॥ संसारिकसुरासुरान् ॥ सेव्यतामक्ष यो धीराःपार्श्व देवोपरः प्रजुः ॥ ३ ॥ जिनाःसर्वार्थ दानेन ॥ येन कल्पद्रुमाअपि ॥ जवेदज्यर्च्चितो लो के ॥ सश्रियेचाम्रतायच ॥४॥ संस्तुतो मधुर श्लोकै॥ जैनलाजप्रदायकः ॥ कल्याणकारको जूयात् ॥ श्री मान् शंखेश्वरःप्रजुः ॥ ५ ॥ इति पार्श्वजिन स्तुतिः

॥ शालिनीछन्दः ॥ ॥ गौमीग्रामे स्तंजने चारु तीर्थे ॥ जीरावल्यां पत्तने लोडवाख्ये ॥ वाणारस्यांचा पिविख्यातकीर्त्तीं श्रीपार्श्वेशंनौमि शंखेश्वरस्थं॥१॥इष्टा र्थानां स्पर्शने पारिजातं ॥ वामादेव्यानन्दनं देववं द्यं ॥ स्वर्गेजूमौ नागलोके प्रसिद्धं ॥ श्रीपा० ॥ २ ॥ जित्वाजेयं कर्मजालं विशालं ॥ प्राप्यानन्तं ज्ञानर त्नंचिरलं ॥ लब्धामंदानंदनिर्वाणसौख्यं ॥ श्री पा० ॥ ३ ॥ विश्वधीशं विश्वालोकेपवित्रं॥ पापागम्यं मो क्षलक्ष्मीकलत्रं, अंजो जाचं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ श्री

पा० ॥ ४ ॥ वर्षेरम्ये स्वं गदो ञागचंद्र ॥ संख्येमासे माधवे कृष्णपक्षे ॥ प्राप्तं पुण्यै दर्शनं यस्य तंच ॥ श्रीपा० ॥ इति शंखेश्वर जिनस्तवः ॥

॥ विशदसद्गुणराजि विराजितं ॥ घनघनाघनना दविज्ञाजितं ॥ ञजतञक्तिञरेण रमेश्वरं ॥ जगति पार्श्वजिनेशमनश्वरं ॥ १ ॥ विविधवर्णविञूपितविग्रहाः ॥ विहितदूर्द्दम दर्प्पक निग्रहाः ॥ वसुयुगार्कमिताः सुकृताकराः जिनवरा प्रञवंतु शिवंकरा ॥२॥ रुचिरवर्ण निवद्धमनिन्दितं ॥ सुमनसां प्रकरैरञिवंदितं ॥ निखिलसाधुजनाः खलुनिर्मिदं, जिनमतं नमतांचितशर्मदं॥३॥ सकलञव्यसरोज विकाशिका ॥ कुमत संतमसोच्चयनाशिका ॥ जिनवरानन पद्मगतोन्मुदा ॥ ञवतु वाग्जिन लाञशुञार्थदा ॥ ४ ॥ इति पार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥

॥ श्रीमन्नम्र सुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतिरत्नप्रञा ॥ ञास्वत्पादनखेन्दव प्रवचनांञोधौ व्यवस्थायिनः ॥ ये सर्वे जिनसिद्धसूरिसुगतास्ते पाठकासाधवः ॥ स्तुत्यायोगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ १ ॥ सम्यग्दर्शनवोधवृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं ॥ मुक्तिश्री नगरायनं जिनपतेः स्वर्ग्गापवर्ग्गप्रदः धर्म्मः सूक्ति सुधाश्च चैत्यमखिलं जैनालयं श्र्यालयं प्रोक्तंतत्त्रिविधं चतुर्विध मम्मीकुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ २ ॥ नाञेयादि जिनाधिपास्त्रिञुवनेख्याताश्चतुर्विंशतिः ॥ श्रीमन्तो

भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश ॥ ये विष्णु प्रतिविष्णुलाङ्गलधराः सप्ताधिकाविंशति ॥ स्त्रैलोक्ये भयदास्त्रिषष्टिपुरुषाः ॥ कुर्वंतुमे मङ्गलं ॥ ३ ॥ कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरी ॥ चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः ॥ सम्मेतशैलेर्हतां ॥ शेषाणामपि चोर्ज्जयन्तशिखरेनेमीश्वरस्यार्हतो ॥ निर्वाणाविनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्व्वंतु मे मङ्गलं ॥ ॥ ४ ॥ ज्योतिर्व्यंतर भावनामर गृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिता ॥ जंबूशाल्मलि चैत्यशाखिषु तथावक्षार रूप्यादिषु ॥ इक्ष्वाकारगिरौच कुंडलनगेद्वीपेच नंदीश्वरे ॥ शैलेयेमनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वतु मे मङ्गलं ॥ ५ ॥ यो गर्भावतरोपिजय त्यर्हतां जन्माभिषेकोत्सवे ॥ यो जातः परिनिष्क्रमेवचभवोयः केवलज्ञान भाक् ॥ यः कैमल्यपुरप्रवेशमहिमासंभावितः स्वर्गिभिः ॥ कल्याणानि च तानि पंचसततं कुर्वं तु मे मंगलं ॥ ६ ॥ ये पंचौषधिऋद्धयः श्रुततयोवृद्धिंगताः पंचये ॥ येचाष्टांगमहा निमित्तकुशला ये ष्टौविधाचारणा ॥ पंचज्ञानधराश्च येपि वलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वरा ॥ सप्तै ते सकलाश्च ते गणभृताः कुर्वं तु मे मङ्गलं ॥ ७ ॥ देव्यश्चाष्टजयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवता ॥ श्रीतीर्थं कर मातृकाश्च जन कायक्षाश्च यक्षीश्वराः ॥ द्वात्रिंशत् त्रिदशाग्रहानिधि सुरादिकन्यकाश्चाष्टधा ॥ दिक्पाला दश इत्यमीसुर

गणाः कुर्वं तु मे मङ्गलं ॥ ७ ॥ इत्थं श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदं कल्याण कालेर्हतां ॥ पूर्व्वाह्नेपि महोत्सवेपि सततं श्रीसौख्यसंपत्करं ॥ ये शृण्वंति पठंति तैश्च मनुजैर्धर्मार्थिकामान्विता ॥ लक्ष्मीराश्रयतेविपायरहिताः कुर्वं तु मे मङ्गलं ॥ ए ॥ इति श्री ॥

शिवं शुद्ध बुद्धं परं विश्वनाथं ॥ नदेवंनवंधुर्नकर्म नकर्ता नअंगं नसंगं नइच्छा नकामं ॥ चिदानन्दरुपं नमोवीतरगं ॥ १ ॥ नबंधो नमोक्षो नरागा दिलोकं ॥ नयोगंनजोगं नव्याधिर्नशोकं ॥ नक्रोधं नमानं नमाया नलोभं चि० ॥ २ ॥ नहस्तौ नपादौ नघ्राणं नजिह्वा नचक्षुर्नकर्णं नवक्त्रं ननिद्रा ॥ नस्वादं नखेदं नवर्णं नमुद्रा ॥ चि० ॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्युं नमोदं नचिंता ॥ न क्षुद्त्रद् ॥ नजीतं नकृष्यं नतुंदा, नस्वामीन भृत्यं नदेवोनमर्त्यं ॥ चि० ॥ ४ ॥ त्रिदंडे त्रिखंडेहरेविश्वव्यापं ॥ हृषीकेश विध्वस्त कर्म्मारिजालं ॥ न पुण्यं नपापं नअक्ष्यानप्राणं ॥ चि० ॥ ५ ॥ नबालं नवृद्धं नविद्वान्नमूढा ॥ नछेद्यं नभेद्यं नमूर्त्तिर्नमीहा नकृष्णं नशुक्लं नमोहं नतंद्रा ॥ चि० ॥ ६ ॥ नआद्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या ॥ नद्रव्यं नक्षेत्रं नदृष्टो न जव्या ॥ नगुर्वो नशिष्यो नआद्यो नदीनं चि० ॥ ७ ॥ इदंज्ञानरुपं स्वयंतत्त्ववेदी ॥ नपूर्णं न शून्यंसचैतन्य रूपं ॥ न अन्योभिन्निन्नंनपरमार्थमेकं ॥ चि० ॥ ८ ॥ आत्मारामगुणाकरं गुणनिधिश्चैतन्यरत्नाकरं ॥ सर्वे

नूतगतागते सुखदुखज्ञातात्वयासर्वग ॥त्रैलोक्याधि पतिस्वयंस्व मनसा ध्यायंति योगीश्वराः॥ वंदे तं हरि वंश हर्पहृदयं श्री मान नू दच्युतः ॥ ए ॥ इति श्रीपरमात्मास्तोत्रं ॥

॥ दर्शनं देवदेवस्य ॥ दर्शनं पापनाशनं ॥ दर्शनं स्वर्ग सोपानं ॥ दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेंद्राणां ॥ साधूनां वंदनेनच ॥ नतिष्टतिचिरं पा पं ॥ छिद्रहस्तेयथोदकं ॥ २ दर्शनं जिनसूर्यस्य ॥ सं सारध्वांतनाशनं ॥ बोधनंचित्तपद्मस्य समस्तार्थप्रका शकं ॥३॥ दर्शनंचजिनेंद्रस्य ॥ सद्धर्मामृतवर्पणं जन्म दाघविनाशाय ॥ वृद्दणंसुखवारिधेः ॥४॥ जिनेनक्ति जिनेनक्ति ॥ जिनेनक्ति दिनेदिने ॥ सदामेस्तु, स दामेस्तु, सदामेस्तु नवेनवे ॥ ५ ॥ नहित्राता नहि त्राता ॥ नहित्राता जगत्त्रये ॥ वीतरागसमोदेवो ॥ न नूतोन नविष्यति ॥ ६ ॥ अन्यथा शरणं नास्ति ॥ त्वमेवशरणं मम ॥ तस्मात् सर्व्व प्रयत्नेन॥रक्षरक्षजि नेश्वर ॥ ७ ॥ वीतरागमुखंदृष्ट्वा ॥ पद्मरागसमप्रनं ॥ ने कजन्मकृतंपापं ॥ दर्शनेनविनश्यति ॥ ८ ॥ अर्हंतो मंगलं नित्यं ॥ सिद्धाजगतिमंगलं ॥मंगलंसाधवोमु ख्यं ॥ धर्म्मः सर्व्वत्र मंगलं ॥ए॥ लोकोत्तमा ह्यर्ह तः ॥ सिद्धालोगोत्तमाः सदा ॥ लोकोत्तमोयतीशा नां ॥ धर्मोलोकोत्तमोर्हतां ॥१०॥ शरणं सर्व्वदार्हतः॥

सिद्धाशरणमंगलं ॥ साधवः शरणं लोके ॥ धर्म्मे शरणमर्हतां ॥ ११ ॥ इति श्रीनमस्कार स्तोत्रं ॥

॥ अथ ऋपिमंकल स्तोत्र ॥

॥ आद्यंताक्षरसंलक्ष्य ॥ मक्षरंव्याप्ययत्स्थितं ॥ अग्निज्वालासमंनाद ॥ विंदुरेखा समन्वितं ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रांतं ॥ मनोमलविशोधकं ॥ देदीप्यमानं हृत्पद्मे ॥ तत्पदंनौमिनिर्मलं ॥ २ ॥ अर्हमित्यक्षरंब्रह्म ॥ वाचकं परमेष्टिनः ॥ सिद्धचक्रस्य सद्बीजं ॥ सर्वतः प्रणिदध्महे ॥३॥ ॐ नमोर्हद्भ्यईशेभ्य, ॐ सिद्धेभ्योनमोनमः ॥ ॐ नमः सर्वसूरिभ्य ॥ उपाध्यायेभ्य ॐ नमः ॥४॥ ॐ नमः सर्व साधुभ्य ॥ ॐ ज्ञानेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ नमस्तत्त्वदृष्टिभ्य ॥ श्चारित्रेभ्यस्तु, ॐ नमः ॥५॥ श्रेयसेस्तु, श्रियेस्त्वेत ॥ दर्हदाद्यष्टकंशुभं ॥ स्थानेष्वष्टसुविन्यस्तं ॥ पृथग्वीजसमन्वितं ॥ ६ ॥ आद्यंपदंशिखांरक्षे ॥ त्परंरक्षेत्तु मस्तकं ॥ तृतीयं रक्षेन्नेत्रेद्वे ॥ तुर्ये रक्षेच्चनासिकां ॥ ७ ॥ पंचमंतुमुखंरक्षेत् ॥ षष्ठंरक्षेच्चघंटिकां ॥ नाभ्यंतंसप्तमंरक्षे ॥ रक्षेत्पादांतमष्टमं ॥ ८ ॥ पूर्वप्रणवतः सांत ॥ सरेफोद्व्यिधपंचपान् ॥ सप्ताष्टदशसर्यांकान् ॥ श्रितोविंदुस्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षरा आद्याः ॥ पंचातोज्ञानदर्शन ॥ चारित्रेभ्यो नमो मध्ये ॥ ह्रीं सांतहसमलंकृतः ॥१०॥ ॐ॥ ह्राँ ॥ ह्रीं॥ ह्रुँ ॥ ह्रूँ ॥ ह्रे ॥ ह्रौ ॥ ह्रौँ॥ ह्रः असिआउसा

ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्योनमः ॥ जंबूवृक्षधरोद्वीपः॥क्षारो
दधिसमावृतः ॥ अर्हदाद्यष्टकैरष्ट ॥ काष्टाधिष्टैरलंकृ
तः ॥ ११ ॥ तन्मध्य संगतोमेरुः ॥ कूटलक्षैरलंकृतः॥
उच्चैरुच्चैस्तरस्तार ॥ स्तारामंडलमंडितः ॥ १२ ॥
तस्योपरिसकारांतं वीजमध्यास्यसर्वगं ॥ नमामिविं
वमार्हत्यं ॥ ललाटस्थं निरंजनं ॥ १३ ॥ अक्षयं
निर्मलंशांतं ॥ वहुलं जाड्यतो ज्झितं ॥ निरीहं
निरहंकारं ॥ सारं सारतरं घनं ॥ १४ ॥ अनुद्धतं
शुभ्रं स्फीतं ॥ सात्विकं राजसंमतं ॥ तामसं चिर
संवुद्धं ॥ तैजसं शर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकारंच निरा
कारं ॥ सरसं विरसंपरं ॥ परापरं परातीतं ॥ परं
पर परापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णंच ॥ त्रिवर्णं तुर्य
वर्णकं ॥ पंचवर्णं महावर्णं ॥ सपरंच परापरं ॥ १७ ॥
सकलं निष्कलंतुष्ट ॥ निवृतं भ्रांतिवर्जितं ॥ निरंज
नं निराकारं ॥ निर्लेपं वीतसंश्रयं ॥ १८ ॥ ईश्वरं
ब्रह्मसंवुद्धं ॥ वुद्धं सिद्धं मतंगुरु ॥ ज्योतीरूपं महा
देवं ॥ लोकालोक प्रकाशकं ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु,
वर्णांतः ॥ सरेफोविंदुमंडितः तुर्यस्वरसमायुक्तो, वहु
धानादमालितः ॥ २० ॥ अस्मिन् वीजे स्थिताः
सर्व्वे ॥ वृषभाद्याजिनोत्तमाः ॥ वर्णैं र्निजैर्निजैर्यु
क्ता ॥ ध्यातव्यास्तत्रसंगताः ॥ २१ ॥ नादश्चं द्रसमा
कारो ॥ विंदुर्नीलसमप्रभः ॥ कलारुणसमासांतः ॥
स्वर्णाभः सर्वतोमुखः ॥२२॥ शिरः संलीन ईकारो ॥

विनीलोवर्णतःस्मृतः॥वर्णानुसारसंलीनं तीर्थकृन्मंडलं स्तुमः ॥२३॥ चंद्रप्रत्नपुष्पदंतौ॥नादस्थिति समाश्रितौ ॥ बिंदुमध्यगतौनेमि ॥ सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥ पद्म प्रत्नवासुपूज्यौ ॥ कलापदमधिष्टितौ शिरईस्थितिसंलीनौ ॥ पार्श्वमल्लीजिनेश्वरौ ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थकृतः सर्वे ॥ हरस्थाने नियोजिताः ॥ मायाबीजाक्षरंप्राप्ता ॥ श्चतुर्विंशतिरर्हतां ॥ २६ गतरागद्वेषमोहाः ॥ सर्वपापविवर्जिताः ॥ सर्वदाः सर्वकालेषु ॥ ते नवंतु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्ययच्चक्रं तस्य चक्रस्ययाविजा ॥ तयाछादित सर्वांङ्ग मामांहिनस्तु डाकिनी ॥ २८ ॥ देवदेवस्य० ॥ मामांहिंनस्तु, राकिनी ॥ २९ ॥ देवदे० ॥ मामांहिनस्तु, लाकिनी ॥ ॥ ३० ॥ देव० ॥ मामांहिनस्तु, काकिनी ॥ ३१ ॥ देवदे० ॥ मामांहिनस्तु शाकिनी ॥ ३२ ॥ देव० ॥ मामांहिनस्तु हाकिनी ॥ ३३ ॥ देव० ॥ मामांहिनस्तु याकिनी ॥ ३४ ॥ देव० ॥ मामांहिंसंतुपन्नगाः ॥ ३५ ॥ देव० ॥ मामांहिंसंतु हस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदे० ॥ मामांहिंसंतुराक्षसाः ॥ ३७ ॥ देव० ॥ मामांहिंसंतुवह्नयः ॥ ३८ ॥ देव० ॥ मामांहिंसंतु सिंहकाः ॥ ३९ ॥ देव० ॥ मामांहिंसंतु डुर्ज्जनाः ॥ ४० ॥ देवदे० ॥ मामांहिंसंतु नूमिपाः ॥ ४१ ॥ श्री गौतमस्ययामुद्रा ॥ तस्यायाद्भुविलब्धय, ॥ ताभिरज्युद्यतज्योति ॥ रर्हंसर्वनिधीश्वरः ॥ ४२ ॥ पातालवा

सिनो देवा ॥ देवाञ्जूपीठवासिनः ॥ स्वर्वासिनोपि ये देवाः ॥ सर्वे रक्षंतु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिल ब्धयो येतु ॥ परमावधिलब्धयः ॥ ते सर्वे मुनयोदे वाः ॥ मां संरक्षंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जनाञ्जूतवेता लाः ॥ पिशाचामुफलास्तथा ॥ तेसर्वेप्यु पशाम्यंतु दे वदेव प्रजावतः ॥४५॥ ॐ ह्रीं श्रीश्चधृतिर्लक्ष्मी ॥ गौ री चंमी सरस्वती ॥ जया वा विजयानित्या ॥ क्लि न्नाजितामद ऽवा ॥ ४६ ॥ कामांगाकामवाणाच ॥ सानंदानंदमालिनी ॥ माया मायाविनी रौद्री ॥ क ला कालीकलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वामहादेव्यो ॥ वर्त्ततेयाजगत्त्रये ॥ मह्यंसर्वाः प्रयच्छंतु ॥ कांतिंकीर्तिं धृतिं मतिं ॥ ४७ ॥ दिव्यो गोप्यः सुदुः प्राप्यः श्री ऋषिमंमलस्तवः ॥ जाषितस्तीर्थनाथेन जगत्त्राण कृ तेनयः ॥ ४ए ॥ रणेराजकुलेवह्नौ ॥ जलेदुर्गे गजे ह रौ ॥ श्मशाने विपिने घोरे ॥ स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यञ्रष्टा निजं राज्यं ॥ पदञ्रष्टा निजं प दं ॥ लक्ष्मीजृष्टानिजां लक्ष्मीं ॥ प्राप्नुवंति न संश यः ॥ ५१ ॥ जार्यार्थीलजते जार्यां ॥ पुत्रार्थी लजते सुतं ॥ वित्तार्थी लजते वित्तं ॥ नरः स्मरण मात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णेरूप्ये पटेकांस्ये ॥ लिखित्वा यस्तुपूज येत् ॥ तस्यैवाष्टमहासिद्धि ॥ गृहेवसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ जूर्जपत्रेलिखित्वेदं ॥ गलके मूर्ध्नि वाजुजं ॥ धारितं सर्वदा दिव्यं ॥ सर्वजीति विनाशकं ॥ ५४ ॥

भूतैः प्रेतैर्ग्रहै र्यक्षैः ॥ पिशाचैर्मुद्गलैर्मलैः ॥ वातपित्त कफोद्रेकै, र्मुच्यते नात्रसंशयः ॥५५॥ भूर्भु वः स्वस्त्र यीपीठ ॥ वर्तिनः शाश्वता जिनाः ॥ तैस्तुतैर्वंदितै र्दृष्टै, र्यत्फलं तत्फलंश्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतद्गोप्यंमहा स्तोत्रं ॥ नदेयं यस्यकस्यचित् ॥ मिथ्यात्व वासिने द त्ते ॥ बालहत्या पदेपदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादितपः कृत्वा ॥ पूजयित्वाजिनावली ॥ अष्टसाहस्रिको जा पः ॥ कार्यं स्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरंप्रा त ॥ येंपठंति दिने दिने ॥ तेषां नव्याधयो देहे ॥ प्रभवंति नचापदः ॥ ५९ ॥ अष्टमासावधियावत् ॥ प्रातःप्रातस्तुयःपठेत् ॥ स्तोत्रमेत न्महातेजो ॥ जिन बिंबं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यर्हतोबिंबेभवेसप्त मके ध्रुवं ॥ पदंप्राप्नोतिशुद्धात्मा ॥ परमानंदनंदितः ॥ ६१ ॥ विश्ववंद्यो भवेत् ध्याता ॥ कल्याणानिचसो श्नुते ॥ गत्वास्थानंपरं सोपि ॥ भूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं ॥ स्तुतीनामुत्तमंपरं॥ पठनात्स्मरणाज्जापा ल्लभ्यते पदमुत्तमं ॥ ६३ ॥ इति श्रीऋषिमंडलस्तोत्रं ॥ क्षेपकश्लोकान्निराकृत्यमूलयं त्रकल्पानुसारेण लिखितं गणिभिः श्रीक्षमाकल्या णो पाध्यायैः तस्योपरि मयापि लिखितं इदं स्तोत्रं ॥

॥ अथ श्रीगोमीपार्श्वजिन वृद्धस्तवनलि० ॥

॥ (दूहा) वाणी ब्रह्मावादनी ॥ जागे जगवि ख्यात ॥ पासतणा गुणगावतां ॥ मुफ मुख वसज्यो

मात ॥ १ ॥ नारंगैअणहिलपुरे ॥ अहमदा वादे पास ॥ गौडीजी धणी जागतो ॥ सहुनी पूरे आस ॥ २ ॥ सुज्ञ वेला सुज्ञदिन घमी॥महुरत एकमंमाण॥ प्रतिमा ते इह पासनी ॥ थई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥ (ढाल) गुणहि विसाला मंगलीक माला ॥ वामा नो सुत साचोजी ॥ धण कणकंचण मणिमाणकदे ॥ गौडीजी धणी जाचोजी ॥४॥ (गु०) अणहिलपुर पाटणमांहे प्रतिमा ॥ तुरक तणें घर हुंतीजी ॥ अशवनी ज्ञूमि अशवनी पीमा ॥ अशवनी वालि विगू ती जी ॥ ५ ॥ (गु०) जागंतो जक्ष जेहनें कहि यै ॥ सुहणो तुरकनै आपैजी ॥ पासजिने सर केरी प्रतिमा ॥ सेवक तुझ संतापै जी ॥ ६ ॥ (गु०) अह उठीनें परगट कर जे ॥ मेघा गोठीनें देजे जी ॥ अधिको मलेजे उंगो मलेजे ॥ टका पांचसे लेजेजी ॥ ७ ॥ (गु०) नहिं आपिस तोमारीस मुर मीस ॥ मोर बंध बंधास्यैजी ॥ पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुझ ॥ लछि धणी घरजास्यै जी ॥ ८ ॥ (गु०) मारग पहिलो तुझनें मिलस्यै ॥ सारथवाइजेगोठी जी ॥ निलवट टीलो चोखा चोड्या ॥ वस्तु वहै तसुपोठी जी ॥ ९ ॥ (गु०) (दूहा) मनसुंवीहनो तुरकडो ॥ मानें वचन प्रमाण ॥ वीवीनेंसुहणा तणो ॥ संज्ञलावै सहिनाण ॥ १० ॥ वीवी वोलै तुरकनें ॥ वमा देव है कोय॥अवसताव परगटकरो॥

नहींतो मारै सोय ॥ ११ ॥ पाछलीरात परोढीयै ॥ पहली वंधे पाज ॥ सुहणा माहेंसेठनें ॥ संभलावे जक्क राज ॥ १२ ॥ (ढाल) एम कही यक्ष आयो राते ॥ सारथ वाहुनेंसुहणें जी ॥ पासतणी प्रतिमा तुंलेजे ॥ लेतो सिरमत धुणे जी ॥१३॥ (एम०) पांचसैटका तेहनें आपे ॥ अधिको मा आपिस वारूजी ॥ जतन करी पुहचाडे थानकि ॥ प्रतिमा गुण संभारै जी ॥ १४ ॥ (एम०) तुऊनें होसी वहु फलदायक ॥ जाई गोठीनें सुणजे जी ॥ पुजी स प्रणमीस तेहनापाया ॥ प्रहउठीनें थुणजे जी ॥ १५ ॥ (ए०) सुहणो देईनें सुरचाल्यो ॥ अपनें थानक पहुतोजो ॥ पाटण मांहें सारथवाहु ॥ हींडे तुरकनें जोतोजी ॥ १६ ॥ (ए०) तुरकै जातां दीठो गोठी ॥ चोखा तिलक लिलाडे जी ॥ संकेत पहुतो साचोजाणी ॥ वोलावे वहुलाभैजी ॥ १७ ॥ (ऐ०) मुऊ घरि प्रतिमा तुऊनें आपुं ॥ पास जिणेसर केरीजी ॥ पांचसै टका जो मुऊ आपै ॥ मोलन मागुं फेरीजी ॥ १८ ॥ (ए०) नाणो देई प्रतिमा लेई ॥ थानक पहुतों रंगेजी ॥ केसरचंदन मृगमद घोली ॥ विधसुं पूजे रंगेजी ॥ १९ ॥ (ए०) गादी रूनी रूनी कीधी ॥ ते मांहि प्रतिमा राखेजी ॥ अनुक्रम आव्यापारकरमांहें ॥ श्रीसंघनें सुर सा खे जी ॥ २० ॥ (ए०) उछव दिनर अधिका

थाये ॥ सत्तर भेद सनात्रो जी ॥ गामर ना दर सण करवा ॥ आवे लोक प्रनातो जी ॥ २१ ॥ (ए०) (दुहा) इकदिन देखै अवधिसुं॥ पारकर पुरनो नंग ॥ जतनकरुं प्रतिमा तणो ॥ तीरथ अछै अनं ग ॥ २२ ॥ सुहणो आपै सेठनें ॥ थल अटवी उज्जा रु ॥ महिमा थास्यै अति घणी ॥ प्रतिमा तिहां पुहचाड ॥ २३ ॥ कुसल खेम तिहां अछै ॥ मुझनें तुझनें जाणि ॥ संका छोडी काम करि ॥ करतो मकरिस काणि ॥ २४ ॥ (ढाल) पास मनोरथ पूराकरै ॥ वाहण एक वृषन्न जो तरै ॥ पारकरथी परियाणो करै ॥ इक थलचढ वीजो ऊतरै ॥ २५ ॥ बारै कोस आव्या जेतलै ॥ प्रतिमा नविचालै ते तलै ॥ गोठी मनह विमासण थई ॥ पास भुवन मंडा वूं सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किमकरुं प्रयाण ॥ कुटको कोइनदीसै पाहण ॥ देवल पास जिनेसर तणो ॥ मंडावुं किम गरथै विणो ॥ २७ ॥ जलविन श्रीसंघरहस्यै किहां ॥ सिलावटो किम आवै इहां ॥ चिंतातुर थयो निद्रालहै ॥ यक्षराज आवीनें कहै ॥ २८ ॥ गुंहली ऊपर नांणो जिहां ॥ गरथघणो जाणीजे तिहां ॥ स्वस्तिक सोपारीनें ठाणि ॥ पाह ण तणी उघटस्यै खाणि ॥ २९ ॥ श्रीफल सजल तिहां किल जूओ ॥ अमृत जलनीसरसी कूओ ॥ खाराकूआ तणो इह सैनांण ॥ भूम पड्यो छै नीलो

ठाण ॥ ३० ॥ सिलावटो सीरोही वसै ॥ कोढपरा जवियो किसमिसै ॥ तिहां थकी तू इहां आणजे ॥ सत्यवचन माहरो मान जे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मनथिर थापियो ॥ सिलावटनें सुहणो दियो ॥ रोगगमीनें पूरुं आस ॥ पास तणो मंडं आवास ॥ ३२ ॥ सुपन माहे मान्यो तेवैण ॥ हेम वरण देखाड्यो नैण ॥ गोठी मनह मनोरथ हुवा ॥ सिलावटैने गया तेरुवा ॥ ३३ ॥ सिला वटो आवै समरो ॥ जीमें खीरखांड घृत चूरमो ॥ घडै घाट करै कोरणी ॥ लगन जलै पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंजर कीधी पूतली ॥ नाटक कौतिक करती रली ॥ रंग मंडप रलियामणो रसै ॥ जोतां मानवनो मन हसै ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्रासाद ॥ स्वर्गसमो मंडे संवाद ॥ दिवस विचारी इंडोघड्यो ॥ ततखिण देवल ऊपर चड्यो ॥ ३६ ॥ शुज लगन शुज वेलावास ॥ पवासण वैठा श्रीपास ॥ महिमा मोटी मेरुसमान ॥ एकल मल्लवगडे रहै वान ॥ ३७ ॥ वात पुराणी में सांज. ली ॥ तवन मांहि सूधी सांकली ॥ गोठी तणा गोतरीया अछै ॥ यात्र करीनें परणे पछै ॥ ३८ ॥ (दूहा) विघन विडारण यक्ष जगि ॥ तेहनो अकल सरूप ॥ प्रीतकरी श्रीसंघनें ॥ देखाडे निजरूप ॥ ३९ ॥ गिरुओ गौमी पासजिन ॥ आपे अरथजंमार ॥ सानिध करै श्रीसंघनें ॥ आस्या पूरणहार ॥ ४० ॥ नील

पलाणै नीलहय ॥ नीलो थइ असवार ॥ मारग चूकामानवी ॥ वाट दिखावण हार ॥ ४१ ॥ (ढाल) वरण अढार तणो लहै जोग ॥ विघन निवारै टालै रोग ॥ पवित्र थई समरै जे जाप ॥ टालै सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निरधनने घरि धन नो सूत्र ॥ आपै अपुत्रीयानें पुत्र ॥ कायरनें सूरापण धरै ॥ पार उतारै लछी वरै ॥ ४३ ॥ दो जागीनें दै सोजा ग ॥ पगविहूणानें आपै पग ॥ गामनहीं तेहनें धैगा म ॥ वंछित पूरै अभिराम ॥ ४४ ॥ निरधास्या नें घे आधार ॥ जवसायर ऊतारै पार ॥ आरतीआनी आर त जंग ॥ धरै ध्यान ते लहै सुरंग ॥ ४५ ॥ समर्थ्यां सहाय दीयै यक्ष राज ॥ तेहना मोटा अछे दिवाज ॥ बुद्धि हीणनें बुद्धि प्रकास ॥ गूंगानें धै वचन विला स ॥ ४६ ॥ दुखियांने सुखनो दातार ॥ जय जंजण रंजण अवतार ॥ बंधन तूटै वेडी तणा ॥ श्रीपार्श्व नाम अक्षर समरणा ॥ ४७ ॥ (दूहा) श्रीपार्श्व नाम अक्षर जपै ॥ विश्वानर विसराल ॥ हस्ति यूथ दूरेटलै ॥ दुरूरसींह सियाल ॥ ४८ ॥ चोर तणा जयचकवै ॥ विष अमृत उडकार ॥ विषधरनो विष ऊतरै ॥ संग्रामें जयजयकार ॥ ४९ ॥ रोग दालिद्र दुःख ॥ दोहग दूर पुलाय ॥ परमेसर श्री पासनो ॥ महिमा मन्त्र जपाय ॥ ५० ॥ (करूखानीचाल) १ उंजितुं उंजितुं उंज उपसम धरी ॥ ॐ ह्रीं श्री श्री

पार्श्व अक्षर जपंते ॥ नूतनें प्रेत कोटिंग व्यंतर सुरा उपसमै ॥ वार इकवीस गुणंतें ॥ ५१ ॥ (उं०) डुरूरा रोग सोगा जरा जंतनें ॥ ताव एकांतरा डुत्तपंते ॥ गर्नबंधन व्रणं सर्पविन्नू विपं ॥ चालिका वालमेवा ऊखंते ॥ ५२ ॥ (उं) साइणी माइणी रोहणी रंकणी ॥ फोटका मोटका दोपढुंतें ॥ दाढ उंदरतणी कोल नोला तणी ॥ स्वान सीयाल विक रालदंतें ॥ ५३ ॥ (उं) धरणेंड पद्मावती समर सोनावती ॥ वाट आघाट अटवी अटंते ॥ लखमी लीलामिलै सुजस वेला वलै ॥ सयल आस्या फलै मन हसंतें ॥ ५४ ॥ (उं० ॥ अष्टमहानय हरे कान पीका टलै ॥ ऊतरै सूल सीसगनणंते ॥ वदत वर प्रीतसुं प्रीति विमला प्रनू ॥ श्रीपास जिण नाम अनिराम मंतै ॥ ५५ ॥ (उं जितु) इति श्रीगोडी पार्श्वनाथ जी वृद्ध स्तवन समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीनीरुनंजन पार्श्वनाथ छंद ॥

॥ नुजंगी छंदनी चाल ॥

॥ वारु विश्वमां देश काशी विराजे, जिहां जान्ह वी नीर गंनीर गाजे ॥ पुरी नाम वाराणसी तिहां प्रसिद्धि, शोना स्वर्गनी जिणे उलाली लीधी ॥ १ ॥ घणुं शुं वखाणे कवि घाट तेहनो, सहु चित्त चाहे जोवा रूप जेहनो ॥ धराधीश तिहां खड्गधारी धरा ने पाले, प्रेमशुं अश्वसेनानिधाने ॥ २ ॥ वामा तेह

नी गेहनी रूपे रंजा, शीले सर्व नारी जीती ए अचं
जा ॥ सदा सुंदरी ते सोहे चंद्र वयणी, सुती सेज
मां एकदा मध्य रयणी ॥ ३ ॥ सुरलोक दशमां थकी
जे सनूरे, प्रनुपार्श्व वामाकुखे पुण्यपूरे ॥ चतुर्थिदिने
चैत्रनी कृष्ण पक्ष, वस्या गर्नवासे विशाखा सुरंदे
॥ ४ ॥ देवी चौद सुहणां तदा दिव्य देखे, महामो
द पामी माने तेह लेखे ॥ जायो पोश मासे दशमी
अंधारी, आखाविश्वनो जेह ज्योतकारी ॥ ५ ॥
मलि दिगकुमारी सुरेंद्रे मलायो, गायो हूलरायो
पूजीने वधायो ॥ वधंते प्रनु यौवने जाम जायो,
प्रनावती राज कन्या प्रणायो ॥ ६ ॥ विषय नोग
विलशी वस्या गृहवासे, वरश त्रीशमे व्रत लीधुं
उल्लासे ॥ न्याशी रात्रि मौने रह्या मुक्ति वासी, तप
स्या करी शुक्ल ध्यानान्यासी, ॥ ७ ॥ चोखे चित्त निर
दोष चारित्र पाली, बहु कर्मना वृक्षनां मूल वाली ॥
थया केवली चैत्रनी कृष्ण चोथे, देखे लोक अलोकने
ज्ञान ज्योते ॥८॥ मली देवताये महामोदधारी, कस्यो
त्रिगडो विश्व व्यामोह कारी ॥ स्वामी दिव्य सिंहासने
वेगसोहे ॥ वारे परखदानां बहु मन्नमोहे ॥ ए ॥
नवे नेहशुं एहने जे निहाले ॥त्रिधा ताप संताप ते दूर
टाले ॥ अहो एक नजरे जिणे एह दीठो, मुने मान
खो तेहनो लागे मीठो ॥ १० ॥ दीये देशना दीन
बंधु दयानी, प्राणी पुण्य पामी सुणो जैन वाणी ॥

लही दुर्लभं मानवं ए शरीरं, मुधा कां गमोछो बुध बोध हीरं ॥ ११ ॥ मदे जेह माता पड्या मोह पासे, धने जेह धाता विषयने विलासे ॥ मुंजाया मुग्ध माया तणा फंद मांही, मिथ्या ते ग्रस्या शुद्धने ते न चाही ॥ १२ ॥ धरे धर्मने जे होइ धर्म धोरी; तजी कर्मने ते कापे कर्म दोरी ॥ जजी शुद्धने ते लहे शुद्ध हेतु, थाय तेह मिथ्याततनो धूम केतु ॥ १३ ॥ वसी वासना जेहनी जैन वयणे, नावे आमलो तेहने कोइ नयणे ॥ जेहनां चित्त सिद्धांत मांहे रमेछे, किम तेह जूला कहोने जमेछे ॥ १४ ॥ मिथ्याते लीना तेहने ते गमेछे, दोषी जीवना ते जिहां तिहां दमेछे ॥ फरी लाख चोराशीना फेर मांहे, विना नाथ तेहने धरे कोण बाहे ॥ १५ ॥ जिणे जैन सिद्धांतनी युक्ति जाणी, कहोनेकोइ तेहने गमे अन्यवाणी ॥ हीरे जे हव्यो उलखी हेत आणी, कहो किम ते संग्रहे काच प्राणी ॥ १६ ॥ देइ देशनाने प्रजु तीर्थ थापे, जग जंतु बंधुपणे बोध आपे ॥ मही मंमले विचरे जेम वायु, पुरुं जोगवी एकसो वर्ष आयु ॥ १७ ॥ मासे श्रावणे शैल समेत शृंगे, वश्या श्वेत पष्टी दिने मुक्तिसंगे ॥ प्रजु जीरु जंजन नामे जजंता, जांजे जीडने सुख आपे अनंता ॥ १८ ॥ सेवो शुद्ध बुद्धे सदा बोध दाता, जजो जाव जक्ते प्रजु जूत त्राता ॥ सेव्यो हेजशुं एह सहजे सधारे,

पूज्यो प्रेमशुं पापना वंध वारे ॥ १९ ॥ वधे वंदतां संपदा जे वधारे, धर्खुं ध्यानमां सेवकां वाहे धारे ॥ अच्यों उल्लटे आपदाथी उगारे, स्तव्यो त्रिविधे जेह संसार तारे ॥ २० ॥ नम्यो नेहशुं जेह नवेनिद्धि आपे, कीजे चाकरी तो चारे गति कापे ॥ जोतां जेहनी आदि कोई न जाणे, कवि तेहना गुण केता वखाणे ॥ २१ ॥ नमो नाथ अनाथ सनाथ कारी, नमस्ते अरूपी बहु रूपधारी ॥ नमो बुद्धि शुद्धा तमा सिद्धि भर्त्ता, नमो पारगामी नमो सौख्य कर्त्ता ॥ २२ ॥ नमो मुक्ति दाता नमो तुं विधाता, नमो विश्वनेता नमो तुं विख्याता ॥ नमो सर्व वेदी अवेदी नमस्ते. नमो शंकरो सर्वव्यापी नमस्ते ॥ २३ ॥ सेढी वेत्रवत्योपकंठे दिदारु, खेडुं हरीआलुं वसे गाम वारु ॥ राजे तत्र त्रेवीशमो तीर्थराय, जेहना नामथी कोटि कल्याण थाय ॥ २४ ॥ धरणेंद्र पद्मा वतीने पसाय, सदा संघना विघ्न दूरे पलाय ॥ उद यरत्न भांखे गाता पार्श्वस्वामी, पूरी आजमेंतो नवे निद्धिपामी ॥ २५ ॥

॥ अथ सरस्वती अष्टक प्रारंभः ॥

॥ हरिगीत छंद ॥

॥ बुद्ध विमलकर नाव बुधवर, निरूप रमनी, निर खियें ॥ वर देय न वाला, पद प्रवाला, मंत्रमा ला हर खियें ॥ स्थिर थानंभा, अति अचंभा, रूप

रंभा झलकती ॥ भजियें भवानी, जगत जानी, राज रानी सरस्वती ॥ १ ॥ सुरराज सेवित, देख दैवत, पद्म पेखत, आसनं ॥ सुखदाय सूरति, माय मूरति, दुःख दुरति निवारनं ॥ त्रिहु लोक तारक, विघ्न वारक, धरा धारक, धरपती ॥ भजियें० ॥ २ ॥ केवियां कोपित, लोभ लोपित, अवनि ओपित, ईश्व री ॥ शंतोष धारन, विघन वारन, मदन मारन, महेश्वरी ॥ खल दल्लां खंडन, विद्ध ठंडन, दुष्ट दंडन, नरपती ॥ भजियें० ॥३॥ शिव शक्ति साची, रंग राची, अज अजाची, योगिनी ॥ मद झरन मत्ता तरन तत्ता, धत्त धत्ता ध्वंगिनी ॥ जिनआणपंति, मन रमंति, धवल दंति, वरमती ॥ भजियें० ॥ ४ ॥ जलथल जनानी पव न पानी, मति वखानी, वीजली ॥ गिरवरां गहन, वाघ वाहन, सर्प साहन, शीतली ॥ हदहांक धारी, हत हजारी, धनुप धारी, भगवती ॥ भजियें० ॥ ५ ॥ झणणाट झल्लरि, घिधिम धपवरि, रिरिरिरधर, खजि यें॥धिधिधोंकिधों, गरुदि धिधिक धिरतं, धिधिक धोंग म्दी गज्जियें ॥ झांकिड्डोंड्डों रुरुरु मतिड्डां त्तत्तकि त्रांत्रां दमकती ॥ भजियें० ॥ ६ ॥ रिरि रमकि रमि रिमि, झिझिम झिमि झिमि ठमकि ठम पग रच्चि यें ॥ घम घमकि घम घम ग्रहणिक ग्रहणि, गमअ ति अमग नृत्ति मच्चियें ॥ तत थेइय तांनन, मात मानन, अचल आनन दरसती ॥ भजियें ॥ ७ ॥ चव

चक्र चालन, फटिक फालन, गर्व गालन, गंजनी ॥ विरदां विदारन, महिष मारन, दलिद्र दारन, नंजनी ॥ चरचिये चंडी, खलांखंमी, मदन मंडी मलकती ॥ नजियें ॥ ७ ॥ कविकरे अष्टक, टले कष्टक विसन पृष्टक कज्जियें ॥ मणिमौलि मंडित, पढेपंकित, ए अखंकित पेखियें ॥ दयासुर देवी, सुरांसेवी, नित नमेवी, जगपती ॥ नजियें० ॥ ए ॥ इति समाप्त ॥

॥ अथ क्रोध मान माया लोजनो ठंद ॥

॥ चोपाइ ॥

॥ पहेलां सरस्वतीनुं लीजे नाम, चोवीश जिनने करुं प्रणाम ॥ क्रोध मान मायाने लोज, नाखुं अर्थ करी थिर थोज ॥ क्रोधें तप कीधो परजले, क्रोधें कर्म घणेरां फले ॥ क्रोधें करणी रूडी जाय, क्रोधें समतारस सूकाय ॥ २ ॥ क्रोध तणे वश कांइ नवि गणे, मातपिता गुरुने अवगणे ॥ क्रोधें पंचेंद्रिय मूकाय, क्रोधें फेर घणेरो थाय ॥ ३ ॥ क्रोधें विकथा वाधे घणी, क्रोधें कर्म निकाचित जणी ॥ क्रोधें बे बंधव आफले, क्रोधें नरत बाहुबल लडे ॥ ॥ ४ ॥ क्रोधें अचंकारी नटा, क्रोधें परशुं करे खटपटा ॥ क्रोधें अरजुन मालि नाम, महावीर स्वामी किधो सुठाम ॥ ५ ॥ क्रोधें कूड कपट केलवें, क्रोधें ञुंकि गति मेलवे ॥ क्रोधें फरसराम फरसी फेरवे, क्रोधें सुजुम दल मेलवे ॥ ६ ॥ क्रोधें ब्रह्मदत्त थयो

कठोर, ब्राह्मण डोला काढ्या जोर ॥ क्रोधें साधु थई नणंद, सुजद्रासती शिर कीधो फंद ॥ ७ ॥ क्रोधें काया कर्मनो बंध, क्रोधें घरमां पैसे धंध ॥ क्रोधें चेडो ते महाराय, हल विहल मामा घरजाय ॥ ८ ॥ क्रोधें कोणिक कटकी करे, चांगी विशाला पठो फरे ॥ क्रोधें लखमणने वलि राम, क्रोधें रावण टाल्यो गाम ॥ ए ॥ क्रोधतणी ठे खोटी वात, कोईन करशो एहनी तात ॥ क्रोधें कर्म घणां बंधाय, क्रोधें डुर्गति पकमा जाय ॥ १० ॥ तेह जणीसह ठंडो क्रोध, सुख निरवाध लहो वलि बोध ॥ मान तणी हवे सुणजो वात, मानतजे ते सबल सुजात ॥ ११ ॥ माने मान तुरंगें चडे, माने मोह जालमां पडे ॥ माने नीच कुलें अवतरें, माने विनय मूल नविजडे ॥ १२ ॥ माने चउगतिने अनुसरे, माने जंबुक जव मांहे फिरे ॥ शांब प्रद्युम्न कलो निचार, माने शियाल तणो अवतार ॥ १३ ॥ माने बलराजा निरधार, ब्राह्मण रूप धर्यो मोरार ॥ मान गयंद तणोठे जोर, बाहुबंलि ठांड्यो एकठोर ॥ १४ ॥ मान तणीठे वधती वेल, माने नमिया डुखनी रेल ॥ माने वीरमती ते नार, चंदनें कीधो कुर्कट सार ॥ १५ ॥ प्रेमला लछी हाथें चमी,सूरज कुंडे कीधो नर फरी॥ माने डुर्योधन डुःख लहे, माने सर्पनी उपमा कहे ॥ १६ ॥ माने धर्म न पामे कदा, माने कर्म बंधाये

सदा ॥ माने मान वधंतो होय, माने जीव फरे सहु कोय ॥ १७ ॥ माने वुरू गलें नर सोय, मान तजे ते सुखियो होय ॥ माने गज असवारी करे, माने जीव अगोचर फिरे ॥ १८ ॥ मानतणी ते ए गति कही, धर्मी नरते सुणजो सही ॥ हवे मायानो कहुं विचार, माया नरक तणो छे गार ॥ १९ ॥ मायामोह तणोछे दोष, माया कर्म तणोछे पोष ॥ माया कपटें मल्लिनाथ, माया मोह तणोछे साथ ॥ २० ॥ माया यें कूम कपट केलवे, माहायें चुंरी गति मेलवे ॥ माया मानव जूठोलवे, माया नरनारी शोपवे ॥ २१ ॥ माया आखाम जूति मुणींद, मायायें लाकु वोंहोस्था फंद ॥ माया मोहो टो छे मकरंद, माया पडिया सूरज चंद ॥ २२ ॥ माया फंद तणीजे जाल, माया सिंह तणीछे फाल ॥ माया अधिक करे उफंड, माया कर्म तणोछे कुंम ॥ २३ ॥ माया मांहे धर्म न थाय, माया पुएय करे अंतराय ॥ २४ ॥ छोहोटो महोटो माया धरे, माया सवल संसारें फिरे ॥ माया जालें वांध्यो जीव, मायाये प्राणी करतो रीव ॥ २५ ॥ अर्थ कह्यो मायानो सार, लोन तणो हवे कहुं विस्तार ॥ लोने लक्षण जाये सहु, लोने पम्यिा दाणव वहु ॥२६॥ लोने लान घणेरो थाय, लोने नरनारी उजाय ॥ लोने गांमो घेलो होय, लोने धर्म न जाणे कोय ॥ २७॥ लोने सागर दत्त जलमां पड्यो, लोन सुजुम चक्रीने

नड्यो ॥ लोन्ने संचय धननो करे, माखी जिम मढू आलें फिरे ॥ २७ ॥ लोन्ने धन नवि खरचे धणी, वागुल नव पामशे कां फणी ॥ लोन्ने देश विदेशें जाय, लोन्ने नरनारी अफलाय ॥ २ए ॥ पुण्य होय तो पामें वली, वेगा धर्म करो मन रली ॥ क्रोध लोन्नो गंमोपास, श्रावक धर्म करी उल्लास ॥ ३० ॥ लोन्ने नाना मोटो जीव, लोन्ने अकार्य करे सदीव ॥ लोन्न तणी गति ठंमो सार, तीर्थयात्र करो उदार ॥ ३१ ॥ अढार पांत्रीसा वरश मफार, वागमदेश वडो मुसार॥देवदर्शनकरोसुखकार, पामो जिम नव सायर पार ॥ ३२ ॥ क्रोध मान माया नो संग, वली गंडो लोन्न प्रसंग ॥ कहे कवि सुणो पंमित राय, कांतिविजय हरखे गुण गाय ॥ ३३ ॥

॥ अथ श्रीमणिन्नद्रजीनो ठंद प्रारंन्नः ॥

॥ श्री मणिन्नद्र सदा समरो, उर बीचमें ध्यान अखंम धरो ॥ जपियां जय जयकार करो, न्नजियां सहु नित्य न्नंमार न्नरो ॥ १ ॥ जेकुशल करे नामज लियां, आनंद करे देव आश कियां ॥ सौन्नाग्य वधे जग सहस्सगुणो, दिलसेव्यादे प्रन्नु जश मुगुणो ॥ २ ॥ अरियण सहु अलगा न्नागे, विरुआवैरी जन पाय लागे ॥ संकट शोक वियोग हरे, उण वेला आय सहाय करे ॥ ३ ॥ न्नूत न्नयंकर सहु न्नागे, जक्ष जोगणी सायणी नवि लागे ॥ वाय चोराशी जायश्र

लगी, लखमी सहु आय मले वेगी ॥ ४ ॥ गुल पा पडियां गुरुवार दिने, लापसिया लाडु शुद्ध मने ॥ धुप दिप नैवेद्य धरो, आठम दिन पूजा अवश्य करो ॥ ५ ॥ जेहने दिनप्रति जाप सदा, तस सुपनांतरमे प्रत्यक्ष कदा ॥ जपियां सहु जाये आपदा, कोइ मणा घरे रहे न कदा ॥ ६ ॥ मुहमद सारु तमें जस कर्यो, गुण सार जिस्यो तमें गुण कस्यो ॥ श्री दीना नाथजी दया करो, शिर उपर हाथ दियो सखरो ॥ ७ ॥ नवियण जे नावें नजशें, कारज सिद्धि आपणी करशे ॥ पूज्यां पुत्र वधे डुगणा, किणी वातें कदि रहें नहि ऊणा ॥ ८ ॥ श्री मणिजद्र मनमें ध्यावो, सुख संपत्ति नहु वेगें पावो ॥ लक्ष्मी कीर्त्तिवर आप लहे, शिवकीर्त्ति मुनि एम सुजस कहे ॥ ए ॥

॥ अथश्रीमणिजद्रजीनी आरति प्रारंजः ॥

॥ जय जय निधि, जय माणिक देवा ॥ जयमा० ॥ हरि हर ब्रह्म पुरंदर, करता तुज सेवा ॥ जयदेव जयदेव ॥ १ ॥ तुं वीराधिप वीरा, तुं वंछित दाता ॥ तुंवं० ॥ माता पिता तुं सहोदर, छो प्रजु जगत्राता ॥ जय दे० ॥ २ ॥ हरि करी वंधन उदधी, फणिधर अरि अनला ॥ फणि० ॥ ए तुज नामे नासे, साते जय सघला ॥ जयदे० ॥ ३ ॥ नाक त्रिसुल फूल माला, पासांकुस छाजें ॥ पासां० ॥ एक कर दाणव मस्तक, एम षट् जुज राजे ॥ जयदे० ॥ ४ ॥ तुं

भैरव तुं किन्नर, तुं जग महादीवो ॥ तुंज० ॥ काम कल्पतरु धेनु, तुं प्रभु चिरंजीवो ॥ जयदे० ॥ ५ ॥ तपगच्छपति सुरि,ध्यावे तुझ ध्यानं ॥ ध्यावे० ॥ मणि भद्र भद्रकर, आशा विसरामं ॥ जयदे० ॥ ६ ॥ संवत् अढारहसें पांसठ, श्री माधव मास ॥ श्रीमा० ॥ दीपविजय कविरायनी, पूरो सहु आस ॥ जयदे० ॥ ॥ ७ ॥ इति श्रीमणिभद्रजीनी आरति ॥

॥ अथ ज्वर (ताव) छंद ॥

॥ दोहा ॥

॥ ॐ नमो आनंद पुरनगरे, अजयपाल राजान ॥ माता अजया जनमियो, ज्वर तुं कृपा निधान ॥ १ ॥ सातरूप शक्ति हुउं, करवा खेल जगत्त ॥ नाम धरा वे जूजुवा पसस्यो तुं इत्त उत्त ॥ २ ॥ एकांतरो वेयांतरो, त्रइयो चोथो ताम, शीत उष्ण विषम ज्वरो, ए साते तुज नाम ॥ ३ ॥

॥ छंद ॥

॥ ए साते तुज नाम सुरंगा, जपता पूरे कोडि उमंगा ॥ तें नाम्या जे जालिम जूगां, जगमां व्यापी तुज जस गंगा ॥ ४ ॥ तुज आगें भूपति सब रंका, त्रिभुवनमां वाजे तुज डंका ॥ माने नहिं तुं केहनी शंका, तूठो आपे सोवन टंका ॥ ५ ॥ साधक सिद्ध तणा मद मोडे, असुर सुरा तुज आगल दोडे ॥ दुष्ट धीठना कंधर तोडे, नमीचाले तेहने तुं छोडे ॥ ६ ॥

आवंतो थरहर कंपावे, झाल्लाने जिम तिम चहकावे पहिलो तुं केडमां थी आवे, सात शिरख पण शीत न जावे ॥ ७ ॥ हीं हीं हुं हुंकार करावे, पांशलिया हाडां कडडावें ॥ उनाले पण अमल जगावे, तापें पहिरणमां मूतरावे ॥ ८ ॥ आशो कार्त्तिकमां तुज जोरो, हव्यो न माने धागो दोरो ॥ देश विदेश पडावे शोरो, करे सर्व तुं तातो तोरो ॥ ९ ॥ तुं हाथीनां हाडां भंजे, पापीने ताडे करपंजे ॥ भक्ति वत्सल भावें जो रंजे, तो सेवकने कोय न गंजे ॥ १० ॥ फोडक तोडक डमरु डाकं, सुरपति सरिखा माने हाकं ॥ धमके धुंसड धांसड धाकं, चढतो चाले चंच ल चाकं ॥ ११ ॥ पिशुन पछाडण नहीको तोथी, तुज जस भीख्या जाय न. कोथी ॥ शी अणखील करो ए थोथी, मेहर करी अलगा रहो मोथी ॥ १२ ॥ भक्त थकी एवडीकां खेडो, अवल असिनां छांटां रेडो ॥ लाखा भक्तनो ए निवेडो, महाराज मूको मुज केडो ॥ १३ ॥ लाजवसोमां अजया राणी, गुरु आण मानो गुण खाणी ॥ घरें सिधावो करुणा आणी, कहुंछु नाके लींटी ताणी ॥ १४ ॥ मंत्र सहित ए छंदजे पढशे, तेहने ताव कदी नव चढशे ॥ कांति बल देही नीरोगं, लेहेशे लखमी लीला भोगं॥ १५ ॥

॥ ॐ नमो धरि आदि, बीज गुरु नाम वदीजें ॥ आनंदपुर अवनीश, अजयपाल आखीजें ॥ अजया

जात अढार, वांचिये साते वेटा ॥ जपतां एहिज जाप, नक्तसुं न करे खेटा ॥ उतरें अंग चढियो पल कमे, तारा वयणे मुदा ॥ कहे कांति रोग नावे कदि, सार मंत्र गणियें सदा ॥ १६ ॥ इति ज्वरछंद समाप्त ॥ ए छंद सात वार, अथवा एकवीश वार सांजले गणे तो ताप जतो रहे ॥

॥ अथ श्री यंत्र महिमा वर्णन छंद ॥

॥ चोपाइ ॥

॥ जिण चोवीशे पय प्रणमेवि, सहु गुरु तणा वचन निसुणेवि ॥ यंत्र तणो महिमा अति घणो, नावे बोलुं नवियण सुणो ॥ १ ॥ शोले कोठे लखियें वीश, सघला नय टाले जगदीश ॥ अगवीसमां रोग नय हरे, बत्रीसें स्तुति जय करे ॥ २ ॥ त्रीशे वलि सायणि नासंति, बत्रीसे सुख प्रसवते हुंति ॥ देवध्वजा जो लखियें इमें, परचक्र नय न होवे किमें ॥ ॥ ३ ॥ घर वारणे जो लखियें एह, कामण नव पराजवे तेह ॥ शाकणि संहारी न हुवे तिहां, चोत्रीसो यंत्र लखिये जिहां ॥ ४ ॥ चालिसे शीस रोग टले, पागे वयरी हेला दले ॥ अने वली ठाकरवे वहु मान वसुधा वलि वधारे वान ॥ ५ ॥ बासठे वंध्या गर्नज धरे, एसा वयण सद्गुरु उच्चरे ॥ चोसठनो महीमा छे घणो, मार्गे नय न होय कोइ तणो ॥ ६ ॥ वारि नय रिपु शाकणि तणां, चोसठना महिमा नहिं म

णां ॥ बावत्तरीभूत भूरि जेह. फूंके नर जय पामे ते
ह ॥ ७ ॥ पंचाशी पंथे भय हरे, अष्ठोतरशो शिव
सुख करे ॥ वीसोत्तरशो नयणे निरखंत, प्रवस वेद.
न ते नवि हुंत ॥ ८ ॥ बावनशोनो उली नीर, मुख
धोवे हुवे वाहालो वीर ॥ सतरिसयनो महिमा अ
नंत, तुछ बुद्धि किम जाणे जंत ॥ ९ ॥ एकसो बहु
त्तरो यंत्र प्रभाव, बालकने टाले दुष्ट भाव ॥ विहुंसो
नो यंत्र लखियें वार, वाणिज्य घणां होय हाट मभा
र ॥ १० ॥ त्रणशे नरनारीनो नेह, विंणछो वाधे
नही संदेह ॥ चारशे घर भय नवि होय, कण उत्प
त्ति घणी खेत्रे जोय ॥ ११ ॥ पांचसे महिला गर्भज
धरे, पुरुषहने पुत्र संतति करे ॥ छसे यंत्र होये सुख
कार, सातसे भगडे होये जय कार ॥ १२ ॥ नवसें
पंथे न लागे चोर, दशसें दुःखन पराभवे घोर ॥
इग्यारसें छे जे जीव दुष्ट, तेहना भय टाले उत्कृष्ट
॥ १३ ॥ वंदि मोक्ष बारसे होय, दश सहसे पुनः ते
हिजहोय ॥ वली सयलनीरक्षा करे, एमयंत्र तणी
महिमा विस्तरे ॥ १४ ॥ पंचाससे राजादिक मान,
शाकणि दोष निवारण ग्यान ॥ कंठे तथा मस्तक
जे धरे, अशुभ कर्मते शुद्धज करे ॥ १५ ॥ बावनना
नो मस्तके तथा, कंठे खेत्रपालनो हित सदा ॥ पण
यालीस शिर कंठे होय, सर्व वश्य थाय तस जोय ॥
॥ १६ ॥ कुंकुम गोरोचंदन सार, मृगमदसों चौदश

रवि वार ॥ पवित्र पणें पुष्य मूल नक्षत्र, एकमनां जो लखियें यंत्र ॥१७ ॥ पार्श्व जिनेश्वर तणे पसाय, अलिय विघन सव दूर पलाय ॥ पंक्ति अमर सुंद र इम कहे, पूजे परमारथ सव लहे ॥ १८ ॥

॥ अथ मंगल चार ॥

॥ सिद्धार्थ नृपति शोहे क्षत्रियकुंमें, तस घेर त्रिशलाकामिनीए ॥ गजवर गामिनी पोढीय नामि नी, चउद सुपन लहे जामिनी ए ॥ त्रुटक जामि नी मध्ये शोजतांरे, सुपनदेखे वाल ॥ मयगल रुप जनें केसरी, कमला कुसुमनो माल ॥ इंदु दिनकर ध्वजा सुंदर, कलश मंगल रूप ॥ पद्म सरजलनिधि उत्तम, अमर विमान अनूप ॥ रत्ननो अंवार उज्व ल, वन्हि निर्धूम ज्योत ॥ कल्याण मंगलकारी माहा, करत जग उद्योत चउद सुपन सूचित विश्व पूजि त, सकल सुख दातार ॥ मंगल पहेलुं वोली एए, श्री वीर जगदाधार ॥ १ ॥ मगध देशमां नयरी राजगृही, श्रेणिक नामें नरेशरू ए ॥ धनवर गोवर गाम वसे तिहां, वसुजूति विप्र मनोहरु ए ॥ त्रुट क ॥ मनोहरु तस मानिनी, पृथिवी नामें नार ॥ इंद्रजूति आदेश्र ठे, त्रण पुत्र तेहने सार ॥ यज्ञकर्म तेणें आदर्युं, वहु विप्रने समुदाय ॥ तेणें समे ति हां समोसख्या, चोवीशमा जिनराय ॥ उपदेश तेह नो सांजली, लीधो संजमजार ॥ अगीयार गणधर

थापीया,श्रीवीरें तेणी वार॥इन्द्रजूति गुरुजगतें थयो माहा लब्धिनो जंमार ॥ मंगल बीजुं बोलीयें, श्री गौतम प्रथम गणधार ॥ २ ॥ नंद नरिंदनो पाडली पुरवरें, सकमाल नामें मंत्री सरू ए ॥ लाछलदे तस नारी अनुपम, शीयलवती बहुसुखकरू ए ॥ त्रु टक ॥ सुखकरू संतान नव होय, पुत्र पुत्री सात ॥ शीयलवंतमां शिरोमणि, थूलीजद्र जग विख्यात ॥ मोह वशें वेश्या मंदिर, वस्या वर्षेजबार ॥ जोग जली पेरें जोगव्या, ते जाणे सहु संसार ॥ शुद्ध संजम पामी विषय वामी, पामी गुरु आदेश ॥ कोश्या आवासें रह्यो निश्चल, मग्यो नहीं लवलेश ॥ शुद्ध शीयल पाले विषय टाले, जगमां जे नर नार॥ मंगल त्रीजुं बोलीए, श्रीथूलिजद्र अणगार ॥ ३ ॥ हेममणि रूप मय घमित अनुपम, जडित कोशीसां तेजेंऊगेए ॥ सुरपति निर्मित त्रण गढ शोजित, मध्य सिंहासन ऊगमगे ए ॥ त्रुटक ॥ ऊगमगे जिन सिं हासने ए, वाजित्र कोमाकोम ॥ चार निकायना दे वता, ते सेवे बेहुकरजोड ॥ प्रातिहारज आठशुं रे, चोत्रीश अतिशयवंत ॥ समवसरणें विश्वनायक, शो जे श्री जगवंत ॥ सुरनर किन्नर मानवी, बेठीते पर्ष दा बार ॥ उपदेश दे अरिहंतजी, धर्मना चारप्रका र॥दान शीयल तप जावना रे, टाले सघलां कर्म ॥ मंगल चोथुं बोलीयें, जगमांहे श्रीजिनधर्म ॥ ए

चार मंगल गावशेजे, प्रजातें धरी प्रेम ॥ ते कोकि मंगल पामशे, उदयरत्न जांखेएम ॥ ४ ॥

॥ अथ जीडजंजन पार्श्वनाथनो छंद ॥

॥ फूलणा छंद प्रजाती ॥ जीडजंजन प्रजु जीड जंजन सदा, नहिंकदा निष्फल थायसेवा ॥ जविजन जावशुं जजन मांही जजे, परमपद संपदा तखत लेवा ॥ १ ॥ काशी वणारसी जिनपद पुरे जयो, वामा अश्वसेन सुत विश्वदीवो ॥ सेढीवेत्रक तटे खेटकपुरतपें, कल्पनी कोड कृपाल जीवो ॥ २ ॥ जीड जव जित्तिजय जावठ जंजणो, जक्ति जनरंज णोजावें जेट्यो ॥ आज जिनराज मुज काज सिख्यां सवे, मोह राजाननो मान मेट्यो ॥ ३ ॥ कोटि मन कामना सुजस बहु गामना, शिवसुख धामना आज साध्यां ॥ मंगल मालिका आज दीपालिका, मुज मन मंदिरें मोज वाध्या ॥ ४ ॥ पाठकें ठाठमें कान्ति वद आठमें, सतर अट्योत्तरें पासगायो ॥ उदयनिज दा सनो एह अरदास सुणि,हितधरी नाथजी हाथ सायो ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री गौतम गुरु प्रजात छंद ॥

जयोजयो गौतम गणधार, मोटी लब्धितणो जं डार ॥ समरे वंछित सुख दातार, जयो जयो गौतम गणधार ॥ १ ॥ वीरवजीरवको अणगार, चौद हजार मुनि शिर दार ॥ जपतां नाम होय जयकार ॥ ज

यो० ॥ २ ॥ गय गमणी रमणी जग सार, पुत्र कल
त्र सज्जन परिवार ॥ आपे कनक कोमि विस्तार ॥
जयो० ॥ ३ ॥ घरे घोमा पायक नहींपार, सुखासन
पालखी उदार ॥ वैरी विकट थाये विसराल ॥
जयो० ॥ ४ ॥ प्रह उठी जंपियें गणधार, रुद्धि
सिद्धि कमला दातार ॥ रूपरेख मयण अवतार
॥ जयो० ॥ ५ ॥ कवि रूप चंद गुरु केरो शिष्य,
गौतम गुरू प्रणमो निशदिस ॥ कहे गुण चंद ए
शमता गार ॥ जयो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वनाथ छंद ॥

॥ चोपाइ ॥ सकलसार सुरतरु जगजाणं, जसु
जस वास जगत परिमाणं ॥ सकल देव शिरमुगुट
सुचंगं, नमो नमो जिनपति मनरंगं ॥ १ ॥ पारुधी
च्छंद ॥ जो जन मन रंगं, अकल अजंगं, तेज तुरं
गं नीलंगं ॥ सवि शोजा संगं, दग्ध अनंगं, शिश
भुजंगं चतुरंग ॥ बहु पुण्य प्रसंगं, नित्य उछरंगं,
नव नव रंगं नारंगं ॥ कीरति जलगंगं, देश डुरंगं,
सुरपति संगं सारंगं ॥ १ ॥ सारंगा वर्क्रं, पुण्य पवि
त्रं, रुचिर चरित्रं जीवित्रं ॥ तेजो जित मित्रं, पंक
ज पत्रं, निर्मल नेत्रं सावित्रं ॥ जग जीवन मित्रं,
तरु सत सत्रं, मित्रामित्रं मावित्रं ॥ विश्वत्रय चित्रं,
चामर छत्रं, सीस धरित्रं पावित्रं ॥ २ ॥ पावित्रा
चरणं, त्रिभुवन सरणं मुगुटा चरणं आचरणं ॥ सुर

अर्चित चरणं, शिव सुख करणं, दारिद्र हरणं, आवरणं ॥ सुख संपत्ति जरणं जवजल तरणं, अघ संहरणं, उद्धरणं ॥ गोअमृत जरणं, जन मन हर णं, वरणावरणं आदरणं ॥ ३ ॥ आदरणा पालं, जाकजमालं, नित जूपालं अयुपालं ॥ अष्टमी शशि समजालं, देव दयालं, चैतन चालं सुकमालं ॥ त्रिजु वन रखवालं, महाडुकालं, महाविकरालं, जय टालं ॥ श्रृंगार रसालं, महकेमालं, हृदयविशालं जूपालं ॥ ४ ॥ कलश ॥ छप्पय ॥ अकल रूप उदा र, सार शिव संपत्ति कारक ॥ रोग सोग संताप, डुरिय डुह डुःख निवारक ॥ चिहुं दिश आण अखंम, चंम तप तेज दिणंदह ॥ अमर अपठर कोमि, गावे जस नमे नरिंदह ॥ श्री शंखेश्वर सुर मणि, पाय अधिक मंगल नीलो ॥ मुनि मेघराज कहे जिनवर जयो. श्री पार्श्वनाथ त्रिजुवन तिलो ॥ ५ ॥

॥ अथ गोमीपार्श्वनाथनो छंद ॥

॥ दोहा ॥ धवलधिंग गोमी धणी, सेवक जन साधार ॥ पंचम आरे पेखियें, साहिब जग आ धार ॥ १ ॥ जुजंग प्रयात वृत्तं ॥ तजोमान माया नजो जाव आणी, वामानंदनें सेवियें सार जाणी ॥ जुवो नाग नागिणी नाथ ध्यानें, पाम्या शक्रनी संप दा बोधि दानें ॥ २ ॥ वस्या पाटणें काल केतो धरामां, पधाम्या पछें प्रेमशुं पार करमां ॥ असीमा

वली वास कीधो विचारी, पूरे लोकनी आश त्रैलो क्य धारी ॥ ३ ॥ धरी हाथमां लाल कब्बान रंगें, ॥ जिम्मी गातम्मी, रातम्मी नील अंगें ॥ चडी नीलरू तेजीयें विघ्न वारे, अराध्या थकां पंथ जूलां सधारे ॥ ४ ॥ जेणें पाशगोम्मी तणा पाय पूज्या, शत्रु सर्वदा तेहना सर्व धूज्या ॥ सर्व देव देवी थयां आज ढोटां, प्रजु पार्श्वनां एक प्राक्रम मोहो टां ॥ ५ ॥ गोम्मी आप जोरे नव खंम गाजे, जेह थी शाकिनी डाकिनी दूर जाजे ॥ पुरे कामना पार्श्व गोडी प्रसिद्धो, हेलां मोहराज जेणें जेर कीधो ॥ ६ ॥ महा डुष्ट डुर्दंत जे जूत जूंडा, प्रजु नाम पामें सर्वत्रास गुंमा, जरा जन्मने रोगनां मूल कापे, आरध्यो सदा संपदा सुख आपे ॥ ७ ॥ उदय रत्न जांखे नमो पार्श्व गोडी, नाखो नाथजी डुःखनी जाल त्रोडी ॥ ८ ॥

अथ चोत्रीस अतिशयनो ढंद ॥

॥ श्री सुमति दायक, डुरित घायक, ज्ञान अनु जव श्रीवरी ॥ तस सुगुरु केरा, चरण प्रणमुं, जुग म कर जोडी करी ॥ १ ॥ वहु जाव जक्कें, थुणु जिनवर, चोत्रीसें अतिशयें करी ॥ जे सुगुरु मुख थी, सुणयांते कहुं, आगम शास्त्रें अनुसरी ॥ २ ॥ तिहां प्रथम अतिशयें, श्री जिन केरा, रोम नख वाधे नहीं ॥ नीरोग निर्मल गात्र अस्ति द्वितीय

अतिशय ए सही ॥ ३ ॥ गोदुग्ध सरिखो, मांस लोही, तृतीय तेह वखाणियें ॥ चोथो ते उत्पल गंध सरिखो, श्वासोच्छ्वास सुजाणियें ॥ ४ ॥ आहारने नीहार प्रछन्न, एह अतिशय पांचमो ॥ आकाश गत धर्मचक्र छठो, गगन छत्र ए सातमो ॥ ५ ॥ रह्या अंबर श्वेत चामर, जुगम अष्टम ए कह्यो ॥ फटिक सिंहासन सुनिर्मल, नवम अतिशय ए लह्यो ॥ ६ ॥ आकाशगत ध्वज सहस मंडित, इन्द्र ध्वज आगें चले ॥ ए दशमो अतिशय कह्यो श्रुतमां, देखी परमत खलभले ॥ ७ ॥ इग्यारमें जिहां, स्वामी ऊभा, रहे वली वेसे जिहां ॥ छाय शुभज देव ततक्षण, अशोक तरुवर रचे तिहां ॥ ८ ॥ द्वादशम अतिशय प्रभामंडल, पुठें रविकर जीपए ॥ रमणिक सुंदर शोभी भागसो, तेरमो ए दीपए ॥ ॥ ए ॥ अधोमुख होय सर्व कंटक चउदमें अतिशय वली ॥ अनुकूल थइने परिणमें ऋतु, पंच दशमो सुख लली ॥ १० ॥ संवर्तक पवनें शोमी पूंजे, जो जन लगें ए शोलमे ॥ सुगंध वृष्टी तिहां वरसे, प्रगट अतिशय सतरमे ॥ ११ ॥ जानु प्रमाणे वींट नीचो, पंचवरण सुहामणा ॥ जलने ते थलना फूल वरसे, अढारमें अतिशय घणा ॥ १२ ॥ अमनोज्ञ शब्दादिकही नासे. उंगणीसमें अतिशयें वली ॥ वीशमें शुभिक्ष थाये, एम कहेते केवली ॥ १३ ॥

एकवीशमें प्रभुतणी देशना, जोजन लगें सविजन सुणे ॥ बाविशमें प्रभु अर्ध मागध, नाषायें जिन जी नणे ॥ १४ ॥ त्रेवीशमे जिनवाणी जननें, हेतु शिव नणी परिणमे ॥ चोवीसमे प्रभु चरण मूलें, वैर जंतुना उपशमे ॥ १५ ॥ अन्यलिंगी नमे जिननें, पंचविंशति अतिशयें ॥ अन्य तीरथी मौन्य थाये, ठवीसमें प्रभु निश्चयें ॥ १६ ॥ पण वीश जोजन लगे जिनथी, इतनें मारी नहीं ॥ स्वचक्रनें परचक्र न होये, तीस अतिशय ए सही ॥ १७ ॥ अति वृष्टिने अनावृष्टि, डुर्निक्ष त्रण ए नवि उपजे ॥ चोत्री समे प्रभु आधि पीडा, व्याधि डुःख न संपजे ॥ ॥ १८ ॥ चोत्रीस अतिशय एह कहिया, सूत्र सम वा यांगमां ॥ जे नणतां गुणतां हिये धरतां, रहे आत म रंगमां ॥ १९ ॥ निज शुद्ध आतम रूप प्रगटे, नावशुं जो ध्याइयें ॥ दर्शनादिक रत्न लहियें, पर म सुख पद पाइयें ॥ २० ॥ अरिहंत नगवंत तणा अतिशय, नणो आणी आसता ॥ बहु पुण्य करि यें ध्यान धरियें, सुख लहियें सासता ॥ २१ ॥ श्री सूरि विद्या उदधि सेवक, शिष्य एणी परें संस्त वे ॥ मुनि ज्ञान सागर कहे प्रभुपद, सेव मांगुं नवो नवें ॥ २२ ॥ १७ ॥

॥ अथ शिखामणनो छंद ॥

॥ त्रोटक वृत्त ॥ वरदायक माय सलाम करी,

कहुं सार शिखामण एकखरी ॥ नर नारी सहुहिय
डे धरियें, जिम आपद संकट उद्धरियें ॥ १ ॥ पर
भात समे गुरु देव नमो, जिम दारिद्र दोहग दूरें
गमो ॥ भगवंत सदा चरणां भजियें, कुलरीति कदू
कदु नां तजियें ॥ २ ॥ लभियें नहिं मायनें बापथकी,
वढियें नहि कोयथी बाधि जकी ॥ विशवास न
कीजें नारि तणो, गुरुराज समीपथी ज्ञान भणो ॥
॥ ३ ॥ दरबार अलिकन नां भखियें, घरभींतर अन्दर
नहिं लखियें ॥ रखियें नहिं चारुपमोस सदा,तरियें
नहिं नीर सजोर कदा ॥ ४ ॥ विवसाय सहू
विधिसें करियें, ठग दाव रमी धन ना भरियें ॥ पर
देशमां गांफिल नां फरियें, नरपति थकी डरता रहि
यें ॥ ५ ॥ जुगटां व्यसनी परि ना रमियें, ऋषि साध
अनाथकुं ना दमियें ॥ करियें नहिं आल अगन्नी
तणी, वलि दीजियें सीख सुमित्त भणी ॥ ६ ॥ गुरु
आसन उपरि ना धसियें, दुर्जनसे संगति ना वसि
यें ॥ वलि धीज न कीजियें कुड किसी, घणीवार
न कीजियें वात हसी ॥ ७ ॥ वयणां मुख बोलह तें
पलियें, सज्जनथी स्नेह धरी मलियें ॥ परनारिनी
संगति प्यार तजो, परमारथ कारज नित्य भजो ॥८॥
सुखकार शिखामण एम कहे, कवि उत्तमते जय
माल लहे ॥ गुरु चार लहू अरु दीर्घ धरो, इम
त्रोटक नामक छंद करो ॥ ए ॥ इति शिखामण छंद

॥ अथ श्रीअंतरिक पार्श्वनाथ छंद ॥

॥ प्रभु पासजी ताहरुं नाम मीठुं, त्रिहुं लोकमां एटलुं सार दीठुं ॥ सदा समरतां सेवतां पाप नीठुं, मन माहरे ताहरुं ध्यान बेठूं ॥ १ ॥ मन तुज्झ पासे वसे रात दीसें, मुखपंकज निरखवा हंस हींसे ॥ धन्य ते घडीजेघडी नयण दीसे, जली जक्ति जावें करीवीनवीसे ॥२॥ अहो एह संसार छे दुःख दोरी, इंद्रजालमां हित्त लागुं ठगोरी ॥ प्रभु मानियें विनती एक मोरी, मुफ तार तुं तार वलिहारि तो री ॥ ३ ॥ सही स्वप्न जंजालमां मन्न मोह्यो, घडी यालमां काल रमतां न जोयो ॥ मुधा एम संसा रमां जन्म खोयों, अहो घृत तणे कारणें जल विलो यो ॥ ४ ॥ एतो जमरलो केसुआं ज्रांति धायो, जई शुक तणी चंचुमांहे जरायो ॥ शुकें जंबु जाणी गह्यो दुःख पायो, प्रभु लालचें जीवफो एम वाह्यो ॥ ५ ॥ जम्यो जर्म्मे जूलो रम्यो कर्म्मजारी, दयाधर्म्मनी शर्म्म में न विचारी ॥ तोरी नर्म्मवाणी परम सुख कारी, त्रिहुं लोकना नाथ में न संजारी ॥ ६ ॥ विषय वेलमी सेलमी करिय जाणी,जजी मोह तृष्णा तजी तुज्ज वाणी ॥ एहवो जलो जूंफो निज दास जाणी, प्रभु राखियें वांहिनी छांहि प्राणी ॥७॥ माहा रा विविध अपराधनी कोफि सहीयें, प्रभु शरण आ व्या तणी लाज वहीयें ॥ वली घणी घणी वीएतिन

स कहीयें, मुऊ मानसरें परम हंस रहीयें ॥ ८ ॥ कलश ॥ ए कृपा मूरति पास स्वामी, मुगतीगामी गाईयें ॥ अति नक्ति नावें विपति नावे, परम संपद पाईयें ॥ प्रजु महिम सागर गुण विरागर, पास अंत रिक जे स्तवे ॥ तस सकल मंगल जय जयारव, आनंद वर्द्धन वीनवे ॥

॥ अथ श्री शांतिजिन विनतिरूप छंद ॥

॥ शारद माय नमुं शिर नामि ॥ हुं गाउं त्रिजुवनको स्वामी ॥ शांति शांति जपे जो कोइ, ता घर शांति सदा सुख होइ ॥ १ ॥ शांति जपी जे कीजें काम, सोइ काम होवे अजिराम ॥ शांति जपी पर देश सिधावे, ते कुशलें कमला लेइ आवे ॥ २ ॥ गर्न थकी प्रजु मारि निवारी, शांतिजी नाम दियो हितकारी ॥ जे नर शांति तणा गुणगावे, रुधि अचिंती ते नर पावे ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रजु शांति सहाइ, ता नरकूं क्या आरति जाइ ॥ जो कबु वंछे सोई पूरे, दारिड्र डुख मिथ्यामति चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योत प्रकाशी, घट घट अंतरके प्रजु वासी ॥ स्वामी स्वरूप कह्युं नवि जाय, कहेतां मोमन अचरिज थाय ॥ ५ ॥ डार दीए सवही हथियारा, जीत्यां मोह तणा दल सारां ॥ नारि तजी शिवशुं रंग राचे, राज तज्युं पण साहेब साचे ॥ ६ ॥ महा बलवंत कहिजें देवा, कायर कुंथु न एक हणेवा ॥

ऋद्धि सयल प्रभु पास लहीजें, भिक्षा आहारी नाम कहीजें ॥ ७ ॥ निंदक पूजककूं सम नायक, पण सेवकहीकूं सुख दायक ॥ तज्यो परिग्रह भये जगना यक; नाम अतित सवे सिद्धि लायक ॥ ८ ॥ शत्रु मित्र सम चित्त गणीजें, नामदेव अरिहंत भणीजें ॥ सयल जीव हितवंत कहीजें, सेवक जाणी महापद दीजें ॥ ९ ॥ सायर जैसा होत गंभीरा, दूषण एक न मांहे शरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी, पण न रहे प्रभु एकण ठामी ॥ १० ॥ लोक कहे जिन जी सब देखे, पण सुपनांतर कबहु न पेखे ॥ रीश विना बावीश परीसा, सेना जीती ते जगदीश ॥ ११ ॥ मान विना जग आण मनाई, माया विना शिवशुं लय लाई ॥ लोभ विना गुणराशि ग्रहीजें, भिक्षु भये त्रिगको सेवीजें ॥ १२ ॥ निर्ग्रंथपणें शिर छत्र धरावे, नाम यति पण चमर ढलावे ॥ अभयदान दाता सुख कारण, आगल चक्र चले अरिदारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल भणीजें, करम सबेंको मूल खणीजें ॥ चउविह संघह तीरथ थापे, लच्छी घणी देखो नवि आपे ॥ १४ ॥ विनयवंत भगवंत कहावे, न काहूकूं शीश नमावे ॥ अकिंचनको बिरुद धरावे, पण सोवनपद पंकज ठावे ॥ १५ ॥ रागनहिं पण सेवक तारे, द्वेष नहीं निगुणा संग वारे ॥ तजी आरंभ निज आतम ध्यावे, शिव रमणीको साथ

चलावे ॥ १६ ॥ तेरो महिमा अद्भुत कहियें, तोरा गुनको पार न लहीयें ॥ तुं प्रभु समरथ साहेब मोरा, हुं मनमोहन सेवक तेरा ॥ १७ ॥ तुं रे त्रिलोकतणो प्रतिपाल, हूं रे अनाथ तुं छे दयाल ॥ तुं शरणागत राखणधीरा, तुं प्रभु तारक छेवम्न वीरा ॥ १८ ॥ तुंहि समोवम्न नागज्युं पायो, तोमेरो काज चड्यो रे सवायो कर जोडी प्रभु विनवूं तोसुं, करो कृपा जिनवरजी मोसुं ॥ १९ ॥ जनम मरणना दोष निवारो. नव सागरथी पार उतारो ॥ श्री हत्थिणाउरमंम्नन सोहे, तिहां प्रभु शांति सदा मन मोहे ॥ २० ॥ पद्मसागर गुरुराज पसाया, श्री गुणसागरके मन नाया ॥ जेनरनारी एक चित्तें गावे, ते मनोवंछित निश्चें पावे ॥ २१ ॥ इति॥

॥ अथ पार्श्वनाथनो छंद ॥

॥ जय जय जगनायक पार्श्वजिनं, प्रणताखिल मानवदेवगनं ॥ जिनशासन मंडन स्वामि जयो, तुम दरिसन देखी अनंद नयो ॥ १ ॥ अश्वसेन कुलां बर नानुनिन्नं, नव हस्तशरीर हरितप्रतिन्नं ॥ धर णेंद्र सुसेवित पादयुगं, नर नासुरकांति सदा सुन्नगं ॥ २ ॥ निजरूपविनिर्जित रंनपति, वदनो द्युति शा रद सौमततिं ॥ नयनांबुज दीप्ति विशालतरा, तिल कुसुम सन्निन्न नासा प्रवरा ॥ ३ ॥ रसनामृत कंद समान सदा, दशनाति अनार कली सुखदा ॥ अ धरारुण विद्रुम रंगधनं, जय शंखपुरा निध पार्श्व

जिनं ॥ ४ ॥ अतिचारु मुकुट मस्तक दीपे, कानें कुंमल रवि शशि जीपे ॥ तुम महिमा महि मंगल गाजे, नित्य पंच शब्द वाजां वाजे ॥ ५ ॥ सुर किन्नर विद्याधर आवे, नर नारी तोरा गुण गावे ॥ तुऊ सेवे चोशठ इंद्र सदा, तुऊ नामें नावे कष्ट कदा ॥ ॥ ६ ॥ जे सेवे तुऊने नाव घणे, नवनिधि थाये घर तेह तणे ॥ अमयडियां तुं आधार कह्यो, समरथ साहिव में आज लह्यो ॥ ७ ॥ डुखीयाने सुखकां तुं दाखे, अशरणने शरणे तुं राखे ॥ तुऊ नामें संकट विकट टले, वीठमीयां वालां आवि मले ॥ ८ नट विट लंपट दूरें नासे, तुऊ नामें चोरचरम त्रासे ॥ रणराउल जय तुऊ नाम थकी, सघले आगल तुऊ सेवथकी ॥ ९ ॥ यक्ष राक्षस किन्नर सवि उरगा, करी केशरी दावानल विहगा ॥ वध बंधन नय सघलां जाये, जे एक मनां तुजने ध्याये ॥ १० ॥ नूत प्रेत पिशाच ठली न शके, जगदीश तवाभिध जाप थके ॥ महोटा जोटिंग रहे दूरे, दैत्यादिकना तुं मद चूरे ॥ ११ ॥ डायणी सायणी जाय हटकी, नगवंत नयां तुऊ नजनथकी ॥ कपटी तुऊ नाम लीयां कंपे, डुर्जन मुखथी जीजी जंपे ॥ १२ ॥ मानी मठराला मुह मोडे, तेपण आगलथी कर जोडे ॥ डुर्मुख डुष्टादिक तुंही दमे, तुऊ जापे महोटा म्लेछ नमे ॥ १३ ॥ तुऊ नामें माने नृप सवाला, तुज यश उ

ज्ज्वल जेम चंद्रकला ॥ तुझ नामें पामे ऋद्धि घ णी, जय जय जगदीश्वर त्रिजग धणी ॥ १४ ॥ चिं तामणि कामगवी पामे, हयगय रथ पायक तुझ ना में ॥ जन पद ठकुराइ तुं आपे, दुर्जन जननां दारि द्र कापे ॥ १५ ॥ निर्धनने तुं धनवंत करे, तूठो को ठार भंमार भरे ॥ घर पुत्र कलत्र परिवार घणो, ते सहु महिमा तुम नाम तणो ॥ १६ ॥ मणि मा णक मोती रत्न जड्या, सोवन भूषण बहु सुघरू घ ड्या ॥ वली पेहेरण नवरंग वेश घणा, तुम नामें नवि रहे कांइ मणा ॥ १७ ॥ वैरी विरुर्ज नवि ताकि सके, वली चारु चुगल मनथी चमके ॥ ठल छिद्र कदा केहनो नलगे, जिनराज सदा तुझ ज्योति जगे ॥ १८ ॥ ठग ठाकुर सवि थर हर कंपे, पाखंमी पण को नवि फरके ॥ लूंटा दिक सहु नासी जाए, मा रग तुझ जपतां जय थाए ॥ १९ ॥ जरू मूरख जे मति हीन वली, अज्ञान तिमिर तसु जाय टली ॥ तुझ समरणथी माह्या थाये, पंमित पद पामी पूजाये ॥ २० ॥ खस खांशि खयन पीडा नासे, दुर्बल मुख दीनपणुं त्रासे ॥ गरू गुंवरू कुष्ट जिके सवलां, तुज जापें रोग समे सघला ॥ २१ ॥ गहिला गूंगा बहिरा य जिके, तुझ ध्यानें गतडुख थाय तिके ॥ तनु कां ति कला सुविशेष वधे, तुज समरणशुं नवनिधिसधे ॥ २२ ॥ करि केसरी अहि रण वंध सय, जल जल

जलोदर अष्ट नय ॥ रांघणी पमुहा सवि जाय
ी, तुज नामे पामे रंग रली ॥ २३ ॥ ॐ ह्रींअर्हं
पार्श्व नमो, नमिऊण जपंतां डुष्ट दमो ॥ चिंता
ण मंत्र जिके ध्याये, तिण घर दिन दिन दोलत
ये ॥ २४ ॥ त्रिकरण शुद्धे जे आराधे, तस जश
ीर्ति जगमां वाधे ॥ वली कामित काम सवे साधे,
महित चिंतामणि तुऊ लाधे ॥ २५ ॥ मद मछर
नथी दूर तजे, नगवंत नली परें जेहनजे ॥ तसघर
मला कल्लोल करे. वली राज्य रमणी बहु लील
रे ॥ २६ ॥ नय वारक तारक तुं त्राता, सज्ञान मन
ति मतिनो दाता ॥ मात तात सहोदर तुं स्वामी;
ावदायक नायक हितकामी ॥ २७ ॥ करुणाकर ठा
र तुं महारो, निशिवासर नाम जपुं ताहारो, ॥
वकशुं परम कृपा करजो, वालेसर वंछित फल दे
ो ॥ २७ ॥ जिनराज सदा जय जयकारी, तुज मूर्ति
ति मोहन गारी ॥ गुर्जर जनपद मांहे राजे, त्रि
वन ठकुराइ तुऊ छाजे ॥ २ए ॥ इम नाव नले जि
वर गायो, वामासुत देखी बहु सुख पायो ॥ रवि
नि शशि संवछर रंगें, जयदेवसूरिमहा सुख संगें
३० ॥ जय शंखपुराचिध पार्श्व प्रनो, सकलार्थ
नमीहित देहि विनो ॥ बुध हर्षरुचि विजयाय मुदा,
प लब्धि रुचि सुख दाय सदा ॥ ३१ ॥ कलश ॥
ईं स्तुतः सकलकामितसिद्धिदाता, यक्षधिराजनत

शंखपुराधि राजः ॥ स्वस्ति श्रीहर्ष रुचि पंकजसुप्र सादात्, शिष्येण लब्धि रुचिनेति मुदा प्रसन्नः ॥३२॥ ॥ ॥ सरसति संपति दिओ मुजसदा ॥ अलिय विघननविआवेकदा ॥ नयरि उजेणी विक्रमराय ॥ सजापूरीनें बेठो ठाय ॥ १ ॥ जोतिषीया सन्नामां हिजां ण ॥ नवग्रहनाते करेवखाण ॥ एककहे शनिश्वर अ तिक्रूर ॥ देखाडे अति प्राणी नेंरुड ॥ २ ॥ निजदृष्टि शनिसर पांगलो ॥ पितासारथी तुमेसांजलो ॥ राजा विक्रमबोलेइस्युं ॥ इणेरांकबापडे चाले किस्युं ॥ ३ ॥ इणे अवसर सनीसरठे जन्न ॥ अवधी ज्ञाने जोवे तन्न ॥ जोतांमुज विक्रम अवगुणे ॥ वेगिआवी राय प्रते जणे ॥४॥ सांजल राजा माहरांकाम ॥ हुंरुठो टा लुं तुज ठाम ॥ विहतो विक्रम बोले वांण ॥ खमजो जे बोल्युं अज्ञान ॥ पुजी प्रणमी शनीस्वर पाय ॥ संतो ष्यो निज थानक जाय ॥ पिण संका मनमांहि पयठ ॥ केतेक काले शनिस्वर बेठ ६ निसदिन वीहतो जेहने नाम ॥ ते लाग्यो मुजशनीस्वर स्वांम ॥ तेरुी मंत्रीनें आपेंराज ॥ मेंजावुं पर देसे आज ॥ ७ ॥ सुंपीराज गयो परदेस ॥ चंपा नयरी करे प्रवेस॥श्रीपतीने हाटे जइ बेठ ॥ तव तस नयणें अमीय पयठ ॥ ८ ॥ सेठ ने हाटठे वस्तु अनेक ॥ थोरुीवेला मांहि वेची ठेक ॥ जाग्यवंत नर जाण्यो जांम ॥ जिमवानें घर लाव्यो ताम ॥९॥ जोजन जक्ती जली सांचवे ॥ सुख सज्याइं

सुवापाठवे ॥ पासे नींतठे ठोहित ठाम ॥ सारस हंसने मोर चित्रांम ॥ १० ॥ जोवेराजा कौतिक धरी ॥ नाहितव श्रीपति कुंमरी ॥ हारघोफले मुकेजांम ॥ इणें अवसर शनि जोवेतांम ॥ ११ ॥ मुज ठवेषी विक्रम राय ॥ चंपा नगरी वेठोठाय ॥ सुख शज्या सुतो रंगधरी ॥ तो प्राक्रम देखाडुं करी ॥ १२ ॥ शनी संक्रम्यो हंस मुफार ॥ चुणी हारनें वेठोठार॥ तेदेषीने बीहनो राय ॥ कलंक जणीते नाठोजाय ॥ १३ ॥ पुत्री नाहि करे सिणघार ॥नवि देखे एकाव लहार॥श्री पतिजोवे घणोखपकरी ॥ रायजणे तव फा ल्योफरी ॥ १४ ॥ चोरजणी ते ठेद्या हाथ ॥ चठटे पफीउं तवनरनाथ ॥ तेली एके दीठो जिसें ॥ फाली हाथने आण्यो तिसे ॥१५॥ काष्टतणा तव कर जोफवे ॥ वलीवेठो घाणी फेरवे ॥ खायखोलनें तेल रोटला ॥ ठत्रीस राग करें तिंहां जला ॥१६॥ डुःख वीसरीउं नीजघरतणो॥सरलें सादे गावेघणो ॥ नरपति पुत्री मंदिर पास॥ सुणी साद जोवा थइ आस ॥१७॥ तव तिंहाथी दासीनें कहे ॥ घांची घरपुरुष जे रहे ॥ वेगें तेफी तेह ने लाठ्य ॥ आवे घांची घर ठव धाव ॥१७॥ तेह पुरुष लावे सापास॥ तव ठतरीउं शनिशरतास ॥ अद्भूत रूप देखी अतिघणुं॥ वचन कहे तव वरवा तणुं ॥ १९ ॥ कहे विक्रम कर माहरे नथी॥नवी परणांए में तेहथी॥ चंफी मंत्र कुंयरीयें साधीउं॥सोवर मागीते कर लीउं॥

॥२०॥ ठांनो परण्यो विक्रम राय ॥ केतलेकाले जाणे माय ॥ प्रगट परणावि तव पुत्रीका॥श्रीपती शेटी पड्या तत्र तिका ॥ २१ ॥ नरपतीनां प्रणमी त्यांपाय ॥ श्रीपती निजघर लेई जाय॥असन पान करी राजा सुए॥सेठ सहित नृप चित्रामण जुवे ॥२२॥ वोल्यावरस जव साढासात ॥ अविलोके शनी नृपनीवात ॥ आवी हंस मध्ये संक्रमी ॥हार घोरूले मुक्यो वमी ॥२३॥ अढी संवछर मस्तकें रहे ॥ अढी नाभि जोतीषीया कहे ॥ अढी संवत्सर चरणे वास॥हुउं सनी सर त्रीजो तास॥ ॥२४॥ जन्म द्वितिय चोथो आठमो ॥ द्वादसमो शनी सरवडो ॥ एह कथा सांभलस्ये जेह ॥ कुंभ रास फल पामें तेह ॥ २५ ॥ तेहने तुंपीडेनही कदा ॥ ए वर आपो शनिसर सदा ॥ वर देई शनी थानकें गयो॥ हर्ष्योंराय उजेणी गयो ॥ २६ ॥ चाल्यो चतुरंगसे नाकरी ॥ आव्यो जिहां उजेणी पुरी ॥ निजभुवने विक्रम आवीउं ॥ अखिल लोक वधावो दिउं ॥२७॥ सिद्धसेन गुरु वचनें करी॥ लह्यो धर्म समकित आद री॥महाकाल तिरथ उद्धरी॥पर दुःखटालण दानेश्वरी ॥ २८ ॥ सुखे समाधें पाल्लेराज ॥ लहि समकित नर सारे काज॥ निरयावली उपांगे कह्यो ॥ एका वतारी शनि सर लह्यो ॥ ३० ॥ एह कथा छे शनीस्वर तणी ॥ पीडा नकरे चोपई भणी ॥ सुख संपति ते सघली लहे ॥ पंडित ललित सागर इम कहे ॥३१॥

॥ एकादश गणधरनां नाम, प्रह ऊठीनें करुं प्रणाम ॥ इंद्रनूति पहेलो ते जाण, अग्निनूति बीजो गुणखाण ॥ १ ॥ वायुनूति त्रिजो जग सार, गण धर चोथो व्यक्त उदार ॥ शासनपति सुधर्मा सार, मंमित नामें उठो धार ॥ २ ॥ मौर्यपुत्र ते सातमो जेह, अकंपित अष्टम गुणगेह ॥ मुनिवरमांहे जे परधान, अचल ज्रात नवमो ए नाम ॥ ३ ॥ नामथकी होय कोडी कल्याण, दशमो मेतारज अविरल वाण ॥ एकादशमो प्रनास कहेवाय, सुखसंपत्ति जस नामें थाय ॥ ४ ॥ गाया वीर तणा गणधार, गुणमणि रयण तणा नंडार ॥ उत्तमविजय गुरुनो शिष्य, रत्नविजय वंदे निशदिस ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ गौतमप्रनातिस्तवनं ॥

॥ राग प्रनाती ॥ मात पृथ्वीसुत प्रात ऊठी नमो गणधर गौतम नाम गेलें ॥ प्रहसमे प्रेमशुं जेह ध्यातां सदा, चढती कला होय वंशवेले ॥ मा० ॥ १ ॥ वसुनूपति नंदन विश्वजन वंदन, डुरित निकंदन नाम जेहनुं ॥ अनेद बुद्धें करी नविजन जे नजे, पूर्ण पोहोचे सहि नाग्य तेहनुं ॥ मा०॥२॥ सुरमणि जेह चिंतामणि सुरतरु, कामित पूरण काम धेनु ॥ तेह गौतमनुं ध्यान हृदयें धरो, जेहथकी अधिक नहीं माहात्म्य केनुं ॥ मा० ॥ ३ ॥ प्रणव आदें धरी माया बीजें करी, स्वमुखें गौतमनाम

ध्याये ॥ कोड्डि मनकामना सफल वेगें फले, विघ न वैरी सवे दूर जाये ॥ मा० ॥ ४ ॥ ज्ञान वल तेजने सकल सुखसंपदा, गौतमनामथी सिद्धि पामे ॥ अखंड प्रचंड प्रताप होय अवनिमां, सुर नर जेहनें शीश नामे ॥ मा० ॥ ५ ॥ दुष्ट दूरें टले स्वजन मेलो मले, आधिउपाधिनें व्याधि नासे ॥ भूतनां प्रेतनां जोर जांजे वली, गौतमनाम जपतां उल्लासें ॥ मा० ॥ ६ ॥ तीर्थ अष्टापदें आप लब्धें जइ, पन्नरसें त्रणने दीक्षदीधी ॥ अठ्ठमनें पारणे तापस कारणें, क्षीरलब्धें करी अखुट कीधी ॥ मा० ॥ ॥ ७ ॥ वरस पचास लगें गृहवासें वस्या, वरस वली त्रीश करी वीरसेवा ॥ बार वरसां लगें केवल जोगव्युं, जक्ति जेहनी करे नित्य देवा ॥ मा० ॥ ८ ॥ महियल गोतम गोत्रमहिमा निधि, गुणनिधि ऋद्धिने सिद्धि दाई ॥ उदय जस नामथी अधिक लीला लहे, सुजस सौजाग्य दोलत सवाई ॥ मा० ॥ इति ॥

॥ अथ दोधक बावनी लिख्यते ॥ ॐयह अक्षर सारहें॥ऐसा अवरन कोय॥सिद्ध सरुप जगवान शिव सिरसा वंदू सोय ॥ १॥ नमीयें देव जगतगुरु, नमीयें सद गुरुपाय॥दयायुक्त नमीयें धरम, शिव सुखदेय उपाय ॥ २॥ मनकी ममता दूरकर, समता धर घट मांहिं, रमतां रामपिछानकें, शिव सुख ले क्युं नांहि ॥३॥ शिवमंदिरकी चाह धर, अथिर अंध तजि दूर॥

लपट रह्यो क्या कीचमें, अशुचि जिहां नरपूर ॥ ४ ॥ धंधाहीमें पचरह्यो ॥ आरंजकीए अपार॥ उठ चलेगो एकलो, शिरपर रहेंगो जार ॥ ५ ॥ अन्यायी जन देतधन, वहुत, रहित फल सोय ॥ दान स्वल्प फल पिए वहुत न्याय उपार्जित होय ॥ ६ ॥ आतम परहित आपकुं, क्या परकुं उपदेश, निज आतम समज्यो नहीं, किनो वहुत कलेस ॥ ७ ॥ इतनाही में समझलें, क्या वहुत पढेंसो ग्रंथ ॥ उपशम विवेक संवर लहें, याको शिव पुर पंथ ॥ ८ ॥ इति त्रिति याथें गई, प्रगट नई सवरीत॥गीत मार्ग पेदाकीउ गाउ तिनके गीत ॥९॥ उदय नए रविके जसा,जावे सव अंधार ॥ त्यौंसद गुरुकें वचनथें, मिटें मिथ्यात अपार ॥ १० ॥ ऊगत वीज सुखेतमें, जसा सुजल संयोग॥त्यौंसद गुरुके वचनथें, उपजत वोध प्रयोग ॥ ११ ॥ एक टेकधरीए जसा, निर्गुण निर्मम देह॥ दोपरोग जामें नहीं, करीयें ताकीसेव ॥ १२ ॥ ए विपम गति कर्मकी, लिखी नकाहुं जात ॥ रंकनथें राजाकरें, राजारंक दिखात ॥ १३ ॥ उस विंडु कुशाग्र ग्रथें, परत नलग्गें वार, आयु अथिर तेसें जसा, कर कहु धर्म विचार ॥ १४ ॥ ऊषध न मिलें मीत्त ज्युं जाथें मरें न कोय ॥ करउंपध एक धर्मको, जसा अमर तुं होय ॥ १५ ॥ अंध पंगु ज्यों एक हे, जरे न पावक मांहिं ॥ ग्यान सहित क्रिया करे, जसा

अमर पुर जांहि ॥ १६ ॥ अमर जगतमें कोनही॥ मरें अमर सुर राज॥गढ मढ मंदिर ढह परै, अमर सुज स जस राज ॥ १७॥ कंचनसें पीतर ग्रहै, मूरख मुढ गिमार॥ तजै धर्म्म मिथ्यामती, नजै अधर्म असार ॥ १८ ॥ खल संगति तजियें जसा, विद्या सोचित तोय॥ पन्नग मणि संयुक्तसो॥ क्योंन नय कर होय ॥ १९॥ गाज सरदकी कारिमी, करतहै बहुत अ वाज॥ तनक न वरसे दान त्यों, कृपण नदें जसराज ॥ २० ॥ घरटी के दो पुरु बिचे, कण चूरण ज्यौं होय॥त्योंदो नारी विच पोड्यो, नर उगरें न कोय॥२१॥ नही ग्यान जामें जसा ॥ नही विवेक विचार॥ताको संगन कीजीइं, पर हरीइं निरधार ॥ २२ ॥ चपला कमला जानकें, कछु खरचो कछु खाउ॥इकदिन नोंइ सुवो जसा॥ लांवा करकें पाउ ॥२३॥ ठलकर वलकर बुधिकर, करकें जसा उपाय॥आतम वसकर आपनो दूर जन दूर तजाय ॥ २४ ॥ जुवती सब युगवस कीउ किसीन राखीमांम॥ तासों जो न्यारारहै, ताको जसा प्रणाम ॥ २५ ॥ काकी वात न कीजीइं, थोडा हीमें आनि॥ जसा बराबर लेखवो, आप प्रानपर प्रान ॥ २६ ॥ नग दुहिता पति आभरण॥ ताको अरि जसराज ॥ तसपति नारी बिनु पुरुष ॥ नवधें सोभा लाज ॥२७॥ टांणा टुंणा ठोरदें, याथें न सरें काज॥ चोखे चित जिन धर्मकर, ज्यूं काजसरें जसराज

॥ २८ ॥ ठगसो जो पर मनठगें, पर उपजावें रीझ ॥ जासकरें वस जगतकों॥ साचा ठग सोईज ॥ २९ ॥ झूरें कहा जस राज कहें,जो अपनें मन साच॥छिण में परगट होयगा, ज्यौं प्रगटायो काच ॥ ३० ॥ ढहे कोट अग्यांनका,गोलाग्यांन लगाय॥मोहरायकौं मार लैं, जसा लगें सब पाय ॥ ३१ ॥ नदी नखीनारी तणो॥नागन कुल जसराज॥नरस्त्री नरपति निर्गुणिन, आठे करें अकाज ॥ ३२ ॥ तारे ज्यौं नरकों जसा जर सायरमें पोत ॥ त्यौं गुरु तारें जव जलधि॥ करें ग्यांन उद्योत ॥ ३३ ॥ थोज लोजनहि जीवकौं, जो लाख कोटिधन होत॥समता जो आवें जसा,सुखी सदा मन पोत ॥ ३४ ॥ दक्षिण उत्तर च्यारदिस, जसाजमें धन काज॥प्रापति विना नपाईयें, कोकि करो सुउपाय ॥ ३५ ॥ धन पाया खाया नही, दीयाजि कदु नाहिं,सो वागुरी होयें धनमें जसा,ढुंढतहे धन मांहि ॥ ३६ ॥ निर्गुन पतित नारी निलज, कूपक खारो नीर॥नीच मीत जसराज कहें, पांचों दहें शरीर ॥३७॥ पर उपगारी जगतमें ॥ अलप पुरुष जसराज, सीतल वचन दया मया, जाके मुख परलाज ॥३८॥ फोज दिसो दिस मिल गई, जसा घुरें निसाण॥झुकें सन मुख जायनें, सूरगणे नहि प्राण ॥ ३९ ॥ चुंब परें सब दोर हे, लैलै आयुध हाथ ॥ वदन मलिन कर हें जसा, जब जाचें कोय अनाथ ॥ ४० ॥

भगति भली भगवंतकी, संगति भली सुसाध ॥ उर नकी संगति जसा, आगें पोहोर उपाध ॥ ४१॥ मूरख मरण नदेखकें, करत बहुत आरंभ ॥ सात विसन सेवें जसा, करें धर्म विच दंभ ॥४२॥ याग करें प्राणी हणें,भापें धर्म उलंठ॥देखोग्यान विचारकें, क्यों पावें वैकुंठ ॥ ४३ ॥ रीस त्याग वैरागधर, होय जोगी अवधूत ॥ शिव नगरी पावें जसा, कर एसी कर तूंत ॥४४॥ लहेणा देणा कछु नही, मुहकि मिठी वात हृदय कपट धर हे जसा, ताके शिरपर लात ॥ ४५ ॥ वरसें वारधि अहोनिसें, खाखरतीनुंपान॥भाग्य विना पावें नही, याचक दाता दान ॥४६॥ शंखसरीखां ऊजला, नर फूटरा फरक ॥जसा न सोहें दान विण, तुटी कान धरक ॥ ४७ ॥ परोपंथ हें सूरको, रणविच मुंड विहंड॥ पाछा पाउ धरेंनही, जो होई शतखंड ॥४८॥सायर मोती नीपजे, हीरा हीरा खांण॥ग्यांन ध्यांन त्यां नीपजे, जसा सुगुरुकी वांण ॥ ४९ ॥ हस्त को मंडण दानहें,घर मंमण वर नार॥ कुल मंडण अंगज जसा, धन मंडण संसार ॥ ५०॥ लंछन निसपति श्यामरुचि, सूरज लंछन ताप ॥ दाता लंछन धनविना, सबहुं देत सराप ॥ ५१ ॥ क्षांत दांत समतारती,हणें नही षट काय॥ जसा ग्यांन किरिया गमन, सो साधु कहेंवाय ॥ ५२ ॥ सतरसें तीसें समें, नवमी शुकल आषाढ ॥दोधक बावनी जसमुनी, पुरन करी आगध ॥ इति षष्टम परिछेद समाप्त ॥

॥ सप्तमपरिछेद प्रारंजः ॥

साधुसाध्वीयोग्य आवश्यक क्रियाके सूत्रें.

नमो अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आय रियाणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्व साहूणं । एसो पंच नमुक्कारो सव्व पाव पणा सणो। मंगलाणं च सवेसिं। पढमं हवइ मंगलं ॥

॥ १ ॥ श्री करेमिजंते ॥

॥ करेमि जंते सामाइयं। सव्वं सावज्जं जोगं पच्च क्खामि। जावज्जीवाए। तिविहं तिविहेणं। मणेणं वायाए काएणं। न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स जंते पक्किमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

॥ २ ॥ श्री इछामि ठामि ॥

॥ इछामि ठामि काउस्सग्गं। जो मे देवसिउ अइयारो कउ। काइउ वाइउ माणसिउ। उस्सुत्तो। उम्मग्गो। अकप्पो। अकरणिज्जो। डुफाउ। डुवि चिंतिउ। अणायारो। अणिछियव्वो। असमण पाउ ग्गो। नाणे दंसणे चरित्ते। सुए सामाइए। तिएहं गुत्तीणं। चउएहं कसायाणं। पंचएहं मह व्वयाणं। छएहं जीव निकायाणं। सत्तएहं पिंडेसणाणं। अठ एहं पवयण माउणं। नवएहं बंजचेरगुत्तीणं। दस विहे समण धम्मे। समणाणं जोगाणं। जं खंकियं जं विराहियं। तस्स मिछामिडुक्कमं ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसियंआलोउं। जो मे देवसिउ अइ यारो कउं॥ शेषं उपर प्रमाणे॥

. इच्छामि पडिक्कमिउं। जो मे देवसिउं अइयारो कउं॥ शेषं उपर प्रमाणे.

॥ ३ ॥ देवसिक अतिचार ॥

॥ गमणे कमणे चंकमणे। आउत्ते अणाउत्ते। हरियकाय संघट्टे। वीयकाय संघट्टे। त्रसकाय संघट्टे। थावरकाय संघट्टे। छप्पइसंघट्टे। ठाणाउं ठाणं संकामीया। देहरे गोचरी ~~मार्गे जातां~~ आवतां स्त्री तीर्यंचतणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, दिवस मांहि चार वार सझाय सात वार चैत्यवंदन कीधां नहिं, प्रतिलेखण आघी पाछी भणावी, अस्तो व्यस्त कीधी, आर्त्तध्यान रौद्रध्यान ध्यायां, धर्म्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायां नहीं, गौचरीतणा दोष उपजता जोया नहीं, पांच दोष मंडलितणा टाल्या नहीं, मात्रुं अणपुंजे लीधुं, अणपूंजी भूमिकायें परठव्युं, देहरा उपाश्रयमांहि पेसतां निसरतां निसिही आव स्सही कहेवी विसारी, जिनभुवने चोराशी आशा तना, गुरु प्रतें तेत्रिश आशातना, अनेरुं जे कांइ दिवस संबंधीऊं पापदोष लाग्युं होय ते सवीहुं मने वचने कायाए करीने तस्स मिच्छामि डुक्कडं॥

॥ ४ ॥ रात्रिक अतिचार ॥

। संथाराउट्टणकी। परियट्टणकी। आउंटणकी।

पसारणकी । उप्पिय संघट्टणकी । संथारो उत्तरपट्टो टाली अधिकुं उपगरण धार्युं, अणपडि लेह्युं हला व्युं, मात्रुं अणपडिलेह्युं लीधुं, अणपुंजी भूमिए पर ठव्युं, परठवतां अणुजाणह जस्सगो कीधो नहीं, परठव्या पुंठे वार त्रण वोसिरे वोसिरे कीधुं नहीं, संथार पोरसी भणवी विसारी, पोरसी भणाव्या विना सुता, कुस्वप्न लाधुं सुपनांतरमांहि शिलनी वि राधना हुइ, आहट्ट दोहट्ट चिंतव्युं, संकल्प विकल्प कीधो, रात्रीसंबंधीउ जे कोइ अतिचार लाग्यो होय, तेसवी मने वचने कायाए करी तस्स मिछामि डुक्कडं.॥

॥ ५ ॥ श्री श्रमणसूत्र ॥

॥ नमो अरिहंताणं॰ ॥ करेमि भंते सामाइ अं॰ ॥ चत्तारि मंगलं॰ ॥ अरिहंता मंगलं । सिद्धा मंगलं । साहु मंगलं । केवली पन्नतो धम्मं मंगलं॥ चत्तारी सरणं पवज्जामि। अरिहंते सरणं पवज्जामि सिद्धे सरणं पवज्जामि साहु सरणं पवज्जामि । केवली पन्नत्तोधम्मो सरणं पवज्जामि॥चत्तारी लोगुत्तमा अरि हंता लोगुत्तमा॥सिद्धा लोगुत्तमा । साहु लोगुत्तमा केव ली पन्नत्तो । धम्मो लोगुत्तमो॥इछामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिउं॰ । इछामि पडिक्कमिउं । इरिआवहिआए॰। इछामि पडिक्कमिउं ॥ पगामसिज्जाए ॥ निगामसि ज्जाए ॥ संथारा उवट्टणाए ॥ परिअट्टणाए ॥ आउ टण पसारणाए । उप्पइया संघट्टणाए ॥ कुइए ।

कक्कराइए छीए । जंजाइए ॥ आमोसे ॥ ससरक्खा मोसे ॥ आउलमाउलाए ॥ सोअणवत्तिआए ॥ इत्थी विप्परिआसिआए । दिठी विप्परिआसिआए । मण विप्परिआसिआए । पाणनोअणविप्परिआसिआए। जो मे देवसिउं अइआरो कउं । तस्स मिछामि डुक्कडं॥ पडिक्कमामि गोअचरिआए ॥ भिरकायरिआए॥उग्घा डकवाड उग्घाड णाए । साणावछादारा संघट्टणाए॥ मंडिपाहुडिआए ॥ वलिपाहुडिआए ॥ ठवणापाहु डिआए संकिए ॥ सहसागारिए । अणेसणाए पाणे सणाए ॥ पाणजोअणाए ॥ वीअजोअणाए ॥ हरि अजोअणाए ॥ पच्छेकम्मिआए ॥ पुरेकम्मिआए ॥ अदिठहडाए ॥ दगसंसठहडाए रयसंसठहडाए ॥ पारिसाडणिआए ॥ पारिठावणिआए ॥ उहासण भिरकाए ॥ जं उग्गमेणं उप्पायणेसणाए ॥ अपरि सुद्धं पडिगाहिअं ॥ परिभुत्तं वा ॥ जं न परिठविअं तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ पडिक्कमामि चाउक्कालं सझा यस्स अकरणयाए ॥ उभउकालं भंडोव गरणस्स अप्पडिलेहणाए ॥ डुप्पडिलेहणाए ॥ अ प्पमज्जणाए ॥ डुप्पमज्जणाए ॥ अइक्कमे ॥ वइक्क मे । अइआरे ॥ अणायारे ॥ जो मे देविसिउं अइ यारो कउं ॥ तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ पडिक्कमामि एगविहे असंजमे ॥ १ ॥ पडिक्कमामि दोहिं बंधणे हिं । राग बंधणेणं ॥ दोस बंधणेणं ॥ २ ॥ पडिक्क

मामि तिहिं दंडेहिं ॥ मणदंडेणं । वयदंडेणं । कायदं डेणं ॥ पमिक्कमामि तिहिं गुत्तीहिं ॥ मनगुत्तीए ॥ वयगुत्तीए ॥ कायगुत्तीए ॥ पमिक्कमामि तिहिं सल्ले हिं ॥ माया सल्लेणं ॥ निआण सल्लेणं ॥ मिछादंस ण सल्लेणं ॥ पमि० ॥ तिहिं गारवेहिं ॥ इट्ठी गार वेणं । रसगारवेणं ॥ साया गारवेणं ॥ पमि० ॥ तिहिं विराहणाहिं ॥ नाण विराहणाए दंसण विरा हणाए । चरित्त विराहणाए ॥३॥ पमि०॥चउहिं कसा एहिं ॥ कोह कसाएणं ॥ माण कसाएणं ॥ माया कसाएणं ॥ लोज कसाएणं ॥ पमि० ॥ चउहिं सन्ना हिं ॥ आहार सन्नाए ॥ जय सन्नाए ॥ मेहुण सन्ना ए ॥ परिग्गह सन्नाए ॥ पमि० ॥ चउहिं विकहा हिं ॥ इछिकहाए ॥ जत्तकहाए ॥ देसकहाए ॥ राय कहाए ॥ पमि० ॥ चउहिं जाणेहिं ॥ अट्टेणं जाणेणं॥ रुद्देणं जाणेणं ॥ धम्मेणं माणेणं ॥ सुक्केणं जाणेणं॥४॥ ॥ प० ॥ पंचहिं किरिआहिं ॥ काइआए ॥ अहिग रणियाए ॥ पाउसिआए ॥ पारितावणिआए ॥ पाणा इवाय किरिआए ॥ प० ॥ पंचहिं कामगुणेहिं ॥ ॥ सद्देणं ॥ रूवेणं रसेणं ॥ गंधेणं ॥ फासेणं ॥ ॥ प० ॥ पंचहिं महव्वएहिं पाणाइवायाउ वेरमणं ॥ मुसावायाउ वेरमणं ॥ अदिन्नादाणाउ वेरमणं ॥ मेहु णाउ वेरमणं ॥ परिग्गहाउ वेरमणं ॥ प० ॥ पंचहिं समिइहिं ॥ इरिआसमिइए ॥ जासासमिइए ॥

एसणासमिइए ॥ आयाणभंमत्तनिरकेवणा समिइए ॥ उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाण पारिठावणिआ समिइए ॥५॥ प० ॥ ठहिं जीवनिकाएहिं॥पुढविकाएणं ॥ आउकाएणं ॥ तेउकाएणं ॥ वाउकाएणं ॥ वणस्सइकाएणं तसकाएणं ॥ प० ॥ ठहिं लेसाहिं ॥ किण्हलेसाए॥नील लेसाए॥काउ लेसाए॥तेउलेसाए पउमलेसाए ॥सुक्क लेसाए ॥६॥प०॥ सत्तहिं भयठाणेहिं ॥ अठहिं मयठाणेहिं ॥ नवहिं बंभचेर गुत्तीहिं ॥ दसविहे समणधम्मे ॥ इगारसहिं उवासग पमिमाहिं ॥ बारसहिं भिरकुपमिमाहिं ॥ तेरसहिं किरिआठाणेहिं ॥ चउदसहिं ॥ भूअगामेहिं ॥ पन्नरसहिं ॥ परमाहम्मिहिं ॥ सोलसहिं गाहासोलसएहिं ॥ सत्तरसविहे असंजमे ॥ अठारसविहे अबंभे ॥ एगूणवीसाए नायज्झयणेहिं ॥ वीसाए असमाहि ठाणेहिं॥ इक्कवीसाए सबलेहिं ॥ बावीसाए परीसहेहिं ॥ तेवीसाए सुअगमज्झयणेहिं ॥ चउवीसाए देवेहिं ॥ पणवीसाए भावणाहिं ॥ छवीसाए दसाकप्पववहाराणं उद्देसणकालेहिं ॥ सत्तावीसाए अणगार गुणेहिं॥ अठावीसाए आयारपकप्पेहिं ॥ एगुणतीसाए पाव सुअपसंगेहिं ॥ तीसाए मोहणीअठाणेहिं ॥ इगतीसाए सिद्धाइ गुणेहिं ॥ बत्तीसाए जोग संगहेहिं ॥ तित्तीसाए आसायणाएहिं ॥ अरिहंताणं आसायणाए ॥ सिद्धाणं आसायणाए आयरिआणं आसा

यणाए ॥ उवझायाणं आसायणाए ॥ साहूणं आसा
यणाए ॥ साहुणीणं आसायणाए ॥ सावयाणं आसा
यणाए ॥ सावियाणं आसायणाए ॥ देवाणं आसा
यणाए ॥ देवीणं आसायणाए ॥ इहलोगस्स आसा
यणाए ॥ परलोगस्स आसायणाए ॥ केवलि
पन्नत्तस्स धम्मस्स आसायणाए ॥ सदेवमणु
आसुरस्सलोगस्स आसायणाए ॥ सवपाणभूअ
जीवसत्ताणं आसायणाए ॥ कालस्स आसायणाए ॥
सुअस्स आसाणाए ॥ सुअदेवयाए आसायणाए ॥
वायणारिअस्स आसायणाए ॥ जं वाइद्धं वच्चामेलिअं
हीणख्करं । अच्चख्करं । पयहीणं विणयहीणं । घोस
हीणं । जोगहीणं । सुठुदिन्नं डुठुपडिछिअं । अका
ले कउसझाउ । काले न कउ सझाउ । असझाए
सझाइअं । सझाए न सझाइअं । तस्स मिछामिडु
क्कडं० ॥ नमो चउवीसाए तिछयराणं । उसनाइ
महावीर पजावसाणाणं । इणमेव निग्गं थंपावयणं ।
सच्चं । अणुत्तरं । केवलिअं । पडिपुन्नं । नेआउअं ।
संसुद्धं । सल्लगत्तणं । सिद्धिमग्गं । मुत्ति मग्गं निजा
ण मग्गं । निवाण मग्गं । अवितहमविसंधिं । सव
डुख्कप्पहीण मग्गं । इछं ठिआ जीवा । सिझंति ।
बुझंति । मुच्चंति । परिनिवायंति । सवडुख्काणमंतं
करंति । तं धम्मं सद्दहामि । पत्तिआमि । रोएमि ।
फासेमि । पालेमि अणुपालेमि । तं धम्मं सद्दहंतो । पत्ति

अंतो । रोअंतो । फासंतो । पालंतो । अणुपालंतो । तस्सधम्मस्स अपुट्ठिउंमि आराहणाए । विरउंमि विराहणाए । असंजमं परिआणामि । संजमं उव संपज्जामि । अबंभं परिआणामि । बंभं उवसंपज्जा मि । अकप्पं परिआणामि । कप्पं उवसंपज्जामि अनाणं परि आणामि । नाणं उवसंपज्जामि । अकि रिअं परिआणामि । किरिअं उवसंपज्जामि । मिछ त्तंपरिआणामि । सम्मत्तं उवसंपज्जामि । अबोहिं परिआणामि । बोहिं उवसंपज्जामि । अमग्गं परिआ णामि । मग्गं उवसंपज्जामि ।। जं संजरामि । जं च न संजरामि । जं पडिक्कमामि । जं च न पडिक्कमा मि तस्स सव्वस्स देवसिअस्स अईआरस्स पडिक्क मामि।समणोहं संजय । विरय पडिहय पच्चक्खाय पाव कम्मे । अनिआणो । दिठिसंपन्नो । मायामोस विव ज्जिउ । अढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु । पन्नरससु कम्म भूमीसु । जावंत केइ साहू । रयहरण गुछपडिग्गह धारा । पंचमहव्वय धारा । अठारससहस्स सीलंग धारा । अरकआयार चरित्ता । ते सव्वे सिरसा मणसा मच्छएण वंदामि । खामेमि सव्व जीवे, सव्वेजीवा खमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वभूएसु । वेरं मज्झं न केणइ ॥ १ ॥ एवमहं आलोइ अ । निंदिअ गरहिअडुगंछिअं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो । वंदामि जिणे चउव्वी सं ॥ २ ॥ इतिश्री यतिप्रतिक्रमणसूत्रं ॥

॥ ६ ॥ पाक्षिक अतिचार ॥

॥ नाणंमि दंसणंमि अ । चरणंमि तवम्मि तहय विरयंमि। आयरणं आयारो। इय एसो पंचहा जणि उं । १ । ज्ञानाचार । दर्शनाचार । चारित्राचार । तपाचार । वीर्याचार । ए पंचविध आचार मांहे जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस मांहिं सूक्ष्म बादर जाणतां हुउं होय ते सविहुं मन वचन कायाइं करी मिछामि डुक्करं । १ ।

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार। काले विणये बहुमाणे । उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अछ तडुजए । अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ ज्ञान काल वेला मांहिं पढ्यो गुण्यो परावर्त्यो नहीं । अकाले पढ्यो। विनयहीन बहुमानहीन योग उपधानहीनअनेराकन्हे पढ्यो अनेरो गुरु कह्यो । देववंदण वांदणे । पडिक्कमणे सद्याय करतां । पढतां गुणतां कूडो अक्षर कानें मात्रे।आगलो उंठो जण्यो गुण्यो । सूत्रार्थ तडुजय कूडां कह्यां। काजो अणउधर्यो । मांडा अण पडिलेह्यां वस्ति अणसोध्यां अणपवेयां । असद्याइ । अणोद्या कालवेला मांहिं श्री दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत पढ्यो गुण्यो परावर्त्यो । अविधें योगोपधान कीधा कराव्या । ज्ञानोपगरण । पाटी पोथी ठवणी ॥ कवली । नोकारवाली । सांपडां । सांपडी । दस्त्री वही । कागलिआ उंलिआप्रतें । पग लाग्यो

थूकलाग्यो। थूकें अदार नांज्यो। ज्ञानवंतप्रते ठे प मछर वह्यो। अंतराय अवज्ञा आशातना कीधी। कुणहिप्रतें तोतलो बोवमो देपी हस्यो वितर्क्यो। मतिज्ञान। श्रुतज्ञान। अवधिज्ञान। मनपर्यवज्ञान। केवलज्ञान। ए पांच ज्ञानतणी आशातना कीधी। ज्ञानाचार विपइउं। अनेरो जे कोइ अतिचार ०।२।

दर्शनाचारे आठ अतिचार। निस्संकिअ निक्कंखिअ। निव्वित्तिगिछाअमूढदिठीअ ॥ उववूयथिरीकरणे। वछल्ल पनावणे अठ ॥ २ ॥ देव गुरु धर्म तणे विपे निस्संकपणुं न कीधुं। तथा एकांत निश्चय धर्युं नही। धर्म्म संबंधिआ फलतणे विपे निस्संदेह बुद्धि धरी नही। साधु साध्वीतणी निंया जुगुप्सा कीधी। मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रनावना देखी। संघमांहिं गुणवंततणी अनुपबूहणाकीधी।अस्थिरीकरण अवात्सल्य अनक्ति निपजावी। तथा देवद्रव्यगुरुद्रव्य। नक्षित उपेक्षित। प्रज्ञापराधे विणास्यो। विणसंतो उवेख्यो। ठतीशक्ति सारसंनाल न कीधी। ठवणायरिउं हाथथकी पाड्यो। पमिलेहवो विसर्यो। जिननुवनतणी चोरासी आशातना कीधी। दर्शनाचार विपइउं। अनेरो जे कोइ अतिचार०।३।

चारित्राचारे आठ अतिचार ॥ पणिहाणजोगजुत्तो। पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तिहिं ॥ एस चरित्तायारो। अठविहो होइ नायव्वो ॥४॥ ईर्यासमिति, ना

पासमिति, एषणासमिति, आदानभंडमत्त निक्षेपणा समिति, पारिष्ठापनिका समिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति ए अष्ट प्रवचनमाता रूडी परे पाली नही, साधुतणे धर्मे सदैव, श्रावकतणे धर्म्मेसामायिक पोसह लीधे, जे कांइ खंरुन विरा धना कीधी होय, चारित्राचार विषइउ अनेरो जेकोइ अतिचार ॥ ४ ॥

॥ विशेषतश्चारित्राचारे तपोधनतणे धर्मे ॥ वयछक्कं कायछक्कं, अकप्पो गिहि नायणं ॥ पलिअंक निसिज्जाए, सिणाणं सोनवज्जणं ॥ ५ ॥

॥ व्रत षट्के, पहिले महाव्रतें प्राणातिपात, सूक्ष्म बादर, त्रस थावर जीवतणी विराधना हूइ, बीजें महाव्रतें क्रोध लोन हास्य नय लगें जूतुं बोल्या, तीजें अदत्तादानविरमण महाव्रते ॥ सामिजीवादत्तं, तिछयरत्तं तहेवय गुरुहि ॥ एवमदत्तंचउहा। पन्नत्तंवीयराएहिं ॥ १ ॥ स्वामी अदत्त, जीव अदत्त, तीर्थंकर अदत्त, गुरु अदत्त, ए चतुर्विध अदत्तादान मांहि जेकांइ अदत्त परिनोगव्युं ॥ चोथे महाव्रते ॥ वसहीकह निसिज्जिंदिय, कुड्डिंतरपुव्वकीलिए पणिए॥ अइमायाहारविनूसणाइं, नववंनचेरगुत्तिउ ॥ १ ॥ ए नववाडी सूधी पाली नही, सुहणे स्वप्नांतरें दृष्टि विपर्य्यास हूउ ॥ पंचमे महाव्रते, धर्मोपगरणने विषे इछा मूर्छा गृद्धि आसक्ति धरी, अधिका उपगरण वावस्वार्या, पर्व तिथि पमिलेहवो विसार्यो ॥ छठे

रात्री भोजन विरमण व्रतें, असूरां पाणी कीधां, गारोद्गार आव्यो, पात्रे पात्रावंधे तक्रादिकनो गांटो लाग्यो, खरमयो रह्यो, लेप तेल उपधादिकतणो संनिधि रह्यो, अतिमात्रायें आहार लीधा, ए छठा व्रत विपइर्ड अनेरो जे कोइ अ० ॥ ६ ॥

॥ कायषट्के ॥ गामतणे पइसारे नीसारे पग पडिलेहवा विसास्या, माटी मीठुं खडी धावडी अरणेटो, पाषाणतणी चातली उपर पग आव्यो, अप्पकाय वाघारी फूसणा हुवा, विहरवा गया, जल खो हाव्यो, लोटो ढोल्यो, काचा पाणीतणा गांटा लाग्या, तेउकाय वीज दीवातणी उजेही हुइ, वाउ काय, उघाडे मुखें वोल्या, महावाय वाजतां कपडा कांवली तणा छेडा साचव्या नहीं, फूक दीधी ॥ वनस्पतिकाय, नीलफूल सेवाल थड मूल फल फूलवृक्ष शाखा प्रशाखातणा संघट्ट परंपर निरंतर हूवा ॥ त्रसकाय, वेरिंडी तेरिंडी चउरिंडी पंचेंडी काग वग उडाव्या, ढोर त्रासव्यां वालक वीहाव्यां षट् काय विपइर्ड अनेरो जे कोइ अतिचार० ॥ ७ ॥

अकल्पनीय सय्या वस्त्र पात्र पिंड परिभोगव्यो, सिज्जातरतणो पिंड परिभोगव्यो, उपयोग कीधा पाखे विहस्या, धात्री दोष, त्रस वीजसंसक्त पूर्वक र्म्म पश्चात्कर्म उद्गम उत्पादना दोष चिंतव्या नहीं, गृहस्थतणो भाजन भांज्यो, फोड्यो, वली पाछो

आप्यो नहीं, सूतां संथारिया उत्तरपट्टा टलतो अधिको उपगरण वावर्यो, देशतः स्नान मुखें चीनो हाथ लगाड्यो, सर्वतः स्नानतणी वांछा कीधी, शरीरतणो मल फेड्यो, केश रोम नख समार्या, अनेरी जे कांइ गाडाविभूषा कीधी, अकल्पनीय पिंडादि विषइउ अनेरो जे को० ॥ ७ ॥

आवस्सयसद्याए, पडिलेहणद्याए निरक अजत्ते ॥ आगमणे नीगमणे । ठाणे निसिअणे तु अट्टे ॥ १ ॥ आवश्यक उत्तयकाल व्यादित चित्तपणे पडिकमणुं कीधुं, पडिक्कमणा मांहि उंघ आवी, बेठां पडिक्कमणुं कीधुं, दिवस प्रतें चार वार सद्याय, सात वार चैत्यवंदन न कीधां, पडिलेहणा आघी पाछी जणावी, अस्तो व्यस्त कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायां नहीं, गोचरी गयां बेंतालीश दोष उपजता चिंतव्या नहि, छती शक्तिए पर्व तिथे उपवासादिक कीधो नहि, उपासरा देहरामांहि पेसतां निसिही निसरतां आवस्सही कहेवी विसारी, इछा मिछादिक दशविध चक्रवाल समाचारी सांचवी नहि, गुरुतणो वचन तहत्ति करी पडिवज्यों नहि, अपराध आव्यां मिछामि डुक्कड दीधा नहि, स्थानके रहेतां हरियकाय बियकाय कीडी नगरां सोध्यां नहीं, उंघो मुहपत्ति चोलपट्टो संघट्या, स्त्री तीर्यंचतणा संघट्ट अनंतर परंपर हूवा,

वका प्रतें पसाउं करी, लहुडां प्रतें इछाकार इत्या दिक विनय साचव्यो नहि, साधु सामाचारी वि० अ० पडि० सु० वा० जाणतां अजाणतां हुउं होय, ते सविहु मन वचन कायायें करी मिछामी डुक्कडं. ॥ ए ॥ इति साधु अतिचार संपूर्णः ॥

७ ॥ पाक्षिक सूत्र. ॥

तिहंकरे अतिहे, अतिहसिद्धेअ तिहसिद्धेअ ॥ सिद्धेजिणे अ रिसी, महरिसी नाणं च वंदा मि ॥ १ ॥ जे इमं गुण रयण सायर, मविराहिऊण तिणसंसारा ॥ ते मंगलं करित्ता, अहमविआ-राहणाभिमुहो ॥ २ ॥ मम मंगल मरिहंता। सिद्धा साहु सुअं च धम्मोअ ॥ खंती गुत्ती मुत्ती । अज्ज वया मद्दवं चेव ॥ ३ ॥ लोगंमि संजया जं करिंति । परमरिसि देसियमुआरं ॥ अहमवि उवठिउंतं । महव्वय उच्चारणं काउं ॥ ४ ॥ से किं तं महव्वय उ च्चारणा ? महव्वय उच्चारणा पंच विहा पन्नत्ता॥ राइ-भोअणवेरमण छठा । तंजहा ॥ सवाउं पाणाइवाया उं वेरमणं ॥ १ ॥ सवाउं मुसावायाउं वेरमणं ॥२॥ सवाउं अदिन्नादाणाउं वेरमणं ॥ ३ ॥ सवाउं मेहुणा उं वेरमणं ॥ ४ ॥ सवाउं परिग्गहाउं वेरमणं ॥५॥ सवाउं राइभोअणाउं वेरमणं ॥ ६ ॥

तच्छखलु पढमे भंते महव्वए. पाणाइवायाउं वेर मणं सवं भंते पाणाइवायं पच्चक्कामि से सुहुमं वा ।

वायरं वा । तसं वा । थावरं वा । नेवसयं पाणे अइ
वाइज्जा । नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा । पाणेअ
इवायंते वि । अन्ने न समणुजाणामि । जावज्जीवाए
तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि
न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणमि । तस्स
ंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि आप्पाणं वोसि
रामि ॥ से पाणइवाए चउव्विहे पन्नत्ते । तंजहा ।
दव्वउं खित्तउं कालउं नावउं । दव्वउंणं पाणाइवाए
छसु जीवनिकाएसु । खित्तउंणं पाणाइवाए सव्वलोए ।
कालउंणं पाणाइवाए दिआवा राउंवा । नावउंणं पा
णाइवाए रागेणवा दोसेणवा । जं मए इमस्स धम्मस्स
केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालरकणस्स सच्चाहिठिअस्स
विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरणसोवणियस्स
उवसमप्पनवस्स नववंनचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स
निरकाविति्तअस्स कुरकीसंवलस्स निरग्गिसरणस्स
संपरकालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गहिअस्स निव्वि
त्तिलरकणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स
अविसंवाइअस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगम
णपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवयाए अ
वोहिआए अणनिगमेणं अनिगमेणवा पमाएणं राग
दोसपडिवद्धआए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्ड
याए तिगारवगुरुआए चउक्कसाउंवगएणं पंचिंदिउंव
सट्टेणं पडिपुन्ननारिआए सायासुरकमणुपालयंतेणं

इहंवाजवे अन्नेसु वा जवग्गहणेसु पाणाइवाउं कउं वा । कराविउंवा कीरंतोवा परेहिंसमणुन्नाउं तं निंदामि गरिदामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइअं निंदामि पमुप्पन्नं संवरेमि अणागयं पच्चक्कामि सवं पाणाइवायं जावज्जीवाए अणिस्सि उहं नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवायंते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा तं जहा अरिहंतसक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं देवसक्खिअं एवंज वइ जिरकूणीवा संजयविरयपमिहय पच्चरकाय पाव कम्मे दिआवा राउंवा एगउंवा परिसागउंवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसं खलु पाणाइवायस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सवेसिं पाणाणं सवेसिं नूआणं सवेसिं जीवाणं सवेसिं सत्ताणं असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महहे महाणुनावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसहे तंडुक्करकयाए कम्मरकयाए मुरकयाए वोहिलाजाए संसारुत्तारणाए तिकट्ट उवसंपज्जित्ताणंविहरामि पढमेजंतेमहवए उवछिउंमि सवाउंपाणाइवायाउंवेरमणं ॥ १ ॥

अहावरे दोच्चे जंते महवए मुसावाउं वेरमणं । सवं जंतेमुसा वायं पच्चरकामि से कोहा वा १ लोहा वा २ जया वा ३ हासा वा ४ नेवसयं मुसंवइज्जा ने

वन्नेहिं मुसंवायाविज्जा मुसंवयंतेवि अन्ने न समणु
जाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वा
याए काएणं न करेमि न कारवेमि ॥ तस्स भंते प
डिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥
से मुसाए चउविहे पन्नत्ते। तं जहा। दवउ १ खित्तउ २
कालउ ३ भावउ ४। दव्वउणं मुसावाए सव्वेदव्वेसु।
खित्तउणं मुसावाए लोएवा अलोएवा । काल
उणं मुसावाए दिआवा राउवा। भावउणं मुसा
वाए रागेणवा दोसेणवा। जं मए इमस्स धमस्स
केवलि पण्णत्तस्स अहिंसालक्कणस्स सच्चाहिठिअ
स्स विणय मूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसो
वण्णियस्स उवसमप्पभवस्स नववंभचेरगुत्तस्स अ
पय माणस्स भिक्कावित्तिअस्स कुक्कि संवलस्स
निरग्गिसरणस्स संपक्कालिअस्स चत्तदोसस्स गुण
ग्गाहिअस्स निव्विआरस्स निव्वित्तिलक्कणस्स पंच
महव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइअस्स
संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमण पज्जवसा णफल
स्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अवोहियाए अण
भिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिवद्धयाए मोहयाए
मंदयाए किड्डयाए तिगारवगुरुआए चउक्कसाउवगएणं
पंचिंदिउवसट्टेणं पडिपुण्णं भारयाए सायासुक्कमणु
पालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु
मुसावाउ भासिउ वा भासाविउ वा भासिजंतोवा परेहिं

समणुन्नाउं तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईअंनिंदामि पकुपन्नंसंवरे मि अणागयंपच्चक्कामि सव्वंमुसावायं जावज्जीवाए अणिस्सिउंहं नेवसयं मुसं वाइज्जा नेवन्नेहिंमुसं वायाविज्जा मुसं वायंतेवि अन्ने न समणुज्जाणिज्जा। तं जहा अरिहंतसक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खि अं देवसक्खिअं अप्पसक्खिअं एवंहवइ भिरकुवा भि रकुणीवा संजय विरय पकिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दिआवा राउंवा एगउंवा परिसागउंवा सुत्तेवा जाग रमाणेवा एसखलु मुसावायस्सवेरमणे हिए सुहे। खमे निस्सेसिए आणुगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वे सिंनूआणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अडुक्क णयाए असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीकणयाएं अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए मह त्थे महागुणे महाणुनावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरि सिदेसिए पसत्थे तं डुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्ख याए वोहिलानाए संसारुत्तारणयाए तिकट्टु उवसं पज्जिताणं विहरामि दोच्चे नंते महव्वए उवठिउंमि सवाउं मुसावायाउं वेरमणं ॥ २ ॥

॥ अहावरेतच्चे नंते महव्वए अदिन्नादाणाउं वेर मणं। सव्वं नंते अदिन्नादाणं पच्चक्कामि। से गामे वा नगरेवा रस्नेवा अप्पंवा वहुंवा अणुंवा थुलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा। नेवसयं अदिन्नं गिण्हि

ज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा अदिण्णं गिण्हंतेवि अन्नेन समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ से अदिन्नादाणे चउव्विहे पन्नत्ते । तं जहा । दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ । दव्वउणं अदिन्नादाणे गहणधारणिज्जेसु दव्वेसु; खित्तउणं अदिन्नादाणे गामेवानगरेवा रणेवा, कालउणं अदिन्नादाणे रागेणवा दोसेणवा, जं मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स उवसमप्पन्नवस्स नववंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खिसंवलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअस्स निवियारस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अवोहियाए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धआए बालआए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगुरुआए चउक्कसाउवगएणं पंचिंदिअवसट्टेणं पडिपुन्नं भारियाए सायासुक्खमणुपालयंतेणं इहंवा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु अदिन्नादाणं गहिअंवा गाहाविअंवा घिप्पंतंवा परेहिं समणुन्नाउ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं

तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईअं निंदामि पड्डुप्पण्णंसंवरेमि अणागयं पच्चरकामि सव्वं अदिन्ना दाणं जावज्जीवाए अणिस्सिउंहं नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नंगिण्हाविद्या अदिन्नं गिण्हंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा। तं जहा। अरिहंतसक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं देवस क्खिअं अप्पसक्खिअं एवं हवइ भिक्कुणीवा संजय विरयपडिहय पच्चरकाय पावकम्मे दिआवा राउंवा एगउंवा परिसागउंवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु अदिन्ना दाणस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए सव्वेसिं पाणाणं सवेसिं जीवाणं सव्वेसिं नूआणं सव्वेसिं सत्ताणं अडुक्क णयाए असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अ पीमणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महछे म हागुणे महाणुनावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसि दे सिए पसछे तंडुक्कक्कयाए कम्मक्कयाए मुक्कयाए वोहिलानाए संसारुत्तारणयाए तिकट्ठु नवसंपद्धि ताणं विहरामि तच्चे नंते महव्वए उवछिउंमि स व्वाउं अदिन्नादाणाउं वेरमणं ॥ ३ ॥

अहावरे चउछे नंते महव्वए मेहुणाउं वेरमणं। सव्वं नंते मेहुणं पच्चरकामि। से दिव्वंवा माणुस्संवा तिरिक्कजोणिअंवा। नेवसअं मेहुणं सेविद्या नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविद्या मेहुणं सेवंतेवि अन्ने नसमणुजाणा

मि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नंन समणुजा णामि तस्स भंते पक्किमामि निंदामि गरिहामि अ प्पाणं वोसिरामि ॥ से मेहुणे चउव्विहे पन्नते । तंज हा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ। दव्वउणं मेहुणे रूवे सुवा रूवसहगएसुवा। खित्तउणंमेहुणे उड्ढलोएवा अ हो लोएवा तिरियलोएवा कालउणं कालउणं दिआवा राउवा । भावउणं मेहुणे रागेणवा दोसेणवा । जंम ए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्कण स्स सच्चाहिडिअस्स विणयमूलस्स । खंतिप्पहाण स्स अहिरन्नसोअस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेर गुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्काविति्तिअस्स कुक्किसंव लस्स निरग्गिसरणस्स संपक्कालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गहिअस्स निव्विआरस्स निव्वित्तिलक्कणस्स पंच महव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अवि संवाइअस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमणप ज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अवोहियाए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपक्किवद्धयाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगुरुआए चउक्कसाउवगएणं पंचिं दिउवसट्टेणं पक्किपुन्नं भारियाए सायासुक्कमणुपाल यंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मेहुणं सेवि अंवा·सेवाविअंवा सेविज्जंतंवा परेहिं समणुन्नाउ

तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वाया
ए काएणं अइयं निंदामि पडिपुन्नं संवरेमि अणा
गयं पच्चक्खामि सव्वंमेहुणं जावज्जीवाए अणिस्सि
उहं नेवसयं मेहुणं सेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं सेवा
विद्या मेहुणं सेवंतेवि अन्ने नसमणुज्जाणिद्या। तं
जहा अरिहंत सक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं
देवसक्खिअं अप्पसक्खिअं एवं हवइ भिक्खूवा भि
क्खूणीवा संजयविरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे
दिआवा राउंवा परिसागउंवा सुत्तेवा जागरमाणेवा
एसखलुमेहुणस्सवेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए
आणुगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिं भूआणं सव्वे
सिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अडुक्खणयाए असोयण
याए अजूरणआए अतिप्पणपाए अपीडणयाए अ
परियावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे म
हाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए
पसध्धे तंडुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहि
लाभाए संसारुत्तारणयाए उवसंपज्जित्ताणं विहरामि
चउध्धेभंतेमहव्वए उवहिउंमिसव्वाउ मेहुणाउवेरमणं ४

अहावरे पंचमे भंते महव्वए परिग्गहाउवेरमणं।
सव्वं भंते परिग्गहं पच्चक्खामि। अप्पंवा बहुंवा अणुं
वा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयंपरिग्ग
हं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिं परिग्गिहं परिगिण्हाविद्या
परिग्गहं परिगिण्हंतेवि अन्नेन समणुज्जाणामि जाव

जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणंवायाए काएणं नकरे मि नकारवेमि करंतंपि अन्नं नसमणुजाणामि तस्स नंते पमिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसि रामि ॥ सेपरिग्गहे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ नावउ । दव्वउणं परिग्गहे सचि त्ताचित्तमीसेसु दव्वेसु, खित्तउणं परिग्गहे सव्वलोए कालउणं परिग्गहे दिआ वा राउ वा नावउणं प रिग्गहे अप्पग्घे वा महग्घे वा रागेण वा दोसेण वा जं मए इमस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अहिंसा लरकणस्स सच्चाहि ठिअस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहा णस्स अहिरन्नसोवन्निअस्स उवसमप्पनवस्स नव बंनचेर गुत्तस्स अपयमाणस्स निरकाविति्तअस्स कु रिकसंवलस्स निरग्गिसरणस्स संपरकालिअस्स चत्त दोसस्स गुणग्गाहिअस्स निव्विआरस्स निवित्ति ल रकणस्स पंचमहव्वय जुत्तस्स असंनिहि संचयस्स अविसंवाअस्स संसारपारगामिअस्स निवाणगमणप द्यवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अ बोहिआएअणनिगमेणं अनिगमेणं वा पमाएणं रा गदोसपमि बद्धआए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगुरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचिं दिउवसट्टेणं पडिपुन्नंनारियाए साया सुरकमणुपालयं तेणं इहं वा नवे अन्नेसु वा नवग्गहणेसु परिग्गहो गहिउवा गाहाविउ वा घिप्पंतो वा परेहिं समणु

न्नाउं तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाएकाएणं अईअं निंदामि पडुप्पन्नं संवरेमि अ णागयं पच्चरकामि सबं परिग्गहं जावज्जीवाए अणि स्सिउंहं नेवसयं परिग्गहं पगिरिण्हिज्जा नेवन्नेहिं प रिग्गहं परिगिण्हाविद्या परिग्गहं परिगिण्हतेवि अन्ने न समणुज्जाणिज्जा तंजहा अरिहंतसरिकअं सिद्ध सरिकअं साहु सरिकअं देव सरिकअं अप्प सरिकअं एवं हवइ जिरकू वा जिरकूणी वा संजय विरय पडिहय पच्चरकाय पावकम्मे दिआवा राउं वा एगउं वा परि सागउं वा सुत्ते वा जागरमाणे वा एस खलु परिग्ग हस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामि ए सवेसिं पाणाणं सवेसिं नूआणं सवेसिं जीवाणं सवेसिं सत्ताणं अडुरकणयाए असोणयाए अजूरण आए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महद्वे महागुणे महाणुजावे महापुरि साणुचिन्ने परमरिसि देसिए पसद्वे तंडुरकरकयाए कम्मरकयाए वोहिलान्नाए संसारुत्तारणायाए तिक ट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि पंचमे नंते महवए उ वठिउंमि सवाउं परिग्गहाउं वेरमणं ॥ ५ ॥

अहावरे ठठे नंते महवए राईअ नोअणाउं वेर मणे सबं नंते राईनोअणं पच्चरकामि॥ से असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा नेवसयं राइ नोअणं नुंजिज्जा नेवन्नेहिं राइनोअणं नुंजाविद्या राइनोअ

णं भुंजंते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्सभंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि॥ से राइभोअणे चउव्विहे पन्नत्ते दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ॥दव्वउणं राइभोअणं असणे वा पाणे वा खाइमे साइमे वा खित्तउणं राईभोअणे समयखित्ते कालउ णं राइभोअणे, दिआ वा राउ वा,भावउणं राइभोयणे, तित्ते वा कडुए वा कसायले वा अंबिले वा महुरे वा लवणे वा रागेण वा दोसेण वा जंमए इमस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अहिंसा लरकणस्स सच्चाहिठिअस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरणसोवणिअस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेर गुत्तस्स अपयमाणस्स भिरका वित्तिअस्स कुरिकसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपरकालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअस्स निविआरस्स निवित्तिलरकणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइअस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिआए अणभिगमेणं अभिगमेणं वा पमाएणं रागदोस पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किडयाए तिगारवगुरुआए चउक्कसाउवगएणं पंचिंदिअवसट्टेसं पडिपुणंभारिआए सायासुरकमणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु वा राइभो

यणं भुत्तं वा भुंजाविअं वा भुजंतं वा परेहिं समणु न्नाउं तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणे णं वायाए काएणं अइअं निंदामि पकुप्पणं संवरेमि अणागयं पच्चरकामि सवं राइभोअणं जावज्जीवाए अणिस्सिउंहं नेवसअं राइंभुंजिज्जा नेवन्नेहिं राइं भुंजाविद्या राइंभुंजंते वि अन्ने न समणुज्जाणिद्या तं जहा अरिहंतसरिकअं सिद्धसरिकअं साहुसरिकअं देवसरिकअं अप्पसरिकअं एवं हवइ भिरकूवाभिरकू णी वा संजय विरय पमिहय- पच्चरकाय पावकम्मे दिआ वा राउं वा सुत्ते वा जागरमाणे वा एसखलु राइभोअणस्स विरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए सवेसिं पाणाणं सवेसिं भूआणं सवेसिं जीवाणं सवेसिं सत्ताणं अडुरकणयाए असोअणआए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीमणयाए अपरिआए वणयाए अणुद्दवणयाए महछे महागुणे महागुणे महा णुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परम रिसि देसियपसछे तं डुरकरकयाए कम्म रकयाए मुरकयाए बोहि ला भाए संसारुत्तारणयाए तिकट्टु उवसंपद्यित्ताणं विह रामि ॥ ठछे भंते मह वए अछु ठिउंमि सवाउं राइभोयणाउं वेरमणं ॥ इच्चेइ आइं पंचमहवयाइं राईभोअणवेरमण ठठाइं अत्तहिअठाइं उवसंप ज्जित्ताणं विहरामि ॥

अप्पसठाय जे जोगा । परिणामाय दारुणा ॥

पाणाइवायस्स वेरमणे ॥ एस वुत्तेअइक्कमे ॥ १ ॥ तिव्व रागाय जा जासा । तिव्वदोसा तहेव य ॥ मुसा वायस्स वेरमणे ॥ एस वुत्ते अइक्कमे ॥ २ ॥ उग्गहं सि अ जाइत्ता ॥ अविदिन्ने अ उग्गहे ॥ अदिन्नादा णस्स वेरमणे ॥ एसवुत्ते अइक्कमे ॥ ३ ॥ सद्दा रुवा रसा गंधा ॥ फासाणं पविआरणे ॥ मेहुणस्स वेरम णे ॥ एस वुत्ते अइक्कमे ॥ ४ ॥ इच्छा मुच्छा य गेही अ ॥ कंखा लोभेअ दारुणे ॥ परिग्गहस्स वेरमणे ॥ एस वुत्ते अइक्कमे ॥५॥ अइमत्ते अ आहारे ॥ सूरे खित्तंमि संकिए ॥ राईभोयणस्स वेरमणे ॥ एस वु त्ते अइक्कमे ॥ ६ दंसणनाण चरित्ते ॥ अविराहित्ता ठिउं समण धम्मे ॥ पढमंवयमणुरक्खे ॥ विरयामो पाणाइवायाउं ॥ ७ ॥ दंसणनाण चरित्ते ॥ अविरा हित्ताठिउं समण धम्मे ॥ वीयंवयमणुरक्खे ॥ विरयामो मुसावायाउं ॥ ८ ॥ दंसणनाण चरित्ते ॥ अविराहित्ता ठिउं समण धम्मे ॥ तइअं वयमणुर क्खे ॥ विरयामो अदिन्नदाणाउं ॥ ९ ॥ दंसण नाण चरित्ते ॥ अवराहित्ता ठिउं समण धम्मे ॥ चउत्थं वयमणुरक्खे ॥ विरयामो मेहुणाउं ॥१०॥ दंसण नाण चरित्ते ॥ अविराहित्ता ठिउं समणधम्मे ॥ पंचमं वयमणुरक्खे ॥ विरयामो परिग्गहाउं ॥ ११ ॥ दंसण नाण चरित्ते ॥ अविरहित्ता ठिउंसमणधम्मे छठं व यमणुरक्खे ॥ राइभोयणा आलयवि ॥ १२ ॥

विहार समिउं ॥ जुत्तो गुत्तोठिउं समण धम्मे ॥ पढ
मंवयमणुरक्के । विरयामो पाणाइ वायाउं ॥ १३ ॥
आलय विचारसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समण धम्मे ॥
बीयं वय मणुरक्के ॥ विरयामो मुसावायाउं ॥१४॥ आ
लयवियारसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समणधम्मे। तीयं
वयमणुरक्के. विरयामोअदिन्ना दाणाउं ॥१५॥ आलय
विचारसमिउं। जुत्तो गुत्तो ठिउं समणधम्मे। चउत्थवय
मणुरक्के। विरयामो परिग्गहाउं ॥१६॥ आलय विया
रसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समणधम्मे ॥ पंचम
वयमणुरक्के । विरयामो परिग्गहाउं ॥ १७ ॥ आलय
विचारसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समणधम्मे ॥ छट्ठंव
यमणुरक्के ॥ विरयामो राईभोयणउं ॥ १८ ॥ आलय
विहार समिउं ॥ जुत्तो गुत्तो ठिउं समण धम्मे ॥
तिविहेण अप्पमत्तो । रक्कामि महव्वए पंच ॥ १९॥
सावज्जजोगमेगं ॥ मिछतं एगमेव अन्नाणं ॥ परिव
ज्जंतो गुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ २० ॥ अणवज्ज
जोगमेगं ॥ सम्मत्तं एगमेवनाणं तु ॥ उवसंपन्नो जु
त्तो ॥ रक्कामि महव्वएपंच ॥ २१ ॥ दो चेव रागदो
से ॥ दुन्निअ जाणाइंअट्टरुद्दाइं ॥ परिवज्जंतो गुत्तो ।
रक्कामि महव्वएपंच ॥ २२ ॥ दुविहं चरित्त धम्मं ।
दुन्निअ जाणाइं धम्मसुक्काइं ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥
रक्कामि महव्वए पंच ॥ २३ किण्हा नीला काउ ॥
तिन्निअ लेसाउं अप्पसत्थाउं ॥ परिवज्जंतो गुत्तो र

रकामि महव्वए पंच ॥ २४ ॥ तेउ पह्मा सुका ॥ तिन्निअ लेसाउ सुप्पसत्थाउ ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥ २५ ॥ मणसा मणसच्चविउ ॥ वायासच्चेण करण सच्चेण ॥ तिविहेण सच्चविउ ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥ २६ ॥ चत्तारि अ डुह सिज्जा ॥ चउरो सन्ना तहाकसायाय ॥ परिवज्जंतो गुत्तो ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥ २७ ॥ चत्तारि अ सुह सिज्जा ॥ चउविहं संवरं समाहिठाणं ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥ २८ ॥ पंचेवय काम गुणे ॥ पंचेवय अण्हवे महादोसे ॥ परिवज्जंतो गुत्तो ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥ २९ ॥ पंचिंदिअ संवरणं ॥ तहेव पंच विहमेव सज्ञायं ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥३०॥ उज्जीवनिकाय वहं ॥ उप्पिअ नासाउ अप्पसत्थाउ ॥ परिवज्जंतो गुत्तो ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥ ३१ ॥ उविहमब्भिंतर यं ॥ बझंपिअ उविहं तवो कम्मं ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥ ३२ ॥ सत्त य जय ठाणाइं ॥ सत्तविहं चेव नाणविन्नंगं ॥ परिवज्जंतो गुत्तो॥रक्खामि महव्वए पंच ॥३३॥ पिंडेसण पाणेसण उग्गह सत्ति कया महझयणा ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥ ३४ ॥ अठय मयठाणाइं अ ठय कम्मइं तेसिं बंधंच ॥ परिवज्जंतो गुत्तो॥रक्खामि महव्वए पंच॥ ३५ अठय पवयण माया ॥ दिठा अठ

विह निठिअठेहिं॥उवसंपन्नो जुत्तो । रस्कामि महव्व ए पंच ॥३६॥ नव पाव निआणाइं ॥ संसारहाय न वविहा जीवा ॥ परिवद्यंतो गुत्तो । रस्कामि महव्वए पंच ॥ ३७ ॥ नव वंजचेर गुत्तो ॥ डुनवविहं वंजचे र परिसुध्द ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥ उवसंपन्नो जुत्तो । रस्कामि महव्वए पंच ॥ ३५ ॥ उवघायं च दसविहं॥ असंवरं तहय संकिलेसं च ॥ परिवद्यंतागुत्तो रस्कामि महव्वए पंच ॥३९॥ सच्च समाहिठाणे ॥ दसचेव दसउ समण धम्मंच ॥ उव संपन्नो जुत्तो ॥ रस्कामि म हव्वए पंच ॥ ४० ॥ आसायणं च सवं ॥ तिगुण इक्कारसं विवद्यंतो ॥ परिवद्यंतो गुत्तो ॥ रस्कामि महव्वए पंच ॥ ४१ ॥ एवंतिदंम विरउ ॥ तिगरण सुध्दो तिसल्ल निसल्लो ॥ तिविहेण पमिक्कंतो ॥ रस्कामि महव्वए पंच ॥ ४२ ॥

इच्चेइअं महव्वय उच्चारणं थिरत्तं सल्लुध्दरणं । धिइ वलं ववसाउ । साहणठो पाव निवारणं । निकाय णा नाव विसोही पडागाहरणं । निज्जूहणाराहणा गुणाणं । संवरजोगो पसछ्याणो । वउत्तया जुत्तयाय नाणे परमठो उत्तमठोय । एसखलु तिछंकरेहिं । रइ राग दोस महणेहिं । देसिउ पवयणस्ससारो । ठज्जीवनीकाय संजमं । उवएसिअं । तेलुक्क सक्कअं गाणं । अप्पुवगया नमोत्थु ते । सिध्द वुध्द मुत्त निरय। निसंग माणमूरण । गुण रयण । सायर । मणंत

मप्पमेश्र । नमोत्थुते मइइ महावीर वद्धमाण सामि स्स । नमोत्थते अरहउं । नमोत्थुते नगवउं । तिकट्टु । एसाखलु । महवय उच्चारणाकया ॥

इच्छामो सुत्त कित्तणं काउं । नमोतेसिं खमासम णाणं । जेहिं इमं वाइअं । छविह मावस्सयं । नग वंतं तंजहा । सामाइअ ॥ १ ॥ चउवीसत्थउं ॥ २ ॥ वंदणयं ॥ ३ ॥ पडिक्कमणं ॥ ४ ॥ काउसग्गो ॥ ५ ॥ पच्चख्खाणं ॥ ६ ॥ सवेहिंपि एअंमि । छविहे आव स्सए । नगवंते ससुत्ते । सअछे सगंथे सनिज्जुत्ती ए । ससंगहणिए जेगुणावानावावा । अरिहंतेहिंनग वंतेहिं । पण्णत्तावा । परूविआवा । तेनावेसद्दहामो । पत्तियामो । रोएमो फासेमो । पालेमो । अणुपाले मो । तेनावेसद्दहंतेहिं पत्तिअंतेहिं । रोअंतेहिं । फासं तेहिं । पालंतेहिं । अणुपालंतेहिं । अंतोपख्खस्स जंवा इअं । पढिअं परिअट्टिअं । पुछिअं अणुपालिअं । तंडुख्खख्खयाए कम्मख्खयाए । मुख्खयाए । वोहिला नाए । संसारुत्तारणयाए । तिकट्टु । उवसंपज्जित्ताणं विहरामि । अंतोपख्खस्स । जंनवाइअं नपढिअं नप ढिअं नपरिअट्टिअं । नपुछिअं । नाणुपेहिअं । नाणु पालिअं संतेवले संतेवीरिए । संतेपुरिसकारपरिक्कमे । तस्सआलोएमो । पडिक्कमामो । निंदामो गरिहामो । विउट्टेमो । अकरणयाएअप्पुठेमो । अहा रिहंतवो कम्मं । पायछित्तंपडिवज्जामो । तस्समिछा मिछुकडं ।

नमोतेसिंखमासमणाणं । जेहिंइमंवाइअं । अंग वाहिरं जकालिअंजगवंतं । तंजहा । दसवेआलिअं । कप्पिआकप्पिअं । चुल्लकप्पसुअं । महाकप्पसुअं । उवाइअं रायप्पसेणिअं । जीवाजिगमो । पन्नवणा । महापन्नवणा। नंदी अणुउंगदाराइं देविंदथ्थउं । तंडुल विआलिअं चंदाविज्झियं।पमायप्पमायं। पोरिसिमंम्रलं। मंडलप्पवेसो गणिविद्या । विद्याचारणविणीछउं । जाण विजत्ती । मरणविजत्ती । आयविसोही । संलेहणा सुअं । वीयरायसुअं । विहारकप्पो । चरणविहि । आउरपच्चरकाणं । महापच्चरकाणं ॥ २० ॥ सवेहिंपि एअंमि । अंगवाहिरे जकालिए । जगवंते ससुत्ते । सअछे । सगंथे । सनिज्जुत्तिए । ससंगहणिए जेगु णावा जावावा । अरिहंतेहिं । जगवंतेहिं । पन्नत्ता वा । परूविआवा । तेजावे सद्दहामो पत्तिआमो । रोएमो फासेमो । पालेमो अणुपालेमो । तेजावे सद्द हंतेहिं । पत्तिअंतेहिं । रोअंतेहिं । फासंतेहिं पालंते हिं । अणुपालंतेहिं । अंतोपरकस्स । जंवाइअं पढि अं । परीअट्टिअं । पुठिअं । अणुपेहिअं । अणुपालि अं । तंडुरकरकयाए । कम्मरकयाए । मुरकयाए । वोहिलाजाए संसारुत्तारणयाए । तिकट्टु । उवसंप ज्जित्ताणंविहरामि । अंतोपरकस्स । जंनवाइअं नप ढिअं नपरिअट्टिअं । नपुठिअं । नाणुपेहिअं । नाणु पालिअं । संतेबले संतेविरिए । संतेपुरिसक्कारपरिक

मे।तस्सआलोएमो। पमिक्कमामो।नींदामो।गरिहामो।
विजट्टमो। विसोहेमो।अकरणयाएअप्पुठेमो।अहारिहं
तवोकम्मं।पायछित्तं पमिवद्यामो। तस्स मिछा मिदुक्कडं।

नमोतेसिंखमासमणाणं। जेहिंइमंवाइअं अंगबा
हिरंकालिअंजगवंतं । तंजहा । उत्तरज्झयणाइं। द
साकप्पो। ववहारो । इसिजासिआइं । निसीहं।
महानिसीहं। जंबुद्दीवपण्णत्ती। सूरपण्णत्ती। चंदपन्न
त्ती। दीवसागरपन्नत्ती । खुड्डयाविमाणपविजत्ती।
महल्लिआविमाण पविजत्ती। अंगचूलिआए। वंग
चूलिआए। विवाहचूलिआए अरुणोववाए। वरुणो
ववाए गरुलोववाए। धरणोववाए। वेलंधरोववाए।
वेसमणोववाए। देविंदोववाए। उठाणसुए। समुठा
णसुए। नागपरिआवलिआणं। निरयावलिआणं।
कप्पिआणं। कप्पवर्डिसिआणं। पुप्फिआणं। पुप्फ
चूलिआणं। वण्हीयाणं। वण्हीदसाणं आसीविस
जावणाणं। दिठि विसजावणाणं। चारणसुमिण जा
वणाणं। महासुमिणजावणाणं। तेअग्गिनिसग्गाणं
॥३६॥ सवेहिं पिएअंमि। अंगबाहिरे कालिए जग
वंते। ससुत्ते। सअछे सगंथे। सणिज्जुत्तिए। ससं
गहणिए जेगुणावा जावावा। अरिहंतेहिं। जगवंते
हिं। पण्णत्तावा परूवीआवा तेजावेसद्दहामो। पत्ति
आमो रोएमो। फासेमो पालेमो। अणुपालेमो। ते
जावेसद्दहंतेहिं। पत्तिअंतेहिं। रोयंतेहिं फासंतेहिं।

पालंतेहिं । अणु पालंतेहिं । अंतोपरूखस्स जंवाइअं पढिअं परिअट्टिअं पुछिअं अणुपेहिअं अणुपालिअं तंडुरूखरूखयाए॥ कम्मरूखयाए॥ मुरूखयाए।वोहि लाजाए। संसारुत्तारणयाए । त्तिकट्ट।उवसंपचित्ताणं विहरामि । अंतोपरूखस्स। जंनवाइअं नपढीअं नप रियट्टिअं नपुछिअं । नाणुप्पेहिअं नाणुपालिअं । सं तेवले । संतेवीरिए । संतेपुरिसकारपरिक्कमे। तस्सआ लोएमो।पक्किमामो। निंदामो गरिहामो । विउट्टेमो विसोहेमो । अकरणयाए । अप्पुठेमो।अहारिहंतवो कम्मं । पायछित्तंपक्किवद्यामो ।तस्समिछामिडुक्कडं ॥

नमोतेसिंखमासमणाणं । जेहिंइमंवाइअं । डुवा लसंगंगणिपिरूगं । जगवंतं । तंजहा । आयारो सुअ गमो ठाणं । सगवाउं । विवाहपन्नत्ती । नायाधम्मक हाउं । उवासगदसाउं अंतगरूदसाउं । अणुत्तरोववा इअदसाउं । पएहावागरणं ।विवागसुअं दिठिवाउं॥ सवेहिंपि एअंमि । डुवालसंगे गणिपिरूगे । जगवंते। सअत्ते । सहुत्ते । सगंथे । सणिज्जुत्तिए । ससंग ह णिए । जे गुणा वा । जावा वा । अरिहंतेहिं । जग वंतेहिं । पन्नत्ता वा । परूविआ वा । ते जावे सद्द हामो । पत्तिआमो । रोएमो । फासेमो । पालेमो । अणुपालेमो । ते जावे सद्दहंतेहिं । पत्तिअंतेहिं । रोयंतेहिं । फासंतेहिं ।.पालंतेहिं । अणुपालंतेहिं । अंतोपरूखस्स । जंवाइअं । पढिअं । परिअट्टिअं । पु

छिअं । अणुपेहिअं । अणुपालिअं । तंडुक्खक्खयाए । कम्मक्खयाए । मुक्खयाए । बोहिलाभाए । संसारुत्ता रयाए । तिकट्ट । उवसंपज्जित्ताणं विहरामि । अंतो पक्खस्स जं न वाइअं । न पढिअं । न परिअट्टिअं । न पुच्छिअं । नाणुपेहिअं । नाणुपालिअं । संते बले । संते वीरिए । संते पुरिसक्कारपरिक्कमे । तस्स आलो एमो पडिक्कमामो । निंदामो गरिहामो । विउट्टेमो विसोहेमो । अकरणयाए । अप्भुट्ठेमो । अहारिहं तवोकम्मं । पायच्छित्तं पडिवज्जामो । तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ ३ ॥ नमो तेसिं खमासमणाणं । जेहिं इमं वाइअं डुवा लसंगं गणिपिडगं । भगवंतं । तं जहा सम्मं काएणं । फासंति । पालंति । पूरंति । तीरंति । किट्टंति । सम्मं आणाए । आराहंति । अहं च नाराहेमि । तस्स मिच्छामिडुक्कडं ॥ ८ ॥

सुअदेवआ भगवई । नाणावरणीअकम्मसंघायं । तेसिं खवेउ सययं । जेसिं सुअ सायरे भत्ति ॥ ३ ॥

इति पाक्षिक सूत्र समाप्तं ॥

पाक्षिकखामणा. ॥

इच्छामि खमासमणो पिअं च मे जंभे । हट्ठाणं तु ट्ठाणं अप्पायंकाणं । अभग्गजोगाणं । सुसीलाणं । सुव्वयाणं । सायरिअउवज्झायाणं । नाणेणं । दंसणेणं । चरित्तेणं । तवसा । अप्पाणं । भावेमाणाणं । बहुसु भेण भे दिवसो पोसहो । पक्खो वइक्कंतो । अन्नो भे

कल्लाणेणं । पच्चुवठिए । सिरसा मणसा । मत्थएण वंदामि ॥ १ ॥ तुम्हेहिं समं ॥

इच्छामि खमासमणो । पुव्वि चेइआइं वंदित्ता । नमंसित्ता । तुम्हण्हं पायमूले । विहरमाणेणं । जे केइ वहुदेवसिआ । साहुणो । दिठा समाणा वा वसमाणा वा गामाणुगामं । डुइजमाणा वा । राइणिआ संपुछंति । उमराइणिआ . वंदंति । अज्जाया वंदंति अज्जियाउ वंदंति । सावया वंदंति । सावियाउ वंदंति अहंपि निस्सल्लो । निक्कसाउ । त्तिकट्टु । सिरसा मणसा । मत्थएण वंदामि ॥२॥ अहमवि वंदामि चेइआइं॥

इच्छामि खमासमणो । अप्पुठिउंहं । तुम्हण्हं । संतिअ । अहाकप्पं वा । वत्थं वा । पडिग्गहं वा । कंवलं वा । पायपुछणं वा । रयहरणं वा । अक्खरं वा। पयं वा । गाहं वा । सिलोगं वा । सिलोगद्धं वा । अठं वा । हेउ वा । पसिणं वा । वागरणं वा । तुम्हेहिं। चिअत्तेण दिन्नं । मए । अविणएण । पडिछिअं। तस्समिछामिडुक्कडं ॥ ३ ॥ आयरियसंतिअं ॥

इच्छामि खमासमणो । अहमपुव्वाइं । कयाइं च मे। किइकम्माइं । आयारमंतरे । विणयमंतरे । सेहिउ । सेहाविउ । संगहिउ । उवग्गहिउ । सारिउ । वारिउ चोइउ । पडिचोइउ । चिअत्ता मे । पडिचोयणा । अप्पुठिउंहं । तुम्हण्हं तवतेयसिरीए । इमाउ चाउरंत संसारकंताराउ । साहट्टु । नित्थारिस्सामि

तिकट्टु । सिरसा मणसा । मच्चएण वंदामि ॥ ४ ॥ निच्छारगपारगाहोह ॥ इति पाक्षिक क्षामणा ॥

साधुउंकों दैवसिक और रात्रिक प्रतिक्रमणमें अतिचारकी आठ गाथाके स्थानपर गुणनेकी एक गाथा.

सयणासन्न पाणे, चेइ जइ सिज्ज काय उच्चारे । समिइ जावणा गुत्ती,वितहायरणे य आइयारो॥१॥

यह गाथा गुण तेतिस्में कहिहुइ वातें संबंधी जो कुछ अतिचार लगां होसो सांधुने याद करना. सामान्य साधुसें गुरुको अल्प व्यापार होनेसें गुरुने दोवार यह गाथा अर्थ सह विचारनी.

(प्रातः पम्लिेहणकी विधि),

इरिआवही पमिक्कमी, खमासमण देके, इच्छाकारेण संदिसह जगवन् पमिलेहण करुं? 'इच्छं' कही मुहपत्ति ५० बोलसें, उंघो १० बोलसें, कटासण २५ बोलसें, कंदोरा १० और चोलपट्टा २५ बोलसें पमिलेहना. पिछे इरियावही पमिक्कमके, खमासमण देके, इच्छकारी जगवन् पसाय करी पमिले हणा पमिलेहवोजी, एसा कहके स्थापनाचार्यकी पडिलेहणा करनीसो नीचे प्रमाण.

प्रथम कामली पमिलेहीं संकेलके तिस उपर स्थापनाचार्य रखणी. पिछें थापनाजी. छोमीके प्रथम उपरकी एक मुहपत्ति पमिलेहे पिछें "शुद्धस्वरूपके

धारक गुरु ज्ञानमयी. दर्शनमयी चारित्रमयी, शुद्ध श्रद्धामय, शुद्ध प्ररुपणामय, शुद्ध स्पर्शनामय, पंचाचार पाले पलावे, अनुमोदे, मनगुप्ति वचनगुप्ति, कायगुप्तिसें गुप्ता" यह तेरह बोल बोलके पांचोंस्थापनाजीकी पृथक् पृथक् पडिलेहणा करे. पिछें स्थापनाजी संबंधी दुसरी मुहपत्तिये पडिलेहे. (सांजकी पडिलेहण वखत पहेली स्थापनाजीकी सब मुहपत्तियें पडिलेहना. पिछें स्थापनाजी बांधके ठवणी उपर रखके खमा समण देके इछा० उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं? इछं कही मुहपत्ति पडिलेही, खमा० इछा० उपधि संदिसाहुं? इछं, खमा० इछा० उपधि पडिलेहु? इछं. कही दूसरे सबवस्त्रें पडिलेहने अंतमें कंदक पडिलेहना पिछें डंडासण लेके पडिलेही, इरिआवही पडिक्कमी, काजा लेना पिछें इरिआवही पडिक्कमी काजा परठवना. पिछें इरिआवही पडिक्कमी, खमासण देके इछा० सझाय करुं? इछं कही एक नवकार गणी 'धम्मो मंगल मुक्किठं, ए सझाय कहेना. इतिप्रातः पडिलेहणविधि

(संध्या पडिलेहणविधि)

खमासमण देके इछा० बहु पडिपुन्ना पोरिसि? खमासमण देके इरियावही पडिक्कमी खमासमण देके इछा० पडिलेहण करुं? इछं खमा० इछा० वस्ती प्रमार्जुं? इछं कहके उपवास कीया होय तो मुहप

त्ति, ठंघो, कटासणं पमिलेहना नहीं तो पूर्ववत् पांच चीजें पमिलेहना. पिछें इरियावही पमिक्कमी खमासमण देके, इछाकारी नगवन् पसाय करी पडिलेहणा पमिलेहावोजी. यों कहके पूर्वोक्त रीत स्थापनाजीनी पमिलेण करनी. पिछें खमा० इछा० उपधि मुहपत्ति पमिलेहुं? इछं कही मुहपति पहिलेहि खमा० इछा० सफाय करूं? इछ कही एक नवकार गुणके "धम्मो मंगल मुक्किठं" एसजाय कहे. पिछें आहार कीया होयतो वांदणा देके योग्य पच्चरकाण करना. उपवास किया होयतो खमसमण देके इछकारी नगवन् पसाय करी पच्चरकाण आदेशदिजीयें यौंकहके पच्चरकाण करे. पिछें खमा०इछा० उपधि संदिसाहुं? इछं. खमा० इछा० उपधि पडिलेहुं? इछ कही सर्व वस्त्र पडिलेहे. पिछें पूर्वोक्त रीत इरियावही पमिक्कमी, काजा लेके, इरियावही पमिक्कमी, काजा परठवना. ॥ इति ॥

(पोरसिविधि)

छ घमी दिवस चडे पिछें खमासमण देके इछा० बहु पमिपुन्ना पोरिसि? इछं कही खमासमण देके इरियावही पमिक्कमना. पिछें खमासमण देके इछा० पमिलेहण करुं? इछं कही मुहपत्ति पमिलेहनी. इति.

पच्चरकाण पानेकी विधि.

खमासमण देके इरियावही पमिक्कमी, खमासम

ण देके इछा० चैत्यवंदन करुं? इछं कही जगचिंता मणीका चैत्यवंदन जयवियराय संपुर्ण पर्यंत करना. (स्तवन स्थान उव सग्गहरं कहेना.) पिछें खमास मण देके इछा० सझाय करुं? इछं कही एक नव कार गणी धम्मो मंगलमुक्किठं सझाय कहेना खमा समण देके इछा० मुहपति 'पडिलेहुं? इछं कही मुहपत्ति पडिलेहणी. पिछें खमा० इछा० पच्चख्काण पारुं 'तहत्ति' कही जमणा हाथ उंचा उपर स्थापन करके एक नवकार गुणके आंबिल पर्यंतके पच्चख्काण नीचे प्रमाणे कह करपारणा.

"उग्गए सूरे नमुक्कार सहिअं पोरिसिं साढपो रसिं सूरेउग्गए पुरिमड्ढ मुठि सहिअं पच्चख्काण कीया चउविहार ॥ आंबील, नीवी, एकासणं पच्च ख्काण किया तिविहार ॥ पच्चख्काण फासिअं, पालि अं सोहिअं, तीरिअं किट्टिअं, आराहिअं जं च न आराहिअं तस्स मिछामि डुक्कडं. ॥

इस्में जो पच्चख्काण कीया होय उहांतक बोलनां आगेकेपाठ न बोलवां. तिविहार उपवासवालो ने नीचे प्रमाणे कहेना.

"सूरे उग्गए पच्चख्काण किया तिविहार; पाण हार पोरिसि साढपोरिसि पुरिमड्ढ मुठि सहिअं पच्चख्काण किया पाणहार; पच्चख्काण फासिअं० पूर्ववत् ए प्रमाणे पच्चख्काण पार्या पिछे नीचे प्रमाणे ॥ १७ ॥

गाथा कहेनी.

धम्मो मंगल मुक्किठं । अहींसा संजमो तवो देवावि तं नमंसंति । जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥ जहा डुमस्स पुप्फेसु । नमरो आवियइ रसं । नय पुप्फं किलामेइ । सो अ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥ एमेए समणा मूत्ता । जे लोए संति सोहुणो । विहंगमाव पुप्फेसु । दाण नत्तेसणे रया ॥ ३ ॥ वयं च वित्तिं ल प्नामो । न य कोइ उवहम्मई । अहा गडेसुरीयंते । पुप्फेसु नमरी जहा ॥ ४॥ महुकार समा बुद्धा । जे नवंति अणिस्सिया । नाणापिंमरया दंता ॥ तेणवुच्चं ति साहुणो त्तिवेमि ॥५॥डुम्म पुप्फिआ अजयणम् ॥१॥ कहन्नु कुद्या सामण्ण । जो कामे न निवारए । पए पए विसीयतो । संकप्पस्स वसंगर्ड । ६ । वत्र गंधमलंकारं । इत्थिर्ड सयणाणि य । अठंदा जे न नुंजं ति । न से चाइत्तिवुच्चई । ७ । जे अ कंते पिए नोए। लद्धेवि पिठि कुवई । साहीणे चवइ नोए । सेहु चाइत्ति वुच्चई ॥ ८ ॥ समाइपेहाइ परिव्वयंतो । सिआ मणो निस्सरई वहिद्धा ॥ न सामहं नो वि अहंपि तीसे । इच्चेव तार्ड विणइज्ज रागं ॥ ९ ॥ आयावया हीचयसोगमल्लं । कामेकमाहीकमि यं खु डुक्कं । ठिं दाहिदोसं विणइज्जा रागं । एवंसुही होहिसि संपरा ए ॥१० ॥ पक्कंदे जलियं जोइं । धूमकेर्ड डुरासयं । निच्छंति वंतयं नोत्तं । कुले जाया अगंधणे ॥ ११ ॥

धिगत्थु ते जसो कामी। जोतं जोवियकारणा। वंतं इ च्छसिआवेडं। से अंते मरणं जवे ॥ १२ ॥ अहं च नोग रायस्स। तं चसि अंधगवन्हिणो। माकुले गंध णाहो मो। संजमं निहुडंचर ॥ १३ ॥ जइ तं काहि सि जावं। जा जा दिछसि नारीडं। वायाविद्धुवह्रु को। अछि अप्पा जविस्ससि ॥ १४ ॥ तीसे सो व यणं मुच्चा। संजयाइस्सु जासियं। अंकुसेण जहा ना गो। धम्मे संपडिवाइडं ॥ १५॥ एवं करंति संबुद्धा। पंमिआ पवियरकणा। विणिअट्टंति जोगेसु। जहा से पुरिसुत्तमो। त्तिवेमि ॥ १६ ॥ संजमे सुठियप्पा णं। विप्पमुक्काण ताइणं। तेसिमेय मणाइन्नं। निग्गं थाण महेसिणं ॥ १७ ॥ इतिसामन्नपुवियद्ययणम् ॥

गोचरी आलोयण विधि.

निसिही कहके उपाश्रयमें प्रवेश करके गुरु स न्मुख आके नमो खमासमणाणं मह्वएण वंदामी' कहके पिछें पग जूमि प्रमार्जी शुरू करके गुरु स न्मुख खडे रहके माथे पग उपर मांमा रखके दक्षिण हाथमे मुहपत्ति रखके खडेखडे खमासमण देय. पिछें आदेश मांगके इरिआवही पमिक्कमे. एक लोगस्सका काउसग्ग करे. काउसग्गमें जो क्रमसें गोचरीकी जो जो वस्तुयें लीनी होय सो यादकरे तिस्में जहां जहां जो जो दोष लागे होय सो याद करे पिछें नमो अरि हंताणं कह पारके क्रम प्रमाण

गुरुकों कह वतावे. पिछें गुरुकों आहार दिखावे. पिछें गोचरी आलोवे सो ए प्रमाणे—

पमिक्कमामि गोअरचरिआएसें मिछामिडुकमं पर्यंत (श्रमण सूत्र पगाम सझाय) मे आवे सो आलावा कहे. पिछे तस्स उत्तरी० अन्नठ० कहके काउसग्ग करे. सो काउसग्गमे नीचेकी गाथा तिन वार विचारे.

अहा जिणेहीं असावज्जा, वित्ती साहुण देसिया।
मुक्खसाहण हेउस्स, साहु देहस्स धारणा ॥ १ ॥

पिछें काउस्सग्ग पारके लोग्गस्स कहे. ॥ इति ॥

स्थंडिल शुद्धिका विधि.

सायंकाले दैवसिक प्रतिक्रमणके प्रारंभमे इरिआवही पमिक्कमी पच्चखाण करे पिछें खमा० इछ० स्थंमिल पमिलेहुं? इछं कही मंडला करे सो ए प्रमाणे—

१ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे.
२ आघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे.
३ आघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे.
४ आघाडे मज्झे पासवणे अणहियासे.
५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे.
६ आघाडे दूरे पासवणे अणहियासे.

दूसरे ६ मांडलेमे 'अणहियासेके बदल अहियासे' कहेना. तत्पश्चात् दूसरी वारमे आघाडेके बदल आणाघाडे कहेना शेष उपर प्रमाणे कहेना. एकंदर २४ मंडले करना.

पिछें इरिआवही पमिक्कमी, चैत्यवंदन करके पमिक्कमणां शरु करे. ॥ इति. ॥

संथारा पोरिसीकी विधि.

पहोर रात्री पर्यंत सजाय ध्यानकिये पिछे संथारा करनेके अवसर खमा० इच्छा० वहु पडिपुन्ना पोरिसि कही खमासमेण देके इरिआवही पमिक्कमे पिछें खमा० इच्छा० 'वहु पमिपुन्ना पोरिसि राइय संथारए ठाउं?' यों कहके चउक्कसायका चैत्यवंदन जय वियरायपर्यंत करना पिछे खमा० इच्छा० संथारा विधि नणनेकी मुहपत्ति पडि लेहुं? इछं कही मुहपत्तिपमिलेना. 'निसिही निसिही नमो खमासमणाणं गोयमाइणं महामुणीणं' इतना पाठ, कहके नवकार तथा करेमिनंते–त्रणवार कहना पीछे संथारा पोरसि बोलना (प्रतिक्रमणकी वुकमे ठपगयाहे.)

तिस्से चौंदमी गाथा तीनवार कहना पिछे तीन नवकार गुणना पिछे छेल्ली तीन गाथा कहेनी तत्पश्चात् निद्रा न आवे तहांतक सजाय ध्यानकरना.

पाक्षिक प्रतिक्रमणमें कोइको छींक आवे तो करनेकी विधि.

जो पाक्षिक अतिचारके पहिले छींक आवेतो सव पुनः करना. तत्पश्चात वृहच्छांति तकमे छीक आवे तो डुक्खक्खउके काउसग्गके पहिले इरिआवही पमिक्कमी लोगस्स कही खमासण देके इच्छा० क्षुद्रो

पद्रव उंडावणार्थं काउसग्ग करुं? इछं कही अन्नत्थ कही चार लोगस्सका काउसग्ग सागरवरगंभिरा तक करना नीचेकी गाथा कहके पारना.

सर्वे यक्षांबिकाद्या ये, वैयावृत्यकरा जिने ॥
क्षुद्रोपद्रव संघातं, ते द्रुतं द्रावयंतु नः ॥ १ ॥

पिछे प्रगट लोगस्स कहेना.

छमासि काउस्सग करनेकाविधि

चैत्र सुदि ११-१२-१३ तथा आसो सुदि ११-१२-१३ ए तीनतीन दिवसोमे हररोज दैवसिक प्रतिक्रमणमे सझाय कहे पिछें ए काउस्सग्ग करना प्रथम खमासमण देके इछा० सचित अचित्तरज उंहावणछं काउस्सग्ग करुं? इछं. करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ कही चार लोगस्सका सागरवर गंभिरा तक काउस्सग्ग करना. पारके लोगस्स कहेनाः

लोच करनेके समय काउस्सग्ग करनेका विधि.

लोच करना होय तिस दिन लोचकिये अगाउ इरिआवही पडिक्कमी खमा० इछा० सचित्तअचित्त रज उंहावणछं काउस्सग्ग करुं? इछा करेमी काउस्सग्गं अन्नत्थ०कही चार लोगस्सका काउस्सग्ग सागरवरगंभिरा तक करना. पारके प्रगट लोगस्सकहेना.

कोइ साधु काल करे तब साधुकों करनेका विधि.

जो साधुनें काल किया होय तिनके पास आके एक साधु नीचेप्रमाण कहे-'कोटिक गण, वज्रीशा

खा, चंद्रकुल, अमुक आचार्य, उपाध्याय, स्थवीर, अमुक पंन्नितके शिष्य (अमुक मुनि) महा पारिठाव णीआ करेमि काउस्सग्गं' अन्नथ० कही एक नव कार कहे. पिछे तीन वार 'वोसिरे' कहे. पिछे श्रावक संस्कार करनेको ले जाय. तत्पश्चात् जीर्ण कांचली प्रमुख नांगना. जीर्ण वस्त्र परठवना. पवित्र अचित्त पाणीसे नूमिशुद्धि हस्तपाद वस्त्र शुद्धि कर ना पिछे श्रावक पास गोमूत्रादि छंटायके अवले देव वंदानें. तिसकी विधि नीचे प्रमाणे—

अंतिम देव वंदन विधि.

काल करने वाले साधुके एक शिष्य अथवा ल घु पर्यायवाला कोइ शिष्य प्रथम उलटा काजा (द्वारसें आसन तरफ) लेवे. वस्त्रादि पहेरे उलटा. पिछे काजा संबंधी इरिआवही पमिक्कमके उलटा देव वंदन करे सो इस प्रमाणे.

प्रथम कल्लाणकंदकी एक थोइ. पिछे एक नवकारका काउस्सग्ग, पिछे अन्नत्थ० अरिहंत चे० जयवि० उव सग्ग० नमोर्हत्० जावंति के० खमासमण० जावंतीचे० नमुथ्थुणं० चैत्यवंदन० लोग्गस्स० एक लोगस्सका० काउस्सग्ग० अन्नत्थ० तस्सउ० इरिआ वही० खमा समण देके. अविधि आशातना मिछामि डुक्कडं कहे. पिछे सीधा काजा लेके इरियावही पडिक्कमे.

पिछे सन्ना समक्ष सर्व साधु साध्वीने आठ

थोइसें सीधे देववंदन करना. तिस्में स्तवनके स्थान अजीसंता कहना. और देव पूरा होनेसें खमा० इछा० क्षुद्रोपद्रव उहावणथं काउस्सग्ग करुं? इछं करेमि काउस्सग्गं अन्नथं० कही चार लोगस्सका काउस्सग्ग सागरवर गंभीरा तक करना. स्तुतिके स्थान वृद्ध शांति कहना. पिछें प्रगट लोगस्स कहना.

दूसरे गामसें स्वसमाचारीवाले साधुके काल धर्म का समाचार मिलनेसेंभी उपर प्रमाणे आठ थोइसे, सीधे देव वांदने तथा अजीसंता वृध्धशांति कहना. साध्वीने समाचार आनेसे साध्वीओंने देव वंदन करना.

कोइ साधु कालधर्म पामे तब श्रावककों करनेका विधि.

प्रथम स्नान करना केश होय तो प्रथम उतराना. जरा पगकी अंगुलीको छेदकरना. हाथ पगकी आंगलीयोंकों बंध करना. शरीरपर चंदन केशर बरासका विलेपन करना. मृत्यु स्थानके तथा स्नान करायके बेठानेके स्थानक लोखंडकी खीली ठोकनी. नये वस्त्र पहेनाना. दक्षिण तर्फ रजोहरण (चरवली) मुहपत्ति रखना. मांही तर्फ झोली, उस्मे जन्न पात्र एक लडु सहित रखना. रोहिणी, विशाखा. पुनर्वसु तिन उत्तरा ए छ नक्षत्र में दो पुतले दर्भ के करके रखना. ज्येष्टा, आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा, भरणी अश्लेषा ए छ नक्षत्रे पुतलें न करणा. दूसरे १५ नक्षत्रेमें एक पुतला करणा. वो पुतलेके जमणे

हाथमे ठंघा (चरवला) मुहपत्ति देना ठर वाम हा थमे जग्र पात्र तथा एक लडु सहीत झोली देनी. दो पुतले होय तो दोनोकों देना. पिछें शोकयुक्त चित्तसें महोत्सव सहित योग्य स्थानके ले जाके चंदनादि काष्टोंसें अग्नि संस्कार करना. प्रांतमें सर्व अग्नि शांत कर रक्षा योग्य स्थानकमें परठवणी पिछे गुरु पास आयके लघुशांति वा वृद्धशांति सुनके अनित्यताका उपदेश श्रवण कर स्वस्थानक जाना.

साधु दररोज सात चैत्यवंदन करे सो नीचे प्रमाण.

१ राइपडिक्कमणाके प्रारंभमें जग चिंतामणीका.
२ राइपडिकमणाके अंतमें विशाल लोचनका
३ मंदरजीमें दर्शन करने जाय उहां करे
४ पच्चरकाण पारतें जगचिंतामणीका.
५ आहार कररहे पिछे जगचिंतामणीका.
६ देवसिक प्रतिक्रमके प्रारंभमे.
७ संथारा पोरिसी जणावणमें चउक्कसायका

२४ साधु दररोज चारवार सझाय करे सो इस प्रमाणे,
१ सवेरकी पडिलेहणके अंतमें धम्मो मंगल० की.
२ सांजकी पडिलेहण मध्यमे धम्मो मंगल० की.
३ देवसिक प्रतिक्रमणके अंतमें कहते हें सो.
४ राइ पडिक्कमणाके प्रारंभमे जरहेसर की.

सप्तम परिछेदः समाप्तः

॥ अथ अष्टम परिछेदः प्रारंभः ॥

॥ अथ षोडश संस्कार प्रारंभ ॥

तत्त्व ज्ञान मयो लोके, य आचारं प्रणीतवान् ॥
केनापि हेतुना तस्मै, नम आद्याययोगिने ॥
गर्भाधानं पुंसवनं जन्मचन्द्रार्कदर्शनम् ॥
क्षीराशनं चैव षष्ठी तथा च शुचि कर्म च ॥
तथा च नामकरणमन्नप्राशनमेव च ॥
कर्णवेधो मुण्डनं च तथोपनयनं परम् ॥
पाठारम्भो विवाहश्च व्रतारोपोन्तकर्म च ॥
अमी षोडशसंस्कारा गृहिणां परिकीर्त्तिताः ॥

भाषार्थः—गर्भाधान १, पुंसवन २, जन्म ३, चंद्र सूर्यदर्शन ४, क्षीराशन ५, षष्ठी ६, शुचिकर्म ७, नामकरण ८, अन्नप्राशन ९, कर्णवेध १०, मुंडन ११, उपनयन १२, विद्यारंभ १३, विवाह १४, व्रतारोप १५, अंतकर्म १६ येह सोलां संस्कार गृहस्थीको करने चहिये व्रतारोपसंस्कारको वर्जके, शेष १५ पंदरां संस्कार, साधुर्उने नही करणे.

संस्कार कराने वाले गुरु विषे

अर्हन्मंत्रोपनीतश्च ब्राह्मणः परमार्हतः ॥
क्षुल्लको वाऽऽसगुर्वाज्ञो गृहिसंस्कारमाचरेत् ॥ १॥

अर्थः—अर्हन्मंत्रोपनीत परमश्रावक, ब्राह्मण, और प्राप्त करी है गुरुकी आज्ञा जिसने ऐसा क्षुल्लक

(श्रावक विशेष) जिसका स्वरूप आगें लिखेंगे.
इन दोनोंमेंसे कोइ एक गृहस्थोंको संस्कार करावे.

प्रथम गर्भाधान संस्कारका विधि.

जब गर्भधारण को पांच मास होवे, तब गर्भाधा नविधि, गृहस्थगुरु जैन ब्राह्मणों ने कराना. गर्भा धान १, पुंसवन २, जन्म ३, नाम ४ और अंत ५, इन पांच संस्कारोंमें अवश्य कर्मके वास्ते मास दि नादिकोंकी शुद्धि न देखनी. । श्रवण, हस्त, पुनर्व सु, मूल, पुष्य, मृगशीर्ष, येह नक्षत्र और रवि, मंगल, बृहस्पति, येह वार पुंसवनादिकर्मोंमें कहे हैं. । इसवास्ते पांचमे मासमें शुभ तिथि, वार, नक्ष त्रके दिनमें पतिको बलवान् चंद्रादि देखकर, देश विरतिगुरु जिसने स्नान करा है, चोटी बांधी है, उपवीत और उत्तरासंग धारण करा है, श्वेतवस्त्र पहिना है, पंचकक्षा धारण करा है, मस्तकमें चंद नका तिलक करा है, सुवर्णमुद्रासहित दक्षिणकर सावित्रीक प्रकोष्ठवद्ध पंचपरमेष्टि मंत्रोद्दिष्ट पांच ग्रंथियुक्त दर्भसहित कौसुंभ सूत्रका कंकण है जिस के, तथा जिसने रात्रिमें ब्रह्मचर्य पाला है, जिसने उपवास, आचाम्ल, निर्विकृति, एकाशनादि प्रत्या ख्यान करा है, संप्राप्तकरी है आजन्मसें यतिगुरुकी आज्ञा जिसने, ऐसे पूर्वोक्त विशेषणयुक्त, जैनब्राह्म

ण, अथवा क्षुल्लक, गृहस्थोंके संस्कारकर्म करणेके योग्य होता है. ॥

उक्तं च ॥

शांतो जितेंद्रियो मौनी दृढसम्यक्त्ववासनः ॥
अर्हत्साधुकृतानुज्ञः कुप्रतिग्रहवर्जितः ॥

नाषार्थः—शांत, जितेंद्रिय, मौनी, दृढसम्यक्त्ववान्, अर्हन् और साधुकी आज्ञा करनेवाला, बुरा दान न लेवे, क्रोध मान माया लोनका जीपक, कुलीन, सर्व शास्त्रोंका जानकार, अविरोधी, दयावान्, राजा और रंकको समदृष्टिसें देखनेवाला, प्राणोंके नाश होते नी अपने आचारको न त्यागे सुंदर चेष्टावाला होवे, अंगहीन न होवे, सरल होवे, सदा सद्गुरुकी सेवा करने वाला होवे, विनीत, बुद्धिमान्, कांतिमान्, कृतज्ञ, दोप्रकारसें द्रव्यनावसें शुचि होवे; गृहस्थोंके संस्कार करनेमें ऐसा गुरु चाहिये.

सो पूर्वोक्त विशेषणविशिष्ट गुरु, गर्नाधान कर्ममें प्रथम गर्नवंतीके पतिकी आज्ञा लेवे. । और सो गर्नवंतीका पति, नखसें लेके शिखा (चोटी) पर्यंत स्नान करके, शुचि वस्त्र पहिनके निज वर्णानुसार उपवीत उत्तरीय वस्त्र उत्तरासंग करके, प्रथम शास्त्रोक्त बृहत्स्नात्रविधिसें अर्हत्प्रतिमाका स्नात्र करे. और तिस स्नात्रके पाणीको शुन्न नाजनमें स्थापन करे. । तिसपीछे शास्त्रोक्त विधिसें गंध, पुष्प, धूप,

दीप, नैवेद्य, गीत, वादित्रोंकरके जिनप्रतिमाकी पूजा करे. । पूजाके अंतमें गुरु, गर्नवंतीको, अविध वायोंके हाथोंकरी स्नात्रोदककरके सिंचनरूप अभिषेक करवावे. । पीछे सर्व जलाशयोंके जलोंके जलोंको एकत्र मिलाके, सहस्रमूलचूर्ण तिसमें प्रक्षेप करके, तिस जलको शांतिदेवीके मंत्रकरके, अथवा शांतिदेवीके मंत्रगर्भित स्तोत्रकरके मंत्रें. ॥

शांतिदेवीमंत्रो यथा ॥

"ॐ नमो निश्चितवचसे । नगवते । पूजामर्हते । जयवते । यशस्विने । यतिस्वामिने । सकलमहासंपत्तिसमन्विताय । त्रैलोक्यपूजिताय । सर्वासुरामरस्वामिपूजिताय । अजिताय । जुवनजनपालनोद्यताय । सर्वडुरितौघनाशनकराय । सर्वाशिवप्रशमनाय । डुष्टग्रहजूतपिशाचशाकिनीप्रमथनाय । यस्येतिनाममंत्रस्मरणतुष्टा । नगवती । तत्पदनक्ता । विजयादेवी ॐ ह्रीं नमस्ते । नगवति । विजये । जय २ । परे । परापरे । जये । अजिते । । अपराजिते । जयावहे । सर्वसंघस्य नद्रकल्याणमंगलप्रदे । साधूनां शिवतुष्टिपुष्टिप्रदे । जय २ नव्यानां कृतसिद्धे । सत्वानां निर्वृतिनिर्वाणजननि । अनयप्रदे । स्वस्तिप्रदे नक्तानां जंतूनां शुनप्रदानाय नित्योद्यते । सम्यग्दृष्टीनां धृतिरतिमतिबुद्धिप्रदे । जिनशासनरतानां शांतिप्रणतानां जनानां श्रीसंपत्कीर्त्तियशोव

र्द्धिनि । सलिलात् रक्ष २ । अनिलात् रक्ष २ । विषात् रक्ष २ । विषधरेभ्यो रक्ष २ । दुष्टग्रहेभ्यो रक्ष २ । राज नयेभ्यो रक्ष २ । रोग नयेभ्यो रक्ष २ । रण नयेभ्यो रक्ष २ । राक्षसेभ्यो रक्ष २ । रिपुगणेभ्यो रक्ष २ । मारिभ्यो रक्ष २ । चौरेभ्यो रक्ष २ । ईतिभ्यो रक्ष २ । श्वापदेभ्यो रक्ष २ । शिवं कुरु २ । शांतिं कुरु २ । तुष्टिं कुरु २ । पुष्टिं कुरु २ । स्वस्तिं कुरु २ । नगवति । गुणवति । जनानां शिवशांतितुष्टिपुष्टि स्वस्तिं कुरु २ । ॐ नमो ॐ ह्रः यः क्षः ह्रीं फुट् २। स्वाहा ” ॥ इति ॥

शांतिदेवी स्तोत्र ॥

“ॐ नमो नगवतेऽर्हते । शांतिस्वामिने । सकलातिशेषकमहासंपत्समन्विताय । त्रैलोक्यपूजिताय । नमः शांतिदेवाय । सर्वामरसमूहस्वामिसंपूजिताय । नुवनपालनो द्यताय । सर्वडुरितविनाशनाय । सर्वाशिवप्रशमनाय सर्वडुष्टग्रहनूतपिशाचमारिमाकिनी प्रमथनाय । नमो नगवति । विजये । अजिते । अपराजिते । जयंति । जयावहे । सर्वसंघस्य । नडकल्याणमंगलप्रदे । साधूनां शिवशांतितुष्टिपुष्टिस्वस्तिदे । नव्यानां सिद्धिवृद्धिनिर्वृतिनिर्वाणजननि। सत्वानां अनयप्रदाननिरते । नक्तानां शुनावहे । सम्यग् दृष्टीनां धृतिरतिमतिबुद्धिप्रदानोद्यते । जिनशासन निरतानां श्रीसंपत्यशोवर्द्धिनि । रोगजलज्वलनविष

विषधरदुष्टज्वरव्यंतरज्वरराक्षसरिपुमारि चौरेतिश्वा पदोपसर्गादिन्नयेन्यो रक्ष २ । शिवं कुरु २ । शांतिं कुरु २ तुष्टिं कुरु २ । पुष्टिं कुरु २ । स्वस्ति कुरु २ । न गवतिश्रीशांतितुष्टिपुष्टिस्वस्ति करु २ । ॐ नमो नमो हुँ ह्नः यः क्षः ह्रीं फट् २ स्वाहा" ॥ इति ॥

इस स्तोत्र करके अथवा पूर्वोक्त मंत्र करके सहस्र मूल चूर्ण सर्व जलाशयोंके जलको सातवार मंत्रके, पुत्रवाली सधवा स्त्रीयोंके हाथेंकरी मंगलगीतोंके गातेहुए गर्न्नवंतीको स्नानकरावे, सुगंधका अनुलेपन करी सदश वस्त्र (विवाह समय पहिरनेका वस्त्र) प हिराके, संपत्तिअनुसार आन्नरण धारण करवाके, पतिके साथ वस्त्रांचलका ग्रंथिवंधन करके, पतिके वामेपासे शुन्न आसनके ऊपर स्वस्तिक मंगलकरके, गर्न्नवंतीको बिठलावे ग्रंथियोजनमंत्रो यथा ॥

ॐ अर्हं । स्वस्ति संसारसंवंधवरूयोः पतिन्नार्ययोः॥
युवयोरवियोगोस्तु नववासांतमाशिषा ॥ १ ॥

विवाहको वर्जके, सर्वत्र इसीमंत्रकरके दंपतीका (स्त्रीन्नर्त्ताका) ग्रंथिवंधन करना. । तदपीछे गुरु, तिस गर्न्नवंतीके आगे शुन्न पट्टे ऊपर पद्मासन लगाके बैठके, मणिस्वर्णरूप्यताम्रपत्रके पात्रोंमें जिनस्नात्रके जलसंयुक्त तीर्थोदकको स्थापन करके, आर्यवेदमंत्र पढके, कुशाग्र बिंदुयोंकरके, गर्न्नवं तीको सींचन करे.

आर्यवेदमंत्रो यथा ॥

"ॐ अर्हं । जीवोसि । जीवतत्त्वमसि । प्राण्यसि । प्राणोसि । जन्मासि । जन्मवानसि । संसार्यसि । संसरन्नसि । कर्मवानसि । कर्मबद्धोसि।भवभ्रांतोसि। भवविभ्रमिषुरसि । पूर्णाङ्गोसि । पूर्णपिण्डोसि । जातोपाङ्गोसि । जायमानोपांङ्गोसि । स्थिरो भव नन्दिमान् भव । वृद्धिमान् भव । पुष्टिमान् भव । ध्यातजिनो भव । ध्यातसम्यक्त्वो भव । तत्कुर्या येन न पुनर्जन्मजरामरणसंकुलं संसारवासं गर्भवासं प्राप्नोषि । अर्हं ॐ ॥"

इस मंत्रकरके दक्षिणहाथमें धारण करे कुशाग्र तीर्थोदक बिंदुयोंकरके गर्भवंतीके शिर और शरीर ऊपर सातवार सींचन करे. । तदपीछे पंच परमेष्ठिमंत्र पठनपूर्वक दंपतीको आसनसें उठायकरके, जिनप्रतिमाके पास लेजाके शक्रस्तव पाठ करके जिनवंदन करवावे. । यथाशक्ति फलमुद्रा वस्त्र स्वर्णादि जिनप्रतिमाके आगे ढोवे. तदपीछे गर्भवंती स्वसंपत्तिके अनुसार वस्त्राभरण द्रव्य सुवर्णादिदान गुरुको देवे. । तदपीछे गुरु, पतिसहित गर्भवंतीको आशीर्वाद देवे. यथा ॥

. ज्ञानत्रयं गर्भगतोपि विंदन् संसारपारैकनिवद्धचित्तः॥ गर्भस्य पुष्टिं युवयोश्च तुष्टिं युगादिदेवः प्रकरोतुनित्यम् ॥ १ ॥

तदपीछे आसनसें उगायके ग्रंथिवियोजन करे. ग्रंथिवियोजनमंत्रो यथा ॥

ॐ अर्हं । ग्रंथौ वियोज्यमानेऽस्मिन् स्नेहग्रंथिः स्थिरो स्तु वां ॥ शिथिलोस्तु नवग्रंथिः कर्मग्रंथिदृढीकृतः॥१॥

इस मंत्रकरके ग्रंथि खोलके धर्मागारमें दंपतीको लेजाके गुरु को वंदना करवावे, और साधुयोंको नि र्दोष जोजन वस्त्र पात्रादि दिलवावे. ॥

तदपीछे स्वकुलाचारयुक्तिकरके कुलदेवता, गृह देता, पुरदेवतादि पूजन जानना.

॥ जैन वेद मंत्रोत्पत्ति ॥

यहां जो कहाहै कि,जैनवेदमंत्र;सो कथन करतेहैं. यथा आदिदेव (ऋषनदेव) का पुत्र,अवधिज्ञानवान्, आदिचक्री, नरत राजा,श्रीमदादिजिनरहस्योपदेशसें प्राप्त किया है सम्यक् श्रुतज्ञान जिसने—सो नरत राजा—सांसारिक व्यवहारसंस्कारकी स्थितिकेवास्ते, अर्हन्की आज्ञा पाकरके, धारे हैं ज्ञानदर्शनचारि त्ररत्नत्रय, करणा करावणा अनुमतिसें त्रिगुणरूप तीनसूत्र—मुद्राकरके चिन्हितवक्षःस्थलवाले ब्राह्म णोंको (माहनोंको) पूज्यतरीके मानता हुआ, और तिस अवसरमें अपनी वैक्रियलब्धिसें चार मुखवा ला होके, चार वेदोंको उच्चारण करता नया. तिन के नाम—संस्कारदर्शन १, संस्थापनपरामर्शन २, त त्त्वावबोध ३, विद्याप्रबोध ४, । सर्व नयवस्तु कथन

करनेवाले इन चारों वेदोंको, माहनोंको पठ न कराता हुआ. । तदपीछे वह माहन, सात तीर्थंकरोंके तीर्थतक अर्थात् चंद्रप्रजतीर्थंकरके तीर्थतक सम्यक्त्वधारी रहें, और आर्हतश्रावकोंको व्यवहार दिखाते रहें, तथा धर्मोपदेशादि करते रहें । तदपीछे नवमे तीर्थकर श्रीसुविधिनाथपुष्पदंतके तीर्थके व्यवछेद हुए, तिस वीचमें तिन माहनोंने परिग्रहके लोनी होके, स्वच्छंदसें तिन आर्यवेदों कि जगे कुठकसुनी सुनाइ वातों लेके नवीन श्रुतियां रचीं, तिनमें हिंसक यज्ञादि और अनेक देवतायोंकी स्तुति (प्रार्थना) रचीं (क्रमसें ऋग्, यजुः साम, अथर्व,) नाम कल्पना करके, मिथ्यादृष्टिपणेको प्राप्तकरे तब व्यवहारपाठसें पराङ्मुख अर्थात् परमार्थरहित मनःकल्पित हिंसक यज्ञप्रतिपादकशास्त्रोंसें पराङ्मुख, ऐसे श्रीशीतलनाथादिके साधुयोंने तिन हिंसक वेदोंको छोरुके, जिनप्रणीत आगमकोही प्रमाणभूत माने । तिन ब्राह्मणोंमेंसें जी, जिन माहनोंने (ब्राह्मणोंने) सम्यत्क न त्यागन करा, अर्थात् जे माहन पुनः तीर्थंकरोके उपदेशसें सम्यत्तव पाके दृढ रहे, तिनोके संप्रदायमें आजजी जरत प्रणीत वेदका लेश कर्मांतरव्यवहार गत सुनते हैं; सोही यहां कहते हैं.

यत उक्तमागमे ॥
सिरिजरहचक्कवट्टी आरियवेयाण विस्सुउ कत्ता ॥
माहणपढणछमिणं कहिअं सुहफाणववहारं ॥ १ ॥
जिणतिछे वुछिन्ने मिछत्ते माहणेहिं ते ठविया ॥
असंजयाण पूया अप्पाणं कारिया तेहिं ॥ २ ॥

व्याख्या;–श्रीजरतचक्रवर्त्ती आर्यवेदोंका कर्त्ता प्रसिद्ध है. जरतने आर्यवेद किसवास्ते करे, माहनोंके पढनेके वास्ते, शुज ध्यानकेवास्ते, और जगत्व्यवहार केवास्ते. । जिन तीर्थंकरके तीर्थके व्यवछेद हुए वह आर्यवेद तिन माहनोंने मिथ्यामार्गमें स्थापन करे, और असंयतिहोके तिनोने अपनी पूजा जगत्में करवाइ इन वेदोंका विशेष निर्णय जैनतत्वादर्शग्रंथसे जानना ॥

इस गर्जाधानसंस्कारमें इतनी वस्तु चाहिये ॥ पंचामृत स्नात्र १, सर्वतीर्थोदक २, सहस्रमूलचूर्ण ३, दर्ज ४, कौसुंजसुत्र ५, ऊव्य ६, फल ७, नैवेद्य ८, सदशवस्त्र दो (चुनरी) ए, शुजआसन १०, शुजपट्ट ११,स्वर्णताम्रादिजाजन १२, वादित्र १३, पतिवाली स्त्रीयां१४ और गर्जवंतीका पति १५,

इति गर्जाधान संस्कार विधि.

॥ अथ पुंसवन संस्कार वर्णन ॥

गर्जसें आठ मास व्यतीत हुए, सर्व दोहदोंके

पूर्ण हुए, सांगोपांग गर्नके उत्पन्न हुए, तिसके श रीरमें पूर्णीनाव प्रमोदरूप स्तनोंमें दूधकी उत्पत्तिका सूचक, पुंसवन संस्कार करना । मूल, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मृगशिर, श्रवण, येह नक्षत्र; और मंगल, गुरु आदित्य, येह वार, पुंसवन कर्ममें संमत है. । रिक्ता दग्धा, क्रूरा, तीन दिनको स्पर्शनेवाली, अवम् (टूटी तिथी) षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी, अमावास्या, ये तिथि यां वर्जके; गंमांत और अशुन नक्षत्रवर्जित, पूर्वोक्त वारनक्षत्रसहित दिनमें पतिको चंद्रमाके बल हुए, पुंसवनका आरंन करे; सो ऐसें है. । पूर्वोक्त वेष, और स्वरूपवाला गुरु पतिके समीप हुए, अथवा न हुए, ग र्नाधान कर्मके अनंतर, जो वस्त्रवेष औरकेशवेष धा रण करे हैं, तिसही वस्त्रवेष और केशवेषवाली गर्नवं तीको, रात्रिके चौथे प्रहरमें तारेसहित आकाशहोवे तव मंगलगीतगानपूर्वक आनरणसहित अविधवा स्त्रीयोंकरके, अन्यंग उद्वर्त्तन जलानिषेकोंकरके स्नान करावे. । तदपीछे प्रनात हुए नवीन वस्त्र गंधमा ल्यनूषित गर्नवंतीको साक्षिणी करके, घरदेहरामें अर्हत्प्रतिमाको तिसका पति, वा तिसका देवर, वा तिसके कुलका पुरुष, वा गुरु, आप पंचामृतकरके बृहत्स्नात्रविधिसें स्नात्र करावे. । तदपीछे सहस्रमू लीस्नात्र प्रतिमाको करे. । पीछे तीर्थोदक स्नात्रकरे पीछे सर्वस्नात्रोदकोंको सुवर्णरूप्यताम्रादि नाजनमें

स्थापन करके, शुभासन ऊपर बैठी हुई साक्षीभू त करे हैं पतिदेवरादि कुलज जिसने, ऐसी गर्भवं तीको, दक्षिणहस्तमें कुशा धारण करके, कुशाग्रविं दुयोंकरके भ्रात्रोदकसें गर्भवंतीके शिरस्तनउदरको सिंचन करता हुआ, इस वेदमंत्रको पढे. ॥

"॥ ॐ अर्हं । नमस्तीर्थंकरनामकर्मप्रतिबंधसंप्रा प्तसुरासुरेंद्रपूजायार्हते । आत्मन् त्वमात्मायुः कर्मबं धप्राप्यं मनुष्यजन्मगर्भावासमवाप्नोपि तद्भव जन्म जरामरणगर्भवासविछित्तये प्राप्तार्हद्धर्मः अर्हद्भक्तः सम्यक्त्वनिश्चलः कुलभूषणः सुखेन तव जन्मास्तु । भवतु तव त्वन्मातापित्रोः कुलस्याभ्युदयः । ततः शां तिः पुष्टिः तुष्टिर्वृद्धिर्ऋद्धिः कांतिः सनातनी अर्हं ॐ॥

इस वेदमंत्रको आठवार पढता हुआ, गर्भवंती को अभिषेचन करे. । तदपीछे गर्भवंती आसनसें उठके सर्वजातिके आठ २ फल, स्वर्णरूप्यमयी मु द्रा आठ, प्रणाम (नमस्कार) पूर्वक जिनप्रतिमाके आगे ढोवे. । तदपीछे गुरुके चरणोंको नमस्कार क रके, दो वस्त्र, सोनेरूपेकी आठ मुद्रा, और तंबो लसहित आठ सुपारी गुरुको देवे. । तदपीछे धर्मा गार (पोपधशाला) में जाकर साधुयोंको वंदना नमस्कार करे, और साधुयोंको यथाशक्तिसें शुद्ध अन्न वस्त्र पात्र देवे. । कुलवृद्धोंको नमस्कार करे. ॥ तदपीछे स्वकुलाचारकरके कुलदेवतादिपूजन जानना.

पंचामृत १, स्नात्रवस्तु २, स्त्रीके नवीन वस्त्र ३, नवीन वस्त्रयुगल ४, स्वर्णकी आठ मुद्रा ५. रूपेकी आठ मुद्रा ६, सोनेकी ८, और रूपेकी ८ एवं षोडश (१६) मुद्रा और ७, फलकी जाति ८; मूलसहित दर्नेए, तांबूल १०, सुगंध पदार्थ ११, पुष्प १२, नैवेद्य १३, सधवा स्त्रीयां १४, गीत मंगल १५, इतनी वस्तु पुंसवनसंस्कारमें चाहिये. ॥

इति द्वितीय पुंसवन संस्कार विधि

अथ तृतीयं जन्मनामा संस्कार वर्णनं ॥

जन्मसमय हुए, ज्योतिषि सहितगुरु,सूतिकागृह के निकट गृहमें एकांतस्थानमें जहां रौला न सुनाइ देवे, स्त्री, बाल, पशु, जहां न आवे, तहां घटियंत्र (घरी—कलाक) सहित उपयोगसहित चित्तवाला होकर, परमेष्ठिजापमें तत्पर हुआ थका रहे. । यहां पहिलां तिथि वार नक्षत्रादि देखना न चाहिये क्यों कि, यह जीव कर्म और कालके अधीन है. ॥

बालकके जन्म हुए समीप रहा हुआ गुरु, ज्यो तिषिको जन्मक्षण जाननेके वास्ते आज्ञा करे.तिसने भी सम्यक् जन्मकाल, करगोचर करके धारण करना तदपीछे बालकके पिता, पितृव्य (चाचा-काका) पितामहोंनें, नाल विना छेद्यां गुरुका, और ज्योति षिका बहुत वस्त्र आभूषणवित्तादिसें पूजन करना. क्योंकि, नाल छेद्यांपीछे सूतक हो जाता है. । गुरु

बालके पिता, पितामह (दादा) आदिककों आशीर्वाद देवे. ॥

यथा ॥

'ॐ अर्हं कुलं वो वर्द्धतां । संतु शतशः पुत्रप्रपौत्राः । अक्षीणमस्त्वायुर्द्धनं यशः च अर्हं ॐ ॥' इति वेदाशीः ॥

यो मेरुशृंगे त्रिदशाधिनाथैर्दैत्याधिनाथैस्सपरिच्छेदैश्च ॥ कुंभामृतैः संस्नपितस्सदेव आद्यो विदध्यात् कुलवर्द्धनंच ॥ १ ॥

ज्योतिषिकाशीर्वादो यथा शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

आदित्यो रजनीपतिः क्षितिसुतः सौम्यस्तथा वाक्पतिः शुक्रः सूर्यसुतो विधुंतुदशिखिश्रेष्ठा ग्रहाः पांतुवः ॥ अश्विन्यादिभमण्डलं तदपरो मेषादिराशिक्रमः कल्याणं पृथुकस्य वृद्धिमधिकां संतानसम्पत्स्य च ॥१

तदपीछे लग्न धारण करके, ज्योतिषिके स्वघर गये हुए, गुरु सूतिकर्मकेवास्ते कुलवृद्धा स्त्रीयोको, और दाईयोंको निर्देश करे । अन्य घरमें रहाही बालकको स्नान करानेवास्ते जलको मंत्रके देवे ॥

जलाभिमंत्रणमंत्रो यथा ॥

॥ॐ अर्हं । नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः॥ क्षीरोदनीरैः किल जन्मकाले, यैर्मेरुशृङ्गे स्नपितो जिनेन्द्रः॥ स्नानोदकं तस्य भवत्विदं च,शिशोर्महामङ्गलपुण्यवृद्धै ॥ १ ॥

इस मंत्रकरके सात वार जलको मंत्रें, तिस जल करके कुलवृद्धा स्त्रीयों बालकको स्नान करावे. । और अपनेश्कुलाचारके अनुसार नालछेद करे. तदपीछे गुरु स्वस्थानमें बैठाही चंदन, रक्तचंदन, बिल्वकाष्ठादि दग्ध करके तिनकी जस्म श्वेतसर्षप और लवण मिश्रित करके पोट्टलिका बांधे.

रक्षाभिमंत्रणमंत्रो यथा ॥

" ॐ ह्रीं श्रीअंबे जगदंबे शुभे शुभंकरे अमुं बालं भूतेभ्यो रक्ष २ । ग्रहेभ्यो रक्ष २ । पिशाचेभ्यो रक्ष २ । वेतालेभ्यो २। शाकिनीभ्यो रक्ष २। गगनदेवीभ्यो रक्ष २ । दुष्टेभ्यो रक्ष २ । शत्रुभ्यो रक्ष २ । कार्मणेभ्यो रक्ष २ । दृष्टिदोषेभ्यो रक्ष । २ जयं कुरु विजयं कुरु । तुष्टिं कुरु । पुष्टिं कुरु । कुलवृद्धिं कुरु । श्रीं ह्रीं ॐ भगवति श्रीअंबिके नमः ॥

इस मंत्रकरके सातवार मंत्रित रक्षापोट्टलीको काले सूत्रसें बांधके, लोहेका टुकडा, वरुणमूलका टुकडा, रक्तचंदनका टुकडा और कौडी, इनोसहित रक्षापोट्टलिको कुलवृद्धा स्त्रीयोंके पास बालकके हाथ ऊपर बंधावे. ॥

सांवत्सर(पंचांग)घटीपात्र, चंदन, रक्तचंदन, समीपमें एकांत गृह,सरसव,लवण कौशेय कृष्णसूत्र,कौमीगीतमंगल, लोहा,रक्षा,वस्त्र,दक्षिणावास्ते धन, सूतिका, कुलवृद्धा, सर्व जलाशयका जल, जन्मसंस्कारमें

इतनी वस्तु चाहिये. ॥ इतिजन्म सं० विधि; ॥ अथ कदाचित् अश्लेषामें,ज्येष्टामें,मूलमें,गंडांतमें गंडामें बालकका जन्म होवे तो बालकको,बालकके मातापिताको, बालकके कुलको, दुःख, दारिद्र, शोक, मरणादि कष्ट होवे, इसवास्ते बालकका पिता और कुलज्येष्ट (कुलका बडा) शांतिकविधिमें कहे विधानके करेविना बालकका मुख न देखे. ॥

इति जन्मसंस्कार विधिः

अथ चतुर्थ सूर्यचंद्रदर्शन संस्कार वर्णन

तीसरे दिन गुरु समीपके घरमें अर्हत् पूजन पूर्वक जिनप्रतिमाके आगे स्वर्णताम्रमयी वा रक्तचंदनमयी सूर्यकी प्रतिमा स्थापन करे.तदपीछे स्नान करके अलंकृत बालककी माताको जिसने दोनों हाथोंमें बालकको धारण किया है ऐसी माताको प्रत्यक्ष सूर्यके सन्मुख लेजाके, वेदमंत्रको उच्चारण करता हुआ, गुरु पुत्रको सूर्यका दर्शन करावे. ॥

सूर्यवेदमंत्रो यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं । सूर्योऽसि । दिनकरोऽसि । सहस्रकिरणोऽसि । विभावसुरसि । तमोपहोऽसि । प्रियंकरोऽसि । शिवंकरोऽसि । जगच्चक्षुरसि । सुरवेष्टितोऽसि । विततविमानोऽसि । तेजोमयोऽसि । अरुणसारथिरसि । मार्त्तंडोऽसि । द्वादशात्माऽसि । चक्रबांध

वोऽसि । नमस्ते जगवन् प्रसीदास्य कुलस्य तुष्टिं पुष्टिं प्रमोदं कुरु २ सन्निहितो जव अर्हं ॥"

ऐसें गुरुके पठन करे हुए, सूर्यको देखके, माता पुत्रसहित, गुरुको नमस्कार करे. गुरु पुत्रसहित माताको आशीर्वाद देवे. ।

यथा । आर्या ॥

सर्वसुरासुरवंद्यः कारयिता सर्वधर्मकार्याणाम् ॥
जूयात्रिजगच्चक्षुर्मंगलदस्ते सपुत्रायाः ॥ १ ॥

सूतकमें दक्षिणा नही है. । तदपीछे गुरु स्वस्थानमें आयकर जिन प्रतिमाको और स्थापित सूर्यको विसर्जन करे. माता और पुत्रको सूतकके जयसें तहां जिनप्रतिमाके पास न लावे. तिस दिनमें ही संध्याकालमें गुरु जिनपूजापूर्वक जिनप्रतिमाके आगे स्फटिकरूप्यचंदनमयी चंद्रमाकी मूर्ति स्थापन करे, तिस चंद्रमाकी मूर्तिका शांतिकादिक प्रक्रमोक्त विधिकरके पूजन करे. तदपीछे तैसेंही सूर्य. दर्शनरीतिसें चंद्रमाके उदय हुए प्रत्यक्ष चंद्रसन्मुख माता और पुत्रको ले जाके, वेदमंत्र उच्चार करता हुआ, मातापुत्र दोनोंको चंद्रका दर्शन करावे. ॥

चंद्रस्य वेदमंत्रो यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं । चंद्रोऽसि । निशाकरोऽसि । सुधाकरोऽसि । चंद्रमा असि । ग्रहपतिरसि । नक्षत्रपतिरसि । कौमुदीपतिरसि । निशापतिरसि । मदनमि

त्रमसि । जगज्जीवनमसि । जैवातृकोऽसि । क्षीरसागरोद्भवोऽसि । श्वेतवाहनोऽसि । राजाऽसि । राजराजोऽसि । औषधीगर्भोऽसि । वंद्योऽसि । पूज्योऽसि । नमस्ते भगवन् अस्य कुलस्य ऋद्धिं कुरु । वृद्धिं कुरु । तुष्टिं कुरु । पुष्टिं कुरु जयं विजयं कुरु । भद्रं कुरु । प्रमोदं कुरु । श्रीशशांकाय नमः । अर्हं ॥"

ऐसें पढता हुआ, माता पुत्रको चंद्र दिखलाके खमा रहे. । माता पुत्र सहित गुरुको नमस्कार करे. । गुरु आशीर्वाद देवे. ॥

यथा । वृत्तम् ॥

सर्वौषधीमिश्रमरीचिजालः सर्वापदां संहरणप्रवीणः॥
करोतु वृद्धिं सकलेपि वंशे युष्माकमिन्दुःसततं प्रसन्नः

तदपीछे गुरु जिनप्रतिमा, और चंद्रप्रतिमा दोनोंको विसर्जन करे. । इसमें इतना विशेष है. । कदाचित् तिस रात्रिके विषे चतुर्दशी अमावास्याके वशसें वा वादलसहित आकाशके होनेसें चंद्रमा न दिखलाइ देवे तो भी पूजन तो तिस रात्रिकीही संध्यामें करना; और दर्शन तो और रात्रिमें भी चंद्रमाके उदय हुए हो सक्ता है. ॥ सूर्य और चंद्रमाकी मूर्ति, तिसकी पूजाकी वस्तु, सूर्यचंद्रदर्शनसंस्कारमें चाहिये. ॥

इति चंद्रसूर्यदर्शनसंस्कारविधिः ॥

॥ अथक्षीराशननामा पांचमा संस्कारं ॥

तिसही जन्मसें तीसरेदिन, चंद्रसूर्यके दर्शनके दिन मेंही, बालकको क्षीराशनसंस्कार करना । तद्यथा । पूर्वोक्त वेषधारी गुरु, अमृतमंत्रकरके एकसौ आठ वार मंत्रित तीर्थोदकसें बालकको, और बालककी माताके स्तनोंको अभिषेक करके, माताकी गोदी (अंक) में स्थित बालकको दूध पावे. पूर्णांगना शिकासंबंधि स्तन्य पहिलां चुंघावे, स्तन्य (दूध) पीते हुए बालकको गुरु आशीर्वाद देवे ॥

यथा वेदमंत्र ॥

"॥ ॐ अर्हं जीवोऽसि । आत्माऽसि । पुरुषोऽसि । शब्दज्ञोऽसि । रूपज्ञोऽसि । रसज्ञोऽसि । गंधज्ञोऽसि । स्पर्शज्ञोऽसि । सदाहारोऽसि । कृताहारोऽसि । अभ्यस्ताहारोऽसि । कावलिकाहारोऽसि । लोमाहारोऽसि । औदारिकशरीरोऽसि । अनेनाहारेण तवांगं वर्द्धतां । बलं वर्द्धतां । तेजोवर्द्धतां । पाटवं वर्द्धतां । सौष्ठवं वर्द्धतां पूर्णायुर्भव । अर्हं ॐ ॥"

इस मंत्रकरके तीन वार आशीर्वाद देवे ॥

अमृतमंत्रो यथा ॥

"ॐ ॥ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय २ स्वाहा ॥"

इति क्षीराशनसंस्कार विधिः ॥

अथ षष्टमं षष्टीसंस्कारस्वरूपं ॥

छठे दिनमें संध्याके समयमें गुरु प्रसूतिघरमें आकरके षष्ठीपूजन विधिका आरंभ करे, षष्टीपूजनमें सूतक नहीं गिणना. यत उक्तम् ।

स्वकुले तीर्थमध्ये च तथावश्ये बलादपि ॥
षष्ठीपूजनकाले च गणयेन्नैव सूतकम् ॥ १ ॥

इसवचनसें ॥ सूतिकागृहकी भींत और भूमि दोनोंको सधवायोंके हाथसें गोबरसें लेपन करावे, । तदपीछे दश शुक्रबृहस्पतिके वर्त्तनेवाली दिशाके भींतभागको खडी आदिसें धवल (श्वेत) करावे, और भूमिभागको चौंकमंडित करावे. । तदपीछे श्वेत भींतभागके ऊपर सधवाके हाथेंकरी कुंकुम हिंगुलादिवर्णोंसें आठमाताओंको उर्द्धा, (खडीयां) आठ बैठी, और आठ सुती, लिखवावे. कुलक्रमांतरमें गुरुकर्मांतरमें षट् (६) षट् (६) लिखनीया. । तदपीछे सधवा स्त्रीयोंके गीतमंगल गाते हुए चौंकमें शुभासनके ऊपर बैठा हुआ गुरु, अनंतरोक्त पूजाक्रम करके मातायोंको पूजे. यथा ॥

"॥ ॐ ह्रीं नमो भगवति । ब्रह्माणि । वीणापुस्तकपद्माक्षसूत्रकरे । हंसवाहने श्वेतवर्णे । इह षष्ठी पूजने आगच्छ २ स्वाहा ॥"

तीनवार पढके पुष्पकरके आह्वान करे॥तदपीछे॥

"॥ ॐ ह्रीं नमो भगवति । ब्रह्माणि । वीणापुस्त

कपद्माक्षसूत्रकरे। हंसवाहने। श्वेततवर्णे। मम सन्नि-
हिता नव २ स्वाहा ॥"

तीनवार पढके सन्निहित करे ॥ पीछे ॥

"॥ ॐ ह्रीँ नमो जगवति । ब्रह्माणि । वीणा
पुस्तकपद्माक्षसूत्रकरे । हंसवाहने । श्वेतवर्णे । इह
तिष्ठ २ स्वाहा ॥"

इति । तीनवार पढके स्थापन करे ॥ पीछे ॥

"॥ ॐ ह्रीँ नमो जगवति । ब्रह्माणि । वीणा
पुस्तकपद्माक्षसूत्रकरे । हंसवाहने । श्वेतवर्णे । गंधं
गृह्ण २ स्वाहा ॥"

चंदनादि गंध चढावे ॥

"ॐ ह्रीँ नमो जगवति । ब्रह्माणि । वीणापुस्त
कपद्माक्षसूत्रकरे । हंसवाहने । श्वेतवर्णे । पुष्पं
गृह्ण २ स्वाहा ॥"

इसीतरे मंत्रपूर्वक ।

"धूपं गृह्ण २ ।' दीपं गृह्ण २ ।' 'अक्षतान् गृह्ण
२ ।' 'नैवेद्यं गृह्ण २ स्वाहा ॥"

ऐसें एकएकवार मंत्रपाठपूर्वक इन पूर्वोक्त गंधा
दिवस्तुयोंकरके जगवतीको पूजे. ॥ ऐसेंही अन्य
सात मातायोंकी पूजा करणी. ।

विशेष मंत्रोंमें है, सो लिखते हैं. ॥

"ॐ ह्रीँ नमो जगवति । माहेश्वरि । शूलपि
नाककपालखट्वांगकरे। चंद्रार्द्धललाटे। गजचर्मावृते।

शेपाहिवरूकांचीकलापे । त्रिनयने । वृषजवाहने । श्वेतवर्णे। इह षष्ठीपूजने आगच्छ २॥" शेषंपूर्ववत्२

"॥ ॐ ह्रीं नमो जगवति । कौमारि । षएमुखि । शूलशक्तिधरे । वरदाजयकरे । मयूरवाहने गौरवर्णे । इह षष्ठीपूजने आगच्छ २॥"शेषंपूर्ववत्३

"ॐ ह्रींनमो जगवति।वैष्णवि । शंखचक्रगदा। सारंगखड्गकरे । गरुडवाहने । कृष्णवर्णे । इह षष्ठी पूजने आगच्छ २ ॥" शेषं पूर्ववत् ॥ ४ ॥

"॥ ॐ ह्रीं नमो जगवति । वाराहि । वराह मुहि । चक्रखड्गहस्ते । शेषवाहने श्यामवर्णे । इह षष्ठीपूजने आगच्छ २ ॥" शेषं पूर्ववत् ॥ ५ ॥

"॥ ॐ ह्रीं नमो जगवति । इंद्राणि । सहस्त्र नयने । वज्रहस्ते । सर्वाजरणजूषिते । गजवाहने । सुरांगनाकोटिवेष्टिते । कांचनवर्णे इह षष्ठीपूजने आगच्छ २ ॥" शेषं पूर्वत् ॥ ६ ॥

"॥ ॐ ह्रीं नमो जगवति । चामुंडे । शिराजालकरालशरीरे । प्रकटितदशने । ज्वालाकुंतले । रक्त त्रिनेत्रे । शूलकपालखड्गप्रेतकेशकरे । प्रेतवाहने । धूसरवर्णे । इह षष्ठीपूजने आगच्छ २ ॥" शेषं पूर्ववत् ॥ ७ ॥

"॥ ॐ ह्रीं नमो जगवति । त्रिपुरे । पद्मपुस्तक वरदाजयकरे । सिंहवाहने । श्वेतवर्णे । इह षष्ठी पूजने आगच्छ २ ॥" शेषं पूर्ववत् ॥ ८ ॥

एवं जैसें ऊर्ध्व (खमी) मातृका पूजन करे, तैसेंही वेठी और सुप्त मातृयांका जी पूर्वोक्त मंत्रों सेंही तीनवार पूजन करे; । कितनेक चामुंमा, त्रिपुरा, दोनोंको वर्जके षट्मातृकाही पूजन करते हैं. ॥

मातृका पूजन करके ऐसें पढे. ॥

ब्राह्माद्यामातरोप्यष्टौ स्वस्वास्त्रवलवाहनाः ॥
षष्ठीसंपूजनात्पूर्वं कल्याणं ददता शिशोः ॥ १ ॥

तदपीछे मातृस्थापनाकी अग्रजूमिमें चंदनलेप स्थापना करके, अंबारूप षष्ठीको स्थापन करे. । और तिस स्थापनाको दधि, चंदन, अक्षत, दूर्वादिकरके पूजे. ।

तदपीछे गुरु हस्तमें पुष्प लेके ॥

"॥ ॐ ऐं ह्रीं षष्ठि । आम्रवनासीने । कदंबवनविहारे । पुत्रद्वययुते । नरवाहने । श्यामाङ्गि । इह आगछ २ स्वाहा ॥"

मातृवत् इसकी जी पूजा करणी. । तदपीछे वालकमातासहित अविधवा कुलवृद्धा स्त्रीयां मंगलगीतगानमें तत्पर वाजंत्रोंके वाजते हुए षष्ठीरात्रिको जागरणा करे. । तदपीछे प्रातःकालमें ॥

"॥ ॐ जगवति माहेश्वरि पुनरागमनाय स्वाहा ॥"

ऐसें प्रत्येक नामपूर्वक गुरु, मातृको और षष्ठीको विसर्जन करे । तदपीछे गुरु, वालकको पंचपरमेष्ठि

मंत्रपवित्रित जलकरके अभिषेक करता हुआ, वेद मंत्रकरके आशीर्वाद देवे. ॥ यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं जीवोऽसि । अनादिरसि । अनादि कर्मभागसि । यत्त्वया पूर्वं प्रकृतिस्थितिरसप्रदेशैरा श्रवबृत्त्या कर्मबद्धं तद्बन्धोदयोदीरणासत्ताभिः प्रति भुङ्क्ष्व । माशुभकर्मोदयफलभुक्तेरुद्वेकं दध्याः । नचा शुभकर्मफलभुक्त्या विषादमाचरेः । तवास्तु संवर वृत्त्या कर्मनिर्ज्जरा अर्हं ॐ ॥"

सूतकमें दक्षिणा नही है. ॥ चंदन, दधि, दूर्वा, अक्षत, कुंकुम, लेखिनी, हिंगुलादिवर्ण, पूजाके उप करण, नैवेद्य, सधवा स्त्रीयां, दर्भ, भूमिलेपन, इत नी वस्तु षष्ठीजागरणसंस्कारमें चाहिये. ॥

इति षष्ठी संस्कारविधिः समाप्तः ॥

॥ अथ शुचिकर्मसंस्कार ॥

यहां शुचिकर्म स्वस्ववर्णानुसार करके दिनोंके व्यतीत हुए करणा, तद्यथा ॥

शुध्येद्विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन बाहुजः ॥
वैश्यस्तु षोडशाहेन शूद्रो मासेन शुध्यति ॥१॥
कारूणां सूतकं नास्ति तेषां शुद्धिर्न चापिहि ॥
ततो गुरुकुलाचारस्तेषु प्रामाण्यमिच्छति ॥ २ ॥

तिस कारणसें स्वस्ववर्णकुलानुसार करके दिनोंके व्यतीत हुए, गुरु सर्वही, सोलां पुरुषयुगसें उपरे,

तिस कुलवर्गकों बुलवावे. क्योंकि, सूतक सोलां पुरुषयुगसें उरे ग्रहण करिये हैं. ॥ यडुक्तं ॥

नृपोडशकपर्यन्त गणयेत् सूतकं सुधीः ॥
विवाहं नानुजानीयाज्ञोत्रे लक्तनृणां युगे ॥ १ ॥

न्नावार्थः—सोलां पुरुषपर्यंत (बुद्धीवंत) पुरुष सूतक गिणे, । परंतु एकगोत्रमें लक्त पुरुषयुग व्यतीत हुए न्नी, विवाह नही करे; । तिसवास्ते अपने गोत्रजको बुलवायके तिन सर्वको सांगोपांग स्नान और वस्त्रक्तालन करनेको कहे. । स्नान करके शुचि वस्त्र पहिनके गुरुको साक्ती करके, वे सर्व गोत्रज विविध प्रकारकी पूजासें जिन प्रतिमाका पूजन करे. । तदपीठे वालकके माता पिता पंचगव्यकरके अंतस्नान करे. । पुत्रसहित नखछेदनकरके गांठ जोमी दंपती जिनप्रतिमाको नमस्कार करे, सधवा स्त्रीयांके मंगलगीत गाते वाजंत्रोंके वाजते हुए. । और सर्व चैत्योंमें पूजा नैवेद्य ढौकन करे. । साधुयोंको यथाशक्ति चतुर्विध आहार वस्त्र पात्र देवे, । और संस्कार करनेवाले गुरुको वस्त्र तांबूल न्नूषण ड्व्यादिदान देवे. तथा । जन्म, चंड्रसूर्यदर्शन, क्तीराशन, षष्ठी, इनसंबंधिनी दक्तिणा तिस दिनमें संस्कारगुरुकेतांइ देणी. । और सर्व गोत्रज स्वजन मित्र वर्गोंको यथाशक्ति न्नोजन तांबूल देनां. । तथा गुरु तिस कुलके आचारानुसारकरके पंचगव्य, जिनस्ना

त्रोदक, सर्वौषधिजल और तीर्थजल, इनोंकरके स्नान कराये हुए बालकको वस्त्राजरणादि पहिनावे. ॥ तथा स्त्रीयोंको सूतकदिनोंके पूर्ण हुएजी, आर्द्र नक्षत्रोंमें, और सिंह गजयोनि नक्षत्रोंमें सूतकस्नान नही करावणा. । आर्द्र नक्षत्र दश है. । कृत्तिका १, जरणी २, मूल ३, आर्द्रा ४, पुष्य ५, पुनर्वसु ६, मघा ७, चित्रा ८, विशाखा ९, श्रवण १०, ये दश आर्द्र नक्षत्र हैं; इनमें स्त्रीको सूतकस्नान न करावे. यदि स्नान करे तो, फिर प्रसूति न होवे. ॥ धनिष्ठा १, पूर्वाजाद्रपदा २, ये दो सिंहयोनि नक्षत्र जाणने; और जरणी १, रेवती २, ये दो नक्षत्र गजयोनि जाणने. ॥ कदाचित् सूतक पूर्ण हुए दिनमें इन पूर्वोक्त नक्षत्रोंमेंसें कोइ नक्षत्र आवे, तब एक एक दिनके अंतरे शुचिकर्म करणा. ॥ पूजावस्तु, पंचगव्य, स्वगोत्रज जन, तीर्थोदक, शुचिकर्मसंस्कारमें चाहिये. ॥

इति सप्तमशुचिकर्मसंस्कार विधि

अथ नामकरणसंस्कार विधि ॥

मृदु, ध्रुव, क्षिप्र और चर, इन नक्षत्रोंमें पुत्रका जातकर्म करना. अथवा गुरु वा शुक्र, चतुर्थ स्थित होवे, तब नाम करना, सज्ञान पुरुषोंको सम्मत है. ॥ शुचिकर्मदिनमें अथवा तिसके दूसरे वा तीसरे

शुज्ञ दिनमें बालकको चंड्रमाके बल हुए, ज्योतिषि कसहित गुरु तिसके घरमें शुज्ञस्थानमें शुज्ञासनके ऊपर बैठा हुआ, पंचपरमेष्ठिमंत्रको स्मरण करता हुआ रहे. । तिस अवसरमें बालकके पिता, पिता महादि, पुष्प फलकरके हाथ परिपूर्ण करके ज्योति षिकसहित गुरुको साष्टांग नमस्कार करके ऐसें कहे. हे जगवन्! पुत्रका नामकरण करो. । तब गुरु तिन पिता, पितामहादिको, तिसके कुलके पुरुषोंको, और कुलवृद्धा स्त्रीयोंको, आगे बैठाके, ज्योतिषिको जन्म लग्न कहनेकेवास्ते आदेश करे. । तब ज्योतिषिक शुज्ञपट्टेऊपर खटिका (खमी) करके तिस बालक के जन्मलग्नको लिखे, स्थान १२ में ग्रहोंको स्थापन करे. तब बालकके पितापितामहादि जन्मलग्नकी पूजा करे. । तिसमें स्वर्णमुद्रा १२, रूप्यमुद्रा १२, ताम्रमुद्रा १२, क्रमुक (सुपारी) १२, अन्य फल जाति १२, नालिकेर १२, नागवल्लीदल (पान) १२. इनोंकरके द्वादश लग्नका पूजन करे। इनही नव नव वस्तुयोंकरी नव ग्रहोंका पूजन करे. ऐसें लग्न के पूजे हुए, तिनोंके आगे ज्योतिषिक लग्न विचार कहे. वेजी उपयोगसहित सुणे. । तदपीछे व्याव र्णनसहित लग्नको ज्योतिषिक कुंकुमाक्षरोंकरके पत्रे में लिखके, कुलज्येष्टको सौंप देवे. । बालकके पिता दिकोंने ज्योतिषिका अपनी संपदानुसार वस्त्र

स्वर्णदान करके सन्मान करणा. और ज्योतिषिक भी तिनोंके आगे जन्मनक्षत्रानुसारे, नामाक्षरको प्रकाश करके, स्वघरको जावे. तदपीछे गुरु, सर्व कुलपुरुषोंको और कुलवृद्धा स्त्रीयोंको आगे स्थापन करके (बिठलाके) तिनोंकी सम्मतिसें हाथमें दूर्वा लेके परमेष्ठिमंत्रपठनपूर्वक (कुलवृद्धाके) कानमें जातिगुणोचित नाम सुणावे. । तिसपीछे कुलवृद्धा नारीयां गुरुकेसाथ पुत्र गोदीमें लीया तिसकी माता शिविकादि नरवाहनमें बैठी हुई, वा पादचारिणी अविधवायोंके गीत गाते हुए, जिनमंदिरमें जावे. । तहां मातापुत्र दोनों जिनको नमस्कार करे, माता चौबीस २ सुवर्णमुद्रा, रूप्यमुद्रा, फलनालिकेरादि करके जिनप्रतिमाके आगे ढौकनिका करे. । तदपीछे देवके आगे कुलवृद्धा स्त्रीयां बालकका नाम प्रकाश करें. चैत्य न होवे तो, घरदेरासरकी प्रतिमाके आगे यह विधि करना. तदपीछे तिसही रीतिसें पौषध शालामें आवे, तहां प्रवेश करके भोजनमंडली स्थानमें मंडलीपट्ट स्थापन करके तिसकी पूजा करे. मंडलीपूजाका विधि यह है. पुत्रकी माता "श्रीगौतमाय नमः" ऐसा उच्चार करती हुई, गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य करके मंडलीपट्टकी पूजा करे. मंडलीपट्टोपरि स्वर्णमुद्रा १०, रूप्यमुद्रा १०, क्रमुक १०८, नालिकेर २९, वस्त्रहस्त २९, स्थापन

करे. । तदपीछे पुत्रसहित माता तीन प्रदक्षीणा करके यतिगुरुको नमस्कार करे. । नव सोनेरूपेकी मुद्रा करके गुरुके नवांगकी पूजा करे. । निरुंछना और आरात्रिका (आरती) करके क्षमाश्रमणपूर्वक हाथ जोडके, "वासक्खेवंकरेह" ऐसा पुत्रकी माता कहे. तब यतिगुरु वासक्षेपको, ॐकार ह्रीं कार श्रींकार सन्निवेशकरके कामधेनुमुद्राकरके, वर्द्धमान विद्याकरके जपके, मातापुत्र दोनोंके शिरपर क्षेप करे. तहां जी तिनके शिरमें ॐ ह्रीं श्रीं अक्षरोंका सन्निवेश करे. । तदपीछे बालककों अक्षतसहित चंदनकरके तिलक करके, कुलवृद्धाके अनुवाद करके, नाम स्थापन करे. । तदपीछे तिसही युक्ति करके सर्व अपने घरको आवे. । यतिगुरुयोंको शुद्ध आहार वस्त्र पात्रका दान देवे. । गृहस्थगुरुको वस्त्र अलंकार स्वर्णदान देवे. ॥ नांदी, मंगलगीत, ज्योतिषिकसहित गुरु, प्रजूत फल, और मुद्रा, विविधप्रकारके वस्त्र, वास, चंदन, दूर्वा, नालिकेर, धन, इतनी वस्तु नामसंस्कार कार्यमें चाहिये. ॥

इति अष्टम नामकरणसंस्कार विधिः

॥ अथ नवमं अन्नप्राशनविधि ॥

रेवती, श्रवण, हस्त, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, अनुराधा, अश्विनी, चित्रा, रोहिणी, उत्तरात्रय, धनिष्ठा, पुष्य, इन निर्दोष नक्षत्रोंमें और रवि, चंद्र, बुध, शुक्र, गुरु

वारोंमें पुरुषोंको नवीन अन्नप्राशन (खाना) श्रेष्ट हैं. और बालकोंको अन्नभोजनरिक्तादि कुतिथीयां और कुयोगोंको वर्जके श्रेष्ट है. । पुत्रको छठे मासमें, और कन्याको पांचमे मासमें अन्नप्राशन, सत्पुरुषों ने कहा है. । जे नक्षत्र कहे तिनमें और पूर्वोक्त वारमें सद्ग्रहोंके विद्यमान हुए अमावासी और रिक्ता, तिथीको वर्जके शुभ तिथीमें करणा. क्यों कि, लग्नमें रवि होवे तो, कुष्टी होवे; मंगल होवे तो, पित्तरोगी होवे; शनि होवे तो, वातव्याधि होवे; क्षीणचंद्र होवे तो, भीख मांगनेमें रत होवे; बुध होवे तो, ज्ञानी होवे; शुक्र होवे तो, भोगी होवे; बृहस्पति होवे तो, चिरायु होवे; और पूर्ण चंद्रमा होवे तो, पूजा करनेवाला और दान देनेवाला होवे. कंटक ४ । ७ । १० । अंत्य १२ । निधन ८ । त्रिकोण ५ । ९ । इन घरोंमें पूर्वोक्त ग्रह होवे तो, शरीरमें शुभफल देते हैं. । छठे और आठमे घरमें चंद्रमा अशुभ होता है, । केंद्र १ । ४ । ७ । १० । त्रिकोण ५ । ९ । इन घरोंमें सूर्य होवे तो, अन्ननाश होवे. ॥ तिसवास्ते छठे मासमें बालकको, और पांचमे मासमें कन्याको पूर्वोक्त तिथी वार नक्षत्र योगोंमें बालकको चंद्रबलके हुए अन्नप्राशनका आरंभ करे. । तद्यथा । पूर्वोक्त वेषधारी गुरु, तिसके घरमें जाके सर्वदेशोत्पन्न अन्नोंको एकत्र

करे; देशोत्पन्न और अन्य नगरोंमेंसें जे प्राप्त होवे, तिन सर्व फलोंको, और पट्टविकृयोंको ग्रहण करे. । तदपीछे सर्व अन्नोंको, सर्व शाकोंको, सर्व विकृती योंको, घृत, तैल, इक्षुरस, गोरस, जल, इत्यादिकों सें पकाये हुए बहुतप्रकारके पदार्थोंको पृथक् न्यारे २ करे. । तदपीछे अर्हत्प्रतिमाका बृहत्स्नात्रविधि सें (प्रतिष्टा विधिमे लिखेंगे) पंचामृतस्नात्र करके पृथक् पात्रोंमें तिन अन्न शाक विकृति पाकादिकोंको जिनप्रतिमाके आगे अर्हत्कल्पोक्त विंशोपचारी नैवेद्यमंत्रकरके ढोवे. सर्वजातके फलजी ढोवे. । तदपीछे बालकको अर्हत्स्नात्रोदक पिलावे. । फिर जिनप्रतिमाके नैवेद्यसें उद्धरित बची (हुइ) तिन सर्ववस्तुयोंको सूरिमंत्रके मध्यगत अमृता श्रवमंत्रकरके श्रीगौतमप्रतिमाके आगे ढोवे, । तिससें उद्धरित वस्तुयोंको कुलदेवताके मंत्रकरके गोत्रदेवीकी प्रतिमाके आगे चढावे, । तदपीछे कुल देवीके नैवेद्यमेंसें योग्य आहार मंगलगीत गाते हुए माता पुत्रके मुकमें देवे. । और गुरु यह वेद मंत्र पढे. ॥ यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं जगवानर्हन् त्रिलोकनाथस्त्रिलोक पूजितः सुधाधारधारितशरीरोपि कावलिकाहारमा हारितवान् । तपस्यन्नपि पारणाविधाविक्षुरसपरमान्न जोजनात् परमानंदादापकेवलं तद्देहिन्नौदारिकशरी

रमातस्त्वमप्याहारय आहारं तत्ते दीर्घमायुरारो
ग्यमस्तु अर्हं ॐ ॥ "

यह मंत्र तीनवार पढे. । तदपीछे साधुयोंको षट्
विकृतियांकरके षड्रससंयुक्त आहार देवे, यतिगु
रुके मंडलीपट्टोपरि परमान्नपूरित सुवर्णपात्र चढावे,
गृहस्थगुरुको ड्रोण ड्रोण प्रमाण सर्वजातका अन्न
दान करे, । तुला २ प्रमाण सर्व घृत, तैल, गुड
लवणादि दान करे, । सर्वजातके एक सौ आठ २
फल देवे, । तांबेकाचरु, कांसेका थाल, और वस्त्रयु
गल देवे. । सर्वजातिके अन्न, सर्वजातिके फल, सर्व
विकृतियां, स्वर्ण, रूप्य, ताम्र, कांस्य, इनोंके पात्र
(जाजन) इतनी वस्तुयां इस संस्कारमें चाहिये. ॥

इति नवमान्नप्राशनसंस्कार विधिः

अथ दशमं कर्णवेधसंस्कारविधि ॥

उत्तरात्रय, हस्त, रोहिणी, रेवती, श्रवण, पुनर्वसू
मृगशीर्ष, पुष्य, इन नक्षत्रोंमें । रेवती श्रवण, हस्त,
अश्विनी, चित्रा, पुष्य, धनिष्टा, पुनर्वसू, अनुराधा,
चंद्रसहित इन नक्षत्रोंमें कर्णवेध करना, । लाज ११,
तृतीय ३, घरमें शुज ग्रहोंकरके संयुक्त होवे, शुज
राशि लग्नमें क्रूर ग्रहोंकरकेरहित वृहस्पतिके लग्ना
धिप, वा लग्नमें हुए कर्णवेध करणा. जिसमें चंद्र
नक्षत्र, पुष्य, चित्रा, श्रवण, रेवती, जानने. । मंग

शुक्र, सूर्य, बृहस्पति, इन वारमें शुज तिथीमें शुज योगमें कर्णवेध करणा. ॥ इन निर्दोष तिथि वार नक्षत्रमें बालकको चंद्रबलके हुए कर्णवेध आरंज करे. । उक्तं च । "गर्जाधान, पुंसवन, जन्म, सूर्यदर्शन, क्षीराशन, षष्ठी, शुचि, नामकरण, अन्नप्राशन, मृत्यु, इन संस्कारोंमें अवश्य कार्य होनेसें पंमित पुरुषोंने वर्षमासादिकी शुद्धि न देखणी.। कर्णवेधादिक अन्य संस्कारोंमें विवाहकीतरें वर्ष मास दिन नक्षत्रादिकोंकी शुद्धि अवश्यमेव विलोकन करणी। यथा । तीसरे पांचमे सातमे निर्दोष वर्षमें बालकको और बालककी माताको अमृतामंत्र अजिमंत्रित जलकरके मंगलगानपूर्वक अविधवायोंके हांथेकरी स्नान करावे. । और तयां कुलाचारसंपदा अतिशय विशेषकरके तैलनिषेकसहित तीन पांच सात नव इग्यारह दिनांतक स्नानका विधि जाणना, । तिसके घरमें पौष्टिकको करणा, षष्ठीको वर्जके मातृअष्टकपूजन पूर्ववत् करणा, । तदपीछे स्व २ कुलानुसार अन्य ग्राममें कुलदेवताके स्थानमें पर्वतऊपर नदीतीरे वा घरमें कर्णवेधका आरंज करे. । तहां मोदक नैवेद्य करण गीतगान मंगलाचारादि स्व २ कुलागत रीति करके करणा. तदपीछे बालकको पूर्वाजिमुख आसनऊपर बिठलाके तिसके कर्णवेध करे तहां गुरु यह वेदमंत्र पढे. । यथा ॥

"॥ ॐ अर्हँ श्रुतेनाङ्गोपाङ्गैः कालिकैरुत्कालिकैः पूर्वगतैश्चूलिकाभिः परिकर्मभिः सूत्रैः पूर्वानुयोगैः छन्दोभिर्लक्षणैर्निरुक्तैर्धर्मशास्त्रैर्विद्धकर्णो भूयात्अर्हँ ॐ ॥"

शुद्रादिकोंको ॥ '॥ ॐ अर्हँ तव श्रुतिद्वयं हृदयं धर्म? विद्धमस्तु ॥' ऐसें कहना. ॥

तदपीछे बालकको यानमें बैठाके, वा नर नारी उत्संगमें लेके धर्मागारमें लेइ जावे; तहां पूर्वोक्त विधिसें मंडलीपूजा करके बालकको गुरुके चरणां आगे लोटावे. तब यतिगुरु विधिसें वासक्षेप करे. । तदपीछे बालकको घरमें ल्याके गृहस्थगुरु कर्णाभरण पहिनावे. । यतिगुरुयोंको शुद्ध चार प्रकारका आहार वस्त्र पात्र देवे. । गृहस्थगुरुको वस्त्र स्वर्णदान देवे. ।

इति दशमकर्णवेधसंस्कारवर्णनं

अथ क्षौर करणसंस्कारविधि

हस्त, चित्रा, स्वाति, मृगशीर्ष, ज्येष्ठा, रेवती, पुनर्वसू, श्रवण, धनिष्ठा, इन नक्षत्रोंमें ।२।३।५।७। १३।१०।११। इन तिथियोंमें । शुक्र, सोम, बुध, इन वारोंमें चंद्र वा तारेके बल हुए, क्षौरकर्म करणा. । क्षौरनक्षत्रोंमें स्वकुलविधिकरके चूडाकरण करना मुनींद्र कहते हैं; परं गुरु, शुक्र और बुध यह तीन

ग्रह केंद्रमें १।४।७ । १० होने चाहिये. । यदि केंद्रमें सूर्य होवे तो ज्वर होवे. मंगल होवे तो शस्त्रसें नाश होवे. । षष्टी (६), अष्टमी (८), चतुर्थी (४), सिनीवाली (चतुर्दशीयुक्तअमावास्या) चतुर्दशी (१४), नवमी (९), इन तिथीयोंमें और रवि, शनि, मंगल, इन वारोमें क्षौरकर्म न करावणा. । धन २, व्यय १२, त्रिकोण ५ । ९, इन गृहोमें असद्ग्रह होवे तो, मृत्यु हुए जी क्षुरक्रिया सुंदर नही होवे; और इनही घरोमें शुन्न ग्रह होवे तो क्षुरक्रिया पुष्टिकी करणहार जाणनी. । तिसवास्ते बालकको सूर्यबलयुक्त मासके हुए, चंद्रताराबलयुक्त दिनमें, पूर्वोक्त तिथिवार नक्षत्रमें कुलाचारानुसार कुलदेवताकी प्रतिमाके पास अन्य ग्राममें, वनमें, पर्वतके ऊपर, वा घरमें शास्त्रोक्त रीतिसें प्रथम पौष्टिक करे. । तदपीछे षष्टीपूजावर्जित मातृपूजा पूर्ववत्. । तदपीछे कुलाचारानुसार नैवेद्य देवपकान्नादि करणा. । तदपीछे सुस्नात गृहस्थगुरु बालकको आसनऊपर बैठाके बृहत्स्नात्रविधिकृत जिनस्नात्रोदकसें शांतिदेवीके मंत्रकरके सिंचन करे. तदपीछे कुलक्रमागत नापित (नाइ) के हाथसें मुंमन करावे. । तीन वर्णके शिरके मध्यन्नागमें शिखा स्थापन करे और शुद्रको सर्वमुंमन. । चूडाकरण करते हुए यह वेदमंत्र पढे. ॥ यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं ध्रुवमायु, ध्रुवमारोग्यं, ध्रुवाः श्रीयो, ध्रुवं कुलं, ध्रवं यशो, ध्रुवं तेजो ध्रुवं कर्म्म, ध्रुवा च गुण संतति रस्तु. अर्हं ॐ ॥"

यह सातवार पढता हुआ बालकको तीर्थोदकक रके सींचे. । गीत वाजंत्र सर्वत्र जाणने.।तदपीछे पंच परमेष्टिपाठपूर्वक बालकको आसनसें उठायकर स्ना न करावे. । चंदनादिकरके लेपन करे. । श्वेतवस्त्र पहिनावे. । भूषणोंकरके भूपित करे. । तदनंतर धर्मागारमें लेजावे. तदपीछे पूर्वरीतिसें मंडलीपूजा गुरुवंदना वासक्षेपादि. । तदपीछे साधुयोंको शुद्ध वस्त्र, अन्न, पात्र और षट्रस विकृति दान देवे. । गृहस्थगुरुको वस्त्र स्वर्ण दान देवे. । नापितको वस्त्र कंकण दान देवे. ॥

॥ इति दशमंचूडाकरणसंस्कारवर्णनं ॥

अथ उपनयनसंस्कारविधि लिख्यते

तिहां उपनयन नाम मनुष्योंको वर्णक्रममें प्रवेश करणेवास्ते संस्कारही वेषमुद्राके उद्वहनसें स्व २ गुरुयोंके उपदेशे धर्ममार्गमें प्रवेश करना. यदुक्तं ।

धम्मायारे चरिए वेसो सव्वछ कारणं पढमं ॥
संजमलज्जाहेऊ साहाणं तहय साहूणं ॥ १ ॥

अर्थः—धर्माचारके आचरण करते हुए वेष जो

है, सो सर्वत्र प्रथम कारण है. श्रावक तथा साधु योंको संजमलज्जाका हेतु है. ॥

तथा च श्रीधर्मदासगणिपादैरुपदेशमालायामप्युक्तम् ॥ यथा

धम्मं रस्कइ वेसो संकइ वेसेण दिस्किउंमि अहं
उम्मग्गेण पमंतं रस्कइ राया जणवउव्व ॥ १ ॥

अर्थः—वेष धर्मकी रक्षा करता है. क्योंकि, वेष होनेसें अकार्य करता हुआ मनमें शंका करता है कि, मैं दीक्षितवेषवाला हूं,मुझको देखके लोक निंदा करेंगे, इसवास्ते उन्मार्गमें पमते हुएकी भी वेष रक्षा करता है, जैसें राजा देशकी रक्षा करता है.॥ तथा इक्ष्वाकुवंशी, नारदवंशी, वैश्य, प्राच्य, उदीच्य, इन वंशोंके जैन ब्राह्मणको उपनयन और जिनोपवीत धारण करणा. । तथा क्षत्रीयवंशमें उत्पन्न हुए जिन, चक्रि, बलदेव, वासुदेवोंको, श्रेयांसकुमार दशार्णभद्रादि राजायोंको, हरिवंश, इक्ष्वाकुवंश, विद्याधरवंश, इन वंशोंमें उत्पन्न हुएको भी, उपनयन जिनोपवीतधारणविधि है. । जिसवास्ते कहा है. । आगममें,

"देवाणुप्पिआ, न एअं भूअं, न एअं भवं, न एअं भविस्सं, जन्नं, अरहंता वा, बलदेवा वा, वासुदेवा वा, अंतकुलेसु वा, तुछकुलेसु वा, दरिद्दकुलेसु वा, भिरकागकुलेसु वा, माहणकुलेसु वा, आयाइंसु

वा आयाइंति वा, आयाइस्संति वा, एवं खलु, अरहंता वा, चक्कवलवासुदेवा वा उग्गकुलेसु वा, नोगकुलेसु वा, राइन्नकुलेसु वा, खत्तियकुलेसु वा, इरकागकुलेसु वा, हरिवंशकुलेसु वा, अन्नयरेसु वा, तहप्पगारेसु विसुरू जाइकुलवंसेसु आयाइंसु वा, आयाइंति वा, आयाइस्संति वा, अछि पुण एसेवि नावे, लोगछेय नूए, अणंताहिं उसप्पिणि उसप्पिणीहिं वइक्कंताहिं समुपद्यइ, नागगुत्तस्स, वा, कम्मस्स, अरकीणस्स, अवेइयस्स, अणिद्धिणस्स, उदएणं, जन्नं, अरहंता वा, चक्कवलवासुदेवा वा, अंतकुलेसु वा, पंतकिविण तुन्नदरिद्द निरकागमाहणकुलेसु वा, आयाइंसुं वा, आयाइंति वा, आयाइस्संति वा, नो चेवणं, जोणी जम्मणनिक्कमिंसु वा, निक्कमंति वा, निक्कमिस्संति वा, तं जीअमेअं, तीअपच्चुप्पन्नमणागयाणं सक्काणं, देविंदाणं, देवराईणं, अरहंते नगवंते, तहप्पगारे हिंतो, अंतकुलेहिंतो, पंतकुलेहिंतो, तुन्नदरिद्दकिविण निरकागमाहणकुलहिंतो; तहप्पगारेसु उग्गनोगराय न्नखत्तियइरकागहरिवंसकुलेसु वा, अन्नयरेसु वा, तह प्पगारेसु विसुद्धजाइकुलवंसेसु साहराविंत्तए. ॥"*

तिसवास्ते कार्तिकशेठ कामदेवादिवैश्योंको नी उप

* इस पाठका नावार्थ यह है कि पुर्वोक्त अंतादिकुलमें अरिहंतादि नही उत्पन्न होते हैं, किंतु उग्रादि उपनयनादिसंयुक्त कुलमें उत्पन्न होते हैं, शुद्ध होनेसें. ॥

नयन जिनोपवीत धारण करणा. । आनंदादि शुद्रो को जी उत्तरीय धारण करणा. । शेष वणिगादिकों को उत्तरासंगकी अनुज्ञा है. जिनोपवीत जो है सो जगवान् जिनकी गृहस्थपणेकी मुद्रा है. । सर्व बाह्य अन्यंतर कर्मविमुक्त निर्ग्रंथ यतियोंको तो, नव ब्रह्मगुप्तिगुप्ताज्ञानदर्शनचारित्ररत्नत्रयी, हृदयमेंही है क्योंकि, ॥ मुनिजन सर्वदा तद्भावनाजावितही होते है. इसवास्ते नवब्रह्मगुप्तियुक्तरत्नत्रयी सूत्ररूप बाह्य मुद्राको नही धारण करते है, तन्मय होनेसें. नही समुद्र, जलपात्रको हस्तमे करता है. । नही सूर्य दीपकको धारण करता है. यदुक्तं ॥

अग्नौ देवोस्ति विप्राणां हृदि देवोस्ति योगिनाम् ॥
प्रतिमास्वल्पबुद्धीनां सर्वत्र विदितात्मनाम् ॥ १ ॥

अर्थः—अग्निहोत्रि ब्राह्मणोंका तो अग्निही देव है, अर्थात् अग्निविषेही देवबुद्धि है; और योगिजनोंके हृदयमेंही देव है; क्योंकि, योगाज्यासी मुनिजन तो, अपने पिंडस्थ, पदस्थ, रूपस्थ, रूपातीत, ध्यानके बलसें अपने हृदयमेंही देवका स्वरूप ध्याय सकते हैं; और जो अल्पबुद्धि अर्थात् गृहस्थधर्मी श्रावकादि हैं, तिनोंको जगवान्की प्रतिमाही देव है; और तिसकेही पूजन, ध्यान, प्रजावना, उत्सव, रथयात्रा, करनेसें कल्याण है. और जिनोंने आत्मस्वरूप जाना है, ऐसें यति, ऋषि, मुनियोंको तो

सर्वजगें देव मालुम होता है, अर्थात् ध्याता, ध्येय, ध्यान, ज्ञाता, ज्ञेय, ज्ञान रूपकरके सर्व देवस्वरूपही है. ॥ इसवास्ते शिखासूत्रविवर्जित ब्रह्मगुप्तिरत्नत्रय करण कारण अनुमतिमें सदैव आदरवाले यतिजन हैं. । और गृहस्थी, ब्रह्मगुप्तिरत्नत्रयदेशश्रवणस्मरण मात्रसें ब्रह्मगुप्तिरत्नत्रयकोसूत्रमुद्राकरके हृदयमें धारण करते है. । 'प्रतिमा।स्वल्पबुद्धीनां इसवचनसें' ॥

तदात्मकत्वके न हुए मुद्राका धारण है. । जैसें छद्मस्थको बाह्य अभ्यंतर तपःका करणा है. । तथा नवतंतुगर्भितसूत्रमय एक अग्र ऐसें तीन अग्र ब्राह्मणको, दो अग्र क्षत्रियको, एक अग्र वैश्यको, शूद्रको उत्तरीमक, और अपरको उत्तरासंगकी अनुज्ञा है. । ऐसा विशेष क्यों है ? सोही कहते हैं. ब्राह्मणोंने नवब्रह्मगुप्तियुक्त ज्ञान दर्शनचारित्ररूप रत्नत्रय आप पालन करणे, अन्योंसें करावणे, अन्य करतांको अनुमति देणी. ॥ ब्रह्मगुप्तिगुप्ताइति । ब्राह्मण आप रत्नत्रयीको ध्ययन सम्यकदर्शन चारित्र क्रियायोकरके आचरते है, अन्योसें अध्यापन सम्यक्त्वोपदेश आचार प्ररूपणा करके रत्नत्रयीका आचरण करवाते हैं, और ज्ञानोपाशन सम्यगदर्शन धर्मोपाशनादिकों करकें श्रद्धा करने वाले ओर अनुज्ञा मांगनेवाले अन्योको अनुज्ञा देते हैं, इसवास्ते नवब्रह्मगुप्तिगर्भि रत्नत्रय करण कारण

अनुमतिवाले ब्राह्मणोंको जिनोपवीतमें तीन अग्र. । और क्षत्रियोंको आप रत्नत्रयका आचरण करणा. और निजशक्तिसें न्यायप्रवृत्तिकरके अन्योसें आच रण करावणा योग्य है. परंतु तिन क्षत्रियोंको अन्य जनोंको अनुज्ञा देनी योग्य नही है. क्योंकि. वे ठकुराइवाले प्रभुहोंनेसें अन्योंविषे नियमादिकी अनुज्ञा नही देते हैं इसवास्ते क्षत्रियोंको जिनोपवी तमें दो अग्र. । वैश्योंने ज्ञानभक्तिकरके सम्यक्त्वं धृतिकरके उपासकाचारशक्तिकरके स्वयमेव रत्नत्रय आचरणा । तिन वैश्योंको असामर्थ्य होनेसें अनु पदेशक होनेसें रत्नत्रयका करावणा और अनुमति का देणा योग्य नही है; इसवास्ते वैश्योंको जिनो पवीतमें एक अग्र. । शूद्रोंको तो ज्ञानदर्शनचारित्र रूप रत्नत्रयके करणेमें आपही अशक्त है तो करा वणा और अनुमतिका देणा तो दूरही रहा. तिनों को अधमजाति होनेसें, निःसत्व होनेसें, अज्ञान होनसे, तिनोंको जिनाज्ञानरूप उत्तरीयका धारण है । तिनसें अपर वणिगादिकोंको देवगुरुधर्मकी उपासनाके अवसरमें मात्र जिनाज्ञानरूप उत्तरासंग- मुद्राहै. ॥ जिनोपवीतका स्वरूप यह है.॥ स्तनांतर मात्रको चौराशी गुणा करिये तव एकसूत्र होवे तिसको त्रिगुणा करणा, तिसको भी त्रिगुणा करके वर्त्तन करणां (वटना) ऐसें एक तंतु हुआ

इसी रीतिसें दो तंतु और योजन करिये, तवतीनो तंतु मिलाके एक अग्र होवे है. । तहां ब्राह्मणको तीन अग्र, क्षत्रियोको दो और वेश्योंको एक. । परम तमें तो ऐसा कथन है ॥

॥ कृते स्वर्णमयं सूत्रं त्रेतायां रौप्यमेव च ॥
द्वापरे ताम्रसूत्रं च कलौ कर्पासमिष्यति ॥ १ ॥

कृतयुगमें स्वर्णमयसूत्र, त्रेतायुगमें रूपेका, द्वाप रयुगमें तांवेका और कलियुगमें कर्पासका यज्ञोपवीत करना ॥ " परंतु जिनमतमें तो, सर्वदा ब्राह्मणोंको सौवर्णसूत्र, और क्षत्रियवैश्योंको सर्वदा कार्पाससूत्र हीहै. ॥ इतिजिनोपवीतयुक्तिः ॥

अथ उपयनविधि कहते हैं:—उपनीयते वर्णक्र मारोहयुक्तिकरके प्राणीको पुष्टिको प्राप्त करिये; इत्युपनयनं. । श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, मृगशिर, अ श्विनी, रेवती, स्वाति, चित्रा, पुनर्वसू. । तथा च । मृगशिर, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, स्वाति, चित्रा, पुष्य, अश्विनी, इन नक्षत्रोंमें मेखलाबंध, और मोक्ष करणा, आचार्यवर्य्य कहते हैं. । गर्भाधानसें वा जन्मसें आठमे वर्षमें ब्राह्मणोंको मौंजीबंध उप नयनका प्रारंभ कथन करते हैं, क्षत्रियोंको इग्या रह (११) वर्षमें, और वैश्योंको वारमे वर्षमें. । वर्णा धिपके बलवान हुए उपनीतिक्रिया हितकारिणी होती है, अथवा सर्व वर्णोंको गुरु चंद्र सूर्य वल

वान् हुए, हित है. । बृहस्पतिवार होवे, बृहस्पति बलमान् होवे, वा केंद्रगत होवे, तो, द्विजोंको उपनयन श्रेष्ठ है. और बृहस्पति तथा शुक्र नीच घरमें होवे, शत्रुके घरमें होवे, वा पराजित होवे तो श्रवणविधीमें स्मृतिकर्म हीन होवे । लग्नमें बृहस्पति होवे, त्रिकोणमें शुक्र होवे, और शुक्रांशमें चंद्रमा होवे तो जैनवेदवित् होवे; शुक्रसहित सूर्य लग्नमें शनिके अंशमें स्थित होवे, तदा सीखी हुइ विद्या भूल जावे ऐसा कृतघ्न होवे. । केंद्रमें बृहस्पति होवे तो, स्वअनुष्ठानमें रक्त होवे, प्रवरमतियुत होवे. शुक्र होवे तो, विद्या सौख्य अर्थ युक्त होवे, बुध होवे तो, अध्यापक होवे, सूर्य होवे तो, राजाका सेवक होवे, मंगल होवे, तो, शूरवीर होवे. चंद्रमा होवे तो, व्यापारी होवे. शनि होवे तो, नीच जातीका सेवक होवे. । शनिके अंशमें मूर्खता उदय होवें, सूर्यकेभागमें क्रूरपणा होवे, मंगलके अंशमें पाप बुद्धिहोवे, चंद्रांशमें अति जडपणा होवे, बुधांशमे अति पटुपणा होवे, गुरु शुक्रके भागमें सुज्ञपणा होवे, सुर्य सहित बृहस्पति होवे तो निर्गुण होवे, अर्थ हीन होवे, मंगल सहित सूर्य होवे, तो क्रूर होवे, बुध सहित होवे तो पटु होवे, शनि सहित होवे तो आलसु और निर्गुण होवे, चंद्र सहित शुक्र होवे तो अर्थहीन जाणना, पूर्वोक्त निर्दोष नक्षत्रो

में मंगलविना अन्य वारोमे दिनशुध्धीमे, शुभग्रह युक्त लग्नमे, विवाह वत् त्याज नक्षत्रदिन मासादिकको वर्जके, ग्रह निर्मुक्त पांचमें व्रत आचरे.

प्रथम यथा संपत्ति करके उपनेय (जिनोपवीत लेनेवाले) पुरुपकों सात, नव, पांच, वा तीन दिनतक सतैल निपेक स्नान (पीठी मर्दन) करावे. तदपीछे लग्नदिनमें गृहस्थ गुरु तिसके घरमें ब्राह्य मूहुर्तमें पोष्टिक करे. तद नंतर उपनेयके शिरपर शिखा वर्जके मुंडन करावे, पीछे वेदी स्थापन करे. तिसके मध्यमे चोकी (बाजोट) स्थापन करे, वेदी प्रतिष्ठा विवाहा धिकारसें जाणनां. बाजोटके उपर समव सरणकी रीति मुजब चोमुख (चारजिन बिंब) स्थापन करना, तिनकी पूजा करके गृहस्थ गुरु, जिसने श्वेतवस्त्र पहिनाहे, वस्त्रका उत्तरासंग करा हे, अक्षत श्रीफल सुपारी हाथमे लिएहें, एसे उपनेयकों समवसरणकों तीन प्रदक्षणा करावे, तदपीछे गुरु उपनेयकों वामे पासे स्थापके पश्चिमदिशाके सन्मुख जिसका मुखहे तिस जिन बिंबके सन्मुख बेठके प्रथम रुपन्न देवके स्तोत्र सहित शक्रस्तव (नमुथ्थुणं) पढे फेर तीन प्रदक्षिणा करके उत्तराभिमुख जिनबिंबके सन्मुख तेसेंहिं शक्रस्तव पढे. एसेंहि त्रिप्रदक्षिणांतरित पूर्वाभिमुख, दक्षिणा भिमुख जिन बिंबोके आगेभी शक्रस्तव पढे. मंगल गीत वाजित्रादिकों

का तिसवखत विस्तार रखणा. उन वखत आचार्य उपाध्याय साधु साध्वी, श्रावक, श्राविका रूप श्री सकल संघकों एकत्र करना। पीछे प्रदक्षिणा शक्र स्तव पाठके अनंतर गृहस्थ गुरु उपनयनके प्रारंभ वास्ते जैन वेद मंत्रका उच्चार करे. उपनेय (जिनोप वीतलेनेवाला) अपने हाथमें दुर्वा फलादीकसे पूर्ण हस्त अंजलिकरके खमाखमासुने.

उपनयारंभ जैनवेद मंत्रोयथा.

ॐ अर्हं अर्हद्भ्योनमः, सिद्धेभ्योनमः, आचार्येभ्योनमः, उपाध्यायेभ्योनमः, साधुभ्योनमः, ज्ञानायनमः, दर्शनायनमः, चारित्रायनमः, संयमायनमः, सत्यायनमः, शौचायनमः, ब्रह्मचर्यायनमः, आकिंचन्यायनमः, तपसेनमः, शमायनमः, मार्दवायनमः, आर्जवायनमः, मुक्तयेनमः, धर्मायनमः, संघायनमः, सैध्धांतिकेभ्योनमः, धर्मोपदेशकेभ्योनमः, वादिलब्धिभ्योनमः, पराांग निमित्तेभ्योनमः, तपस्वीभ्योनमः, विद्याधरेभ्योनमः, इहलोकसिद्धेभ्योनमः, कविभ्योनमः, लब्धिभ्योनमः, ब्रह्मचारीभ्योनमः, निष्परिग्रहेभ्यो नमः। दयालुभ्यो नमः, । सत्यवादिभ्यो नमः । निःस्पृहेभ्यो नमः । एतेभ्यो । नमस्कृत्यायं प्राणी प्राप्तमनुष्यजन्मा प्रविशति वर्णक्रमं अर्हं ॐ ॥,,

ऐसें वेदमंत्रका उच्चार करके फिर भी पूर्ववत् तीन तीन प्रदक्षिणा करके चारों दिशामें युगादिदेव

स्तवसंयुक्त शक्रस्तव पाठ करे। तिस दिनमें, जल जवान्न जोजन करके आचाम्लका प्रत्याख्यान उपनेयको करावे । तदपीछे उपनेयको वामे पासे स्थापके, सर्वतीर्थोदकोंकरके अमृताजलमंत्रकरके कुशाग्रोंसें सिंचन करे. ।

तदनंतर परमेष्ठिमंत्र पढके.

" नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व्वसाधुन्यः "

ऐसा कहके, जिन प्रतिमाके आगे उपनेयको पूर्वाजिमुख बैठावे; तदपीछे गृहीगुरु, चंदनमंत्रकरके अजिमंत्रण करे. ॥ चंदनमंत्रो यथा ॥

" ॥ ॐ नमो जगवते. चंद्रप्रजजिनेंद्राय, शशांक हारगोक्षीरधवलाय, अनंतगुणाय, निर्म्मलगुणाय, जव्यजनप्रबोधनाय, अष्टकर्म्ममूलप्रकृतिसंशोधनाय, केवलालोकावलोकितसकललोकाय, जन्मजरामरण विनाशनाय सुमंगलाय, कृतमंगलाय, प्रसीद जग वन् इह चंदनेनामृताश्रवणं कुरु २ स्वाहा ॥ "

इस मंत्रकरके चंदनको मंत्रके हृदयमें, जिनो पवीतरूप, कटिमें मेखलारूप और ललाटमें तिल करूप, रेखाकरे, तदपीछे उपनेय " नमोस्तु २ ऐसें कहता हुआ, गुरुके चरणोंमें पमके खमा होके हाथ जोडके ऐसें कहे. ।

" ॥ जगवन् वर्णरहितोऽस्मि । आचाररहितोऽस्मि । मंत्ररहितोऽस्मि । गुणरहितोऽस्मि । धर्म्मरहितोऽस्मि ।

शौचरहितोऽस्मि । ब्रह्मरहितोऽस्मि । देवर्षिपितृति थिकर्म्मसु नियोजय मां ॥"

ऐसें कहकर फिर "नमोस्तु २" ऐसें कहता हुआ, गुरुके चरणोंमें पडे; गुरु जी. इस मंत्रको पढके उपनेयको चोटीसें पकडके खडा करे । मंत्रो यथा ॥

"ॐ अर्हं देहिन् निमग्नोऽसि भवार्णवे तत्कर्षति त्वां भगवतोऽर्हतः प्रवचनैकदेशरज्जुना गुरुस्तदुत्तिष्ठ प्रवचनादानाय श्रद्धाधाहि अर्हं ॐ ॥"

ऐसें पढके उपनेयको खडा करके अर्हत्प्रतिमाके आगे पूर्वाभिमुख खडा करे. तदपीछे गृहीगुरु, त्रितं तुवर्त्तित—तीन तंतुकी बुणी, एकाशीति (८१) हाथ प्रमाण, मुंजकी मेखलाको अपने दोनों हाथोंमें लेके, इस वेदमंत्रको पढे.

"॥ ॐ अर्हं आत्मन् देहिन् ज्ञानावरणेन बद्धो ऽसि । दर्शनावरणेन बद्धोऽसि । वेदनीयेन बद्धोऽसि । मोहनीयेन बद्धोऽसि । आयुषा बद्धोऽसि । नाम्ना बद्धोऽसि । गोत्रेण बद्धोऽसि । अंतरायेण बद्धोऽसि कर्माष्टकेन प्रकृतिस्थितिरसप्रदेशैश्च बद्धोऽसि । तन्मोचयति त्वां भगवतोर्हतः प्रवचनचेतना तद्बु ध्यस्व मामुहः मुच्यतां तव कर्म्मबंधनमनेन मेखलाबं धेन अर्हं ॐ ॥"

ऐसा पढके उपनेयकी कटिमें नवगुणी मेखला को बांधे । तदपीछे उपनेय 'नमोस्तु २' कहता

हुआ, गृहीगुरुके पगोंमें पडे । मेखलाको एकाशी (८१) हाथपणा विप्रको एकाशीतंतुगर्भ जिनोपवीत सूचनकेवास्ते, क्षत्रियको चौपन (५४) हाथ तावत्प्रमाणतंतुगर्भ जिनोपवीत सूचनकेवास्ते, और वैश्यको सत्ताइस (२७) हाथ तद्गर्भसूत्रसूचनकें वास्ते है । ब्राह्मणको नवगुणी क्षत्रियको ठगुणी और वैश्यको त्रिगुणी, मेखला बांधनी । तथा मौंजी, कौपीन, जिनोपवीत, इनोंका पूजन, गीतादिमंगल, निशाजागरण, तिसके पूर्वदिनकी रात्रिमें करणा । मेखलाबंधनके पीठे फेर गृहस्थगुरु, उपनेयके विलस्त (वेंत) प्रमाण पृथुल (चौडा) और तीन विलस्त प्रमाण दीर्घ (लंबा) कौपिन दोनों हाथोंमें लेके ॥

" ॥ ॐ अर्हं आत्मन् देहिन् मतिज्ञानावरणेन श्रुतज्ञानावरणेन अवधिज्ञानावरणेन मनःपर्यायावरणेन केवलज्ञानावरणेन इंड्रियावरणेन चित्तावरणेन आवृतोऽसि तन्मुच्यतां तवावरणमनेनावरणेन अर्हं ॐ ॥ "

इस वेदमंत्रको पढता हुआ, उपनेयके अंतःकक्षकों कौपीन पहरावे । तदपीठे उपनेय 'नमोस्तु २' कहता हुआ, फिर नी गुरुके पगोंमें पडे । फिर तीन २ प्रदक्षिणा करके चारों दिशामें शक्रस्तव पाठ करे. ॥

तदनंतर लग्नवेलाके हुए गुरु, पूर्वोक्त जिनोपवीतको अपने हाथमें लेवे पीछे उपनेय फेर खमा होकर हाथ जोमके ऐसें कहे ॥

"॥ नगवन् वर्णोंचितोऽस्मि । ज्ञानोचितोस्मि । क्रियोञ्चितो । तज्जिनोपवीतदानेन मां वर्णज्ञानक्रियासु समारोपय ॥"

ऐसें कहके 'नमोस्तु २, कहता हुआ गुरुके पगोंमें पडे गुरु फिर पूर्वोक्त उत्थापनमंत्रकरके तिसको उगके खमा करे । तदपीछे गुरु दक्षिण हाथमें जिनोपवीत रखके ॥

"॥ ॐ अर्हं नवब्रह्मगुप्तीः स्वकरणकारणानुमतीरूरियेः तदद्वयमस्तु ते व्रतं स्वपरतरणतारणसमर्थो नव अर्हं ॐ ॥" क्षत्रियको

"॥ करणकारणान्यां धारयेः स्वस्य तरणसमर्थो नव ॥" वैश्यको

"॥ करणेन धारयेः स्वस्य तरणसमर्थो नव ॥" शेषं पूर्ववत् ॥

इस वेदमंत्रकरके पंच परमेष्टिमंत्र पढता हुआ उपनेयके कंठमें जिनोपवीत स्थापन करे । पीछे उपनेय तीन प्रदक्षिणा करके 'नमोस्तु २' कहता हुआ, गुरुको नमस्कार करे. गुरु नी "निस्तारगपारगो नव" ऐसा आशीर्वाद कहे । तदपीछे गुरु पूर्वानिमुख होके, जिनप्रतिमाके आगे शिष्यको

वामेपासे बैठाके, सर्व जगतूमें सार, महा आगम रूप क्षीरोदधिका माखण, सर्ववांछितदायक, कल्प द्रुम कामधेनु चिंतामणिके तिरस्कारका हेतु, निमे षमात्र स्मरण करनेसें मोक्षका दाता, ऐसें पंचपरमे ष्ठिमंत्रको गंधपुष्पपूजित शिष्यके दक्षिणकानमें तीनवार सुणावे पीछे तीनवार तिसके मुखसें उच्चा रण करावे ॥ यथा ॥

"॥ नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्व साहूणं ॥" पीछे उपनेयको मंत्रका प्रभाव सुणावे. ॥ तद्यथा ॥

सोलससु अक्करेसु, इक्किक्कं अक्करं जगुज्जोअं ॥
नवसयसहस्स महणो, जम्मि छिर्ज पंच नवकारो॥१॥
थंभेइ जलं जलणं चिंतियमत्तो इ पंच नवकारो ॥
अरिमारिचोरराउलघोरुवसग्गं पणासेइ ॥ २ ॥

एकत्र पंचगुरुमंत्रपदाक्षराणि । विश्वत्रयं पुनरनं तगुणं परत्र ॥ यो धारयेत्किल तुलानुगतं ततोऽपि । वंदे महागुरुतरं परमेष्टिमंत्रम् ॥ ३ ॥ ये केचनापि सुखमाद्यरका अनंता । सत्सर्पिणीप्रभृतयः प्रययुर्वि वर्त्ताः ॥ तेष्वप्ययं परतरः प्रथितः पुराऽपि । लब्ध्वै नमेव हि गताः शिवमत्र लोकाः ॥ ४ ॥ जग्मुर्जि नास्तदपवर्गपदं यदैव । विश्वं वराकमिदमत्र कथं विनास्मान् ॥ एतद्विलोक्य भुवनोद्धरणाय धीरैः ।

मंत्रात्मकं निजवपुर्निहितं तदाऽत्र ॥ ५ ॥ इंडुर्दिवा करतया रविरिंडुरूपः । पातालमंवरमिलासुरलोक एव ॥ किंजल्पितेन वहुना ज्ञुवनत्रयेऽपि तन्नास्ति यन्न विपमं च समं च तस्मात् ॥ ६ ॥ सिद्धांतोदधि निर्म्मंथान्नवनीतमिवोद्धृतम् ॥ परमेष्टिमहामंत्रं धार येत् हृदि सर्वदा ॥ ७ ॥ सर्वपातकहर्त्तारं सर्ववांछि तदायकम् ॥ मोक्षारोहणसोपाने मंत्रे प्राप्नोति पुण्य वान् ॥ ८ ॥ धार्योयं ज्ञवता यत्नात् न देयो यस्य कस्यचित् ॥ अज्ञानेषु श्रावितोयं शपत्येव न संशयः ॥ ए ॥ * न स्मर्त्तव्योऽपवित्रेण न जने नाऽन्यसं श्रये ॥ नाऽविनीतेन नो दीर्घशब्देनाऽपि कदाचन ॥ १० ॥ न वालानां नाऽशुचीनां नाऽधर्म्माणां नडुर्द शाम् * नप्लुतानां न ड़ुष्टानां डुर्ज्जातीनां न कुत्र चित् ॥ ११ ॥ अनेन मंत्रराजेन ज्ञूयास्त्वं विश्वपू जितः ॥ प्राणांतेऽपि परित्यागमस्य कुर्यान्न कुत्रचित् ॥ १२ गुरुत्यागे ज्ञवेद्दुःखं मंत्रत्यागे दरिद्रता ॥ गुरु मंत्रपरित्यागे सिद्धोऽपि नरकं व्रजेत् ॥ १३ ॥ इति

---

* न स्मर्त्तव्योपचित्तेन न शठेनान्यसंश्रये इति पुस्तकांतरे ॥ तथा अन्येषु श्राद्धदिनकृतश्राद्धविधिकौमुदीपंचाशकादिषु शास्त्रे ष्वेवमुक्तं यथा सा काप्यवस्था नास्ति यस्यां नमस्कारो न स्मर्त्तव्य इति ॥

* नाऽपूतानां न डुष्टानां डुर्जनानां न कुत्रचित् । इति पुस्तकांतरे ॥

ज्ञात्वा सुगृहीतं कुर्या मंत्रममुं सदा ॥ सेत्स्यंति सर्वकार्याणि तवास्मान्मंत्रतो ध्रुवम् ॥ १४ ॥

गुरुने ऐसे शिक्षा दिया हुआ उपनेय तीन प्रदक्षिणा करके "नमोस्तु २" ऐसें कहता हुआ, गुरुको नमस्कार करे. पीछे गुरुको स्वर्णका जिनोपवीत, सुवर्णमौंजी, श्वेत वस्त्र रेशमी स्वसंपदानुसारें देवे. और सर्वसंघको भी तांबूल वस्त्रादि देवे. ॥ इत्युप नयने व्रतबंधविधिः ॥

अथ व्रतादेशविधि लिख्यते हैं. ॥ तिसही अवसरमें, तिसही संघके संगममें, तिसही गीतवाजं आदि उत्सवमें, तिसही वेदचतुष्किकामें प्रतिमास्थापन संयोगमें, व्रतादेशका आरंभ करे. तिसका यह क्रम है. । गृहस्थगुरु, उपनीत पुरुषके कार्पास रेशमी अंतरीय(उत्तरीय)वस्त्र दूर करके मौंजी, जिनोपवीत कौपीन, येह वस्तुयों तिसकी देहमें तैसेंही स्थापके, तिसके ऊपर कृष्णसाराजिन (कालामृगचर्म) वा, वृक्षके वल्कलका वस्त्र पहिरावे. । हाथमें पलाशका दंडा देवे. और इस मंत्रको पढे.

" ॥ ॐ अर्हं ब्रह्मचार्यसि । ब्रह्मचारिवेषोऽसि अवधिब्रह्मचर्योसि । धृतब्रह्मचर्योसि । धृताजिनदंडोसि । बुद्धोऽसि । प्रबुद्धोऽसि । धृतसम्यक्त्वोऽसि दृढसम्यक्त्वोसि । पुमानसि । सर्वपूज्योऽसि । तदवधिब्रह्मव्रतं आगुरुनिदेशं धारयेः अर्हं ॐ ॥ "

ऐसें पढके व्याघ्रचर्ममय आसनके ऊपर, वा कल्पित काष्ठमय आसनके ऊपर उपनीतकों बिठलावे. तिसके दक्षिण हाथकी प्रदेशिनी अंगुलीमें दर्भसहित कांचनमयी पोरूश १६ मासे प्रमाण (पांच गुंजाका एक मासा जाणना) पवित्रिका मुद्रा पहरावे. । पवित्रिका परिधापनमंत्रो यथा ॥

"पवित्रं डुर्लभं लोके सुरासुरनृवल्लभम् ॥
सुवर्णं हंति पापानि, मालिन्यं च न संशयः॥ १ ॥

तदपीछे उपनीत, मुखसें पंचपरमेष्टिमंत्र पढता हुआ, गंध पुष्प अक्षत धूप दीप नैवेद्यकरके चारों दिशामें जिनप्रतिमाको पूजे । तदपीछे जिनप्रतिमाको प्रदक्षिणाकरके और गुरुको प्रदक्षणा करके 'नमोस्तु २' कहता हुआ, हाथ जोडके ऐसें कहे ॥ "भगवन् उपनीतोहं" गुरु कहे "सुष्टूपनीतो भव।" फेर उपनीत 'नमोस्तु, कहता हुआ नमस्कार करके कहे । "कृतो मे व्रतबंधः ।" गुरु कहे । "सुकृतोऽस्तु ।" फेर 'नमोस्तु' कहके नमस्कार करके शिष्य कहे । "भगवन् जातो मे व्रतबंधः ।" गुरु कहे । "सुजातोऽस्तु ।" फेर नमस्कार करके शिष्य कहे । "जातोऽहं ब्राह्मणः । क्षत्रियो वा । वैश्यो वा ।" गुरु कहे । "दृढव्रतो भव । दृढसम्यक्त्वो भव ।" फेर शिष्य नमस्कार करके कहे। "भगवन् यदि त्वया कृतो ब्राह्मणोऽहं तदादिश

कृत्यं।" गुरु कहे अर्हज्ञिरा दिशामि । " फेर नमस्कार करके शिष्य कहे । "जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्न्न रत्नत्रयंममादिष्टं।" गुरु कहे। "आदिष्टं । फेर नमस्कार करके शिष्य । "जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्न्न रत्नत्रयं मम समादिश।" गुरु कहे। "समादिशामि ।" फेर नमस्कार करके शिष्य जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्न्नं रत्नत्रयं मम समादिष्टं।" गुरु कहे। "समादिष्टं।" फेर नमस्कार करके शिष्य कहे। "जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्न्नं रत्नत्रयं ममानुजानीहि"। गुरु कहे । "अनुजानामि" फेर नमस्कार करके शिष्य कहे। "जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्न्नं रत्नत्रयं ममानुज्ञातं।" गुरु कहे। "अनुज्ञातं"। फेर नमस्कार करके शिष्य कहे । "जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्न्नं रत्नत्रयं मया स्वयं करणीयं।" गुरु कहे। "करणीयं।" फेर नामस्कार करके शिष्य कहे । "जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्न्नं रत्नत्रयं मया अन्यैः कारयितव्यं ।" गुरुकहे "कारयितव्यं" फेरनमस्कार करके शिष्यकहे। "जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्न्नं रत्नत्रयं कुर्वंतोऽन्ये मया अनुज्ञातव्याः" गुरु कहे । "अनुज्ञातव्याः" क्षत्रियकों यह विशेष है 'जगवन् अहं क्षत्रियो जातः' आदेश समादेश दोनों कहने, अनुज्ञा न कहनी. करणकारणमें 'कर्त्तव्यं' 'कारयितव्यं' ऐसें कहना, 'अनुज्ञातव्यं' ऐसे न कहना. । और वैश्यको

आदेश ही कहना, समादेश अनुज्ञा यह दोनों न कहने. । 'कर्त्तव्यं' कहना, 'कारायितव्यं' अनुज्ञातव्यं 'यह न कहने. । तदपीछे उपनीत हाथ जोम के कहे. । 'हे जगवन्! आदिश्यतां व्रतादेशः ।' तव गुरु आदेश करे अर्थात् व्रतादेश कथन करे. । तहां प्रथम ब्राह्मणप्रति व्रतादेश कहते हैं. यथा ॥

॥ मूलम् ॥

परमेष्ठिमहामंत्रो विधेयो हृदये सदा ॥
निर्ग्रंथानां मुनीन्द्राणां कार्यं नित्यमुपासनम् ॥ १ ॥
त्रिकालमर्हत्पूजा च सामायिकमपि त्रिधा ॥
शक्रस्तवैस्सप्तवेलं वंदनीया जिनोत्तमाः ॥ २ ॥
त्रिकालमेककालं वा स्नानं पूतजलैरपि ॥
मद्यं मांसं तथा क्षौद्रं तथोडुंबरपंचकम् ॥ ३ ॥
आमगोरससंपृक्तं द्विदलं पुष्पितौदनम् ॥
संधानमपि संसक्तं तथा वै निशि जोजनम् ॥ ४ ॥
शूद्रान्नं चैव नैवेद्यं नाश्नीयान्मरणेऽपि हि ॥
प्रजार्थे गृहवासेऽपि संजोगो न तु कामतः ॥ ५ ॥
आर्यवेदचतुष्कं च पठनीयं यथाविधि ॥
कर्षणं पाशुपाल्यं च सेवावृत्तिं विवर्जयेः ॥ ६ ॥
सत्यं वचः प्राणिरक्षामन्यस्त्रीधनवर्जनम् ॥
कषायविषयत्यागं विदध्याः शौचजागपि ॥ ७ ॥
प्रायः क्षत्रियवैश्यानां न जोक्तव्यं गृहे त्वया ॥
ब्राह्मणानामार्हतानां जोजनं युज्यते गृहे ॥ ८ ॥

स्वज्ञातेरपि मिथ्यात्ववासितस्य पलाशिनः ॥
न भोक्तव्यं गृहे प्रायः स्वयंपाकेन भोजनम् ॥ ए ॥
आमान्नमपि नीचानां न ग्राह्यं दानमंजसा ॥
भ्रमता नगरे प्रायः कार्यः स्पर्शो न केनचित् ॥१०॥
उपवीतं स्वर्णमुद्रां नांतरीयमपि त्यजेः ॥
कारणांतरमुत्सृज्य नोष्णीषं शिरसि व्यधाः ॥ ११ ॥
धर्मोपदेशः प्रायेण दातव्यः सर्वदेहिनाम् ॥
व्रतारोपं परित्यज्य संस्कारान् गृहमेधिनाम् ॥ १२ ॥
निर्ग्रंथगुर्वनुज्ञातः कुर्याः पंचदशापि हि ॥
शांतिकं पौष्टिकं चैव प्रतिष्ठामर्हदादिषु ॥ १३ ॥
निर्ग्रंथानुज्ञया कुर्याः प्रत्याख्यानं च कारयेः ॥
धार्यं च दृढसम्यक्त्वं मिथ्याशास्त्रं विवर्जयेः ॥१४॥
नानार्यदेशे गंतव्यं त्रिशुद्ध्याशौचमाचरेः ॥
पालनीयस्त्वया वत्स व्रतादेशो भवावधिः ॥ १५ ॥

॥ इतिब्राह्मणव्रतादेशः ॥

(भावार्थः) परमेष्ठिमहामंत्र सदा हृदयमें धारण करना, निर्ग्रंथ मुनींद्रोंकी नित्य उपासना करनी। तीन कालमें अरिहंतकी पूजा करनी, तीनवार सामायिक करनी, शक्रस्तवमें सातवार चैत्यवंदना करनी. छाने हुए शुद्ध जलसें त्रिकालमें वा, एकका लमें स्नान करना, मदिरा, मांस, मधु, माखण पांच जातिके उंबरफल, आमगोरससंयुक्त अर्थात्

कच्चे विना गरम करे गोरस दूध दही छाछके साथ द्विदल अन्न, जिसपर नीली फूली आजावे सो अन्न, जीवोत्पत्तिसंयुक्त संधान अर्थात् तीन दिन उपरां तका आचार, रात्रिजोजन, शूद्रका अन्न, देवके आगे चढा नैवेद्य इन पूर्वोक्त वस्तुयोंको मरणांतमें जी न खाना। संतानोत्पत्तिकेवास्ते गृहवासमें स्त्रीसें संजोग करना न तु कामासक्त होके। चारों आर्य जैन वेद विधिसें पढने खेती, पशुपालपणा और सेवा वृत्ति (नौकरी) येह नही करने। शुचिमान् होके सत्य वचन बोलना, प्राणिकी रक्षा करनी, अन्य स्त्री और अन्य धन येह वर्जने, कषाय विषयको त्यागने, प्रायः क्षत्रिय और वैश्योंके घरमें तेरे जोजन न करना, आर्हत् ब्राह्मणोंके घरमें जोजन करना तुझको योग्य है। अपनी ज्ञातिका जो मिथ्यात्ववासित होवे, और मांसाहारी होवे तिसके घरमें जी जोजन नही करणा। प्रायः आपही पकाके जोजन करना। कच्चे अन्नका जी दान नीचोंके हाथका न ग्रहण करणा, नगरमें भ्रमण करतां किसीका जीप्रायः स्पर्श न करना। उपवीत, स्वर्णमुद्रा और अंतरीय, इनको त्याग न करने. कारणांतरको वर्जके शिरके ऊपर उष्णीष (पगडी) धारण न करना। प्रायः सर्व मनुष्योंको धर्मोपदेश देना, व्रतारोपको वर्जके निर्ग्रंथ गुरुकी आज्ञासें पंचदश १५ संस्कार

गृहस्थांको करने तथा शांतिक, पौष्टिक, जिनप्रतिमाकी प्रतिष्टादि करावने। निर्ग्रंथकी आज्ञासें प्रत्याख्यान करना, और अन्यको करावना; सम्यक्त्वको दृढ धारण करना, मिथ्याशास्त्रकी श्रद्धा वर्जनी। अनार्य देशमें जाना नही, तीनों शुद्धियां गरके शौच आचरण करना; हे वत्स! तैनें पूर्वोक्त व्रतादेश जबतग संसारमें रहे तबतक पालना ॥ २५ ॥ इतिब्राह्मणव्रतादेशः ॥ अथक्षत्रियव्रतादेशः ॥

॥ मूलम् ॥

परमेष्टिमहामंत्रः स्मरणीयो निरंतरम् ॥
शक्रस्तवैस्त्रिकालं च वंदनीया जिनेश्वराः ॥ १ ॥
मद्यं मांसं मधु तथा संधानोडुंबरादि च ॥
निशि भोजनमेतानि वर्जयेदतियत्नतः ॥ २ ॥
दुष्टनिग्रहयुद्धादिवर्जयित्वा वधोंगिनाम् ॥
न विधेयः स्थूलमृषावादस्त्यक्तव्य एव च ॥ ३ ॥
परनारीं परधनं त्यजेदन्यविकत्थनम् ॥
युक्त्यासाधूपासनं च द्वादशव्रतपालनम् ॥ ४ ॥
विक्रमस्याविरोधेन विधेयं जिनपूजनम् ॥
धारणं चित्तयत्नेन स्वोपवीतांतरीययोः ॥ ५ ॥
लिंगिनामन्यविप्राणामन्यदेवालयेष्वपि ॥
प्रणामदानपूजादि विधेयं व्यवहारतः ॥ ६ ॥
सांसारिकं सर्वकर्म्म धर्मकर्म्मापि कारयेत् ॥
जैनविप्रैश्च निर्ग्रंथैर्दृढसम्यक्त्ववासितः ॥ ७ ॥

रणे शत्रुसमाकीर्णे धार्यो वीररसो हृदि ॥
युद्धे मृत्युजयं नैव विधेयं सर्वथापि हि ॥ ७ ॥
गोब्राह्मणार्थे देवार्थे गुरुमित्रार्थ एव च ॥
स्वदेशभंगे युद्धेत्र सोढव्यो मृत्युरप्यलम् ॥ ७ ॥
ब्राह्मणक्षत्रियोर्नैव क्रियाभेदोस्ति कश्चन ॥
विहायान्यव्रतानुज्ञाविद्यावृत्तिप्रतिग्रहान् ॥ १० ॥
दुष्टनिग्रहणं युक्तं लोभं भूमिप्रतापयोः ॥
ब्राह्मणव्यतिरिक्तं च क्षत्रियोदानमाचरेत् ॥ ११ ॥

॥ इतिक्षत्रियव्रतादेशः ॥

अथ क्षत्रियव्रतादेश कहते हैं. ॥ परमेष्ठिमहा मंत्र निरंतर स्मरण करना. शक्रस्तवोंकरके त्रिकाल जिनेश्वरको वंदन करना. । मद्य, मांस, मधु, संधान, पांच उंडुंबरादि, (आदिशब्दसें आमगोरससंयुक्त द्विदल, पुष्पितौदन,) और रात्रिभोजन, इनको यत्नसें वर्जे । दुष्टका निग्रह करना, और युद्धादि वर्जके प्राणियोंका वध न करना, स्थूलमृषावाद न बोलना, परस्त्रीका और परधनका त्याग करना; परकी निंदाका त्याग करे, युक्तिसें साधुयोंकी उपासना करे, और बारां व्रत पालन करे । अपनी शक्ति अनुसार जिनपूजन करना. चित्तयत्नसें अर्थात् उपयोगसें स्वउपवीत, और अंतरीयको धारण करना । लिंगियोंको, अन्य ब्राह्मणोंको, और अन्यदेवालयोंमें भी, प्रणाम दान पूजादि काम पडे तो, लोक

व्यवहारसें करने । संसारिक सर्व कर्म जैनब्राह्मणों और धर्म कर्म निर्ग्रंथों करके करावे. दृढसम्यक्त्वकी वासनावाला होवे । शत्रुयोंकरके समाकीर्ण रणमें हृदयके विषे वीररस धारण करना, युद्धमें मृत्युका जय सर्वथा नहीं करना । गौ ब्राह्मणके अर्थें, देवके अर्थें, गुरु और मित्रके अर्थें, स्वदेशके जंग होते, और युद्धमें, मृत्यु जी सहन करना योग्य है । ब्राह्मण और क्षत्रियकी क्रियामें कुछ जी नेद नहीं है, परं अन्यको व्रतअनुज्ञा देनी विद्यावृत्ति, दान लेनेमे नेद है. दुष्टोंका निग्रह करना योग्य है, नूमि और प्रतापका लोज करना, ब्राह्मणसें व्यतिरिक्त क्षत्रिय दान आचरण (ग्रहण) करे ॥११॥ इति क्षत्रियव्रतादेशः ॥ अथ वैश्यव्रतादेशः ॥

॥ मूलम् ॥

त्रिकालमर्हत्पूजा च सप्तवेलं जिनस्तवः ॥
परमेष्टिस्मृतिश्चैव निर्ग्रंथगुरुसेवनम् ॥ १ ॥
आवश्यकं द्विकालं च द्वादशव्रतपालनम् ॥
तपोविधिर्गृहस्थार्हो धर्मश्रवणमुत्तमम् ॥ २ ॥
परनिंदावर्जनं च सर्वत्राप्युचितक्रमः ॥
वाणिज्यपाशुपाल्याभ्यां कर्पणेनोपजीवनम् ॥ ३ ॥
सम्यक्त्वस्यापरित्यागः प्राणनाशेपि सर्वथा ॥
दानं मुनिभ्य आहारपात्राच्छादनसद्मनाम् ॥ ४ ॥

कर्म्मादानविनिर्मुक्तं वाणिज्यं सर्वमुत्तमम् ॥
उपनीतेन वैश्येन कर्त्तव्यमिति यत्नतः ॥ ५ ॥

॥ इतिवैश्यव्रतादेशः ॥

अथ वैश्यव्रतादेश कहते हैं ॥ त्रिकाल अर्हत् पूजा करनी, सातवार जिनस्तव चैत्यवंदन करना, पंचपरमेष्टिमंत्रका स्मरण करना, निर्ग्रंथ गुरुकी सेवा करनी. । दो कालमें (प्रातः कालमें और सायं कालमें) आवश्यक (प्रतिक्रमणादि) करना. बारां व्रत पालने, गृहस्थोचित तपोविधि करना, उत्तम धर्म श्रवण करना, परकी निंदा वर्जनी, सर्वत्र उचित काम करना, वाणिज्य, पशुपालन और खेती करके आजीविका करनी. । सर्वथाप्रकारे प्राणोंका नाश होवे तो जी, सम्यक्त्व नही त्यागना; मुनियोंको अहार, पात्र, वस्त्र, मकान (उपाश्रय) का दान करना. । कर्मादानसें रहित सर्व उत्तम वाणिज्य (व्यापार) करना, उपनीत वैश्यको ये पूर्वोक्त यत्नसें करणे योग्य है. ॥ इतिवैश्यव्रतादेशः ॥ अथ चातुर्वर्ण्यस्य समानो व्रतादेशः ॥

॥ मूलम् ॥

निजपूज्यगुरुप्रोक्तं देवधर्म्मादिपालनम् ॥
देवार्चनं साधुपूजा प्रणामोविप्रलिंगिषु ॥ १ ॥
धनार्जनं च न्यायेन परनिंदाविवर्जनम् ॥
अवर्णवादो न क्वापि राजादिषु विशेषतः ॥ २ ॥

स्वसत्त्वस्यापरित्यागो दानं वित्तानुसारतः ॥
आयोचितो व्ययश्चैव काले काले च मोचनम् ॥ ३ ॥
न वासोऽल्पजले देशे नदीगुरुविवर्जिते ॥
न विश्वासो नरेन्द्राणां नागरीयनियोगिनाम् ॥ ४ ॥
नारीणां च नदीनां च लोभिनां पूर्ववैरिणाम् ॥
कार्यं विना स्थावराणामहिंसा देहिनामपि ॥ ५ ॥
नासत्याहितवाक् चैव विवादो गुरुभिर्न च ॥
मातापित्रोर्गुरोश्चैव माननं परतत्त्ववत् ॥ ६ ॥
शुभशास्त्राकर्णनं च तथा नाऽभक्ष्यभक्षणम् ॥
अत्याज्यानां न च त्यागोप्यऽघात्यानामघातनम् ॥ ७ ॥
अतिथौ च तथा पात्रे दीने दानं यथाविधि ॥
दरिद्राणां तथांधानामापन्नारत्नृतामपि ॥ ८ ॥
हीनाङ्गानां विकलानां नोपहासः कदाचन ॥
समुत्पन्नक्षुत्पिपासाघृणाक्रोधादिगोपनम् ॥ ९ ॥
अरिषड्वर्गविजयः पक्षपातो गुणेषु च ॥
देशाचाराऽऽचरणं च भयं पापापवादयोः ॥ १० ॥
उद्वाहः सदृशाचारैः समजात्यन्यगोत्रजैः ॥
त्रिवर्गसाधनं नित्यमन्योन्याप्रतिबंधतः ॥ ११ ॥
परिज्ञानं स्वपरयोर्देशकालादिचिंतनम् ॥
सौजन्यं दीर्घदर्शित्वं कृतज्ञत्वं सलज्जता ॥ १२ ॥
परोपकारकरणं परपीडनवर्जनम् ॥
पराक्रमः परिभवे सर्वत्र क्षांतिरन्यदा ॥ १३ ॥
जलाशयश्मशानानां तथा दैवतसद्मनाम् ॥

निद्राहाररतादीनां संध्यासु परिवर्जनम् ॥ १४ ॥
प्रवेशोल्लंघनं चैव तटे शयनमेव च ॥
कूपस्य वर्जनं नद्यालंघनं तरणीं विना ॥ १५ ॥
गुर्वासनादिशय्यासु तालवृक्षे कुजूमिषु ॥
दुर्गोष्टिषु कुकार्येषु सदैवासनवर्जनम् ॥ १६ ॥
न लंघनं च गर्त्तादेर्नदुष्टस्वामिसेवनम् ॥
न चतुर्थीदुनग्नस्त्रीशक्रचापविलोकनम् ॥ १७ ॥
हस्त्यश्वनखिनां चापवादिनां दूरवर्जनम् ॥
दिवासंजोगकरणं वृक्षस्योपासनं निशि ॥ १८ ॥
कलहं तत्समीपं च वर्जनीयं निरंतरम् ॥
देशकालविरुद्धं च जोज्यं कृत्यं गमागमौ ॥ १९ ॥
जाषितं व्यय आयश्च कर्त्तव्यानि न कर्हिचित् ॥
चातुर्वर्ण्यस्य सर्वस्य व्रतादेशोयमुत्तमः ॥ २० ॥
॥ इतिचातुर्वर्ण्यस्यसमानोव्रतादेशः ॥

अथ चारों वर्णोंका समान व्रतादेश कहते हैं. ॥ अपने पूज्य गुरुके कहे देवधर्मादिकापालना, देव पूजा करनी, साधुकी यथायोग्य पूजा करनी, ब्राह्मण और लिंगधारीको प्रणाम करना. । न्यायसें धन उपार्जन करना. परकी निंदा वर्जनी, किसीका जी अवर्णवाद न बोलना, राजादिविषयक तो विशेषसें अवर्णवाद न बोलना. । अपने सत्वको छोडना नही, धनके अनुसार दान देना, लाजानुसार खरच करना, जोचनके कालमें जोजन करना. । थोडे जल

वाले देशमें वसना नही, नदी और धर्मगुरुवर्जित देशमें नी नही वसना. । राजा, राज्याधिकारी, स्त्री, नदी, लोनी, पूर्ववैरी, इनोंका विश्वास नही कर ना. । कार्यविना स्थावर जीवोंकी नी हिंसा नही करनी. । असत्य अहितकारि वचन नही बोलना, गुरुओं (वमों) के साथ विवाद नही करना. माता पिता और गुरु, इनका उत्कृष्ट तत्त्वकीतरें मान सत्कार करना. । शुन्न अष्टादश दूषणरहित सर्वज्ञो क्त शास्त्रका श्रवण करना; अन्नक्ष्य (नही खाने योग्य) का नक्षण नही करना; जे त्यागने योग्य नही है, उनका त्याग नही कर ना; जे मारणे योग्य नही है, तिनको मारणा नही. अतिथि, सुपात्र, और दीन, इनको यथाविधि यथा योग्य दान देना; दरिद्र, अंधे, दुःखी, इनको नी यथाशक्ति दान देना. । हीन अंगवालोंको, और विकलोंको कदापि हसना नहीं. । नूख, तृष्णा, (तृषा,) घृणा, क्रोधादि उत्पन्न हुए नी, गोपन करने. । षट् (६) अरिवर्गका विजय करना, गुणोंमें पक्षपात करना, देशाचार आचरण करना, पाप और अप वादका नय करना. । सदृश आचारवाले, समजाति, और अन्य गोत्रजोंके साथ विवाह करना; धर्म अर्थ कामको निरंतर परस्पर अप्रतिबंधसें साधन करना. । अपने और परायेका ज्ञान करना, देशका

लादिका चिंतन करना, सौजन्य धारण करना, दीर्घ दर्शी होना, लज्जालु होना. परोपकार करना, परको पीमा न करनी, अपना परिज्ञव (तिरस्कार) होवे तव पराक्रम दिखाना, अन्यथा सर्वत्र क्षांति करनी. । जलाशय, श्मसान, देवल, इनमें और तीन संध्यामें निद्रा, आहार, मैथुनादि वर्जना. । कूपमें प्रवेश, कूपका उल्लंघन, कूपकांठेपर शयन, इन सर्वको वर्जना; तथा नावाविना नदीका लंघना वर्जना. । गुरुके आसनशय्यादिके ऊपर, ताम्रवृक्षके हेठें, बुरी नूमिमें, मुर्गोष्टिमें, कुकार्यमें, बेंठना सदा ही वर्जना । खाम कूदनी नही, लोनी स्वामीकी सेवा, नही करनी; चौथका चंड, नग्न स्त्री, इंड्धनुः, इनको देखना नही. । हाथी, घोमा, नखोंवाले, जनावरों और निंदक, इनको दूरसें वर्जना. । दिनमें संज्ञोग (मैथुन) न करना, रात्रिको वृक्षका सेवन न करना. । कलह, और कलहका समीप, निरंतर वर्जना. । देशकाल विरुद्ध, नोजन, कार्य, गमन, आगमन, नाषण, व्यय (खरच) और आय (लान) ये कदापि न करने. यह पूर्वोक्त उत्तम व्रतादेश चारों वर्णोंका है. ॥ २० ॥ इति चातुर्वर्ण्यस्य समानोव्रतादेशः ॥

गृहस्थगुरु, पूर्वोक्त प्रकारसें शिष्यको व्रतादेश करके, आगे करके जिन प्रतिमाको तीन प्रदक्षिणा

करावे. फिर पूर्वाभिमुख होके शक्रस्तव पढे. । उस पीछे गृहस्थगुरु, आसन ऊपर बैठ जावे, और शिष्य 'नमोस्तु' कहता हुआ गुरुके पगोंमें पडके ऐसें कहे, "भगवन् भवद्भिर्मम व्रतादेशो दत्तः" तब गुरु कहे, "दत्तःसुगृहीतोस्तु सुरक्षितोस्तु स्वयं तर परं तारय संसारसागरात्" ऐसें कहके नमस्कार पढता हुवा ऊठके दोनों (गुरु शिष्य) चैत्यवंदन करें. उसपीछे ब्राह्मणने, विप्र क्षत्रिय वैश्यके घरमें भिक्षाटन करना; क्षत्रियने शस्त्र ग्रहण करना; और वैश्यने अन्नदान करना. ॥

इत्युपनयने व्रतादेशः ॥

अथ व्रतविसर्गःकथ्यतेः—अथ व्रतविसर्ग कहते हैं. ॥ ब्राह्मणने आठ वर्षसें लेके सोलां वर्षपर्यंत, दंड और अजिन धारण करके, भिक्षावृत्ति करके भोजन करना, यह उत्तम पक्ष है. क्षत्रियने दंड अजिन धारण करके दश वर्षसें लेके सोलां वर्ष पर्यंत आपहिं पाक करके, देवगुरुकी सेवामें तत्पर होके, भोजन करना; और वैश्यने दंड अजिन धारण करके स्वकृत भोजन करके बारां वर्षसें लेके सोलां वर्ष पर्यंत भोजन करना; यह उत्तम पक्ष है. । यदि कार्यव्यग्रतासें तितने दिन न रह सके तो, छ (६) मास पर्यंत रहना. तदभावे एक मास पर्यंत, तदभावे पक्ष पर्यंत, तदभावे तीन दिन रहना. यदि तीन दिन भी न

रह सके तो, तिसही उपनयनव्रतादेशके दिनमेंही विसर्ग करिये, सोही कहने हैं. । उपनीत, तीन २ प्रदक्षिणा करके चारों दिशायोंमें जिनप्रतिमाके आगे पूर्ववत् युगादिजिनस्तोत्र सहित शक्रस्तव पढे. तदपीछे आसनपर बैठे गुरुके आगे नमस्कार करके हाथ जोमके ऐसें कहे ॥ "भगवन् देशका लाद्यपेक्षया व्रतविसर्गमादिश" ॥ गुरु कहे ॥ "आदिशामि॥" फिर नमस्कार करके शिष्य कहे ॥ "भगवन्ममव्रतविसर्ग आदिष्टः ॥ गुरु कहे ॥ "आदिष्टः ॥" फिर नमस्कार करके शिष्य कहे ॥ "भगवन् व्रतबंधो विसृष्ट ॥" गुरु कहे ॥ "जिनो पवीतधारणेन अविसृष्टोस्तु स्वजन्मतः षोडशाब्दीं ब्रह्मचारी पाठधर्मनिरतस्तिष्ठेः ॥ उसपीछे पंचपरमे ष्ठिमंत्र पढता हुआ शिष्य, मौंजी, कौपीन, वल्कल, दंड, इनको दूर करके, गुरुके आगे स्थापन करे; और आप जिनोपवीतधारी श्वेतवस्त्र उत्तरीय होके गुरुके आगे नमस्कार करके बैठे, तब गुरु तिस वारां तिलकधारी उपनीतके आगे उपनयनका व्या ख्यान करे. ।

तद्यथा ॥ आठ वर्षके ब्राह्मणको दश वर्षके क्षत्रि यको, और बारां वर्षके वैश्यको, उपनयन करना तिसमें गर्भमास भी बीचमेंही गणने । तथाच ॥ "जिनोपवीतमिति जिनस्य उपवीतं मुद्रासूत्रमित्यर्थः"

जिनका उपवीत अर्थात् मुद्रासूत्र सो कहावे जिनोपवीत. । नवब्रह्मगुप्ति गर्भरत्नत्रय, येह पुरा, श्रीयुगादिदेवने गृहस्थीवर्णत्रयको अपनी मुद्राका धारण करना यावत् जीवतां३ कहा था. । तदपीछे तीर्थके व्यवच्छेद हुए, मिथ्यात्वको प्राप्त ब्राह्मणोंनें हिंसा प्ररूपणेसें चारों वेदको मिथ्या पथमें प्राप्त करे हुए, पर्वत और वसुराजासें प्रायः हिंसक यज्ञके प्रवृत्त हुए, 'यज्ञोपवीत' ऐसा नाम धारण करा. मिथ्या दृष्टि यथेच्छासें प्रलाप करो ! परंतु जिनमतमें तो, जिनोपवीतही नाम है, नतु यज्ञोपवीत. तिसवास्ते तेनें इस जिनोपवीतको अच्छीतरें धारण करना माससमासपीछे नवीन धारण कराना, प्रमादसें जिनो, पवीत जाता रहे, वा टुट जावे तो, तीन उपवास करके नवीन धारण करना. प्रेतक्रियामें दक्षिण स्कंधके ऊपर, और वाम कक्षाके हेठें, ऐसें विपरीत धारण करना. क्योंकि, सो विपरीत कर्म है. । मुनि जी, मृत मुनिके त्यागनेमें तथाविध विपरीतही वस्त्र पहेनते हैं, जिसवास्ते, तूं जन्मकरके शूद्र आजतक था सांप्रत संस्कारविशेषकरके ब्रह्मगुप्तिके धारणेसें ब्राह्मण, वा क्षताणेन–रक्षणकरनेसें क्षत्रिय, वा न्यायधर्ममें प्रवेश करनेसें वैश्य हुआ है; तिसवास्ते, क्रियासहित इस जिनोपवीतको अच्छीतरें ग्रहण करना अच्छीतरें रखना. तेरेको सद्धर्मवासना उपन

यनविधि क्षयरहित हो. एसें व्याख्यान करके पर मेष्ठिमंत्र पढकर दोनों गुरु शिष्य खडे होवे. पीछे चैत्यवंदन, और साधुवंदन करे. ॥ इत्युपनयने व्रत विसर्गविधिः ॥ अथ गोदानविधिर्यथा ॥

अथ गोदानविधि लिखते हैं. ॥ तदा व्रतविसर्गके अनंतर शिष्यसहित गुरु, जिनको तीन २ प्रदक्षिणा करके पूर्ववत् चारों दिशामें शक्रस्तवका पाठ करे. पीछे गृहस्थगुरु, आसनपर बैठे तब शिष्य गुरुको तीन प्रदक्षिणा करके नमस्कार करके हाथ जोमके खमा होके, गुरुको विज्ञापना करे. यथा ॥

"॥ भगवन् तारितोहं, निस्तारितोहं, उत्तमः कृतोहं, सत्तमःकृतोहं, पूतः कृतोहं, पूज्यकृतोहं, तद्भगवन्नादिश, प्रमाद बहुले गृहस्थधर्म्मे, मम किंच नापि रहस्यभूतं सुकृतं ॥"

हे भगवान्! तारा मुझको, निस्तारा मुझको, उत्तम करा मुझको, अतिशयसाधु (श्रेष्ठ) करा मुझको, पवित्रकरा मुजको, पूज्य करा मुझको, तिसवास्ते, हे भगवन्! प्रमादबहुल गृहस्थधर्ममें मेरेको कुछभी रहस्यभूत सुकृत कथन करो. ॥ तब गुरु कहे ॥

"॥ वत्स! सुष्ठ्वनुष्ठितं सुष्ठु पृष्टं ततः श्रूयताम् ॥"

हे वत्स! अच्छा करा, भला पूछा, तिसवास्ते तूं श्रवण कर. ॥

दानं हि परमो धर्म्मो दानं हि परमा क्रिया ॥
दानं हि परमो मार्गस्तस्माद्दाने मनः कुरु ॥ १ ॥
दया स्यादभयं दानमुपकारस्तथाविधः ॥
सर्वो हि धर्म्मसंघातो दानेन्तर्भावमर्हति ॥ २ ॥
ब्रह्मचारी च पाठेन भिक्षुश्चैव समाधिना ॥
वानप्रस्थस्तु कष्टेन गृही दानेन शुध्यति ॥ ३ ॥
ज्ञानिनः परमार्थज्ञा अर्हन्तो जगदीश्वराः ॥
व्रतकाले प्रयच्छन्ति दानं सांवत्सरं च ते ॥ ४ ॥
गृह्णतां प्रीणनं सम्यक् ददतां पुण्यमक्षयम् ॥
दानतुल्यस्ततो लोके मोक्षोपायोऽस्ति नाऽपरः ॥ ५ ॥

अर्थः—दानही परम उत्कृष्ट धर्म है, दानही परमा क्रिया है, दानही परम मार्ग है, तिसवास्ते दान देनेमें मन कर. । अभयदानसें दया होवे है, दानसेंही तथाविध उपकार होवे है, सर्वही धर्म समूह दानमें अंतर्भाव हो सक्ता है । ब्रह्मचारी पाठ करके, साधु समाधि करके, वानप्रस्थ कष्ट करके, और गृहस्थी दान करके शुद्ध होता है. । तीन ज्ञानके धर्त्ता परमार्थके जाणकार, ऐसें अर्हंत भगवंत जगदीश्वर भी व्रतसमयमें सांवत्सर दान देते हैं. । दान ग्रहण करनेवालेको तो, दान तृप्त करता है; और देनेवालेको अक्षय पुण्य प्राप्त करा ता है; तिसवास्ते दानके समान दूसरा कोई मोक्ष का उपाय लोकमें नही है. ॥ ५ ॥ जिसवास्ते हे

वत्स ! तैनें ब्राह्मणपणा, वा क्षत्रियपणा, वा वैश्य पणा प्राप्त करा है, अंगीकार करा है; तिसवास्ते हे वत्स ! तूं गृहस्थधर्ममें मोक्षके सोपानरूप दान देनेका प्रारंभ कर. । तब नमस्कार करके शिष्य कहे, हे भगवन् ! मुझको दानका विधी कहो. । गुरु कहे 'आदिशामि' कहता हूं । यथा ॥

गावो भूमिः सुवर्णं च रत्नान्यन्नं च नक्तकाः ॥
गजाश्वाइति दानं तदष्टधा परिकीर्त्तयेत् ॥ १ ॥
एतच्चाष्टविधं दानं विप्राणां गृहमेधिनाम् ॥
देयं न चापि यतयो गृह्णन्त्येतच्चनिःस्पृहाः ॥ २ ॥
यतिभ्यो भोजनं वस्त्रं पात्रमौषधपुस्तके ॥
दातव्यं द्रव्यदानेन तौ द्वौ नरकगामिनौ ॥ ३ ॥

अर्थः--गौ १, भूमि २, सुवर्ण ३, रत्न ४, अन्न ५, नक्तक वस्त्रविशेष ६, हाथी ७, और घोमा ८, येह आठ प्रकारका दान कहाहै । यह पूर्वोक्त आठ प्रकारका दान, गृहस्थी ब्राह्मणगुरुयोंको देना. और निःस्पृह यति साधु मुनिराज, इस दानको नही लेते हैं । साधवोको तो, भोजन, वस्त्र, पात्र, औषध पुस्तक, इनका दान देना. साधुकों द्रव्य (धन) का दान देनेसें, देनेलेनेवाले दोनोंही नरकगामी होते हैं. ॥ ३ ॥ तिसवास्ते प्रथम गोदान ग्रहण करना. उपनीत, वछडेसहित कपिला, वा पाटला, वा श्वेत रंगकी, स्नापित, चर्चित, भूपित, धेनुको, आगे दया

यके पूंछसे पकडके, रूप्यमय खुरा है जिसके, स्वर्ण मय श्रृंग है जिसके, ताम्रमय पृष्ठ है जिसकी, कांस्य मय दोहपात्र है जिसका, ऐसी धेनु, गृहस्थगुरुके तांइ देवे। गुरु तिस गौकी पूंछको हाथमें धारण करकें, यह वेदमंत्र पढे। यथा॥

"॥ ॐ अर्हं गौरियं धेनुरियं प्रशस्यपशुरियं सर्वोत्तमक्षीरदधि घृतेयं पवित्रगोमयमूत्रेयं सुधास्रा विणीयं रसोद्भाविनीयं पूज्येयं हृद्येयं अभिवाद्येयं तद्दत्तेयं त्वया धेनुः कृतपुण्यो भव प्राप्त पुण्यो भव अक्षयं दानमस्तु अर्हं ॐ॥"

यह कहकर गृहीगुरु धेनुको ग्रहण करे. शिष्य तिस गौकेसाथ द्रोणप्रमाण सात धान्य, तुलामात्र षट् (६) रस और पुरुषप्रतिमात्र षट् (६) विकृती (विगय) देवे॥ इतिगोदानम्॥ अन्य सर्व भूमिर रत्नादिदानोंविषे यह मंत्र पढना.। यथा॥

"॥ ॐ अर्हं एकमस्ति दशमकमस्ति शतमस्ति सहस्रमस्ति अयुतमस्ति लक्षमस्ति प्रयुतमस्ति कोट्यस्ति कोटिदशकमस्ति कोटिशतकमस्ति कोटिसहस्रमस्ति कोट्ययुतमस्ति कोटिलक्षमस्ति कोटिप्रयुतमस्ति कोटाकोटिरस्ति संख्येयमस्ति असंख्येयमस्ति अनंतानंतमस्ति दान फलमस्ति तदक्षयं दानमस्तु ते अर्हं ॐ॥" इति परेषां दानानां मंत्रपाठः॥

यहां उपनयनमें गोदानकाही निश्चय है, शेष दान क्रमकरके अन्यदा भी देना. गोदानादि दान गृहस्थगुरु ब्राह्मणोंकोही देना. निःस्पृह यतियोंको न देना. तथा तिन यतियोंको, अन्न, पान, वस्त्र, पात्र, भेषज, वसति, पुस्तकादि दानमें 'धर्मलाभः' यही मंत्र जाणना. । अथ गृहस्थगुरु, उपनीतसें गोदान लेके, पर्णानुज्ञा देके, चैत्यवंदन; और साधु वंदन करायके, तैसेंही संघके मिले हुए, मंगलगीत वाजंत्रोंके वाजते हुए, शिष्यको साधुयोंकी वसतिमें (उपाश्रयमें) ले जावे. तहां मंडलीपूजा, वासक्षेप, साधुवंदनादि सर्व पूर्ववत् करना. । पीछे चतुर्विध संघकी पूजा, और मुनियोंको वस्त्र, अन्न, पात्रादि दान करे. ॥ इति गोदानविधिः ॥

संपूर्णोयं चतुर्विधउपनयनविधिः ॥

अथ शूद्रको उत्तरीयक देनेकी विधि लिखते हैं. ॥ सात दिन तैलनिषेकस्नान पूर्ववत् जाणना. । तदनंतर यथाविधि पौष्टिक, सर्व शिरका मुंडन, वेदिकरण, चतुष्किकाकरण, जिनप्रतिमास्थापन, पूर्ववत्. । पीछे गृहस्थगुरु, जिनेश्वरकी अष्टप्रकारी पूजा करे. चारों दिशायोंमें शक्रस्तव पाठ करे. पीछे गुरु आसनऊपर बैठ जावे. तब शिष्य श्वेत वस्त्र पहिरके, उत्तरासंगकरके समवसरण और गुरुको, प्रदक्षिणा करके, 'नमोस्तु २' कहता हुआ, गुरुको

नमस्कार करके हाथ जोमके, खमा होयके कहे. "॥ जगवन् प्राप्तमनुष्यजन्मार्यदेशार्यकुलस्य मम बोधिरूपां जिनाज्ञां देहि ॥" गुरु कहे "॥ ददामि ॥" शिष्य फिर नमस्कार करके कहे "॥ न योग्योहमुपनयनस्य तज्जिनाज्ञां देहि ॥" गुरु कहे ददामि ॥" पीछे द्वादश (१२) गर्जतंतुरूप, जिनोपवीतप्रमाण दीर्घ (लंबा) कार्पासका, वा रेशमका, उत्तरीयक, परमेष्ठिमंत्र पढता हुआ, जिनोपवीतवत् पहिरावे. पीछे गुरु, पूर्वाजिमुख शिष्यको चैत्यवंदन करावे. । पीछे शिष्य 'नमोस्तु २" कहता हुआ, सुखसें बैठे गुरुके पगोंमें पमके, फिर खडा होके, हाथ जोमके, ऐसें कहे. "॥ जगवन् उत्तरीयकन्यासेन जिनाज्ञामारोपितोहं ॥" गुरु कहे "सम्यगारोपितोसि तर जवसागरम् ॥" पीछे गुरु सन्मुख बैठे शूद्रके आगे व्रतानुज्ञा देवे. ॥ यथा ॥

सम्यक्त्वेनाधिष्ठितानि व्रतानि द्वादशैव हि ॥
धार्याणि जवता नैव कार्यः कुलमदस्त्वया ॥ १ ॥
जैनर्षीणां तथा जैनब्राह्मणानामुपासनम् ॥
विधेयं चैव गीतार्थाचीर्णं कार्यं तपस्त्वया ॥ २ ॥
न निंद्यः कोपि पापात्मा न कार्यं स्वप्रशंसनम् ॥
ब्राह्मणेज्यस्त्वया मानं दातव्यं हितमिछता ॥ ३ ॥
शेषं चतुर्वर्णशिक्षाश्लोकव्याख्यानमाचरेत् ॥
उत्तरीयपरिभ्रंशे जंगे वाप्युपवीतवत् ॥ ४ ॥

कार्यं व्रतं प्रेतकर्मकरणं वृषल त्वया ॥
युक्तिरेषोत्तरासंगानुज्ञायां च विधीयते ॥ ५ ॥
क्षात्राणामथ वैश्यानां देशकालादियोगतः ॥
त्यक्तोपवीतानां कार्यमुत्तरासंगयोजनम् ॥ ६ ॥
धर्मकार्ये गुरोर्दृष्टौ देवगुर्वालयेऽपि च ॥
धार्यस्तथोत्तरासंगः सूत्रवत् प्रेतकर्मणि ॥ ७ ॥
अन्येषामपि कारूणां गुर्वानुज्ञां विनापि हि ॥
गुरुधर्मादिकार्येषु उत्तरासंग इष्यते ॥ ८ ॥

अर्थः—सम्यक्त्वके संयुक्त द्वादश व्रत तैंने धारण करने, और कुलका मद न करना. । जैन ब्राह्मणोंकी उपासना करनी; तथा गीतार्थाचीर्ण तप करना. । किसी पापात्माको निंदना नही, अपनी प्रशंसा नकरनी, हित इच्छके ब्राह्मणको मान देना. । शेष चतुर्वर्णशिक्षाश्लोकमें कहे आचारको आचरण करना; (उत्तरीयके परिभ्रंशमें, वा भंगमें उपवीतवत् जाणना. । व्रत करना, प्रेतकर्म करना,) हे वृषलशूद्र ! उत्तरासंगकी अनुज्ञामें तैंने यह युक्ति करनी. । देशकालादियोगसें त्याग किया है उपवीत जिनोंनें, वैसे क्षत्रिय और वैश्योंको, उत्तरासंग योजन करना. । धर्मकार्यमें, गुरुकी दृष्टिमें, देव और गुरुके मकानमें, तथा प्रेतकर्ममें, सूत्रकी तरें उत्तरासंग धारण करना. । और भी कारुओंको गुरुकी आज्ञाके विना भी गुरुधर्मादिकार्योंमें उत्त

रासंग इच्छते हैं. । ऐसा व्याख्यान करके गुरु शिष्य को चैत्यवंदन करावे. । परमेष्टिमंत्रका उच्चार और मंत्रव्याख्यान पूर्ववत्. । इतना विशेष है. शूद्रादिकोंको 'नमो' के स्थानमें 'णमो' उच्चारण कराना. इतिगुरुसंप्रदायः । पीछे शिष्यसहित गुरु, उत्सव करते हुए धर्मागारमें जावे. तहां मंडलीपूजा. गुरु नमस्कार, वासक्षेपादि पूर्ववत्. । पीछे मुनियोंको अन्न, वस्त्र, पात्र दान देवे. और चतुर्विध संघकी पूजा करे. ॥ इति उपनयने शूद्रादीनां उत्तरीयक न्यासोत्तरासंगानुज्ञोविधिः ॥

अथ वटूकरणविधिः—अथ वटूकरणविधि लिखते हैं. ॥ जिसवास्ते सम्यक् उपनीत, वेदविद्यासंयुक्त, कुप्रतिग्रहवर्जित, अशूद्रान्नभोजन करनेवाले, माहनोंके आचारमें रक्त, सर्व गृहस्थोंकेसंस्कारप्रतिष्ठादिकमोंके करानेवाले, ऐसें ब्राह्मण, पूज्य होते हैं.। परंक्षत्रियादि राजायोंको, सेवा, अन्नपाक, तिसकी आज्ञा करनी, अभ्युत्थान, चाटुः—मनोहर वचन, प्रशंसा, विना नमस्कारके आशीर्वाद देना, विज्ञानकर्म, कृषि वाणिज्यकरण, तुरंगवृषभादि शिक्षाकरण, इत्यादि कर्म करनेवाले ब्राह्मणयोग्य नहींहे. इसवास्ते एसे ब्राह्मणो वा हरकोइ को शुद्ध ब्राह्मण बनानेके लिए "वटू करण" विधि करनाचहिये. सो बतातेंहे. उक्तं च यतः ॥

च्युतव्रतानां व्रात्यानां तथा नैवेद्यभोजिनाम् ॥
कुकर्म्मणामवेदानामजपानां च शस्त्रिणाम् ॥ १ ॥
ग्राम्याणां कुलहीनानां विप्राणां नीचकर्म्मणाम् ॥
प्रेतान्नभोजिनां चैव मागधानां च वंदिनाम् ॥ २ ॥
घांटिकानां सेवकानां गंधतांबूलजीविनाम् ॥
नटानां विप्रवेषाणां पर्शुरामान्वयायिनाम् ॥ ३ ॥
अन्यजात्युद्भवानां च वंदिवेषोपजीविनाम् ॥
इत्यादिविप्ररूपाणां वटूकरणमिष्यते ॥ ४ ॥

अर्थः–व्रतसें भ्रष्ट हुए, संस्कारहीन, नैवेद्यका भोजन करनेवाले, कुकर्मके करनेवाले, जैन वेदको नही जाणनेवाले, वेद मंत्रोंका जप न करनेवाले, शस्त्रको धारण करनेवाले, कुग्रामके वसनेवाले, कुलहीन, नीच कर्मके करनेवाले, प्रेतके अन्नका भोजन करनेवाले, मागध–स्तुतिपाठ पठनेवाले वंदीराजादिकी स्तुति पढनेवाले, घंटिका वजानेवाले, सेवा करनेवाले, गंधतांबूलकरके आजीविका करनेवाले, विप्रवेष धारण करनेवाले नट, पर्शुरामके संतानीय, अन्य जातिसें उत्पन्न हुए, वंदिवेषसें आजीविका करनेवाले, इत्यादि विप्ररूपको वटूकरण इच्छते हैं । तिसका यह विधि है. प्रथम तिसके घरमें गृहस्थगुरु, यथोक्त विधिसें पौष्टिक करे. पीछे तिसको शिखा वर्जके मुंडन करावे, पीछे तिसको तीर्थोदक

मंत्रोंकरके मंत्रित जलकरके स्नान करावे. । तिर्थो दकाभिमंत्रणमंत्रोयथा ॥

" ॥ ॐ वं वरुणोसि वारुणमसि गांगमसि यामुनमसि गौदावरमसि नार्म्मदमसि पौष्करमसि सारस्वतमसि शातद्रवमसि वैपाशमसि सैंधवमसि चांद्रभागमसिवैतस्तमसि ऐरावतमसि कावेरमसि कारतोयमसि गौमतमसि शैतमसि शैतोदमसि रोहितमसि रोहितांशमसि सारेयवमसि हारिकांतमसि हारिसलिलमसि नारिकांतमसि नारकांतमसि रौप्यकूलमसि सौवर्णकूलमसि सालिलमसि रक्तवतमसि नैमग्नसलिलमसि उन्मग्नसलिलमसि पाद्ममसि महापाद्ममसि तैगिछमसि कैशरमसि जीवनमसि पवित्रमसि पावनमसि तदमुं पवित्रय कुलाचाररहितमपि देहिनं॥

इस मंत्रसें कुशाग्रकरी सात वार अभिसिंचन करे. पीछे नदीकांठे वा तीर्थऊपर, वा मंदिरमें, वा पवित्र गृहस्थानमें तिस वटूकरण योग्यको, प्रथम तीनगुणी कुशमेखला, तीन प्रकारसें बांधे. । मेखला बंधमंत्रो यथा ॥

" ॥ ॐ पवित्रोसि प्राचीनोसि नवीनोसि सुगमोसि अजोसि शुद्धजन्मासि तदमुं देहिनं धृतव्रतमव्रतं वा पावय पुनीहि अब्राह्मणमपि ब्राह्मणं कुरु ॥ "

इस मंत्रका तीन वार पाठ करे. ॥ पीछे कौपीन पहिरावे. । कौपीनमंत्रो यथा ॥

ॐ अब्रह्मचर्यगुप्तोपि ब्रह्मचर्यधरोपि वा ॥
व्रतः कौपीनबंधेन ब्रह्मचारी निगद्यते ॥ १ ॥

ऐसें तीन वार पढके कौपीन पहिरावणा. । पीछे पूर्वोक्त ब्राह्मणसमान उपवीत, मंत्रपूर्वक पहिरावे. । मंत्रो यथा ॥

" ॥ ॐ सधर्म्मोसि अधर्मोसि कुलीनोसि अकुलीनोसि सब्रह्मचर्योसि सुमनाअसि दुर्म्मनाअसि श्रद्धालुरसि अश्रद्धालुरसि आस्तिकोसि नास्तिकोसि आर्हतोसि सौगतोसि नैयायिकोसि वैशेषिकोसि सांख्योसि चार्वाकोसि सलिंगोसि अलिंगोसि तत्त्वज्ञोसि अतत्त्वज्ञोसि तद्भव ब्राह्मणोऽमुनोपवीतेन भवंतु ते सर्वार्थसिद्धयः ॥ "

इस मंत्रको नव वार पढके उपवीत स्थापन करे. । पीछे तिसके हाथमें पलाशका दंड देवे, और मृगचर्म तिसको पहिरावे, और भिक्षा मांगनी करावे. भिक्षामार्गणकेपीछे उपवीतको वर्जके, मेखला, कौपीन, चर्मदंडादि दूर करे. । दूरकरनेकामंत्र यथा ॥

" ॥ ॐ ध्रुवोसि स्थिरोसि तदेकमुपवीतं धारय ॥ "

ऐसें तीन वार पढे. । पीछे गुरु, धारण किया है श्वेतवस्त्रका उत्तरासंग जिसने, ऐसे ब्राह्मणको, आगे बिठलाके, शिक्षा देवे. । यथा ॥

परनिंदां परद्रोहं परस्त्रीधनवांछनम् ॥
मांसाशनं म्लेछकंदभक्षणं चैव वर्जयेत् ॥ १ ॥

वाणिज्ये स्वामिसेवायां कपटं मा कृथाः क्वचित् ॥
ब्रह्मस्त्रीभ्रूणगोरक्षां देवर्षिगुरुसेवनम् ॥ २ ॥
अतिथीनां पूजनं च कुर्याद्दानं-यथा धनम् ॥
अथात्मघातं मा कुर्या मा वृथा परतापनम् ॥ ३ ॥
उपवीतमिदं स्थाप्यमाजन्म विधिवत्त्वया ॥
शेषः शिक्षाक्रमः कथ्यश्चातुर्वर्ण्यस्य पूर्ववत् ॥ ४ ॥

अर्थः—परनिंदा, परद्रोह, परधनकी वांछा, मांस भक्षण, म्लेच्छकंद लशुनादिभक्षण, इनको वर्जना.। वाणिज्यमें स्वामीकी सेवामें, कदापि कपट न करना; ब्राह्मण, स्त्री, गर्भ और गौ, इन चारोंकी रक्षा करनी देव ऋषि और गुरुकी सेवा करनी. । अतिथीयोंका पूजन करना, धनके अनुसार दान देना, आत्मघात नहीं करना, परको पीड़ा न करनी. । जन्मपर्यंत यावज्जीवे तबतक विधिपूर्वक उपवीत धारण करना, शेष शिक्षाक्रम पूर्ववत् चारों वर्णोंका कथन करना. ॥ पीछे सो वटुकृत, गुरुको स्वर्ण, वस्त्र, धेनु, अन्न, दान करे. । यहां वटुकरणमें वेदी, चतुष्किका, समवसरण, चैत्यवंदन, व्रतानुज्ञा, व्रतविसर्ग, गोदान, वासक्षेपादि नहीं है. ॥ इति वटुकरणविधिः॥
इति द्वादशमोपनयनादिसंस्कारवर्णं समाप्तम् ॥

॥ अथ अध्ययनारंभ संस्कार लिख्यते ॥

अश्विनी, मूल, पूर्वा ३, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, हस्त, शतभिषा, स्वाति, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा, येह नक्षत्र और बुध, गुरु, शुक्र, येह वार विद्यारंभमें शुभ है. अर्थात् इनोंमें प्रारंभ करी विद्या प्राप्त होती है. रवि और चंद्र, मध्यम हैं. मंगल और शनिवार, त्यागने योग्य है. । अमावास्या, अष्टमी, प्रतिपत् (एकम,) चतुर्दशी, रिक्ता, षष्ठी, नवमी, येह तिथियें विद्यारंभमें सदाही वर्जनी. ।

अथ उपनयनसदृश दिन और लग्नमें विद्यारंभ संस्कारका आरंभ करिये, तिसका यह विधि है. । गृहस्थगुरु प्रथम विधिसें उपनीत पुरुषके घरमें पौष्टिक करे; पीछे गुरु, मंदिरमें, वा उपाश्रयमें, वा कदंबवृक्षकेतले, कुशाके आसनउपर आप बैठके, शिष्यको वामेपासे कुशासनोपरि बिठलाके तिसके दक्षिण कानको पूजके तीनवार सारस्वत मंत्र पढे. पीछे गुरु, अपने घरमें, वा पाठ शालामें वा पौषधागारमें, शिष्यको पालखी, वा घोडेपर चढायके मंगलगीतोंके गाते हुए, दान देते हुए, वाजंत्र वाजते हुए, यति गुरु केपास लेजाके मंडलीपूजापूर्वक वास क्षेप करवाके, पाठशालामें लेजावे. पीछे गुरु शिष्यको आगे येह शिक्षाश्लोक पढे. । यथा ॥

अज्ञानतिमिरांधानां, ज्ञानांजनशलाकया ॥
नेत्रमुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १ ॥
यासां प्रसादादधिगम्य सम्यक्, शास्त्राणि विंदन्ति परं पदज्ञाः ॥ मनीपितार्थप्रतिपादकाभ्यो नमोस्तु ताभ्यो गुरुपा डुकाभ्यः ॥ २ ॥
सत्येतस्मिन्नरतिरतिदं गृह्यते वस्तु दूरा, दप्यासन्नेप्य सति तु मनस्याप्यते नैव किंचित् ॥ पुंसामित्यप्यवग तवतामुन्मनीभावहेता, विच्छा बाढं भवति न कथं सद्गुरूपासनायाम् ॥ ३ ॥
इति मत्वा त्वया वत्स ! विशुद्धोपासनं गुरोः ॥
विधेयं येन जायंते गोधीकीर्तिधृतिश्रियः ॥ ४ ॥

ऐसें शिष्यको शिक्षा देके, और तिससें स्वर्ण वस्त्र दक्षिणा लेके, गुरु अपने घरको जावे. पीछे उपाध्याय, सर्वको पहिले मातृका पढावे; पीछे विप्रको प्रथम आर्यवेद पढावे, पीछे षडंगी, पीछे न्याय व्याकर्ण धर्मशास्त्र पढावे; क्षत्रियको भी ऐसेंही चतुर्दश विद्या पढावे. पीछे आयुर्वेद, धनुर्वेद, दंड नीति और आजीविकाशास्त्र पढावे. वैश्यको धर्म शास्त्र, नीतिशास्त्र, कामशास्त्र और अर्थशास्त्र पढावे. शूद्रको नीतिशास्त्र और आजीविकाशास्त्र पढा वे, कारुयोंको तिनके उचित विज्ञानशास्त्र पढावे. पीछे सा धुयोंको चतुर्विध आहार वस्त्र पात्र पुस्तक दान देवे.।

इति त्रयोदशमविद्यारंभसंस्कारवर्णनं समाप्तं ॥

अथ विवाह संस्कार विधिलिख्यते ॥

विवाह जो है सो समानकुलशीलवालोंकाही होता है. यतउक्तं ॥

ययोरेव समं शीलं, ययोरेव समं कुलम् ॥
तयोर्मैत्री विवाहश्च, न तु पुष्टविपुष्टयोः ॥ १ ॥

तिसवास्ते समकुलशील, समजाति, जाने है देशकृत्य जिनोंके, तिनका विवाहसंबंध जोडना योग्य है; तिसवास्ते जो अविकृत है, तिसनें विकृतकुलकी कन्या ग्रहण नही करनी । विकृतकुलं यथा । जिनकेकुलमें शरीरऊपर रोम वहुत होवे, अर्शरोग होवे, दाद होवे, चित्रकुष्टि होवे, नेत्ररोग होवे, उदररोग होवे, ऐसे वंशोंकी कन्या न ग्रहण करनी. विकृत कुल होनेसें. । कन्या विकृता यथा । वरसें लंवी होवे, हीन अंगवाली होवे, कपिला होवे, ऊंची दृष्टिवाली होवे, जिसका नाषण और नाम नयानक होवे, ऐसी कन्या विचक्षणोंको त्यागने योग्य है. तथा देवता, ऋषि, ग्रह, तारा, अग्नी. नदी, वृक्षादिकके नामसें जो कन्या होवे, तथा जिसके शरीरऊपर वहुत रोम होवे, पिंगाक्षी और घरघरास्वरवाली, ऐसी कन्या नी पाणिग्रहणमें वर्जनी. ॥ कन्यादाने वरस्य विकृतं कुलं यथा ॥ हीन होवे, क्रूर होवे, वधूसहित होवे, दरिद्री होवे,

व्यसन (कष्ट) संयुक्त होवे, कन्यादानमें ऐसें कुल और पुरुषको वर्जना. मूर्ख, निर्धन, दूर देशमें रहनेवाला, शूर, योद्धा, मोक्षाभिलाषी, कन्यासें तीन गुणासे अधिक उमरवाला, इनको भी कन्या न देनी. तिसवास्ते दोनों अविकृत कुलोंका, और दोनों विकृत कुलवालोंका विवाहसंबंध योग्य है. तथा पांच शुद्धियें देखके वधूवरका संयोग करना, सोही दिखावे हैं. राशि १, योनि २, गण ३, नाडी ४, और वर्ग ५, येह पांच शुद्धियें दोनोंकी देखके वरवधूका संयोग करना. । कुल १, शील २, स्वामिपणा ३, विद्या ४, धन ५, शरीर ६, और वय ७, येह सातो गुण वरमें देखने, अर्थात् येह सात गुण वरमेंदेखके कन्या देनी. आगे जो होवे, सो कन्याका भाग्य है. गर्भसें आठ वर्षसें लेके इग्यारह वर्ष तांइ कन्याका विवाह करना * तिसके उपरांत रजस्वला होती है. तिसको राका भी कहते हैं. तिसका विवाह शीघ्र होना चाहिये. वरको पाकरके

* यह कथन प्रायः लौकिकव्यवहारानुसार है. क्योंकि, जैनागममें तो "जोवणगमणमणुपत्ता" इतिवचनात्, जब वरकन्या योवनको प्राप्त होवे, तब विवाह करना. और 'प्रवचनसारोद्धार' में लिखा है कि, सोलां वर्षकी स्त्री, और पचीस वर्षका पुरुष, तिनके संयोगसें जो संतान उत्पन्न होवे, सो बलिष्ठ होवे हैं. इत्यादि मूलागमसें तो बाललग्नका और वृध्धके विवाहका निषेध सिद्ध होता है. ॥

चंद्रबलके हुए, तुच्छ महोत्सवके भी हुए, विवाह करना उचित है. यतउक्तम् ॥

वर्षमासदिनादिनां शुद्धिं राकाकरग्रहे ॥
नालोकयेच्चंद्रबलं वरं प्राप्य विधापयेत् ॥ १ ॥

पुरुषका आठ वर्षसें लेके ८० वर्षके बीच २ विवाह होना चाहिये. क्योंकि, अस्सीवर्ष उपरांत प्रायः पुरुष शुक्ररहित होता है. ।

विवाह दो प्रकारके होते हैं, आर्यविवाह १, और पापविवाह २. । आर्य विवाहके चार भेद हैं. ब्राह्मविवाह १, प्राजापत्यविवाह २, आर्षविवाह ३, और दैवतविवाह ४. ये चारों विवाह मातापिताकी आज्ञासें होनेसें लौकिक व्यवहारमें धार्म्मिक विवाह गिने जाते हैं. पापविवाहके भी चार भेद हैं. गांधर्वविवाह १, आसुरविवाह २, राक्षसविवाह ३, और पैशाचविवाह ४. ये चारों स्वेच्छानु सार करनेसें पापविवाह गिने जाते हैं. ।

प्रथम ब्राह्माविवाहविधि लिखते हैं. । शुभ दिनमें, शुभ लग्नमें, पूर्वोक्त गुणसंयुक्त वरको बुलवाके स्नान अलंकार करके संयुक्त हुए तिस वरकों अलंकृत कन्या देवे. ॥ मंत्रो यथा ॥

“ॐ अर्हं सर्वगुणाय सर्वविद्याय सर्वसुखाय सर्वपूजिताय सर्वशोभनाय तुभ्यं वस्त्रगंधमाल्यालं

कारालंकृतां कन्यां ददामि प्रतिगृह्णाष्व नद्रं नवतु ते अर्हं ॐ ॥"

इस मंत्रकरके वस्त्रांचलदंपती-स्त्रीनर्ता, अपने घरमें जावे. ॥ इति धार्म्यो ब्राह्यविवाहः ॥ १ ॥

प्राजापत्य विवाह जगत्में प्रसिद्ध है, इसवास्ते विस्तारसें कहेगें. ॥

आर्ष विवाहमें वनमें रहनेवाले मुनि, ऋषि, गृहस्थ अपनी पुत्रीको, अन्यऋषिके पुत्रकों, गौ बैलके साथ देते हैं. तहां अन्य कोइ उत्सवादि नही होते हैं, इस विवाहका मंत्र जैनवेदोंमें नहीं है जैनी मंत्र जैन वेदकरके वर्णादि आश्रित हुए जैनोंके आचार कथन करनेवाले हे और ऐसें विवाह अकृत्य होनेसें जैनोकों कथन करनेकी जरुर नही हे. दैवत। विवाहमें नी ऐसेंही जाणना.। इन दोनों विवाहोके मंत्र पर समयसें जाणने. ॥ इति धार्म्यं आर्षविवाहः ॥ ३ ॥

दैवत विवाहमें तो, पिता, अपने पुरोहितकों इष्ट पूर्त्त कर्मके अंतमें अपनी कन्याको दक्षिणाकी तरें देवे. यह कार्य नी जैनोंकों सम्मत नही होनेसें इस्के मंत्रनी कथन करतें नही हें ॥ इति दैवत धार्म्य विवाहः ॥ ४ ॥ ये चार धार्म्यविवाह हैं. ॥

पितादिकोंकी सम्मती विना, अन्योन्यप्रीतिकरके जो विवाह होता है, सो गांधर्वविवाह. ॥१॥

पणबंध, सो आसूरविवाह. ॥ २ ॥ हठसें कन्या ग्रहण करे सो राक्षस विवाह ॥ ३ ॥

सुप्त, और प्रमत्तकन्याको ग्रहण करनेसें, पैशाच विवाह कहा जाता है. ॥ ४ ॥ माता, पिता, गुरु, आदिकी आज्ञा न होनेसें इन चारों विवाहोंको विवाहज्ञ पुरुष पापविवाह कहते हैं. ॥ तथा ब्राह्म १ आर्ष २, और दैवत ३, येह तीन विवाह दुःखमका लकलियुगमें प्रवर्त्तते नही हैं. । चारों पापविवा होका वेदोक्तविधि भी नही है. अधर्म होनेसें. ॥

संप्रति वर्त्तमान प्राजापत्य विवाहका विधि कह ते है ॥ मूल, अनुराधा, रोहिणी, मघा, मृगशिर, हस्त, रेवती, उत्तरा ३, स्वाति, इन नक्षत्रोंमें लग्न करना. । वेध, एकार्गल, लत्ता, पात, उपग्रहसंयुक्त नक्षत्रोंमें विवाह नही करना. । तथा युति, क्रांति, साम्य, दोषमें भी नही करना. । तीन दिनको स्पर्श नेवाली तिथिमें, (अवम् क्षय तिथिमें,) क्रूर तिथि में, दग्ध तिथिमें,) रिक्ता तिथिमें, अमावास्या, अष्टमी, षष्ठी, द्वादशी इनमें विवाह नही करना. । भद्रामें, संक्रांतमें, दुष्टनक्षत्र तिथि वार योगों, व्यतिपातमें, वैधृतिमें और निंद्यसमयमें विवाह नही करना सूर्यके क्षेत्रमे बृहस्पति होवे और बृहस्पतिके क्षेत्रमें सूर्य होवे तो, दीक्षा, प्रति ष्ठा, विवाह प्रमुख वर्जने. । चौमासेमें, अधिकमा

समें, गुरु शुक्रके अस्त हुए, मलमासमें, और जन्म मासमें, विवाहादि न करना. । मासांतमें, संक्रांति में, संक्रांतिके दूसरे दिनमें, ग्रहणादि सात दिनोंमें जी, पूर्वोक्त कार्य नही करना. । जन्मके तिथि वार, नक्षत्र, लग्नमें; राशि और जन्मके ईश्वरके अस्त हुए, और क्रूर ग्रहोकरके हत हुए जी, विवाह नही करणा. । जन्मराशिमें, जन्मराशि और जन्मलग्नसें वारमें और आठमेमें, और लग्नके अंशके अधिपके ठठे, और आठमे घरमें गए हुए, लग्न नही करना. । स्थिर लग्नमें, वा द्विस्वजावलग्नमें, वा सद्गुण करी संयुक्त चर लग्नमें, उदयास्तके विशुद्ध हुए, विवाह करना. परंतु उत्पातादिकरके विदूषितमें नही करना. । लग्न और सप्तम घर, ग्रहकरके वर्जित होवे; तीसरे, ठठे, और इग्यारमे घरमें, रवि, मंगल और शनि होवे. । ठठे और तीसरे घरमें, तथा पापग्रहवर्जित पांचमें घरमें राहु होवे; लग्नमें तथा पांचमें, चौथे, दशमे, और नवमे घरमें बृहस्पति होवे. । ऐसेंही शुक्र, बुध, होवे; लग्न, ठठे, आठमे, वारमे घरसें, अन्यत्र चंद्रमा होवे, सो जी पूर्ण होवे. । क्रूरकरके दृष्ट, और क्रूरसंयुक्त चंद्र वर्जना; क्रूर, और अंतस्थ लग्न और चंद्र वर्जने. । इत्यादि गुणसंयुक्त, दोष विवर्जित लग्नमें, शुज अंशमें शुज ग्रहोंकर दृष्ट हुए, पाणिग्रहण शुज है. ॥ इत्यादि

श्रीभद्रबाहु, वराह, गर्ग, लल्ल, पृथुयशः, श्रीपति, विरचितविवाहशास्त्रके अवलोकनसें शुभ लग्न देख के विवाहका आरंभ करना. ॥

श्लोकः ॥

ततश्च कुलदेशादि गुरुवाक्यविशेषतः ॥
अनुज्ञातं विवाहादि गर्ग्गादिमुनिभिः पुरा ॥१॥

वृत्तम् ॥

सूर्यः षट्र त्रिदशस्थितस्त्रिदशषट्सप्ताद्यगश्चंद्रमा
जीवः सप्तनवद्विपंचमगतो वक्रार्कजौ षट्त्रिगौ ॥
सौम्यः षट्द्विचतुर्दशाष्टमगतः सर्वेप्युपांते शुभाः
शुक्रः सप्तमषट्रदशाष्टरहितः शार्दूलवत्रासकृत् ॥ २ ॥

स्त्रीयोंको बृहस्पति बलवान् होवे, पुरुषोंको सूर्य बलवान् होवे, और दंपतीको चंद्र बलवान् होवे तो, लग्न शोधना. ॥

प्रथम कन्यादानविधि कहते हैंः—पूर्वोक्त समान कुलशीलवाले, अन्य गोत्रीसें कन्या मांगनी. । पूर्वोक्त गुणविशिष्ट वरकेतांइ कन्या देनी. । कन्याके कुलज्येष्ठने वरके कुलज्येष्ठको, नालियर, क्रमुक (सुपारी) जिनोपवीत, व्रीही, दूर्वा, हरिद्रा अपने २ देशकुलोचित वस्तु दानपूर्वक कन्यादान करना. तदा गृहस्थगुरु वेदमंत्र पढे । स यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं परमसौभाग्याय, परमसुखाय, परमभोगाय, परमधर्म्माय, परमयशसे, परमसन्तानाय,

नोगोपनोगांतरायव्यवच्छेदाय, इमां अमुकनाम्नीं कन्यां अमुकगोत्रां अमुकनाम्ने वराय अमुकगोत्राय ददाति गृहाण अर्हं ॐ ॥"

पीछे सर्व लोकोंकेतांइ कन्याके पक्षी तांबूल देवे. । तथा दूर रहे विवाहकालमें वरके जीते हुए, सो कन्या अन्यको न देवे.

उक्तंच ॥

"सकृज्जल्पन्ति राजानस्सकृज्जल्पन्ति पण्डिताः ॥ सकृत् प्रदीयते कन्या त्रीण्येतानि सकृत् सकृत्॥१॥"

राजाओं एकवार बोलते हैं, पंमित जन एक वार बोलते हैं, कन्या एकवार दिइजाती हैं. पूर्वोक्त तीन कार्य एकएकहीवार होते हैं. ॥ तथा वर नी, तिस कन्याको वस्त्र, आनरण, गंधादिउत्सवसहित, तिसके पिताके घरमें देवे. । कन्याका पिता नी, परिजनसंयुक्त वरको, महोत्सवसहित वस्त्र मुद्रिकादिक देवे. ॥

लग्नदिनसें पहिले मासमें. वा पक्षमें, अवकासानुसारें दोनों पक्षोंके स्वजनोंको एकठे करके, सांवत्सर–ज्योतिषिकको उत्तम आसनऊपर विठलाके, तिसके हाथसें विवाहलग्न नूमिके ऊपर लिखवावे; और रूप्य, स्वर्णमुद्रा, फल, पुष्प, दूर्वा करके जन्मलग्नवत् विवाहलग्नको पूजे. । पीछे ज्योतिषिको

दोनों पक्षोंके वृद्धनें वस्त्रालंकार तांबूलदान देना इति विवाहारंजः ॥

पीछे कोरे शरावलोंमें यव बोवने। पीछे कन्या के घरमें मातृस्थापना, और षष्ठीस्थापना, षष्ठी पूजनविधिके प्रकारसें करना. । वरके घरमें मातृ स्थापन, और कुलकरस्थापन करना. । परमतमें गण पति, कंदर्प स्थापन करते हैं. सो सुगम, और लोक प्रसिद्ध है. ॥

अथ कुलकर स्थापनविधि कहते हैं. ॥ गृहस्थ गुरु जूमिपर नहीं पडे गोमय (गोवर) करके लीपी हुई जूमिमें, स्वर्णमय, रूप्यमय, ताम्रमय, वा श्रीप र्णीकाष्ठमय, पट्टा, स्थापन करे. । पट्टकस्थापन मंत्रः

"॥ ॐ आधाराय नमः आधारशक्तये नमः ।

इस मंत्रकरके एकवार मंत्रके पट्टेको स्थापन करके, तिस पट्टेको अमृतामंत्रकरके तीर्थजलोंसें अजिषिंचन करके. । पीछे चंदन, अक्षत, दूर्वाकरके पट्टेको पूजे. । पीछे आदिमें.

"॥ ॐ नमः प्रथमकुलकराय, कांचनवर्णाय, श्या मवर्ण चंद्रयशः प्रियतमासहिताय, हाकारमात्रोच्चा रख्यापितन्याय्यपथाय, विमलवाहनाजिधानाय, इह विवाहमहोत्सवादौ आगछ २, इह स्थाने तिष्ठ २, सन्निहितो जव २, क्षेमदो जव २, उत्सवदो जव २, आनंददो जव २, जोगदो जव २, कीर्तिदो जव २,

अपत्यसंतानदो जव २, स्नेहदो जव २, राज्यदो जव २, इदमर्घ्यं पाद्यं बलिं चर्चां आचमनीयं गृहाण २; सर्वोपचारान् गृहाण ॥ " २, पीठे ॥

" ॥ ॐ गंधं नमः । ॐ पुष्पं नमः । ॐ धूपं नमः । ॐ दीपं नमः । ॐ उपवीतं नमः । ॐ जूषणं नमः । ॐ नैवेद्यं नमः । ॐ तांबूलं नमः ॥ "

पूर्वोक्त मंत्रकरी आव्हान संस्थापन करके, इस मंत्रसे अर्घ्य, पाद्य, बलि, चर्चा, आचमनीय, दान देवे. यह छोटे मंत्रोंसें गंधके दो तिलक, दो पुष्प, दो धूप, दो दीप, एक उपवीत, दो स्वर्णमुद्रा, दो नैवेद्य, दो तांबूल, चढावे. ॥२॥ पीठे दूसरे स्थानमें ॥

" ॥ ॐ नमो द्वितीयकुलकराय, श्यामवर्णाय, श्यामवर्णचंद्रकांता प्रियतमासहिताय, हाकारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय, चक्षुष्मदभिधानाय, ॥" शेषं पूर्ववत् ॥ २ ॥

" ॥ ॐ नमस्तृतीयकुलकराय, श्यामवर्णाय, श्यामवर्णसुरूपाप्रियतमासहिताय माकारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय, यशस्वअभिधानाय ॥ " ॥ शेषं पूर्ववत् ॥

" ॥ ॐ नमश्चतुर्थकुलकराय, श्वेतवर्णाय, श्यामवर्णप्रतिरूपाप्रियतमासहिताय, माकरमात्रख्यापितन्याय्यपथाय, अभिचंद्राभिधानाय ॥ " शेषं पूर्ववत् ॥

" ॥ ॐ नमः पंचमकुलकराय, श्यामवर्णाय, श्यामवर्णचक्षुःकांताप्रियतमासहिताय, धिक्कारमात्रख्या

पितन्याय्यपथाय प्रसेनजिदभिधानाय ॥" शेषं पूर्ववत् ॥ ५ ॥

"॥ ॐ नम षष्ठकुलकराय, स्वर्णवर्णाय, श्यामवर्णश्रीकांताप्रियतमासहिताय, धिक्कारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय मरुदेवाभिधानाय, ॥" शेषं पूर्ववत् ॥ ६ ॥

"॥ ॐ नमः सप्तमकुलकराय, कांचनवर्णाय, श्यामवर्णमरुदेवाप्रियतमासहिताय, धिक्कारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय, नाभीअभिधानाय ॥" शेषं पूर्ववत् ॥ ॥ ७ ॥ इतिकुलकरस्थापन पूजनविधिः ॥

यह कुलकरस्थापना और परसमयमें गणेशमदन स्थापना, विवाहके पीछे भी सात अहोरात्रपर्यंत रखनी चाहिये. । पीछे वरके घरमें शांतिक, पौष्टिक करे. और कन्याके घरमें मातृपूजा पूर्ववत् । पीछे विवाहकालसें पूर्व सात, नव, इग्यारह, वा तेरह, दिनोंमें वधूवरको अपने २ घरमें, मंगलगीतवाजंत्र पूर्वक, तैलाभिषेक और स्नान, नित्य विवाहपर्यंत कराना. । प्रथमतैलाभिषेकदिनमें, वरके घरसें कन्याके घरमें, तैल, शिरःप्रसाधनगंधद्रव्य, द्राक्षादि खाद्य, शुष्कफल, भेजने. । नगरकी औरतें वरके घरमें और कन्याके घरमें, तैल, धान्य, ढौकन करें । वधूवरके घरकी वृद्ध नारीयों तिन तैल धान्यढौकने वाली नारीयोंको, पूडे आदि पक्वान्न देवें । तहां धारणादि देशाचार, कुलाचारोंसें करना. । तैलाभि

पेक, कुलकर गणेशादि स्थापन, कंकणबंध, अन्य विवाहके उपचारदिक सर्व, वधूवरको चंडवलके हुए, विवाहवाले नक्षत्रमें करना. । तथा धूलिभक्त, कौर भक्त, सौभाग्यजलल्यावन प्रमुख, कर्म, मंगलगीत वाजंत्रादिसहित देशाचार कुलार विशेषसें करना. । पीछे जेकर, वर, अन्य ग्रामांतर, नगरांतर, वा देशांतरमें होवे तो, तिसकी गमनयात्रा (जान जनेत वरात) कन्याके निवासस्थानप्रति करनी; तिसका विधि यह है. ॥

प्रथम एक दिनमें मातृपूर्वक सर्व लोकोंको भोजन देना; पीछे दूसरे दिन सुस्नात होके, चंदन का लेपन करके, वस्त्रगंधमाल्यादिकरके अलंकृत होके, मुकुट भूषित शिरको करके, घोडेपर, वा हाथी पर, वा पालखीमें आरूढ होके, वर चले. । तिसके समीप, अच्छे वस्त्रोंवाले, प्रमोदसहित, पानबीडे चावे हुए, संबंधी ज्ञातिजन, अपनी २ संपदानु सार घोडेआदि ऊपर चढे हुवे, वा पगोंसें चलते हुए, वरकेसाथ चलें. । दोनों पासे, मंगलगानमें तत्पर ऐसी ज्ञातिकी नारीयां चलें और आगे जैन ब्राह्मणलोक, ग्रहशांतिमंत्र पढते हुए चलें. ॥

"ॐ अर्हं आदिमोर्हन्, आदिमो नृपः, आदि मो यंता, आदिमो नियंता, आदिमो गुरुः, आदिमः स्रष्टा, आदिमः कर्त्ता, आदिमो भर्त्ता, आदिमो

जयी, आदिमो नयी, आदिमः शिल्पी, आदिमो विद्वान्, आदिमो जल्पकः, आदिमः शास्ता, आदिमो रौद्रः, आदिमः सौम्य, आदिमः काम्यः, आदिमः, शरण्यः, आदिमो दाता, आदिमो वंद्यः, आदिमः स्तुत्यः, आदिमो ज्ञेयः, आदिमो ध्येयः, आदिमो भोक्ता, आदिमः सोढा, आदिम एकः, आदिमोऽनेकः, आदिमः स्थूलः, आदिमः कर्म्मवान् आदिमोऽकर्म्मा, आदिमो धर्म्मवित्, आदिमोऽनुष्टेयः, आदिमोऽनुष्ठाता, आदिमः सहजः, आदिमो दशावान् आदिमः सकलत्रः, आदिमो निःकलत्रः, आदिमो विवोढा, आदिमः ख्यापकः, आदिमो ज्ञापकः, आदिमो विडुरः, आदिमः कुशलः, आदिमो वैज्ञानिकः, आदिमः सेव्यः, आदिमोगम्यः, आदिमो विमृश्यः, आदिमो विम्रष्टा, सुरासुरनरोरग प्रणतः, प्राप्तविमलकेवलो यो गीयते, सकलप्राणिगणहितो, दयालुरपरापेक्षापरात्मा, परंज्योतिः, परं ब्रह्मा, परमैश्वर्यभाक्, परंपरः, परापरो, जगदुत्तमः, सर्वगः, सर्ववित्, सर्वजित्, सर्व्वीयः, सर्व्वप्रकास्यः सर्ववंद्यः, सर्वपूज्यः, सर्वात्माऽसंसारोऽव्ययोऽवार्यवीर्यः, श्रीसंश्रयः, श्रेयः, संश्रयः, विश्वावश्यायहृत्, संशयहृत्, विश्वसारो, निरंजनो, निर्ममो, निःकलंको, निःपाप्मा, निःपुण्यः, निर्मना, निर्वाचा, निर्देहो, निःसंशयो, निराधारो, निरवधिः प्रमाणं, प्रमेयं, प्रमाता,

जीवाजीवाश्रववंधसंवरनिर्जरावंधमोक्षप्रकाशकः, स एव जगवान्, शान्तिं करोतु, तुष्टिं करोतु, पुष्टिं करोतु, ऋद्धिं करोतु, वृद्धिं करोतु, सुखं करोतु, सौख्यं करोतु, श्रियं करोतु, लक्ष्मीं करोतु अर्हं ॐ ॥

ऐसें आर्यवेदके पाठी ब्राह्मण, आगे चलें. । पीछे इसी विधिसें महोत्सवकरके, चैत्यपरिपाटी, गुरुवंदन, मंफलीपूजन, नगरदेवतादिपूजन, करके, नगरके समीप रहे; पीछे पंथमें चलें. । तथा इसी रीतिसें कन्याधिष्ठित नगरमें प्रवेश करना. । तिसही नगरमें विवाहकेवास्ते चले हुए वरका जी, यही विधि जाणना. । तथा नित्यस्नानके अनंतर कौसुंज सूत्रकरके वधूवरके शरीरका माप करना. । पीछे विवाहदिनके आये हुए, विवाहलग्नसें पहिले, तिस ही नगरका वासी, वा अन्यदेशसें आया वर, तिस ही पूर्वोक्त विधिसें, पाणिग्रहणकेवास्ते चले. तिस की वहिन विशेषकरके लूंणआदि उत्तारण करे. । पीछे वर, आरुंवर और गृहस्थगुरुसहित कन्याके घरके द्वारमें आवे. तहां खडे हुए वरको, तिसके सासुजन, कर्पूरदीपकादिकरके आरात्रिक (आरति) करे. । पीछे अन्य स्त्री, जलते हुए अंगारे, और लवणकरके संयुक्त, त्रम त्रम ऐसे शब्द करते हुए, सरावसंपुटको, वरको निरुंछन करके, प्रवेशमार्गके वामे पासे स्थापन करे. । पीछे अन्य स्त्री कौसुं

म्भसूत्रसें अलंकृत, मंथानको लाके, तिससें, तीन वार वरके ललाटको स्पर्श करे. । पीछे वर, वाहन सें नीचे उतरके, वामे पगसे तिस अग्निलवण संयुतसंपुटको खंमित करे (तोडे.) पीछे वरकी सासु, वा कन्याकी मामी, वा कन्याका मामा, कौसुंभवस्त्रको वरके कंठमें मालके, खेंचता हुआ वरको मातृघरमें ले जावे. तहां विन्नूपाकरके, कौतुकमंगलकरके, प्रथम आसनऊपर बैठी हुई कन्याके वामे पासे, मातृदेवीके सन्मुख, वरको बिठलावे. । पीछे गृहस्थगुरु लग्नवेलामें शुभांशके हुए, पीसी हुई समी (खेजमी) की ठाल, और पीपलिकी ठाल, चंदनद्रव्यमिश्रितकरके, तिससें लीपे हुए, वधूवरके दोनों दक्षिण हाथ जोडे. । उपर कौसुंभसूत्रसें बांधे. ॥ हस्तबंधनमंत्रः ॥

" ॥ ॐ अर्हं आत्मासि, जीवोसि, समकालोसि, समचित्तोसि, समकर्म्मासि, समाश्रयोसि, समदेहोसि, समक्रियोसि, समस्नेहोसि, समचेष्टितोसि, समाभिलाषोसि, समेच्छोसि, समप्रमोदोसि, समविषादोसि, समावस्थोसि, समनिमित्तोसि, समवचाअसि, समक्षुत्तृष्णोसि, समगमोसि, समागमोसि, समविहारोसि, समविषयोसि, समशब्दोसि, समरूपोसि, समगंधोसि, समस्पर्शोसि, समेंद्रियोसि, समाश्रवोसि, समबंधोसि, समसंवरोसि, समनिर्जरोसि, सम

मोक्षोसि, तत् एहि एकत्वमिदानीं अर्हं ॐ ॥"
इति हस्तबंधनमंत्रः ॥

यहां समयांतरमें (वेदिक मतमें) मधुपर्क नक्षण, देशांतरमें वरको दो गौयां देनी, और कुलांतरमें कन्याको आभरण पहिरावणे, इत्यादि करते हैं। पीछे वधुवरको मातृघरमें बैठे हुए, कन्याके पक्षी, वेदिकी रचना करें; तिसका विधि यह है. ॥ कितनेक काष्टस्तंभ काष्टाच्छादनोंकरके चौकूणी वेदी करते हैं; और कितनेक चारों कूणोंमें स्वर्ण, रूप्य, ताम्र, वा माटीके ..... कलशोंको ऊपर लघु, लघु, अर्थात् प्रथम बमा उसके ऊपर छोटा, उसके ऊप र फिर छोटा, एवं स्थापन करके चारा पासे चार चार आर्द्र वांसोंसें बांधके वेदि करते हैं. चारों वारणोंमें वस्त्रमय, वा काष्टमय तोरण, और चंदन मालिका बांधते हैं; और अंदर त्रिकोण अग्निका कुंभ करते हैं. । वेदी बनाया पीछे गृहस्थगुरु, पूर्वोक्त वेष धारण करके वेदिकी प्रतिष्टा करे. । तिस का विधि यह है. ॥

वास पुष्प अक्षतों सें हाथ भरके ॥

"॥ ॐ नमः क्षेत्रदेवतायै शिवायै क्षाँ क्षीँ क्षुँ क्षौँ क्षः इह विवाहमंडपे आगच्छ २ इह बलिपरिभोग्यं गृह्ण २ भोगं देहि, सुखं देहि, संततिं देहि यशोदेहि,

ऋद्धिं, देहि, वृद्धिं देहि, बुद्धिं देहि, सर्वसमीहितं देहि, २ स्वाहा ॥ "

ऐसें पढके चारों कोणोंमें न्यारेन्यारे वास, माल्य, अक्षत, क्षेप करना; तोरणकी प्रतिष्ठाभी ऐसेंही करनी. तन्मंत्रो यथा ॥

" ॐ ह्रीं श्रीं नमो द्वारश्रिये, सर्वपूजिते, सर्व मानिते, सर्वप्रधाने, इह तोरणस्थासर्वसमीहितं देहि २ स्वाहा ॥ "॥ इतितोरणप्रतिष्टा ॥

पीछे वेदिके मध्यमें अग्निकोणेमें अग्निकुंडमें मंत्रपूर्वक अग्निको स्थापन करे. । अग्निस्थापन मंत्रो यथा ॥

" ॥ ॐ रं रां रीं रूं रौं रः नमोऽग्नये, नमो वृह द्भानवे, नमोनंततेजसे, नमोनंतवीर्याय, नमोनंतगु णाय, नमो हिरण्यरेतसे, नमछागवाहनाय, नमो हव्यासनाय, अत्र कुंडे आगच्छ २ अवतर २ तिष्ट २ स्वाहा ॥ "

समयांतरमें, देशांतरमें वा कुलांतरमें, वेद्यंतर मेंही, हस्तलेपन करते हैं. देश कुलाचारादिमें मधु पर्क प्राशनके अनंतर, वेदि; और हस्तलेपसें पहि ले परस्पर कंबायुरू, वधूवरास्फालन, वेमानयन, मणिग्रथन, स्नान, चाष्टकर्म, पर्याणकर्म्म, वस्त्रकौसुं भसूत्रांतःकर्पणप्रमुख, कर्म्म करते हैं. वे देशविशे षलोकोंसें जाण लेने. व्यवहार शास्त्रोंमें नहीं कहे

हें परंतु स्त्रीयोंको सौभाग्यप्राप्तिवास्ते, शौक आदि न होवे तिसके वास्ते, वरको वशीभूत करनेके वास्ते करते हें. ॥

पीछे युक्त हाथवाले, नारी और नरकी कटी ऊपर चढे हुए वधूवर दोनोंको, गीतवाजंत्रादि बहुत आडंवरसें दक्षिण द्वारसें प्रवेश कराके वेदिके मध्यमें लावे. । पीछे देशकुलाचारसें काष्टासनोंके ऊपर, वा वेत्रासनोंके ऊपर, वा सिंहासनके ऊपर, वा अधोमुखी शरमय खारीके ऊपर, वधूवरको पूर्व सन्मुख विठलावे. । तथा हस्तलेपमें, और वेदिकमें कुलाचारके अनुसार दसियां सहित कौरवस्त्र, वा कौसुंभवस्त्र, वा स्वभावयस्त्र वधूवरको पहिरावे पीछे गृहस्थगुरु, उत्तरसन्मुख मृगचर्म ऊपर वेठके, शमी, पिप्पल, कपित्थ (कवठ—एतवेल) कुटज (कुडची—जिस वृक्षका फल इंद्रयव होता हे,) बिल्व, आमलकके इंधनकरके अग्निको जगाके, इस मंत्रकरके घृत मधु तिल यव नाना फलोंका हवन करे ॥ मंत्रो यथा ॥

" ॥ ॐ अर्हं अग्ने प्रसन्नः, सावधानो भव, तवाय मवसरः, तदाहारयेंद्रं यमं नैरृतं वरुणं वायुं कुवेरमी शानं नागान् ब्रह्माणं लोकपालान् ग्रहांश्च सूर्यशशि कुजसौम्यवृहस्पतिकविशनिराहुकेतून् सुरांश्चअसुरना गसुपर्णविद्युदग्निद्वीपोदधिदिक्कुमारान् भुवनपतीन्

पिशाचभूतयक्षराक्षसकिन्नरकिंपुरुषमहोरगगंधर्वान् व्यंतरान् चंद्रार्कग्रहनक्षत्रतारकान् ज्योतिष्कान् सौधर्मेशान् सनत्कुमारमाहेंद्रब्रह्मलांतकशुक्रसहस्रारान तप्राणतारणाच्युतग्रैवेयकानुत्तरभवान् वैमानिकान् इंद्रसामानिकपार्षद्यत्रायस्त्रिंशल्लोकपालानीकप्रकीर्णक लोकांतिकाभियोगिकभेदभिन्नांश्चतुर्णिकायानपि स भार्यान् सायुधबलवाहनान् स्वस्वोपलक्षितचिह्नान् अप्सरसश्च परिगृहितापरिगृहितभेदभिन्नाः सस खिकाः सदासिकाः साभरणा रुचकवासिनीर्दिक्कुम रिकाश्च सर्वाः समुद्रनदीगिर्याकरवनदेवतास्तदेतान् सर्वान् सर्वाश्च इदमर्घ्यं पाद्यमाचमनीयं बलिं चरुं हुतं न्यस्तं आहूय २ स्वयं गृहाण २ स्वाहा अर्हँ ॐ॥"

पीछे अछीतरें हुत करके प्रदीप्त अग्निके हुए, गृहस्थगुरु, तहांसें उठके दक्षिणपासे स्थित हुई वधूके सन्मुख बैठके, ऐसा कहे.॥

"॥ ॐ अर्हँ इदमासनमध्यासीनौ, स्वध्यासीनौ, स्थितौ, सुस्थितौ, तदस्तु वां, सनातन संगमः, अर्हँ ॐ ॥"

ऐसें कहके कुशाग्रतीर्थोदककरके दोनोंको सींचन करे.। पीछे वधूका पितामह, वा पिता, वा चाचा, वा भाइ वा मातामह, वा कुलज्येष्ठ, धर्मानुष्टान करके उचित वेषवाला, वधूवरके आगे बैठे.। शांतिक पौष्टिकसें आरंभके विवाहसें मासपर्यंत मंगल

हैं परंतु स्त्रीयोंको सौभाग्यप्राप्तिवास्ते, शोक आदि न होवे तिसके वास्ते, वरको वशीभूत करनेके वास्ते करते हैं. ॥

पीछे युक्त हाथवाले, नारी और नरकी कटी ऊपर चढे हुए वधूवर दोनोंको, गीतवाजंत्रादि बहुत आडंबरसें दक्षिण द्वारसें प्रवेश कराके वेदिके मध्यमें लावे. । पीछे देशकुलाचारसें काष्टासनोंके ऊपर, वा वेत्रासनोंके ऊपर, वा सिंहासनके ऊपर, वा अधोमुखी शरमय खारीके ऊपर, वधूवरको पूर्व सन्मुख बिठलावे. । तथा हस्तलेपमें, और वेदिकमेंमें कुलाचारके अनुसार दसियां सहित कौरवस्त्र, वा कौसुंभवस्त्र, वा स्वभाववस्त्र वधूवरको पहिरावे पीछे गृहस्थगुरु, उत्तरसन्मुख मृगचर्म ऊपर बेठाहुआ, शमी, पिप्पल, कपित्थ (कवठ–एतबेल) कुटज (कुडची–जिस वृक्षका फल इंद्रयव होता है,) बिल्व, आमलकके इंधनकरके अग्निको जगाके, इस मंत्रकरके घृत मधु तिल यव नाना फलोंका हवन करे ॥ मंत्रो यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं अग्ने प्रसन्नः, सावधानो भव, तवाय मवसरः, तदाहारयेंद्र यमं नैरृतं वरुणं वायुं कुबेरमीशानं नागान् ब्रह्माणं लोकपालान् ग्रहांश्च सूर्यशशिकुजसौम्यबृहस्पतिकविशनिराहुकेतून् सुरांश्च असुरनागसुपर्णविद्युदग्निद्वीपोदधिदिक्कुमारान् भुवनपतीन्

पिशाचभूतयक्षराक्षसकिन्नरकिंपुरुषमहोरगगंधर्वान् व्यंतरान् चंद्रार्कग्रहनक्षत्रतारकान् ज्योतिष्कान् सौधर्म्मेशान् सनत्कुमारमाहेंद्रब्रह्मलांतकशुक्रसहस्रारान तप्राणतारणाच्युतग्रैवेयकानुत्तरभवान् वैमानिकान् इंद्रसामानिकपार्षद्यत्रायस्त्रिंशल्लोकपालानीकप्रकीर्णक लौकांतिकाभियोगिकभेदभिन्नांश्चतुर्णिकायानपि स भार्यान् सायुधवलवाहनान् स्वस्वोपलक्षितचिह्नान् अप्सरसश्च परिगृहितापरिगृहितभेदभिन्नाः सस खिकाः सदासिकाः साभरणा रुचकवासिनीर्दिक्कुम रिकाश्च सर्वाः समुद्रनदीगिर्याकरवनदेवतास्तदेतान् सर्वान् सर्वाश्च इदमर्घ्यं पाद्यमाचमनीयं वलिं चरुं हुतं न्यस्तं ग्राहय २ स्वयं गृहाण २ स्वाहा अर्हँ उँ॥"

पीछे अक्षीतरें हुत करके प्रदीप्त अग्निके हुए, गृहस्थगुरु, तहांसें उठके दक्षिणपासे स्थित हुई वधूके सन्मुख बैठके, ऐसा कहे. ॥

"॥ उँ अर्हँ इदमासनमध्यासीनौ, स्वध्यासीनौ, स्थितौ, सुस्थितौ, तदस्तु वां, सनातन संगमः, अर्हँ उँ ॥"

ऐसें कहके कुशाग्रतीर्थोदककरके दोनोंको सींचन करे.। पीछे वधूका पितामह, वा पिता, वा चाचा, वा भाइ वा मातामह, वा कुलज्येष्ठ, धर्मानुष्टान करके उचित वेषवाला, वधूवरके आगे बैठे.। शांतिक पौष्टिकसें आरंभके विवाहसें मासपर्यंत मंगल

गान, वादित्रवादन, भोजन तांबूल वस्त्र सामग्री सदैव करनेचहिये ॥ पीछे गुरु ॥

"॥ ॐ नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥"

ऐसें कहके, प्रथम अक्षतपूर्ण हाथवाला होके वधूवरके आगे ऐसा कहे. ॥

"विदितं वां गोत्रं संबंधकरणेनैव ततःप्रकाश्यतां जनाग्रतः"

जाना है तुमारा गोत्र, संबंध करनेसेंही; तिस वास्ते प्रकाश करो, लोकोंके आगे.। तब प्रथम वरके पक्षीय, अपने गोत्र, अपनी प्रवर, ज्ञाति और अपने अन्वय–वंशको प्रकाश करे,। पीछे वरकी माताके पक्षीय, गोत्र, प्रवर, ज्ञाति, और वंशको प्रकाश करे.। पीछे कन्याके पक्षीय, अपने गोत्र, प्रवर ज्ञाति, वंशको प्रकाश करे.। फिर कन्याकी माताके पक्षीय, गोत्र, प्रवर, ज्ञाति, वंशको प्रकाश करे.। पीछे गुरु. ॥

"॥ ॐ अर्हँ अमुकगोत्रीयः, इयत्प्रवरः, अमुकज्ञातिः, अमुकान्वयः, अमुकप्रपौत्रः, अमुकपौत्रः अमुकपुत्रः, अमुकगोत्रीयः, इयत्प्रवर अमुकज्ञातीयः, अमुकान्वयः, अमुकप्रदौहित्रः, अमुकदौहित्रः, अमुकः सर्ववरगुणान्वितो, वरयिता, अमुकगोत्रीया, इयत्प्रवरा, अमुकज्ञातीया, अमुकान्वया, अमुकप्रपौत्री, अमुकपौत्री, अमुकपुत्री, अमुकगोत्रीया, इयत्प्रवरा, अमुक

ज्ञातीया,अमुकान्वया, अमुकप्रदौहित्री, अमुकदौहि त्रीअमुका वर्य्या तदेतयोर्वर्य्यावरयोर्वरवर्य्ययोर्नि वि ष्णो विवाहसंबंधोस्तु शांतिरस्तु, तुष्टिरस्तु, पुष्टिरस्तु, धृतिरस्तु, बुद्धिरस्तु, धनसंतानवृद्धिरस्तु, अर्हँ ॐ ॥" ऐसें कहे ॥

पीछे गुरु, वरवधूके पाससें गंध, पुष्प, धूप, नैवेद्य करके अग्निकी पूजा करावे. । पीछे वधू लाजांजलिको अग्निमें निक्षेप करे. । पीछे फिर तैसेंही दक्षिण पासे वधू, और वामे पासे वर बैठे. । पीछे गुरु वेदमंत्र पढे.

" ॥ ॐ अर्हँ अनादिविश्वमनादिरात्मा, अनादि कालः, अनादिकर्म्म, अनादिसंबंधो, देहिनां, देहानु मतानुगतानां, क्रोधोहंकारछद्मलोभैः, संज्वलनप्रत्या ख्यानावरणाप्रत्याख्यानानंतानुबंधिभिः शब्दरूपरस गंधस्पर्शैरिछानिछापरिसंकलितैः संबंधो अनुबंधः प्रतिबंधः संयोगः सुगमः सुकृतः स्वनुष्ठितः सुनिवृत्तः सुप्राप्तः सुलब्धो द्रव्यभावविशेषेण अर्हँ ॐ॥ " यह मंत्र पढके फेर ऐसा कहे.

" ॥ तदस्तु वां सिद्धप्रत्यक्षं केवलिप्रत्यक्षं चतु र्णिकायदेवप्रत्यक्षं विवाहप्रधानाग्निप्रत्यक्षं नागप्रत्यक्षं नरनारीप्रत्यक्षं नृपप्रत्यक्षं जनप्रत्यक्षं मातृप्रत्यक्षं पितृप्रत्यक्षं मातृपक्षप्रत्यक्षं पितृपक्षप्रत्यक्षं ज्ञाति

स्वजनबंधुप्रत्ययः संबंधः सुकृतः सदनुष्ठितः सुप्रासः सुसंगतः तत्प्रदक्षिणी क्रियतां तेजोराशिर्विभावसुः॥"

ऐसें कहके तैसेंही ग्रथित अंचल वरवधू, अग्निकी प्रदक्षिणा करें. तैसें प्रदक्षिणाकरके तैसेंही पूर्वरीतिसें बैठे. लाजांजलीकी तीनों प्रदक्षिणामें आगे वधू और पीछे वर हो. दक्षिण पासे वधूका आसन, औरवामे पासे वरका आसन. ॥ इति प्रथमलाजाकर्म॥

पीछे वरवधूके आसन ऊपर बैठे हुए, वेद मंत्र पढे.

"॥ ॐ अर्हं कर्म्मास्ति मोहनीयमस्ति दीर्घस्थित्यस्ति निबिडमस्ति दुःछेद्यमस्ति अष्टाविंशतिप्रकृत्यस्ति क्रोधोस्ति मानोस्ति मायास्ति लोभोस्ति संज्वलनोस्ति प्रत्याख्यानावरणोस्ति अप्रत्याख्यानोस्ति अनंतानुबंध्यस्ति चतुश्चतुर्विधोस्ति हास्यमस्ति रतिरस्ति अरतिरस्ति भयमस्ति जुगुप्सास्ति शोकोस्ति पुंवेदोस्ति स्त्रीवेदोस्ति नपुंसकवेदोस्ति मिथ्यात्वमस्ति मिश्रमस्ति सम्यक्त्वमस्ति सप्तति कोटाकोटि सागरस्थित्यस्ति अर्हं ॐ ॥" यह वेदमंत्र पढके ऐसा कहे.

"॥ तदस्तु वां निकाचितनिबिडबद्धमोहनीयकर्मोदयकृतः स्नेहः सुकृतोस्तु सुनिष्ठितोस्तु सुसंबंधोस्तु आभवमक्षयोस्तु तत् प्रदक्षिणी क्रियतां विभावसुः ॥"

फेर भी तैसेंही अग्निकी प्रदक्षिणा करे ॥ इति द्वितीयलाजाकर्म्म ॥

चारोंही लाजामें प्रदक्षिणाके प्रारंभमें वधू, अग्निमें लाजामुष्टि प्रक्षेप करे. पीछे तिन दोनोंके तैसेंही बैठे हुए, गुरु, ऐसा वेदमंत्र पढे.

"॥ ॐ अर्हं कर्म्मास्ति, वेदनीयमस्ति, सातमस्ति, असातमस्ति, सुवेद्यं सातं, दुर्वेद्यमसातं, सुवर्गणाश्रवणं सातं, दुर्वर्गणाश्रवणमसातं, शुभपुद्गलदर्शनं सातं, दुःपुद्गलदर्शनमसातं, शुभषट्रसास्वादनं सातं, अशुभषट्रसास्वादनमसातं, शुभगंधाघ्राणं सातं, अशुभगंधाघ्राणमसातं, शुभपुद्गलस्पर्शः सातं, अशुभपुद्गलस्पर्शोऽसातं, सर्व सुखकृत् सातं, दुःखकृद सातं, अर्हं ॐ इस वेदमंत्रको पढके ऐसें कहे.

"॥ तदस्तु वां सातवेदनीयं माभूदसातवेदनीयं तत् प्रदक्षिणीक्रियतां विभावसुः ॥ "

इति पुनः अग्निको प्रदक्षिणा करके वधूवर दोनों तैसेंही बैठ जावे. ॥ इति तृतीयलाजाकर्म ॥

पीछे गुरु ऐसा वेदमंत्र पढे.

"॥ ॐ अर्हं सहजोस्ति, स्वभावोस्ति, संबंधोस्ति, प्रतिबद्धोस्ति, मोहनीयमस्ति, वेदनीयमस्ति, नामास्ति, गोत्रमस्ति, आयुरस्ति, हेतुरस्ति, आश्रवबद्धमस्ति, क्रियाबद्धमस्ति, कायबद्धमस्ति, सांसारिकसंबंधः अर्हं ॐ ॥

ऐसा वेदमंत्र पढके, कन्याके पिताके, चाचेके, भाइके वा कुलज्येष्टके, हाथको तिलयवकुशदूर्वासें युक्त जलसें पूरके, ऐसें कहे.

"॥ अद्य अमुकसंवत्सरे, अमुकायने, अमुकऋतौ, अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ, अमुकवारे, अमुकनक्षत्रे, अमुकयोगे, अमुककरणे, अमुकमुहूर्त्ते, पूर्वकर्मसंबंधानुबद्धवस्त्रगंधमाल्यालंकृतां सुवर्णरूप्यमणि भूषण भूषितां ददात्ययं प्रतिगृह्णीष्व ॥"

ऐसें कहके वधूवरके योजित हाथमें जलक्षेप करे। तब वर कहे. "प्रतिगृह्णामि" तदनंतर गुरु कहे.

"सुप्रतिगृहीतास्तु, शांतिरस्तु, पुष्टिरस्तु, ऋद्धिरस्तु, वृद्धिरस्तु, धनसंतानवृद्धिरस्तु, ॥"

पीछे प्रथम तीन लाजामें कन्याके हाथ ऊपर थे अब कन्याके हाथको नीचे करे, और वरके हाथको ऊपर करे, पीछे वरवधूको आसनसें उठाकर वरको आगे करे, और वधूको पीछे करे. । पीछे लाजाकी मुष्टि अग्निमें प्रक्षेप करकेगुरु ऐसें कहे. "प्रदक्षिणीक्रियतां विभावसुः" वर वधूको प्रदक्षिणा करते हुए, कन्याका पिता, यावत् कन्याका कुलज्येष्ठ, वरवधूके देनेयोग्य वस्त्र, आभरण, स्वर्ण, रूप्य, रत्न, ताम्र, कांश्य, भूमि, निष्क्रय, हाथी, घोडा, दासी, गौ, बैल, पल्यंक, तूलिका, उत्सीर्षक, दीप, शस्त्र, पाकके भांडे, आदि सर्व वस्तुको वेदिमें ल्यावे. । और भी तिसके भाइ, संबंधी, मित्रादि, स्वसंपदाके अनुसारसें देने योग्य वस्तुयें वेदिमें ल्यावे. । पीछे प्रदक्षिणाके अंतमें वरवधू, तैसेंही आसन

ऊपर बैठें. नवरं इतना विशेष है कि, चतुर्थ लाजा के अनंतर वरका आसन दक्षिण पासे, और वधू, का आसन वामे पासे करणा. । पीछे गुरु, कुश दूर्वा अक्षत वासकरके हस्त पूर्ण हुआ थका, ऐसें कहे.

" ॥शक्रादिदेवकोटिपरिवृतो ज्ञोग्यफलकर्मजोगाय संसारिजीवव्यवहारमार्गसंदर्शनाय, सुनंदासुमंगले पर्यणैपीत्,ज्ञातमज्ञातं वा तदनुष्ठानमनुष्ठितमस्तु"

ऐसें कहके वास, दूर्वा, अक्षत, कुशको वरवधूके मस्तक ऊपर क्षेप करे. । पीछे गुरुके कहनेसें वधूका पिता, जल, यव, तिलका तेल हाथमें लेके, ऐसें कहे. सुदायंददामि, प्रतिग्रहाण तव वर कहे "प्रतिगृह्णामि प्रतिगृहीतं परिगृहीतं" गुरु कहे "सुगृहीतमस्तु सुपरिगृहीतमस्तु" पुनः तैसेंह। वस्त्र, ज्रूषण, हस्ति, अश्वादि दाय, देनेमें वधूके पिताका, और वरका यही वाक्य, और यही विधि है.। पीछे सर्व वस्तुके दीए हुए गुरु ऐसें कहे.

" ॥ वधूवरौवां, पूर्वकर्म्मानुबंधेन, निविडेन, निकाचितबद्धेन, अनुपवर्त्तनीयेन, अपातनीयेन, अनुपायेन, अश्लथेन, अवश्यज्ञोग्येन, विवाहः प्रतिबद्धो बजूव, तदस्त्वखंडितोऽक्षयोऽव्ययो, निरपायो, निर्व्याबाधः, सुखदोस्तु, शांतिरस्तु, पुष्टिरस्तु,ऋद्धिरस्तु,वृद्धिरस्तु, धनसंतान वृद्धिरस्तु ॥ "

ऐसा कहके तीर्थोदकोंकरके कुशाग्रसें सिंचन

करे. । फेर गुरु तैसेंही वधूवरको उठाके मातृघरमें ले जावे, तहां ले जाके वधूवरको ऐसें कहे.

"॥ अनुष्ठितो वां, विवाहो, वत्सौ, सस्नेहौ सभो गौ, सायुषौ, सधर्मौ, समदुःखसुखौ, समशत्रुमित्रौ, समगुणदोषौ, समवाङ्मनःकायौ, समाचारौ, सम गुणौ, भवतां ॥"

पीछे कन्याका पिता, करमोचनकेवास्ते गुरुप्रतें कहे. । तब गुरु ऐसा वेदमंत्र पढे.

"॥ ॐ अर्हं जीवत्वं कर्मणा बद्धः, ज्ञानावर णेन बद्धः, दर्शनावरणेन बद्धः, वेदनीयेन बद्धः, मोह नीयेन बद्धः, आयुषा बद्धः, नाम्ना बद्धः, गोत्रेण बद्धः, अंतरायेण बद्धः, प्रकृत्या बद्धः, स्थित्या बद्धः, रसेन बद्धः, प्रदेशेन बद्धः, तदस्तु ते मोक्षो गुणस्थानारो हक्रमेण अर्हं ॐ ॥"

इस वेदमंत्रको पढके फेर ऐसें कहे.

मुक्तयोः करयोरस्तु वां स्नेहसंबंधोऽखंडितः ॥"

ऐसें कहके करमोचन करे. । कन्याका पिता कर मोचनपर्वमें जामातृ (जमाइ) के मांगेप्रमाण, स्वसं पत्तिके अनुसार बहुत वस्तु देवे. । दानविधि, पूर्व मंत्रसेंही जानना. । पीछे मातृघरसें उठके, फेर वेदिघरमें आवें. पीछे गुरु, आसनऊपर बैठे दोनोंको ऐसें कहे.

"॥ वृत्तम् । पूर्वं युगादिभगवान् विधिनैव येन,

विश्वस्य कार्यकृतये किल पर्यणैषीत् ॥ नार्याद्वयं तद मुना विधिनास्तु युग्म,मेतत्सुकामपरिनोगफला नुवंधि ॥ १ ॥ "

ऐसें कहके पूर्वोक्त विधिसें अंचलमोचन करके "वत्सौ लब्धविषयौ नवतां " ऐसें गुरुअनुज्ञात दोनो दंपती—स्त्रीनर्त्ता, विविध विलासिनीयोंके गणसें वेष्टित, शृंगारगृहमें प्रवेश करें. । तहां पूर्वस्थापित मदनकी कुलवृद्धानुसार पूजा करे. । पीछे तहां वधूवरको समहीकालमें क्षीरान्ननोजन कराना. पीछे यथायुक्तिकरके शयन गृहमें जावे. । *

पीछे तिसही आगमनरीतिकरके उत्सवसहित अपने घरको जावे. । पीछे वरके मातापिता, वर को निंरुंछनमंगलविधी स्वदेशकुलाचारकरके करे. । कंकणवंधन, कंकणमोचन, द्यूतक्रीडा, वेणीग्रंथनादि, सर्व कर्म नी, तिस २ देशकुलाचारकरके करणे चाहिये. । विवाहसें पहिलें वधूवर दोनोंके पक्षमें नोजन देना. । तदनंतर धूलिनक्त, जन्यनक्त, आदि देशकुलाचारसें करणे. । पीछे सात दिनके अनंतर वरवधू विसर्जन करना, तिसका विधि यह है. । सात दिनतक विविध नक्तिसें पूजित जमाइको,

* इस कथनसें यो यही सिद्ध होता है कि यौवनप्राप्तोंकाही विवाह होना चाहिये. क्योंकि उसदि समय कामक्रीडा करनेका विधि इस ग्रंथमें लिखा है.

पूर्वोक्त रीतिसें अंचलग्रंथन करके अनेक वस्तुदान पूर्वक तिसही आडंबरसें स्वगृहको पहुंचावे. । पीछे सात रात्रिपर्यंत, वा मासपर्यंत, वा छ मासपर्यंत, वा वर्षपर्यंत स्वकुलसंपत्तिदेशाचारानुसार महोत्सव करना. सात रात्रिके अनंतर, वा मासअनंतर, कुलाचारानुसारकरके कन्याके पक्षमें पूर्वोक्त रीतिकरके मातृविसर्जन करना.—गणपतिमदनादिविसर्जन विधि लोकमें प्रसिद्ध है.—और वरपक्षमें कुलकर विसर्जनविधि लिखते हैं.। कुलकरस्थापनानंतर, नित्य कुलकरकी पूजा करनी. । विसर्जनकालमे कुलकरोंका पूजन करके, गुरु पूर्ववत् "ॐ अमुककुलकराय" इत्यादि संपूर्णमंत्र पढके "पुनरागमनाय स्वाहा" ऐसें सर्वकुलकरोंको विसर्जन करे. ॥ पीछे यह पढे.

"आज्ञाहीनं क्रियाहीनं मंत्रहीनं च यत्कृतं ॥
तत्सर्वं कृपया देव क्षमस्व परमेश्वर ॥ १ ॥"

इतिकुलकरविसर्जनविधिः ॥

पीछे मंडलीपूजा, गुरुपूजा, वासक्षेपादि पूर्ववत्.। साधूओंको वस्त्र पात्र देना.। ज्ञानपूजा करणी.। जैन ब्राह्मणोंको याचकोकों अपर मागनेवालोंको यथासंपत्तिसें दान करणा.।

तथा देशकुलसमयांतरमें विवाहलग्नके प्राप्त हुए, वरको श्वशुरके घरको प्राप्त हुए, षट् (६) आचार करते हैं. प्रथम अंगणमें आसन देना.। श्वशुर कहे

"विष्टरं प्रतिगृह्हाण" तव वर कहे "ॐ प्रतिगृ ह्लामि" ऐसें कहके आसन ऊपर वैठे ॥ १ ॥ पीछे श्वशुर वरके पग प्रक्षालन करे ॥ २ ॥ पीछे दहि चंदन अक्षत दूर्वा कुश पुष्प श्वेतसरसों और जल करके श्वशुर जमाइको अर्घ देवे ॥ ३ ॥ पीछे आच मन देवे ॥ ४ ॥ पीछे गंधअक्षतसें तिलक करे॥५॥ पीछे वरको मधुपर्क प्राशन करावे ॥ ६ ॥ पीछे गृहके अंदर वधूवरका परस्पर दृष्टिसंयोग और परस्पर दोनोंका नामग्रहण, शेषं पूर्ववत्. ॥

इति चतुर्दशमः विवाह संस्कारः समाप्तः ॥

अथ पंचदशम व्रतारोप संस्कारः प्रारभ्यते ।

इहां जैनमतमें गर्भा धानसें लेके विवाहपर्यंत चतुर्दश १४ संस्कारोंकरके संस्कृत भी पुरुष, व्रतारो पसंस्कारविना इस जन्ममें प्रशंसा पात्र नही होता है. और परलोकमें आर्यदेशादिभावपवित्रित मनुष्य जन्म स्वर्गमोक्षादिका भाजन नही होता है. इस वास्ते व्रतारोपही, मनुष्योंको परमसंस्कार है. यत उक्तमागमे ।

"वंभणो खत्तिउं वावि, वेसो सुद्दो तहेवय ॥
पयई वादि धम्मेण, जुत्तो मुक्खस्स भायणं॥१॥"

अर्थः—ब्राह्मण, वा क्षत्रिय, वा वैश्य, वा शूद्र, धर्मसें युक्त हुआ, मोक्षका भाजन होता है. ॥ १ ॥

पूर्वोक्त रीतिसें अंचलग्रंथन करके अनेक वस्तुदान पूर्वक तिसही आडंबरसें स्वगृहको पहुंचावे. । पीछे सात रात्रिपर्यंत, वा मासपर्यंत, वा ठ मासपर्यंत, वा वर्षपर्यंत स्वकुलसंपत्तिदेशाचारानुसार महोत्सव करना. सात रात्रिके अनंतर, वा मासअनंतर, कुलाचारानुसारकरके कन्याके पक्षमें पूर्वोक्त रीतिकरके मातृविसर्जन करना.—गणपतिमदनादिविसर्जन विधि लोकमें प्रसिद्ध है.—और वरपक्षमें कुलकर विसर्जनविधि लिखते हैं.। कुलकरस्थापनानंतर, नित्य कुलकरकी पूजा करनी. । विसर्जनकालमे कुलकरोंका पूजन करके, गुरु पूर्ववत् " ॐ अमुककुलकराय " इत्यादि संपूर्णमंत्र पढके " पुनरागमनाय स्वाहा " ऐसें सर्वकुलकरोंको विसर्जन करे. ॥ पीछे यह पढे.

" आज्ञाहीनं क्रियाहीनं मंत्रहीनं च यत्कृतं ॥
तत्सर्वं कृपया देव क्षमस्व परमेश्वर ॥ १ ॥ "

इतिकुलकरविसर्जनविधिः ॥

पीछे मंडलीपूजा, गुरुपूजा, वासक्षेपादि पूर्ववत्.। साधूओंको वस्त्र पात्र देना.। ज्ञानपूजा करणी.। जैन ब्राह्मणोंको याचकोंको अपर मागनेवालोंको यथासंपत्तिसें दान करणा.।

तथा देशकुलसमयांतरमें विवाहलग्नके प्राप्त हुए, वरको श्वशुरके घरको प्राप्त हुए, यह (६) आचार करते हैं. प्रथम अंगणमें आसन देना.। श्वशुर कहे

"विष्टरं प्रतिगृह्याण" तब वर कहे "ॐ प्रतिगृ ह्लामि" ऐसें कहके आसन ऊपर बैठे ॥ १ ॥ पीछे श्वशुर वरके पग प्रक्षालन करे ॥ २ ॥ पीछे दहि चंदन अक्षत दूर्वा कुश पुष्प श्वेतसरसों और जल करके श्वशुर जमाइको अर्घ देवे ॥ ३ ॥ पीछे आच मन देवे ॥ ४ ॥ पीछे गंधअक्षतसें तिलक करे ॥५॥ पीछे वरको मधुपर्क प्राशन करावे ॥ ६ ॥ पीछे गृहके अंदर वधूवरका परस्पर दृष्टिसंयोग और परस्पर दोनोंका नामग्रहण, शेषं पूर्ववत्. ॥

इति चतुर्दशमः विवाह संस्कारः समाप्तः ॥

अथ पंचदशम व्रतारोप संस्कारः प्रारभ्यते ।

इहां जैनमतमें गर्भा धानसें लेके विवाहपर्यंत चतुर्दश १४ संस्कारोंकरके संस्कृत भी पुरुष, व्रतारो पसंस्कारविना इस जन्ममें प्रशंसा पात्र नही होता है. और परलोकमें आर्यदेशादिभावपवित्रित मनुष्य जन्म स्वर्गमोक्षादिका भाजन नही होता है. इस वास्ते व्रतारोपही, मनुष्योंको परमसंस्कार है. यत उक्तमागमे ।

"बंभणो खत्तिर्ज वावि, वेसो सुद्दो तहेवय ॥
पयई वादि धम्मेण, जुत्तो मुक्खस्स भायणं॥१॥"

अर्थः—ब्राह्मण, वा क्षत्रिय, वा वैश्य,
धर्मसें युक्त हुआ, मोक्षका भाजन

"विष्टरं प्रतिगृह्यताम्" तब वर कहे "ॐ प्रतिगृह्णामि" ऐसें कहके आसन ऊपर बैठे ॥ १ ॥ पीछे श्वशुर वरके पग प्रक्षालन करे ॥ २ ॥ पीछे दहि चंदन अक्षत दूर्वा कुश पुष्प श्वेतसरसों और जल करके श्वशुर जमाइको अर्घ देवे ॥ ३ ॥ पीछे आचमन देवे ॥ ४ ॥ पीछे गंधअक्षतसें तिलक करे ॥५॥ पीछे वरको मधुपर्क प्राशन करावे ॥ ६ ॥ पीछे गृहके अंदर वधूवरका परस्पर दृष्टिसंयोग और परस्पर दोनोंका नाम ... शेषं पूर्ववत् ॥

इति चर आचारादि ... संस्कारः समाप्तः ॥

...य १० द्वादश १२ त...

अथ ...स गुण आचार्यके हैं. । ...रः प्रारभ्यते ।

अथवा संविग्न १, मध्यस्थ २, शांत ... विवाहपर्यंत चत्ुलस्वभाववाला ४, सरल ५, पंडित ६, ... व्रतारो..., ...गीतार्थ ८, कृतयोगी ९, श्रोताके भावको जानने वाला १०, व्याख्यानादिलब्धिसंपन्न ११, उपदेशदेनेमें निपुण १२, आदेयवचन १३, मतिमान् १४, विज्ञानी १५, निरुपपाति १६, नैमित्तिक १७, शरीरका बलिष्ठ १८, उपकारी १९, धारणाशक्तिवाला २०, बहुत कुछ जिसने देखा २१, नैगमादि नयमतमें निपुण २२ ...ला २३, अच्छे मधुर गंभीर ... करणेमें रक्त २५, सुंदर शरीर ... भली प्रतिभावाला २७, वादियोंको

जीतनेवाला २८, परिपदादिको आनंदकारक २९, शुचि–पवित्र ३०, गंभीर ३१, अनुवर्त्ती ३२, अंगीकार करेका पालनेवाला ३३, स्थिरचित्तवाला ३४, धीर ३५, उचितका जाननेवाला ३६, ये पूर्वोक्त ३६, गुण आचार्यके सूत्रमें कहे हैं. ॥

ऐसें पितापरंपरायसें माने गुरुके प्राप्त हुए, वा, तिसके अभावमें पूर्वोक्त गुणयुक्त अन्यगच्छीय गुरुके प्राप्त हुए, गृहस्थको व्रतारोपणविधि योग्य है, सो विधि यह है. ॥ चतुर्दश संस्कारोंकरके संस्कृत ऐसा गृहस्थी गृहस्थधर्मको अंगीकार करने योग्य होता है. ।

कहा है की.

अक्षुद्र १, रूपवान् २, प्रकृतिसौम्य ३, लोकप्रिय ४, अक्रूरचित्त ५, भीरु ६, अशठ ७, सुदाक्षिण्य ८, लज्जालु ९, दयालु १० मध्यस्थ सोमदृष्टि ११, गुणरागी १२, सत्कथी १३, सुपक्षयुक्त १४, सुदीर्घदर्शी १५, विशेषज्ञ १६, वृद्धानुग १७, विनीत १८, कृतज्ञ १९, परहितार्थकारी २०, और लब्धलक्ष २१ इकीस गुणोंवाला श्रावक धर्मरत्नके योग्य होता है; अर्थात् इकीस गुण जिस जीवमें होवे, अथवा प्रायः नवीन उपार्जन करे, तिस जीवमें उत्कृष्ट योग्यता माननी. और थोडेसें थोडे इकीस गुणोंमेंसें चाहे २ दश गुण जीवमें होवे, तिसको जघन्य योग्य

तावाला जानना, ११–१२–१३–१४–१५–१६–१७–१८–१९–२० शेप गुणवालेको मध्यमयोग्यतावाला जानना. इन इकीस गुणोंका विस्तारसहित वर्णन अज्ञानतिमिरभास्करके द्वितीय खंडके ४६ पृष्ठसें लेके ७३ पृष्ठपर्यंतहे उहांसें देख लेना.

योगशास्त्रमे श्रीहेमचंद्राचार्यनेंभी एसाहि कहाहे की.

न्यायसें धन उपार्जन करनेवाला; शिष्टाचारकी प्रशंसा करनेवाला, जिनका कुलशील अपने समान होवे, ऐसे अन्य गोत्रवालेके साथ विवाह किया है जिसने; पापसें मरनेवाला, प्रसिद्ध देशाचारको कर नेवाला, अर्थात् देशाचारका उल्लंघन नही करनेवाला, किसी जगे भी अवर्णवाद नही बोलनेवाला, राजा दिकोंमें विशेषसें अवर्णवाद वर्जनेवाला; । अतिप्र कट, वा अति गुप्त स्थानमें नही रहनेवाला, अछा पाडोसी होवे तिस घरमें रहनेवाला, जिस मकानके अनेक आनेजानेके रस्ते होवें तिस घरको वर्जने वालों; । सदाचारोंसें संग करनेवाला, मातापिताकी पूजा भक्ति करनेवाला, उपद्रवसंयुक्त स्थानको त्यागनेवाला, जगत्में जो कर्म निंदनीक होवे तिसमें प्रवृत्त नही होनेवाला; । अपनी आमदनीअनुसार खर्च करनेवाला, अपने धनके अनुसार वेष रखने वाला; बुद्धिके आठ गुणोंसें संयुक्त निरंतर धर्मो पदेश श्रवण करनेवाला; अजीर्णमें भोजनका त्यागी

वखतसर साम्यतासें जोजन करनेवाला, एक दूसरेकी हानी न होवे इस रीतिसें धर्म अर्थ कामको सेवने वाला; । यथायोग्य अतिथि साधु और दीनकी प्रति पत्ति करनेवाला, सदा आग्रहरहित, गुणोंका पक्ष पाती; । देशकालविरुद्धचर्या त्यागनेवाला, । कोइ जी कार्य करनेमें अपना बलाबल जाननेवाला, जे पांच महाव्रतमें स्थित होवे और ज्ञानवृद्ध होवे तिनकी पूजा जक्ति करनेवाला, पोषणेयोग्यका पोषण करने वाला, । दीर्घदर्शी, विशेषज्ञ, कृतज्ञ, लोकवल्लज, ल ज्जालु, दयालु, सौम्य, परोपकार करणेमें समर्थ, काम, क्रोध, लोज, मान, मद, हर्ष, इन षट ६ अंत रंग वैरियोंके त्याग करनेमें तत्पर, पांच इंड्रियोंके समूहको वश करनेवाला, ऐसा पुरुष गृहस्थधर्मके वास्ते कल्पता है ॥ १० ॥

ऐसे पुरुषको व्रतारोप करना चहिये । प्रायःकरके व्रतारोपमें गुरु शिष्यके वचन प्राकृत जाषामें होते हैं, क्यों कि गर्जाधानादि विवाहपर्यंत संस्कारोंमें प्रायः करके गुरुकेही वचन है, शिष्यके नहीं और गुरु प्रायः शास्त्रविद् होते हैं, इसवास्ते संस्कृतही बोलते है. । इहां व्रतारोपमें बाल, स्त्री, मूर्ख शिष्यों का क्षमाश्रमणदानपूर्वक वचनाधिकार है, तिस वास्ते तिनको संस्कृत उच्चार असामर्थ्य होनेसें प्राकृत वाक्य है. तिसकी साहचर्यतासें तिसके

प्रबोधवास्ते, गुरुके वचन नी, प्राकृतही है. ॥ यत उक्तमागमे ॥

" ॥मुत्तूण दिठिवायं कालियउकालियंगसिद्धंतं ॥
थीबालवायणठ्ठंपाइयमुइयं जिणवरेहिं ॥ १ ॥"

अर्थः—दृष्टिवादको वर्जके कालिक उत्कालिक अंगसिद्धांतको स्त्रीबालकोंके वाचनार्थ जिनवरोंने प्राकृत कथन करे है. ॥ यथाच ॥

बालस्त्रीवृद्धमूर्खाणां नृणां चारित्रकांक्षिणाम् ॥
अनुग्रहाय तत्त्वज्ञैः सिद्धांतः प्राकृतः कृतः ॥ १ ॥

और दृष्टिवाद बारमा अंग, परिकर्म १ सूत्र २ पूर्वानुयोग ३, पूर्वगत ४, चूलिकारूप ५ पंचविध संस्कृतमेंही होता है, सो बालस्त्रीमूर्खको पठनीय नही है. संसारपारगामी तत्त्वउपन्यासके वेत्ता गीतार्थोंकोंही पठनीय है. शेष एकादशांग कालिक उत्कालिकादिशास्त्र योगवाहि साधु साध्वी और संयमी बालकोंके पढने योग्य हैं. इसवास्तेही अरिहंत नगवंतोंनें एकादशांगादि शास्त्र प्राकृतमें करे हैं. तिसवास्ते व्रतारोपमें नी, गृहस्थ बाल स्त्री मूर्ख जनोके उपकारार्थ और, तैसें यतियोंकेनी, वचन, प्राकृतमें कहे है. ॥

अथ मृदु, ध्रुव, चर, क्षिप्र नक्षत्रोंमें प्रथम निक्षा, तप, नंदी, आलोचनादि कार्य करणे शुन्न है. और मंगल, शनि, विना सर्व वारोंमें. । वर्षे,

मास, दिन, नक्षत्र, लग्न शुद्धिके हुए, विवाहदीक्षा प्रतिष्ठावत्, शुन्न लग्नमें गुरु तिसके घरमें शांतिक पौष्टिक करके, फेर देवघरमें, शुन्न आश्रममें, अन्य त्र, वा, यथाकल्पित समवसरणको स्थापन करे. । पीछे स्नान करके स्वघरमें महोत्सवसहित आये हुए श्रावकको पूर्वाजिमुख गुरु, अपने वामे पासें स्थापके ऐसें कहे—कैसे श्रावकको—सकक्ष श्वेत वस्त्र और श्वेत उत्तरासंग धारण किया है जिसने, तथा मुखवस्त्रिका हाथमें धारण करी है जिसने, तथा जिसकी चोटी बांधी हुई है, चंदनका मस्तकमें तिलक करा है जिसने, स्ववर्णानुसार जिनोपवीत वा उत्तरीय, वा उत्तरासंग धारण किया है जिसने ऐसे श्रावकको—क्या कहे सो कहते हैं ।

"सम्मत्तंमि उलस्के, थइयाइं नरयतिरियदाराइं ॥
दिवाणि माणुसाणि अ, मुरकसुहाइं सहीणाइं ॥ १ ॥"

अर्थः—सम्यक्त्वके लाभ हुए, नरकतिर्यंचगतिके द्वार ढांके है, और देवता मनुष्य मोक्षके सुख स्वाधीन है. । पीछे गुरुकी आज्ञासें श्राद्धजन, नालि केर अक्षत सुपारीसें पूर्ण हस्त करके परमेष्ठिमंत्र पढता हुआ समवसरणको तीन प्रदक्षिणा करे. । पीछे गुरुके पास आयकर, गुरु श्राद्ध दोनोंही इर्या पथिकीपडिक्कमे. । पीछे आसन उपर बैठे गुरुके आगे, श्राद्धजन ऐसें कहे ॥

"इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मछएण वंदामि ॥ नगवन् इच्छाकारेण तुम्हे अह्मं सम्मत्ताइतिगारोवणिअंनंदिकड्ढावणियं वासक्खेवं करेह ॥"

पीछे गुरु, वासांको, सूरिमंत्रसें, वा, गणिविद्या अर्थात् वर्द्धमान विद्यासें, अनिमंत्रके, परमेष्ठि और कामधेनु दोनों मुद्राकरके, पूर्वाभिमुख खमा होके, वामे पासे रहे श्रावकके शिरमें निक्षेप करे. । तिसके मस्तकके ऊपर हाथ रखके, गणधर विद्यासें रक्षा करे. गुरु आसनऊपर बैठ जावे, और श्राद्ध पूर्ववत् समवसरणको प्रदक्षिणा करके, गुरु आगे क्षमाश्रमण देके कहे.

"॥ इच्छाकारेण तुम्हे अह्मं सम्मत्ताइतिगारोवणिअं चेइआइं वंदावहे ॥"

पीछे गुरु और श्रावक दोनो, चार वर्द्धमानस्तुतियों करके चैत्यवंदन करें. । जो छंदसें वर्द्धमान होवे, और चरम जिनकी प्रथम स्तुतिवाली होवे, तिनको वर्द्धमानस्तुति कहते हे. । पीछे चारस्तुतिके अंतमें "श्रीशांतिदेवाराधनार्थं करेमि कासग्गं वंदणवत्तियाए पूअणवत्तियाए सक्कारव० स० जावअप्पाणं वोसिरामि" सत्ताइस उह्वासप्रमाण अर्थात् 'सागरवरगंभीरा' तक चतुर्विंशतिस्तव चिंतवन करे. । पीछे 'नमो अरिहंताणं' कहके पारे. । पार

केहे ' नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ' यह कहके स्तुति पढे । सोलिखतेहैं ।

" श्रीमते शांतिनाथाय, नमः शांतिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥१॥" अथवा " शांतिः शांतिकरः, श्रीमान् शांतिं दिशतु मे गुरुः॥ शांतिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥१॥" पीछे

"॥ श्रुतदेवताराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्न त्थ उससिएणंयावत्अप्पाणं वोसिरामि ॥ "

कायोत्सर्गमें एक नवकार चिंतन करे. पीछे 'नमो अरिहंताणं ' कहके पारे, पारके ' नमोर्हत् कहके स्तुति ॥ यथा ॥

' ॥ सुअदेवया भगवई, नाणावरणीयकम्मसंघायं ॥, तेसिं खवउ सययं, जेसिं सुयसारे भत्ती ॥ १ ॥ " अथवा

" असितसुरभिगंधालब्धभृंगी कुरंगं, मुखशशि नमजस्रं बिभ्रति या बिभर्ति ॥ विकचकमलमुच्चैः सास्त्वचिंत्यप्रभावा, सकलसुखविधात्री प्राणभाजां श्रुतांगी ॥ १ ॥ "

" क्षेत्रदेवताराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थ उससिएणंयावतअप्पाणं वोसिरामि ॥ "

कायोत्सर्गमें एक नमस्कार चिंतन करे, पीछे 'नमो अरिहंताणं ' कहके पारे, पारके ' नमोर्ह कहके थूई पढे ॥

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया ॥.
सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ १ ॥

"॥ भुवनदेवताराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्न त्थ उससिएणं–यावत्–अप्पाणं वोसिरामि ॥"

कायोत्सर्गमें एक नमस्कार चिंतन करे, पीछे 'नमोअरिहंताणं' कहके पारे, पारके 'नमोर्हत् कह के स्तुति पढे. ॥

"ज्ञानादिगुणयुक्तानां, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानां ॥
विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥१॥"

"शासनदेवताराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्न त्थ०" कायोत्सर्गमें एक नमस्कार चिंतन करे, पीछे 'नमोअरिहंताणं' कहके पारे, पारके 'नमोर्हत्सि द्धा०' कहके स्तुति पढे.

"या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी ॥
साभिप्रेतसमृद्ध्यर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥ १ ॥"

"समस्तवैयावृत्त्यकराराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थ०" कायोत्सर्गमें एक नमस्कार चिंतन करे, पीछे 'नमो अरिहंताणं' कहके पारे, पारके 'नमो र्हत्सिद्धा' कहके स्तुति पढे.

"ये ये जिनवचनरता वैयावृत्त्योद्यताश्च ये नित्यम् ॥
ते सर्वे शांतिकरा भवंतु सर्वाणुयक्षाद्याः ॥ १ ॥"

'नमो अरिहंताणं' कहके बैठके "नमुथ्थुणं०

जावंतिचेइयाइं० " और " अर्हणादिस्तोत्र " पढे. सो लिखते हे.

अरिहाण नमो पूअं, अरहंताणं रहस्स रहिआणं ॥
पयओ परमिट्ठिणं, अरुहंताणं धुअरयाणं ॥ १ ॥
निद्दड्ढ अट्ठकम्मिंधणाण, वरनाणदंसणधराणं ॥
मुत्ताण नमो सिद्धाणं, परमपरमिट्ठिभूयाणं ॥ २ ॥
आयारधराण नमो, पंचविहायारसुट्ठियाणं च ॥
नाणीणायरियाणं, आयारुवएसयाण सया ॥ ३ ॥
बारसविहं अपूव्वं, दिंताण सुअं नमो सुअहराणं ॥
सययमुवज्झायाणं, सज्झायज्झाणजुत्ताणं ॥ ४ ॥
सव्वेसिं साहूणं, नमो तिगुत्ताण सव्वलोएवि ॥
तवनियमनाणदंसण, जुत्ताणं बंभयारीणं ॥ ५ ॥
एसो परमिट्ठीणं पंचन्हवि भावओ नमुक्कारो ॥
सव्वस्स कीरमाणो, पावस्स पणासणो होइ ॥ ६ ॥
भुवणेवि मंगलाणं, मणुयासुरअमरखयरमहियाणं ॥
सव्वेसिमिमो पढमो, होइ महामंगलं पढमं ॥ ७ ॥
चत्तारि मंगलं मे, हुंतु अरहा तहेव सिद्धा य ॥
साहू य सव्वकालं, धम्मो य तिलोयमंगल्लो ॥ ८ ॥
चत्तारि चेव ससुरा, सुरस्स लोगस्स उत्तमा हुंति ॥
अरिहंत सिद्ध साहू, धम्मो जिणदेसियमुयारो ॥९॥
चत्तारिवि अरिहंते, सिद्धे साहू तहेव धम्मं च ॥
संसारघोररक्कस, भएण सरणं पवज्जामि ॥ १० ॥
अह अरहओ भगवओ, महइ महा वद्धमाणसामिस्स

पणयसुरेसरसेहर, वियलिकुसुमुच्चयकमस्स ॥ ११ ॥
जस्स वरधम्मचक्कं, दिणयरबिंबव्व नासुरच्छायं ॥
तेएण पज्जलंतं, गच्छइ पुरओ जिणंदस्स ॥ १२ ॥
आयासं पायालं, सयलं महिमंडलं पयासंतं ॥
मिच्छत्तमोहतिमिरं, हरेइ तिएहंपि लोयाणं ॥ १३ ॥
सयलंमिवि जियलोए, चिंतियमित्तो करेइ सत्ताणं ॥
रक्खं रक्खसडाइणि, पिसायगहनूअजक्खाणं ॥ १४ ॥
लहइ विवाए वाए, ववहारे नावओ सरंतो अ ॥
जूए रणे अ रायं, गणे अ विजयं विसुद्धप्पा ॥ १५ ॥
पच्चूसपओसेसुं, सययं नव्वो जणो सुहज्झाणो ॥
एअं झाएमाणो, मुक्खं पइ साहगो होइ ॥ १६ ॥
वेआलरुद्दाणव, नरिंदकोहंडिरेवईणं च ॥
सव्वेसिं सत्ताणं, पुरिसो अपराजिओ होइ ॥ १७ ॥
विज्जुव पज्जलंती, सवेसुवि अक्खरेसु मत्ताओ ॥
पंचनमुक्कारपए, इक्किक्के उवरिमा जाव ॥ १८ ॥
ससिधवलसलिलनिम्मल,आयरसहं च वन्नियं बिंदुं॥
जोयणसहप्पमाणं, जालासयसहस्सदिप्पंतं ॥ १९ ॥
सोलससु अक्खरेसु, इक्किक्कं अक्खरं जगज्जोअं ॥
नवसयसहस्समहणो, जंमि ठिओ पंच नवकारो॥२०॥
जो गुणइ हु इक्कमणो, नविओ नावेण पंच नवकारं ॥
सो गछइ सिवलोयं, उज्जोअंतो दसदिसाओ ॥२१॥
तवनियमसंजमरहो, पंचनमोकारसारहिनिउत्तो ॥
नाणतुरंगमजुत्तो, नेइ फुडं परमनिव्वाणं ॥ २२ ॥

सुरूप्पा सुरूमणा, पंचसु समिईसु संजय तिगुत्तो ॥
जे तम्मि रहे लग्गा, सिग्घं गछंति सिवलोअं ॥२३॥
थंभेइ जलं जलणं, चिंतियमित्तोवि पंच नवकारो ॥
अरिमारिचोरराउल, घोरुवसग्गं पणासेइ ॥ २४ ॥
अठेवय अठसयं, अठसहस्सं च अठकोमीओ ॥
रक्खंतु मेसरीरं, देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥ २५ ॥
नमो अरहंताणं, तिलोयपुज्जो अ संथुओ जयवं ॥
अमरनररायमहिओ,अणाइनिहणो सिवं दिसउ॥२६॥
निठ्ठा विअ अठ कम्मो,सिवसुइभूओ निरंजणो सिद्धो
अमर नरराय महिओ,अणाइ निहणो सिवं दिसउ।२७
सवे पओसमछर, आहिअहिआ पणासमुवयंति ॥
डुगुणीकयधणुसऊं, सोउपि महाधणुसहस्सं ॥ २८॥
इय तिहुअणप्पमाणं, सोलसपत्तं जलंतदित्तसरं ॥
अठारअरूवलयं, पंचनमुक्कारचक्कमिणं ॥ २९ ॥
सयलुज्जोइअजुवणं, निद्दाविअसेससत्तुसंघायं ॥
नासिअमिछत्ततमं, विअलियमोहं गयतमोहं ॥३०॥
एयस्स य मज्झठो, सम्मदिठीवि सुरूचारित्ती ॥
नाणी पवयणभत्तो, गुरुजणसुस्सूसणापरमो ॥ ३१ ॥
जो पंच नमुक्कारं,परमो पुरिसो पराइ भत्तीए ॥
परियत्तेइ पइदिणं, पयओ सुरूप्पओगप्पा ॥ ३२ ॥
अठेवय अठसया, अठसहस्सं च अठलरकं च ॥
अठेवय कोडीओ, सो तइयभवे लहइ सिद्धिं ॥३३॥
एसो परमो मंतो, परमरहस्सं परंपरं तत्तं ॥

नाणं परमं णेअं, सुद्धं ज्झाणं परं ज्झेयं ॥ ३४ ॥
एवं कवयमन्नेयं, खाइयमच्छं पराभ्भुवणरक्खा ॥
जोईसुन्नं बिंडु, नाओ तारालवो मत्ता ॥ ३५ ॥
सोलसपरमक्खरबीअबिंडुगब्भो जगुत्तमो जोओ ॥
सुअबारसंगसायर, महत्थपुव्वत्थपरमत्थो ॥ ३६ ॥
नासेइ चोरसावय, विसहरजलजलणबंधणसयाइं ॥
चिंतिज्जंतो रक्खस, रणरायभयाइं भावेण ॥ ३७ ॥

॥ इति अरिहणादिस्तोत्रम् ॥

इस अरिहणादि स्तोत्रको पढके "जय वीयराय जगगुरु०" इत्यादि गाथा पढे. पीछे आचार्य उपाध्याय गुरु साधुओंको वंदना करे. । यह शक्रस्तव विधि, गुरु और श्रावक दोनोंही करे. । चैत्यवंदनके अनंतर. श्राद्ध, क्षमाश्रमणदानपूर्वक कहे.

" ॥ भगवन् सम्यक्त्वसामायिकश्रुतसामायिकदेशविरतिसामायिकआरोवणिअं नंदिकड्ढावणिअं काउसग्गं करेमि ॥ "

गुरु "कहे करेह" तव श्रावक "सम्मत्ताइतिगारोवणिअं करेमि काउसग्गं अनत्थ०" इत्यादि कहके सत्ताइस उच्छ्वास प्रमाण अर्थात् 'सागरवरगंभीरा लग कायोत्सर्ग करे । पीछे नमो अरिहंताणं कहके पारके चतुर्विंशतिस्तव अर्थात् लोगस्स संपूर्ण पढे । पीछे मुखवस्त्रिका प्रतिलेखनपूर्वक श्रावक द्वादशावर्त्त वंदन करे, फिर क्षमाश्रमण देके कहे "भग

वन् सम्मत्ताइतिगं आरोवेह" गुरु कहे "आरोवेमि" पीठे श्रावक गुरुके आगे खमा होके, अंजलि करके, मुखवस्त्रिकासें मुखाछादन करके, तीनवार परमेष्ठिमंत्र पढे । पीठे सम्यक्त्वदंमक पढे. सयथा ॥

"॥ अहण्णं भंते तुह्माणं समीवे मिछत्ताओ पडीक्कमामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि । तंजहा दवओ खित्तओ कालओ भावओ । दवओणं मिछत्तकारणाइं पच्चक्खामि सम्मत्तकारणाइं उवसंपज्जामि नो मे कप्पइ अज्जप्पभिई अन्नउत्थिए वा अन्नउत्थिअदेवयाणि वा अन्नउत्थियपरिग्गहियाणि अरिहंतचेइआणि वंदित्तए वा नमंसित्तए वा पुविं अणालत्तेणं आलवित्तए वा संलवित्तए वा तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दाउं वा अणुप्पयाउं वा । खित्तओणं इहेव वा अन्नछ वा । कालओणं जाव जीवाए । भावओणं जाव गहेणं न गहिज्जामि जाव छलेणं न छलिज्जामि जाव सन्निवाएणं नाभिभविस्सामि जाव अन्नेण वा केणइ परिणामवसेण परिणामो मे न परिवडइ ताव मे एअं सम्मदंसणं अन्नछ रायाभिओगेणं बलाभिओगेणं गणाभिओगेणं देवयाभिओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारएणं वोसिरामि ॥"

ऐसें तीनवार दंडक पाठ कहना ॥ अन्ये तु दंडकमिछमुच्चारयंति यथा ॥

"॥ अहणं नंते तुह्माणं समीवे मिछत्ताओ पडि
क्कमामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि नो मे कप्पइ अज्ज
प्पन्निई अन्नउच्छिए वा अन्नउच्छियदेवयाणि वा अन्न
उच्छियपरिग्ग हियाणि चेइआणि वंदित्तए वा नमं
सित्तए वा पुविं अणालत्तेणं आलवित्तए वा संल
वित्तए वा तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा
साइमं वा दाउं वा अणुप्पयाउं वा अन्नह रायान्नि
ओगेणं गणान्निओगेणं बलान्निओगेणं देवयान्नि
ओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं तं चउविहं ।
तंजहा । दवओ खित्तओ कालओ नावओ । दवओ
णं दंसणदवाइं अंगीकयाइं । खित्तओणं उट्ठलोए
वा अहोलोए वा तिरिअलोए वा । कालओणं जाव
ज्जीवाए । नावओणं जाव गहेणं न गहिज्जामि
जाव छलेणं न छलिज्जामि जाव सन्निवाएणं नान्नि
नविस्सामि अन्नेण वा केणइ परिणामवसेण परि
णामो मे न परिवडइ ताव मे एसा दंसणपडिवत्ती ॥

इति गुरुविशेषेण द्वितीयो दंडकः ॥ प्रथम दंड
क दोनोमेंसें कोइ एक दंडक तीन वार उच्चारण
करे. पीछे गाथा ॥

"इअ मिछत्ताओ विरमिअ सम्मं उवगम्म नण
इ गुरुपुरओ ॥ अरिहंतो निस्संगो, मम देवो दक्ख
णा साहू ॥ १ ॥"

गुरु तीन वार यह गाथा पढके श्राद्धके मस्तको

परि वासक्षेप करे. । पीछे गुरु, आसन ऊपर बैठके गंध अक्षत वासांको सूरिमंत्रसें, वा गणिविद्यासें मंत्रे. । पीछे गंधाक्षत वासांको हाथमें लेके जिन चरणोंको स्पर्श करावे. । पीछे साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविकाओंको देवे. ते साधुआदि, मुठीमें लेलेवे. । पीछे श्राद्ध गुरुके आगे क्षमाश्रमण देके कहे ॥ "भयवं तुम्हे अह्मं सम्मत्ताइयतीअं आरोवेह ।" गुरुकहे "आरोवेमि" फिर श्रावक क्षमाक्षमण देके कहे "संदिसह किं भणामि" गुरु कहे "वंदित्तु पवेयह" फिर श्रावक क्षमाश्रमण देके कहे "भयवं तुम्हेहिं अह्मं सामाइयतिअमारोविअं" गुरु कहे "आरोवियं २ खमासमणेणं हच्छेणं सुत्तेणंअछेणं तडुभएणं गुरुगुणेहिं वह्वाहि निछारगपारगो होहि" श्रावक कहे "इच्छामो अणुसढिं" पुनः श्रावक क्षमाश्रमण देके कहे "तुह्माणं पवेइयं संदिसह साहूणं पएवेमि" गुरु कहे "पवेयह" पीछे श्रावक परमेष्ठिमंत्र पढता हुआ, समयसरणको प्रदक्षिणा करे. । और संघ पूर्व दिये हुए वासांको, तिसके मस्तकोपरि क्षेपण करे. । गुरु आसनऊपर बैठे, वहांसें लेके वासक्षेपपर्यंत क्रिया, तीन वार इसहि रीतिसें करना. । फिर श्रावक क्षमाश्रमण देके कहे "तुह्माणं पवेइयं" फिर क्षमाश्रमण देके कहे "साहूणं पवेइयं संदिसह काउसग्गं करेमि" गुरु कहे

"करेह" पीछे श्रावक-सम्मत्ताइतिगस्सथिरीकर णत्थं करेमि काउसग्गं अन्नछ०-सागरवरगंजीरातक कायोत्सर्ग करे. पारके संपूर्ण लोगस्स कहे. । पीछे चारथुइवर्जित शक्रस्तवसें चैत्यवंदन करे. । पीछे श्रावक, गुरुको तीन प्रदक्षिणा देवे. पीछे आसन ऊपर बैठा हुआ गुरु, श्रावकको आगे बिठाके निय म देवे. ॥ नियमयुक्तिर्यथा ॥

गुलर, पुलक्षण, काकोडुंबरि, वट और पिप्पल, ये पांच जातिके फल ५. मांस, मदिरा, माखण और मधु, ये चार विकृति ४-एवं ए-अज्ञात फल १०, अज्ञात पुष्प ११, हिम (बरफ) १२, विष १३, करहे (ओले-गडे) १४, सर्वसचित्तमट्टी १५, रात्रिजोजन १६, घोलवमा-काचे दूध दहि छाछमें गेरा हुआ विदल १७, वइंगण १८, पंपोटा-खसख सका दोमा १ए, सिंघाडे २०, वायंगण २१, और कायंवाणि २२, येह बावीस द्रव्य श्रावकोंको नक्ष ण करने योग्य नही है. अन्य प्रकारसे २२ अजक्ष्य यह है की पांच जातिके उंबरादि फल ५ चार महा विगइए, हिम १०, विष ११, करह १२, सर्व मृत्तिका १३, रात्रि जोजन १४, बहुबीज वाले फल १५, अनं त काय १६, अचार १७, घोलवमा १८, वेइंगण १ए, अज्ञात फल फूल २०, तुछ फल २१, चलितरस २२ ऐसें नियम देके यह गाथा उच्चारण करावे ॥

" अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ।
जिणपण्णत्तं तत्तं, इअ समत्तं मए गहिअं ॥ १ ॥ "

तदनंतर अरिहंतको वर्जके अन्यदेवको नमस्कार करनेका, जैनयति महाव्रतधारी शुद्ध प्ररूपकको वर्जके अन्य लिंग विप्रादिकोंको भावसें अर्थात् मोक्षलाभ जानके वंदना करनेका, और जिनोक्त सप्त तत्त्वको वर्जके तत्त्वांतरकी श्रद्धा करनेका नियम करना.

अन्य देव और अन्य लिंगि विप्रादिकोंको नमस्कार और दान,लौकिकव्यवहारकेवास्ते करना.और अन्यमतके शास्त्रका श्रवण पठन भी, ऐसेंही जानना. । पीछे गुरु सम्यक्त्वकी देशना करे. ॥ सोबताते है. ॥

मानुष्यमार्यदेशश्च जातिः सर्वाक्षपाटवम् ॥
आयुश्च प्राप्यते तत्र कथंचित्कर्मलाघवात् ॥ १ ॥
प्राप्तेषु पुण्यतः श्रद्धा, कथकः श्रवणेष्वपि ॥
तत्त्वनिश्चयरूपं तद्बोधिरत्नं सुदुर्लभम् ॥ २ ॥

॥ गाथा ॥

कुसुमयसुईण महणं सम्मत्तं जस्स सुठिअं हियए ॥
तस्स जगुज्जोयकरं नाणं चरणं च भवमहणं ॥ १ ॥

अर्थः—मनुष्यजन्म १, आर्यदेश २, उत्तमजाति ३, सर्वेइंद्रि संपूर्ण ४, आयुः ५, ये कथंचित् कर्मकी लाघवतासें प्राप्त होते है. । पुण्योदयसें पूर्वोक्त

प्राप्ति हुये जी श्रद्धा १, शुद्ध प्ररूपकका योग २, और सुणनेसें तथानिश्चयरूप बोधिरत्न सम्यक्त्व ३, ये अतिही दुर्लन्न हैं. ॥ कुत्सितसमयएकांतवादियोंके शास्त्र और तिनकी श्रुतियोंको मथनकरनेवाला सम्यक्त्व, जिसके हृदयमें अच्छीतरें स्थित है, तिस पुरुषको जगत्के उद्योत करनेवाले, और नव–संसारको मथनेवाले, ज्ञान और चारित्र प्राप्त होते हैं. ॥

॥ श्लोकाः ॥

या देवे देवताबुद्धिर्गुरौ च गुरुतामतिः ॥
धर्मे च धर्मधीः शुद्धा सम्यक्त्वमिदमुच्यते ॥ १ ॥
अदेवे देवबुद्धिर्या गुरुधीरगुरौ च या ॥
अधर्म्मे धर्म्मबुद्धिश्च मिथ्यात्वं तद्विपर्ययात् ॥ २ ॥
सर्वज्ञो जितरागादिदोषस्त्रैलोक्यपूजितः ॥
यथास्थितार्थवादी च देवोऽर्हन् परमेश्वरः ॥ ३ ॥
ध्यातव्योयमुपास्योयमयं शरणमिष्यताम् ॥
अस्यैव प्रतिपत्तव्यं शासनं चेतनाऽस्ति चेत् ॥ ४ ॥
ये स्त्रीशस्त्राक्षसूत्रादिरागाद्यंककलंकिताः ॥
निग्रहानुग्रहपरास्ते देवा स्युर्न मुक्तये ॥ ५ ॥
नाट्याट्टहाससंगीताद्युपप्लवविसंस्थुलाः ॥
लंनयेयुः पदं शांतं प्रपन्नान् प्राणिनः कथं ॥ ६ ॥
महाव्रतधरा धीरा नैक्ष्यमात्रोपजीविनः ॥
सामायिकस्था धर्मोपदेशका गुरवो मताः ॥ ७ ॥
सर्वान्निलाषिणः सर्वनोजिनः सपरिग्रहाः ॥

अब्रह्मचारिणो मिथ्योपदेशा गुरवो न तु ॥ ८ ॥
परिग्रहारंभमग्नास्तारयेयुः कथं परान् ॥
स्वयं दरिद्रो न परमीश्वरी कर्तुमीश्वरः ॥ ९ ॥
दुर्गतिप्रपतत्प्राणिधारणाद्धर्म उच्यते ॥
संयमादिर्दशविधः सर्वज्ञोक्तो विमुक्तये ॥ १० ॥
अपौरुषेयं वचनमसंभवि भवेद्यदि ॥
न प्रमाणं भवेद्वाचां ह्याप्ताधीना प्रमाणता ॥ ११ ॥
मिथ्यादृष्टिभिराख्यातो हिंसाद्यैः कलुषीकृतः ॥
स धर्म इति वित्तोपि भवभ्रमणकारणम् ॥ १२ ॥
सरागोपि हि देवश्चेद्गुरुरब्रह्मचार्यपि ॥
कृपाहीनोपि धर्मः स्यात् कष्टं नष्टं हहा जगत्॥ १३ ॥
शमसंवेगनिर्वेदानुकंपास्तिक्यलक्षणैः ॥
लक्षणैः पंचभिः सम्यक् सम्यक्त्वमुपलक्ष्यते ॥ १४ ॥
स्थैर्यं प्रभावनाभक्तिः कौशलं जिनशासने ॥
तीर्थसेवा च पंचास्य भूषणानि प्रचक्ष्यते ॥ १५ ॥
शंका कांक्षा विचिकित्सा मिथ्यादृष्टिप्रशंसनम् ॥
तत्संस्तवश्च पंचापि सम्यक्त्वं दूषयंत्यमी ॥ १६ ॥

अर्थः—साचे देवमें जो देवपणेकी बुद्धि, साचे गुरुके विषे गुरुपणेकी बुद्धि और साचे धर्मके विषे धर्मकी बुद्धि, कैसी बुद्धि ? शुद्ध सूधी निश्चल संदेहरहित, इसको सम्यक्त्व कहते हैं. । ऐसी सम्यक्त्वकी बुद्धि थोडे वखत भी जिसको आजावेगी, सो प्राणि अर्द्धपुद्गलपरावर्तकालमेंही संसार

सें निकलके मोक्षको प्राप्त होगा, यह निश्चय जाण
ना. यत उक्तम् ॥
अंतोमुहुत्तमित्तंपि फासियं जेहिं हुज्ज सम्मत्तं ॥
तेसिं अवड्ढ पुग्गलपरिअट्टो चेव संसारो ॥ १ ॥
भावार्थः–अंतर्मुहूर्तमात्र भी जिनोंनें सम्यक्त्व स्पर्श
किया है, तिनोंका अर्द्धपुद्गलपरावर्त्तही उत्कृष्ट संसा
र जाणना, तदनंतर अवश्यमेव मोक्षको प्राप्त होवे.
इति सम्यक्त्वस्वरूपम् ॥ १ ॥

अथ मिथ्यात्वस्वरूपमाह ॥ जिसमें देवके गुण
नही हैं, ऐसे अदेवमें देवकी बुद्धि–जैसें तममें
उद्योतकी बुद्धि । जिसमें गुरुके गुण नहीं हैं, ऐसें
अगुरुमें गुरुकी बुद्धि–जैसें नींवमें आम्र की
बुद्धि । अधर्म यागादि, जीवहिंसादिक के विषे धर्म
की बुद्धि–जैसें सर्पके विषे पुष्पमालाकी बुद्धि, सो
मिथ्यात्व है. सम्यक्त्वसें विपर्यय होनेसें, अर्थात्
साचे देवके ऊपर अदेवपणेकी बुद्धि, जैसें कौशिक
(घूअड) की सूर्यके तेजऊपर अंधकारकी बुद्धि,
साचे गुरुऊपर अगुरुपणेकी बुद्धि, जैसें श्वेतशंखके
ऊपर काचकामलरोगवालेकी नीलशंखकी बुद्धि ।
तिसको मिथ्यात्व कहतेहैं. । सो मिथ्यात्व पांच प्रका
रका है. १ आभिग्रहिक, २ अनाभिग्रहिक, ३ आभि
निवेशिक, ४ सांशयिक, ५ अनाभोगिक. ॥
(१) प्रथम आभिग्रहिकमिथ्यात्व, सो, जिस्को

मिथ्या कुशास्त्रोंके पढनेसें कुदेव कुगुरु कुधर्मके ऊप
र आस्था दृढ है, जिससें ऐसा जानता है कि, जो
कुछ मैंने समझा है सोही सत्य है, औरोंकी समझ
ठीक नहीं है, जिसको सत्यासत्यकी परीक्षा करने
का अब मन भी नहीं है, और जो सत्यासत्यका
विचार भी नहीं करता है. यह मिथ्यात्व, दीक्षित
शाक्यादि अन्यमतममत्वधारीयोंको होता है. वे
अपने मनमें ऐसें जानते हैं कि, जो मत हमने
अंगिकार किया है, वोही सत्य है; और सर्व मत
झूठे हैं. ऐसें जिसके परिणाम होवे, सो आभिग्र
हिक मिथ्यात्व है.

(२) दूसरा अनाभिग्रहिकमिथ्यात्व, सो सर्व
मतोंको आच्छा जाणे, सर्व मतोंसें मोक्ष है, इस
वास्ते किसीको बुरा न कहना सर्व देवोंको नम
स्कार करना, ऐसी जो बुद्धि, तिसको अनाभिग्र
हिक मिथ्यात्व कहते हैं. यह मिथ्यात्व जिनोंने
कोइ दर्शन ग्रहण नहीं करा ऐसें जो गोपाल बाल
कादि तिनको है. क्योंकि, यह अमृत और विषको
एकसरिखे जाननेवाले हैं.

(३) तीसरा अभिनिवेशिक मिथ्यात्व, सो जो
पुरुष जानकरके झूठ बोले, प्रथम तो अज्ञानसें
किसी शास्त्रार्थको भूल गया, पीछे जब कोइ विद्वा
न् कहे कि, तुम इस विषयमें भूलते हो, तब अप

ने मनमें सत्य विषयको जाणता हुआ भी, झूठे पक्षका कदाग्रह, ग्रहण करे, जात्यादि अभिमानसें कहना, न माने, उलटी स्वकपोलकल्पित कुयुक्तियों बनाकरके अपने मनमाने मतको सिद्ध करे, वादमें हार जावे तो भी न माने, ऐसा जीव, अतिपापी, और बहुल संसारी होता है. ऐसा मिथ्यात्व, प्रायः जो जैनी, जैन मतको विपरीतकथन करता है, उस में होता है, गोष्ठमाहिलादिवत् ॥

(४) चौथा सांशयिकमिथ्यात्व, सो देव गुरु धर्म जीव काल पुद्गलादिक पदार्थोंमें यह सत्य है कि, यह सत्य है ? ऐसी बुद्धि, तिसको सांशयिक मिथ्यत्व कहते हैं. तथा क्या यह जीव असंख्य प्रदेशी है ? वा नही है ? इसतरें जिनोक्त सर्व पदार्थमें शंका करनी । "सांशयिकं मिथ्यात्वं तदशेषया शंका संदेहो जिनोक्ततत्त्वेष्विविवचनात् ॥"

(५) पांचमा अनाभोगिकमिथ्यात्व, सो जिन जीवोंको उपयोग नही कि, धर्म अधर्म क्या वस्तु है ? ऐसें जे एकेंद्रियादि विशेषचैतन्यरहित जीव, तिनको अनाभोगमिथ्यात्व होता है. ॥ २ ॥

अथदेवलक्षणमाह ॥ देव सो कहिये, जो सर्वज्ञ होवे, परंतु जैसें लौकिक मतमें विनायकका मस्तक ईश्वरने छेदन कर दिया, पीछे पार्वतीके आग्रहसें सर्वत्र देखने लगा, परं किसी जगे भी,

मस्तक न देखा, तव हाथीके मस्तकको लायके विनायकके मस्तकके स्थानपर चेप दिया, जिसवास्ते विनायकका (गणेशका) नाम " गजानन " प्रसिद्ध हुआ. इत्यादि–यदि ईश्वर (महादेव) सर्वज्ञ होता तो, पार्वतीका पुत्र जाणके विनायकका मस्तक कभी न छेदन करता. यदि छेदा, तो जगत्में विद्यमान तिस मस्तकको क्यों न देखा ? इसवास्ते ऐसें अधूरेज्ञानवालेको देव न कहिये. । तथा ' जित रागादिदोषः ' जे संसारके मूलकारण राग द्वेष काम क्रोध लोभ मोहादिक दोष, तिन सर्वको जिसने जीते हैं, निर्मूल कियें हैं, तिसको देव कहिये. जिसमें रागादि दोष होवे, तिसको अस्मदादिवत् संसारी जीवही कहियें, तिसमें देवपणा न होवे. । तथा ' त्रैलोक्यपूजितः ' स्वर्गमर्त्यपातालके स्वामी इंद्रादिक परम भक्तिकरके जिसको वांदे, पूजे, नमस्कार करे, सेवे, सो देव कहिये. परंतु कितनेक इसलोकके अर्थीयोंके वांदनेसें, वा पूजनादिकसें देवपणा नही होता हैं. । तथा ' यथा स्थित सत्यपदार्थका वक्ता, सो देव कहिये, परंतु जिसका कथन पूर्वापरविरोधि होवे, और विचारते हुए सत्य २ मिले नही, सो देव न कहिये. ॥ देवो ऽर्हत् परमेश्वरः ये पूर्वोक्त चार गुण पूर्ण जिसमें

होवे, सो अरिहंत, वीतराग, परमेश्वर, देव, कहिये, इससें अन्य कोइ देव नही है. ॥ ३ ॥

ऐसा पूर्वोक्त साचा देव, पिछानके आराधना, सोही कहते हैं । ध्यातव्योयमित्यादि–पूर्व जो देवके लक्षण कहे, तिन लक्षणों संयुक्त जो देव, तिसको एकाग्र मनसें ध्यावना, जैसें श्रेणिक महाराजने श्रीमहावीरजीका ध्यान किया. । तिस ध्यानके प्रभावसें आगमी चउवीसीमें श्रेणिक, वर्ण, प्रमाण,संस्थान, अतिशयादिकगुणोंकरके श्रीमहावीरस्वामिसरिखा 'पद्मनाभ,' नाम प्रथम तीर्थंकर होगा. इसीतरें औरोंनें भी तल्लीनपणे देवका ध्यान करना, तथा 'उपास्योयम्' ऐसे पूर्वोक्त देवकी सेवा करनी श्रेणिकादिवत्. । तथा इसी देवका, संसारके भयको टालनहार जाणके, शरण वांछना. । इसी देवका शासन, मत, आज्ञा, धर्म, अंगीकार करना. । 'चेतनास्ति चेत्' जो कोइ चेतना चैतन्यपणा है तो, सचेतन सजाण जीवको उपदेश दिया सार्थक होवे, परंतु अचेतन अजाणको दिया उपदेश क्या काम आवे ? इसवास्ते 'चेतनास्ति चेत्' ऐसें कहा. ॥ ४ ॥

अथादेवत्वमाह ॥ अथ अदेवके लक्षण कहते हैं. ॥ ये स्त्री० ॥ जिनके पास स्त्री (कलत्र) होवे तथा खड्ग धनुष्य चक्र त्रिशूलादिक शस्त्र (हथियार) होवे, तथा अक्षसूत्र जपमाला आदि शब्द

सें कमंमलुप्रमुख होवे, ये कैसें है ? रा० रागादिकके अंक–चिन्ह है, सोही दिखावे हैं. स्त्री रागका चिन्ह है, । जो पासे स्त्री होवे तो जाणना कि, इसमें राग है. । शस्त्र रूपका चिन्ह है, जो पासे हाथियार देखीए तो, ऐसा जाणिये कि तिसने किसी वैरीको मारना चूरना है, अथवा किसीका जय है, जिस वास्ते शस्त्रधारण किये हैं. । अक्ष सूत्र असर्वज्ञपणाकाचिह्न है. यदि होवे तो, मणके विना गिणतीकी संख्या जाणलेवे. अथवा तिससें अधिक वडा अन्य कोइ है, जिसका वो जाप करता है ? । कमंमलु अशुचिपणेका चिन्ह है, यदि हाथ में कमंमलु पाणीका भाजन देखीए तो, ऐसा जाणिये की, यह अशुचि है. शौच करणेके वास्ते यह कमंमलु धारण करता है. यतउक्तं ॥

स्त्रीसंगः काममाचष्टे रूपं चायुधसंग्रहः ॥
व्यामोहं चाक्षसूत्रादिरशौचं च कमंमलुः ॥ १ ॥

इन पूर्वोक्त दोषोंकरके जे दूषित है, तथा निग्रहा० जिसके उपर रुष्टमान होवे, तिसको निग्रह (वंधनमरणादिक) करें, और, जिसके उपर तुष्टमान होवे, तिसको अनुग्रह (राज्यादिकके वर) देवें; तेदेवा० वे देव, मुक्तिके हेतु नही होते हैं.॥५॥

ऐसे पूर्वोक्त देव अपने सेवकोंको मोक्ष नही दे सकते हैं, सोही वात फिर कहते हैं. । नाट्याट० जे

देव नाटकके रसमें मग्न हैं, अट्टाट्टहास करते हैं, इत्यादि संसारकी चेष्टा जो अस्थिर हैं; लंजयेयुः–जे आपही ऐसे हैं, वे देव, अपने आश्रित सेवकोंको शांतपद, (संसार चेष्टारहित मुक्ति, केवलज्ञानादिकपद,) कैसें प्राप्त कर सकते हैं? जैसें एरंडवृक्ष कल्पवृक्षकीतरें इच्छा नही पूर सकता है, यदि किसी मूढ पुरुषने एरंडको कल्पवृक्ष मान लिया तो, क्या वो कल्पवृक्षकीतरें मनोवांछित दे सकता है ? ऐसेंही कीसी मिथ्या दृष्टीनें पूर्वोक्त दूषणोंवाले कुदेवोंको देव मान लिये तो, क्या वे देव परमेश्वर मोक्षदाता हो सकते हैं ? कदापि नही हो सकते हैं.॥६॥

अथगुरुलक्षणमाह ॥ अथ गुरुके लक्षण कहते हैं ॥ महाव्र० अहिंसादि पांच महाव्रतके धारने पालनेवाले और आपदामें भी धीर साहसिक होके अपने व्रतोंको विराधे नहीं बेंतालीश (४२) दूषण रहित भिक्षावृत्ति (माधुकरी वृत्ति) करके अपने चारित्रधर्मके तथा शरीरके निर्वाहवास्ते भोजन करे, भोजन भी ऊनोदरतासंयुक्त करे, भोजनकेवास्ते अन्न पाणी रात्रिको न राखे, धर्मसाधनके उपकरण विना और कुछ भी संग्रह न करे, तथा धन, धान्य, सुवर्ण, रूपा, मणि, मोती, प्रवालादि परिग्रह, न राखे. । सामा० रागद्वेषके परिणामरहित मध्यस्थ वृत्ति होकर सदा सामायिकमें वर्त्ते. । धर्मोप० जो

र्मी जीवोंके उद्धारवास्ते सम्यग् ज्ञानदर्शनचारि त्ररूप जगवंतके स्याद्वाद अनेकांतस्वरूप निरूपण किया है, तिस धर्मका उपदेश करे, परंतु ज्योतिषशास्त्र, अष्टप्रकारका निमित्त शास्त्र, वैद्यकशास्त्र, धन उत्पन्न करनेका शास्त्र, राजसेवादि अनेकशास्त्र, जिनसें धर्मको वाधा पहुंचे तिनका उपदेश न करे; ऐसे गुरु कहियें. । काष्ठमय वेरूीसमान आप जी तरें, और औरोंको जी तारें. ॥ ७ ॥

अथ अगुरुलक्षणमाह॥ अथ अगुरुके लक्षणं कहते हें ॥ सर्वा० स्त्री, धन, धान्य, हिरण्य, रूपादि सर्व धातु, क्षेत्र, हाट, हवेली, चतुःपदादिक अनेक प्रकारके पशु, इन सर्वकी अजिलापा है जिनको, सर्व जोजिनः । मधु, मांस, मांखण, मदिरा, अनंतकाय, अजक्ष्यादिक सर्व वस्तुके जोजन करनेवाले, सपरिग्रहाः । जे पुत्र, कलत्र, धन, धान्य, सुवर्ण, रूपा, क्षेत्रादि सहित हें, । अब्रह्म० तथा अब्रह्मचारी हें । मिथ्यो० मिथ्या धर्मका उपदेश करें, ज्योतिप, निमित्त, वेदक, मंत्र तंत्रादिकका उपदेश देवें, वे गुरु नही. लोहमय वेरूी (नावा) समान, आप जी रुवें, औरोंको जी रुवावे ॥ ८ ॥

पूर्वोक्त वातही कहते हें ॥ परिग्रहा० स्त्री, घर, लक्ष्मी आदि परिग्रह, और क्षेत्र, कृपी, व्यवसायादि आरंज इनमें जे मग्न है, आपही जवसमु

डूमें डुवे हुए, हैं, ता० वे, किसतरेंसें दूसरे जीवोंको संसारसागरसें तार सकते हैं ? इसवातमें दृष्टांत कहते हैं. । जो पुरुप आपही दरिद्री है, सो परको ईश्वर लक्ष्मीवंत करनेको समर्थ नही है; तैसेंही वे कुगुरु, आपही संसारमें डुवे हुए, पर अपने सेवकोंको कैसें तार सके ? ॥ ए ॥

धर्मलक्षणमाह ॥सत्य धर्मका स्वरूप कहते हैं.॥ दुर्गति० नरक, तिर्यंच, कुमनुष्य, कुदेवत्वादि दुर्गति में गिरते हुए प्राणिकी रक्षा करे, गिरने न देवे, इस वास्ते धारण करनेसें धर्म कहिये, सो, संयमादि दशप्र कार सर्वज्ञ कथित धर्म, पालनेवालेको मोक्षकेवास्ते होता है. । संयमादि दश प्रकार ये है. संयम जीवदया १, सत्यवचन २, अदत्तादानत्याग ३, ब्रह्म चर्य ४, परिग्रहत्याग ५, तप ६, क्षमा ७, निरहंका रता ८, सरलता ए, निर्लोजता १०, ॥ इससें उलटा हिंसादिमय असर्वज्ञोक्त धर्म, दुर्गतिकाही कारण है. ॥ १० ॥

अधर्मत्वमाह ॥ अपौरुपेयं० अपौरुपेय वचन, असंजवि–संजवरहित है. क्योंकि, जो वचन है सो किसी पुरुपके वोलनेसेंही है, विना वोले नही. वच् परिजापणे इति वचनात्. और अक्षरोत्पत्तिके आठ स्थान नियत है, सो जी पुरुपकोंही होते हैं. इस वास्ते वचन पुरुपके विना संजवे नही. । जवेद्य

दि—न प्रमाणं । यदि होवे तो, वेदको प्रमाणता नही. क्योंकि, । नवेदाचां ह्याप्ताधीना प्रमाणता । वचनोंकी प्रमाणता, आप्त पुरुषोंके आधीन है. ॥ ११ ॥

असर्वज्ञोक्त धर्म प्रमाण नही यही कहते हैं. ॥ मिथ्यादृष्टि असर्वज्ञोंने अपनी बुद्धिसें कहा हुआ, पशुमेध, अश्वमेध, नरमेधादि यज्ञोंके कथनसें, और अपुत्रस्य गतिर्नास्ति इत्यादि कथनसें, जीववधादि कोंकरके जो धर्मही है, ऐसा अजाण लोकोंमें विशेष प्रसिद्ध है. तो जी, नवज्रमण (संसारज्रमण) का कारण है. यथार्थ धर्मके अजावसें ॥ १२ ॥

कुदेवकुगुरुकुधर्मनिंदामाह ॥ सरागोपि० यदि जगत्में सरागः रागद्वेषादि सहित जी देव होवे, अब्रह्मचारी मैथुनाजिलाषी जी गुरु होवे, और दया हीन जी धर्म होवे, तो, हाहा ! इति खेदे वमा नारी कष्ट है, संसारलक्षण जगत् नष्ट हुआ, दुर्गतिमें पमनेसें. क्योंकि, पूर्वोक्त देव गुरु धर्मकरके रुवनाही होवे. यतः उक्तं ॥

रागी देवो दोसी देवो तामिसूमंपि देवो रत्ता मत्ता कंता सत्ता जे गुरू तेवि पुज्जा । मज्जे धम्मो मंसे धम्मो जीव हिंसाइ धम्मो हाहा कट्ठं नट्ठो लोओ अट्टमट्टं कुणंतो ॥ १ ॥ १३ ॥

ऐसें पूर्वोक्त अदेव, अगुरु, अधर्मका परित्याग करके, सत्य देव, गुरु, धर्मकी, आस्था करनी, तिसका नाम

सम्यक्त्व है. सो सम्यक्त्व हृदयमें है, ऐसा पांच लक्ष
णोंकरके मालुम होता है, वे पांच लक्षण कहते हैं. ॥
शमसं०–जिस जीवमें अनंतानुवंधि क्रोध मान
माया लोजका उपचय देखिये, अर्थात् अपराध कर
नेवालेके ऊपर जिसको तीव्र कषाय उत्पन्न होवेही
नही, यदि उत्पन्न होवे तो, तिस क्रोधादिको निष्फ
ल करदेवे, इस शमरूप लक्षणसें जाणिये कि, इस
जीवमें सम्यक्त्व है । १ । संवेग–जिसके हृदयमें
संवेग संसारसें वैराग्यपणा होवे, तिस जीवमें संवे
गरूप लक्षणसें सम्यक्त्व जाणना । २ । संसा
रके सुखों ऊपर द्वेषी, वैराग्यवान्, परवशपणेसें कुटुं
वादिकके दुःखसें गृहस्थपणेमें रहा हुआ मोक्षाभि
लाषी, जो जीव है, तिसमें निर्वेदरूप लक्षणसें सम्य
क्त्व हैं. । ३ । जिसके हृदयमें दुःखिजीवोंको देख
के अनुकंपा (दया) उत्पन्न होवे, दुःखिजीवोंके
दुःखोंको दूर करनेका जिसका मन होवे, जो दुःखि
जीवको देखके अपने मनमें दुःखी होवे, शक्तिअ
नुसार दुःखिजीवके दुःखोंको दूर करे, तिसमें अनु
कंपारूप लक्षणसें सम्यक्त्व उपलब्ध होता हैं. । ४ ।
जिनोक्त तत्वोंमें अस्तिजाव का होना, सो आस्ति
क्य । ५ । एतावता शम १, संवेग २, निर्वेद ३,
अनुकंपा ४, और आस्तिक्य ५, इन पांचों लक्षणों
सें हृदयगत सम्यक्त्व जाणना, ॥ १४ ॥

॥ अथ सम्यक्त्वके पांच नूषण कहते हैं. ॥ स्थैर्य०–स्थैर्य जिनधर्मकेविषे स्थिरता । १ । जिन धर्मकी प्रनावना । २ । जिनधर्ममें नक्ति । ३ । जिन शासनमें कुशलता । ४ । और तीर्थसेवा । ५ । ये पांच सम्यकत्व के नुषण हैं. ॥ १५ ॥

अथ सम्यक्त्वके पांच दूषण कहते हैं. ॥ शं. का० शंका धर्म. है, वा नही ? इत्यादि संदेह । १ । आकांक्षाअन्य २ धर्मकी अनिलाषा । २ । विचि कित्साधर्मके फलका संदेह । ३ । मिथ्यादृष्टिकी प्रशंसा । ४ । और मिथ्यादृष्टियोंका परिचय । ५ । ये पांच सम्यक्त्वको डुषित करते हैं. ॥ १६ ॥
ऐसें पूर्वोक्त उपदेशकरके श्रेणिक, संप्रति, दशार्ण नद्रादि सम्यक्त्वमें दृढ राजायोंके व्याख्यान करे. । उस दिनमें श्रावक एकनक्त आचाम्लादि तप करे. । साधुयोंको अन्न, वस्त्र, पुस्तक, वसति, यथायोग्य देवे. । मंफलीपूजा करनी. । चतुर्विधसंघवात्सल्य करना. । और संघपूजा करनी. ॥

इतिव्रतारोपसंस्कारे सम्यक्त्वसामायिकारोपणविधिः ।

देशविरतिसामायिकारोपणविधिः

सम्यक्त्व सामायिकारोपणानंतर तत्कालही, तिस की वासनानुसारें, वा मास वर्षादिके अतिक्रम हुए,

देशविरतिसामायिक आरोपण करना हैं. । तहां नंदि, चैत्यवंदन, कायोत्सर्ग, क्षमाश्रमणआदि, सर्व विधि पूर्ववत् जाणनी.

परंतु सर्वत्र सम्य क्त्वसामायिकके स्थानमें देशविर तिसामायिकनाम ग्रहण करना. । सर्वत्र तैसें करके फिर दूसरी नंदि दंमकोच्चारकालमें नमस्कार तीन पाठानंतर, हाथमें ग्रहण करे परिग्रह परि माण टिप्पनक(फहरिस्त–नोंध) ऐसे श्रावकको गुरु; देशविरतिसा मायिकदंमक उच्चरावे. ॥ सयथा ॥

"॥ अहणं नंते, तुह्माणं समीवे, थुलगं, पाणा इवायं, संकप्पओ, वीइंदिआइजीवनिकायनिग्गहनि यट्टिरूवं, निरावराहं, पच्चक्खामि जावज्जीवाए, डु विहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कार वेमि, तस्स नंते पमिक्कमामि, निंदामि, गरि हामि, अप्पाणं, वोसिरामि, ॥"

यह पाठ तीनवार कहना ॥ १ ॥ इसीतरें सर्व व्रतोंमें तीन २ वार पाठ पढना. ॥

"॥ अहणं नंते, तुह्माणं, समीवे, थूलगं, मुसा वायं, जीहाछेयाइनिग्गहहेऊअं, कन्ना, गोनूमि, निक्खेवावहार, कूम सक्खाइ, पंचविहं, दक्खिन्नाइ अविसए, अहागहिअ नंगएणं, पच्चक्कामि, जावज्जीवाए, डुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए, काएणं० ॥ २ ॥"

"॥ अहण्णं, जंते, तुह्माणं, समीवे, थूलगं, अदिन्नादाणं, खत्तखणणाइचोरकारकरं, रायनिग्गहकरं, सचित्ताचित्त वत्थुविसयं, पच्चक्खामि, जावज्जीवाए, डुविहं तिविहेणं० ॥ ३ ॥"

"॥ अहण्णं, जंते, तुह्माणं, समीवे, थूलगमेहुणं, उरालिय, वेउव्वियजेअं, अहागहिअ जंगएणं, तत्र डुविहं तिविहेणं दिव्वं, एगविहं तिविहेणं तेरिछं, एगविहमेगविहेणं माणुस्सं, पच्चक्खामि, जावज्जीवाए, डुविहं तिविहेणं० ॥ ४ ॥"

"॥ अहण्णं जंते तुह्माणं, समीवे, अपरिमिअं, परिग्गहं, धणधन्नाइनवविहवत्थुविसयं, पच्चक्खामि, इंछापरिमाणं, अहागहिअ जंगएणं, उवसंपज्जामि, जावज्जीवाए, डुविहं, तिविहेणं० ॥ ५ ॥"

"अहण्णं जंते, तुह्माणं, समीवे, पढमं गुणव्वयं, दिसिपरिमाणरूवं, पडिवज्जामि, जावज्जीदाए, डुविहं, तिविहेणं ॥ ६ ॥"

"॥ अहण्णं जंते, तुह्माणं, समीवे, उवजोगपरिजोगवयं, जोयणउ, अणंतकाय, बहुवीय राईजोयणाईबावीसवत्थुरूवं, कम्मणा, पन्नरस, कम्मादाण, इंगालकम्माइबहुसावज्जं, खरकम्माइ, रायनिउगं च, परिहरामि, परिमिअं, जोगउवजोगं, उवसंपज्जामि, जावज्जीवाए, डुविहं, तिविहेणं० ॥ ७ ॥"

"॥ अहण्णं जंते, तुह्माणं समीवे, अणत्थदंमु

एवयं, अट्टरुद्दझाण, पावोवएस, हिंसोवयारदाण,पमायकरणरूवं, चउविहं, जहासत्तीए, पडिक्कमामि, दुविहं तिविहेणं ॥ ८ ॥ "

" ॥ अहण्णं भंते. तुह्माणं समीवे, सामाइयं, जहासत्तीए, पडिवज्जामि, जावज्जीवाए, दुविहं, तिविहेणं ॥ ९ ॥ "

" ॥ अहण्णं भंते, तुह्माणं समीवे, देसावगासिअं, जहासत्तीए पडिवज्जामि, जावज्जीवाए, दुविहं तिविहेणं० ॥ १० ॥ "

" ॥ अहण्णं भंते, तुह्माणं समीवे, पोसहोववासं, जहासत्तीए, पडिवज्जामि, जावज्जीवाए, दुविहं, तिविहेणं० ॥ ११ ॥ "

" ॥ अहण्णं भंते, तुह्माणं समीवे, अतिहिसंविभागं, जहासत्तीए, पडिवज्जामि' जावज्जीवाए, दुविहं' तिविहेणं० ॥ १२ ॥ "

" ॥ इच्चेयं सम्मत्तमूलं पंचाणुवइयं, तिगुणवइयं, चउसिक्खावइयं, दुवालसविहं, सावगधम्मं, उवसंपज्जित्ताणं, विहरामि ॥ इति ॥

दंडकोच्चारणानंतर कायोत्सर्ग, वंदनक, क्षमाश्रमण, प्रदक्षिणा, वासक्षेपादिक पूर्ववत् ॥

परिग्रहप्रमाणटिप्पनकयुक्तिर्यथा ॥

भावार्थः—अमुक जिनेंद्रको नमस्कार करके; अमु

क श्राविका, वा अमुक श्रावक अमुक गुरुके पास, गृहस्थ धर्मको अंगीकार करता हे. ॥ १ ॥

श्री अरिहंतको वर्जके अन्य देवको नमस्कार न करुं, जिनमतके सुसाधुकों गेरुके अन्य लिंगिकों धर्मार्थे नमस्कार न करुं.॥ २ ॥ जिन वचन स्याद्वादयुक्त सप्त वा नव तत्त्व को सत्य कर जानता हुं, मिथ्याशास्त्रोंके श्रवण पठन लिखनेका मुऊको नियम हो. । ३। परतीर्थिको प्रणाम, गुणानुवाद, स्तवन, जक्ति, राग, सत्कार, सन्मान, दान, विनय, वर्जु–न करुं. । ४ । धर्मकेवास्ते अन्य तीर्थमें तप, स्नान, होमादिक नही करुं. तिनके उचित करने योग्य कर्ममें जयणा मुऊको हो. । ५ । तीन, वा पांच, वा सातवार यथाशक्तिसें चैत्यवंदन करुं; एक, वा दो वा तीन वार, प्रतिदिन सुसाधुको नमस्कार करुं, और तिसकी सेवा करुं. । ६ । एक, वा दो, वा तीनवार प्रतिदिन जिनपूजा करुं; और पर्व दिनमें स्नात्रादि अधिक अधिकतर पूजा करुं. इति सम्यक्त्वम् ।

कुलाचार विवाहादि कृत्यमें जीववध होते जयणा करुं । ७ । विना प्रयोजन एकेंद्रियका जी वध न करुं, प्रयोजनके हुए जयणा करुं, । इतिप्रथमव्रतम् ।

कन्या आदि पांच प्रकारका मृषावाद, नियमकरके वर्जता हुं. । इतिद्वितीयव्रतम् ।

जिससें चोर नाम पडे, और राजदंम होवे; ऐसा धन वर्जुं, अर्थात् चोरी वर्जुं. । इतितृतीयव्रतम् ।

दो करण तीन योगसें देवतासंबंधि, एकविध त्रिविधें करी तिर्यंच संबंधि, मैथुनका नियम करता हुं. । ए । अनुजव करके स्तंजसमान ब्रह्मवतको अपने मनमें धारण करुं, और जावजीव मनुष्य संबंधि मैथुनकायाकरके वर्जुं. । १० । परनारीको, और परपुरुषको (स्त्री व्रतग्राहिता आश्रित) वर्जुं. इनके उपरांत अन्यक्रियाकी मुऊकों जयणा. । इति चतुर्थव्रतम् ॥

नव प्रकारके परिग्रहमें परिग्रहकी संख्याका प्रमाण यह है. । ११ । इतने मात्र रूपय्ये, इतने मोहोर, इतने मात्र गिणतिमें. । १२ । इतने गिण तिमें रूपय्ये, यह गणिमवस्तुका ग्रहण है. इतनी वस्तु तोलमे और मापसें इतनी वस्तु. ।१३। हाथ अंगुलसें मेय वस्तुका इतने प्रमाण मात्रसें मुऊको संग्रह करना कल्पे, तथा दृष्टिसें देखके जिनका मोल करा जावे ऐसे पदार्थ इतने रूपइयोंके मोलके रखने. । १४ । इतनी खांमी अन्नकी एक वर्षमें रखनी, इतनी मुऊको परिग्रहमें नूमि रखनी कल्पे; इतने पुर, इतने गाम, इतने हाट, इतने घर, और इतने प्रमाण क्षेत्र, मुऊको कल्पे. । १५ । इतने सेर, वा इतने तोले प्रमाण सोना, इतना मात्र रूपा,

इतना कांसा, इतना तांबा, इतना लोहा, इतना तरुया, इतना सीसा, अपने घरमे रखना. । १६ । इतने दास, इतनी दासी, इतने सेवक–नौकर और इतने दासचेटकोंकी संख्यां मुझको रखनी कल्पे. । १७ । इतने हाथी, इतने घोडे, इतने बलद, इतने ऊंट, इतने गाडे, इतनी गौ, इतनी महिषी (भैंस) । १८ । इतनी बकरी, इतनी भेडें, और इतने हल रखने मुझको कल्पे. और अमुक अमुक कर्मका मुझको नियम हो. । १९ । इति पंचमव्रतम् ॥

दसोंही दिशायोंमें अपने वशसें इतने योजन प्रमाण जावजीव गमन करना; और तीर्थयात्रामें जानेकी जयणा. । २० । इतिषष्ठव्रतम् ।

कर्ममें जोगोपजोगमें, खरकर्ममें, पंदरा कर्मादानमें, दुप्पोल आहार अज्ञात फूल फल इनको वर्जुं. । २१ । पांच ऊंबर ५, चार महाविगइ ४, हिम १०, विष ११, कारक १२, सर्व जातकी मट्टी १३, रात्रिजोजन १४, बहुबीजा १५, अनंतकाय १६, संधान (बोल आचार) १७. । २२ । घोलवडां (विदल) १८, वृंताक १९, अज्ञात फल फूल २० तुछ फल २१ और चलितरस २२. ये बावीस वस्तुओको वर्जुं. । २३ । वर्जके अन्य फल फूल पत्रमेसें अमुक अमुक प्राणांतमें भी, जदाण न करूं. २४ । इतने मात्र प्रासुक अनंतकायकी मुझको जयणा हो, इतने

अपक्क फल और अखंमित नी नक्षण न करुं. ।२५। आ जन्मतक इतनी सच्चित्त वस्तुओं मेरेको नक्षण करने योग्य है, इतने पुष्टिकारक ड्व्य और इतने व्यंजन शाकादि मुफको कल्पे; तथा घृत, ड्रग्ध दहि प्रमुख ।२६। इतनी विगइ मुफको कल्पे. इतने पियादे, इतने गज, इतने तुरग और इतने प्रधान रथोंकी मुफको जयणा हो. ।२७। इतनी सुपारी, इतने लवंग, इतने एलाफल (इलायची) जायफल आदि मेरेको नित्य इतने प्रमाण कल्पे. सूतके, रेशमके, ऊनके, औरके, इन चार प्रकारके।२७। वस्त्रोंमें नी इतने वस्त्र पहिरने मुफको कल्पे; और इतनी जातिके फूल मेरे अंगके नोगवास्ते कल्पे. । २ए । आसन, सिंहासण, पीठ, पट्टे, बाजोठ, पलंक, गदेला, रजाइ, और खाट आदि ये सर्व इतने प्रमाण मुफको कल्पे. ।३०। कर्पूर, अगर, कस्तूरी, चंदन केशरादि मात्र मेरे अंगके वास्ते इतने कल्पे; और पूजामें जयणा. ।३१। इतनी नारी मेरे संनोगमें इतने कालमात्र, इतने घडे, ठाणे हुए जलके और प्रासुक जलके मेरेकों स्नान वास्ते कल्पे. ।३२। इतनी वार दिनमें इतनी जातिके तेल मर्दन के वास्ते, इतने प्रकारके नात रोटी आदिक नोजन, और दिनमें इतनी वार नोजन न करना. ।३३। यह सच्चित्तादिका नोग परिनोग

जावजीवतक हे, इनका जी फेर प्रमाण दिनदिनमें करुं, * । ३४ । इतने मात्र मणि, कनक, रूपा, मोती जूषण, अंगऊपर धारण करुं. इतने मात्र गीत, नृत्य, वाजंत्र, मुऊको उपजोगवास्ते कल्पे. । ३५ । इतिसप्तमव्रतम् ॥

वैरिका घात, वैर लेना, इत्यादिक आर्त्त, रौद्र, ध्यान, अदाक्षिण्यताविषे पापोपदेशका देना, इनको वर्जुं. । ३६ । अदाक्षिण्यताविषे हिंसाकारी गृहोप करणादि देना तथा कामशास्त्रकापढना, जूआ खेलना, मद्य पीना, इनको परिहरुं. । ३७) हिंसोलेका विनो द, जक्त (जोजन), स्त्री, देश, और राजा, इनकी स्तुति, वा निंदा; पशु पक्षीका युद्ध, अकालमें नींद लेनी, संपूर्ण रात्रिमें सोना, । ३८ । इत्यादि प्रमाद स्थानक, अनर्थादंडनामक गुण व्रत में वर्जुं. । इति अष्टमव्रतम् ॥

एक वर्षमें इतने सामायिक करुं. । इतिनवमव्रतम् ॥

इतने योजन मेरेको दिन, वा रात्रिमें दशोदिशा ओंमें जाना आना कल्पे. । इतिदशमव्रतम् ।

एक वर्षमें इतने पोषध करुं. इत्येकादशव्रतम् ॥

साधुओंको संविजाग जोजन वस्त्र आदिकसें करुं. ४० । प्रथम यतिको देके और नमस्कार करके पीछे

* दिन २ में जो प्रमाण करना है, सो दशम देसावकाशि-कव्रतांतर्गत जाणना. ॥

आप पारणा करुं; जो सुविहित साधुओंका योग न होवे तो, दिशावलोकन करके जोजन करुं. । ४१ । इतिद्वादशव्रतम् ॥

यह द्वादश व्रतरूप श्रावकधर्म, पूर्वोक्त विधिसें पालुं, विना छाएया जलका पान और स्नान, मरणां तमें जी न करुं. । ४२ । कंदर्प, दर्प, थूकना, सोना, चार प्रकारका आहार करना, विकथा, कलह, इत्या दि जिनमंरूपमें वर्जुं. । ४३ ।

अमुक महागच्छमें, अमुक गुरु सूरिके संतानमें, अमुकके शिष्यके पास, अमुक सूरिके पादांतमें. ४४ ।अमुक संवत्सरमें, अमुक मासमें, अमुक पक्षमें, अमुक तिथिमें, अमुक वारमें, अमुक नक्षत्रमें, अमुक नगरमें. । ४५ । अमुकका पुत्र, अमुक नामका श्रावक, यहां गृहस्थधर्म ग्रहण करता है. अमुककी पुत्री आमुककी जार्या, अमुक नामकी श्राविका, वा व्रत ग्रहण करती है. । ४६ ।

नवरं क्षत्रियकेवास्ते प्राणातिपात स्थानमें प्रथम व्रतमें ४७ । ४८ । यह दो गाथा, अधिक जाननी. । युद्धमें, कोइ गौको चुरा लेजाता होवे तिसके हटानेमें, चैत्य, गुरु, साधु, संघको उपसर्ग देनेवा लेको हटानेमें, तथा दुष्टके निग्रहमें, जीवके वध हुए मुझको दोष नही । ४९ । जनोंके, और देशकें रक्षणवास्ते सिंह, व्याघ्र, शत्रुओंके हननेमें मुजको

दोष नही; अर्थात् इन कामोंके लिए हिंसा करनेसें मेरा व्रत भंग न होवे. । जल पीनेमें गणना, अन्यत्र स्नाना दिमें यथाशक्ति. । ४८ । इनमें प्रमादके होनेसें, गुरुके वचनसें यह तप करुं; अल्प वहुत भांगेसें, तिससें मेरी विशुद्धि होवे. । ४९ ॥ इति परिग्रह प्रमाणटिप्पनकविधिः ॥

इन वारह व्रतोंमेंसें कोइ कितनेही व्रत अंगी कार करे, तिसको तितनेही उच्चार करावने. । जिस को ८ मासिक सामायिक व्रत अरोपतें हैं, तिसका यह विधि है. ॥ चैत्यवंदना, नंदि, क्षमाश्रमणादि सर्वपूर्ववत् सामायिकके अभिलाप करके; । और विशे षयह हैं; । कायोत्सर्गके अनंतर तिसके हस्तगत नूतन मुखवस्त्रिकाके ऊपर वासक्षेप करना. । तिसही मुखवस्त्रिकाकरके षट् (६) मासपर्यंत उभयकाल सामायिक ग्रहण करे. । पीछे तीनवार नमस्कारका पाठ करके दंडक पढावे. सयथा ॥

" ॥ करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्च क्खामि, जावनियमं पज्जुवासामि, डुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाणं, वोसि रामि, । से सामाइए चउविहे तंजहा दव्वउं खित्तउं कालउं भावउं दव्वउंणं सामाइअं पडुच्च, खित्तउंणं इहेव वा अन्नच वा, कालउंणं जाव छम्मासं, भाव

ठेणं जाव गहेणं न गहिज्जामि,जाव ठलेणं न ठलिज्जामि, जावसन्निवाएणं नाजिन्नविज्जामि, ताव मे एसासामाइय पमिवत्ती ॥ "

ऐसें तीनवार पढावना॰। मस्तकोपरि वासक्षेप करना, अक्षतवासाको अजिमंत्रणा, और संघके हाथ में वासक्षेप देना, यहां नही है परंतु प्रदक्षिणा तीन, करावनी.। इतिपाएमासिक सम्यक्त्वारोपणविधिः ॥

इसीतरें सम्यक्त्वका, और द्वादश व्रतोंका जी इसही दंमकसें तिस २ अजिलापसें मास, षट् (६) मास वा वर्ष पर्यंत, सम्यक्त्व व्रतोंका उच्चारण करना॰। नवरं सम्यक्त्वका सम्यक्त्वदंडसें उच्चार करना॰ नवरं इतना विशेष है कि, सम्यक्त्वकी अवधिमें 'जावज्जीवाए' यह पाठ न कहना॰ किंतु, 'मासं ठम्मासं वरिसं' इत्यादि कहना. शेष व्रतोंमें जी जावज्जीवाएके स्थानमें 'मासं ठम्मासं वरिसं' इत्यादि कहना॰ ॥

अथ प्रतिमोद्वहनविधिः ॥ यावज्जीवतक नियम स्थिरीकरण प्रतिज्ञा जो है, तिसको प्रतिमा कहते हैं॰ तिनमें कालादिमें नियमव्यवछेद नही है॰। ते प्रतिमा एकादश (११) गृहस्थोंकी हैं.। तद्यथा ॥

" ॥ दंसण १, वय २, सामाइय ३, पोसह ४ पमिमाय ५, बंज ६, अचित्ते ७, ॥ आरंज ८, पेस ९, उद्दिठ, वज्जाए १०, समणजूए य ११, ॥ १ ॥ "

अर्थः—तहां जिस प्रतिमामें मासतक श्रावक निःशंकितादि सम्यग् दर्शनवाला होवे, सा प्रथम दर्शनप्रतिमा १. व्रतधारी द्वितीया २. कृतसामायिक तृतीया ३. अष्टमी चतुर्दश्यादिमें चतुर्विध पौषध करना, चतुर्थी ४. पौषधकालमें, रात्रिकी आदि प्रतिमा, अंगीकार करनी, अस्नान, प्रासुकभोजी, दिनमें ब्रह्मचारी, रात्रिमें परिमाण करे और कृत पौषध तो, रात्रिमें भी ब्रह्मचारी, इति पंचमी ५. सदा ब्रह्मचारी षष्ठी ६. सचित्ताहारवर्जक सप्तमी ७. आप आरंभ नही करना, अष्टमी ८. नौकरोंसें आरंभ नही करावना, नवमी ९. उद्दिष्टकृताहारव र्जक, क्षुरमुंडित, शिखासहित, वा निराधारीकृतध नका, पुत्रादिकोंको बतलानेवाला, इति दशमी १०. क्षुरमुंडित, लुंचितकेश, वा रजोहरणपात्रधारी, साधु समान, निर्ममत्व, अपनी जातिमें आहारादिकेवास्ते विचरे, इतिएकादशी. ॥ ११ ॥

यहां पहिली एक मास, दूसरी दो मास, तीस री तीन मास, एवं यावत् इग्यारहमी इग्यारह मास पर्यंत. तथा जो अनुष्ठान, पूर्व प्रतिमामें कहा है, सोही अनुष्ठान, आगेकी सर्व प्रतिमायोंमें जानना. इनमें वितथ प्ररूपणा अश्रद्धानादि करना, सो अति चार है. । तिनमें पहिली 'दर्शन प्रतिमा' तिसमें नंदि, चैत्यवंदन, क्षमाश्रमण, वासक्षेप, इनोंका विधि

दर्शनप्रतिमाके अभिलापसें सोही पूर्वोक्त रीतीसें जानना. और दंडक ऐसें हैं ।

"॥अहणं भंते तुह्माणं समीवे, मिछत्तं, दवओ वजिज्जं,पच्चरकामि, दंसणपडिमं, उवसंपज्जामि, नो मे कप्पइ,जाप्पभिइं अन्नउत्थिए वा, अन्नउत्थिअदेवयाणि वा, अन्नउत्थिअपरिग्गहिआणि वा, अरिहंतचेइआणि वा, वंदित्तए वा, नमंसित्तए वा, पुव्विअणालत्तेणं आलवित्तए वा, संलवित्तए वा, तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा दाउं वा, अणुप्पयाउं वा, तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि, तहा अईअं निंदामि, पडुप्पन्नं संवरेमि, अणागयं पच्चरकामि, अरिहंतसरिकअं, सिद्धसरिकअं, साहुसरिकअं, अप्पसरिकअं, वोसिरामि, तहा दवओ खित्तओ कालओ भावओ, दवओणं एसा दंसणपडिमा, खित्तओणं इहेव वा अन्नत्थ वा, कालओणं जाव मास, भावओणं जाव गहेणं न गहिज्जामि, जाव छलेणं न छलिज्जमि, जाव सन्निवाएणं नाभिभविजामि, ताव मे एसा दंसणपडिमा ॥"

शेषं पूर्ववत् । प्रदक्षिणात्रयादिक, दर्शनप्रतिमा स्थिरीकरणार्थं कायोत्सर्गादि. यहां अभिग्रह मासातिक यथाशक्ति आचाम्लादि प्रत्याख्यान करना, तीनों संध्यामें विधिसें देवपूजन करणा. पार्श्व

स्यादिवंदनका परिहार करना. शंकादि पांच अतिचारोंका त्याग करना. राजाभियोगादि ठ (६) कारणोंसें भी यह दर्शन प्रतिमा नही त्यागनी. ॥ इतिदर्शनप्रतिमा. ॥ १ ॥

अथ दूसरी व्रतप्रतिमा, सा, मास दो तक यावत् निरतिचार पांच अणुव्रत पालनविषया, गुणव्रत ३, शिक्षाव्रत ४, इनका पालना भी साथही जानना. अर्थात् दो मासपर्यंत निरतिचार द्वादश (१२) व्रतोंका पालना. यहां नंदिक्षमाश्रमणादि तिसतिस प्रतिमाके अभिलापसें पूर्ववत्। प्रत्याख्यान नियम चर्यादि सर्व तेसेंही जानने. दंमक भी तिसके अभि लापसें सोही जानना. ॥ इतिव्रतप्रतिमा ॥ २ ॥

अथ तीसरी सामायिक प्रतिमा, सा, तीन मास तक उभयसंध्यामें सामायिक करनेसें होती है. शेष नंदिनियम व्रतादिविधि सोइ अर्थात् पूर्वोक्तही जान ना. और दंडक सामायिकके अभिलापसें कहना. ॥ इतिसामायिकप्रतिमा ॥ ३ ॥

अथ चौथी पौषधप्रतिमा, सा, चार मास यावत् अष्टमी चौदशको चार प्रकारके आहारके त्यागमें रक्तको चार प्रकारके पौषधके करनेसें होती है. इत्यादिभेदसें दो आदि मासपर्यंत इस कथनसें यथाशक्ति सूचन किइ गइ. यहां नंदिव्रत नियमा

दिविधि सोही और दंरुक.तिसके (पौषधप्रतिमाके)
अनिलापसें कहना. ॥ इतिपौषधप्रतिमा ॥ ४ ॥

ऐसें पांचमासादिकालवाली शेषप्रतिमायोमें जी
यही पूर्वोक्त विधि है. नंदिक्षमाश्रमण दंरुकादि
तिसतिस प्रतिमाके अनिलापसें. व्रतचर्या सोही
है, परं संप्रतिकालमें, पर्यायसें, वा संहननकी शिथि
लतासें, पांचमी प्रतिमासें लेके इग्यारहमीतक प्रति
माके अनुष्ठानका विधि शास्त्रोंमें नहि दिखताहै
प्रतिमाका आरंन शुन मुहुर्तमें करना. ॥ इति देश
विरतिसामायिकारोपणविधिः ॥

उपधान विधि ॥

श्रुतसामायिकारोपणविधि कहते हैं. ॥ तहां यति
योकों श्रुतसामायिकारोपण, योगोद्वहनविधिसें होता
है. उनका श्रुतारोपण, आगम पाठसें होता है. और
योगोद्वहन आगमपाठ रहित एसे गृहस्थोंको, श्रुत
सामा यिकारोपण, उपधानोद्वहनसें होता है. सो श्रु
तारो पण, परमेष्ठिमंत्र, ईर्यापथिकी, शक्रस्तव, चैत्यस्त
व, चतुर्विंशतिस्तव श्रुतस्तव, सिद्धस्तवादि पाठकरके
होता है. ॥

उपधीयते ज्ञानादि परीक्ष्यते अनेनेत्युपधानं—जि
ससें ज्ञानादिकी परीक्षा करिये, तिसको उपधान
कहते है. अथवा चार प्रकारके संवर समाधिरूप
सुखशय्यामें उत्तम होनेसें उत्सीर्षक स्थानमें उप

धीयते स्थापन करिये, तिसको उपधान कहिये. तिस उपधानमें ७ (६) श्रुतस्कंधोंका उपधान होता है, सोही दिखाते हैं. परमेष्ठिमंत्रका १, ईर्यापथिकीका २, शक्रस्तवका ३, अर्हत् चैत्यस्तवका ४, चतुर्विंशतिस्तवका ५. श्रुतस्तवका ६.

सिद्धस्तवकी वाचना उपधानविना होती है.

प्रथम परमेष्ठिमंत्र महाश्रुतस्कंधके पांच अध्ययन है, और एक चूलिका है. दो दो पदके आलावे पांच है, सात २ अक्षरके अर्हत् आचार्य उपाध्याय नमस्कार रूप तीन पद है. सिद्धनमस्कृति. रूप दूसरा पद पांच अक्षरोंका है, साधुओंको नमस्काररूप पांचमा पद नव अक्षरोंका है, एवं पांच पद. तिसके पीछे चूलिका, तिसमें दो पदरूप प्रथम आलापक सोलां (१६) अक्षरोंका है, तृतीय पदरूप दूसरा आलापक आठ (८) अक्षरोंका है, और चौथे पदरूप तीसरा आलापक नव (९) अक्षरोंका है. तहां पंचपरमेष्ठिमंत्रमें पांचो पदोंमें तीन उद्देशे है, और चूलिकामें भी उद्देशे तीन है एवं उद्देशे ६. ॥ प्रथमके पांचो पदोंमें पैंतीस (३५) अक्षर है, और चूलिकामें तेतीस (३३) अक्षर है. पांच अध्ययन ऐसें है ॥

नमो अरिहंताणं १। नमो सिद्धाणं २। नमो

आयरिआणं ३। नमो उवझायाणं ४। नमो लोए सवसाहूणं ॥ ५ ॥ एका चूलिका यथा ॥

एसो पंच नमुक्कारो; सवपावप्पणासणो, मंगलाणं च सवेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥ दो दो पदके आलापक यह है ॥

नमो अरिहंताणं। नमोसिद्धाणं ॥ १ ॥ „
नमो आयरिआणं। नमो उवझायाणं ॥ २ ॥ „
नमो लोए सवसाहूणं ॥ ३ ॥ „
एसो पंच नमुक्कारो। सवपावप्पणासणो ॥ ४ ॥ „
मंगलाणं च सवेसिं। पढमं हवइ मंगलं ॥ ५ ॥ „
सात ७ अक्षरके तीन पद यह है ॥

नमो अरिहंताणं। ७। नमोआयरिआणं। ७। नमो उवझायाणं। ७। ॥ १ ॥ „

पांच अक्षरोंका तीसरा पद "नमो सिद्धाणं। „२
पांचमां पद नव अक्षरप्रमाण "नमो लोएसवसाहूणं।३„
चूलिकामें (१६) अक्षरप्रमाण प्रथम आलापक॥
एसो पंच नमुक्कारो, सवपावप्पणा सणो ॥ १ ॥
चूलिकामें आठ अक्षर प्रमाण दूसरा आलापक„
मंगलाणं च सवेसिं ॥ २ ॥„
चूलिकामे नव अक्षर प्रकार तीसरा आलापक
"पढमं हवइ मंगलं ॥ ३ ॥„

सर्व अक्षर अडसठ (६७) तिसका उपधान ऐसें है. ॥

नंदि, देववंदन, कायोत्सर्ग, क्षमाश्रमण, वंद नक, प्रमुख नमस्कारश्रुतस्कंधके अभिलापसें पूर्व वत् जाणना. और अभिमंत्रित वासक्षेप भी पूर्व वत् जाणना. । तहां पूर्वसेवामें एकभक्तके अंतरे उपवास पांच, एवं दिन ११, तहां प्रथम नंदिदिन में एकभक्त, वा निविगइ, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एकभक्त, चौथे दिन उपवास, पांचमे दिन एकभक्त, छठे दिन उपवास, सातमे दिन एक भक्त, आठमे दिन उपवास, नवमे दिन एकभक्त, दशमे दिन उपवास, एकादशमे दिन एकभक्त. ऐसें द्वादशम तप पूर्व सेवामें करना. । तहां पंचपरमेष्ठि पदोंकी वाचना नंदिविना भी देनी. शक्रस्तवका पढना, वासक्षेपपूर्वक तीन नमस्कारोंका पढना, सर्व वाचनाओंमें जाणना. । तहां श्रेणिबद्ध आठ आचा म्ल करने, ऐसें एकोनविंशति (१९) दिन. पीछे वीसमे दिन एकभक्त, इकवीसमे दिन उपवास, वावीसमे दिन एकभक्त, तेइवीसमे दिन उपवास, चौवीसमे दिन एकभक्त, पच्चीसमे दिन उपवास. । ऐसें अष्टम तप उत्तर सेवामें. । पीछे चूलिकाकी वाचना एसो पंच यहांसें लेके हवइ मंगलं ॥

इति नमस्कारस्योपधानं॥ पीछे तिसकी वाचना, तिसका विधि यह है. ॥ पहिलां सामाचारीका पुस्तक पूजना, पीछे मुखवस्त्रिकासें मुख ढांकके

ऐर्यापथिकी (इरियावहियं) पडिक्कमके क्षमाश्रमण पूर्वक कहैं. ॥

"॥ भगवन् नमुक्कारवायणासंदिसावणियं वायणालेवावणियं वासरक्खेवं करेह। चेइयाइं च वंदावेह ॥"

ऐसें नंदि करके छवीसमें दिन एकभक्त करें, वाचना देनी. चूलिकाके चारों पदोंके सर्व उपधानोंमें प्रतिदिन अव्यापार पौषध करना, सवेरे २ पौषध पारके पुनः २ नित्य पौषध ग्रहण करना, और नमस्कार सहस्र गुणना. ॥ इतिप्रथममुपधानम् ॥ १ ॥

ऐर्यापथिकीका भी उपधान ऐसेंही है. आदिकी, और अंतकी, दोनोंही नंदि तिसके–ऐर्यापथिकीके अभिलापसें करनी. । तहां वाचनामें आठ अध्ययन, और वाचना दो,–एक पांच पदोंकी और दूसरी तीन पदोंकी; पांच पदोंकी एक चूलिका ॥

"॥ इछामि पडिक्कमिउं इरिआवहिआए विराहणाए।१। गमणागमणे । २ । पाणक्कमणे, वीयक्कमणे हरीयक्कमणे ।३। ओसाउत्तिंगपणगदगमट्टीमक्कडासंताणासंकमणे । ४ । जे मे जीवा विराहिया ।५। यह एक वाचना, द्वादशम तपके पीछे देते हैं. ॥ १ ॥

"॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया । ६ । अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया,

तस्स मिछामि डुक्कडं । ७ । तस्सउत्तरीकरणेणं, पायछित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणठाए, ठामि काउस्सग्गं।८। यह दूसरी वाचना, आठ आचाम्लके अंतमें देनी. ॥ २ ॥ इसके पीछे ॥

"॥ अन्नथ्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डूएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुछाए, ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं।२। एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो । ३ । जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि । ४ । ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि । ५ ।" यह चूलिकाकी वाचना, अंत दिनमें देनी. ॥ इतिऐर्यापथिक्याउपधानम् ॥ २ ॥

अथ शक्रस्तवका उपधान कहते हैं. ॥ तहां नंदिआदि सर्व शक्रस्तवके अभिलापसें पूर्ववत् । तथा प्रथम दिनमें एकभक्त, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एकभक्त, चौथे दिन उपवास, पांचमे दिन एकभक्त, छठे दिन उपवास,॥सातमे दिन एकभक्त; । तहां तीन संपदायोंकी प्रथम वाचना देते हैं. ॥ यथा ॥

"॥ नमुथ्थुणं अरिहंताणं जगवंताणं । १ । आइ गराणं तिथ्थयराणं सयंसंवुद्धाणं । २ । पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंमरीआणं पुरिसवरगंधह थ्थीणं । ३ । इत्येका वाचना ।

यह एक वाचना । नमुथ्थुणं । यह पद जिन्न है. । तीनोंही संपदा अनुक्रमे दो, तीन, चार पद वाली है. । पीछे एकश्रेणिकरके निरंतर सोलां (१६) आचाम्ल करने. । तिसमें पांच २ पदोंवाली तीन संपदाकी वांचना देते हैं. ॥ यथा ॥

॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगप ईवाणं लोगपज्जोअगराणं । ४ । अजयदाणं चक्खुद याणं मग्गदयाणं सरणदयाणं वोहिदयाणं ।५। धम्म दयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं । ६ । यह दूसरी वाचना।२।

पीछे फिर जी तिसही श्रेणिकरके सोलां आचा म्ल करने. । तिसमें दो तीन पदोंवाली तीन संप दाकी वाचना देनी. ॥ यथा ॥

॥ अप्पमिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमा णं । ७ । जिणाणं, जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं, वुद्धा णं वोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं । ८ । सवन्नूणं सव्व दरिसिणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वावाहमपुण राविति,सिद्धिगइनामधेयं,गणं संपत्ताणं,नमो जिणा णं जिअजयाणं । ए । " यह तीसरी वाचना ॥ ३ ॥

"॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ नविस्संतिणा गए काले ॥ संपइ अ वट्टमाणा, सवे तिविहेण वंदा मि ॥" इस अंतिमगाथाकी वाचना नी, तीसरी वाचनाके साथही देनी. ॥ इतिशक्रस्तवोपधानम्॥३॥

अथ चैत्यस्तवका उपधान कहते हैं. ॥ नंदिआ दिपूर्ववत्. । प्रथम दिने एक नक्त, दूसरे दिन उप वास, तीसरे दिन एक नक्त; पीछे श्रेणिकरके तीन आचाम्ल करने. अंतमें तीनोंही अध्ययनोंकी सम कालें एक वाचना देनी. ॥ यथा ॥

"॥ अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं, वंदण वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माण वत्तिआए, वोहिलानवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए । १ । सद्धाए, मेहाए, धीईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वट्टमाणीए, गमिकाउस्सग्गं । २ । अन्नथ्थउससिए णं–यावत्–वोसिरामि ॥ ३ ॥" यह एकही वाचना है. ॥ इति चैत्यस्तवोपधानम् ॥ ४ ॥

अथ चतुर्विंशतिस्तवका उपधान कहते हैं. ॥ नंदि, दो पूर्ववत् । प्रथम दिने एकनक्त, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एकनक्त, चौथे दिन उपवास, पांचमे दिन एकनक्त, छठे दिन उपवास, सातमे दिन एकनक्त. । एसें अष्टम तप । अंतमें प्रथम गाथाकी एक वाचना. यथा ॥

"॥ लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिथ्थयरे जिणे ।

अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली । १ । " यह एक वाचना. ॥ १ ॥

पीछे श्रेणिकरकेही बारां (१२) आचाम्ल करने. तिसके अंतमें तीन गाथाकी वाचना. ॥ यथा ॥

॥ उसन्नमजियं च वंदे, संनवमन्निणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।२। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस वासु पुज्जं च ॥ विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिंच वंदामि ।३। कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणि सुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामिरिठ्ठनेमिं, पासं तह वद्ध माणं च ।४। यह दूसरी वाचना. ॥२॥

पीछे तिस श्रेणिकरकेही तेरा (१३) आचाम्ल करने. तिसके अंतमें तीसरी वाचना ॥ यथा ॥

॥ एवं मए अन्निथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु । ५ । कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलानं समाहिवरमुत्तमं दिंतु । ६ । चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंन्नीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ " यह तीसरी वाचना. ॥ ३ ॥ इति चतुर्विंशतिस्तवोपधानम् ॥ ५ ॥

अथ श्रुतस्तवका उपधान कहते हैं. । नंदि, दो पूर्ववत्. । प्रथमदिने एकन्नक्त, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एकन्नक्त, पीछे श्रेणिकरके पांच आचाम्ल

करने. तिसके अंतमें दो गाथाओंकी और दोनों वृः
की समकालही वाचना.। तिसमें पांच अध्ययन है
तिसमें प्रथमकी दो गाथाओंके दो अध्ययन ॥ यथा

" ॥ पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवेअ
भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि । १ । तः
तिमिरपडलविद्धंसणस्स, सुरगणनरिंदमहिअस्स
सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स । २ । तीः
रा अध्यायन वसंततिलका वृत्तसें ॥ यथा ॥

॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाणपुक्ख
लविसालसुहावहस्स । को देवदाणव नरिंदगण
च्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलप्न करे पमायं । ३ ।
चौथा अध्ययन शार्दूलविक्रीडितवृत्तके पूर्वार्द्धसें । यथा

॥ लोगो जह पइठ्ठिउ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं,
धम्मो वड्ढउ सासउ विजयउ धम्मुत्तरं वड्ढउ ।४।
।५।" इति श्रुतस्तवोपधानम् ।६। इति षडुपधानानि ।

तथा सिद्धस्तवमें प्रथम तीन गाथाकी वाचवा यथा

" सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ।
लोअग्ग मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं । १ ।
जो देवाणविदेवो, जं देवा पंजली नमंसंति । तं
... देवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं । २ । इक्कोवि
दिन ए... गरो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स । संसार
गाथाकी ... नं, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥" शेष
" ॥ लोग... ॥ यथा ॥

॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिरका नाणं च निसीहि आ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिठनेमिं नमंसामि । ४ । चत्तारि अठ दस दो अ, वंदिआ जिणवरा चउव्वीसं । परमठनिठिअठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥" इत्युपधानवाचना स्थितिः ॥ अथ विस्तार, निशीथसिद्धांतसें उधृत उपधानप्रकरणसें जानना. ॥

जावार्थः–पांच नंमस्कारमें पांच उपवासका उपधान होता है, आठ आचाम्ल तथा अंतमें एक अष्टमतप, और बत्तीस आचाम्ल. चैत्यस्तवमें एक उपवास, और तीन आचाम्ल करणे. । चतुर्विंशतिस्तवमें एक षष्टतप, एक उपवास, और पंचवीस (२५) आचाम्ल करणे. । श्रुतस्तवमें एक उपवास, और पांच आचाम्ल. । तीर्थंकर गणधरोंने चैत्यवंदनादि सूत्रमें यह उपधान कथन करा है. ॥ ५ ॥ व्यापाररहित, विकथाविवर्जित, रौद्र ध्यान रहित, विश्राम रहित उपयोगसहित, उपधान करे, ॥ ६ ॥ यह उत्सर्ग कहा. अब अपवाद कहते हैं. अथ कदापि उपधानवाही बालक होवे, वा वृद्ध होवे, वा शक्तिरहित तरुण होवे तो, अपनी शक्तिप्रमाण उपधान प्रमाण पूर्ण करे. । रात्रिभोजनकी विरति, चतुर्विधाहार, वा त्रिविधाहार, वा द्विविधाहार प्रत्याख्यानरूप करे; नवकारसहिआदि पच्चरकाण कर

के. । एक शुरू आंबिलकरे, अथवा इतर दो आंबि लकरनेसें, एक उपवास होता है. पणतालीस (४५) नवकारसहि करनेसें ;एक उपवास होता है. चौवीस (२४) पोरसि करनेसें, और दश (१०) साढपोरसी करनेसें, एक उपवास होता है. तीन निवि करनेसें, और चार एकलठाणे करनेसें, एक उपवास होता है. आचरणासें सोलां (१६) पुरिमढ कर नेसें उपवास होता है. चार एकासनेसें, और आठ बियासणे करनेसें जी, उपवास होता है. अर्थात् उपवासका जो फल है, सोही प्रायः पूर्वोक्त तपका फल है. इसवास्ते जिसकी पूर्वोक्त उपधानकी शक्ति न होवे सो, इन तपोंमेसें किसी जी तपके करनेसें उपधान प्रमाण पूर्ण करे. ॥ ११ ॥

गौतमस्वामी कहते हैं. हे जगवान् ! ऐसें करते हुए प्राणीको वहोत काल होवे तो, कदापि नवकारवर्जित जि, तिसका मरण हो जावे, तो नवकार वर्जित सो प्राणी, अनुत्तर, निर्वाण, कैसें प्राप्त करें ? तिसवास्ते नवकार प्रथमही ग्रहण करो, उपधान होवे, वा न होवे. ॥ १३ ॥

महावीर स्वामी कहते हैं. हे गौतम ! जो प्राणी जिस समयमें व्रतोपचार (उपधानारंज) करे, तिसही समयमें, तूं जिनाज्ञाकरके ग्रहण करा हैं व्रतार्थ जिसनें, ऐसा तिसको जाण. ॥ १४ ॥ ऐसें जिसने

उपधान करा है, सो प्राणी नवांतरमें सुलनबोधि होतेंहैं. और उपधानके अध्यवसायवाले नी, हे गौतम! आराधक होतें है. परंतु हे गौतम! नक्ति वाला नी प्राणी, जो उपधानविना श्रुतको ग्रहण करे, तिसको नही ग्रहण करनेवालेके सदृश जाणना. तथा सो जीव, तीर्थंकरकी, तीर्थंकरके वचनोंकी, संघकी, और गुरुजनकी, आशातना करता है. सो आशातना बहुल प्राणी, हे गौतम संसारमें नमण करता है. उपधानवीना नवकार जिसने पढ लिया है, तिसको नी उपधान पीछेसेनी करनेसें बोधि, (जिनधर्मप्राप्ति) सुलन कही हैं. यह उपधानकरके प्रधान, निपुण, संपूर्ण नी वंदन विधान, जिनपूजा, पूर्वकही श्रुतोक्त नीतिकरके पढना. तिस पंच मंगलको स्वर, व्यंजन, मात्रा, बिंदु, पदछेद, स्थानोंकरके शुरू पढके, चैत्यवंदन सूत्रको, और अर्थको विशेषकरके जाणना. तिसमें जहां सूत्रविषे, वा अर्थविषे, संदेह होवे तो, तिसको बहुशः विचारके संपूर्ण संदेहरहित करना.॥२१॥

अथ शुनतीथि, करण, मुहूर्त्त, नक्षत्र, जोग, लग्नमें, चंद्रबलके अनुकूल हुए, कल्याणकारी प्रशस्त समयमें, अपने विनवानुसार नगवान्‌का पूजन कर, परम नक्तिसें विधिपूर्वक साधुवर्गको प्रतिलानके, अतिसमूह सहित, हर्षवशसें खडे हुवें हैं,

पुलक (रोम) जिसके, श्रद्धासंवेगविवेक परम वैराग्ययुक्त, निविकरागद्वेषमोहमिथ्यात्वमलरूप कलंक रहित, अति उल्लसायमान, निर्मल अध्यवसाय करके, अनुसमय, त्रिनुवनगुरु जिन जगवानकी प्रतिमामे स्थापन किये हैं, नेत्र, और मन जिसने, तथा जिन चंद्रको वंदना करनेसें मैं धन्य हूं ऐसें मानते हुए, अपने मस्तकके ऊपर रचा है करकमलरूप मुकुट जिसने, जंतुरहित स्थानमें पदपदमें निःशंक सूत्रार्थको जावते (विचारते) हुए, ऐसें पूर्वोक्त विशेषणवाले उपधानवाहिने, जिननाथके कथन करे गंजीर समयसिद्धांतमें कुशल, शुजचारित्रसंयुक्त, अप्रमादादि वहुविध गुण संयुक्त, ऐसें गुरुके साथ, चतुर्विध संघसंयुक्त, विशेषसें निजवंधु सहित, इस निपुणविधिकरके जिनविंवको वंदना करनी. ॥ २ए ॥

तदनंतर उपधानवाही, गुणाढ्यसाधुओंको परम जक्तिसें वं[illegible] करे. तथा साधर्मिओंको यथायोग्य प्रणामा[illegible] [illegible]ने वहुमोलके उत्कृष्ट वस्त्र प्रदान पूर्वक[illegible] [illegible]वाहिने, श्रीसंघका जारी

जिस[illegible] [illegible]र जान्या है गंजीर सिद्धां
समयमें[illegible] [illegible]गुरुने, आक्षेपिणी, क्षितार्थ
जिसनें, ऐं[illegible] [illegible]निर्वेदिनी, यद चार प्रकारसने

धर्मकथा श्रद्धासंवेग साधनेमें निपुण जारी प्रबंध करके करनी. ॥ ३३ ॥

पीछे तिस जव्यजीवको श्रद्धासंवेगमें तत्पर जाण के, निपुणमति आचार्य, चैत्यवंदनादि करनेमें यह वचन कहे. ॥ ३४ ॥

जो जो देवानुप्रिय ! निज जन्म साफल्यताको प्राप्त करके तैंने आजसें लेके जावजीवपर्यंत तिनों ही कालमें एकाग्र सुस्थिर चित्तकरके अर्हत्प्रतिमा को वंदना करनी. क्योंकि, क्षणजंगुर मनुष्यपणेमें यही सार है, तहां तैंने पुर्वान्हमें जिनप्रतिमाको और साधुयोंको वंदना करकेही जोजन करना कल्पे, और अपराह्नमें जी फिर वंदना कर केही सोना कल्पे, अन्यथा नही. ॥ ३७ ॥

ऐसें अजिग्रहबंधन करके पीछे वर्द्धमान विद्यासें अजिमंत्रके गुरु सात मुष्ठीप्रमाण गंध (वासक्षेप) ग्रहण करे. पीछे तिस उपधानवाहीके मस्तकऊपर " नित्थारगपारगो हविज्ज तुमं " ऐसें उच्चारण कर ता हुआ गुरु, नमस्कारपूर्वक निक्षेप करे (माले) इस विद्याके प्रजावके जोगसें निश्चय यह जव्य प्रारंजित कार्योंका शीघ्र निस्तार करनेवाला, और पार होनेवाला होवे. ॥ ४१ ॥

अथ चतुर्विध संघजी, तूं, निस्तारक पारग हो,

तूं धन्य है. सलक्षण है, इत्यादि बोलता हुआ, तिसके मस्तकऊपर वासक्षेप करे. ॥ ४३ ॥

पीछे जिनप्रतिमाके पूजादेशसें सुरभिगंधसंयुक्त अम्लान श्वेतमाला ग्रहण करके, गुरु अपने हाथों सें तिस उपधानवाहीके दोनों खंधोंऊपर आरोपण करता हुआ, शुद्ध चित्तकरकेनिसंदेह ऐसा वचन कहे. ॥ ४४ ॥

अहीतरें प्राप्त किया निज जन्म जिसने, तथा संचय करा है अतिभारी पुण्यका समूह जिसने, ऐसें जो जो जव्य! तेरी नरकगति, और तिर्यग्गति, अवश्यमेव बंद होगई. हे सुंदर! आजसें लेके, तूं, अपयस, नीच गोत्रोंका बंधक नही है. तथा जन्मांतरमें जी, यह पंचनमस्कार तुझको दुर्लज नही है. पांच नमस्कारके प्रजावसें जन्मांतरमें जी तुझको प्रधान जाति, कुल, आरोग्य संपदाएं प्राप्त होवेगी. और इसके प्रजावसें मनुष्य कदापि संसारमें दास, प्रेष्य, दुर्जग, नीच. और विकलेंद्रिय नही होते हैं. किं बहुना. जोइस विधिसें इस श्रुतज्ञानको पढके श्रुतोक्त विधिसें शुद्ध आचारमें-क्रिया करे, वे, यदि तिसही जवमें उत्तम निर्वाणको प्राप्त न होवे तो, अनुत्तर ग्रैवेयकादि देवलोकोंमें चिरकाल क्रीडा करके उत्तम कुलमें उत्कृष्ट प्रधान सर्वांगसुंदर प्रकट सर्वकला प्राप्त करी

हैं जिनोंने, ऐसेलोकोंके मनको आनंद देनेवाले होके, देवेंद्रसमान ऋद्धिवाले, दयामें तत्पर, दानविनयसें युक्त, कामभोगोंसें विरक्त, संपूर्ण धर्मके अनुष्ठानसें, शुभ ध्यानरूप अग्निसें चार घातिकर्मरूप इंधन को दग्ध किये हैं—जिनोंनें, ऐसें महासत्व, निर्मल केवल ज्ञान, सर्व मलकर्मसें रहित, होकर शीघ्र सिद्ध होते हैं. ॥ ५३ ॥ यह निर्मल फल जाणके बहोत मान देने योग्य जो देव, सोही भये सूरि, ऐसें जो जिन तिनके वचनसें यह उपधान महानिशीथ सूत्रसें सिद्ध करो.—इस अंतिम गाथामें प्रकरणकर्त्ता श्रीमान देवसूरिने भगवान्के 'महमाणदेवसूरिस्स' इस विशेषणद्वारा अपना भी नाम, सूचन करा है. ॥ ५४ ॥ इत्युपधानप्रकरणभावार्थः॥

॥ इत्युपधानविधिः ॥

अथ मालारोपण विधि कहते हैं. ॥ तहां पिठलाही नंदि क्रम जाणना. । और इतना विशेष है कि, मालारोपनतपके पूर्ण हुए तत्कालही, वा दिनांतरमें होता है तहां यह विधि है. ॥ मालारोपणसें पहिले दिनमें साधुओंको अन्न पान वस्त्र पात्र वसति पुस्तक दान देवे, संघको भोजन देवे, वस्त्रादिकसें संघकी पूजा करे, शुभ तिथि वार नक्षत्र लग्नमें, दीक्षाके उचित दिनमें, परम युक्तिसें बृहत्स्नात्रविधिसें जिनपूजा करे, माता पिता परिजन साधर्मि

कादिकोंको एकठे करे, पीछे मालाग्राही कृतउचित वेष, कृतधम्मिल, उत्तरासंगवाला, निजवर्णानुसारसें जिनोंपवीत उत्तरीयादिधारी, सज करके प्रचुरगंधादि उपकरण अक्षत नालिकेर हाथमें लेके पूर्ववत् समवसरणको तीन प्रदक्षिणा करे. । पीछे गुरुके समीपे क्षमाश्रमणपूर्वक कहे ॥ "इच्छाकारेण तुम्हे अम्हं पंचमंगलमहासुअरकंध इरिआवहिआ सुअरकंध, सक्कथ्थयसुअरकंध,चेइअथ्थयसुअरकंध,चउवीसथ्थयसुअरकंध, सुयथ्थयसुअरकंध, अणुजाणावणिअं,वासरकेवं करेह" ॥ पीछे गुरु जी अभिमंत्रित वासक्षेप करे. । फिर श्राद्ध क्षमाश्रमणपूर्वक कहे "चेइआइं च वंदावेह" पीछे वर्द्धमानस्तुतियोंसें चैत्यवंदन कराना, शांतिदेवादि स्तुति पूर्ववत्. फिर शक्रस्तव अर्हणादि स्तोत्र कहना. पूर्ववत्. । पीछे उठके "पंचमंगलमहासुअरकंध पडिक्कमणसुअरकंध भावारिहंतथ्थय ठवणारिहंतथ्थय चउवीसथ्थय नाणथ्थय सिद्धथ्थय अणुजाणावणिअं करेमि काउस्सग्गं अन्नथ्थ उससिएणं–यावत्–अप्पाणं वोसिरामि" कहके चतुर्विंशतिस्तव चिंतन करे, पारके प्रकट चतुर्विंशतिस्तव पढे. । गुरु तीनवार परमेष्टिमंत्र पढके आसन ऊपर बैठ जावे, संघ और परिजनसहित श्राद्धको जों जो देवाणुपिया, संपाविअ निययजम्मसाफल्लं ॥ तुमए अज्जप्पभिइं, तिक्कालं जावजीवाए ॥ १ ॥

वंदे अवाइं चेइआइं, एगग्गसुथिरचित्तेणं ॥
खणनंगुराओ मणुअ, त्तणाउं इणमेव सारंति ॥ २ ॥
तथ्थ तुमे पुव्वण्हे, पाणंपि न चेव ताव पायवं ॥
नो जाव चेइआइं, साहूविअ वंदिआ विहिणा ॥ ३ ॥
मझण्हे पूणरवि, वंदिऊण निअमेण कप्पए जुत्तुं ॥
अवरण्हे पुणरवि, वंदिऊण निअमण सुअणंति॥४॥

इत्यादि महानिशीथमध्यगत वीस गाथामें कही हुई देशना देके, तीन संध्यामें चैत्यवंदन साधुवंदन करनेके अभिग्रह विशेषोंको देवे. पीछे वासमंत्रके सात गंधकी मुष्टी " निथ्थारगपारगो होहि " ऐसें कहता हुआ गुरु, तिसके शिरमें प्रक्षेप करे. । पीछे अक्षतसहित वासक्षेपको मंत्रे । तिस समयमें सुरभिगंध अम्लान श्वेत पुष्पोंके समूहसें ग्रंथन करी हुई मालाको जिनप्रतिमाके पगोंऊपर स्थापन करे। सूरि खमा होके अभिमंत्रित वासको जिनचरणोंके ऊपर क्षेप करे, पास रहे साधु साध्वी श्रावक श्राविका सबको गंधाक्षत देवे. । श्राद्ध नमस्कारअनुज्ञा केवास्ते तीन प्रदक्षिणा देवे. । तब गुरु " निछारग पारगो होहि गुरुगुणेहिं वुड्ढाहि " ऐसें कहे. और जन (संघ) " पूर्णमनोरथवाला तूं हुआ है, तूं धन्य है, तूं पुण्यवान् है " ऐसें कहते हुए उनके उपर गुरुसंघादि वासक्षेप करे। पीछे फिर श्राद्ध समवसरणको तीन प्रदक्षिणा देवे। पीछे गुरु और

सम वसरणको तीन प्रदक्षणा देवे, पीछे गुरुसंघसहित समवसरणको तीन प्रदक्षिणा देवे, पीछे नमस्कारा दिश्रुतस्कंधअनुज्ञापनार्थ कायोत्सर्ग करे, एकलोग सकाकाउसग करें, पारके प्रगट लोगस्स कहे. पीछे माला धारण करनेवाला तिसके स्वजनोंकेसाथ प्रतिमाके आगे जाके शक्रस्तव पढके "आणुजा णउ मे जयवं अरिहा" ऐसें कहके जिनपादऊपरि पूर्व स्थापित मालाको लेके निजबंधुके हाथमें स्थापन करके नंदिके समिप आय कर, श्राद्ध, मालाको गुरुसें मंत्रित करावे, । पीछे गुरु खमा होकर उपधानविधिका व्याख्यान करे. सो श्राद्ध जी, खमा होके श्रवण करे. "परमपयपुरिपहि" इत्यादि मालाकी गाथा महिमां दर्शकसें गुरु देशना करे. ।

तत्तो जिणपडिमाए, पूआदेसाओ सुरव्विगंवहुं ॥
अमिलाण सिअदामं, गिएिहअ गुरुणा सहत्थेणं॥१॥
तस्सोजयखंधेसु, आरोवंतेण सुद्धचित्तेण ॥
निसंदेहं गुरुणा,वत्तवं एरिसं वयणं ॥ २ ॥
जो जो सुलद्धनिअजम्म, निचिअअइगरुअपुन्नपब्भार॥
नारयतिरिअगईओ, तुज्झावस्सं निरुद्धाओ ॥ ३ ॥
नो वंधगोसि सुंदर, तुममित्तो अकयनीअगुत्ताणं ॥
नो डुल्लहो तुह जम्मं, तरेवि एसो नमुक्कारो ॥ ४ ॥
पंचनमुक्कारजावओ अ जम्मंतरेवि किर तुज्झ ॥
जाइकुलरूवग्ग, संपयाओ पहाणाओ ॥ ५ ॥

अन्नं च इमाओ चिअ,न हुंति मणुआ कया वि जीअलोए
दासा पेसा डुन्नगा, नीआ विगलिंदिआ चेव ॥ ६ ॥
किं वहुणा जे इमिणा, विहिणा एअं सुअं अहिजित्ता॥
सुअन्नणिअ विहाणेणं, सुऊे सीले अनिरमिज्जा॥७॥
नो ते जइ तेणंचिअ, नवेण निवाणमुत्तमं पत्ता ॥
तोणुत्तर गेविज्जाइएसु सुइरं अन्निरमेउं ॥ ७ ॥
उत्तमकुलम्मि उक्किठ, लठसवंगसुंदरापयरूा ॥
सवकलापत्तष्ठा, जणमणआणंदणा होउं ॥ ए ॥
देविंदोवमरिऊी, दयावरा दाणविणयसंपन्ना ॥
निविणकामनोगा, धम्मं सयलं अणुठेउं ॥ १० ॥
सुहझाणानलनिदद्ध, घाइकम्मिंधणा महासत्ता ॥
उप्पन्नविमलनाणा, विहुयमला ऊत्ति सिझंति ॥११॥

यह गाथा तीनवार गुरु कहे । इन गाथायोंका नावार्थ उपधानप्रकरणनावार्थमें लिख दिया है. ॥

पीठे तिसके स्कंधमें मालाप्रक्षेप करनी. ॥ पीठे श्राऊवर्ग आरात्रिक (आरती) गीननृत्यादि वहुत करे. । उपधानवाही श्रावकने तिस दिनमें आचाम्लादि तप करना; यदि पौषधशालामें मालारोपण होवे, तदा संघसहित जिनमंदिरमें जावे, चैत्यवंदना करके फिर पौषधागामें आयकर मंकलीपूजादि करे. ॥ इस उपधानविधिको निशीथ, महानिशीथ, सिद्धांतके पढनेवालोंनेश्रुतसामायिकसमान माना है. और निशीथ महानिशथके तिरस्कार

करनेवालोंने नही अंगीकार करा है. तिनोंने तो प्रतिमोद्वहनविधिकोंही श्रुतसामायिक कथन करा है. ॥ माला भी कितनेक कौशेय पट्टसुत्रमयी (रेशमी) स्वर्ण, पुष्प, मोति, माणिक्य गर्भित, आरोपते हें. और कितनेक श्वेत पुष्पमयी आरोपते हैं. तिसमें तो, अपनी संपत्तिही प्रमाण है.

॥ इति श्रुतसामायिक विधिः ॥

॥ अथ श्रावक दिन चर्या ॥

दो मुहुर्त्त शेष रात्रि रहे श्रावक सूता ऊठे, मल मूत्रकी शंका दूर करे, और शुचि होकर पवित्र आसनऊपर स्थित हुआ यथाविधिसें परमेष्टि महा मंत्रका जाप करे. पीछे कुल, धर्म, व्रत, श्रद्धाका, विचार करके, और स्तोत्रपाठसंयुक्त चैत्यवंदन करके, अपने घरमें, वा पौषधशालादि में स्थित होकर, प्रतिक्रमणादि करे. । पीछे प्रत्युष कालमें अपने घरमें स्नान करके, शुचि होके, शुचि वस्त्र पहिरके, संसारिक सुख, और मोक्ष देनेवाले, अरिहंतकी पूजा करे. । तिसवास्ते जिनार्चनविधि, अर्हत्कल्पके कथनानुसारें कहते हें ॥

॥ अर्हत् कल्पोक्त जिनपूजा विधि ॥

श्राद्ध प्रातगुरुउपदेश, जिनघरमें, वा वडे मंदिरमें, शिखा बांधी, शुचि वस्त्र पहरि, उत्तरासंग

करी, स्ववर्णानुसार जिनोपवीत उत्तरीय उत्तरासंग धारी, मुखकोश बांधी, एकाग्रचित्त, एकांतमें जिन पूजन, करे. । प्रथम जल, पत्र, पुष्प, अक्षत, फल, धूप, अग्नि, दीपक, गंधादिकोंको निःपापता करे. ॥

॥ जलादिकोंकी शुद्धीके मंत्र ॥

"॥ ॐ आपोऽप्काया एकेंद्रिया जीवा निरवद्यार्हत्पूजायां निर्व्यथाः संतु, निरपायाः संतु, सद्गतयः संतु, न मेस्तु संघट्टनहिंसापापमर्हदर्चने ॥" इति जलाभिमंत्रणम् ॥

"॥ ॐ वनस्पतयो, वनस्पतिकाया जीवा, एकेंद्रिया, निरवद्यार्हत्पूजायां, निर्व्यथाः संतु, निरपायाः संतु, सद्गतयः संतु, न मेस्तु संघट्टनहिंसापापमर्हदर्चने ॥" इतिपत्रपुष्पफलधूपचंदनाद्यभिमंत्रणम् ॥

"॥ ॐ अग्नयोऽग्निकायाजीवा, एकेंद्रिया, निरवद्यार्हत्पूजायां निर्व्यथाःसंतु, निरपाया संतु, सद्गतयः संतु, नमेस्तु संघट्टनहिंसा पापमर्हदर्चने ॥" इति वन्हिदीपाद्यभिमंत्रणम्॥ सर्वका अभिमंत्रण वासक्षेपसें तीनवार करना. ॥ पीछे । पुष्पगंधादि हाथमें लेके ॥

"॥ ॐ त्रसरूपोहं, संसारिजीवः, सुवासनः, सुमेध एकचित्तो, निरवद्यार्हदर्चने निर्व्यथो भूयासं, निःपापो भुयासं, निरुपद्रवो भुयासं, मत्सं श्रिता अन्येपि संसारिजीवा निरवद्यार्हदर्चने निर्व्यथा भूयासुः, निःपापाभ्रूयासुः ॥"

ऐसें कहके अपने आपको तिलक करना, पुष्पादिकरके अपना शिर अर्चन करना. ॥ फिर पुष्प अक्षतादि हाथमें लेके ॥

" ॐ पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतित्रसकाया एकद्वित्रिचतुः पंचेंद्रियास्तिर्यङ्मनुष्यनारकदेवगतिगताश्चतुर्दशरज्वात्मकलोकाकाशनिवासिनः इह जिनार्चने,कृतानुमोदनाः संतु, निःपापाः संतु,निरपायाः संतु, सुखिनः संतु प्राप्तकामाः संतु, मुक्ताः संतु, बोधमाप्नुवंतुः ॥ "

ऐसें पढके दशोंदिशाओंमें गंध, जल, अक्षतादि क्षेप करना. पीछे ।

शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवंतु भूतगणाः॥
दोषा प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखीभवंतु लोकाः ॥ १ ॥
सर्वेपि संतु सुखिनः, सर्वे संतु निरामयाः ॥
सर्वे भद्राणि पश्यंतु, मा कश्चिद्दुःखभाग् भवेत् ॥२॥

यह आर्या और अनुष्टुप् छंद पढने. ॥ पीछे ॥

" ॐ भूतधात्री पवित्रास्तु अधिवासितास्तु सुप्रोक्षितास्तु ॥ " ऐसें पढके प्रथम लीपी हुई भूमिमें जलसें सेचन करे. ॥ पीछें ॥

" ॐ स्थिराय शाश्वताय निश्चलाय पीठाय नमः॥"

ऐसें पढके धोयके चंदनसें लेपन करके स्वस्तिकसें अंकित ऐसा पूजापट्ट (स्थालादि) स्थापन करे, और चैत्यमें तो स्थिरबिंब होनेसें इन दोनों

मंत्रोंसें नूमिजलपट्टादि अधिवासन करने. पीछे. ॥
"॥ ॐ अत्र क्षेत्रे, अत्र काले, नामार्हंतो, रूपार्हंतो, ड्व्यार्हंतो, नावार्हंतः समागताः, सुस्थिताः, सुनिष्ठिताः, सुप्रतिष्ठिताः संतु ॥"

ऐसें पढके अर्हत् प्रतिमाको स्थापन करे निश्चलबिंबके हुए, चरण अधिवासन करे. ॥ पीछे अंजलि में पुष्प लेके ॥

"॥ ॐ नमोर्हद्भ्यः सिद्धेन्यस्तीर्णेन्यस्तारकेन्यो बुद्धेन्यो बोधकेन्यः सर्वजंतुहितेन्यः इह कल्पन बिंबे नगवंतोर्हतः सुप्रतिष्ठिताः संतु ॥"

ऐसें मौन करके कहके नगवत्के चरणोपरि पुष्प स्थापन करे. । फिर नी जलार्द्र फूलोसें पूजापूर्वक कहे. ॥ यथा ॥

"॥ स्वागतमस्तु सुस्थितमस्तु सुप्रतिष्ठास्तु ॥"
पीछे फिर पुष्पानिषेक करके ॥

"॥ अर्घ्यमस्तु, पाद्यमस्तु. आचमनीय मस्तु, सर्वोपचारैः पूजास्तु ॥" इन वचनोंकरके वारंवार जिनप्रतिमाके ऊपर जलार्द्र पुष्पारोपण करे ॥ पीछे जल लेके ।

ॐ अर्हं वं । जीवनं तर्पणं हृद्यं, प्राणदं मलनाशनं ॥
जलं जिनार्चनेत्रैव, जायतां सुखहेतवे ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके जलसें प्रतिमाको अनिषेक करे.

पीछे चंदन कुंकुम कर्पूर कस्तूरी आदि सुगंध हाथमें लेके ॥

ॐ अर्हं लं । इदं गंधं महामोदं, बृहणं प्रीणनं सदा ॥
जिनार्चने च सत्कर्म्म, संसिद्ध्यै जायतां मम ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके विविध गंध जिनप्रतिमाको विलेपन करे. ॥ पीछे पुष्पपत्रादि हाथमें लेके ॥

ॐ अर्हं ढं । नानावर्णं महामोदं, सर्वत्रिदशवल्लभं
जिनार्चनेत्र संसिद्ध्यै, पुष्पं भवतु मे सदा ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके जिनप्रतिमाके ऊपर सुगंधमय विविध वर्णके पुष्प चढावे. ॥

ॐ अर्हं तं । प्रीणनं निर्मलं वर्ष्यं, मांगल्यं सर्वसिद्धिदं॥
जीवनं कार्यसंसिद्ध्यै, भूयान्मे जिनपूजने ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके जिनप्रतिमाके ऊपर अक्षत आरोपण करे. ॥ सुपारी प्रमुख फल हाथमें लेके

जायफलं स्वर्गफलं, पुण्यमोक्षफलं फलं ॥
दद्याज्जिनार्चनेत्रैव, जिनपादाग्रसंस्थितम् ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके जिनपादाग्रे फल ढोवे. ॥ पीछे धूप लेके ॥

ॐ अर्हं रं । श्रीखंडागरुकस्तूरी, द्रुमनिर्याससंभवः ॥
प्रीणनः सर्व देवानां, धूपोस्तु जिनपूजने ॥ १ ॥

यह पढके अग्निमें धूपक्षेप करे. ॥ पीछे फूल लेके।

"॥ ॐ अर्हं भगवद्भ्योर्हद्भ्यो जलगंधपुष्पाक्षत फलधूपदीपैः संप्रदानमस्तु ॐ पुण्याहं प्रीयंतां भग

वंतोर्हंतत्रिलोकस्थिताः नामाकृतिद्रव्यभावयुताःस्वाहा ॥" यह पढके फिर जिनपूजन करे. ॥ पीछे वासक्षेप लेके ॥

"॥ ॐ सूर्यसोमांगारकबुधगुरुशुक्रनैश्चरराहुकेतुमुखाग्रहाः इह जिनपादाग्रे समायांतु पूजां प्रतीछंतु ॥" ऐसें पढके जिनपादसें नीचे स्थापित ग्रहोंके ऊपर, वा स्नानपट्टके ऊपर वासक्षेप करे. ॥ पीछे ॥

"॥ आचमनमस्तु गंधमस्तु पुष्पमस्तु अक्षतमस्तु फलमस्तु धुपोस्तु दीपोस्तु ॥" ऐसें पढके क्रमसें जल, गंध, पुष्प, अक्षत, फल, धूप, दीपसें ग्रहोंका पूजन करे. ॥ पीछे अंजलिमें फूल लेके ।

"॥ ॐ सूर्यसोमांगारकबुधगुरुशुक्रशनैश्चरराहुकेतुमुखाग्रहाःसुपूजिताः संतु, सानुग्रहाः संतुं, तुष्टिदा संतु, पुष्टिदाः संतु, मांगल्यदाः संतु, महोत्सवदाः संतु ॥ " ऐसें कहके ग्रहोंके ऊपर पुष्पारोपण करे. ॥ फिर इसी रीतिकरके ।

"॥ ॐ इंद्राग्नियमनिर्ऋतिवरुणवायुकुवेरेशाननागब्रह्मणो लोकपालाः सविनायकाः सक्षेत्रपालाः इह जिनपादाग्रे समागछंतु पूजा प्रतिछंतु ॥" ऐसें कहके पूजापट्टो परि लोकपालोंको वासक्षेप करे. ॥ पीछे ॥

"॥ आचामनमस्तु गंधमस्तु पुष्पमस्तु अक्षतमस्तु फलमस्तु धुपोस्तु दीपोस्तु ॥" ऐसें पढके

क्रमसें जल, गंध, पुष्प, अक्षत, फल, धूप, दीपसें लोकपालोंका पूजन करे. ॥ पीछे अंजलिमें पुष्प लेके।

"॥ ॐ इंद्राग्नियमनिर्ऋतिवरुणवायुकुबेरेशाननाग ब्रह्मणो लोकपालाः सविनायकाः सक्षेत्रपालाः सुपूजिताः संतु, सानुग्रहाः संतु, तुष्टिदाः संतु, पुष्टिदाः संतु, मांगल्यदाः संतु, महोत्सवदाः संतु ॥" यह पढके लोकपालोपरि पुष्पारोहण करे. ॥ पीछे पुष्पांजलि लेके ॥

"॥ अस्मत्पूर्वजा गोत्रसंभवा देवगतिगताः सुपूजिताः संतु, सानुग्रहाः संतु, तुष्टिदाः संतु, पुष्टिदाः संतु, मांगल्यदाः संतु, महोत्सवदाः संतु ॥" ऐसें कहके जिनपादाग्रे पुष्पांजलिक्षेप करे. ॥ पीछे फिर भी पुष्पांजलि लेके ॥

"॥ ॐ अर्हं अर्हद्भक्ताष्टनवत्युत्तरशतदेवजातयः सदेव्यःपूजां प्रतिछंतु सुपूजिताः संतु, सानुग्रहाः संतु तुष्टिदाः संतु, पुष्टिदाः संतु, मांगल्यदाः संतु, महोत्सवदाः संतु ॥" ऐसें कहके जिनपादाग्रे अंजलिक्षेप करे. ॥

पीछे अंजलिके अग्रभागमें पुष्प धारण करके अर्हन्मंत्र स्मरण करके तिस फूलसें जिनप्रतिमाको पूजे ॥ अर्हन्मंत्रो यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं नमो अरहंताणं, ॐ अर्हं नमो सयं संबुद्धाणं, ॐ अर्हं नमो पारगयाणं ॥"

यह त्रिपद मंत्र श्रीमत् अर्हन् जगवंतोंके आगे नित्य स्मरण करे. कैसा है मंत्र ? देवलोकादि सुख और मोक्षका, देनेवाला, सर्व पापोंका नाश करने वाला है.। विशेष इतना है कि, यह मंत्र अपवित्र पुरुषोंने, उपयोगरहित पुरुषोंने, नही स्मरण करना. तथा उच्चशब्दसें नही स्मरण करना, नास्तिकोंको और मिथ्यादृष्टियोंको नही सुनाना.। यह पूर्वोक्त अर्हन्मंत्र एकसौआठ (१०८) वार, वा तदर्द्ध ५४ वार जपना ॥ पीछे दो पात्रोंमे नैवेद्य धरे. पीछे एक पात्रमें जल लेके।

'ॐ अर्हं । नानापक्वरससंपूर्ण, नैवेद्यं सर्वमुत्तमं।
जिनाग्रे ढौकितं सर्व, संपदे मम जायतां ॥ १ ॥

यह पढके जलढोकना ॥ फिर दूसरा जल लेके।

"॥ ॐ सर्वेगणेशक्षेत्रपालाद्याः सर्वेग्रहाः सर्वे दिक्पालाः सर्वेऽस्मत्पूर्वजोद्भवादेवाः सर्वे अष्टनवत्युत्त रशतं देवजातयः सदेव्योऽर्हद्भक्ताः अनेन नैवेद्येन संतर्पिताः संतु, सानुग्रहाः संतु, तुष्टिदाः संतु, पुष्टि दाः संतु, मांगल्यदाः संतु, महोत्सवदाः संतु ॥"

ऐसें कहके दूसरे नैवद्यके पास जल ढोकन करे. ॥

यो जन्मकाले पुरुषोत्तमस्य, सुमेरुशृंगे कृतमज्जनैश्च ॥
देवैःप्रदत्तःकुसुमांजलिस्स,ददातुसर्वाणिसमीहितानि
राज्याभिषेकसमये त्रिदशाधिपेन ।
छत्रध्वजांक तलयोः पदयोर्जिनस्य ॥

क्षिप्तोतिभक्तिभरतः कुसुमांजलिर्यः ।
स प्रीणयत्वनुदिनं सुधियां मनांसि ॥ १ ॥
देवेंद्रैः कृतकेवले जिनपतौ सानंदभक्त्यागतैः ।
संदेहव्यपरोपणक्षमशुभव्याख्यानबुद्ध्याशयैः ॥
आमोदान्वितपारिजातकुसुमैर्यः स्वामिपादाग्रतो ।
मुक्तस्स प्रतनोतु चिन्मयहृदां भद्राणि पुष्पांजलिः॥२।
इन तीनों वृत्तोंकरके तीन वार पुष्पांजलिक्षेप करे.॥
लावण्यपुण्यांगभृतोर्हतोय,स्तद्दृष्टिभावं सहसैव धत्ते।
सविश्वभर्तुर्लवणावतारो,गर्भावतारं सुधियां विहंतु॥१।
लावण्यैकनिधेर्विश्व, भर्तुस्तद्दृद्धिहेतुकृत् ॥
लवणोत्तारणं कुर्या, द्भवसागरतारणम् ॥ २ ॥
इन दो वृत्तोंकरके दो वार लवण उत्तारना. ॥
साक्षारतां सदासक्तां, निहंतुमिव सोद्यमः ॥
लवणाब्धिर्लवणांबु, मिषात्ते सेवते पदौ ॥१॥
यह पढके लवणमिश्र जल उत्तारना. ॥
भुवनजनपवित्रिताप्रमोदप्रणयनजीवनकारणं गरीयः॥ जलमविकलमस्तु तीर्थनाथक्रमसंस्पर्शिसुखावहं जनानाम् ॥ १ ॥
यह पढके केवल जलक्षेप करे. ॥
ससप्तीतिर्विधाताईं ससव्यसननाशकृत् ॥
यत् ससनरकद्वारससाररितुलां गतम् ॥ १ ॥
ससांगराज्यफलदानकृतप्रमोदं ।
सत्ससतत्त्वविदनंतकृतप्रवोधम् ॥

तच्छक्रहस्तधृतसंगतसप्तदीप, ।
मारात्रिकं जवतु सततमसङ्गुणाय ॥ २ ॥

यह पढके आरात्रिकावतारण करे. ॥

विश्वत्रयजवैर्जीवैः, सदेवासुरमानवैः ॥
चिन्मंगलं श्रीजिनेंद्रात्, प्रार्थनीयं दिने दिने ॥ १ ॥

यन्मंगलं जगवतः प्रथमार्हतः श्री,
संयोजनैः प्रतिवजूव विवाहकाले ॥
सर्वासुरासुरवधूमुखगीयमानं ।
सर्वैर्पिजिश्च सुमनोजिरुदीर्यमाणम् ॥ २ ॥

दास्यंगतेषु सकलेषु सुरासुरेषु ।
राज्येर्हतः प्रथमसृष्टिकृतो यदासीत् ॥
सन्मंगलं मिथुनपाणिगतीर्थवारि ।
पादाजिषेक विधिनात्युपचीयमानम् ॥ ३ ॥

यद्विश्वाधिपतेः समस्ततनुजृत्संसारनिस्तारणे ।
तीर्थे पुष्टिमुपेयुषि प्रतिदिनं वृध्धिं गतं मंगलम् ॥
तत् संप्रत्युपनीतपूजनविधौ विश्वात्मनामर्हतां ।
जूयान्मंगलमक्षयं च जगते स्वस्त्यस्तु संघाय च ॥४॥

इन चारों वृत्तोंकरके मंगल प्रदीप करे. । पीछे शक्रस्तव पढे ॥ इति कल्पोक्त जिनपूजन विधि.

॥ अथ स्नात्र विधि ॥

अथ अतिशय अर्हद्भक्तिवाला श्रावक, नित्य, वा पर्वदिनमें, वा कीसी कार्यांतरमें, जिनस्नात्र कर नेकी इच्छा करे, तिसका विधि यह है ।

प्रथम स्नात्रपीठके ऊपर, दिक्पालग्रह अन्य देवतपूजन वर्जके, पूर्वोक्त प्रकारकरके जिनप्रतिमा को पूजके, मंगलदीप वर्जित आरात्रिक करके, पूर्वोपचारयुक्त श्रावक, गुरुसमक्ष संघके मिले हुए, चार प्रकारके गीतवाद्यादि उत्सवके हुए पुष्पांजलि हाथमें लेके।

"॥ नमो अरहंताणं नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ॥" यह पढके दो छंद पढे.।

कल्याणं कुलवृद्धिकारि कुशलं श्लाघार्हमत्यद्भुतं।
सर्वाघप्रतिघातनं गुणगणालंकारविभ्राजितम् ॥
कांतिश्रीपरिरंजणं प्रतिनिधिप्रख्यं जयत्यर्हतां।
ध्यानं दानवमानवैर्विरचितं सर्वार्थसंसिद्धये ॥ १ ॥

भुवनजविकपापध्वांतदीपायमानं।
परमतपरिघातप्रत्यनीकायमानम्
धृतिकुवलयनेत्रावश्यमंत्रायमानं।
जयति जिनपतीनां धाममत्युत्तमानाम् ॥ २ ॥

यह पढके पुष्पांजलिक्षेपण करे.॥ इतिपुष्पांजलिक्षेपः ॥

कर्प्पूरसिल्हाधिककाकतुंरु,कस्तुरिकाचंदनवंदनीयः॥ धूपो जिनाधीश्वरपूजनेऽत्र, सर्वाणि पापानि दहत्व जस्रम् ॥ १ ॥

यह पढके सर्वपुष्पांजलियोंके बीचमें धूपोत्

क्षेप करे. ॥ और शक्रस्तव पढे. ॥ पीछे जलपूर्ण कलश लेके, दो श्लोक पढे. ॥

केवली जगवानेकः, स्याद्वादी मंत्रैर्विना ॥
विनापि परिवारेण, वंदितः प्रजुतोर्जितः ॥ १ ॥
तस्येशितुः प्रतिनिधिः सहजश्रियाढ्यः ।
पुष्पैर्विनापि हि विना वसनप्रतानैः ॥
गंधैर्विना मणिमयाजरणैर्विनापि ।
लोकोत्तरं किमपि दृष्टिसुखं ददाति ॥ २ ॥

यह पढके प्रतिमाको कलशाजिषेक करे. ॥ इति प्रतिमायाः कलशाजिषेकः ॥ पुष्प अलंकारादि उत्तारके, कलशाजिषेक करके, पीछे फिर पुष्पांजलि लेके, दो काव्य पढे. ।

विश्वानंदकरी जवांबुधितरी सर्वापदां कर्तरी ।
मोक्षाध्वैकविलंघनाय विमला विद्या परा खेचरी ॥
दृष्ट्या जावितकल्मषापनयने वज्राप्रतिज्ञा दृढा ।
रम्यार्हत्प्रतिमा तनोतु जविनां सर्व मनोवांछितम्॥१॥
परमतररमासमागमोत्थप्रस्तमरहर्षविजासिसन्निकर्षा जयति जगति जिनेशस्य दीप्तिः प्रतिमा कामितदायिनी जनानाम् ॥ २ ॥

यह पढके फिर पुष्पांजलिक्षेप करे. पीछे पूर्वोक्त ' कर्पूरसिल्हा ' वृत्तकरके धूपोत्क्षेप करे, और शक्रस्तव पढे. । पीछे फिर पुष्पांजलि हाथमें लेके, दो काव्य पढे. ॥ यथा ॥

न दुःखमतिमात्रकं न विपदां परिस्फूर्जितं ।
न चापि यशसां क्षितिर्न विषमा नृणां दुस्थता ॥
न चापि गुणहीनता न परमप्रमोद क्षयो ।
जिनार्चनकृतां भवे भवति चैव निःसंशयम् ॥ १ ॥
एतत्कृत्यं परममसमानंदसंपन्निदानं ।
पाताळौकः सुरनरहितं साधुभिः प्रार्थनीयम् ॥
सर्वारंभापचयकरणं श्रेयकां सं निधानं ।
साध्यं सर्वैर्विमलमनसा पूजनं विश्वभर्तुः ॥ २ ॥

यह पढके फिर पुष्पांजलिक्षेप करे. । पीछे धूप हाथमें लेके पढे. ।

कर्प्पूरागरुसिल्हचंदनवलामांसीशशैलेयक ।
श्रीवासद्रुमधूपरालघुसृणैरत्यंतमामोदितः ॥
व्योमस्थप्रसरच्छशांककिरणज्योतिःप्रतिछादको ।
धूपोत् क्षेपकृतो जगत्त्रयगुरोस्सौभाग्यमुत्तंसतु ॥ १ ॥
सिद्धाचार्यप्रभृतीन्, पंच गुरून् सर्वदेवगणमधिकम् ॥
क्षेत्रे काले धूपः प्रीणयतु जिनार्चने रचितः ॥ २ ॥

यह पढके धूपोत्क्षेप करे. । शक्रस्तव पढे. ॥ पीछे फिर पुष्पांजलि लेके ॥

जन्मन्यनंतसुखदे भुवनेश्वरस्य ।
सुत्रामभिः कनकशैलशिरःशिलायाम् ॥
स्नात्रं व्यधायि विविधांबुधिकूपवापी ।
कासारपल्वलसरित्सलिलैः सुगंधैः ॥ १ ॥

तां बुद्धिमाधाय हृदीहकाले, स्नात्रं जिनेंद्रप्रतिमाग
णस्य ॥ कुर्वंति लोकाः शुभभावभाजो, महाजनो
येन गतः स पंथाः ॥ २ ॥ यह पढके पुष्पांजलि
क्षेप करे ॥ २ ॥
परिमलगुणसारसङ्गुणाढ्या, बहुसंसक्तपरिस्फुरद्द्विरे
फा ॥ बहुविधबहुवर्णपुष्पमाला, वपुषि जिनस्य भव
त्वमोघयोगा ॥ १ ॥

यहवृत्त पढके पगोंसें लेके मस्तकपर्यंत जिनप्रति
माको पुष्पारोपण करे। पीछे 'कर्पूरसिद्धाधि०'
इसकरके धूपोत्क्षेप करे. । पीछे शक्रस्तव पढे. ।
पीछे फिर पुष्पांजलि हाथमें लेके ।
साम्राज्यस्य पदोन्मुखे भगवति स्वर्गाधिपैर्गुंफितो ।
मंत्रित्वं बलनाथतामधिकृतिं स्वर्णस्य कोशस्य च ॥
बिभ्रद्भिः कुसुमांजलिर्विनिहितो भक्त्या प्रभोः पाद
योर्दुःखौघस्य जलांजलिं सतनुतादालोकनादेव हि॥१॥
चेतः समाधातुमनिंद्रियार्थं, पुण्यं विधातुं गणनाभ्य
तीतम् ॥ निक्षिप्यतेर्हत्प्रतिमापदाग्रे, पुष्पांजलिः प्रोज्ज
तभक्तिभावैः ॥ २ ॥

यह पढके पुष्पांजलिक्षेप करे. । सर्व पुष्पांजलि
योंके अंतमें धूपोत्क्षेप, और शक्रस्तवपाठ अवश्य
करना. ॥ तदनंतर पुष्पादिकरके प्रतिमा पूजे. ।
पीछे मणि, स्वर्ण, ताम्र, मिश्रधातु, माटीमय, कलशे
स्नात्रकी चौकीऊपरि स्थापन करना. तिनमें गंगो

दकमिश्रित सर्व जलाशयोंके पानी स्थापन करे. चंदन केसर कर्पूरादि सुगंधी द्रव्य करके वासित करे. चंदनादि और पुष्पमालासें, कलशोंको पूजे. जल पुष्पादिअभिमंत्रणकेमंत्र पूर्वे कहे हैं सो जानने.। पीछे एक श्रावक, अथवा बहुत श्रावक, पूर्वोक्त वेष शौचवाले गंधसें हस्तको लेपन करके, मालाभूषित कंठवाले तिन कलशोंको हाथऊपरि रखके पीछे स्वस्वबुद्धिअनुसारसें जिनजन्माभिषेकचिन्हित स्तोत्रोंको जिनस्तुतिगर्भित षट्पदादि (छप्पयआदि) को पढे। पीछे शार्दूलवृत्त पढे।

जाते जन्मनि सर्वविष्टपपतेरिंद्रादयो निर्जरा।
नीत्वा तं करसंपुटेन बहुभिः सार्द्धं विशिष्टोत्सवैः॥
शृंगे मेरुमहीधरस्य मिलिते सानंददेवीगणे।
स्नात्रारंभमुपानयंति बहुधा कुंभांबुगंधादिकम्॥ १॥
योजनमुखान् रजतनिष्कमयान् मिश्रधातुमृद्रचितान्
दधते कलशान् संख्या तेषां युगपद्रखदंतिमिता॥२॥
वापीकूपह्रदांबुधितडागपल्वलनदनिझरादिभ्यः॥
आनीतैर्विमलजलैः स्नानाधिकं पूरयंति च ते॥ ३॥
कस्तूरीघनसारकुंकुमसुराश्रीखंडकंक्कोल्लकै।
ह्रीबेरादिसुगंधवस्तुभिरलंकुर्वंति तत्संवरम्॥
देवेंद्रा वरपारिजातबकुलश्रीपुष्पजातीजपा।
मालाभिः कलशाननानि दधते संभ्रांतहारस्रजः॥ ४॥
ईशानाधिपतेर्निजांकक्कुहरे संस्थापितं स्वामिनं।

सौधर्माधिपतिर्म्मिताङ्गतचतुःप्रांशुंक्षशृंगोझतैः ॥
धारावारिन्नरैःशशांकविमलैः सिंचत्यनन्याशयः ।
शेषाश्चैव सुराप्सरस्समुदयाः कुर्वंतिकौतूहलम् ॥ ५ ॥

वीणांमृदंगतिमिलाड्कटाऊनूर ।
ढक्कहुरुक्कपणवस्फुटकाहलाभिः ॥
सद्वेणुकर्झरकडुडुभिपुंगुणीभि-
र्वाद्यैः सृजंति सकलाप्सरसो विनोदन् ॥ ६ ॥

शेषाः सुरेश्वरास्तत्र, गृहीत्वा करसंपुटे ॥
कलशांस्त्रिजगन्नाथं, स्नपयंति महामुदः ॥ ७ ॥

तस्मिंस्तादृशउत्सवे वयमपि स्वर्लोकसंवासिनो ।
भ्रांता जन्मविवर्त्तनेन विहितश्रीतीर्थसेवाधियः ॥
जातास्तेन विशुद्धबोधमधुना संप्राप्य तत्पूजनं ।
स्मृत्वैतत्करवाम विष्टपविभोः स्नात्रं मुदामास्पदम्॥८॥

बालत्तणम्मि सामिश्र, सुमेरुसिहरम्मि कणयकल सेहिं ॥ तियसासुरेहिं एहविओ, ते धन्ना जेहिं दिठोसि ॥ ए ॥

यह पढके कलशोंकरके जिनप्रतिमाको अभि पेक करे. । पीछे वडे छोटेके क्रमकरके सर्व पुरुष स्त्रि जी गंधोदकोंसें स्नात्र करे. । पीछे अभिपेकके अंतमें गंधोदकपूर्ण कलश लेके वसंततिलकावृत्त पढे. ।

संघे चतुर्विध इह प्रतिभासमाने, श्रीतीर्थपूजनकृत प्रतिभासमाने ॥ गंधोदकैः पुनरपि प्रभवत्वजस्रं, स्नात्रं जगत्त्रयगुरोरतिपूतधारैः ॥ १ ॥

यह पढके जिनपादोपरि कलशाभिषेक करके स्नात्रनिवृत्ति करे पीछे पुष्पांजलि लेके पढे ।

इंद्राग्ने यम निर्ऋते जलेश वायो
वित्तेशेश्वर भुजगा विरंचिनाथ ॥
संघट्टाधिकतमभक्तिभारभाजः
स्नात्रोस्मिन् भुवनविभोः श्रीयं कुरुध्वम् ॥ १ ॥

यह पढके स्नात्रपीठके पास रहे कल्पित दिक्पालपीठकऊपरि, पुष्पांजलिक्षेप करे. । पीछे प्रत्येक दिशामें यथाक्रमकरके दिकपालोंको स्थापन करे. ।

पीछे एकैक दिक्पालका पूजन करे ।
सुराधीश श्रीमन् सुदृढतरसम्यक्त्ववसते ।
शचीकांतोपातस्थितविबुधकोट्यानतपद ॥
ज्वलद्भाघातक्षपितदनुजाधीशकटक ।
प्रभोः स्नात्रे विघ्नं हर हर हरे पुण्यजयिनाम् ॥ १ ॥

"ॐ शक्र इह जिनस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ । इदं जलं गृहाण २ । गंधं गृहाण २ । पुष्पं गृहाण २ । धूपं गृहाण २ । दिपं गृहण २ । नैवेद्यं गृहाण २ । विघ्नं हर २ । दुरितं हर २ । शांतिं कुरु २ । तुष्टिं कुरु २ । पुष्टिं कुरु २ । ऋद्धिं कुरु २ । वृद्धिं कुरु २ । स्वाहा ॥" इति पुष्पगंधादिभिरिंद्रपूजनम् ॥ १ ॥

वहिरंतरनंततेजसा विदधत्कारणकार्यसंगतिः ॥
जिनपूजनआशुशुक्षणे, कुरु विघ्नप्रतिघातमंजसा॥१॥

"॥ ॐ अग्ने इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इत्यग्निपू
जनम् ॥ २ ॥

दीप्तांजनप्रजतनो तनुसंनिकर्षे।
वाहारिवाहनसमुकुरदंरूपाणे ॥
सर्वत्र तुल्यकरणीयकरस्थधर्मे ॥
कीनाश नाशय विपद्विसरं क्षणेत्र ॥ १ ॥

"ॐ यम इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति यमपू
जनम् ॥ ३ ॥

राक्षसगणपरिवेष्टितचेष्टितमात्रप्रकाशहतशत्रो ॥
स्नात्रोत्सवेत्र निर्ऋते, नाशय सर्वाणि दुःखनि ॥ १ ॥

"॥ ॐ निर्ऋते इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति
नैर्ऋतपूजनम् ॥ ४ ॥

कल्लोलानीतलोलाधिककिरणगणस्फीतरत्नप्रपंच ।
प्रोद्भूतौर्वाग्निशोचं वरमकरमहापृष्टदेशोक्तमानम् ॥
चंचच्चीरिल्लिशृंगिप्रभृतिक्षपगणैरंचितं वारुणं नो ।
वर्ष्मछिंद्यादपायं त्रिजगदधिपतेः स्नात्रसत्रे पवित्रे॥१॥

"॥ ॐ वरुण इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति वरु
णपूजनम् ॥ ५ ॥

ध्वजपटकृतकीर्त्तिस्फूर्त्तिदीप्यद्विमान ।
प्रसृमरबहुवेगत्यक्तसर्वोपमान ॥
इह जिनपतिपूजासंनिधौ मातरिश्व–
न्नपनयसमुदायं मध्यवाह्यातपानाम् ॥ १ ॥

"॥ ॐ वायो इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति वायु पूजनम् ॥ ६ ॥

कैलासवास विलसत्कमलाविलास ।
संशुभ्रहासकृतदौस्थ्यकथानिरास ॥
श्रीमत्कुबेरजगत्स्नपनेत्र सर्वं ।
विघ्नं विनाशय शुभाशय शीघ्रमेव ॥ १ ॥

"॥ ॐ कुबेर इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति कुबेर पूजनम् ॥ ७ ॥

गंगातरंगपरिखेलनकीर्णवारि, प्रोद्यत्कपर्दपरिमंभित पार्श्वदेशम् ॥ नित्यं जिनस्नपनहृष्टहृदः स्मरारे, विघ्नं निहंतु सकलस्यजगत्त्रयस्य ॥ १ ॥

"ॐ ईशान इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इतीशान पूजनम् ॥ ८ ॥

फणमणिमहसा विभासमानाः । कृतयमुनाजलसं श्रयोपमानाः ॥ फणिन इह जिनाभिषेककाले । बलि भवनादमृतंसमानयंतु ॥ १ ॥

"ॐ नागा इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति नांग पूजनम् ॥ १ ॥

विशदपुस्तकशस्तकरद्वयः प्रथितवेदतया प्रमदप्रदः॥ भगवतः स्नपनावसरे चिरं । हरतु विघ्नभरं द्रुहि णो विभुः ॥ १ ॥

"॥ ॐ ब्रह्मन् इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति ब्रह्म णः पूजनम् ॥ १० ॥

ऐसें क्रमसें दिक्पालपूजन करे। पीछे फिर जी हाथमें पुष्पांजलि लेकर आर्या पढे॥

दिनकरहिमकरजूसुत, शशिसुतबृहतीशकाव्यरवित नयाः॥ राहो केतो क्षेत्रप, जिनार्चने जवत सन्नि हिताः॥ १॥

यह पढके ग्रहपीठोपरि पुष्पांजलिक्षेप करे। पीछे पूर्वादिक्रमसें सूर्य, शुक्र, मंगल, राहु, शनि, चंद्र, बुध, बृहस्पति, इनको स्थापन करे.; हेठ केतु को, और ऊपर क्षेत्रपालकों स्थापन करे. पीछे प्रत्येक ग्रहकका पूजन करे.।

विश्वप्रकाशकृतजव्यशुजावकाश।
ध्वांतप्रतानपरिपातनसद्विकाश॥
आदित्य नित्यमिह तीर्थकराजिषेके।
कल्याणपल्लवनमाकलय प्रयत्नात्॥ १॥

"॥ ॐ सूर्य इह० शेषं पूर्ववत्॥" इति सूर्य पूजनम्॥ १॥

स्फटिकधवलशुक्लध्यानविध्वस्तपाप।
प्रमुदितदितिपुत्रोपास्यपादारविंद॥
त्रिजुवनजनशश्वज्जंतुजीवातुविद्य।
प्रथय जगवतोर्चां शुक्र हे वीतविघ्नाम्॥ १॥

"॥ ॐ शुक्र इह० शेषं पूर्ववत्॥" इति शुक्र पूजनम्॥ २॥

प्रबलबलमिलितबलकशल, लालनालन्तिक न

विघ्नहृते । चौमजिनस्नपनेऽस्मिन् विघटय विघ्नागमं सर्वम् ॥ १ ॥

"॥ ॐ मंगल इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति मंगलपूजनम् ॥ ३ ॥

अस्तांहः सिंहसंयुक्त, रथ विक्रममंदिर ॥
सिंहिकासुत पूजाया, मत्र संनिहितो जव ॥ १ ॥

"ॐ राहो इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति राहुपूजनम् ॥ ४ ॥

फलिनीदल लीलयांतः, स्थगितसमस्तवरिष्टविघ्नजात । रवितनय प्रवोधमेतात् जिनपूजाकरणैकसावधानान् ॥ १ ॥

"ॐ शने इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति शनिपूजनम् ॥ ५ ॥

अमृतवृष्टिविनाशितसर्वदो, पचितविघ्नविपः शशलांठनः ॥ वितनुतात्तनुतामिह देहिनां, प्रसृततापजरस्य जिनार्चने ॥ १ ॥

"॥ ॐ चंद्र इह० शेषं पूर्ववत् ॥" चंद्रपूजनम् ॥ ६ ॥

वुधविवुधगणार्चितांघ्रियुग्म, प्रमथितदैत्य विनीतदुष्टशास्त्र ॥ जिनचरणसमीपगोधुनात्वं, रचय मतिं जवघातनप्रकृष्टाम् ॥ १ ॥

"॥ ॐ वुध इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति वुधपूजनम् ॥ ७ ॥

सुरपतिहृदयावतीर्णमंत्रप्रचुर, कलाविकलप्रकाश भास्वन् ॥ जिनपतिचरणाभिषेककाले, कुरु बृहती वर विघ्नविप्रणाशम् ॥ १ ॥

"॥ ॐ गुरो इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति गुरु पूजनम् ॥ ७ ॥

निजनिजोदययोगजगत्त्रयी, कुशलविस्तरकारण तां गतः ॥ भवतुकेतुरनश्वरसंपदां, सततहेतुरवारि तविक्रमः ॥ १ ॥

"॥ ॐ केतो इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति केतु पूजनम् ॥ ए ॥

कृष्णसितकपिलवर्ण, प्रकीर्णकोपासितांघ्रियुग्मस दा ॥ श्रीक्षेत्रपाल पालय, भविकजनं विघ्नहरणेन॥१॥

"॥ ॐ क्षेत्रपाल इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति क्षेत्रपालपूजनम् ॥ १० ॥

पीछे गंध, पुष्प, अक्षत, धूप, दीपसें पूर्व कहे मंत्रोंसेंही जिनप्रतिमाकी पूजा करे. पीछे हाथमें वस्त्र लेके वसंततिलकावृत्तपाठ पढे. ।

त्यक्त्वाखिलार्थवनितादिकभूरिराज्यं
निःसंगतामुपगतो जगतामधीशः ॥
भिक्षुर्भवन्नपि स वर्ष्मणि देवदूष्य-
मेकं दधाति वचनेन सुरेश्वराणाम् ॥ १ ॥

यह पढके वस्त्र चढावे. इति वस्त्रपूजा ॥

पीछे नानाविध खाद्य, पेय, भक्ष्य, लेह्यसंयुक्त

नैवेद्य. दो स्थानमें करके तिनमेंसें एक पात्र जिनके आगे स्थापके, श्लोक पढे. ।

. सर्वप्रधानसद्भूतं, देहिदेहिसुपुष्टिदम् ॥
अन्नं जिनाग्रे रचितं, दुःखं हरतु नः सदा ॥ १ ॥

यह पढके जलचुलुककरके जिनप्रतिमाको नैवेद्य देवे. पीछे दूसरे पात्रमें चुलुककरकेही, ग्रहदिक्पाला दिकोंको श्लोक पढके नैवेद्य देवे. ।

जोजो सर्वे ग्रहालोक, पालाः सम्यग्दृशः सुराः ॥
नैवेद्यमेतद्गृह्णन्तु, जवंतो जयहारिणः ॥ १ ॥

स्नात्र करायाविना जी पूजामें जिनप्रतिमाको इसही मंत्रकरके नैवेद्य देना. ॥ पीछे आरात्रिक मंगलदीपक पूर्ववत् । और शक्रस्तव जी पढना. ॥ जिस प्रतिमाका स्थानस्थितहीका स्नपन कराया जावे, तिसके वास्ते सर्वकुछ तहांही करना. ॥

श्रीखंडकर्पूरकूरंगनाजि, प्रियंगुमांसीनखकाकतुंडेः ॥ जगत्त्रयस्याधिपतेः सपर्या, विधौ विदध्यात्कुशलानि धूपः ॥ १ ॥

इस वृत्तकरके सर्वपुष्पांजलियोंके विचाले धूपोत्क्षेप करना, और शक्रस्तवपाठ पढना. ॥

प्रतिमा विसर्जनं यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं नमो जगवतेर्हते समये पुनःपूजां प्रतीछ स्वाहा ॥" इति पुष्पन्यासेन प्रतिमाविसर्जनं ॥

"॥ ॐ हः इंद्रादयोलोकपालाः सूर्यादयो ग्रहा

सक्षेत्रपालाः सर्वदेवाः सर्वदेव्यः पुनरागमनाय स्वा
हा ॥" इति पूष्पादिभिर्दिक्पाल ग्रहविसर्जनम् ॥
आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मंत्रहीनं च यत्कृतम् ॥
तसर्वं कृपया देवाः, क्षमंतु परमेश्वराः ॥ १ ॥
आव्हाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम् ॥
पूजां चैव न जानामि त्वमेव शरणंमम ॥ २ ॥
कीर्त्तिः श्रियो राज्यपदं सुरत्वं, न प्रार्थये किंचन देव
देव ॥ मत्प्रार्थनीयं भगवत्प्रदेयं स्वदासतां मां नय
सर्वदापि ॥ ३ ॥
इति सर्वकरणीयांते जिनप्रतिमादेवादिविसर्जनविधि
अर्हत् अर्चनविधिमें भी ऐसेंही विसर्जन
जानना. ॥ इति लघुस्नात्रविधिः ॥

पीछे (गृहचैत्यपूजानंतर) वडे देवमंदिरमें जाक
र, शक्रस्तवादिस्तोत्रोंकरके जिनराजकी स्तवना कर
के, और जिनराजका पूजन करके, प्रत्याख्यान चिंत
वन करे. । पीछे चैत्यको प्रदक्षिणा करके, पौषधशा
ला (उपाश्रय) में जाकर, देवकीतरें वडे आनंदसें
साधुओंको वंदन करे. सुंदरबुद्धिवाला होकर, पूजा
सत्कार करे. । पीछे एकाग्रचित्त होकर साधुके मुख
सें धर्मदेशना श्रवण करे. पीछे मनमें धारा हुआ
प्रत्याख्यान करे. पीछे गुरुको नमस्कार करके कर्मा
दानको अच्छीतरें त्यागके, धन उपार्जन करे. यथा
योग्य स्थानमें व्यापार समाचरे. कुत्सित बुरा कर्म

प्राणोंके नाश हुए भी न करे. । पीछे अपने घरदेह रामें अर्हत्‌की मध्यान्हपूजा करके, अन्नपानी समा चरे. भक्तिसें साधुओंको दान देके, अतिथीयोंकी पूजा आदरसत्कार करके, और दीन अनाथ मार्ग णगणको संतोषके, अपने व्रतऔर कुलके उचित भोज्य वस्तुका भोजन करे. ॥ साधुको आमंत्रण ऐसें करे. ॥ क्षमाश्रमण पूर्वक गृहस्थ कहे ।

"॥ हे भगवन् फासुएणं एसणिज्जेणं असण पाणखाइमसाइमेणं वथ्थकंबलपायपुछणपडिग्गहेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहेररूवेणं सिज्जासंथारएणं भयवं मम गेहे अणुग्गहो कायव्वो ॥"

भोजनानंतर गुरुके पास शास्त्रका विचार करे, पढे, सुने. । पीछे धन उपर्जन करके घरको जाकर संध्यापूजा करके सूर्यके अस्त होनेसें दो घडी पहि ले, निजवांछित भोजन करे. सायंकालमें धर्मागार में सामायिककरके षडावश्यक प्रतिक्रमण करे. पीछे अपने घरमें आके शांतबुद्धिवाला हुआ, जब एक पहर रात्रि जावे तब अर्हत्‌स्तवादिक पढके प्रायः ब्रह्मचर्यव्रतधारी होके सुखसें निद्रा लेवे. जब निद्राका अंत आवे तब परमेष्टिमंत्रस्मरणपूर्वक जिन, चक्री, आदिके चरित्रोंको चिंतन करे. और व्रता दिकोंके मनोरथ अपनी इच्छासें करे, ऐसें अहोरा त्रिकी चर्या अप्रमत्त होके समाचरना [illegible] ीर

यथावत् कहे व्रतमें रहा हुआ, गृहस्थ भी कल्याण भागी होता है. । इति व्रतारोपसंस्कारे गृहिणां दिनरात्रिचर्या ॥
वासनागुरुसामग्री, विभवो देहपाटवम् ॥
संघश्चतुर्विधो हर्षो, व्रतारोपे गवेष्यते ॥ १ ॥
वरकुसुमगंधअरकय, फलजलनेवज्जधूवदीवेहिं ॥
अठविहकम्ममहणी, जिणपूआ अठाहा होई ॥२॥

इति व्रतारोप संस्कार

॥ अथ अंत्य संस्कार विधिः ॥

श्रावक यथावत् व्रतोंकरके निज भवको पालके कालधर्मके प्राप्त हुए, उत्कृष्ट आराधना करे, तिस का विधि यह है. । जिन अरिहंतोंके कल्याणक स्थानोंमें, निर्जीव शुचि पवित्र स्थंडिल–जगामें, वा अरण्यमें, वा अपने घरमें, विधिसें अनशन करना. । तहां शुद्धस्थानमें ग्लानको पर्यंत आराधना करावनी । तथा अवश्यमेव अमुकवेला निकट मरण होवेगा ऐसें ज्ञानके हुए, तिथिवारनक्षत्रचंद्रबलादि न देखना । तहां संघका मीलना करना । गुरु, ग्लानको जैसें सम्यक्त्वारोपणमें तैसेंही नंदि करे. । नवरं इतना विशेष है. सर्व नंदि देववंदन कायोत्सर्गादि पूर्वोक्त विधि ‘संलेहणा आराहणा’ इस नाम करके करावणा. और वैयावृत्त्य कर कायोत्सर्गानंतर।

“॥ आराधना देवता आराधनार्थं करेमि का–

"॥ जे मए अणंतेणं नवप्रमणेणं पुढविकाइआ आउकाइआ तेउकाइआ वाउकाइआ वणस्सइका इआ एगिंदिआ सुहमा वा, बायरा वा, पजात्ता वा, अपजात्ता वा, कोहेण वा, माणेण वा, मायाए वा, लोहेण पंचिंदिअट्टेण वा, रागेण वा, दोसेण वा, घाइआ वा, पीडिआ वा, मणेणं वायाए काएणं, तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ जो मेरे जीवने अनंत नव नमते थके पृथिवी अप तेउ वायु वणस्पतीके एकें ड्रिय जीव, सुक्ष्महो बादरहो पर्यासेहो अपर्यासेहो क्रोधसें, मानसे, मायासें, लोनसें, पंचेंड्रियपणे, राग सें, द्वेषसें, घातित किएहों, पीकित किएहों, तिसका मन वचन काया करके मिछामि डुक्कड हो ॥" फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

"॥ जे मए अणंतेणं नवप्रमणेणं बेइंदिआ वा सुहमा वा बायरा वा० शेषं पूर्ववत् ॥" जो मेरे जीवनें अनंत नव नमते थके बेरिंड्रिय जीव, सुक्ष्म मबादर क्रोधादिकसें घातित पीकित कीए होय तिनका त्रिकोटी मि०" फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

"॥ जे मए अणंतेणं नवप्रमणेणं तेइंदिया सुह मा वा, बायरा वा,० शेषं पूर्ववत् ॥" जो मेनें अनं त नव नमते थके तेरिंड्रि जीव सुक्ष्म वा बादर क्रोधादिकसें घातित वा पीकित किए होय सो त्रिकोटी मि० ॥ फिर परमेष्ठिमंत्र पाठपूर्वक कहें

स्सग्गं अन्नथ्थउससिएणं० जाव—अप्पाणं वोसिरामि ॥" कहके कायोत्सर्ग करना. कायोत्सर्गमें चार लोगस्स चिंतवन करना, पारके आराधना स्तुति कहनी. ॥ सा यथा ॥

यस्याः सान्निध्यतो भव्या, वांछितार्थप्रसाधकाः श्रीमदाराधना देवी, विघ्नव्रातापहास्तु वः ॥ १ ॥ शेषं पूर्ववत् ॥

पीछे तिसही पूर्वोक्तविधिसें सम्यक्त्वदंडकका उच्चारण, द्वादशव्रतोंका उच्चारण करावणा. । वासक्षेपकायोत्सर्गादि भी, 'संलेखना आराधना' के आलापककरके तैसेंही जाणना. । प्रदक्षिणा करनी, ग्लानकी शक्तिके अनुसार होवे भी, और नही भी होवे. । दंडकादिमें 'जावनियमंपज्जुवासामि' के स्थानमें 'जावज्जीवाए' ऐसें कहना. । पीछे सर्व जीवों केसाथ अपराधकी क्षामणा करनी । पीछे श्रावक परमेष्ठिमंत्रोच्चारपूर्वक गुरुके सन्मुख हाथ जोडके कहें खामेमि सवजीवे सवे जीवा खमंतु मे ॥
मित्ती मे सवभूएसु वेरं मज्झ न केणइ ॥ १ ॥ गुरु कहें

"॥ खामेह जो खमइ तस्स अत्थी आराहणा जो न खमइ तस्स नत्थि आराहणा ॥" पीछे श्रावक क्षमाश्रमणपूर्वक कहें । "भयवं अणुजाणह ।" गुरु कहें "। अणुजाणामि ।" श्रावक परमेष्ठिमंत्र पाठपूर्वक कहें ।

"॥ जे मए अणंतेणं नवभ्रमणेणं पुढविकाइआ आउकाइआ तेउकाइआ वाउकाइआ वणस्सइकाइआ एगिंदिआ सुहमा वा, बायरा वा, पज्जत्ता वा, अपज्जत्ता वा, कोहेण वा, माणेण वा, मायाए वा, लोहेण पंचिंदिअट्टेण वा, रागेण वा, दोसेण वा, घाइआ वा, पीडिआ वा, मणेणं वायाए काएणं, तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ जो मेरे जीवने अनंत नव नमते थके पृथिवी अप तेउ वायु वणस्पतीके एकेंडिय जीव, सुक्ष्महो बादरहो पर्यासेहो अपर्यासेहो क्रोधसें, मानसे, मायासें, लोनसें, पंचेंडियपणे, राग सें, द्वेषसें, घातित किएहों, पीमित किएहों, तिसका मन वचन काया करके मिछामि डुक्कम हो ॥" फिर परमेष्ठिमंत्र पढके।

"॥ जे मए अणंतेणं नवभ्रमणेणं बेइंदिआ वा सुहमा वा बायरा वा० शेषं पूर्ववत् ॥" जो मेरे जीवनें अनंत नव नमते थके बेरिंडिय जीव, सुक्ष्म मबादर क्रोधादिकसें घातित पीमित कीए होय तिनका त्रिकोटी मि०" फिर परमेष्ठिमंत्र पढके।

"॥ जे मए अणंतेणं नवभ्रमणेणं तेइंदिया सुहमा वा, बायरा वा,० शेषं पूर्ववत् ॥" जो मेनें अनंत नव नमते थके तेरिंडि जीव सुक्ष्म वा बादर क्रोधादिकसें घातित वा पीमित्त किए होय सो त्रिकोटी मि० ॥ फिर परमेष्ठिमंत्र पाठपूर्वक कहें

जे मए अणंत नवज्ञमणेण चउरिंदिया जीवा, सुहुमा वा वायरावा, शेषं पूर्ववत्। जो मेनें अनंत नव नमते थके चउरिंदिय जीव, क्रोधादिकसें, घातित पीमित किए होय तिनका त्रिकोटी मिछा मि डुक्कम हो. "॥ जे मए अणंतेणंनवम्रमणेणं पंचिंदिआ देवावा मणुआ वा, नेरइआ वा, तिर स्कजोणिआ वा, जलयरा वा, थलयरा वा, खयरा वा, सन्निआ वा, असन्निआ वा, सुहुमा वा, वायरा वा०शेषं पूर्ववत् ॥ जो मेनें अनंत नव नमते थके पंचेंड्रिय जीव, देव, मनुष्य, नारकी, तिर्यंच, जलच र थलचर, खेचर, संज्ञी,असंज्ञी, सुद्म वादर, क्रोधा, दिकसें घातित पीमित किए होय सो त्रिकोटी मिथ्या डुष्कृत हो. ॥ फिर परमेष्टिमंत्र पाठपूर्वक श्रावक कहे।

"॥ जं मए अणंतेणं नवम्रमणेणं अलिअं नणि अं कोहेण वा, माणेण वा, मायाए वा, लोहेण वा, पंचिंदिअहेण वा, रागेण वा, दोसेण वा, मणेणं वायाए काएणं तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ जो मेंने अनं त नव नमते थके असत्य नाषण कियाहो, क्रोधा दिक करके सो त्रिकोटी मिथ्याडुष्कृतहो. ॥" फिर परमेष्टिमंत्र पढके कहे।

"॥ जं मए अणंतेणं नवम्रमणेणं अदिन्नं गहि अं कोहेण वा, माणेण वा० शेषं पूर्ववत् ॥ जो मेनें

अनंत जव जमते थके अदत्त ग्रहण कियाहो क्रोधादि करके सो त्रिकोटीसें मिथ्याडुष्कृतहो ॥" फिर परमेष्ठिमंत्र पढके।

"॥ जं मए अणंतेणं जवप्रमणेणं दिव्वं माणुस्सं तिरिछं मेहुणं सेविअं कोहेण वा माणेण वा० शेषं पूर्ववत्॥ जो मेने अनंत जव जमते थके देव संबंधी, मनुष्य संबंधी, तिर्यंच संबंधी, क्रोधादि कसें मैथुन सेवन किया हो सो त्रिकोटी मिथ्या डुष्कृतहो. ॥" फिर परमेष्ठिमंत्र पढके।

"॥ जं मए अणंतेणं जवप्रमणेणं अठारस्स पावठाणाइं कयाइं कोहेण वा, माणेण वा,० शेषं पूर्ववत् जो मेनें अनंत जव जमते थके अठारह. पापस्थानक सेवन किए हो. सो त्रिकोटी मिथ्याडुष्कृत हो ॥" फिर परमेष्ठिमंत्र पढके।

"॥ जं मे पुढविकायगयस्स सिलालेठुसकरासंन्हावालुआगेरिअसुवन्नाइमहाधाउरूवं सरीरं पाणिवहे पाणिसंघट्टणे पाणिपीरुणे पाववहणे मिछत्तपोसणे ठाणे संलग्गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि॥" जो मेराजीव पृथवी कायगत होके शिला पत्थर कांकरे रेती वालुका मट्टी सुवर्णादि सप्त धातु रूप शरीर वान् होके, प्राणिवध, प्राणि संघात, प्राणि पीडन, पाप वर्धक, मिथ्यात्व पोषक स्थानमे लगा होय

जे मए अणंत नवन्नमणेण चउरिंदिया जीवा, सुहमा वा वायरावा, शेषं पूर्ववत् । जो मेनें अनंत नव नमते थके चउरिंदिय जीव, क्रोधादिकसें, घातित पीमित किए होय तिनका त्रिकोटी मिछा मि डुक्कम् हो. "॥ जे मए अणंतेणंनवप्नमणेणं पंचिंदिआ देवावा मणुआ वा, नेरइआ वा, तिर स्कजोणिआ वा, जलयरा वा, थलयरा वा, खयरा वा, सन्निआ वा, असन्निआ वा, सुहमा वा, वायरा वा०शेषं पूर्ववत् ॥ जो मेनें अनंत नव नमते थके पंचेंडिय जीव, देव, मनुष्य, नारकी, तिर्यंच, जलच र थलचर, खेचर, संज्ञी,असंज्ञी, सुक्ष्म वादर, क्रोधा, दिकसें घातित पीमित किए होय सो त्रिकोटी मिथ्या डुष्कृत हो. ॥ फिर परमेष्ठिमंत्र पाठपूर्वक श्रावक कहें ।

"॥ जं मए अणंतेणं नवप्नमणेणं अलिअं नणि अं कोहेण वा, माणेण वा, मायाए वा, लोहेण वा, पंचिंदिअहेण वा, रागेण वा, दोसेण वा, मणेणं वायाए काएणं तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ जो मेंने अनं त नव नमते थके असत्य नाषण कियाहो, क्रोधा दिक करकें सो त्रिकोटी मिथ्याडुष्कृतहो. ॥" फिर परमेष्ठिमंत्र पढके कहे ।

"॥ जं मए अणंतेणं नवप्नमणेणं अदिन्नं गहि अं कोहेण वा, माणेण वा० शेषं पूर्ववत् ॥ जो मेनें

तविंवेसु धम्मट्ठाणेसु जंतुरक्कणट्ठाणेसु धम्मोवगर णेसु जिणन्हाणेसु तन्हदाहावहरणेसु संलग्गं तं अणु मोआमि कल्लाणेणं अभिनंदेमि ॥ जो में उपरोक्त अप्काय होके अर्हत् चैत्यमें, अर्हत् विंबमें, धर्म स्थानमें, जीव रक्षाकाममें, धर्मोप करण कार्यमें, स्नात्राभिषे कमें, तृषादाह शमनमें, लगा होउं तो तिनकों अनुमोदताहुं ॥ " फिर परमेष्टिमंत्र पढके।

" ॥ जं मे तेउकायगयस्स अगणिइंगालमम्मुर जालाअलायविज्जुउक्कातेअरूवं सरीरं पाणिवहे पाणि संघट्टणे पाणिपीडणे पाववद्दणे मिछत्तपोसणे ठाणे संसग्गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ " " जो में अग्नी कायगत अग्नि इंगाला मुर्मुर ज्वाला धूम्र सहित विद्युत् उल्का रूप शरीर होके प्राणिवधमें, प्राणि संघातनमे, प्राणि पीडनमे, पाप वर्द्धनमे, मिथ्यात्व पोषककें स्थानमें, लगा होउं तिनकों, निंदा गर्हासें त्यागताहुं "

" ॥ जं मे तेउकायगयस्स अगणिइंगालमम्मुर जाला अलायविज्जुउक्कातेअरूवं सरीरं सीआवहारे जिणपूआधूवकरणे नेवेज्जपाए दुहाहरणाहारपाए संलग्गं तं अणुमोएमि कल्लाणेणं अभिनंदेमि ॥ " " जो में अग्नीकाय गत अग्नि इंगाला मुर्मुर ज्वाला धूम्रसहित विद्युत् उल्का रूप शरीर होके, ठंढी दूर करनेमें, जिनराजके आगे धूप करनेमें, पूजाके उप

तिनकों निंदताहुं गर्हा करताहुं और तिन पापोंकों त्याग करताहुं "

"॥ जं मे पुढविकायगयस्स सिलालेछुसकरासन्हा वालुआगेरिअसुवन्नाईमइाधाउरूवंसरीरं अरिहंतचे इएसु अरिहंतबिंबेसु धम्मट्ठाणेसु जंतुरक्कणट्ठाणेसु धम्मो वगर णेसु संलग्गं तं अणुमोआमि कल्लाणेणं अज्जिनंदेमि ॥ जो में पृथ्वीकायगत शिल्ला पत्थर कांकरे वालुकारेती माटी सुवर्णादि सप्तधातु रूप शरीर हो के अरिहंत चैत्यमें अरिहंत बिंबमें, धर्म स्थानमें, जीव रक्षण स्थानमें, धर्मोपकरणमें, लगा होउं तो तिनकों अनुमोद ताहुं कल्याण कारक जाणके आ नंदित होता हुं ॥" फिर परमेष्टिमंत्र पढके।

"॥ जं मे आउकायगयस्स जलकरगमहिआ ओस्साहिमहरतणुरूवं सरीरं पाणिवहे पाणिसंघ ट्टणे पाणिपीमणे पाववद्धणे मिछत्तपोसणे ठाणे संल ग्गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥"

जो में अपकायगत पानी करा हिम ठार ओस हेम हर तनुरूप शरीर होके प्राणि वध, प्राणि संघा त, प्राणि पीमक, पाप वर्धक, मिथ्यात्व पोषक स्थान में, लगा होउं तो तिनपापकों निंदा गर्हा करके त्यागताहुं '

"॥ जं मे आउकायगयस्स जलकरगमहिआओ स्साहिमहरतणुरूवं सरीरं अरिहंतचेइएसु अरिहं

संलग्गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो में वनस्पती कायगत मूल छाल काष्ट पत्र पुष्प फल बीज रस अरु रूप शरीर होके प्राणि वधमे, प्राणि संघातनमें, पाणि पीडनमें, पाप वर्द्धनमें, मिथ्यात्व पोषक स्थानोमें, लगा होउं तिनकों निंदा गर्हा करके त्याग करता हुं"

"॥ जं मे वणस्सइकायगयस्स मूलकठुछल्लिपत्त पुष्फफलबीअरसनिज्जासरूवं सरीरं बुहाहरणेसु अरिहंतचेइअपूयणेसु धम्मठाणेसु नेवज्जकरणेसु जंतुरक्खणठाणेसु संलग्गं तं अणुमोएमि कल्लाणेणं अभिनंदेमि॥ जो में वनस्पती कायगत मूल काष्ट छाल पत्र पुष्प फल बीज रस अरु रूप शरीर होके क्षुधादूर करनेंमे, अर्हत् प्रतिमाके पूजनमें, धर्म स्थानमें, नैवद्य करनेमें, जीव रक्षाके कारणमें, लगा होउं तिनकों अनु मोदताहुं कल्याण कारक जाणके आनंदित होता हुं" फिर परमेष्टिमंत्र पढके।

"जं मे तसकायगयस्स रसरत्तमंसमेअअठिमज्जासुक्कचम्मरोमनहनसारूवं सरीरं पाणिवहे पाणिसंघट्टणे पाणिपीडणे पाववढ्ढणे मिछत्तपोसणे ठाणे संलग्गं तंनिंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो में त्रस काय गत रस रुधीर मांस मज्जा मेद शुक्र चर्म, रोम नख नसा रूप शरीर होके प्राणि वधमें, प्राणि संघातनमें, प्राणि पीडनमे, पाप वर्द्धनमे, मिथ्यात्व

योगमें, नैवेद्य काममें, क्षुधाहरण आहार पाणिके उपयोगमें, लगा होउं तिनकों अनु मोदताहुं कल्या ण कारक जाणके आनंदित होताहुं ” फिर परमेष्ठि मंत्र पढके ।

“ ॥ जं मे वाउकायगयस्स वाउझंझासासरूवं सरीरं पाणिवहे पाणिसंघट्टणे पावबट्टणे मिछत्तपो सणे ठाणे संलग्गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि

“ जो में वायु कायगत शुद्धवायु झंझावायु श्वास रूप वायु शरीर होके प्राणि वधमें, प्राणि संघातनमें, पापवर्द्धनमें, मिथ्यात्व पोषणके कारणमें, लगा होउं तिनकों निंदा गर्हा करके त्यागताहुं ॥ ”

“ ॥ जं मे वाउकायगयस्स वाउझंझासासरूवं सरीरं पाणिरक्खणे पाणिजीवणे साहूण वेयावच्चे धम्मावहारे संलग्गं तं अणुमोएमि कल्लाणेणं अभि नंदेमि ॥ जो में वायुकायगत, शुद्धवायु झंझावायु श्वास वायुरूप शरीर होके प्राणि रक्षणके कार्यमे, प्राणि जीवनके कारणमें, साधुओंकी वैय्यावच्चके काममें, गर्मीकी शांतिके कारणमें, लगाहोउं तिन कों अनु मोदताहुं, कल्याण कारक जाणके आनं दित होता हुं ” फिर परमेष्टिमंत्र पढके ।

“ ॥ जं मे वणस्सइकायगयस्स मूलकंदछल्लिपत्त पुप्फफलबीअरसनिज्झासरूवं सरीरं पाणिवहे पाणि संघट्टणे पाणिपीडणे पावबट्टणे मिछत्तपोसणे ठाणे

यहां पहिलां समारोपितसम्यक्त्व व्रतको भी फिर सम्यक्त्व व्रतारोप करना. और जिसको पहिलें सम्यक्त्व व्रतारोप न करा होवे, तिसको भी अंतकालमें सम्यत्व व्रतारोप करना योग्य है. । जिसको पहिलां व्रतारोप करा होवे, तिसको इस अंत समयमें एकंशोचौवीस अतिचारोंकी आलोचना करानी. । वे अतिचार आवश्यकादि सूत्रोंसें जान लेने. पीछेआलोचनाविधि करना, सो प्रायश्चित्तविधिसें जानना. । पीछे गुरु सर्व संघसहित वासअक्षतादि ग्लानके शिरमें निक्षेप करे. ॥

॥ इति अंत्य संस्कारे आराधना विधिः ॥

पीछे ग्लान (रोगी—बीमार) क्षमाश्रमण परमेष्टिमंत्र पाठपूर्वक कहे ॥

आयरियउवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ ॥
जे मे कया कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥
सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करियसीसे॥
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥
सव्वस्स जीवरासिस्स,भावओ धम्म निहियनियचित्तो॥
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्सअहयंपि ॥ ३ ॥

" ॥ भयवं जं मए चउगइगएणं देवा तिरिआ मणुस्सा नेरइआ चउकसाओवगएणं पंचिंदिअवसट्टेणं इहम्मि भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु मणेणं वायाए काएणं दूमिआ संताविआ अभिताइया तस्स

पोषणमे लगा होवं तिनकों निंदापूर्वक त्यागताहुं "

" जं मे तसकायगयस्स रसरत्तमंसमेअअठि मज्जासुक्कचम्मरोमनहनसारूवं सरीरं अरिहंतचेइएसु अरिहंतबिंबेसु धम्मठाणेसु जंतुरक्कणठाणेसु धम्मोवगरणेसु संलग्गं तं अणुमोएमि कल्लाणेणं अभिनंदेमि ॥ जो में त्रस काय गत रस रुधीर मांस हाड चरवी शुक्र चर्म रोम नखरूप शरीर होके अर्हच्चैत्यमें, अर्हत् बिंबमें, धर्म स्थानमे, जंतु रक्षामे, धर्मो पकणमें लगा होवं तिनकों अनु मोदके आनंदित होता हुं ॥ " फिरपरमेष्टिमंत्र पढके ।

" ॥ जं मए इह भवे, मणेणं वायाए काएणं डुठं चिंतिअं, डुठं भासिअं, डुठं कयं, तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो मेनें इह भवमें अनंत भव भ्रमणमें मन वचन काया करके दुष्ट विचार कियाहो दुर्वचन बोलेहो, दुष्ट प्रवृत्ति करीहो तिनकों निंदा पूर्वक त्याग करताहुं "

" ॥ जं मए इह भवे, मणेणं वायाए काएणं सुठु चिंतिअं, सुठु भासिअं, सुठु कयं, तं अणुमोणुमोएमि कल्लाणेणं अभिनंदेमि ॥ जो मेने इह भवमें, अनंत भव भ्रमणमें, मन वचन काया करके श्रेष्ट विचार कियाहो, श्रेष्ट भाषा बोली हो, श्रेष्ट प्रवृत्ति करीहो तिनकी अनु मोदना करताहुं, कल्याण कारक जानके आनंदित होताहुं ॥ "

यहां पहिलां समारोपितसम्यक्त्व व्रतको नी फिर सम्यक्त्व व्रतारोप करना. और जिसको पहिलें सम्यक्त्व व्रतारोप न करा होवे, तिसको नी अंतकालमें सम्यत्व व्रतारोप करना योग्य है. । जिसको पहिलां व्रतारोप करा होवे, तिसको इस अंत समयमें एकंशोचौवीस अतिचारोंकी आलोचना करानी. । वे अतिचार आवश्यकादि सूत्रोंसें जान लेने.' पीछेआलोचनाविधि करना, सो प्रायश्चित्तविधिसें जानना. । पीछे गुरु सर्व संघसहित वासअक्षतादि ग्लानके शिरमें निक्षेप करे. ॥

॥ इति अंत्य संस्कारे आराधना विधिः ॥

पीछे ग्लान (रोगी—बीमार) क्षमाश्रमण परमेष्टिमंत्र पाठपूर्वक कहे ॥

आयरियउवज्झाए, सीसे साहिम्मिए कुलगणे अ ॥
जे मे कया कसाया, सवे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥
सवस्स समणसंघस्स, नगवओ अंजलिं करियसीसे॥
सवं खमावइत्ता, खमामि सवस्स अहयंपि ॥ २ ॥
सवस्स जीवरासिस्स,नावओ धम्म निहियनियचित्तो॥
सवं खमावइत्ता, खमामि सवस्सअहयंपि ॥ ३ ॥

"॥ नयवं जं मए चउगइगएणं देवा तिरिआ मणुस्सा नेरइआ चउकसाओवगएणं पंचिंदिअवसट्टेणं इहम्मि नवे अन्नेसु वा नवग्गहणेसु मणेणं वायाए काएणं दूमिआ संताविआ अनिताइया तस्स

मिच्छामि दुक्कडं जेहिं अहं अप्पिट्ठमिआं संताविओ। अप्पिट्ठओ तमहंपि खमामि ॥"

पीछे गुरु दंडकसहित इन तीनों गाथाका विस्तारसें व्याख्यान करे। पीछे ग्लान, गुरु साधु साध्वी श्रावक श्राविकायोंको प्रत्येकक्षामणां करे. । यहां गुरुओंको वस्त्रादि दान, और संघको पूजासत्कार जानना. ॥ इत्यंतसंस्कारे क्षामणाविधिः ॥

अथ मृत्युकालके निकट हुए, ग्लान, पुत्रादिकोंसें जिनचैत्योंमें महापूजा स्नात्रमहोत्सव ध्वजारोपादि करावे, चैत्यधर्मस्थानादिमें धन लगावे.। पीछे परमेष्ठिमंत्रोच्चारपूर्वक पढे.।

जे मे जाणंतु जिणा, अवराहा जेसु २ ठाणेसु ॥
तेहं आलोएमि, उवट्ठिओ सव्वकालंपि ॥ १ ॥
छउमत्थो मूढमणो, कित्तियमित्तंपि संभरइ जीवो ॥
जं च न सुमरामि अहं, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥२॥
जं जं मणेण बद्ध, जं जं वायाइ भासिअं किंचि ॥
जं जं काएण कयं, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥
खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ॥
मित्ती मे सव्वभूएसु वेरं मज्झ न केणइ ॥ ४ ॥

पीछे तीन नमस्कार पाठपूर्वक कहे।

"॥ चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो, मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगु

त्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगु त्तमो। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पव ज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पव ज्जामि, केवलिपन्नत्तं धम्मं, सरणं, पवज्जामि ॥"

यह पाठ तीन वार पढे। पीछे गुरुके वचनसें अष्टादश (१८) पापस्थानकोंको वोसरावे यथा.

"॥ सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि। सव्वं मुसावायं पच्चक्खामि। सव्वं अदिन्नादाणं प०। सव्वं मेहुणं प०। सव्वं परिग्गहं प०। सव्वं राईभोअणं प०। सव्वं कोहं प०। सव्वं माणं प०। सव्वं मायं प०। सव्वं लोहं प०। पिज्जं प०। सव्वं दोसं कलहं अब्भक्खाणं अरईरईपेसुन्नं परपरिवायं मिच्छादसंणसल्लं इच्चेइआइं अट्ठारस पावट्ठाणाइं दुविहं तिविहेणं वोसिरामि अपच्छिमम्मि ऊसासे तिविहं तिविहेणं वोसिरामि॥"

पीछे गीतार्थगुरु, श्रीयोगशास्त्रके पांचमे प्रकाशके कथनसें, और कालप्रदीपादिशास्त्रके कथनसें, ग्ला नके आयुका क्षय जानके* (भक्तप्रत्याख्यानप्रकीर्णक शास्त्रमें लिखा है कि, यदि कोइ तथ्यज्ञानी कहे, अथवा कोइ सम्यग्दृष्टी देवता कहे कि, अमुकदि न तेरा अवश्य मरण है, तवतो अपना संहननधृ तिवल जानके यावत् जीवका अनशन करना. परंतु, जो कोइ मरणदिनके निश्चयविना यावत् जीवका अनशन करे, करावे, सो आत्मघाती साधुश्रावक

घाती पंचेंद्रियघाती है;) (कालज्ञानके विषयमे कितने क शास्त्रोमे एसे लक्षण लिखेहैं कि निरंतर पंदरे दिन सूर्यनाडी प्रातःकाल वहे तो पनरे दिनका आयु. एक मास तक प्रातःकाल सूर्यनाडी वहे तोपट् मासायु. पांचदिन अखंड सूर्य नाडी वहे तो ८ मासायु. वायु की नाडि पित्तके स्थानमे, पित्तकी नाडी कफके स्थानमे,कफ कंठमे आवे तो रोगी वचेगा नही. मस्तक गरम हृदय, नाभि, नाशिका हाथ पग ठंडे रहे तो मरण. उश्वास गरम व नीश्वास ठंडा वहे तो मरण. अंग कंप, गतिभंग, शरीरका वर्णका वदलना, स्वाद वा गंधकों न समजे तो अवश्य करण जाणना, हाथ पावकी घुटी,कपोल,गलेके पासकी नाडी चलनी रुक जाय वा मंद पडजाय तो मरण कहना. जो अपनी जिव्हाग्र, नासाग्र, भ्रुकुटी, न देखेतो मरण. अपनी तीन अंगुली मुखमें न जावे तो मरण. भ्रुकुटी न दीखे तो सातदिन, कर्णश्वर न सूने तो पाच दिन कों मरण होना समजना. जिव्हा काली पडे वा, मुख लाल हो जाय तो मरण. पिसावकी धारामे विंदु होजाय वा वीर्यपात हो जाय तो सातमे दिन मरण. नाडीयोंका मंद पडना, इंद्रियोंके विषयका न समजना,गतीका भंग होना,कंठमें कफका रुकना, नाशिकाके पवनका ठंडा वहना, नाशिका टेडी होना, जमणी भूजा मे उर्द्ध श्वासका वहना यह

तात्कालिक मरणके चिन्ह जाणने ॥ रोगी दर्पणमें अपना मस्तक न देखे तो अवश्य मरे. भरणी, मघा, अश्लेषा, मूल, कृत्तिका, जेष्टा, आर्द्रा, शत भिषा, तीनपूर्वा, यह नक्षत्रमें मांदा पडेतो रोगी न बचे. जिस्का बलगम चिकना होके गलेसें छुटे नही तो समजो कि अब आयुष्य बिलकुल कम हे. जिस्कों छीक आनेके साथ जाडा पेसाब हो जावे तो, जिस्की जबानपर कांटे आ जावे, वा काली पडजावे व अस्वज न देशके तो, जानो तीन रोजका जीनाहे. जिस्की नेत्रोंकी एकवा दोनोहि पुतली फिरजाय वा नेत्रो सें दिखाइ न देवे तो जानो कि मरना नजीक हे. जिस्के हाथ फेरके वीसोंनख काले पडजाय, हाथ पेरमें ठंडाइ होके शिरमे गरमी आजाय तो जानो मरना नजीक आया. जिस्का उच्चार शुरू न हो, नेत्रोमें रोशनी नहो, कानोंसे सुनना, नाकसें खुश बो लेना, बंध हो जाय, अनामीका उंची नउपड शके, तो जानोकी अवश्य अपना काल समय नजीक हे. (यद्यपि यह लक्षणोंसे प्रायः मरणका निश्चय होजोता हि हे तथापि कोइ अतिशय ज्ञानी वा देवादिकोंके यथातथ्य वचन सिवाय अनागर अणशन उच्चराने कि आज्ञानहीहे. इसलिये सागारी अनशन कराना उचितहे) संघ की, ग्लानके संबंधियोंकी, तथा नगरके [illegible]की अनुमति लेके, अनशनका उच्चार कराना.

ग्लान, शकस्तव पढके तीनवार परमेष्टिमंत्रको पढके गुरुके मुखसें उच्चरे. । यथा.

"॥ नवचरिमं पच्चरकामि तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाजोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणंसवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि॥" इति सागारसनशनम् ॥

अंतर्मुहूर्त्त शेष रहे हूए, निरागार अनशन कराना.॥ यथा ॥

"॥ नवचरिमं निरागारं पच्चरकामि, सवं असणं, सवं पाणं, सवं खाइमं, सवं साइमं, अन्नाछणाजोगेणं, सहसागारेणं, अईयं निंदामि, पमिपुन्नं संवरेमि, अणागयं पच्चरकामि, अरिहंतसरिकयं, सिद्धसरिकयं, साहुसरिकयं देवसरिकयं, अप्पसरिकयं, वोसिरामि ॥"
जइ मे हुज्ज पमाउ, इमस्स देहस्स इमाइ वेलाए ॥
आहारमुवहिदेहं, तिविहं तिविहेण वोसिरिअं ॥१॥

तव गुरु "निछारगपारगो होहि" ऐसें कहता हुआ संघसहित वासअक्षतादि ग्लानके सन्मुख क्षेप करे. । शांतिके वास्ते 'अठावयंमि उसहो' इत्यादि स्तुति पढे. और, 'चवणं जम्मणनूमी' इत्यादि स्तव पढे. । गुरु निरंतर ग्लानके आगे तीनजुवनके चैत्योंका व्याख्यान करे, अनित्यतादि वारां जावनाका व्याख्यान करे, अनादिजवस्थितिका व्याख्यान करे, अनशनके फलका व्याख्यान करे. । और

संघ गीतनृत्यादि उत्सव करे. । ग्लान जीवितमरण की इच्छाको त्यागके समाधिसहित रहे. । पीछे अंतर्मुहूर्त्तके आयां, ग्लान "सव्वं आहारं, सव्वं देहं, सव्वं उवहिं, वोसिरामि" ऐसें कहें । पीछे ग्लान पंचपरमेष्टिस्मरणश्रवणयुक्त शरीरको त्यागे ॥

॥ इति अनशनविधिः ॥

॥ अग्निसंस्कार विधि. ॥

मरणकालमें ग्लानको कुशकी शय्याऊपर स्थापन करना । " । जन्ममरणे जूमावेव इति व्यवहारः । "

अथ सर्वज्ञावके जोक्ता कर्मके जोगनेवाले चेतनारूप जीवके गये हुए, अजीव पुद्गलरूप तिसके शरीरको सनाथता ख्यापनार्थ, तिसके पुत्रादिकोंके वास्ते, तीर्थसंस्कारविधि कहते हैं. । सर्व ब्राह्मणको शिखा वर्जके शिर दाढी मूंछ मुंडन कराना चाहिये, कितनेक क्षत्रियवैश्यको जी कहते हैं. । तथा शवका संस्कार सर्व स्ववर्ण ज्ञातियोंने करना, अन्यवर्ण ज्ञातिवालोंने तिसका स्पर्श नहीं करना. । पीछे गंध तैलादिसें और जले गंधोदकसें शवको स्नान करना, गंधकुंकुमादिसें विलेपन कराना, मालापहिराना स्वस्वकुलोचित वस्त्राजरणासें विजूषित करना शूद्र जातिकों सर्वथा मुंडन नहीं. । पीछे नवीन काष्टकी पगविनाकी कुश संथरी जले वस्त्रसें ढांकी

ग्लान, शक्रस्तव पढके तीनवार परमेष्टिमंत्रको पढवे गुरुके मुखसें उच्चरे. । यथा.

" ॥ भवचरिमं पच्चक्कामि तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि॥" इति सागारानशनम् ॥

अंतर्मुहूर्त्त शेष रहे हूए, निरागारं अनशनं कराना.॥ यथा ॥

" ॥ भवचरिमं निरागारं पच्चक्कामि, सव्वं असणं, सव्वं पाणं, सव्वं खाइमं, सव्वं साइमं, अन्नात्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, अईयं निंदामि, पडिपुन्नं संवरेमि, अणागयं पच्चक्कामि, अरिहंतसक्खियं, सिद्धसक्खियं, साहुसक्खियं देवसक्खियं, अप्पसक्खियं, वोसिरामि ॥"

जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्स इमाइ वेलाए ॥
आहारमुवहिदेहं, तिविहं तिविहेण वोसिरिअं ॥१॥

तब गुरु "नित्थारगपारगो होहि" ऐसें कहता हुआ संघसहित वासअक्षतादि ग्लानके सन्मुख क्षेप करे. । शांतिके वास्ते 'अठावयंमि उसहो' इत्यादि स्तुति पढे. और, 'चवणं जम्मणभूमी' इत्यादि स्तव पढे. । गुरु निरंतर ग्लानके आगे तीनभुवनके चैत्योंका व्याख्यान करे, अनित्यतादि बारां भावनाका व्याख्यान करे, अनादिभवस्थितिका व्याख्यान करे, अनशनके फलका व्याख्यान करे. । और

हुई शय्याके ऊपर, शय्याके उपकरणसहित, शव
स्थापन करना। यहां गृहस्थके मृत्युनक्षत्रके नक्षत्र
लेका विधान, कुशपुत्रादिविधि यतिकीतरें जानना.
वरं कुशपुत्रक गृहस्थवेषधारी करणे ※ वर्णानुसार
सके ऊपर नानाविध वस्त्र सुवर्ण मणि विचित्र वस्त्र
करा प्रासाद (मांरूवी) स्थापन करना। पीछे स्वज्ञात
चारजणे परिजनके साथ स्कंधऊपर उठाए शव
स्मशानमें ले जावे. । तहां उत्तरभागमें शवका ि
रखके चितामें स्थापन करके, पुत्रादि अग्निसें संस्व
करे. । अन्न नही खानेवाले बालकोंको भूमिसंस्व
करना । तत्र प्रेतप्रतिग्राहियोंको दान देना । पं
सर्व स्नान करके, अन्यमार्ग होकर अपने घर
आवे. तीसरे दिनमें चिताभस्मका, पुत्रादि नदी
प्रवाह करावे. । तिसके हाड तीर्थोंमें स्थापन करे
तिसके अगले दिनमें स्नान करके शोक दूर करे
जिनचैत्योंमे जाके, परिजनसहित जिनबिंबको वि
स्पर्शे, चैत्यवंदन करे. । पीछे उपाश्रयमें आके गुरु
नमस्कार करे. गुरु भी संसारकी अनित्यता

※ रोहिणी, विशाखा, पुनर्वसु, उत्तराषाढा, उत्तराफाल
नी, उत्तरा भाद्रपद, ए छ नक्षत्रमेंसें कोइभी एक नक्षत्र म
समय होय तो दर्भके दो पुतले बनाके नीनामी [illegible] रखा
जेष्टा, आर्द्रा, स्वाती, शतभिषा, भरणी, [illegible] ए छ न
त्रमेंसें कोइभी होय तो पुतले न करना. और दुसरे १५ नक्ष
मेंसें कोइ नक्षत्र होय तो एक पुतला करना.

धर्मदेशना करे. । पीछे स्वस्वकार्यमें सर्व तत्पर होवे. । अंत्य आराधनासें लेके, शोक, दूर करनेतक मुहूर्त्तादि न देखना, अवश्य कर्त्तव्य होनेसें. । यमलयोगमें, त्रिपुष्करयोगमें, मृगशिर । चित्रा । धनिष्ठा । मंगल । गुरु । शनि । २ । १२ । ७ । इतित्रयाणां योगे यमलयोगः ॥ कृतिका । पूर्वाफाल्गुनी । विशाखा । उत्तराषाढा । पूर्वाभाद्रपदा । पुनर्वसु । मंगल । गुरु । शनि २ । १२ । ७ । इति त्रिपुष्करयोगः ॥ कृतिका । विशाखा । भरणी । इति मिश्रनक्षत्राणि ॥ भरणी । मघा । पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढा । पूर्वाभाद्रपदा इति क्रूरनक्षत्राणि ॥ रोहिणी । उत्तर[illegible] । उत्तराषा० । इति ध्रुवनक्षत्राणि ॥ आर्द्रा, मूल, अनुराधा, मिश्र, क्रूर और ध्रुव, इन नक्षत्रोंमें प्रेतक्रिया नही करनी । धनिष्ठासें लेके पांच नक्षत्रोंमें तृणकाष्ठादि संग्रह नही करना । शय्या, दक्षिणदिशाकी यात्रा, मृतक कार्य, गृहोद्यम, (घर बनाना) आदि नही करना. । रेवती, श्रवण, अश्लेषा, अश्विनी, पुष्य, हस्त, स्वाति मृगशिर, इन नक्षत्रोंमें, और सोम, गुरु, शनी, इन वारोंमें प्रेतकर्म करना बुद्धिमान् कहते हैं. । स्वस्व वर्णके अनुसार जन्ममरणका सूतकस्वकुलदश होता हैं ब्राह्मण,क्षत्रीय,वैश्यकों पुरुषोका दश और स्त्रीका एकादश दिन सूतक होता है. परदेशका जन्म मरण सूतक धार्मिक

कार्यमे वाधकारी न होता है. और गर्भ
दिनका सुतक होता है. अन्य वंशवालेके
वा जन्म हुए विवाहित पुत्रिकों सूतकवा
के खानेसें, इन सर्वमें तीनदिनका सूतक हो
अन्न नही खानेवाले वालकका सूतक तीन
होता है । आठ वर्षसें कम ऐसें वालकका ज
गोन सूतक होता है. स्वस्ववर्णानुसार सूतकके
में जिनस्तव महोत्सवादि और साधर्मिकवात
दि करना, जिससेंकल्याणप्राप्ति होवे. ॥

इति अंत्य संस्कार विधिः ॥

तत् समाप्ते समाप्तोयं अष्टम परिछेदः

शिवमस्तु सर्वजगतः, परहित निरता जवंतु
गणाः ॥ दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखिनो जवं
लोकाः ॥ लेखकपाठकयोः शिवमस्त्वीति ॥

॥ इति प्रथम विजागः समाप्तः ॥